दसवां नौरोज।

जहांगीरके समयके राजपूत राजा और सरदार जिनका वृत्तान्त जहांगीर नामेमें आया है।

(१) अनूपशहर—अनूपसिंह बड़गूजर (अनीराय सिंहदलन)।

(२) अमझेरा (मालवा)—केशवदास मारू राठौड़।

(३) आमेर (जयपुर)—राजा भारमल कछवाहा २ भगवन्तदास ३ मानसिंह ४ जगतसिंह ५ महासिंह ६ जयसिंह। मिरजा राजा भावसिंह मानसिंहका बेटा, राजा जगन्नाथ राजा भारमलका बेटा, अखैराज कछवाहा राजा मानसिंहका चचा। अखैराजके बेटे अभयराम विजयराम श्यामराम रामदास कछवाहा।

(४) ईडर (गुजरात)—राजा कल्याण राठौड़।

(५) उर्छा—राजा बरसिंह देव बुन्देला।

(६) उदयपुर (मेवाड़)—राना सांगा, उदयसिंह, प्रतापसिंह, अमरसिंह, कुंवर करण, जगतसिंह, राना (फररावत) सगर, राना अमरसिंहका चचा, सगर(१)का बेटा मानसिंह, महाराजा भीम(२) राना अमरसिंहका दूसरा बेटा किशनसिंह।

(७) कच्छ (काठियावाड़)—राव भारा।

(८) कमाऊं (गढ़वाल)—राजा रुद्र, राजा लक्ष्मीचन्द, राजा टेकचन्द।

(९) कृष्णगढ (राजपूताना)—राजा कृष्णसिंह राठौड़, नथमल

(१०) किश्तवार (कश्मीर)—राजा कुंवरसिंह।

---

(१) सगरकी औलादमें अब ऊमरी इलाके गवालियरके राजा दलीपसिंह हैं।

(२) भीमके दूसरे बेटे रायसिंहको शाहजहां बादशाहने टोंक और टोडेका राज्य दियाथा परन्तु अब उसकी औलाद मेवाड़में है।

(११) कूचविहार (बंगाल)—राजा लक्ष्मीनारायण।

(१२) खानदेश—पंजू जमींदार।

(१३) गढा (गोंडवाना)—राजा पेमनारायण।

(१४) गुलेर (पंजाब)—राजा मान गुलेरी, देवीचन्द गुलेरी, रूपचन्द गुलेरी।

(१५) चन्द्रकोटा—हरभान।

(१६) जम्मू (पंजाब)—राजा संगराम।

(१७) जामनगर (गुजरात)—ज़ाम जस्सा जाडेचा।

(१८) जैसलमेर—रावल कल्याण।

(१९) जोधपुर (मारवाड)—राव मालदेव २ मोटा राजा उदयसिंह ३ राजा सूरजसिंह ४ राजा गजसिंह, नारायणदास राठौड़, भाटी गोयनदास सूरजसिंहका प्रधान।

(२०) नरवर (गवालियर)—राजा राजसिंह कछवाहा, राजा रामदास।

(२१) नूरपुर (कांगड़ा)—राजा वासू २ राजासूरजमल ३ राजा जगतसिंह ४ राजा माधवसिंह।

(२२) बगलाणा (गुजरात)—प्रतापभरजी राठौड़।

(२३) वलवाड़ा (पंजाब)—वासू जमींदार।

(२४) बांधोगढ (रीवां)—राजा विक्रमाजीत २ राजा अमरसिंह

(२५) बिहार—राजा संग्राम उसका बेटा राजा रोजअफजूं (मुसलमान)

(२६) बीकानेर—राय रायसिंह २ राय दलपतसिंह ३ सूरज-(सूर) सिंह।

(२७) बुन्देलखण्ड—राजा रामचन्द्र, राजा भारत बुन्देला (सरबुलन्दराय रायराज)

(२८) बूंदी (राजपूताना)—रावरतन झाडा, हृदयनारायण झाडा।

(२९) भदावर—धर्मंद्र्द, भोजभटोरिया।

तगदरी—एक पक्षी
तगदाग—एक पक्षी
तरह—सहायक सेना
तबीब—वैद्य
तवाची—चोबदार
तवेगून—एक जातिका बाज
तसलीम—झुककर सलाम करना
तुकमा—घुंडी
तुगाई—मामा
तुमन—एक प्रकारकातमगा, फौजका एक झुण्ड
तुहफा—सौगात
तोग—झंडे परकी एक धज्जी
तौरा—तुर्कोंका कानून

द

दरब—आधी मोहर
दाम—रुपयेका ४०वां भाग
दुआतशा—दोबार खिंची हुई शराब
दौलतख्वाह—शुभचिन्तक

न

नकशबन्दी—एक जातिके फकीर
नमद—नमदा, ऊनी गलीचा, तकिया,
नरगिस—एक फूल
नादिरी—सदरी
नादिरुलअस्र—अपने समयका एक अनोखा
नौरोज—नया दिन

प

परमनरम—कशमीरी शाल
पेशखाना—आगे चलनेवालाडेरा

फ

फरजी—जाकट
फलोनिया—एक दवा
फुन्दुक—एक लाल रंगका मेवा
फैज—लाभ, उपकार
फौत हुआ—मर गया

ब

बनफशा—एक फूल और पौदा
बरबरी—बडे बडे बालों वाली बकरी
बरामदा—कमरेके आगेका भाग
बलूत—एक वृक्ष
बिही—एक फल
बुका—एक पक्षी
बुरुनगार—बायें हाथकी फौज
बुर्दबारी—सहनशीलता
बोजा—एक मादक वस्तु

म

मशायख—शेख, मौलवी
मेहमानदारी—अतिथिसत्कार
महरम—तुर्कोंकी एक जाति
मारखोर—एक पहाडी बकरा
मीर आतिश—तोपखानेका

अफसर

मीरबहरी—दरयाई महमूल
मुजन्नस—घोड़ेकी एक जाति
मुफती—व्यवस्था देनेवाला
मुरगाबी—जल कूकड़ी
मुश्क—कस्तूरी
मुहाल—परगना
मुहिम—लड़ाई
मूमयाई—एक दवा

य

यमानी—यमन देशका
याकूत—लाल, माणिक्य, एक लेखकका नाम
याकूती—एक दवा

ल

लगलग—एक पक्षी
लगड़ भगड़—एक पक्षी

व

वकायानवीश—समाचार लिखने वाला
शफतालू—आडू
शरीअत—मुसलमानी धर्मशास्त्र
शागिर्द पेशा—सेवक लोग
शाली—धान, चावल
शाहआलू—एक मेवा
शाहीन—एक पक्षी
शीआ—मुसलमानोंका एक पंथ

स

सजावल—सिपाही
सनोवर—एक वृक्ष
सफवी—ईरानके बादशाहोंकी जाति
सफदार—एक वृक्ष
समर—एक पक्षीके बाल तथा बालों समेत खाल
सरफराज—सम्मानित
सर्व—एक वृक्ष
सलाहदौलत—राजाका हित
साहिबकिरां—अमीर तैमूरका एक नाम
सिजदा—दण्डवत
सिपहसालार—सेनापति
सियागोश—एक पशु
सुन्नी—मुसलमानोंका एक पन्थ
सुरखाब—एक पक्षी
सूफी—मुसलमान वेदान्ती
सेहत—आराम
सौसन—एक फूल

ह

हजारा—एक जाति
हमदानी—हमदानका रहनेवाला
हरजमरज—हानि
हरम—महल
हलका—हाथियोंका झुण्ड
हवासिल—एक पक्षी
हिरात—खुरासानका एक शहर
हुमा—हुमा एक पक्षी

(३०) मंझौली (बिहार) राजा नथमल।

(३१) रतनपुर—राजा कल्याण।

(३२) रामपुरा (मालवा)—राय दुर्गा सिसोदिया।

(३३) शेखावाटी (जयपुर)—राय मनोहर और उसका बेटा राय पृथ्वीचन्द रायसाल दरबारी और उसका राजा गिरधर।

(३४) श्रीनगर—राजा श्यामसिंह।

(३५) हलवद (गुजरात)—राजा चन्द्रसेन झाला।

मरहठे।

[१] दक्षिण—उदाराम पंडित दक्षिणी।

[२] " —जादूराय (सेवाजीका नाना)।

बादशाही ओहदेदार।

[१] राजा कल्याण राजा टोडरमलका बेटा।

[२] राजा विक्रमाजी (सुन्दर ब्राह्मण)।

[३] राजा विक्रमाजी रायरायां पतरदास।

[४] राय बनसूर दीवान।

[५] कल्याण विक्रमाजीतका बेटा।

[६] राय बिहारीदास।

[७] राजा सारङ्गदेव।

[८] राजा किशनदास।

[९] रायकुंवर दीवान।

[१०] राय भवाल (भवानीदास) मुशरिफ तोपखाना।

फुटकर।

[१] गुरु अर्जुन (गुरु नानक साहिबके उत्तराधिकारी)।

[२] जदरूप सन्यासी (चिदरूप)।

[३] मानसिंह सेवड़ा।

[४] सुखराय भाट।

[५] जोतकराय ज्योतिषी।

[६] भट्टाचार्य्य।

[७] उस्ताद पूर्ण कारीगर।

[८] कल्याण कारीगर।

[९] कल्याण लुहार।

[१०] विशनदास मुसव्विर (चितेरा)।
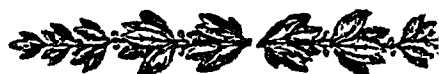
॥ श्री ॥

जहांगीर बादशाहके तख्त पर बैठनेसे पहिलेका हाल जबकि वह शाहजादा सलीम, सुलतान सलीम और बादशाह सलीम कहलाता था।

जहांगीर बादशाह १७ रबीउलअव्वल सन ९७७ हिजरी बुधवार (आश्विन बदी ५ संवत् १६२६) को सीकरीमें शैख सलीम चिश्तीके घर पैदा हुआ था। उसका नाम इसी प्रसंगसे शाह सलीम रक्खा गया था। अकबर बादशाहने आगरेमें यह मङ्गलसमाचार सुनकर बहुतसा धन लुटाया और जितने कैदी किले और शहरमें थे उन सबको छोड़ दिया। फिर सीकरीमें शहर बसाकर फतहपुर नाम रखा और उसे राजधानी बनाकर आप भी वहां रहने लगा।

जब शाह सलीमकी उमर ४ वर्ष ९ महीनेकी हुई तो बादशाह ने २४ रज्जब सन ९८१ (अगहन बदी ११ संवत १६३०) को उसे पढ़ने बिठाया। उसका अतालीक पहिले कुतुबमोहम्मदखां अंगा और फिर मिरजाखां खानखानां रहा।

सन ९८५ में बादशाहने उसको १० हजारी, १० हजार सवार का मनसब दिया जिससे बड़ा उस वक्त कोई पद नहीं था। जब उसकी उमर १५ वर्षकी हुई तो ९९३ (१६४२) में पहिला व्याह राजा भगवन्तदासकी बेटीसे दूसरा सन ९९४ (संवत १६४३) में उदयसिंहकी लड़कीसे, तीसरा जैनखां कोकेके चचा ख़्वाजाहसनकी बेटीसे और चौथा केशव मारूकी लड़कीसे हुआ।

पहिली बेगमसे पहिले सुलतान निसार बेगम और फिर २४ अमरदाद सन ९९५ (श्रावण सुदी १२ संवत् १६४४) को सुलतान खुसरो पैदा हुआ।

तीसरी बेगमसे १९ आबान सन ९९७ (कार्तिक सुदी ४ संवत् १६४६) को सुलतान परवेज जनमा।

चौथी बेगमसे २३ शहरेवर सन ९९८ (आश्विन बदी २ संवत् १६४७) को बहारबानू बेगम पैदा हुई।

दूसरी बेगमसे २९ रबीउलअव्वल गुरुवार सन १००० (माघ सुदी १ संवत् १६४८) को सुलतान खुर्रमका जन्म हुआ।

ता० ६ महर सन १००७ (आश्विन बदी १४ संवत् १६५५) को अकबर बादशाह तो दक्षिण फतह करनेके लिये गया और अजमेर का सूबा शाहसलीमको जागीरमें देकर राणाको सर करनेका हुक्म देगया।

शाहकुलीखां महरम और राजा मानसिंहकी नौकरी इनके पास बोली गई।

बङ्गालेका सूबा जो राजाको मिला हुआ था राजा अपने बड़े बेटे जगतसिंहको सौंपकर शाहकी सेवामें रहने लगा।

शाह सलीमने अजमेर आकर अपनी फौज राणाके ऊपर भेजी और कुछ दिनों पीछे आप भी शिकार खेलता हुआ उदयपुर तक गया जिसको राणा छोड गया था और सिपाहको पहाड़ोंमें भेजकर राणाको पकडनेकी कोशिश करने लगा।

यहां खुशामदी और स्वार्थी लोग जो चुप नहीं बैठा करते है उसके कान भरा करते थे कि बादशाह तो दक्षिणको लेनेमें लगे हैं वह मुल्क एकाएकी हाथ आने वाला नहीं और वह भी बगैर लिये पीछे आनेवाले नहीं। इसलिये हजरत जो यहांसे लौटकर आगरेसे परेके आबाद और उपजाऊ परगनोंको लेलें तो बड़े फायदे की बात है। बंगालेका फसाद भी जिसकी खबरें आरही हैं और जो राजा मानसिंहके गये बिना मिटनेवाला नहीं है जल्द दूर हो जायगा। यह बात राजा मानसिंहके भी मतलबकी थी क्योंकि उसने बंगालेकी रक्षाका जिम्मा कर रखा था। इससे उसने भी हां में हां मिलाकर लौट चलनेकी सलाह दी।

शाह सलीम इन बातोंसे राणाकी मुहिम अधूरी छोडकर इलाहाबादको लौट गया। जब आगरेमें पहुंचा तो वहांका किलेदार

कुलीचखां पेशवाईको आया। उस वक्त लोगोंने बहुत कहा कि इसको पकड़ लेनेसे आगरेका किला जो खजानोंसे भरा हुआ है सहजमेंही हाथ आता है। मगर उसने कबूल न करके उसको रुखसत कर दिया और जमनासे उतरकर इलाहाबादका रास्ता लिया। उसकी दादी हौदेमें बैठकर उसे इस इरादेसे रोकनेके लिये किलेसे उतरी थी पर वह नावमें बैठकर जल्दीसे चलदिया और वह नाराज होकर लौट आई।

१ सफर सन १००९ (द्वितीय श्रावण सुदी ३ संवत १६५७) को शाह सलीम इलाहाबादके किलेमें पहुँचा और आगरेसे इधरके अकसर परगने लेकर अपने नौकरोंकी जागीरमें देदिये। बिहारका सूबा कुतुबुद्दीनखांको दिया, जौनपुरकी सरकार लालाबेगको और कालपीकी सरकार नसीमबहादुरको दी। घनसूर दीवानने ३० लाख रुपयेका खजाना सूबे बिहारके खालसेमेंसे तहसीलकरके जमा किया था वह भी उससे लेलिया।

जब यह खबरें बादशाहको दक्षिणमें पहुंचीं तो उसने बड़ी महरबानीसे उसको अपने पास बुलानेका फरमान लिखा। जब अबदुस्समद मुंशीका बेटा शरीफ यह फरमान सलीम पास लेकर आया तो उसने पेशवाई करके फरमानको बड़े अदबसे लिया और जानेका भी इरादा किया। लेकिन फिर किसी खयालसे नहीं गया और शरीफको भी अपने पास रख लिया। वह खुशा-मद दरामदसे इसके दिलमें जगह करके वजीर बन गया।

बादशाह इन खबरोंके सुननेसे घरका फसाद मिटानेके लिये दक्षिणकी फतह अधूरी छोडकर १५ उर्दीबहिश्त सन् १००९ (चैत सुदी २ संवत् १६५८) को आगरेकी तरफ लौटा। खानखानां और शेख अबुलफजलको वहांका काम पूरा करनेके लिये छोड आया। २० अमरदाद (श्रावण सुदी ३) को आगरेमें पहुंचा।

सन १०१० (संवत् १६५८) में शाहसलीम ३००० सजे हुए

सवारों और जंगी हाथियोंसे आगरेको रवाना हुआ। जाहिरमें बापसे मिलनेकी बात थी। पर दिलमें इरादा औरही था।

बादशाह भी इस धूमधडाकेसे उसका आना सुनकर बहुत घबराया।

इटावा आसिफखां दीवानकी जागीरमें था। सलीम जब वहां पहुंचा तो दीवानने एक लाल सलीमकी नजरके लिये भेजा। आसिफ-खां अकबरको सलीमकी ओरसे बहकाया करता था इससे सलीम का आना सुनकर मारे डरके वह घबरा गया। पर लालसे बला टल गई। क्योंकि वहीं बादशाहका फरमान पहुंचा। उसमें लिखा था कि बापके घर बेटेका इतने हाथी और सेना लेकर आना बापके जीको औरही विचारमें डालता है। यदि अपने लशकरकी हाजिरी देना चाहते हो तो हाजिरी होगई। अपने आदमियोंको जागीरके इलाकोंमें भेजकर अकेले आओ। यदि इधरसे पूरी तसल्ली न हो तो इलाहाबादको लौट जाओ। जब दिलजमई हो जावे तब आना।

यह फरमान पढकर सलीमने अकबरको अर्जी भेजी कि यह गुलाम बडे चावसे चौखट चूमने आता था। फसादियोंने गुलाम की ओरसे हजरतको बदगुमान करके कुछ दिनके लिये सेवासे अलग रखा। खैर मेरी अधीनता हजरतके दर्पणसे साफ हृदयमें आपही दरस जावेगी।

सलीम कुछ दिनों तक इटावेमें रहकर इलाहाबादको कूच कर गया। पीछेसे अकबरका दूसरा फरमान पहुंचा कि हमने बिहार और बंगालेके सूबे भी तुम्हारी जागीरमें दे दिये है अपने आदमी भेजकर अमल दखल करलो। पर सलीमने उधर लशकर भेजना उचित न देखकर इनकार लिख भेजा और इलाहाबाद पहुंचकर बादशाही करनी शुरू करदी। अपने नौकरोंको खान और सुल-तानके खिताब देदिये। उससे और तो सब बादशाही नौकर मिले हुए थे पर शैख अबुलफजल वजीर नहीं मिला हुआ था। बादशाह

हाकेके [illegible]पना इकरंगा खैरख्वाह समझता था इसलिये अकबरने
कि जव [illegible]नेका फ़रमान भेजकर लिखा कि फौज और लश्कर
खू[illegible] अबदुर्रहमानको सौंपकर आप बहुत जल्द हाजिर हो।
[illegible]जब सलीमको शेखके बुलानेकी खबर पहुँची तो उसके- आनेसे
अपनी बात बिगडती देखकर उसने सोचा कि जो वह आजावेगा
तो फिर और कुछ फसाद उठावेगा और जबतक वह रहेगा हमारा
जाना दरगाहमें न होगा इसलिये इसका-इलाज पहिलेसेही करना
चाहिये।

दक्षिण और आगरेका रास्ता राजा बरसिंहदेवके मुल्कमें होकर
था और यह बहादुर राजा बादशाहसे अकसर बिगड़ाहुआ रहता था
इसलिये शाहने इसीको शेखके-मारनेका हुक्म-दिया। राजा जाकर
घातमें बैठ गया। जब शेख गवालियरसे १० कोस पर पहुंचा तो
राजाने बहुतसे सवार प्यादोंके साथ जाकर शेखका रास्ता रोका
और उसको मारकर उसका सिर इलाहाबादमें भेज दिया।

शेखके मारे जानेसे उधर तो बादशाहको बड़ा दुःख हुआ और
इधर सलीम भी बहुत लज्जित हुआ।

बादशाहने सलीमको तसल्ली देकर लेआनेके लिये अपनी
लायिक बेगम सलीमासुलतानको रवाने किया। फतहलश्कर
नामका हाथी खिलअत और खासेका घोड़ा साथ भेजा।

सलीम दो मंजिल आगे बढ़कर बेगमको बड़े अदब और धूम
धडकेसे इलाहाबादमें लाया। और फिर उसके साथही बापकी
सेवामें रवाना हुआ। जब आगरेके इलाकेमें पहुंचा तो
बादशाहको अर्जी भेजी जिसमें लिखा था कि जब हुजूरने इस बन्दे
के कसूर माफ कर दिये हैं तो हजरत मरयममकानीसे अर्ज करें
कि वे तशरीफ लाकर गुलामको हुजूरकी खिदमतमें लेजावें और
हुजूरी ज्योतिषियोंको मुहूर्त देखनेका हुक्म होजावे।

बादशाहने अपनी मांके दौलतखानेमें जाकर पोतेकी अर्ज दादी
को सुनाई और उसके कबूल करलेने पर जवाबमें लिखा कि मिलने

के वास्ते मुहूर्त्तका क्या वहाना करते हो मिलनाही स्व।

इस फरमानके पहुंचतेही सलीमने जल्दीसे कूच करा बहुत से रयममकानी वेगम एक मंजिल आगे जाकर पोते दौलतखानेमें लेआई। वहां वादशाह भी आगया। वेटेने कदमोंमें सिर रख दिया वाप वेटेको छातीसे लगाकर अपने घ ले आया।

सलीमने १२ हजार मुहरें और ८७७ हाथी अकवरकी भेंट किये। उनमेंसे ३५० अकवरने रख लिये वाकी वापिस करदिये। दो दिन पीछे अपनी पगडी उतार कर सलीमके सिर पर रखदी। और राणाकी मुहिम पूरी करनेका हुक्म दिया। दशहरेके दिन सलीमने उधर कूच किया। निम्नलिखित अमीर वादशाहके हुक्म से उसके साथ गये।

जगन्नाथ, राय रामसिंह, माधवसिंह, राय दुर्गा, राय भोज, क़ाशमखां, करीवेग, इफ्तखार वेग, राजा विक्रमाजीत, मोटाराजा के वेटे शक्तसिंह, और दलीप, ख्वाज हिसारी, राजा शालिवाहन, मिरजा यूसुफखांका वेटा लशकरी, आसिफखांका भाई शाहकुली, शाहवेग कोलावी।

शाहने फतहपुरमें ठहरकर इस मुशकिल कामके लायिक लशकर और खजाना मिलनेकी अर्जी भेजी मगर दीवानोंने वेजा ढोल करदी। तब शाहने फिर वादशाहको अर्जी लिखी कि यह गुलाम तो हजरतके हुक्मको खुदाके हुक्मका नमूना समझकर वडे चावसे इस खिदमतको करना चाहता है मगर किफायती लोग इस मुहिम का सामान जैसा चाहिये नहीं करते हैं तो फिर वेफायदा अपनेको हलका करके वक्त खराव करना ठीक नहीं है। हजरतने कई दफे सुना होगा कि राणा पहाडोंसे वाहर नहीं निकलता है और हर रोज एक नये विकट स्थानकी ओटमें चला जाता है और जहां तक उनसे होसकता है लडता नहीं है। उसके कामकी तो यही तदवीर है कि लशकर हर तरफसे जाकर उन पहाड़ोंको

हाकेके शिकारकी तरह घेर ले और लशकर इतना चाहिये कि जब उसके सामने पड़ जावे तो काम पूरा कर सके। दौलत-ख्वाहोंने इसके सिवा जो और कोई सलाह देखी है तो बन्देको हुक्म होजावे कि सलाम करके अपनी जागीरमें चला जावे और वहां इस मुहिमका पूरा सामान करके राणाकी जड उखाडनेको रवाना हो क्योंकि अभी बन्देके सिपाही बहुत टूटे हुए हैं।

बादशाहने यह अर्जी पढकर अपनी बहन बखतुन्निसा बेगमको सलीमके पास भेजा और यह कहलाया कि तुम अच्छे मुहूर्त्तमें विदा हुए हो और ज्योतिषी लोग मिलनेकी शुभघडी नजदीकके दिनोंमें नहीं बताते हैं इसलिये अभी तो तुम इलाहाबादको सिधार जाओ फिर जब चाहो खिदमतमें हाजिर होजाना।

शाह सलीम यह फरमान पहुंचतेही मथुरा होकर इलाहाबाद चला गया। वहां कुछ दिनों पीछे खुसरोकी मा अपने बेटेके कपूतपनसे अफीम खाकर मर गई। इससे शाहको बहुतही रञ्ज हुआ बादशाहने यह सुनतेही फरमान भेजकर उसको तसल्ली दी।

बादशाहने सलीमको इलाहाबाद जानेकी आज्ञा दे तो दी थी मगर दिलसे उसका दूर रहना नहीं चाहता था बल्कि उसकी इस दूरीसे बहुत दुःखी था। तोभी फसादी लोग उसका दिल बेजार करनेके लिये हर रोज कोई न कोई शिगूफा छोडा करते थे और शाहके हमेशा नशेमें रहनेका गिला खैरख्वाहोंकी लपेटमें किया करते थे। इन्हीं दिनों शाहका एक वाकआनवीस और दो खिदमतगार एक दूसरेके इश्कमें फंसकर सुलतान दानियालकी पनाहमें जानेके लिये भागे थे पर रस्तेसे पकडे आये। शाहने गुस्सेसे वाकिआ नवीसकी खाल अपने सामने खिंचवाई एक खिदमतगारको खस्सी करा डाला और दूसरेको पिटवाया। इस सजासे उसकी धाक लोगोंके दिलोंमें बैठ गई और भागनेका रस्ता बन्द होगया।

जब स्वार्थी लोगोंने इस मामलेको खूब नमक मिरच लगाकर बादशाहसे अरज किया तो बादशाहने बहुतही नाराज होकर

कहा कि हमने आजतक एक जहानको तलवारसे फतह किया है मगर कभी अपने हजूरमें बकरेकी भी खाल उधेडनेका हुक्म नहीं दिया और हमारा बेटा अजब सङ्गदिल है जो अपने सामने आदमीकी खाल खिचवाता है।

इन्हीं लोगोंने यह भी अर्ज की थी कि शाह अफीमको शराब में घोलकर इतनी जियादा पीते है कि जिसको तबीअत भी बरदाश्त नहीं कर सकती है और फिर जब नशा चढता है तो ऐसेही ऐसे शर्मिन्दा करनेवाले हुक्म देतेहै। उस वक्त किसीको कुछ कहने की मजाल नहीं होती अकसर लोग तो भागकर छुप जाते हैं और जिनको हाजिर रहनाही पडता है वह बेचारे दीवारकी तसवीरसे बने रहते है। बादशाहको बेटेसे बहुत मुहब्बत थी इसलिये इन बातोंसे घबराकर उसने यही मुनासिब समझा कि खुद इलाहाबाद जाकर बेटेको साथ लेआवे।

इस इरादेसे ४ शहरेवर सन् १०१२ (भादों बदी १३) को रात को नावमें बैठकर रवाने हुआ। मगर नाव जमीनमें बैठ गई मल्लाह बहुत पचे पर नावको उस आधीरातमें पानीके अन्दर न लेजा सके इसलिये लाचार तडके तक जमनामें ठहरना पडा। दिन निकलते निकलते बडे बडे अमीर अपनी अपनी नावोंको बढाकर सलाम करने आये। अकसर स्याने आदमियोंकी समझमें यह शकुन अच्छा न था तोभी बादशाहके डरसे कोई लौट चलनेकी अर्ज नहीं कर सकता था।

बादशाह यहांसे चलकर डेरोंमें आये जो ३ कोस पर जमनाके किनारे लगे थे। उस समय मेह बड़े जोरसे बरसने लगा और साथही मरयममकानी बेगमके बीमार होजानेकी खबर आई जो बादशाहके जाने पर राजी नहीं थी। मेह दो तीन दिन तक लगातार बरसता रहा जिससे किसीका भी डेरा खडा न होसका। बादशाह तथा पासके और कई नौकरोंके सिवा किसीकी कनात नजर नहीं आती थी।

बुधवारकी रातको खबर आई कि मरयममकानीका हाल बिगड गया है हकीमोंने निरास होकर इलाज छोड दिया है। बादशाह फौरन लौटकर उसके पास आया मगर उसकी जबान तब बन्द होगई थी।

१८ शहरेवर सोमवारकी रातको मरयममकानीका देहान्त होगया। बादशाह और कई हजार अमीर, मनसबदार, अहदी और शागिर्दपेशोंने मुण्डन कराया। हजरत अपनी मांकी लाशको कांधे पर उठा कर कई कदम गये फिर तावूतको दिल्ली रवाने करके लौट आये। दूसरे दिन आपने मातमी कपडे उतारकर पोशाक बदली और सबलोगोंको खिलअत पहिनाये क्योंकि दसहरे का उत्सव था।

वेगमकी लाश १५ पहर में दिल्ली पहुंची और वहां हुमायूं बादशाहके मकबरे में दफनकी गई।

शाह सलीम यह खबर सुनतेही बापके रंजमें शरीक होनेके लिये आगरेमें पहुंच कर आदाब और तोरेका दस्तूर बजा लाया। बादशाह उसको छाती से लगाकर मिला खुशीकी नौबतें झडीं सब लोगोंका दिल खुश हुआ। शाहने २०० मुहरें सौ सौ तोलेकी ९ मुहरें पचास पचास तोलेकी १ मुहर २५ तोलेकी और पांच दो दो तोलेकी नजर कीं। एक हीरा लाख रुपयेका और ४ हाथी पेशकश किये। फिर बादशाह खासोआम दरगाह से उठकर महल में गया और कुछ बातें मेहरबानीकी करके सलीमसे कहनेलगा बाबा ऐसा मालूम होता है कि जियादा शराब पीनेसे तुम्हारे दिमागमें खलल आगया है तुम कुछ दिन हमारे दौलतखानेमें रहो तो उसकी दुरुस्तीका इलाज करें। यह कहकर उसको इबादतखानेमें बिठा दिया और भरोसेके खिदमत गारोंको निगहबानीपर मुकर्रर किया। सलीमकी मा बहनें हर रोज उसके पास आया करती थीं और तसल्ली देती थीं। जब१०दिन बीत गये और शराब पीनेकी आदतसे उसका कुछ पागलपन नहीं

पाया गया जैसा कि बादशाहसे कहा गया था तो उसको अपने दौलतखानें में जानेकी छुट्टी होगई और उसके कुछ नौकर जो बादशाहके डरसे इधर उधर छुप गये थे फिर आकर अपना अपना काम करने लगे।

शाह सलीम रोज बापसे सलाम करने जाताथा और बादशाह भी उस पर बहुत मेहरबानी करता था।

इन्हीं दिनोंमें शैख हुसैन जामके खत शाहके पास पहुंचे जिनमें लिखा था कि मैंने शैख बहाउद्दीन वलीको ख्वाबमें देखा, कहते थे कि सुलतानसलीम अब जल्द तख्त पर बैठेगा और दुनियाको लाभ पहुंचावेगा।

एक अजब बात और हुई कि शाहसलीमके पास गरांबार नाम एक हाथी बड़ा लडने वाला था। उससे लड सके ऐसा कोई हाथी बादशाही फीलखानेमें न था। मगर खुसरोके पास आपरुप नाम हाथी लड़ने में इक्का था। बादशाहने हुक्म दिया कि इन दोनोंको लडावें और खासेके हाथियोंमेंसे रणथंभण हाथीको मददके वास्ते लेआवें। जो हाथी हारे उसीको मदद वह करे। ऐसे हाथीको महावत लोग "तपांचा" कहते थे। यह बात भी लडाईके वक्त लडाके हाथियोंको अलग करनेके लिये बादशाहकोही निकाली हुई थी। ऐसेही चरखी उचारी, और लोहलंगर भी उन्होंने निकाले थे।

शाहसलीम और खुसरोने अर्जकी कि घोडोंपर सवार होकर पाससे तमाशा देखें। बादशाह भरोकेमें बैठा और शाहजादे खुर्रम को अपने पास बिठा लिया।

जब लड़ते लडते गरांबार हाथीने आपरूपको दबा लिया तो रणथंभण उसकी मददको बढ़ाया गया। शाहके आदमियोंने महावतको रोका और कई पत्थर भी मारे जिनसे उसकी कनपटी में खून निकला पर वह हुक्मके मुवाफिक हाथीको बढ़ा ले गया।

खुसरो और कई चुगल खोरोंने जाकर बादशाहसे शाहके आदमियोंकी गुस्ताखी और महावतके जखमी करनेका हाल बहुत बढ़ाकर कहा। जिससे बादशाहने बिगडकर शाहजादे खुर्रमको फरमाया कि तुम शाह भाईके पास जाकर कहो—शाह बाबा फरमाते हैं कि यह हाथी भी हकीकतमें तुम्हाराही है फिर इतनी जियादती करनेका क्या सबब है ?

शाहजादे खुर्रमने जाकर दादाका हुक्म बापसे इस खूबीके साथ कहा कि सलीमको जवाबमें कहना पडा,—मुझे हरगिज इस बातकी खबर नहीं है। मै हाथी और महावतको मारनेसे भी राजी नहीं हुआ हूं और न मैंने हुक्म दिया।

खुर्रमने अरज की कि यदि ऐसा है तो मुझे हुक्म होजावे मैं खुद जाकर आतिशबाज़ी और दूसरी तदबीरोंसे हाथियोंको अलग करदूं।

सलीमने खुशीसे उसको इजाजत देदी और उसने चरखी और बान छोड़नेका हुक्म दिया। और भी कई दूसरी तरकीबें कीगईं मगर कुछ न हुआ। आखिर रणथंभण भी हारकर भागगया और अब वह दोनों हाथी लड़ते लडते यमुनामें चले गये। गरांबार आपरूपसे लिपटा हुआ था और किसी तरहसे उसे नहीं छोड़ता था। अन्तको एक बड़ी नावके बीचमें आजानेसे अलग होगया।

शाहजादे खुर्रमने दादाके पास जाकर विनयकी कि शाहभाईने तो ऐसी जुरअत और गुस्ताखीका हुक्म नहीं दिया था न उनके जानते ऐसा काम हुआ। असल बात हुजूरके सामने कुछ फेरफार से अर्ज कीगई है।

२० जमादिउलअव्वल (कार्त्तिक वदी ७) को बादशाह बीमार हुआ। पहिले बुखार हुआ फिर दस्त आनेलगे हकीम अलीने बहुत इलाज किया पर कोई दवा न लगी।

उस वक्त दरबारमें राजा मानसिंह और खानआजम कर्त्तमकर्ता थे। खुसरो राजाका भानजा और खान आजमका जमाई था इस-लिये ये दोनों बादशाहके पीछे खुसरोको तखत पर बिठानेके जोड़ तोड़ में लगे हुए थे और जो लोग शाह सलीमको नहीं चाहते थे वह सब इनके पेटेमें थे। शाहने यह सब हाल देखकर किलेमें आना जाना छोड़ दिया, पर शाहजादे खुर्रमने दादाकी पाटी नहीं छोडी। उसको माने बहुत कहलाया कि इस वक्तमें दरबार दुश्मनोंसे भरा हुआ है वहां रहना अच्छा नहीं है बल्कि शाहके आज्ञासे उसकी माने खुद भी आकर यही बात उससे कहो पर उसने जवाब दिया कि जब तक दादा साहिबका दम है मैं उनकी खिदमतसे अलग होना नहीं चाहता।

इन्हीं दिनोंमें सलीमकी लौंड़ियोंसे दो बेटे जहांदार और शहरयार नामक और पैदा हुए। जो लोग सलीमकी जगह खुसरोको बादशाह बनाना चाहते थे उन्होंने सलीमकी मौजूदगी में जब अपनी बात चलती न देखी तो लजाकर सलीमकी सेवा में आये। तब सलीम दूसरे दिन बापको देखने गया और शाहजादे खुर्रमको शाबाशी देकर अपने दौलतखानेमें लेआया।

१३ जमादिउस्सानी (कार्त्तिक सुदी १५ संवत् १६६२) बुधवार की रातको बादशाहका देहान्त होगया। दूसरे दिन वह सिकन्दरेके बागमें दफन किया गया और शाह सलीम अपना नाम जहांगीर बादशाह रखकर आगरेके किलेमें तख्त पर बैठा। आगे जो कुछ हुआ वह जहांगीरने खुद अपनी कलमसे लिखा है।

नूरजहां बेगम।

नूरजहांका दादा ख्वाजा मुहम्मद शरीफ तेहरानी था वह खुरासानके हाकिम मुहम्मदखांका वजीर था। फिर ईरानके बादशाह तहमास्प सफवीका नौकर होकर सर्वके सूबेका वजीर हुआ। उसके दो बेटे आका ताहिर और मिरजागयासबेग थे।

मिरजा गयासबेग बापके मरे पीछे दो बेटों और एक लड़की समेत हिन्दुस्थानको रवाना हुआ। कन्धारमें उसके एक लड़की और हुई।

मिरजा गयासबेग फतहपुरमें पहुँचकर अकबर बादशाहकी खिदमतमें रहनेलगा। बादशाहने उसको लायक देखकर बादशाही कारखानोंका दीवान कर दिया। वह बड़ा मुन्शी, हिसाबी, और कवि था। फुरसतका वक्त कवितामें बिताता था काम वालोंको खूब राजी रखता था। मगर रिशवत लेनेमें बड़ा बहादुर था।

जब अकबर बादशाह पञ्जाबमें रहा करता था तो अली कुली-बेग अस्तंजलू जो ईरानके बादशाह दूसरे इसमाईलके पास रहने-वालोंमेंसे था ईरानसे आकर नौकर हुआ और तकदीरसे बादशाहने उसकी शादी मिरजा गयासबेगकी उस लड़कीसे करदी जो कन्धार में पैदा हुई थी। फिर अलीकुलीबेग जहांगीर बादशाहके पास जा रहा और शेरअफगनखांके खिताबसे सरफराज हुआ।

जब जहांगीर गद्दी पर बैठा तो उसने मिरजा गयासको एतमा-दुद्दौला खिताब देकर आधे राज्यका दीवान बनाया। और शेर-अफगनखांको बंगालेमें जागीर देकर वहां भेज दिया। उसने बंगालेमें जाकर दूसरेही साल वहांके सूबेदार कुतुबुद्दीनखांको मारा और आप भी मारा गया। वहांके कर्मचारियोंने मिरजा गयासकी लड़कीको जहांगीरके पास भेज दिया। जहांगीर कुतु-बुद्दीनखांके मारे जानेसे बहुत नाराज था। क्योंकि कुतुबुद्दीनखां उसका धाय भाई था। इससे उसने वह लड़की अपनी सौतेली माता रुकैया सुलतानको देदी। वहां वह कई वर्ष साधारण दशा में रही। जब उसका भाग्य उदय होने पर आया तो एक दिन नौरोजके जशनमें जहांगीरकी नजर उस पर पड गई और वह पसन्द आगई। बादशाहने उसे अपने महलकी लौंडियोंमें दाखिल कर लिया। फिर तो जल्द जल्द उसका दरजा बढने लगा। पहले नूरमहल नाम हुआ फिर नूरजहां बेगम कहलाई। उसके

सब घरवाले और नौकर चाकर बड़े बड़े पदों और अधिकारों पर पहुंच गये। उसका बाप एतमादुद्दौला कुल मुखतार और बड़ा भाई अबुलहसन एतकादखांका खिताब पाकर खानसामान हुआ। एतमादुद्दौलाके गुलामों और ख्वाजासराओं तकने खान और 'तरखान' के खिताब पाये। 'दिलाराम' दाई जिसने बेगमको दूध पिलाया था हाजी कोकाको जगह औरतोंकी "सदर" (१) हुई। औरतोंको जो जीविका मिलती थी उसकी सनद पर वह अपनी मुहर करती थी जिसको सदरुस्सुदूर (२) भी मंजूर रखता था।

"खुतबा" तो बादशाहके नामकाही पढा जाता था बाकी जो कुछ बादशाहीकी बातें थीं वह सब नूरजहां बेगमको हासिल हो गई थीं। वह कुछ अरसे तक झरोकेमें बादशाहकी जगह बैठती और सब अमीर उसको सलाम करने आते और उसके हुक्म पर कान लगाये रहते थे। यहां तक कि सिक्का (३) भी उसके नामका चलने लगा था जिसका यह अर्थ था—

जहांगीर बादशाहके हुक्मसे और नूरजहां बादशाहके नामसे सोनेने सौ गहने पाये अर्थात् सौगुनी इज्जत पाई।

फरमानोंके ऊपर भी बेगमका तुगरा इस प्रकार होता था—

हुक्म उलियतुल आलिया नूरजहां बेगम बादशाह।

यहां तक हुआ कि जहांगीर बादशाहका नामही नाम रह गया। वह कहा भी करता था कि मैंने सलतनत नूरजहां बेगमको देदी है। मुझे सिवा एक सेर शराब और आध सेर गोश्तके और कुछ नहीं चाहिये।

बेगमकी खूबी और नेकनामीकी बात क्या लिखी जाय उसमें बुराई थोड़ी और भलाई बहुत थी। जिस किसीका काम अड़ जाता और वह जाकर बेगमसे अर्ज करता तो उसका काम निकाल देती

(१) दानाध्यक्ष (२) प्रधान दानाध्यक्ष।

(३) इस सिक्केमें सन् २१ और जलूस हिजरी सन् १०३० हैं।

थी और जो कोई उसकी दरगाहकी पनाहमें आजाता था फिर उस पर कोई जुल्म नहीं कर सकता था। उसने अपनी माहवीमें कोई ५०० अनाथ लडकियोंका व्याह कराया और उनको यथायोग्य दहेज भी दिया। नूरजहांके घरानेसे लोगोंको बहुत कुछ लाभ पहुंचा।

जहांगीर बादशाहके वजीर।

१ राय घनसूर—(बादशाह होनेसे पहिले)
२ बायजीदबेग काबुली (तथा)
३ ख्वाजा मुहम्मददोस्त काबुली (बादशाह होनेके पीछे वजीर हुआ और ख्वाजाजहांका खिताब पाया।)
४ जानबेग (वज़ीरुल मुमालिक)
५ शरीफखां (बादशाह होनेके पीछे अमीरुलउमराका खिताब पाया)
६ वजीरखां मुहम्मद मुकीम।
७ मिरजा गयास तेहरानी खिताब एतमातुद्दौला।
८ जाफरबेग कजवीनी (आसिफखां)
९ ख्वाजा अबुलहसन।
१० आसिफखां यमीनुद्दौला नं० ७ का बेटा।

बडे बड़े मौलवी।

१ मुल्लारोज बहाय तबरेजी।
२ मुल्ला शुक्रउल्लाह शीराजी।
३ मीर अबुलकासिम गीलानी।
४ मुल्लाबाकर कश्मीरी।
५ मुल्लामुहम्मद सीसतानी।
६ मुल्ला मकसूदअली।
७ काजी नूरउल्लाह।
८ मुल्ला फाजिल काबुली।
९ मुल्ला अबदुल हकीम स्यालकोटी।

१० मुल्ला अवदुललतीफ सुलतानपुरी।

११ मुल्ला अवदुर्रहमान।

१२ मुल्ला फाजिल कावुली।

१३ मुल्ला हसन मुरागी।

१४ मुल्ला महमूद, जौनपुरी।

१५ भूरा गुजराती।

१६ मुल्लानफसाय, सोसतरी।

वादशाहके हकीम।

१ हकीम रुकनाय, काशी।

२ हकीम सदरा, (मसीहुज्जमां)

३ हकीम अवुलकासिम गीलानी (हकीमुल्मुल्क)

४ हकीम मोमनाई, शीराजी।

५ हकीम रूहउल्लह, कावुली।

६ हकीम वैद्य गुजराती।

७ हकीम तकी, गीलानी।

८ हकीम हमीद, गुजराती।

वादशाहके कवि।

१ वावा तालिव इसफहानी।

२ हयाती, गीलानी।

३ मुल्ला नजीरी, नेशापुरी।

४ मुल्ला मुहम्मद सूफी, माजिन्दरानी।

५ तालिवेआमिली, (मलिकुश्शोरा)।

६ सईदाय गीलानी, जरगरवाशी।

७ मीर मासूम, काशी।

८ कौलशूरा, काशी।

९ मुल्ला हैदर, चगताई।

१० शैदा।

हाफिज या कुरानको कण्ठ करने वाले।

१ हाफिज अली।
२ हाफिज अबदुल्लाह।
३ उस्ताद मुहम्मदखानी (थादो)।
४ हाफिज चेला (हाफिज बरकत)।

हिन्दुस्तानी गवैये।

१ चतुरखां।
२ माखू।
३ खूमरा।
४ जहांगीरदाद।
५ खुसरोखां
६ परवेजदाद।
७ खुर्रमदाद।
८ नाथूजी।

जहांगीर बादशाह।

पहला वर्ष।

सन् १०१४।

अगहन वदी १ गुरुवार संवत् १६६२ से वैशाख सुदी १ चन्द्रवार सं० १६६३ तक।

बादशाह लिखते हैं कि मैं ईश्वरके अति अनुग्रहसे गुरुवार ८ (१) जमादिउस्सानी सन् १०१४ को एक घण्टा दिन चढ़े ३८ वर्षकी अवस्थामें राजधानी आगरेमें तख्त पर बैठा। मेरे बापके २८ वर्षकी आयु होने तक कोई पुत्र जीता न था। इस लिये वह सन्तानके वास्ते फकीरोंसे प्रार्थना किया करते थे और उन्होंने अपने मनमें यह प्रतिज्ञा की थी कि अब जो कोई लडका होगा तो पैदल ख्वाजाजीकी यात्राको जाऊंगा। उस समय शैख सलीम नाम एक महात्मा सीकरीके पहाड़में रहता था। उधरके मनुष्योंको उसमें बहुत श्रद्धा थी। मेरे पिता भी उसके पास गये और एक दिन उसको अपने अनुकूल देखकर पूछा कि मेरे कितने पुत्र होंगे? उसने कहा कि परमेश्वर आपको तीन पुत्र देगा। पिताने कहा कि मैं प्रथम पुत्रको तुम्हारे चरणोंमें डालूगा। शैखने कहा हमने उसको अपना नाम दिया।

---

(१) ८ गुरुवारकी तिथि लेखकके दोषसे या और किसी भूलसे मूलमें गलत लिखी गई है। क्योंकि जब अकबर बादशाहकी मृत्यु १४को हुई थी तो सलीम उससे पहलेही ८ को किस रीतिसे तख्त पर बैठ सकता था।

इकबालनामये जहांगीरीमें १५ जमादिउस्सानी गुरुवार लिखी है, यह तारीख सही मालूम देती है।

पञ्चांगके हिसाबसे १३ या १४ होती है सो यह चन्द्रदर्शनका

जाना ; सरबुलन्दरायको ५ हजारी मनसब और रायराज का खिताब ; शाहजहांका माफी मांगना ; अपने बेटोंको और १० लाख रुपयोंकी भेट बापकी सेवामें भेजना।

५६७ सुलतान होशंग और खानखानांका बादशाहके पास आना, महावतखाको बंगाले जानेका हुक्म।

तेईसवां वर्ष (संवत् १६८३—८४)

५६९ कशमीरसे कूच, हुमा पक्षीकी जांच।

५७० बादशाह लाहोरमें, ईरानका एलची, शेर और बकरीकी मुहब्बत, दक्षिणका दीवान, महाबतखांसे तकरार।

५७१ महावतखांका बंगालेजाना, तहमुर्स और होशंगका विवाह, मोतमिदखांका बख्शी होना, बादशाहका काबुल जाना, अहदादका सिर।

५७२ बादशाहकी बड़ी माकी मृत्यु, खानखानां पर मेहरबानी, महाबतखां पर कोप।

इक्कीसवां नौरोज।

५७३ महावतखांका आना।

५७४ महावतखांके राजपूतोंका भटनदीपर बादशाहको घेरलेना।

५७६ महावतखांका बादशाहको अपने डेरे पर लेआना।

५७७ नूरजहां बेगमका लड़नेको आना।

५८० बलखका एलची, आसफखांका कैद होजाना।

५८१ काफिरोंका हाल।

५८२ जगतसिंहका भागना, बादशाहका काबुलमें पहुंचना, बाबर बादशाह मिरजा हिन्दाल और मिरजामुहम्मद हकीमकी कबरों पर जाना, महाबतखांके राजपूतोंकी हार।

५८३ अम्बर हबशीका मरना—अबदुर्रहीम खानखानांका लाहोर में आना।

५८४ दाराशिकोह और औरंगजेबका आना, शिकारके वास्ते रस्सा, शाहजहांका ठट्ठे जाना, महाराजा भीमके बेटे कृष्ण-सिंहका अजमेरमें मर जाना।

५८५ काबुलसे कूच, परवेजकी बीमारी, दाराशिकोह और औरंगजेबका १० लाखकी भेट लेकर दादाकी सेवामें पहुंचना— सुलतान दानियालके बेटे बायसंकरका शाहजहांको छोड़ कर मारवाड़में आना।

५८६ महावतखांका निकाला जाना।

५८८ भटसे उतरना, लाहोर पहुंचना, महावतखांका खजाना जब्त होना।

५८९ खानखानां महावतखां पर, मुकर्रबखांको बंगालेका सूबा, शाहजादे परवेजका मरना, बलखके वकीलोंकी विदा।

५९० अबूतालिबको शाइस्ताखांका खिताब, दक्षिणियोंकी तावेदारी शाहजहांका ठट्ठेमें मुकाबिला।

५९१ शाहजहांका ईरान जाना मौकूफ रखकर दक्षिणको लौटना जुनेरमें आकर रहना, आसफखांका मनसब।

५९२ दक्षिणियोंका फसाद, मीर मोमिनको सजा, खानजहांका निजामुलमुल्कको बालाघाटका मुल्क देदेना।

५९३ हमीदखां हबशी और उसकी मरदानी औरतका आदिलखां पर फतह पाना।

५९४ तूरानके वकीलका आना, मुकर्रबखांका डूबना, खानखानां का मरना और उसके बड़े बड़े काम।

५९५ बाधोंके राजा अमरसिंहका आना।

५९६ महावतखांका शाहजहांके पास पहुंचना, खानजहांका सिपहसालार होना और उसका अबदुल्लहखांको कैद करना, बादशाहका कशमीर जाना।

वाईसवां नौरोज।

५९७ फिदाईखांको बंगालेकी अबूसईदको पटनेकी और बहादुर खांको इलाहाबादकी सूबेदारी, बादशाहकी बीमारी, शहरयारका बीमार होना।

चौबीसवां वर्ष (संवत् १६८४)

५९८ लाहोरको लौटना, जहांगीरकी मृत्यु, दावरबख्शको तख्त पर बिठाना।

ग्यारहवां वर्ष (सं० १६७१—७२)

तेरहवां वर्ष (संवत् १६७३—७४)

चौदहवां वर्ष (संवत् १६७४—७५)

॥ श्रीः ॥

सूचीपत्र।

(दूसरे भागका)

तीसरा नौरोज।

चौथा वर्ष (संवत् १६६५—६६)

चौथा नौरोज।

पांचवां वर्ष (संवत् १६६६—६७)

११५ हकीम अलीका मरना ; बरखुरदारको खानआलमका खिताब ; ३३॥ सेरका एक तरबूज ; सौमतुलादान ; परवेज का दक्षिण भेजना ।

११६ राणाकी लड़ाई पर अबदुल्लहखांका भेजा जाना ; दूध देने वाला बकरा ; सूरकी हुकूमत ; राजा मानसिंहके वास्ते तलवार भेजना ; दक्षिण पर लश्कर भेजना ।

११७ राणाकी लड़ाईमें उदयपुरके लश्करकी सहायता ; परवेज और खुर्रमको लाल तथा मोती देना ; राजा जगन्नाथको ५ और जयसिंहको ४ हजारी मनसब ; शहरयारका गुजरातसे आना ; परवेजका दक्षिण जाना ; राणाका विकट घाटियोंसे लड़कर निकल भागना ।

११८ परवेजको खानदेश बरार और आसेरका किला दिया जाना ; भांग गांजेका निषेध ; वृश्चिक संक्रान्तिका दान ; दक्षिण पर नई सेना ; खुर्रमकी सगाई ।

११९ दक्षिणके युद्धको फिर एक फौज ; नक्कारा देनेका प्रबन्ध ; चन्द्रग्रहण ; रामचन्द्र बुन्देला ; दक्षिणसे मुल्ला हयातीका खानखानांकी भेट लेकर आना ।

१२० खानजहांकी भी दक्षिणमें नौकरी बोली जाना ; मेवाड़में जो फौज थी उसमेंसे राजा वरसिंहदेव वगैरहको दक्षिण जानेका हुक्म होना ।

१२१ शिकारमें नीलगायके भड़ककर भाग जाने पर एक जलोटर (अरदली) को मरवाना और कहारोंके पांव कटवाना ।

पांचवां नौरोज ।

नौरोजका दरबार ; अमीरोंकी भेट ।

१२२ सारंगदेवका दक्षिण भेजना ; परगने बाड़ीसे शिकार खेल कर रूपवासमें आना ।

छठा नौरोज।

आठवां वर्ष (संवत् १६६८—६९)

सातवां नौरोज।

१५५ खानखानांका फिर दक्षिणमें भेजा जाना।

१५६ श्यामसिंह और धर्म्माङ्गद भदोरियेके मनसब बढना ; आसफ खां वजीर और मिरजा गाजीका मरना ; रूप खवासको खवासखांकी पदवी और सरकार कन्नौजकी फौजदारी पाना ; खुर्रमका दूसरा विवाह।

१५७ अबदुर्रज्जाक वख्शीका सूबे ठट्ठाकी रक्षा पर नियत होना और इसातरखांका मनसब बढाना ; फसद खुलवाना ; किशनदासको राजाकी पदवी ; ताजखांकी पदवृद्धि।

१५८ शुजाअतखांकी विचित्र मृत्यु ; बंगालेके १६० हाथी ; कमाऊंके राजाटेकचन्दकी विदा ; अबुलफतह दक्षिणीका बीजापुरसे आना।

१५९ मिरजा रुस्तम सफवीको सूबे ठट्ठेकी हुकूमत मिलना ; राय दलपदका मिरजा रुस्तमके साथ नियत होना ; अबुलफतह को नागपुरमें जागीर मिलना ; तुलादान ; उसमान पठान के भाईबन्दोंका बंगालेमें आना।

१६० मोतमिदखांकी भेट ; राय मनोहर और बरसिंहदेवके मनसब बढ़ना ; भारत बुन्देला और अमीरुलउमराकी मृत्यु ; जफरखांको बिहारकी सूबेदारी ; शिकार ; सलीमासुलतान की मृत्यु।

१६१ काबुल ; राजा रामदासकी भेट ; दक्षिणका हाल ; खान-आजमको राणा पर जानेका हुक्म।

नवां वर्ष (संवत् १६६९—७०)

१६२ बादशाह आगरेमें ; शिकारकी संख्या।

आठवां नौरोज।

१६३ नौरोजका उत्सव ; मोतमिदखांको एक नये मकानमें रहने में कष्ट होना ; मकानके शुभाशुभ देखनेका नियम।

१६४ मग जातिके लोगोंका हाल जो पेगूसे आये थे ; बादशाहका खुर्रमके घर जाना ; मेष संक्रान्तिका उत्सव ; सोमयाईकी जांच।

इस पुस्तकके फारसी तुर्की और अरबी शब्दोंके अर्थ।

अ

अकलीम—भूखण्ड, देश
अकीक—लालमणि
अबरशा—एक प्रकारका घोड़ा
अरगली—एक पशु
अर्गवां—एक लाल फूल
अर्जवेगी—ड्योढीदार
अलतमश—फौजका अगला दल
अशकन—एक फल
अस्प—घोड़ा

आ

आवदार—जल रखनेवाला
आलतमगा—लालछाप
आलूवालू—एक मेवा

इ

इकबाल—भाग
ईमामिया—शीआ जातिके मुसलमान

उ

उकाव—एक प्रबल पक्षी
उजबक—एक जातिके मुगल
उरवसी—कंठी, माला
ऊदविलाव—एक जानवर

क

कजलबाश—लालटोपीवाले ईरानी
कबा—अचकन
कब्ज—बूंटा
कमरगा—बड़ा शिकार
करावल—बन्दूकची, लशकरोंमें आगे चलनेवाला, शिकारी
करदी—जाकट
करोड़ी—तहसीलदार
कर्रानी—पठानोंकी एक जाति
कहरुबा—एक दवा
काकड़—पठानोंकी एक जाति
काज—राजहंस
कारलग—गक्कडोंकी एक जाति
कारबंदीक—पच्चीकारी
कारस्तानी—युक्ति
कालीन—गलीचा
कुफ्र—अधर्म्म
कुरीशा—एक पक्षी
कुलंग—कौंच पक्षी
कोतापाचा—एक पशु
कोरनिश—झुककर सलामकरना
कोलकची—खिदमतगार
कोल—बीचकी फौज
कोर—हथियार
कोरची—सिपाही

कौरचीबाशी—सिपाहियोंका जमादार या हथियारोंका दारोगा

कौशबेगी—शिकारखानेका दारोगा

कौशची—मीरशिकार

ख

खताई—चीनीलोग, या चीनकी वस्तु

खपवा—एक शस्त्र

खाका—मसौदा

खातिमबन्दी—हाथीदांतका काम

खुतबा—नमाजके पीछे बादशाह का नाम लेना

खुशामदरामद—लल्लोपत्तो

ख्वाजासरा—जनानी ड्योढ़ीका नाजिर, हीजड़ा

ख्वारी—खराबी

ग

गनीमत—लूट

गुजरानी—आगे रखी

गुमराही—अनीति

गुलअफशां—एक बागका नाम

गुलखतमी—एक फूलका नाम

गुलजाफरी—एक फूलका नाम

गुललाला—एक फूलका नाम

गुगला—एक पक्षी

गैब—परोक्ष

गोरखर—एक जातिका बड़ा गधा

गौल—बीचकी फौज

च

चरज—एक पक्षी

चरन—चौथाई मोहर

चन्दावल—पिछली फौज

चपावल—पीछेकी फौज

चिनार—एक वृक्ष

चीतल—एक पशु

चुगद—एक जातिका उल्लू

चौखण्डी—चौबुरजी

चौगाशी—एक फूल

ज

जकात—महसूल

जमधर—कटार

जरज—एक पक्षी

जरनगार—बायें हाथकी फौज

जर्दालू—एक फल

जर्दतिलक—एक पक्षी

जलवानी—हाथी घोड़ेका इनाम

जाला—घडनाव

जिरगा—बिरादरी, पंचायत

जीगा—किरीट कलगी

जुरअत—साहस

जुर्रा—नर बाज

त

तकला—एक पक्षी

इमामकुलीको मा ; जंगका बच्चा ; खुर्रमकी अर्जी ।

४७१ बादशाहकी बखशिशें ; ऊदाराम दक्खिणी ; दिल्लीकी सूबे-
दारी ; गजरत्न हाथी ।

४७२ रूपरत्न घोड़ा ; किश्तवार ; उड़ीसा ; काजीनसीर ; अमी-
रोंके इजाफे ; कन्दहार ।

४७३ जम्बील बेगको बखशिश ; इनसाफ ; आसफखांके घरजाना;
कथ्याणलुहारका बादशाहके कहनेसे छतसे कूदकर मरना ।

४७४ बादशाहको दमेकी बीमारी और हकीमोंकी शिकायत ।

४७५ सौरपक्षीय तुलादान और नूरजहांका उत्सव करना ।

४७६ जोतकरायको रुपयों और मोहरोंमें तोलना ; भेट ; बाद-
शाहका बोझ ; शाह परवेजका आना ।

४७७ खुर्रमको २० लाख रुपये भेजना ; नूरजहां बेगमकी माका
मरना ।

४७८ अबदुल्लहखांको विना छुट्टी आनेका दण्ड ; हकीमकी विदा.
उत्तरको यात्रा ; अवधकी सूबेदारी ।

अठारहवां वर्ष (संवत् १६७८—७९)

४७९ शाह परवेजका बिहारको जाना ; बादशाह दिल्लीमें : जादू-
रायके लिये नारायणदास राठौडके हाथ खिलअत भेजना :
बादशाह हरिद्वारमें ।

४८० राजा भावसिंहका देहान्त ; आलूतवा ।

४८१ उकाबका मांस ; सरहिन्द ; इलाहाबास ; व्यास नदी . बल-
वाडेका जमींदार वासू ; फूलपकार पक्षी ।

४८२ मुर्गे जरींन ; चन्द्र तुलादान ; एतमादुद्दौलाकी मृत्यु ।

४८३ कांगडेको कूच ; चम्बेके राजाकी भेट ।

४८४ कांगडेके किलेमें प्रवेश ; कांगड़ेकी कथा , भवन ।

४८५ सदारकी पहाडी ; कांगड़ेसे कूच ।

४८६ नूरपुर ; जंगली मुर्गे : राजा वासूका ; धमरीका नाम नूर-
पुर रखना ; एक मौनीको शराब पिलाना ।

४८७ एतमादुद्दौलाका लश्कर नूरजहांको दिया जाना ; खुसरो का मरना ; राजा कृष्णदासका मनसव बढ़ना।

सतरहवां नौरोज।

४८८ शाह ईरानका विचार कन्दहार लेनेका ; वादशाह हसनअवदालमें ; ख्वाजा अवुलहसनके लश्करकी हाजिरी ; शिकार।

४८९ हकीम मोमिना ; महावतखां कावुलको और एतवारखां आगरेकी सूवेदारी पर ; वादशाह काश्मीरमें ; फौजदारीके करकी माफी ; अमीरोंके मनसव वढ़ना।

४९० शाह ईरानका कन्दहारका लेलेना ; ईरान पर चढ़ाईकी तैयारी।

४९१ काश्मीरके फकीरोंके वास्ते गांव ; किश्तवारके जमींदारोंका वदल जाना ; खुर्रमकी अरजीसे नाराजी, कन्दहारके वास्ते लश्करकी तैयारी ; किश्तवार।

४९२ ज्योतिष और रमलका चमत्कार ; जोतकराय सादिकखां और रम्माल स्त्रीको इनाम ; दक्षिणीसेना ; खुर्रमके कौतुक।

४९३ खुर्रमका दक्षिणसे आकर मंडूमें ठहरना ; राजा वरसिंहदेवको वुलाना; प्रणभंग और फिर वन्टूकसे शिकार खेलना।

४९४ काश्मीरसे कूच ; शहरयारको कन्दहार जानेका हुक्म ; कीमती मोती; फस्द; सौरतुलादान; गङ्गाजलकी परीक्षा।

४९५ हीरापुर ; कुंवरसिंह किश्तवारका राजा ; हैदर मलिक ; भंवर ; खुर्रम।

४९६ वादशाह लाहोरमें।

उन्नीसवां वर्ष (संवत् १६७९—८०)

४९७ शाह ईरानके वकीलोंका आना ; राजा वरसिंहदेवके लाने को सारंगदेवका आना ; ईरानके एलचियोंकी विदा ; ईरानके वादशाहका पत्र।

५४० डूबी वस्तुका मिलना।

५४१ नर और मादा तीतरकी पहचान, पच्चियोंकी शारीरिक दशा ; मछलियोंकी जातियां।

उन्नीसवां नौरोज।

५४२ सवारीके समय काने कोढी नकटे और कनकटे आदमियों के सामने आनेका निषेध ; वेदौलत पर परवेज ; खानजहां आगरेमें ; परवेजका विवाह।

५४३ जादूराय और ऊदारामका बुरहानपुरके किलेसे वेदौलतके हाथी लेकर परवेजके पास आना; दच्चिणियोंकी तावेदारी; आदिलखांका ५००० सवार भेजना स्वीकार करना ; परवेजका दच्चिणसे कूच।

५४४ आदिलखांका बरताव ; सांपके मुंहमें सांप ; वेदौलतका उड़ीसे पहुंचना और उसका हुक्म इब्राहीमखां सूबेदार बंगालेके नाम।

५४५ यहां तक मोतमिदखांका लिखा है आगे मुहम्मद हादीने लिखकर किताब पूरी की है।

५४६ इब्राहीमखांका जवाब ; शाहजहां बर्दवान और अकबरनगर में ; इब्राहीमखांका ढाकेमें अधीन होजाना ; शाहजहांका दाराबखांको बंगालेकी हुकूमत देकर आगे बढ़ना।

५४८ शाहजहां बिहारमें ; राणाके बेटे भीमका पटनेमें अमल करना ; शाहजहांका राजा भीम और अबदुल्लहखांको इलाहाबाद पर भेजना ; दच्चिणका हाल।

५५१ बादशाह काश्मीरमें ; अबदुलअजीजखांका शाह ईरानको कन्दहार सौंपनेके कुसूरमें माराजाना, आरामबानू बेगमका मरना ; उजबकोंका काबुलकी सरहदमें आकर लड़ना ; हारना।

५५२ दच्चिणका हाल ; खानखानांका जो परवेजके पास आगया था कैद किया जाना और उसके गुलाम फहीमका मारा

जाना ; शाहजहां और परवेजकी लड़ाई ; राजा भीमके काम आने पर शाहजहांका दक्षिणको लौटना।

५५७ महावतखांको खानखानांका खिताव और ७ हजारी मनसब ; दक्षिणका हाल ; मलिक अम्बरका कुतुवुल्मुल्क और आदिलखांको दवाना ; सरवुलन्दरायका आदिलखांको मदद करना ; आदिलखांकी हार ; वादशाही अमीरोंका लौट आना ; ऊदाजीराम और जादूरायका भाग जाना ; अम्बरका अहमदनगरके किलेको घेरना।

५६० वलखसे नजर मुहम्मदखांका खत आने पर कावुलके सूवेदारको वदल देना ; दक्षिणका हाल सुनकर कश्मीरसे लौटना ; परवेज विहारमें और शाहजहां दक्षिणमें।

इक्कीसवां वर्ष (संवत् १६८१—८२)

५६१ शाहजहांका दारावखांको वंगालेमें छोड़ना ; दारावखांका खानजादखां वंगालेमें परवेजकी दक्षिण जानेका हुक्म ; आगरेकी सूवेदारी ; दक्षिणकी हकीकत सरवुलन्दरायका इरादा दक्षिणियोंसे लड़नेका।

५६२ कश्मीरको कूच ; शाहजहां दक्षिणमें ; सरवुलन्दरायका मुकाविला ; शाहजहांका वालाघाटको लौट जाना।

५६३ खानआजमका मरना।

५६४ खानजहां गुजरातकी सूवेदारी पर।

वीसवां नौरोज।

वादशाह भंवरमें ; आसफखांका वेटा लाहोरकी हुकूमत पर ; वादशाह नूरावादमें; मंजिल दरमंजिल मकान वनानेका हुक्म।

५६५ सुन्दर झरने और फूल ; कश्मीर पहुंचना ; केसरके गुणोंकी परीक्षा ; कांगड़ेमें अनोराय।

वाईसवां वर्ष (संवत् १६८२—८३)

५६६ सरदारखां और मुस्तफाखांका मरना ; शाहजहांका देवल गांवमें पहुंचना ; दक्षिणियोंका वुरहानपुर घेरना और उठ

मनसबदारोंकी सूची।

मुसलमान।

अ।

अव्वाखां काश्मीरी	१ हजारी ३०० सवार
अकबरकुली जलालका बेटा	१ हजारी १००
अकीदतखां	१२ सदी ३००
अजीजुल्लह यूसुफखांका बेटा	१ हजारी ५००
अबुल कासिम तिमकीन	१ हजारी
अबुलफतह हकीम	१ हजारी ३००
अबुलहसन सुलतान दानियालका दीवान	१॥ हजारी ५००
ख्वाजा अबुलहसन मीर बख्शी	५ हजारी ५०००
अबूसईद, एतमादुद्दौलाका पोता	१ हजारी ५००
अबदुलकरीम मामूरखां	२ हजारी २०००
अबदुलखां कांगड़ेका फौजदार	२ हजारी ५००
अबदुलअजीजखां नक्शबन्दी हाकिम कन्दहार	३ हजारी २०००
अबदुर्रज्जाक मामूरी	१८ सदी ३००
अबदुर्रहीम खरयूजवाशी	२॥ हजारी १५००
मिरजा अबदुर्रहीमखां खानखानां सिपहसालार	७हजारी ७०००
अबदुर्रहीम अहदियोंका बख्शी	७ सदी २००
शेख अबदुर्रहमान फाजिलखां शेख अबुल-फजलका बेटा	२हजारी २०००
ख्वाजा अबदुललतीफ कीसबेगी	१ हजारी ४००
सैयद अबदुल वारिस	५ सदी ५००
अबदुल्लहखां फीरोजजङ्ग	५ हजारी २५००

अबदुल्लह खानआजमका बेटा	१ हजारी ३००
असदुल्लह हकीम	५ सदी
अमानुल्लह महाबतखांका बेटा	२ हजारी ८००
अमानतखां मुतसद्दी सूरत बन्दर	२ हजारी ४००
अमीरखां, इज्जतखांका भाई	१ हजारी १०००
अमीरुलउमरा शरीफखां	५ हजारी ५०००
अलिफखां कायमखानी	२ हजारी १५००
अलहदाद पठान	२॥ हजारी १२००
अलहयार	१ हजारी ५००
अली, सैफखां बारहका बेटा	६ सदी ४००
हकीम अली	२ हजारी
अली, अकबर शाही	४ हजारी
अलीकुलीबेग दरमन	१॥ हजारी
अलीखां तातारी, खिताब नुसरतखां	२ हजारी ५००
सैयद, अली बारहा	२॥ हजारी १०००
ख्वाजा अलीबेग	४ हजारी
ख्वाजा अली मिरजा किलेदार अहमदनगर	५ हजारी ५०००
मुसा असद	२ हजारी २००
असदबेग खानदौरांका तीसरा बेटा	१ हजारी १ हजार
असदुल्लह मीर सैयद हाजी	५ सदी एक सौ
असालतखां खानजहांका बेटा	२ हजारी १ हजार
अहतमामखां मीरबहर	२ हजारी १५ सौ
अहमदबेगखां हाकिम कशमीर	२॥ हजारी
अहमदबेगखां, इब्राहीमखां फतहजंगकाभतीजा	२ हजारी ५००
अहमद बेग	२॥ हजारी १५००
अहसनुल्लह अबुलहसनका बेटा	१॥ हजारी ८००

आ ।

ख्वाजा, आकिल

आकिलखां	१ हजारी ८००
आबिदखां दीवान सूबे दक्षिण	१ हजारी ४००
आबिद उजबक	१ हजारी १०००
आरुफखां दीवान	५ हजारी ५०००
आसफखां एतमादुद्दौलाका बेटा	७ हजारी ७०००

इ।

इकरामखां इसलामखांका बेटा फौजदार मेवात	२ हजारी १५००
इनायतखां	२ हजारी
इफतिखारखां	२ हजारी
इब्राहीमखां बखशी दरीखाना	१॥ हजारी ६००
इब्राहीमखां फतहजंग सूबेदार उडीसा	४ हजारी ४०००
इब्राहीमखां बखशी सूबे दक्षिण	१ हजारी २००
इब्राहीमखां काशगरी	२ हजारी ८००
इरादतखां मीर सामान	२ हजारी १५००
इरादतखां आसफखांका भाई	१ हजारी ५००
इसकन्दर अमीन	३ सदी ५०
इसलामखां नाम शेख अलाउद्दीन, शेख सलीम चिश्तीका बेटा सूबेदार बंगाला	६ हजारी ५०००

ई।

ईसल बेग	१॥ हजारी
मिरजा ईसा	१॥ हजारी ८००
मिरजा ईसातरखां	१२ सदी ५००

ए।

एतकादखां सूबेदार कशमीर	४ हजारी ३०००
एतबारखां (मुमताजखां)	६ हजारी ५०००
एतमादुद्दौला गयास बेग	७ हजारी ७०००

क।

कजलबाशखां	१॥ हजारी १२००

करमुल्लह अलीमरदानखां बहादुरखांकाबेटा	६ सदी २००
काराखां तुर्कमान	२ हजारी
कामगार सरदारखांका बेटा	४ सदी ५००
कासिमखां इसलामखांका भाई	४ हजारी २०००
सैयद कासिम सैयद दिलावरखांका बेटा	८ सदी ४००
ख़ाजा कासिम	१४ सदी
मीरकासिमखां अहदियोंका बखशी	१हजारी ४००
किफायतखां दीवान गुजरात	१२ सदी ३००
किशवरखां शैख इब्राहीम, कुतुबुद्दीनखां कोका का बेटा	१ हजारी ३००
कुतुबुद्दीनखां कोका	५ हजारी ५०००
कुलीचखां सूबेदार काबुल	६ हजारी ५०००
कयामखां	१ हजारी १०००

ख।

खंजरखां अबदुल्लहखां फीरोजजङ्गका भाई किलेदार अहमदनगर	१ हजारी २००
खवासखां फौजदार कन्नौज	१ हजारी ३००
मीर खलीलुल्लह	१ हजारी २००
खलील मीर अबदुल्लहका बेटा	६ सदी २५०
खानआलम	५ हजारी ३०००
खानआजम	७ हजारी ७०००
खानजहां लोदी (नाम पीरखां फिर सलावतखां)	६हजारी ६०००
खानजमां	
खानाजादखां (अमानुल्लह महाबतखांका बेटा)	५ हजारी ५०००
खानदौरां सूबेदार पटना	६ हजारी ५०००
खिदमतगारखां	५॥ सदी १३०
सुलतान खुर्रम शाहजहां	३० हजारी २००००
खुर्रम, खानआजमका बेटा हाकिमजूनागढ़	२ हजारी १५०

खुतरीबेग उजबक (फौजदार सरकार मेवात)	१ हजारी ८००
ख्वाजाजहां	५ हजारी ३०००
ख्वाजाबेग सफवी	५ हजारी ५०००
ख्वाजगी ताहिर	८ सदी ३००

ग।

गजनीनखां जालौरी	२ हजारी ७००
गयासखां	२ हजारी ८००
गाजीखां मिरजा जानीका बेटा	५ हजारी ५०००
गैरतखां या इज्जतखां	८ सदी ७००

च।

चीन कुलीचखां, कुलीचखांका बेटा सूबेदार भक्कर	२हजारी८००

ज।

जफरखां सूबेदार बिहार	३॥ हजारी २५००
जबरदस्तखां मीरतुजुक	१ हजारी ५००
जमालुद्दीन	५ हजारी ३५००
मीर जमालुद्दीन अंजू अजदुद्दौला	१ हजारी ४००
मीर जमील वजीर	२ हजारी
जहांगीरकुलीखां, शमसुद्दीन खानआजमका बडा बेटा, सूबेदार बिहार	५ हजारी ५०००
मीर जहीरुद्दीन	१ हजारी ४००
जासूसखां	२ हजारी २००
जाहिदखां (सादिकखां)	१ हजारी
जाहिदखां	१॥ हजारी ४००
सैयद जाहिद, शुजाअतखांका बेटा	१ हजारी ४००
जाहिदखां	१॥ हजारी ७००
मीर जियाउद्दीन कजवीनी	१ हजारी
जुलफिकारखां	१ हजारी ५००
जनुद्दीन	७ सदी ३००

त ।

तख्तावेग	३ हजारी
तरवीयतखां	३॥ हजारी १५००
तरसून बहादुर	१२ सदी ४२०
ताजखां	३॥ हजारी २५००
तातारखां	२ हजारी ५००
तुगरल अवदुर्रहीम खानखानांका पोता	१ हजारी ५००
तुहमतनवेग, कासिम कोका का वेटा	५ सदी ३००

द ।

दयानतखां	५ सदी २००
मिरजा दखिनी मिरजा रुस्तमका वेटा	५ सदी २००
दाराबखां, खानखानां अवदुर्रहीमका वेटा	५ हजारी ५०००
शाहजादा दावरवख्श सुलतान खुसरोका वेटा	८ हजारी ३०००
दिलावरखां पठान काकड	४ हजारी ३०००
सैयद दिलेरखां (अवदुल वहाव)	१ हजारी ८००
दौलतखां सूवेदार इलाहाबाद	१॥ हजारी
दोस्तवेग तोलकखांका वेटा	९ सदी ४००

न ।

ख्वाजा नकी	१ हजारी १८०
नकीवखां	१॥ हजारी
नवाजिशखां	४ हजारी ३०००
नसरुल्लहखां	७ सदी ४००
नसरुल्लह फतहुल्लहका वेटा किलेदार आसेर	१॥ हजारी ४००
नसरुल्लह अरव	५ सदी ५२
नादअली	१॥ हजारी १०००
नानूखां	१॥ हजारी १२००
नाहरखां (शेरखां)	३ हजारी १५००
निजामुद्दीनखां	७ सदी ३००

निजाम	९ सदी ६५०
नूरुद्दीनकुलीखां	३ हजारी ६००
नौबतखां (अलीखां करोड़ा) नौबतखानेका दारोगा	२ हजारी १०००

प

परवरिशखां	१ हजारी ५००
सुलतान परवेज	४० हजारी ३००००
पायंदाखां मुगल	२ हजारी ४५०

फ

शेख फरीद बखशी	५ हजारी ५०००
शेख फरीद कुतुबखां कोकाका बेटा	१ हजारी ४००
फरेदूं बरलास	२॥ हजारी २०००
फाजिलखां	२ हजारी ७५०
फिदाईखां	५ हजारी ५०००
फीरोजखां ख्वाजासरा	६ सदी १००

ब

बदीउज्जमा, मिरजा शाहरुखका बेटा	१॥ हजारी १०००
बहलोमखां	१ हजारी ५००
सैयद बहवा	२ हजारी १०००
बहादुरुल्मुल्क	३ हजारी २३००
बहादुरखां	३ सदी ३००
बहादुरखां	१॥ हजारी ८००
बहादुरखां (अबदुलनबी बेग उजबक हाकिम कंधार)	५ हजारी ४०००
बहादुर सैफखांका बेटा	४ सदी २००
बहादुर धनतूरी	२ सदी १००
बाकरखां	३ हजारी १५००
बाकीखां	२॥ हजारी २०००

त।

तख़्ताबेग	२ हजारी
तरबीयतखां	३॥ हजारी १५००
तरसून बहादुर	१२ सदी ४२०
ताजखां	३॥ हजारी २५००
तातारखां	२ हजारी ५००
तुगरल अबदुर्रहीम खानखानांका पोता	१ हजारी ५००
तुहमतनबेग, कासिम कोका का बेटा	५ सदी ३००

द।

दयानतखां	५ सदी २००
मिरज़ा दखिनी मिरजा रुस्तमका बेटा	५ सदी २००
दाराबखां, खानखानां अबदुर्रहीमका बेटा	५ हजारी ५०००
शाहजादा दावरबख्श सुलतान खुसरोका बेटा	८ हजारी ३०००
दिलावरखां पठान काकड	४ हजारी ३०००
सैयद दिलेरखां (अबदुल वहाब)	१ हजारी ८००
दौलतखां सूबेदार इलाहाबाद	१॥ हजारी
दोस्तबेग तोलकखांका बेटा	९ सदी ४००

न।

ख़्वाजा नकी	१ हजारी १८०
नकीबखां	१॥ हजारी
नवाजिशखां	४ हजारी ३०००
नसरुल्लहखां	७ सदी ४००
नसरुल्लह फतहुल्लहका बेटा किलेदार आसेर	१॥ हजारी ४००
नसरुल्लह अरब	५ सदी ५२
नादअली	१॥ हजारी १०००
नानूखां	१॥ हजारी १२००
नाहरखां (शेरखां)	२ हजारी १५००
निजामुद्दीनखां	७ सदी ३००

निजाम	९ सदी ६५०
नूरुद्दीनकुलीखां	३ हजारी ६००
नौवतखां (अलीखां करोड़ा) नौवतखानेका दारोगा २ हजारी	१०००

प

परवरिशखां	१ हजारी ५००
सुलतान परवेज	४० हजारी ३००००
पायंदाखां मुगल	२ हजारी ४५०

फ

शेख फरीद बखशी	५ हजारी ५०००
शेख फरीद कुतुबखां कोकाका बेटा	१ हजारी ४००
फरेंदूं बरलास	२॥ हजारी २०००
फाजिलखां	२ हजारी ७५०
फिदाईखां	५ हजारी ५०००
फीरोजखां ख्वाजासरा	६ सदी १००

ब

बदीउज्जमा, मिरजा शाहरुखका बेटा	१॥ हजारी १०००
बहलीमखां	१ हजारी ५००
सैयद बहवा	२ हजारी १०००
बहादुरुल्मुल्क	३ हजारी २३००
बहादुरखां	३ सदी ३००
बहादुरखां	१॥ हजारी ८००
बहादुरखां (अबदुलनबी बेग उजबक हाकिम कंधार) ५ हजारी	४०००
बहादुर सैफखांका बेटा	४ सदी २००
बहादुर धनतूरी	२ सदी १००
बाकरखां	३ हजारी १५००
बाकीखां	२॥ हजारी २०००

ख़ाजा बाकीखां, फौजदार बराड	१॥ हजारी १०००
बाजबहादुर कलमाक	१ हजारी १०००
ख़ाजा बाबाख़ां	१ हजारी ५५०
शेख बायजीद शेख सलीमचिश्तीका पोता	३ हजारी
बायजीद बुखारी सूबेदार ठट्ठा	२ हजारी १५००
बिशोतन शेख अबुलफ़ज़लका पोता	७ सदी ३५०
बेजन नादअलीका बेटा	१ हजारी ५००
बैरम खानआजमका बेटा	२॥ हजारी

म

मकतूबखां कुतुबखानेका दारोगा	१॥ हजारी
मकसूद कासिमखांका भाई	५ सदी ३००
मकसूदखां	१ हजारी १३०
मनूचिहर खानखानांका पोता	३ हजारी २०००
मनसूरखां फिरङ्गी	३ हजारी २०००
मसऊदबेग बखशी गुजरात	३ सदी १५०
मसीहुज्जमां हकीम मदरा	५ सदी ३०
महरअली फरेदूं बरलासका बेटा	१ हजारी १०००
महाबतखां(१) खानखानां सिपहसालार नामजमानाबेग गेयूरबेग काबुलीका बेटा	७ हजारी ७०००
मोहतशिमखां शेख अबुलकासिम सूबेदार इलाहाबाद	५ हजारी
मालजू कुलीचखांका भतीजा	२ हजारी
मीरखा अबुलकासिम तमकीनका बेटा	१॥ हजारी ८००
मीरजुमला ईरानी	३ हजारी ३०००
मीरन	७ सदी ५००
मीरमीरां	२॥ हजारी १४००
मुकर्रबखां सूबेदार गुजरात	५ हजारी ५०००

(१) करनल टाडने इसको गलतीसे राजपूत लिखा है।

मुकर्रमखां	३ हजारी २०००
मुखलिसखां	२ हजारी ७००
मुखलिसुल्लह	५ सदी २५०
मुजफ्फर बहादुरुल्मुल्कका बेटा	१ हजारी ५००
मुजफ्फरखां	२ हजारी १०००
हकीम मुजफ्फर	३ हजारी १०००
मुजफ्फर वजीरखांका बेटा	५ सदी ३००
मुबारकखां रुहतासका किलेदार	५ सदी २००
मुबारकखां	४ सदी २००
मुबारकखां शिर वानी	१ हजारी ५००
मुबारजखां	२ हजारी १७००
मुरतिजाखां	६ हजारी ५०००
मुरव्वतखां	२ हजारी ५००
मुलतफितखां मिरजा रुस्तमका बेटा	१॥ हजारी ३००
आका मुल्लाई. आसफखांका भाई	१ हजारी ३०००
मुस्तफाखां	२ हजारी २५०
मूनिसखां, महतरखांका बेटा किलेदार कालंजर	५ सदी १५०
मूसवीखां	१ हजारी ३००
शेख मूसा कासिमका जमाई	८ सदी ४००
मुअज्जुलमुल्क	१८ सदी
मुअज्जमखां	४ हजारी २०००
मोतकिदखां	२॥ हजारी २५०
मोतमिदखां बखशी	२ हजारी १५००
हकीम मोमिना	१ हजारी
मुहम्मद मुराद ख्वाजा मोहसिन	१ हजारी ५००
मुहम्मद कफी बखशी पंजाब	५ सदी ३००
मुहम्मद सईद, अहमदबेगका बेटा	१ हजारी ३००
मुहम्मद हुसैन ख्वाजाजहांका भाई	८ सदी ८००

मंगलीखां	१॥ हजारी

य

याकूबखां, खानदौरांका दूसरा बेटा	८ सदी ४००
याकूबखां	२ हजारी १५ सौ
सैयद याकूबखां कमालनुखारीका बेटा	८ सदी ५ सौ
यादगार कौरचो	५ सदी ३ सौ
यारबेग अहमद कासिमका भतीजा	६ सदी अढाईसौ
यूसुफ	१ हज़ारी ५ सौ
यूसुफखां हुसैनखांका बेटा फौजदार गोंडवाणा	३ हजारी १५ सौ

र

रणबाजखां शाहबाजखां कम्बूका बेटा	८ सदी ४ सौ
रजवीखां अबूसालह रजवी	२ हजारी १ हजार
रहमानदाद, अबदुर्रहीम खानखानांका पोता	१ हजारी ८ सौ
रुस्तमखां मिरजा रुस्तम	५ हजारी १५ सौ
रुस्तमखां	५ हजारी ४ हजार
रुस्तमजमां शुजाअतखां	२॥ हजारी २५ सौ

व

वजीरखां	२॥ हजारी २ हज़ार
वजीर जमील	२ हजारी
वजीरुलमुल्क	१३ सदी ५॥ सौ
वफादारखां	२ हजारी १२ सौ
मिरजावाली बादशाहकी फूफीका बेटा	२॥ हजारी १ हजार

श

मीर शरीफ दीवान बूतात	१ हजारी
शरीफ आमिली	२॥ हजारी
शरीफखां नूरुल्लह किरावल	६ सदी १००
शरीफखां अमीरुलउमरा	५ हजारी ५ सौ
मीर शरफुद्दीन काशगरी	१॥ हजारी १ हजार

ाजखां लोदी फौजदार सरकार सारंगपुर २ हजारी २हजार
ज़ादा शहरयार ८ हजारी ४ हजार
ःमाखां खानआजमका वेटा ७ सदी ५ सौ
ःनवाजखां खानखानां अवदुर्रहीमखांकावेटा ५हजारी ३हजार
हवेगखां सूवेदार कान्दहार ५ हजारी
ह मुहम्मदखां खानदौरांका वेटा १ हजारी ६ सौ
रजाखां २॥ हजारी १२ सौ
रजा शाहरुख मिरजा सुलेमानका वेटा ७ हजारी ७ हजार
ाश्रतखां २॥ हजारी १५ सौ
ाश्रतखां अरब ३ हजारी २५ सौ
रखां पठान ३॥ हजारी

स

आदतउमेद जैनखां कोकाका पोता ८ सदी ४ सौ
ीरान ; सदरजहां ५ हजारी ५ हजार
ादरजहां मुरतिजाखांका जमाई फौजदार सम्भल ७ सदी ६ सौ
ाफदरखां डेढ हजारी ७ सौ
ाफी अमानतखांका वेटा
ाफीखां (सैफखां) ३ हजारी २ हजार
सरदारखां ३ हजारी पच्चीस सौ
सरफराजखां २ हजारी १४ सौ
सरवुलन्दखां वहलोल पठान २॥ हजारी २२ सौ
सरवराहखां ८ सदी २॥ सौ
सलामुल्लह अरव १॥ हजारी ११ सौ
सादातखां १ हजारी ६ सौ
सादिकखां मीरवखशी २ हजारी २ हजार
सादिकखां ७ सदी ४ सौ
सादुल्लहखां २ हजारी २ हजार
सिकन्दर जौहरी १ हजारी ३ सौ

सुलतान मिरजा मिरजा शाहरुखका बेटा	२ हजारी १ हजार
सुलतानहुसैन	६ सदी ३५०
सुहराबखां मिरजा रुस्तमका बेटा	१ हजारी ४ सौ
सैफखां सैयदअली असगर बारह फौजदार	५ हजारी ३५००
सैयदअली सैफखांका भतीजा	५ सदी ५ सौ
सैयद अहमद कादरी	८ सदी ६ सौ
सैयद अहमद सद्र	१ हजारी १ हजार

ह

मिरजा हसन मिरजा रुस्तमका बेटा	१॥ हजारी ५ सौ
हसनअलीखां सूबेदार उडीसा	३ हजारी ३ हजार
हसनअलीखां जागीरदार (गक्कड)	२॥ हजारी २॥ हजार
हसनअली तुर्कमान	५ सदी
हाकिमबेग	१ हजारी ३ सौ
हाशिमखां कासिमखांका बेटा	३ हजारी २ हजार
हाशिमखां	२॥ हजारी १८ सौ
हिम्मतखां	२ हजारी १॥ हजार
मीर हिसामुद्दीन	१॥ हजारी १॥ हजार
हुजबरखां फौजदार मेवात	१॥ हजारी ५ सौ
होशङ्ग इसलामखांका बेटा	२ हजारी ७ सौ

हिन्दू ।

१—अनीराय सिंहदलन, राजा अनूपसिंह ; जाति बडगूजर ; रियासत अनूपशहर ; मनसब २ हजारी १६०० सवार ।

२—ऊदाजीराम ; दक्षिणी ब्राह्मण ; ३ हजारी १५ सौ ।

३—करमसेन ; पिताका नाम रावउग्रसेन ; राठौड़ ; भिनाय जि० अजमेर ; १ हजारी ३ सौ ।

४—कुंवर करण ; बापका नाम राणा अमरसिंह ; सीसोदिया ; उदयपुर ; ५ हजारी ५ हजार ।

५—राजा कल्याण ; सूबेदार उड़ीसा ; १७ सदी १ हजार ।

६—रावल कल्याण ; भाटी ; जैसलमेर ; २ हजारी १ हजार ।

७—राजा कृष्णदास मुशरिफ अस्तबल और फीलखाना ; २हजारी पांच सौ ।

८—राजा कृष्णसिंह ; कटोच ; नगरकोट कांगडा ।

९—राजा कृष्णसिंह ; बापका नाम मोटा राजा उदयसिंह ; राठौड़ ; कृष्णगढ़ ; ३ हजारी १५ सौ ।

१०—केशवदास मारू ; बापका नाम रावराम ; राठौड ; आमझेरा मालवा ; २ हजारी १५ सौ ।

११—राजा गजसिंह ; बापका नाम राजा सूरसिंह ; राठौड, जोधपुर ; ५ हजारी ४ हजार ।

१२—राजा गजसिंह(१)का भाई ; बापका नाम राजा सूरसिंह ; राठौड़ ; जोधपुर ; ५ सदी अढाई सौ ।

१३—गिरधर ; बापका नाम रायसाल दरबारी ; कछवाहा शेखावत ; शेखावाटी जिला जयपुर ; २ हजारी १५०० ।

---

(१) तुजुकमें इसका नाम नहीं लिखा है पर तवारीख मारवाड में सबलसिंह लिखा है ।

१४—राजा चन्द्रसेन, झाला; हलवद।

१५—राजा जगतसिंह; बापका नाम राजा बासू; पठानिया(तुंवर) नूरपुर कांगड़ा; १ हजारी ५ सौ।

१६—राजा जगन्नाथ; बापका नाम राजा भारमल; कछवाहा; आमेर (जयपुर); ५ हजारी ३ हजार।

१७—राजा जगमाल; बापका नाम राजा कृष्णसिंह; राठौड़; कृष्णगढ़; ५ सदी २॥ सौ।

१८—राजा जयसिंह; बापका नाम राजा महासिंह; कछवाहा; आमेर (जयपुर) २ हजारी एक हजार।

१९—राजा जूझारसिंह (जुगराज); बापका नाम बरसिंहदेव; बुन्देला; उर्छा बुन्देलखण्ड; २ हजारी एक हजार।

२०—राय दलपत; बापका नाम रायसिंह; राठौड; बीकानेर; २ हजारी १ हजार।

२१—राय दुर्गा; सीसोदिया; रामपुरा; ४ हजारी।

२२—देवीचन्द; गुलेर (पंजाब); डेढ़हजारी ५ सौ।

२३—राजा धीरधर।

२४—राजा नथमल; मझौली (बिहार); २ हजारी ११ सौ।

२५—नथमल; बापका नाम राजा कृष्णगढ़; राठौड़; कृष्णगढ; ५ सदी २७५।

२६—रायरायां पितरदास, राजा विक्रमाजीत दीवान।

२७—राजा पेमनारायण : गौंड; गढा (नागपुर); १ हजारी।

२८—पृथ्वीचन्द : राय मनोहर; कछवाहा शेखावत; शेखावाटी; ७ सदी ४५०।

२९—राय बनमालीदास मुशरिफ फीलखाना; ६ सदी १२०।

३०—राजा बरसिंहदेव; बुन्देला, उर्छा; ५ हजारी ५ हजार।

३१ राजा बासू; पठानिया; पठानकोठ (पंजाब); ३॥ हजारी पांच सौ।

३२—बिहारीचन्द कानूनगो आगरा।

३३—विहारीदास वाकयानवीस बुरहानपुर।

३४—विहारीदास दीवान दक्षिण।

३५—भरजी (राजा); राठौड; बगलाना; ४ हजारी।

३६ राजा भारत; राजा रामचन्द्रका पोता; बुन्देला; बुन्देलखण्ड डेढ हजारी एक हजार।

३७—मिरजा राजा भावसिंह; राजा मानसिंहका बेटा; कछवाहा आमेर; ५ हजारी ५ हजार।

३८—महाराजा भीम; बापका नाम राना अमरसिंह; सीसोदिया, उदयपुर।

३९—भोज; बापका नाम राजा विक्रमाजीत, चौहान भदोरिया, भदावर।

४०—राय मनोहर; कछवाहा; शेखावाटी; १ हजारी आठसौ।

४१—राजा महासिंह, बापका नाम कुंवर जगतसिंह; कछवाहा, आमेर (जयपुर); ४ हजारी ३ हजार।

४२—राय साईदास मुशरिफ महल; ६ सदी १ सौ।

४३—माधवसिंह; बापका नाम राजा भगवन्तदास; कछवाहा: आमेर; ३ हजारी।

४४ राजा मानसिंह; राजा भगवन्तदासका बेटा, कछवाहा:

४५—राजा मान पंजाबी; पंजाब; डेढ हजारी १ हजार।

४६—राव मानसिंह; राना सगर; सीसोदिया, उदयपुर, दो हजारी ६ सौ।

४७—राय मोहनदास दीवान गुजरात; ८ सदी ५ सौ।

४८—राय मगत; चौहान भदोरिया; भदावर।

४९—राजा रामदास; कछवाहा, आमेर, ३ हजारी।

५०—राजा रामदास; पिताका नाम राजसिंह, कछवाहा, वाना-वर-गवालियर; डेढ हजारी ७॥ सौ।

५१—राय कुवर दीवान गुजरात।

५२—रायसाल दरबारी; कछवाहा, शेखावाटी, ३ हजारी।

५३—रायसाल खिदमतिये प्यादोंका सरदार।

५४—रायसिंह ; बापका नाम कल्याणमल ; राठौड ; बीकानेर ; ५ हजारी।

५५—रूपखवास ; १ हजारी ५ सौ।

५६—राजा लक्ष्मीचन्द ; पिताका नाम राजा रुद्र ; कमाऊं।

५७—सगर (राणा फिर रावत) ; बापका नाम राणा उदयसिंह ; सीसोदिया ; उदयपुर ; २ हजारी।

५८—संग्राम ; बिहार।

५९—संग्राम ; जम्मू।

६०—सरबुलन्दराय (रावरतन हाडा) ; बापका नाम राव भोज ; हाडा ; बून्दी ; ५ हजारी।

६१—राजा सारंगदेव ; १॥ हजारी।

६२—राजा सूरजमल ; बापका नाम बासू ; पठानिया ; पठानकोट ; २ हजारी एक हजार।

६३—राजा सूरजसिंह ; बापका नाम उदयसिंह मोटा राजा ; राठौड़ ; जोधपुर ; ५ हजारी ३३ सौ।

६४—सूरजसिंह ; बापका नाम राय रामसिंह ; राठौड ; बीकानेर ; २ हजारी दो हजार।

६५—राजा श्यामसिंह ; २॥ हजारी १४ सौ।

६६—हृदयनारायण ; हाडा ; ९ सदी ६ सौ।
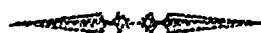
"जब मेरा जन्म समय आया तो पिताने मेरी माताको शेखके घर भेज दिया और वहां तारीख १७ रबीउलअव्वल बुधवार सन् ९७७ को ७ घडी दिन चढ़े पीछे तुलाराशिके २४ वें अंशमें मेरा जन्म हुआ और सुलतान सलीम नाम रखा गया। परन्तु मैंने पिता के श्रीमुखसे उन्मादमें भी कभी नहीं सुना कि उन्होंने मुझे मुहम्मद सलीम या सुलतान सलीम कहा हो। वह सदा शेखू बाबा कहा करते थे। मैं जब बादशाह हुआ तो मेरे मनमें आया कि अपना नाम बदल देना चाहिये क्योंकि उस नाममें रूमके बादशाहोंके नामका धोखा होसकता था। बादशाहोंका काम जहांगीरी अर्थात् जगत् जीतनेका है इस लिये जहांगीर नाम रखनेकी दैवने प्रेरणा मेरे हृदयमें हुई। मेरा राज्याभिषेक सूर्य्य निकलतेही हुआ था जब कि पृथ्वी प्रकाशमयी होगई थी इस हेतु मैंने उप-नाम नूरुद्दीन रखना चाहा और भारतके विद्वानोंसे सुना भी था कि जलालुद्दीनके पीछे नूरुद्दीन बादशाह होगा इन बातोंसे मैंने नाम और उपनाम नूरुद्दीन जहांगीर बादशाह रखा। यह बडा काम आगरेमें हुआ उसका कुछ हाल लिखना जरूरी है।"

"आगरा हिन्दुस्थानके बडे शहरोंमेंसे है। वह यमुनाके किनारे बसता है। यहां पुराना किला था। मेरे पिताने मेरे जन्म लेने से पहले उसको गिराकर तराशे हुए लाल पत्थरोंका किला बनाया। वैसा किला पृथ्वी पर्य्यटन करनेवाले कहीं नहीं बताते हैं। यह १५—१६ वर्षोंमें तय्यार हुआ था। उसके चार दर-वाजे बडे और दो छोटे हैं। ३५ लाख रुपये इस पर खर्च हुए थे। जो ईरानके १ लाख १५ हजार तूमान और तूरानकी १ करोड ५ लाख खानीके बराबर थे।

अन्तर है क्योंकि मुसलमान लोग तारीख पंचांगसे नहीं मानते चन्द्रदर्शनसे मानते हैं।

जहांगीर अगहन वदी १ गुरुवारको तख्त पर बैठा था।

"इस नगरकी बस्ती जमनाके दोनो ओर है। पश्चिमको अधिक है। इसका घेरा ७ कोसका है। लम्बाई २ और चौड़ाई १कोस है। जो बस्ती पूर्वको नदीके उधर है वह २॥ कोसकी है लम्बी १ कोस और चौडी आध कोस। पर इसमें इमारतें इतनी अधिक हैं कि उनमे ईरान, खुरासान और तूरानके शहरोंके समान कई शहर बस सकते है। बहुधा लोगोंने तीन तीन और चार चार खण्डके मकान बनाये हैं और आदमियोंकी इतनी अधिक भीड़ रहती है कि गलियों और बाजारोंमें मुशकिलसे फिर सकते है।

"आगरा दूसरी "अक्लीम"(१) के अन्तमें है इसके पूर्वमें कन्नौजकी विलायत पश्चिममें नागौर उत्तरमें सम्भल दक्षिणमें चन्देरी हैं।"

"हिन्दुओंकी किताबोंमें लिखा है कि यमुनाका सोता कलन्द नाम एक पहाड़में है जहां ठण्ड अधिक होनेसे मनुष्य नहीं जा सकते हैं। और जहा यमुना प्रकट होती है वह एक पहाड़ परगने खिजराबादके पास है।"

"आगरेकी हवा गर्म्म और खुश्क है। हकीम कहते है कि वह जान्दारोंको तुलाती और निर्बल करती है। बहुधा लोग उसे सह नहीं सकते। परन्तु जिनकी प्रकृति कफ और वायुकी होती है वह इसके अवगुणसे बचे रहते हैं। यही कारण है कि जिन पशुओं को ऐसी प्रकृति है जैसे कि भैंस और हाथी आदि वह इस जलवायु में अच्छे रहते है।

"लोदी पठानोंके राज्यसे पहले आगरा बडा नगर था किला भी था "मसऊदसाद" सुलेमानने सुलतान महमूद गजनवीके पड़-पोते मसऊदके पोते इब्राहीमके बेटे महमूदकी प्रशंसाके कसीदे

(१) मुसलमान भूगोलवेत्ताओंने पृथ्वीके ७ खण्ड ठहराकर हिन्दुस्थानको दूसरे तीसरे और चौथे खण्डमें माना है यह ७ खण्ड ८ लम्बी रेखाओंके भीतर जो पूर्वसे पश्चिमको भूमिके नकशेमे दिखाई जाती है ठहराये गये हैं।

(काव्य) में इस किलेके जीतनेका वर्णन किया है जिसमें लिखा है कि—

आगरेका किला गर्दमें प्रगट हुआ,
जिसके ऊपर कंगूरे पहाडोंके समान थे ।

"सिकन्दर लोदोका विचार गवालियर लेनेका था इस लिये वह हिन्दुस्थानके बादशाहोंकी राजधानी दिल्लीसे आगरेमें आया और वहां रहा । उस दिनसे आगरेकी बस्ती बढने लगी और वह दिल्लीके बादशाहोंका "पायतख्त" होगया ।"

"जब परमात्माने हिन्दुस्थानकी बादशाही इस बडे घरानेको दी तो बाबर बादशाहने सिकन्दर लोदीके बेटे इब्राहीमको मारने और राना सांगाको जो हिन्दुस्थानके राजों और जमींदारोंमें सबसे बडा था हरानेके पीछे यमुनाके पूर्वको एक भूमि पसन्द करके एक बाग बनाया जिसके समान सुन्दर बाग दूसरी जगह कमही होंगे । उसका नाम गुलअफशां रखा । एक छोटीसी मसजिद भी उसके कोनेमें तराशे हुए लाल पत्थरोंकी बनवाई और भी बडी इमारत बनवानेके विचारमें थे परन्तु आयु शेष होजानेसे नहीं बनवा सके ।"

"खरबूजे आम और दूसरे मेवे आगरेमें खूब होते हैं सब मेवों से आममें मेरी रुचि अधिक है । विलायतके कितनेही मेवे जो हिन्दुस्थानमें नही होते थे स्वर्गवासी श्रीमान (अकबर) के समयमें होने लगे है । साहिबी हबशी और किशमिशी जातिके अंगूर बडे बडे शहरोंमें होने लगे है । लाहोरके बाजारोंमें अंगूरके मौसिममें जितनी जातिके चाहे मिल सकते है ।

"एक मेवा अनन्नास नामक फरंगके टापुओंमें होता है जो बहुत सुगन्धित और स्वादिष्ट होता है, वह गुलअफशां बागमें हर साल कई हजार उत्पन्न होता है ।"

"हिन्दुस्थानके सुगन्धित फूलोंको दुनिया भरके फूलोंसे उत्तम कहना चाहिये । कितनेही फूल ऐसे है जिनका किसी जगह दुनियामें नाम निशान नहीं है । प्रथम चम्पाका फूल, बहुत कोमल और

सुगंधसम्पन्न केसरके फूलकी आकारका है। पर चम्पाका रंग पीला सफेदी लिये हुए है उसका वृक्ष बहुत सुडौल बड़ा पत्तोंसे हरा भरा और छाया फैलानेवाला होता है। फूलोंके दिनोंमें एक झाड़ ही सारे वागको महका देता है। उससे उतरकर केवड़ेका फूल है। जो आकार और डौलमें अनोखाही है। उसकी सुवास ऐसी तीव्र और तीक्ष्ण है कि कस्तूरीकी सुगन्धसे कुछ कम नहीं है।"

"फिर रायवेलका फूल स्वेत चमेलीकी जातिका है जिसके पत्ते दो तीन गुच्छोंके होते हैं और एक फूल मौलसरीका है उसका झाड़ भी बहुत सुन्दर सुडौल और सायादार होता है। उसके फूलका सौरभ खूब हलका होता है।"

"एक फूल सेवतीका केवड़ेकी किस्मसे है केवड़ेमें कांटे होते हैं सेवतीमें नहीं। उसका फूल पीलाई लिये होता है और केवड़ेका स्वेत—इन फूलों और चमेलीके फूलोंसे सुगन्धित तैल बनता है। और भी फूल हैं जिनका वर्णन बहुत कुछ होसकता है।"

"वृक्षोंमें सर्व सनूवर चिनार, सफेदार और वेदमूला जिनका हिन्दुस्थानमें किसीने खयाल भी नहीं किया था बहुत होने लगे हैं। चन्दनका वृक्ष जो टापुओंमें होता था वागोंमें लगाया गया है।"

"आगरेके रहनेवाले विद्याओं और कलाओंके सीखनेमें बहुत परिश्रम करते हैं विविध धर्म्म और पंथकी अनेक जातियोंके लोग इस नगरमें वसते हैं।"

न्यायकी सांकल।

सिंहासनारूढ़ होतेही जहांगीर बादशाहने पहला हुक्म न्याय की सांकल बांधनेका दिया जो ४ मन(१) खरे सोनेकी बनाकर किलेमें शाहबुर्जमें लटकाई गई थी। उसका दूसरा सिरा कालिन्दी के कूल पर पत्थरके एक स्तम्भ पर रुपा था। यह सांकल ३० गज लम्बी थी। उसके वीचमें ६० घण्टे लगे थे कि यदि किसीका

(१) ईरानका ३२ मन।

न्याय अदालतमें न हो तो बादशाहको सूचना करनेके लिये उसको हिला दिया करे।

बादशाहके बारह हुक्म।

फिर बादशाहने यह बारह हुक्म अपने तमाम मुल्कोंमें कानून के तौर पर काममें लानेके वास्ते भेजे थे।

१—जकात(१) तमगा(२) मीरबहरी(३)के कर तथा और कितनेही कष्टदायक कर जो हरेक सूबे और सरकारके जागीरदारों ने अपने लाभके लिये लगा रखे हैं सब दूर किये जावें।

२—जिन रास्तोंमें चोरी लूट मार होती हो और जो बस्तीसे कुछ दूर हों वहांके जागीरदार सराय और मसजिद बनावे, कुए खुदावें, जिससे सरायमें लोगोंके रहनेसे बस्ती होजावे। यदि वह जगह बादशाही खालिसेके पास हो तो वहांका कर्म्मचारी काम करावे। व्योपारियोंका माल रास्तोंमें बिना उनकी मरजी और आज्ञाके नहीं खोला जावे।

३—बादशाही मुल्कोंमें जो कोई हिन्दू या मुसलमान मर जावे तो उसका माल असबाब सब उसके वारिसोंको देदेवें कोई उसमेंसे कुछ न ले और जो वारिस न हो तो उस मालकी सम्हालके वास्ते पृथक भाण्डारी और कर्म्मचारी नियत करदें। वह धर्म्म के कामों अर्थात् मसजिदों सरायों कूओं और तालावोंके बनाने तथा टूटे हुए पुलोंके सुधारनेमें लगाया जावे।

४—शराब और दूसरी मादक चीजें न कोई बनावे न बेचे।[१]

---

(१) महसूल सायर (२) मुहराना (३) नदियों और समुद्रका कर।

[१] इस जगह बादशाह लिखता है कि मैं आप शराब पीता हूं १८ वर्षकी अवस्थासे अब तक ३८ सालका हुआ हूं सदा पीता रहा हूं। पहले पहले तो जब कि अधिक तृष्णा उसके पीनेकी थी कभी कभी बीस बीस प्याले दुआतिशाके पीजाता था। जब होते होते उसने मुझे दबा लिया तो मैं कम करने लगा। ७ वर्षसे १५ प्यालोंसे ५—६ तक घटा लाया हूं। पीनेकी भी

५—किसीके घरको सरकारी न बनावें।

६—किसी पुरुषके नाक कान किसी अपराधमें न काटे जावें और मैं भी परमेश्वरसे प्रार्थना कर चुका हूं कि इस दण्डसे किसीको दूषित नहीं करूंगा।

७—खालिसेके और जागीरदारोंके कर्मचारी प्रजाकी पृथ्वी अन्यायसे न लें और न आप उसको बोवें।

८—खालिसेके और जागीरदारोंके कर्मचारी जिस परगनेमें हों वहांके लोगोंमें बिना आज्ञा सम्बन्ध न करें।

९—बड़े बड़े शहरोंमें औषधालय बनाकर रोगियोंके लिये वैद्योंको नियत करें और जो खरच पड़े वह सरकारी खालिसेसे दिया करें।

१०—रबीउलअव्वल महीनेकी १८ तारीखसे जो मेरे जन्मकी तिथि है मेरे पिताकी प्रथाके अनुसार प्रतिवर्ष एक दिन गिनकर इन दिनोंमें जीवहिंसा न करें प्रत्येक सप्ताहमें भी दो दिन हिंसा न हो, एक तो वृहस्पतिवारको जो मेरे राज्याभिषेकका दिन है और दूसरे रविवारको जो मेरे पिताका जन्मदिवस है। वह इस दिनको शुभ समझकर बहुत माना करते थे क्योंकि उनके जन्मदिन होनेके अतिरिक्त सूर्य्य भगवानका भी यही दिन है और यह जगत्की उत्पत्तिका पहला दिन है। सो बादशाही देशोंमें जीवहिंसा न होनेके दिनोंमेंसे एक दिन यह भी था।

११—यह स्पष्ट आज्ञा है कि मेरे पिताके सेवकोंके मनसब और जागीरें ज्यों की त्यों बनी रहें। वरंच यथायोग्य हरेकका पद बढ़ाया जावे(१)। और सब मुल्कोंके माफीदारोंकी माफियां

पहले कई समय थे। कभी कभी पिछले ३—४ घण्टे दिनसे प्रारम्भ कर देता था और कभी दिनमेंही पीने लगता था। ३० वर्षकी अवस्था तक तो यही ढंग रहा फिर रातका समय स्थिर किया। अब तो केवल भोजनका स्वाद लेनेके वास्ते पीता हूं।

(१) बादशाह लिखता है कि फिर मैंने यथायोग्य सबके मनसब

बिलकुल उन पट्टोंके अनुसार जो उनके पास हों स्थिर रहें और मीरानसदरजहां (धर्माधिकारी) पालना करनेके योग्य लोगोंको नित्य प्रति मेरे सम्मुख लाया करें।

१२—सब अपराधी जो वर्षोंसे किलों और कारागृहोंमें कैद है छोड़ दिये जावें।

सिक्का।

फिर बादशाहने एक शुभमुहूर्त्तमें अपने नामकी छाप सोने चांदी पर छपवाई और अनेक तौलके रुपये मोहरें और पैसे चलाये जिनके नाम पृथक पृथक रखे गये। यथा—

सिक्का	तौल	नाम
मोहर	१०० तोला	नूरसुलतानी
„	५० „	नूरशाही
„	२० „	नूरदौलत
„	१० „	नूरकरम
„	५ „	नूरमेहर
„	१ „	नूरजहांनी
„	आधा तोला	नूरानी
„	पाव तोला	रिवाजी
रुपया	१०० तोला	कौकबेताला
„	५० „	कौकबेइकबाल
„	२० „	कौकबेमुराद
„	१० „	कौकबेबखत

बढाये। १० के १२ से कम नहीं और अधिक १० के ३० और ४० (अर्थात् सवाये तिगुने और चौगुने) कर दिये। सब अहदियोंका खाना घोड़ा और कुल शागिर्दपेशोंका महीना सवाया कर दिया। अपने पूज्य पिताकी महलवालियोंका हाथखर्च उनकी दशा और व्यवस्थाके अनुसार १० से १२ और १० से २० तक सवाया और दूना बढ़ा दिया।

"	५ "	कौकवेसफेद
"	१ "	जहांगीरी
"	॥ "	सुलतानी
"	। "	निसारी
"	तोलेका १०वां भाग	खैरकबूल

इन सिक्कों पर बादशाहका नाम, मुसलमानी कलमा, सन् जुलूस और टकसालका स्थान छापा जाता था। नूरजहांनी मोहर की जगह चलता था और जहांगीरी रुपयेकी जगह।

बादशाहकी उदारता और न्यायनीति।

बादशाहने एक लाख रुपये खुसरोको देकर फरमाया कि किलेसे बाहर जो मुनइमखां खानखानांका मकान है उसको अपने वास्ते सुधरा लो।

पंजाबकी सूबेदारी सईदखां मुगलको दी पर उसके नाजिरोंका अन्यायी होना सुनकर कहला दिया कि हमारी न्यायशीलता किसी के अनाचारका सहन नहीं करती है जो उसके अनुचरोंसे किसी पर अन्याय हुआ तो अप्रसन्नताका दण्ड दिया जायगा।

फरीद बखशीको मीरबखशीके पदपर स्थिर रखा और सिरोपाव के सिवा जडाऊ दवात कलम और जडाऊ तलवार भी उसको दी और उसका मन बढानेको कहा कि मैं तुमको तलवार और कलम का धनी (सिपाही और मुंशी) जानता हूं।

वजीरखां जो वजीर था और फतहउल्लह जो बखशी था वह दोनो अब भी उन्हीं कामों पर रहें।

अबदुलरज्जाक मामूरी जो बिना कारणही बादशाहके पाससे उसके बापको सेवामें भाग आया था बादशाहने उसका अपराध क्षमा करके बखशीके पद पर बना रखा और खिलअत दिया।

अमीनुद्दौला जो जहांगीरका बखशी था और फिर बिना आज्ञा उनके पिताके पास आकर तोपखानेका अध्यक्ष होगया था। उसी काम पर बना रखा गया। इसी तरह जो लोग बाहर और भीतर

बापकी सेवामें थे जहांगीरने उन सबको उन्हीं कामों पर रहने दिया।

४ रज्जब अगहन सुदी ६ को शरीफखां जो बादशाहके भरोसे का आदमी था और जिसको तुमन और तोग मिला हुआ था बिहारके सूबेसे आकर उपस्थित हुआ। बादशाहने प्रसन्न होकर उस को वकील और बड़े वजीरका उच्च पद अमीरुलउमराकी पदवी और पांच हजार सवारका मनसब दिया। इसका बाप ख्वाजा अबदुस्समद बहुत अच्छा चित्रकार था और हुमायूं बादशाहके पास प्रतिष्ठापूर्वक रहता था जिससे अकबर बादशाह भी उसका बहुत मान रखता था।

बंगालेकी सूबेदारी राजा मानसिंहके पासही बनी रही। बाद-शाह लिखता है—"उसे इस बातका जरा गुमान न था कि मैं उसके साथ ऐसा उदार बरताव करूंगा। मैंने उसको चारकुब्बका सिरोपाव जड़ाऊ तलवार खासा घोड़ा देकर उस देशको बिदा किया जो ५० हजार सवारोंके रहनेकी जगह है। उसका बाप भगवान दास(१) और दादा भारमल था। भारमल उन कछवाहे राजपूतोंसे पहला पुरुष था जो मेरे बापकी सेवामें आकर रहे थे। सचाई राजभक्ति और वीरतामें अपनी जाति वालोंसे बढ़कर था।

उदयपुर पर चढ़ाई।

जहांगीर लिखता है—

राज्यतिलकके पीछे सब अमीर अपनी अपनी सेना सहित दरबारमें उपस्थित थे। मैंने सोचा कि यह सेना अपने पुत्र परवेज़ के साथ देकर रानासे लड़ने भेजूं। वह हिन्दुस्थानके दुष्टों और कट्टर काफिरोंमेंसे है। पिताके समय भी कई बार उसपर सेनाएं भेजी गई पर उसका पाप नहीं कटा। मैंने शुभमुहूर्त्तमें पुत्र परवेजको भारी खिलअत जड़ाऊ परतला जड़ाऊ पेटी मोतियोंकी माला जो कीमती रत्नोंकी बनी ७२ हजारकी थी अरबी एराकी घोड़े और

(१) भगवन्तदास।

अच्छे हाथी देकर विदा किया। बीस हजारके लगभग हथियार-बन्द सजे हुए सवार अच्छे सरदारों सहित लड़ाईमें भेजे।

आसिफखां दीवानको खिलअत जड़ाऊ कमरपेटी हाथी घोडा और शाहजादेकी "अतालीकी" का काम मिला और सब छोटे बड़े अमीरोंको उसकी सलाह पर चलनेका हुक्म दिया गया।

अबदुलरज्जाक मामूरी बखशी और मुखतारबेग शाहजादेका दीवान हुआ।

राजा भारमलके बेटे जगन्नाथको जो पांच हजारी था खिलअत और जडाऊ परतला मिला।

राना सगर, राना(१)का चचा था और अकबर बादशाह उसको राना पदवी देकर खुसरोके साथ रानाके ऊपर भेजना चाहता था पर इसी बीचमें मर गया। जहांगीरने उसे भी खिलअत और जड़ाऊ पट्टा देकर परवेजके साथ कर दिया।

राजा मानसिंहके भतीजे माधवसिंह(२) और सेखावत रायसाल दरबारीको इस हेतु कि वह दोनों उसके पिताका विश्वासपात्र और तीन हजारी मनसबदार थे झंडे दिये।

इनके सिवा शेरखां पठान, शेख अबुलफजलका बेटा शेख अबदुर्रहमान, राजा मानसिंहका पोता महासिंह, वजीर जमील और करारखां जो दो दो हजार सवारोंके मनसबदार थे घोड़े और सिरोपाव पाकर शाहजादेके साथ विदा हुए और राजा मनोहर भी गया।

बादशाह मनोहरके विषयमें लिखता है—"राजा मनोहर

(१) तुजुक जहांगीरीमें इसका नाम शंकर और रानाका चचेरा भाई लिखा है। पर यह राना अमरसिंहका चचा था क्योंकि राना उदयसिंहका बेटा और प्रतापसिंहका भाई था।

(२) माधवसिंह मानसिंहका भाई था भतीजा न जाने कैसे तुजुकमें लिखा है।

शेखावत जातिके काछवाहोंमेंसे है। मेरे बाप बचपनमें उससे बहुत मोह रखते थे। यह फारसी बोलता था। उससे लेकर आदम तक उस घरानेके किसी आदमीमें भी समझका होना नहीं कहा जा सकता है। परन्तु वह समझसे शून्य नहीं है और फारसीकी कविता भी करता है।"

यह लिखकर बादशाहने उसकी बनाई एक बैत भी लिखी है जिसका अर्थ यह है—छायाकी उत्पत्तिसे यही प्रयोजन है कि कोई सूर्य्य भगवानके प्रकाश पर अपना पांव न धरे।

इस लडाईमें बहुतसे अमीरों, खानोंके बेटो और राजपूतोंने अपनी इच्छासे जानेकी प्रार्थना की थी। एक हजार अहदियों (इक्कों) की नौकरी भी उक्त लड़ाईके लिये बोली गई थी।

बादशाह लिखता है—"साराश यह है कि यह ऐसी फौज तय्यार हुई है कि काम पड़े तो बड़े बड़े शक्तिमान श्रीमानोंमेंसे हरेकका सामना करे।

दान पुण्य और पदवृद्धि।

बादशाहने २० हजार रुपये दिल्लीके गरीबोंके लिये भेजे।

सब बादशाही राज्यकी विजारत [माल] का काम आधा आधा वजीरुलमुल्क और वजीरखांको बांट दिया।

शेख फरीद बखशीको चार हजारीसे पंज हजारी किया।

रामदास काछवाहेका मनसब दो हजारीसे तीन हजारी कर दिया वह अकबरके कृपापात्र सेवकोंमेंसे था।

कन्दहारके हाकिम मिरजा रुस्तम, अबदुर्रहीम खानखाना उसके बेटों एरच, दाराब और दक्षिणमें रखे हुए दूसरे अमीरोंके वास्ते सिरोपाव भेजे गये।

बाज बहादुरको चार हजारी मनसब बीस हजार रुपये और उडीसेकी सूबेदारी मिली। उसका बाप निजाम, हुमायूं बादशाह की किताबें रखा करता था। सदरजहांका मनसब दो हजारीसे चार हजारी कर दिया। वह बादशाहके साथ पढ़ा था और उसने

आपकी वीमारीमें जब सब अमीर पलट गये थे तब भी वह नहीं पलटा था।

केशवदास मारूका मनसब बढ़कर डेढ़ हजारी होगया। यह मेढ़तिया राठोड़ोंमेंसे था और स्वामिभक्तिमें अपने बराबरवालोंसे बढ़ गया था।

गयासबेगको जो कई वर्षोंतक व्यूतात [कारखानों] का दीवान था सात सदीसे डेढ़ हजारी करके वजीरखांकी जगह आधे राज्यका वजीर किया और ऐतमादुद्दौलाका खिताब दिया। वजीरखांको सूबे बंगालका दीवान करके जमाबन्दी तय्यार करनेके लिये भेजा।

कुलीचखांको एक लाख रुपये और गुजरातका सूबा इनायत हुआ।

पितरदासको जिसे अकबर बादशाहने रायरायांकी पदवी दी थी। इस बादशाहने राजा विक्रमादित्यकी उपाधि देकर मीरे-आतिश अर्थात् तोपखानेका अध्यक्ष बनाया और हुक्म दिया कि हमेशा अरदलीके तोपखानेमें ५० हजार तोपची और ३ हजार तोपें तैयार रखे। वह खत्री था अकबर बादशाहने उसे हाथी-खानेकी मुशरफी अर्थात् कामदारीसे बढ़ाकर अमीरीके पद तक पहुंचाया था सिपाही भी था और प्रबन्धकर्त्ता भी।

खान आजमके बेटे वैरमका मनसब दो हजारीसे अढाई हजारी होगया।

लाल छाप।

बादशाहकी यह इच्छा थी कि अपने और अपने पिताके सेवकों के परममनोरथ पूरे करे। इससे आज्ञा दी कि उनमेंसे जो कोई अपनी जन्मभूमिकी जागीरमें चाहता हो वह प्रार्थना करे। उसे चंगेज-खानी तौरे और कानूनके अनुसार लाल छापका पट्टा कर दिया जावेगा जिससे फिर कुछ हेरफेर न हो।

बादशाह लिखता है कि हमारे बाप दादे जिस किसीको शासन देते थे। उसके पट्टे पर लाल छाप कर देते थे। यह लाल छाप

शिगरफसे लगाई जाती थी। मैंने हुक्म दिया कि छाप लगानेकी जगह पट्टे पर सोना चढा दिया करे। अब इस छापका नाम "आलतमगा" रख दिया है। (१)

अमीरोंके इजाफे।

बदख्शांके मिरजासुलेमानके पोते और शाहरुखके बेटे मिरजा सुलतानको बादशाहने बेटोंकी भांति पाला था। उसे एक हजारी मनसब दिया।

भावसिंहका मनसब बढकर डेढ हजारी होगया। यह राजा मानसिंहकी सन्तानमें बहुत योग्य था।

गयूरबेग काबुलीके बेटे जमानाबेगको डेढ हजारी मनसब, महाबतखांका खिताब और शागिर्दपेशेके बख्शीका पद मिला (२) यह पहले अहदी था फिर पानसदी हुआ था।

राजा बरसिंह देव।

राजा बरसिंहदेव(३) बुन्देलेको तीन हजारी मनसब मिला। बादशाह लिखता है कि यह बुन्देला राजपूत मेरा बढाया हुआ है। बहादुरी भलमनसी और भोलेपनमें अपने बराबरवालोंसे बढकर है। इसके बढनेका यह कारण हुआ कि मेरे पिताके पिछले समयमें शेख अबुलफजलने जो हिन्दुस्थानके शेखोंमें बहुत पढा हुआ और बुद्धिमान था स्वामिभक्त बनकर बडेभारी मोलमें अपनेको

(१) जहांगीर बादशाहकी कई फरमान इस लाल छापके हमारे देखनेमें भी आये है।

(२) कर्नल टाडने भूलसे इसको रजपूत लिख दिया है यह मुगल था।

(३) फारसी तवारीखमें नरसिंहदेव भूलसे लिखा है यह भूल एक नुकतेकी है क्योंकि 'बे' और 'नून' की शक्लमें एक नुक्तेका फर्क है नीचे नुकता लग जावे तो 'बे' और ऊपर लगे तो 'नून' होजावे। फारसी लिपिमें नुकतोंके हेर फेरसे अर्थका अनर्थ होजाता है। इसके कई दृष्टान्त मैं स्वप्न-राजस्थान ग्रन्थमें लिख चुका हूं।

मेरे बापके हाथ बेच दिया था। उन्होंने उसको दक्षिणसे बुलाया। वह मुझसे लाग रखता था और हमेशा ढके छुपे बहुतसी बातें बनाया करता था। उस समय मेरे पिता फसादी लोगोंसे मेरी चुगलियां सुनकर मुझसे नाराज थे। मैं जान गया था कि शेखके आनेसे यह नाराजी और बढ जावेगी जिससे मै हमेशाके लिये अपने बापसे विमुख होजाऊंगा। इस वरसिंहदेवका राज्य शेखके मार्ग में पडता था और यह उन दिनों बागी भी होरहा था। इसलिये मैंने इसको कहला भेजा कि यदि तुम उस फसादीको राहमें मार डालो तो मै तुम्हारा बहुत कुछ उपकार करूंगा। राजाने यह बात मानली। शेख जब उसके देशसे होकर निकला तो इसने मार्ग रोक लिया और थोडीसी लडाईमें उसके साथियोंको तितर बितर करके शेखको मारा और उसका सिर इलाहाबादमें मेरे पास भेज दिया। इस बातसे मेरे पिता नाराज तो हुए परन्तु परिणाम यह हुआ कि मै बेखटके उनके चरणोंमें चला गया और वह नाराजी धीरे धीरे दूर होगई।

३० घोडोंका दान।

बादशाहने तबेलेके कर्मचारियोंको हुक्म दिया कि नित्य ३० घोड़े दानके लिये लाया करें।

मिरजाअली अकबरशाहीको चार हजारी मनसब और संभल की सरकार जागीरमें मिली।

अमीरुलउमराकी एक उत्तम बात।

बादशाह लिखता है—"एक दिन किसी प्रसङ्गसे अमीरुलउमरा ने एक बात अर्ज की जो मुझे बहुत पसन्द आई। उसने कहा कि ईमानदारी और बेईमानी कुछ धन मालहीमें नहीं देखी जाती है, वरन यह भी बेईमानी है कि जो गुण अपनोंमें न हो वह दिखाया जावे और जो गुण दूसरोंमें हो वह छिपाया जावे। बेशक यह बात सच्ची है। पास रहनेवालोंको चाहिये कि अपने और पराये

का राग द्वेष छोड़कर हरेक मनुष्यकी जैसी व्यवस्था हो वैसी अर्ज करते रहें।"

तूरान जीतनेका विचार।

"मैंने परवेजसे जाते समय कह दिया था कि जो राणा अपने पाटवीपुत्र कर्ण समेत हाजिर होजावे और अनुचर्य्या स्वीकार करे तो उसके देशको मत बिगाड़ना। इस सिफारिशके दो प्रयोजन थे एक तो यह कि तूरानकी विलायत जीतनेका विचार मेरे पिताके मनमें रहा करता था। परन्तु जब कभी उन्होंने यह इरादा किया तभी कोई न कोई विघ्न पड़ गया। अब यदि राणाकी लड़ाई एक तरफ होजाय और यह खटका जीसे निकल जाय तो मैं परवेजको हिन्दुस्थानमें छोड़कर अपने बाप दादोंके देशको चला जाऊं। वहां अभी कोई जमा हुआ हाकिम नहीं है। बाकीखां भी जो अबदुल्लाखां और उसके बेटे अबदुलमोमिनखांके पीछे जोर पकड़ गया था मर चुका है। उसके भाई वलीमुहम्मदका जो इस समय उस देशका अधिपति है राज्य नहीं जमा है।"

"दूसरे दक्षिण जीतनेकी तय्यारी करना जिसका कुछ भाग मेरे पिताके समयमें लिया गया था अब मैं उस देशको एक बार अपने राज्यमें मिलाया चाहता हूं परमेश्वर मेरे यह दोनो मनोरथ पूरे करे।"

मिरजा शाहरुख।

बदख्शांके हाकिम मिरजा सुलेमानके पोते मिरजा शाहरुख को अकबरने पांच हजारी मनसब और मालवेका सूबा दिया था जहांगीरने सात हजारी करके उसे उसी सूबेमें स्थिर रक्खा। अकबर भी इस मिरजाका बहुत मान रखता था। जब अपने बेटोंको बैठने का हुक्म देता तो इसको भी बिठाता।

ख्वाजा अबदुल्लह नकशबन्दीका कसूर माफ होकर जागीर और मनसब बहाल रहा। यह बादशाहको छोड़कर उसके बापके पास चला आया था।

अबुलनबी उजबकका मनसब अढ़ाई हजारी होगया। यह तूरान का रहनेवाला था और अबदुलमोमिनखांके राज्यमें मशहदका हाकिम था।

सुलतान दानियालके बेटोंका बुलाना।

बादशाहने अपने विश्वासी सेवक शैख हुसैनको जो बड़ा शिकारी और जर्राह भी था अपने भाई सुलतान दानियालके बालबच्चोंको लानेके लिये बुरहानपुर भेजा था। खानखानांको भी कुछ ऊंची नीची बातें कहलाई थीं वह उसका और वहां भेजे हुए दूसरे अमीरोंका समाधान करके सुलतान दानियालके घरवालोंको लाहौर में बादशाहके पास ले आया।

नकीबखां इतिहासवेत्ता।

नकीबखांका पद बादशाहने बढ़ाकर डेढ़ हजारी कर दिया। यह बड़ा इतिहासवेत्ता था। बादशाह लिखता है—"सृष्टिकी उत्पत्तिसे आजतक सारी दुनियाका हाल इसकी जबान पर है। ऐसी धारणाशक्ति परमेश्वर विरलेही मनुष्यको देता है। मेरे पिता ने बादशाह होनेसे पहले इससे कुछ पढ़ा था इस लिये इसको उस्ताद कहते थे। यह इतिहास और परम्पराको ठीक ठीक जानने में अद्वितीय है।

अखयराज कछवाहके बेटे।

२७ शाबान (माघ बदी १४) को राजा मानसिंहके काका भगवानदासके पुत्र अखयराजके बेटों अभयराम, विजयराम और श्याम रामने विलक्षण उपद्रव किया। अभयरामके अपराधोंसे बादशाह कई बार आनाकानी कर गये थे। उस दिन अर्ज हुई कि वह अपने कबीलोंको देशमें भेजते हैं पीछेसे आप भी भागकर राना के पास जाना चाहते हैं। बादशाहने रामदास और दूसरे राजपूत सरदारोंसे कहा कि कोई इनका जामिन हो जावे तो इनके मनसब और जागीरें बहाल रखकर इनके पिछले कसूर माफ कर दिये जावें। पर दुर्भाग्यसे कोई उनका जामिन न हुआ। तब बाद-

शाहने अमीरुलउमरासे कहा कि जबतक इनकी जामिनी न हो तबतक वह किसीके हवाले कर दिये जावें। अमीरुलउमराने उन को इब्राहीमखां काकड़ और शाहनवाजखांको सौंप दिया। उन्होंने इनके हथियार लेना चाहा तो यह लड़नेको तय्यार हुए। अमीरुल उमराने यह बात बादशाहसे कही। बादशाहने दण्ड देनेका हुक्म दिया। जब अमीरुलउमरा गया तो पीछेसे बादशाहने शेख फरीदको भी भेजा।

दो राजपूतोंने अमीरुलउमराका सामना किया। एकके पास तो तलवार थी और दूसरेके पास जमधर। जमधरवालेसे अमीरुलउमराका एक नौकर जिसका नाम क़ुतुब था लड़ा और मारा गया। इधर यह जमधरवाला भी काम आया और तलवारवाले को अमीरुलउमराके एक पठानने मार डाला। फिर दिलावर अभयरामके ऊपर गया जो दो राजपूतोंसे सजा खड़ा था और उन की तलवारोंसे घायल होकर वहीं खेत रहा। पीछे कुछ अहदियों और अमीरुलउमराके नौकरोंने मिलकर उनको मार डाला। एक राजपूत तलवार निकालकर शेख फरीदके ऊपर दौड़ा। पर शेख के एक हबशी गुलामने उसको भी ठिकाने लगाया।

यह मारामारी आमखास दौलतखानेमें हुई और इस दण्डसे बहुतसे बखेड डर गये। अबुलनबी उजबकने बादशाहसे निवेदन किया कि जो ऐसा अपराध उजबकोंमें होता तो अपराधियोंका सपरिवार संहार कर देता।

बादशाहने फरमाया कि यह लोग मेरे बापके बढ़ाये हुए हैं मैं भी वही बरताव बरतता हूं। और फिर यह न्यायकी बात भी नहीं है कि एक मनुष्यके अपराधमें बहुतसे लोगोंको दण्ड दिया जावे।

मनसबोंका बढाना।

बादशाहने ताजखां और मखताबेग क़ाबुलीका मनसब बढ़ाकर

३ हजारी और डेढ हजारी कर दिया। पिछला उनके चचा मिरजा मुहम्मद हकीमके पास रहा करता था।

अबुलकासिम तमकीनका भी जो अकबर बादशाहका पुराना नौकर था डेढ़ हजारी मनसब होगया। बादशाह लिखता है कि—"ऐसा बहुपुत्री कोईही होगा। उसके ३० लड़के हैं और लड़कियां इतनीही नहीं, तो इससे आधीसे तो कम नहीं।"

पुत्र पदवी।

बादशाहने शेख सलीम चिश्तीके पोते शेख अलाउद्दीनको बेटे की पदवी प्रदान की। यह बादशाहसे एक वर्ष छोटा था। बहुत साधु और साहसी था।

अली असगर बारहको सैफखांका खिताब और तीन हजारी, फरेदूंबरलासको दो हजारी और शेख बायजीदको तीन हजारी मनसब दिया। शेख बायजीद भी शेख सलीम चिश्तीका पोता था। उसकी माने सबसे पहले बादशाहको दूध पिलाया था।

पण्डितोंसे शास्त्रार्थ।

बादशाह लिखता है—"एक दिन मैंने पण्डितोंसे कहा कि यदि ईश्वरका १० भिन्न भिन्न शरीरोंमें अवतार लेना तुम्हारे धर्मका परम सिद्धान्त है तो यह बुद्धिमानोंको प्रमाण नहीं। इस कल्पना में यह मानना पड़ेगा कि ईश्वर जो सब उपाधियोंसे न्यारा है लम्बाई चौड़ाई और गहराई भी रखता है। यदि यह अभिप्राय है कि उसमें ईश्वरका अंश था तो ईश्वरका अंश सब प्राणियोंमें होता है उनमें होनेकी कोई विशेषता नहीं है। और जो ईश्वरके गुणोंमेंसे किसी गुणके सिद्ध करनेका प्रयोजन है तो इसमें कोई मुख्य बात नहीं किस वास्ते कि प्रत्येक धर्म और पन्थमें सिद्ध पुरुष होते रहे हैं जो अपने समयके दूसरे मनुष्योंसे समझमें बढ़ चढ़ कर थे।"

"बहुतसे वाद विवादके बाद वह लोग उस परमेश्वरको मान गये जो रूप और रेखासे विभिन्न है। कहने लगे कि हमारी बुद्धि

उस परमात्मा तक पहुंचनेमें असमर्थ है और बिना किसी आधारके उसको पहचाननेका मार्ग नहीं पासकते इस लिये हमने इन अवतारोंको अपने वहां तक पहुंचनेका साधन बना रक्खा है।"

"मैंने कहा कि यह मूर्तियां कबतक तुम्हारे वास्ते परमात्मा तक पहुंचनेका द्वार होसकती है।"

बादशाहके घरका हाल।

इसके आगे बादशाहने अपने बाप भाइयों और बहनोंका कुछ घरू वृत्तान्त लिखा है जो विलक्षण और सुहावना होनेसे यहां भी लिखा जाता है।

बादशाह लिखता है—"मेरे पिता प्रत्येक धर्म्म और पन्थके विद्वानों और विशेषकर हिन्दुस्थानके पण्डितोंका बहुधा सत्सङ्ग करते थे। वह पढे नहीं थे तो भी पण्डितों और विद्वानोंके पास बैठनेसे उनकी बातोंमें अविद्वत्ता नहीं दरसने पाती थी। गद्य और पद्यके गूढ़ार्थोंको ऐसे पहुंच जाते थे कि उससे बढ़कर पहुंचना सम्भव न था।"

"कद कुछ लम्बा था, वर्ण गेहुंवा, आंख भौ काली, छवि अच्छी, सिंहका सा शरीर, छाती चौड़ी, हाथ और बाहु दीर्घ, नाकके बायें नथने पर सुन्दर तिल, आधे चनेके बराबर, जो सामुद्रिक जानने वालोंके मनमें धन और ऐश्वर्य्यकी वृद्धिका हेतु है, बोली गम्भीर बातें सलोनी, स्वरूप और छवि इस लोकके लोगोंसे भिन्न थी, देव-मूर्त्ति थे।"

बहन भाई।

"मेरे जन्मसे तीन महीने पीछे मेरी बहन शाहजादा खानम एक सहेलीसे पैदा हुई। पिताने उसे अपनी माताको सौंप दिया। उसके पीछे एक लड़का दूसरी सहेलीसे फतहपुरके पहाडोंमें हुआ। उसका नाम तो शाह मुराद था परन्तु पिता पहाड़ी कहते थे। जब उसको दक्षिण जीतनेके वास्ते भेजा तो वह कुसङ्गतमें पडकर इतनी अधिक शराब पीने लगा कि ३० वर्षकी अवस्थामें जालनापुर

के पास मर गया जो बरार देशमें है। उसका वर्ण सांवला था बदन छरेरा कद लम्बा चालढालसे धीरता वीरता और गम्भीरता पाई जाती थी।"

"तारीख १० जमादिउलअव्वल सन् ९७९(१) बुधकी रातको फिर एक लड़का एक सहेलीसे अजमेरमें दानियाल मुजावरके घर पैदा हुआ। पिताने उसका दानियाल नाम रखा और शाह मुराद के मरने पर दक्षिणको भेजा। पीछे आप भी गये। जिन दिनोंमें आपने आसेरगढ़को घेरा था दानियाल खानखानां और मिरजा यूसूफ आदि सरदारों सहित अहमदनगरके किलेको घेरे हुए था। जब आसेरगढ़ फतह होगया, पिता दानियालको वहां छोड़कर आगरेमें आगये फिर वह भी अपने भाई शाह मुरादका अनुगामी होकर अधिक शराब पीनेसे ३३ वर्षकी अवस्थामें मर गया। उसकी मृत्यु बुरी तरह हुई। उसको बन्दूक और बन्दूककी शिकारसे बहुत रुचि थी। अपनी बंदूकका नाम 'इक्का' और 'जनाजा' रखा था। जब शराब बहुत बढ़ गई और खानखानांने मेरे पिता की ताकीदसे पहरे बिठाकर शराबका आना बन्द कर दिया तो दानियालने अपने सेवकोंसे बहुत नम्रतासे कहा कि जैसे बन पड़े मेरे वास्ते शराब लाओ। और निज सेवक मुरशिदकुलीसे कहा कि इसी बंदूक इक्का और जनाजामें भर ला। वह दुष्ट इनामके लोभने दोआतिशा शराब उस बंदूकमें भरकर लेआया। उसकी तेजीसे बारूद और लोहा कटकर उसमें मिल गया फिर उसका पीना और मरना साथ साथ था।"

"दानियाल बहुत सजीला जवान था। उसे हाथी घोड़ोंका बहुत शौक था। यह असम्भव था कि किसीके पास अच्छा हाथी

(१) अकबरनामेमें बुध २ जमादिउलअव्वल ९८० है और यही सही है बुध भी इसी तारीखको था। १० जमादिउलअव्वल और तिथि आसोज सुदी ३ सम्वत् १६२९ थी १० जमादिउलअव्वल ९८० को बुध नहीं रविवार था।

या घोडा सुने और मंगा न ले। हिन्दुस्थानी रागोंका बडा रसिक था। हिन्दुओंके ढङ्ग पर हिन्दीमें यदि कुछ कविता करता तो बुरी न होती थी।

"दानियालके जन्मके पीछे फिर एक लडकी बीबी दौलतशाहसे पैदा हुई। पिताने उसका नाम शकरुन्निसा बेगम रखा। वह उनके पासही पली थी इससे बहुत अच्छी निकली। भलमनसी और सब पर दया रखना उसका स्वाभाविक गुण है। बचपनसे अबतक मेरे स्नेहमें डूबी हुई है ऐसी प्रीति बहन भाइयोंमें बहुत कम होती होगी। बाल्यावस्थामें पहली बार जैसी कि मर्यादा है बालकोंकी छाती दबानेसे दूधकी बून्द निकलती है। जब मेरी इस बहनकी छाती भी दबाई गई और उससे दूध निकला तो मेरे पिता ने मुझसे कहा कि बाबा इसको पी जा जिससे तेरी बहन तेरी मा की जगह भी हो जावे। ईश्वर जानता है कि जिस दिनसे मैंने उस दूधकी बून्दको पिया उसी दिनसे बहनपनेके सम्बन्धके साथ अपनेमें वह प्रीति भी पाता हूं जो लडकोंको मासे होती है।"

"कुछ दिनों पीछे एक और लडकी उसी बीबी दौलतशाहसे पैदा हुई। पिताने उसका नाम आरामबानू बेगम रखा। उसका मिजाज कुछ गर्म्म और तेज है। पिता उसको बहुत प्यार करते थे। उसकी बहुतसी बेअदबियोंको सहते थे जो अति मोह होनेके कारण बुरी नहीं लगती थी और मुझे सावधान करके कईबार कह चुके थे कि बाबा मेरी खातिरसे अपनी इस बहनके साथ जो हिन्दुओंकी बोलीके अनुसार मेरी लाड़ली है मेरे पीछे ऐसाही बरताव बरतना जैसा कि मै उससे बरतता हूं। इसका लाड करना और इसकी बेअदबियोंसे बुरा न मानना।"

"मेरे पितामें जो उत्तम गुण थे वह कहनेमें नहीं आते। इतने बडे राज्य असंख्य कोष और हाथी घोडोंके स्वामी होकर परमेश्वर से डरतेही रहते थे और अपनेको उसकी सृष्टिका एक तुच्छ जीव

"उनके विशाल राज्यमें जिसकी प्रत्येक सीमा समुद्रसे आमिली थी अनेक धर्म और पंथके लोग अपने अपने भिन्न भिन्न मतोंको लिये हुए सुखसे निर्भय बसते थे किसीको किसीसे कुछ बाधा न थी जैसी कि दूसरी विलायतोंमें है कि शीया मुसलमानोंको ईरान और सुन्नियोंको रूम, हिन्दुस्थान और तूरानके सिवा जगह नहीं है। और यहां सुन्नी शीया एक मसजिदमें फरंगी और यहूदी एक गिरजामें नमाज पढ़ते थे।"

"सुलहकुल अर्थात् सबके साथ निबाहने वाले पंथ पर चलते थे हरेक दीन और धर्मके श्रेष्ठ पुरुषोंसे मिलते थे और जैसी जिस की समझ होती थी उसीके अनुसार उसका आदर सत्कार करते थे। उनकी रातें जागरनमें कटतीं थीं दिन और रातमें बहुतही कम सोते थे रात दिनका सोना एक पहरसे अधिक न था। रातोंके जागनेको गई हुई आयुका एक प्रतिकार समझते थे।"

"वीरताका यह हाल था कि मस्त और छुटे हुए हाथियों पर चढ़ जाते थे। खूनी हाथी जो अपनी हथनियोंको भी पास न आने देते थे यहांतक कि महावतों और हथनियोंको मारकर निकल खड़े होते थे, उन पर गहरूको किसी दीवार या पेडके ऊपरसे चढ़ जाते थे और उन्हें अपने वशमें कर लेते थे। यह बात कइबार देखी गई है।"

"१४ वर्षकी अवस्थामें राज्यसिंहासन पर विराजमान हुए थे हेमू "काफिर" जिसने पठानोंको गद्दी पर बिठाया था हुमायूं बादशाहका देहान्त होने पर एक अपूर्व सेना और बहुतसे ऐसे हाथी सजाकर जैसे उस समय हिन्दुस्थानके किसी हाकिमके पास न थे दिल्ली पर चढ़ आया। आप उस समय पञ्जाबके पहाड़ोंकी तल-हटीमें पठानोंको घेरे हुए थे। वहां यह समाचार पहुंचा तो बैरम-खाने जो आपका शिक्षक था नायके सब सेनानियोंको बुलाकर आप को परगने कलानूर जिले लाहौरमें तख्तपर बिठाया। तरदीखां आदि सुगल जो दिल्लीमें थे हेमूसे लडे और हारकर आपके पास

आये । वैरमखांने तरदीवेगको भाग आनेके अपराधमें मारडाला।

"हेमूं इस जीतसे घमण्डमें आकर कलानूरकी ओर बढा। पानीपतके मैदानमें २ मोहर्रम गुरुवार सन् ९६४(१) को तम और तेजके पुञ्ज परस्पर भिड़े। हेमूकी सेनामें ३० हजार जङ्गी सवार थे और पिताजीके पास चार पांच हजारसे अधिक न थे। हेमू हवाई नामक हाथी पर चढा हुआ था कि अकस्मात उसकी आंख मे तीर लगकर सिरमेंसे निकल गया। यह दशा देखकर उसकी फौज भाग निकली। दैवयोगसे शाहकुलीखां महरम हाथीके पास पहुंचकर महावत पर तीर मारता था। वह चिल्ला उठा मुझे मत मारो हेमू इसी हाथी पर है। फिर तो लोग दौड पड़े और उसको उसी दशामें पिताजीके पास लाये। वैरमखांने प्रार्थना की कि हजरत इस काफिरको मारकर गिजा (धर्म्मयुद्ध) के पुण्यको प्राप्त हों और आज्ञापत्रोंमें गाजी लिखे जावें।"

"आपने फरमाया कि मै तो इसको पहलेही टुकडे टुकड़े कर चुका। कावुलमें जवकि मैं ख्वाजा अवदुस्समद शीरींकलमसे चित्रकारीका अभ्यास करता था तो एक दिन मेरी लेखनीसे एक ऐसी तसवीर निकली कि जिसके अंग प्रत्यंग भिन्नभिन्न थे। एक पास रहने वालेने पूछा कि यह किसकी मूर्त्ति है तो मेरे मुंहसे निकला कि हेमूकी है।"

"निदान अपने हाथको उसके लोहूसे न भरकर एक सेवकको उसके मारनेका हुक्म देदिया। उसके सिपाहियोंकी ५०००लाशें तो गिनी गई थीं उनके सिवा और भी इधर उधर पड़ी थीं।"

"उनके दूसरे बड़े कामोंमेंसे गुजरातकी फतह और दौड़ है। जव इब्राहीमहुसैन मिरजा, मुहम्मदहुसैन मिरजा और शाहमिरजा, वागी होकर गुजरातको गये और वहांके सब अमीरों (२) और दुराचारियोंसे मिलकर अहमदावादके किलेको घेरलिया जिस

(१) अगहन सुदी ३ सम्वत् १६१३।

(२) यह अमीर गुजरातके अगले वादशाह मुजफ्फरके नौकर थे।

में मिरज़ा अज़ीज़कोका और बादशाही लश्कर था। आप मिरज़ा अज़ीज़ कोकाकी मा जीजी अगाके घबरा जानेसे तुरन्त निजसेना सहित फतहपुरसे गुजरातको रवाने होगये और दो महीने के रस्तेको कभी घोडे कभी ऊंट और कभी बुड़बहलकी सवारीपर ९ दिनमें काटकर ५ जमादिउलअव्वलको दुश्मनके पास जापहुंचे। शुभचिन्तकोंसे सलाह पूछने लगे तो कुछ लोगोंने रात्रिमें छापे मारनेकी सलाह दी। आपने फरमाया कि छापा मारना कायर और धूर्तोंका काम है। उसी चण नरसिंहे बजाने और सिंहनाद करनेका हुक्म देकर साबरमती पर आये और लोगोंको प्रबन्धपूर्वक नदीमें उतरनेकी आज्ञा की।"

"मुहम्मदहुसैनमिरज़ा कोलाहल सुनकर घबराया और स्वयं भेद लेनेको आया। इधरसे सुबहानकुली तुर्क भी इसी तलाशमें नदी पर आया था मिरज़ाने उसको देखकर पूछा कि यह किसकी फौज है। तुर्कने कहा कि जलालुद्दीन अकबर बादशाह है और उन्हीं की फौज है। मुहम्मदहुसैनमिरज़ाने कहा कि मेरे जासूस १४ दिन पहले बादशाहको फतहपुरमें देख आये हैं तू झूठ कहता है। सुबहानकुलीने कहा आज नवां दिन है कि हज़रत फतहपुरसे धावा करके आये हैं। मिरज़ा बोला कि भला हाथी कैसे पहुंचे होंगे? सुबहानकुलीने जवाब दिया कि हाथियोंकी क्या आवश्यकता थी हाथियोंसे बढ़चढ़ कर पहाड़ोंको तोड़ देने वाले ऐसे ऐसे शूरवीर आये हैं कि तुमको सरकशी करनेकी हकीकत मालूम हो जायेगा।"

"मिरज़ा दूर जाकर अपनी सेनाको सजाने लगा और बादशाह शत्रुओंके हथियार बांधनेकी खबर आने तक वहीं ठहरे रहे। जब किरावलोंने यह खबर पहुंचाई कि अब गनीम हथियार पहिन रहा है तो आप आगे बढ़े और खान आज़मके बुलानेको आदमी भेजे। परन्तु उसने आनेमें विचार करके कहलाया कि शत्रु प्रबल है जबतक गुजरातका लश्कर किलेसे बाहर न आजावे नदीके पार ही रहना चाहिये। आपने फरमाया कि हमको हमेशा और

खास करके इस सफरमें ईश्वरकी सहायताका भरोसा है जाहरी बातों पर नजर होती तो इस प्रकार छडी सवारीसे धावा करके नहीं आते। अब शत्रु लडनेको तय्यार है तो हमको देर करना उचित नहीं। यह कहकर ईश्वर पर भरोसा करके अपने कई सेवकों सहित नदीमें घोडा डाला। नदी छिलछिली न थी तोभी कुशलपूर्वक पार होगये। फिर अपना दो बुलगा(१) मांगा तो कोरदार(२)ने घबराहटमें लाते हुए आगे डाल दिया। शुभचिन्तकोंने इसको अपशकुन समझा। आपने कहा कि हमारा शकुन तो बहुत अच्छा हुआ है क्योंकि हमारे आगेका रस्ता खुल गया। इतनेमें मिरजा सेना सजाकर अपने खासीसे सामना करनेको आया।"

"खानआजमको इस बातका ध्यान गुमान भी न था कि हजरत इतनी फुरतीसे यहां पधार जावेंगे। जब कोई उसे हजरतके आने का समाचार कहता था वह स्वीकार न करता था। निदान जब उसको अनुमानों और प्रमाणोंसे आपके पधारनेका निश्चय होगया तो गुजरातके लशकरको सजाकर किलेसे बाहर निकलनेको तय्यार हुआ। आसिफखांने भी उसको यह खबर भेजी परन्तु उसके किलेसे निकलनेके पहलेही शत्रुका दल वृक्षोंमेंसे निकल आया और आप उस पर चले। मुहम्मद कुलीखां तोकताई और तरदीखां दीवाना कुछ शूरवीरोंसे आगे बढ तो गये थे पर थोडी दूर जाकर पीछे फिरे। तब आपने राजा भगवानदाससे फरमाया कि दुश्मन बहुत हैं और हमारे आदमी थोडे हैं, हम सबको एक दिल होकर हल्ला करना चाहिये क्योंकि बंधी हुई मुट्ठी खुले हुए पंजेसे जियादा कारगर होती है। यह कहकर तलवार खेंची और साथियों सहित अल्लाहोअकबर और या मुईन कहते हुए दौडे। टक्करो

(१) दोवलगेका अर्थ कोषोंमें नही मिला यह कोई ऐसे हथियार अथवा बकतर वगैरहका नाम है जो गिरनेसे खुल जाता हो।

(२) हथियार रखनेवाला।

बाईं और बीचकी सेनाके शूरवीर भी पहुंचकर शत्रुसे लड़ने लगे। शत्रुकी सेनासे कौकबाई जो एक प्रकारका अग्न्यास्त्र होता है छूटा और थूहरोंके वृक्षोंमें पड़कर चक्कर खाने लगा। उसकी कड़कसे गनीमका हाथी भड़ककर अपने लशकरमें जापडा जिससे वहां बड़ी गडबड़ मची और बीचकी फौजने बढ़कर मुहम्मदहुसैन मिरजा और उसके सिपाहियोंको हटा दिया। शूरवीरोंने खूब युद्ध किया। मानसिंह दरबारीने हजरतके देखते देखते अपने शत्रुको मारलिया। रायोदास कछवाहा काम आया मुहम्मद वफा जखमी होकर घोडे से गिरा। ईश्वरकी कृपा और भाग्यबलसे शत्रु हार गये। आप इस विजयपर ईश्वरका धन्यवाद कररहे थे कि एक कलावन्तने सैफ खां कोकलताशके मारे जानेकी खबर दी। निर्णय करनेसे विदित हुआ कि जब मिरजा गोल (बीच) की फौज पर दौड़ा था तो सैफ खां दैवसंयोगसे उसके सामने आगया और वीरतापूर्वक लड़कर काम आया। मिरजा भी गोलवालोंके हाथों घायल हुआ।"

"सैफखां जैनखां कोकाका बडा भाई था और विचित्र वार्त्ता यह है कि लडाईसे एक दिन पहले जब बादशाह भोजन कररहे थे तो हजारोंसे जो शानेकी हड्डी देख जानता था पूछने लगे कहो किसकी जीत होगी? उसने कहा कि जीत तो आपकी होगी परन्तु एक अमीर इस लशकरका शहीद होगा। सैफखांने निवेदन किया कि यह सौभाग्य मुझे प्राप्त होना चाहिये।

"जब मिरजा मुहम्मद हुसैन भागा तो घोडेका पांव थूहरमें फंस जानेसे गिर पडा। उसी समय गदाअली इक्का वहां पहुंचा और उसे अपने आगे घोडे पर बैठाकर हजूरमें लाया। उस समय दो तीन आदमी और भी उसके पकड़नेमें शामिल होनेकी बात कहने लगे। आपने मिरजासे पूछा तुझे किसने पकडा? उसने कहा "बादशाहके नमकने।" उसके हाथ पीछेको बंधे थे आपने आगे को और बांधनेको फरमाया। फिर उसने पानी मांगा तो फरहत खां गुलामने उसके सिर पर दुहत्थड़ मारा। आपने उससे नाराज

होकर अपने पीनेका पानी मंगाया और मिरजाको पिलाया।"

"मिरजा मुहम्मदहुसैनके पकडे जाने पर आप धीरे धीरे अह-मदाबादको चले। मिरजाको राय रायसिंह राठोड़के जो जबर्द राजपूतोंमेंसे था हवाले किया कि हाथी पर डालकर साथ लावे।"

"इतनेमें अख्तियारुलमुल्क जो गुजरातियोंके बडे सर-दारोंमेंसे था ५००० आदमियों सहित आता हुआ दिखाई दिया। बादशाही लोग उसको देखकर घबराये। पर हजरतने अपनी स्वाभाविक वीरतासे बाजे बजानेका हुक्म दिया। शुजाअतखां राजा भगवानदास और कई बन्दे आगे जाकर लडने लगे और राय राय-सिंहके नौकरोंने इस विचारसे कि कहीं मिरजा मुहम्मदहुसैनको शत्रुकी सेना छुडा न लेजावे राजाके अनुमोदनसे उसका सिर काट दिया। अख्तियारुलमुल्ककी फौज भी बिखर गई। घोडेने उसे थूहरोंमें गिरा दिया और सुहराबबेग इक्का उसका सिर काटलाया। यह इतनी बड़ी जीत उन थोड़ेसे आदमियों द्वारा ईश्वरकी कृपासे हुई थी।"

कारखानोंका दीवान।

"जिस दिन बादशाहने एतमादुद्दौलाको दीवान किया था कारखानोंकी दीवानीका काम मुअज्जुलमुल्कको दिया था जो अक-बर बादशाहके समयमें करकराकखानेका मुशरिफ था।"

"इसी तरह बंगाले चित्तौड रणथम्भोर खानदेश और आसेर आदि भारतके प्रसिद्ध किलोंका जीतना है।"

"चित्तौडके घेरेमें उन्होंने जयमलको जो किलेवालोंका सरदार था अपनी बन्दूकसे मारा था। यह बन्दूक जिसका नाम संग्राम है, जगतकी अनोखी बंदूकोंमेंसे है। इससे तीन चार हजार पशु पक्षी उन्होंने मारे होंगे।"

"बन्दूकका निशाना वह बहुत अच्छा लगाते थे। इस कामसे मैं भी उनका योग्य शिष्य होसकता हूं। बन्दूकसे शिकार करने की मुझे बड़ी रुचि है। एक दिन १८ हरन बन्दूकसे मारे।"

"जिन नियमों पर पूज्य पिताजी चलते थे उनमेंसे एक मांस-त्याग भी था। सालमें तीन मास मांस खाते थे और नौ मास न खाते थे। पशुवधकी रुचि उनको कदापि न थी। उनके शुभ शासनकालमें बहुतसे दिन और महीने ऐसे नियत थे जिनमें पशुवध का सर्वथा निषेध था। अकबरनामेमें उनका वर्णन है।"

रोजा ईद।

यह पहली ईद(१) थी इस लिये जब बादशाह ईदगाहको गया तो बहुत भीड़ होगई थी। आपने दौलतखाने (राजभवन) में लौट कर खैरातके वास्ते कई लाख दाम दोस्तमुहम्मदको, एक लाख(२) मीर जमालहुसैन अंजू मीरान सदरजहां, मीर मुहम्मद रजा सब्जवारी को और पांचहजार रुपये शैख मुहम्मदहुसैनजामीके चेलेको दिये। आज्ञाकी कि हरेक मनसबदार नित्य एक मुन्य ५० हजार दाम(३) भिक्षुकोंको दिया करे। हाजी कोकाको हुक्म दिया कि हररोज हकदार स्त्रियोंको जमीन और नकद रुपये दिलानेके लिये महलमें भेजा करे।

फिर कई मनुष्योंको हाथी घोड़े दिये। नकीब और तवेलेके कर्मचारी जो ऐसे लोगोंसे कुछ रुपये जलवानेके नामसे लिया करते थे बादशाहने उनको वह रकम सरकारसे देनेकी आज्ञा देकर उनसे लोगोंका पीछा छुड़ाया।

हाथी नूरगंज।

शाहनिशाहन बुरहानपुरसे सुलतान दानियालके हाथी घोड़े ले कर आया। उनमेंसे मस्तअलस्त नाम हाथीको बादशाहने पसन्द करके नूरगञ्ज नाम रखा। उसमें अनोखापन यह था कि उसके कानोंके पास दोनो ओर दो तरबूजोंके बराबर मांस उठा हुआ था

(१) फागुन सुदी २ संवत् १६६२

(२) अढाई हजार रुपये।

(३) सवा हजार रुपये।

और मस्तीके समय उनमेंसे मद चूता था। उसका माथा भी उभरा हुआ था।

काबुलकी जकात।

बादशाहने और सब सूबोंकी जकात जो करोड़ोंकी थी पहले ही छोड़ दी थी अब काबुलकी जकात भी जिसकी जमा एक करोड़ २३ लाख दामकी थी माफ कर दी और कन्धारकी भी माफ की।

काबुल और कन्धारकी बडी आमदनी यही थी इस माफीसे ईरान और तूरानके लोगोंको बहुत लाभ हुआ।

रुकैया बेगम।

शाहकुलीखां महरमका बाग आगरेमें था परन्तु उसका कोई वारिस नहीं रहा था। इसलिये बादशाहने अपनी सौतेली माता मिरजा हिन्दालकी बेटी रुकैया बेगमको देदिया। अकबर बादशाह ने सुलतान खुर्रमको इसे सौंपा था और वह पेटके बेटेसे अधिक खुर्रम पर स्नेह रखती थीं।

पहला नौरोज।

११ जीकाद सन १०१४ हिजरी (चैत सुदी १२) मंगलवारको रातको सूर्य्यनारायण मेखमें आये। दूसरे रोज नौरोज हुआ। उस दिन मेष राशिके १९ वें अंश तक खूब राग रंग और नाच कूद हुआ। क्योंकि यह पहला नौरोज था। बादशाहने आज्ञा दे दी थी कि इन दिनोंमें हर आदमी जो नशा चाहे करे कोई न रोके।

बादशाह लिखता है—इन १७।१८ दिनोंमें हर रोज एक बड़ा अमीर मेरे पिताको अपनी मजलिसमें बुलाकर रत्न और रत्नोंके जड़े हुए गहने तथा हथियार और हाथी घोडे भेट किया करता था जिनमेंसे वह कुछ तो पसन्द करके लेलेते थे और शेष उसीको बख्श देते थे।

परन्तु मैंने इस वर्ष सिपाही और प्रजाके हितसे यह भेटें नही ली। हां कई पास रहनेवालोंकी भेंट ग्रहण की।

इन दिनोंमें कई अमीरोंके मनसब बढे जिनमें राजा वासूका मनसब अढाई हजारीसे साढे तीन हजारी होगया। यह पञ्जाबका पहाडी राजा था और लड़कपनसे निरन्तर बादशाहका भक्त रहा था।

कन्धारके हाकिम शाहबेगखांका मनसब बढ़कर पांच हजारी होगया।

रायसिंह पांच हजारी हुआ।

राना सगरको १२०००) खर्चके लिये मिले।

गुजरात।

मुजफ्फर गुजरातीकी सन्तानमेंसे एक मनुष्य अपनेको अधिकारी समझकर बादशाहके राज्यसिंहासन पर बैठनेके समयसे अहमदाबादके आसपास लूट खसोट करने लगा था। पेम बहादुर उजबक और राय अलीभट्टी जो उस सूबेके वीर पुरुषोंमेंसे थे उससे लडकर मारे गये थे। इसलिये बादशाहने राजा विक्रमादित्यको कई सरदार और छः सात सौ सजे हुए सवार देकर गुजरातकी सेनाकी सहायताके लिये भेजा और कहा कि जब उस प्रांतमें शांति होजावे तो राजा गुजरातका सूबेदार रहे और कुलीचखां हजूरमें आजावे। जब यह सेना वहां पहुंची तो उपद्रवी लोग जङ्गलोंमें भाग गये और वह देश निर्विघ्न होगया।

रानाकी हार।

शाहजादे परवेजकी अर्जी पहुंची कि राना याने मांडलको जो अजमेरसे ३० कोस है छोडकर भाग गया। बादशाही फौज उसके पीछे गई है।

खुसरोका भागना।

शाहजादा खुसरो जिसे अकबरकी बीमारीके समय कुछ ऐसे लोगोंने बहका दिया था जिन्होंने कितनेही बार कितनेही अपराध किये थे और दण्डसे बचना चाहते थे ८वीं जिलहज्ज द्वितीय चैत सुदी ८ रविवारकी रातको अपने दादाकी समाधिके दर्शनका

मिष करके ३५० सवारोंके साथ आगरेसे निकल गया। अमीरुल-उमराने जब यह समाचार सुना तो जनानी ड्योढी पर जाकर नाजिरसे अर्ज कराई कि हजरत बाहर पधारें कुछ जरूरी अर्ज करना है।

बादशाहको इस बातका खयाल भी न था। वह समझा कि गुजरात या दक्षिणसे कोई खबर आई है। बाहर आने पर यह वृत्तान्त सुना तो कहा क्या करना चाहिये? मैं आप जाऊं या खुर्रमको भेजूं?

अमीरुल-उमराने प्रार्थना की कि यदि आज्ञा हो तो मैं जाऊं। बादशाहने कहा जाओ। तब उसने फिर पूछा कि जो समझानेसे न आवे और सामना करे तो क्या किया जावे? बादशाहने कहा जो किसी तरह भी सीधे रस्ते पर न आवे तो फिर जो तुझसे हो सके उसमें कमी मत करना क्योंकि राजासे किसीका सम्बन्ध नहीं होता है।

अमीरुलउमराको विदा करनेके पीछे बादशाहने सोचा कि इसके हमारे पास अधिक रहनेसे खुसरो नाराज है ऐसा न हो कि इसको नष्ट करदे। इसलिये मुअज्जुलमुल्कको खुसरोके लौटा लाने को भेजा। शेख फरीदबखशीको भी उन सब ओहदेदारों और मनसबदारोंके साथ जो पहरे चौकी पर थे इसी काम पर नियत किया और एहतिमामखां कोटवालको पता लगाने जानेका हुक्म दिया।

फिर समाचार लगे कि खुसरो पञ्जाबकी ओर जारहा है। उसका मामा मानसिंह बंगालेमें था इसलिये बहुधा अमीरोंका यह विचार हुआ कि वह रास्ता काटकर उधर चला जावेगा। इस पर हर तरफ आदमी भेजे गये। उसका पञ्जाबको जानाही निश्चय हुआ।

दिन निकलतेही बादशाह भी खुसरोके पीछे चला। ३ कोस पर अकबर बादशाहका "रौजा"(१) आया। वहां पहुंचकर जहांगीर

(१) समाधिस्थान।

उनकी पवित्र आत्मासे सहायता मांगने लगा। इतनेहीमें मिरजा शाहरुखका बेटा मिरजा हसन जो खुसरोके पास जानेका उद्योग कर रहा था पकड़ा आया और पूछ ताछ करने पर असल बातसे इनकार न कर सका। बादशाह इसको अपने पिताके अनुग्रहका पहिला शुभशकुन समझकर आगे बढ़ा। जब दोपहर हुआ तो एक वृक्षकी छायामें ठहरकर खानआजमसे बोला कि सब तरहसे शान्तचित्त होने पर भी जब हमारी यह दशा हुई है कि मामूली अफीम भी जो पहरदिन चढे खानी चाहिये थी अबतक नहीं खाई है न किसीने याद दिलाई है तो उस कपूतका क्या हाल होगा? मुझे इसी बातका दुःख है कि बेटा बिना कारणही बैरी होगया। जो उसके पकडनेकी दौडधूप न करूं तो लुच्चे लोग बल पकड जावेंगे या वह भागकर उजबक(१) तथा कजलबाश(२)के पास चला जावेगा जिससे इस राज्यकी हलकी होगी।

निदान बादशाह थोडासा विश्राम लेकर फिर चला और मथुरा होकर जो आगरेसे बीस कोस है, उसी परगनेके एक गांवमें ठहरा। वह गांव मथुरासे दो तीन कोस था। वहां एक तालाब भी था।

खुसरो जब मथुरामें पहुंचा तो हुसैन बेग बदख्शी जो काबुल से दरबारमें आता था दो तीन सौ सवारोंसे उसको मिला और उस लड़ाईमें जो बदख्शांके लोगोंमें स्वाभाविक होती है अगुआ और सेनापति बनकर साथ होगया। वह और उसके आदमी रास्तेमें मुसाफिरों व्यापारियों और प्रजाको लूटते जाते थे। खुसरो देखता था कि किस प्रकार उसके बाप दादोंके राज्यमें अन्याय होरहा है और कुछ नहीं कह सकता था।

बादशाह लिखता है कि यदि उसका भाग्य बलवान होता तो लज्जित होकर बेधड़क मेरे पास चला आता और ईश्वर साक्षी है

(१) तूरानी लोग।

(२) ईरानी लोग।

कि मैं सर्वथा उसके अपराधोंको क्षमा करके उसपर इतनी दया करता कि उसके मनमें बालभर भी खटका न रहता। पर पूज्यपिता के स्वर्गवास होने पर उसने कई गुण्डोंके बहकानेसे अनेक कुविचार किये थे और जानता था कि उनकी सूचना मुझको होचुकी है इस लिये मेरी दया मयाका उसको विश्वास न था। उसकी मा भी मेरी कुमारावस्थाके दिनोंमें उसके कुलक्षणों तथा अपने भाई माधवसिंहके बुरे बरतावसे तंग आकर विष खाकर मर गई थी। मैं उसके शील और गुणोंको क्या लिखूं। वह पूरी बुद्धिमान थी उसको मुझसे इतनी प्रीति थी कि हजार बेटों और भाइयोंको मेरे एक बालके ऊपर वारती थी। उसने अनेकबार खुसरोको उपदेश लिखे और मुझसे भावभक्ति रखनेकी सन्मति दी। परन्तु जब देखा कि कुछ लाभ न हुआ और आगे न जाने क्या हो तो गैरतसे जो राजपूतोंमें प्रकृतिगत होती है, मरनेकी ठानली। कभी कभी उस को बावलेपनकी सिड भी होजाती थी और यह पैतृक रोग था। उसके बाप भाई भी एक एक बार पागल होकर चिकित्सासे अच्छे हुए थे। २६ जिलहज्ज सन् १०१३ जेठ बदी १२ सम्वत १६६२ को जब मैं शिकारको गया हुआ था वह उन्मादमें बहुतसी अफीम खाकर मर गई। मानो वह अपने अभागे बेटेकी भविष्य व्यवस्था पहलेही जान गई थी। मेरा यह पहला विवाह तरुणावस्थामें हुआ था। जब उसके खुसरो उत्पन्न होचुका तो मैंने उसे बेगम की पदवी दी थी। वह मेरे साथ भाई और बेटेकी कुपात्रता न देख सकती थी इस लिये प्राण देकर उस दुःखसे छूट गई।

मुझे उससे बड़ा प्रेम था। इस कारण उसके मरने पर मुझपर ऐसे दिन बीते कि जीनेका कुछ मजा न रहा था। ४ दिन तक ३२ पहर मैंने कुछ खाया पिया नहीं। जब यह हाल मेरे पिता को विदित हुआ तो उन्होंने परम प्रेमसे मुझको शान्तिपत्र भेजा सिरोपाव और पगड़ी जो सिरसे उतारी थी उसी तरहसे बन्धी हुई

मेरे वास्ते भेजी। उनकी इस मेहरवानीसे मेरा शोक सन्ताप कुछ कम हुआ। चित्तने धैर्य्य पकडा। तात्पर्य्य इस लेखसे यह है कि जो लडका अपनी कुशीलतासे माताकी मृत्युका कारण हुआ हो और कोरे भ्रमसेही वापके पाससे भागा हो तो दैवके कोपसे उसे वही दण्ड मिलना चाहिये था जो अन्तमें उसको मिला। अर्थात् पकडा जाकर जन्मक़ैदी हुआ।

१० (द्वितीय चैत्र सुदी ११ सं० १६६३) मंगलवारको बादशाह जोडलमें उतरा। दोस्त मुहम्मदको आगरेके किले महलों और कोषोंकी रखवालीके वास्ते भेजकर फरमाया कि एतमादुद्दौला वजीरको तो पंजाबमें भेज दे और मिरजा हकीमके बेटोंको कैदमें रखें। जब सगे बेटोंसे यह हरकत हुई तो भतीजों और चचाके बेटोंका क्या भरोसा रहा।

बुधवारको पलवलमें वृहस्पतिवारको फरीदाबादमें और १३ शुक्रवारको दिल्लीमें डेरे हुए। बादशाहने हुमायूं बादशाह और निजामुद्दीन औलियाकी जियारत करके बहुतसे रुपये कङ्गालोंको बांटे।

१४ शनि (द्वि० चैत सुदी १५) को नरेलेकी सरायमें डेरा हुआ। खुसरो उस सरायको जला गया था। यहांके लोग खुसरो की तरफ झुके हुए थे। इस लिये बादशाहने उनके मुखियोंके द्वारा उनको दोहजार रुपये दिलाकर अपना कृपाभाजन बनाया। कुछ रुपये शेख फजलुल्लह और राजा धीरधरको देकर फरमाया कि मार्गमें फकीरों और ब्राह्मणोंको दिया करें और तीस हजार रुपये अजमेर में राणा सगरको दिलाये।

१६ (वैशाख वदी २) सोमवारको पानीपतमें डेरे हुए। बादशाह लिखता है—यह स्थान मेरे बापदादोंके लिये बहुत शुभकारी हुआ। यहां उनको खूब जय हुई है। एक इब्राहीम लोदी पर बाबर बादशाहकी, दूसरी हैमू पर मेरे पिताकी। यहां खुसरोके पहुंचनेसे कुछ पहले दिलावर खांदिम पहुंचा था। और यह हाल

सुनकर उससे पहले लाहौरमें पहुंच जानेके लिये जल्दीसे कूच कर गया था परन्तु अबदुर्रहीम जो उसी समय लाहोरसे आगया था बहादुरखांके समझाने पर भी खुसरोंसे जा मिला और मलिक अनवररायकी पदवी पाकर लड़ाईके कामोंका अधिकारी हुआ। यदि कमालखां दिल्लीमें और दिलावरखां पानीपतमें खुसरोका रास्ता रोक लेता तो उसके साथी बिखर जाते और वह भी पकड़ लिया जाता।

१७ (वैशाख बदी ३) को बादशाहने करनालमें पहुंचकर कपटी शेख निजाम थानेसरीको मक्के भिजवा दिया। उसने खुसरोको उसके मनचाहे वरदान देकर सन्तुष्ट किया था।

१८ (वैशाख बदी ५) को परगने शाहाबादमें डेरा हुआ। बादशाहने शेख अहमद लाहोरीको जो पुराना सेवक, खानाजाद और चेला भी था मीरअदल (न्यायाध्यक्ष) का पद दिया। चेले और भक्त लोग उसके द्वारा बादशाहकी सेवामें उपस्थित होते थे। जिसको हाथ और छाती देना चाहिये उसको निवेदन करके दिलाता(१) था। शिष्य होनेके समय चेलोंसे उपदेशके कई वाक्य कहे जाते थे अर्थात—

(१) अपने समयको किसी मतके वैरभावसे दूषित न करें।

(२) सब मतमतान्तरवालोंसे मेल रखें।

(३) किसी जीवको अपने हाथसे न मारें।

(४) तारोंको जो परमेश्वरके तेजको धारण करनेवाले है यथा योग्य मानते रहें।

(५) परमात्माको सब कामोंमें व्यापक समझें।

(६) किसी समय और स्थानमें मनको भगवतस्मरणसे शून्य न रखें।

---

(१) छाती और हाथ देना इलाही मतका कोई नियम था। यह मत अकबर बादशाहने चलाया था और जहांगीर भी उसे मानता

जहांगीर लिखता है—"मेरे पिताने इन विचारोंमें निपुणता प्राप्त की थी और इन विचारोंसे वह कभी खाली न रहते थे।

२४ मंगल (वैशाख वदी ११) को ५ आदमी खुसरोके साथियोंमेंसे पकड़े आये। उनमेंसे दोने खुसरोके पास नौकर होना स्वीकार किया था वह हाथीके पांवके नीचे कुचलवाये गये और तीनने इनकार किया था वह निर्णय होने तक हवालातमें रखे गये।

दिलावरखांने १२ फरवरदीन (२२ जीकाद चैत्र वदी ८) को लाहोर पहुंचकर किला सजाया था। फिर खुसरो भी पहुंचा और कहा कि एक दरवाजेके किवाडोंको जलाकर गढ़में प्रवेश करें। गढ जीते पीछे ७ दिन तक नगर लूटनेको आज्ञा दूंगा उसके साथियोंने एक दरवाजेके किवाड जलाये परन्तु भीतरवालोंने आड़ी भीत उठाकर रास्ता रोक दिया।

घेरेके ८ दिन पीछे बादशाही लशकरकी अवाई सुनी तो खुसरोने छापा मारनेके विचारसे नगरको छोड़ दिया ६।७ दिनोंमें १०।१२ हजार सवार उसके पास इकट्ठे होगये थे।

२६(१) (वैशाख वदी १३) गुरुवारकी रातको खुसरोके आनेकी खबर सुनकर बादशाह मेह वरसतेमें सवार हुआ। सवेरे सुलतानपुरमें पहुचकर दोपहर तक वहां रहे। उस समय दोनों ओरकी सेनाओंमें संग्राम मचा। मुअज्जुलमुल्क एक रकावी बिरयानी(२) की बादशाहके वास्ते लाया था। परन्तु लड़ाईके समाचार सुनतेही बादशाह रुचि होने पर भी केवल एक ग्रास उसमेंसे शुकनके तौर पर खाकर सवार होगये। उसने अपना चिलता(३) बहुत मांगा पर किसीने लाकर न दिया। बरछे और तलवारके सिवा कोई हथियार भी पास न था। सवार भी ५० से अधिक चलनेके समय न

(१) मूलमें भूलसे १६ लिखी है।

(२) एक प्रकारका भोजन।

(३) झिलम कवच।

थे। क्योंकि कोई नहीं जानता था कि आज लड़ाई होगी। बादशाह ईश्वरके भरोसे उसी सामान और सेनासे चल पड़े। गोविन्दवालके पुल पर पहुंचे तबतक चार पांचसौ सवार अच्छे बुरे आ मिले थे। पर पुलसे उतरतेही शमसी तोशकची फतहकी बधाई लाया और उसने खुशखबरखांकी पदवी प्राप्त की। इस पर भी मीर जमालुद्दीनहुसैनने जो खुसरोको समझानेके लिये भेजा गया था खुसरोके पास बहुतसी फौज होनेका वर्णन ऐसी धूमधामसे किया कि लोग डरने लगे। जीत होनेके समाचार लगातार चले आते थे तो भी वह सीधा सादा सैयद यही कहे जाता था कि जिस धड़ले का लशकर मैं देख आया हूं शेख फरीदकी थोड़ीसी सेनासे वह क्योंकर हारा होगा?

निदान जब खुसरोका सिंहासन उसके दो नाजिरों सहित लाया गया तो सैयद घोड़ेसे उतरकर बादशाहके पैरोंमें गिर पड़ा और कहने लगा कि भाग्य इससे बढ़कर नहीं होसकता!

लड़ाईका वृत्तान्त।

बारहके सैयद बड़े वीर थे और युद्धमें सबसे बढ़ चढ़कर काम करते थे। शेख फरीद बखशीने उन्हींको हिरावल बनाकर सेनाके आगे भेजा था। उनके सरदार सैयद सफ़ूटके बेटे सैफ़खांने सतरह घाव खाये थे। सैयद जलाल माथे पर तीर खाकर कुछ दिन पीछे मरा था। सैयद कमालने वीर साथियों सहित बड़ी बहादुरी दिखाई। जब दहनी अनीके सिपाही बादशाह सलामत बादशाह सलामत कहते शत्रुओं पर दौड़े तो उनके छक्के छूटगये। भागतेही वनी ४०० के लगभग मारे गये और घायल हुए खुसरोके रत्नोंका सन्दूक जिसे वह सदा अपने पास रखता था लूटके उनके हाथ आया।

बादशाह लिखता है—कौन जानता था कि यह छोटी उमरका बालक मेरा भय और लज्जा छोड़कर ऐसा कुचाल करेगा। गोंदे आदमी इलाहाबादमें मुझे भी बापसे लड़नेके लिये उभारते थे।

पर यह बात कभी मुझको स्वीकार न हुई। मैं जानता था कि वह राज्य जिसका आधार पिताकी शत्रुता पर हो स्थिर न होगा। अतएव मैं उन कुबुद्धि लोगोंके कहनेसे भ्रष्ट न हुआ। अपनी समझकी प्रेरणासे पिताकी सेवामें पहुंचा जो गुरु तीर्थ और ईश्वर थे। फिर जो कुछ मुझे मिला वह उसी इच्छाका फल है।

खुसरोका पीछा।

जिस रात खुसरो भागा था बादशाहने उसी रात पञ्जाबके एक बड़े जमीन्दार राजा बासूको हुक्म दिया कि अपने देशमें जाकर उसे जहां पावे पकड़नेकी चेष्टा करे।

इनायतखां और मिरजाअली अकबरशाही बहुतसी सेनाके साथ खुसरोके पीछे भेजे गये। बादशाहने यह प्रतिज्ञा की कि जो खुसरो काबुलको जावे तो जबतक पकड़ा न जावे लौटके न आवें। यदि काबुलमें न ठहरे और बदखशांको चला जावे तो महाबतखां को काबुलमें छोड़ आवें। बादशाहको भय था कि बदखशां जाकर वह उजबकोंसे मिल जावेगा तो अपने राज्यकी बात हलकी होगी।

२८ (वैशाख बदी ३०) शनिवारको जैपालके पड़ाव पर जो लाहोरसे ७ कोस है बादशाहके तम्बू लगे। खुसरो जब चिनाब नदीके तट पर पहुंचा तो पठानों और हिन्दुस्थानियोंने उसको हिन्दुस्थानकी तरफ लौटनेकी सम्मति दी और हुसैनबेग बदखशीने काबुल जाने पर पक्का किया। पीछे पठान और हिन्दुस्थानी तो उसको छोड़ गये और वह रात्रिमें सोधरे घाटसे चिनाब नदीके पार होने लगा। मगर चौधरीके जमाई केलणने खबर पाकर खेवटियोंसे कहा जहांगीर बादशाहका हुक्म नहीं है कि रातको बिना जाने पहिचाने कोई नदीसे उतर सके। यह गड़बड़ सुनकर खेवटिये तो भाग गये और इधर उधरके आदमी आधमके। हुसैन-बेगने पहिले तो रुपयेका लालच दिया फिर तीर मारना आरम्भ किया केलण भी इधरसे तीर चलाने लगा। नाव ४ कोस तक बिना खेवटियोंके चलकर रेतमें अड़ गई आगे नहीं चली। बादशाहका

हुक्म जगह जगह खुसरोके रोकने और पकड़नेका पहुंच चुका था इसलिये प्रातःकाल होतेही पश्चिमी किनारेको कासिमतगीन और खिजरखां आदिने तथा पूर्वतटको जमीन्दारोंने रोक लिया।

२९ (वैशाख सुदी १) रविवारको दिन निकलतेही लोग हाथियों और नावों पर सवार होकर नदीमें गये और खुसरोको पकड़ लाये।

३० (वैशाख सुदी २) सोमवारको बादशाहने काबुल पहुंचकर मिरजा कामरांके बागमें डेरा किया और खुसरोके पकड़े जानेके समाचार सुनकर अमीरुलउमराको उसके लानेके लिये गुजरातको भेजा।

बादशाह लिखता है—मैं बहुधा अपनीही समझ बूझसे काम करता हूं दूसरेकी सलाहसे अपनी सलाहकोही ठीक समझता हूं। पहिले तो मैं अपने सब शुभचिन्तकोंकी सलाहके विरुद्ध अपनी सलाहसे जिससे इस लोक और परलोकमें मेरी भलाई हुई, पिताकी सेवामें चला गया। फल यह हुआ कि मैं बादशाह होगया। दूसरे खुसरोका पीछा करनेमें मुहूर्त्त आदि किसी बातके वास्ते न रुका तो उसको पकड लिया। अजब बात यह है कि मैंने कूच करनेके पीछे हकीमअलीसे जो ज्योतिषके गणितमें निपुण है पूछा कि मेरे प्रस्थान करनेकी घडी कैसी थी तो उसने कहा कि इस मनोरथकी सिद्धिके लिये वही मुहूर्त्त उत्तम था जिसमें श्रीमान चल खडे हुए। उससे उत्तम मुहूर्त्त वर्षोंमें भी नहीं निकल सकता।

दूसरा वर्ष।

सन् १०१५।

वैशाख सुदी ३ मंगलवार संवत् १६६३ से वैशाख सुदी १ शुक्रवार संवत् १६६४ तक।

खुसरोका पकडा आना।

३ मुहर्रम १०१५ (वैशाख सुदी ५) गुरुवारको चङ्गेजखांकी रीति और तोरके अनुसार बादशाहके बाएं ओरसे खुसरोको दरबार मे लाये। उसके हाथ बंधे थे पांवमें बेड़ी पडी थी। हुसैनबेगको उसके दाएं और अबदुलरहीमको बाएं हाथ पर खडा किया। खुसरो इन दोनोंके बीचमें खड़ा हुआ कांपता और रोता था। हुसैनबेग इस अभिप्रायसे कि कुछ सहारा लगे अल जलूल बकने लगा। बादशाहने उसका मनोरथ जानकर, उसका बोलना बन्द किया। पीछे खुसरोको कारागारमें भेजकर उन दोनों दुराचारियो के लिये यह हुक्म दिया कि उनको गाय और गधेका चमड़ा पहिना कर गधेके ऊपर उलटा बिठावें और शहरके आसपास फिरावें।

हुसैनबेग अन्तमें ४ पहर जीता रहकर सांस घुटजानेसे मर गया क्योंकि वह गायके चमड़ेमें था और यह जल्द सूखता है। अबदुरहीम(१) गधेके चमड़ेमें था जो देरसे सूखता है फिर ऊपरसे भी उसको गीला किया जाता था इसलिये वह जीता रहा।

इनाम और दण्ड।

बादशाह शुभघडी शुभमुहूर्त्त न होनेसे ८ मुहर्रम (वैशाख सुदी १०) तक शहरमें नहीं गया। शैख फरीदको मुरतिजाखांकी पदवी और कसबे भेरवा मिला जहां लड़ाई हुई थी। दण्ड देनेके वास्ते

---

(१) अबदुर्रहीमका नाम तुजुक जहांगीरीमें फिर भी कई जगह आया है। बादशाहने पहचानके वास्ते उसको अबदुर्रहीम गधा लिखा है।

मिरजा कामरांके बागसे शहर लाहोर तक दोनों ओर सूलियां खड़ी कीगईं। जो बदमाश इस फसादमें शरीक थे उनको सूलियों पर चढ़ाकर विचित्र विचित्र दण्ड दिये गये। जिन जमीन्दारोंने अच्छी सेवा की थी उनको चिनाव और भट नदीके बीचमें जमीनें देकर सरदारी और चौधराई बख्शी गई। हुसैनबेगके साढ़े सात लाख रुपये तो मीरमुहम्मदबाकीके घरसे निकले और जो उसने अपने पास रखे थे अथवा दूसरी जगह सौंपे थे वह इसके सिवा थे। यह जब मिरजा शाहरुखके साथ बदख्शांसे आया था तो केवल एक घोड़ा पास था और फिर बढ़ते बढ़ते इस पदको पहुंचा। इतना धनवान होकर ऐसे ऐसे साहसके काम करने लगा।

परवेजको बुलाना।

बादशाहने लड़ाईके बहुत दिन तक चलने और राजधानी आगरेके सूना रहनेके विचारसे शाहजादे परवेजको लिखा था कि कुछ सरदारोंको राणाको लड़ाई पर छोड़कर आसिफखां सहित आगरे चले आओ। पर विजय होनेके बाद लिखा कि मेरे पास चले आओ।

बादशाह लाहोरमें।

८ बुध (वैसाख सुदी १०) को बादशाहने लाहोरमें प्रवेश किया। शुभचिन्तकोंने गुजरात दक्षिण और बंगालेमें उपद्रव होनेसे राजधानीको लौट चलनेकी प्रार्थना की। पर बादशाहके मनमें यह बात नहीं आई क्योंकि हाकिम कन्धारकी अर्जियोंसे पाया गया था कि ईरानी सीमाके सरदार कन्धार लेनेके विचारमें हैं। साथही यह समाचार लगा कि हिरात और सीसतां आदिके हाकिमोंने आकर कन्धारके किलेको तीन तरफसे घेर लिया है और शाहबेगखां स्वस्थ चित्तसे उनका सामना कर रहा है।

कन्धारकी सहायता।

बादशाहने सिन्ध और ठट्ठेके अगले अधिपति मिरजा जानीके

बेटे मिरजा गाजीको बहुतसी फौजसे कन्धारको भेजा और अट्ठावन हजार रुपये खर्चके वास्ते दिये।

गुरु अर्जुनका वध।

बादशाहने गुरु अर्जुन(१)को इस अपराधमें कि जब खुसरो लाहोरको जाता हुआ गोविन्दवालमें उतरा था तो वह खुसरोसे मिला था और केसरका तिलक उसके माथे पर लगाया था, गोविन्द वाल(२)से बुलवाकर मरवा डाला और उसके घरबार और लड़के वाले मुरतिजाखांको प्रदान कर दिये।

अर्जुन गुरुके दो चेले राजू और अम्बा दौलतखां ख्वाजासराकी सहायतामें रहते थे और खुसरोके बलवेमें लूट मार करने लगे थे। बादशाहने राजूको तो मरवा डाला और अम्बाको जो धनाढ्य था एक लाख १५ हजार रुपये लेकर छोड दिया। यह रुपये धर्म-शालाओंको बांटे गये।

परवेजका आना।

२९ (आश्विन सुदी १) गुरुवारको दो पहर तीन घड़ी दिन चढ़े शाहजादा परवेज हाजिर हुआ। बादशाहने मेहरबानीसे उसको छातीसे लगा कर माथा चूमा। बादशाही चिन्ह आफताब गीर तथा दस हजारी मनसब उसे दिया। दीवानोंको उसे जागीर देनेका हुक्म दिया। मिरजा अलीबेगको काश्मीरकी हुकूमत दी।

राणाकी अधीनता।

परवेजके बुलाये जानेसे पहले राणाने आसिफखांसे कहलाया

(१) अर्जुन गुरु नानक साहबके पांचवें उत्तराधिकारी थे। जब गुरु नानक सं० १५८५ में धाम प्राप्त हुए थे उनके पीछे गुरु अङ्गद जी हुए। अंगदजीकी गद्दी पर अमरदासजी बैठे। अमरदासजीके उत्तराधिकारी गुरु रामदासजी हुए। उनके पीछे गुरु अर्जुनमल हुए। इनसे अकबर बादशाह मिला था।

(२) गोविन्दवाल रावी नदी पर बसता है इसको गोंदा खत्री ने सं० १६०२ में बसाया था।

था कि मैं अपने अपराधोंसे लज्जित हूं तुम कह सुनकर ऐसा करो कि शाहजादा मेरे लड़के बाघाका आना स्वीकार कर ले। शाहजादा कहता था कि या तो राना आप आवे या करणको भेजे। परन्तु जब खुसरोके भागनेके समाचार पहुंचे तो आसिफखां आदि अमीर बाघाके आने पर राजी होगये। वह माण्डलगढमें आकर शाहजादेसे मिला और शाहजादा राजा जगन्नाथ आदि सरदारों को वहां छोड़ आया।

सुलतान दानियालके बेटे।

मुकर्रबखां जो सुलतान दानियालके बेटोंको लानेके लिये बुरहानपुर गया था ६ महीने २२ दिन पीछे उनको लेकर आगया। ८रबीउस्सानी (सावन सुदी ११) सोमवारको बादशाहने उन्हें देखा। उन पर आशातीत कृपा की। वह सात बहन भाई थे। तीन लड़के तहमुर्स, बायसंकर और होशंग थे। चार लड़कियां थीं। तहमुर्सको तो बादशाहने अपनी सेवामें रख लिया बाकी अपनी बहनोंको सौंप दिये और कहा कि इनको अच्छी तरह सन्मान रखना।

लंगरखाने।

बादशाहने अपने राज्यभरमें लंगरखाने खोलनेका हुक्म भेजा। कहा—प्रत्येक स्थान पर चाहे वह खालसेका हो चाहे जागीरका-वहांकी व्यवस्थाके अनुसार कंगालोंके लिये साधारण खाना पकवाया जाय जिससे मुसाफिरोंको भी लाभ हो।

राजा मानसिंह।

राजा मानसिंहके लिये बंगालमें खासा खिलअत भेजा गया।

शाहजादे खुर्रम और बेगमोंका लाहोरमें आना।

बादशाह चलते समय खुर्रमको महलों और खजानोंकी रखवाली पर आगरेमें छोड आया था। अब जो खुसरोके पकड़े जानेपर उसको बुलाया तो वह बेगमों सहित लाहोरमें पहुंचा। बादशाह

१३ शुक्र(१) को नावमें बैठकर "धर" नामक गांवकी सीमा तक अपनी मा "मरयममकानी" के स्वागतको गया। चंगेजखां, तैमूर और बाबरके नियत किये नियमोंके अनुसार अदब और आदाब बजा लाया।

रानाकी मुहिम।

१७ (भादों बदी ५) को मुअज्जुलमुल्क उस लशकरकी बखशी-गरी पर भेजा गया जो रानाके मुल्कमें नियत था।

रायसिंह और दलपतका बदल जाना।

रायसिंह और उसके बेटे दलपतका नागोर प्रान्तमें प्रतिकूल हो जानेका वृत्तान्त सुनकर बादशाहने राजा जगन्नाथ और मुअज्जुल-मुल्कको हुक्म भेजा कि जल्द वहां जाकर फसाद मिटावें।

इबराहीम बाबा पठान।

शेख इबराहीम बाबा नामक एक पठान लाहौरके किसी परगने में गुरु शिष्यका प्रन्थ चला रहा था। बहुतसे पठान उसके पास एकत्र होगये। बादशाहने उसकी दूकान उठा देनेके लिये हुक्म दिया कि शेख इब्राहीमको पकड़कर परवेजके हवाले किया जावे और उसे चुनारके किलेमें कैद करे।

मनसबोंमें वृद्धि।

६ (२) जमादिउलअव्वल (भादों सुदी ८) रविवारको बयालीस मनसबदारोंके मनसब बढ़े और पचीस हजार रुपयेका एक माणिक्य शाहजादे परवेजको दिया गया।

सौरपक्षका तुलादान।

८ (भादों सुदी १२) बुधवारको बादशाहका ३८वां वर्ष सौरपक्ष से लगा। राजमाताके भवनमें तोलनेके लिये तक लगाया गया। तीन पहर चार घड़ी दिन व्यतीत होने पर बादशाह तुलामें बैठा। उसके प्रत्येक पलड़ेको दीर्घावस्थावाली स्त्रियोंने थामकर आशीर्वाद दिया।

(१) मूलमें १२ भूलसे लिखी है।

(२) मूलमें भूलसे ७ लिखा है।

पहले सोनेमें तुला तीन मन सोना चढ़ा। फिर ग्यारह बेर और पदार्थों में तुला। यह तुलादान एक सालमें दो बार सूर्य्य और चन्द्रके वर्षारम्भके समय सोने चांदी धातु रेशम कपड़े और धानादि वस्तुओं में होता था। दोनोंका धन अलग अलग खजांचियोंको पुण्य करने के लिये सौंपा जाता था।

कुतुबुद्दीनखां कोका।(१)

इसी दिन धायभाई कुतुबुद्दीनखांको बादशाहने खासा खिलअत जड़ाऊ तलवार और खासा घोड़ा जड़ाऊ जीनका देकर बङ्गाले और बिहारकी सूबेदारीपर जो पचासहजार सवारोंकी जगह थी बड़ीभारी सेनाके साथ भेजा। दो लाख रुपये उसको और तीन लाख रुपये उसके सहकारियोंको दिये। बादशाहको अपने इस धायभाई और इसकी माके साथ सगी मा और भाई बेटोंसे अधिक प्रेम था।

केशव मारू।

केशवदास मारूका मनसब डेढ़हजारी होगया।

नथमल मंझोलीका राजा।

मंझोलीके राजा नथमलको बादशाहने पांचहजार रुपये दिये।

मिरजा अजीज कोका।

मिरजा अजीजकोकाने बुरहानपुरके राजा अलीखांको एक पत्र भेजा था। उसमें अकबर बादशाहकी बहुतसी निन्दा लिखी थी। यह पत्र बुरहानपुरमें राजा अलीखांके माल असबाबके साथ अबुलहसनके हाथ लगा। उसने बादशाहको दिखलाया। बादशाहको पत्र पढ़कर बहुत क्रोध हुआ। बादशाह लिखता है—जो मेरे पिताने उसकी माताका दूध न पिया होता है उसको अपने हाथसे वध करता। मेरा यही निश्चय था कि उसका बैर मुझसे खुसरोकी दामादीके कारण है। पर इस पत्रसे उसकी दुष्टता और नमकहरामी मेरे बापके साथ भी सिद्ध हुई। जिन्होंने उसको और उसके घरानेको धूलसे उठाकर आकाश

(१) कोका तुर्कीमें धायभाईको कहते हैं।

तक पहुंचाया था। मैंने उसे बुलाकर वह पत्र उसके हाथमें दिया और उच्चस्वरसे पढ़नेको कहा। मेरा ऐसा अनुमान था कि पत्र देतेही उसका दम बन्द होजावेगा। पर वह निर्लज्जतासे उसे इस तौर पर पढ़ने लगा कि मानो उसका लिखा हुआ ही नहीं है। हुक्मसे पढ़ता है। अकबरी और जहांगीरी बन्दोंमेंसे जो उस सभा में उपस्थित थे जिस किसीने वह पत्र देखा और पढ़ा उसीने उसको धिक्कार दी। मैंने पूछा कि उस दुष्टताको छोड़कर जो मुझसे तुझको है जिसके कारणोंकी कल्पना भी तूने अपनी कुटिल बुद्धिसे कर रखी है, मेरे बापसे क्या तेरा ऐसा बिगाड हुआ था जिससे उनके शत्रुओंको तुझे ऐसी बातें लिखनी पड़ी? मेरे साथ जो कुछ तूने किया मैंने उसे टालकर तुझे फिर तेरे मनसब पर रहने दिया। मैं जानता था कि तुझको मुझीसे वैर है पर अब जाना कि तू अपने पालकर बड़ा करनेवालेका भी द्रोही है। मैं तुझे उसी धर्म और कर्मको सौपता हूं जो तेरा है और था। उसने उत्तरमें कुछ न कहा। कुछ कहता भी तो क्या कहता, कालामुंह तो होही चुका था।"

बादशाहने यह कहकर उसकी जागीर छीन लेनेका हुक्म दिया। यह अपराध क्षमाके योग्य न होने पर भी कई कारणोंसे उसे कुछ दण्ड न दिया।

परवेजका ब्याह।

२६ जमादिउस्सानी (कार्त्तिक वदी १३) रविवारको शाहजादे परवेजका विवाह सुलतान मुरादकी बेटीसे मरयममकानी बेगमके महलमें हुआ और उत्सवकी मजलिस परवेजके स्थान पर रची गई। जो कोई गया उसे बहुत प्रकारके सत्कारोंके सिवा सिरोपाव भी मिला।

शिकार।

१० रज्जब (कार्त्तिक सुदी १२) रविवारको बादशाह शिकारके लिये गिरझक और नन्दनेको जाता था। रास्तेमें आगरेसे चलकर चार दिन तक राजा रामदासके बागमें डेरा किया।

परवेजका तुलादान।

१३ रज्जब(अगहन बदी १) बुधवारको परवेजकी तुला मोरपच से हुई। उसको १२बार धातुओं और दूसरी वस्तुओंमें तौला गया। प्रत्येक तुला दो मन १८ सेरकी हुई।

कंधार।

उस सेनाके सिवा जो मिरजा गाजीके साथ गई थी बादशाहने तीन हजार सवार एक हजार बरकन्दाज और शाहबेगखां, मुहम्मद अमीन तथा बहादुरखांके साथ भेजे और दो लाख रुपये खर्च के लिये दिये।

हजूरी बख्शी।

बादशाहने अबदुर्रज्जाक मामूरीको जो रानाके सूबेसे बुलाया गया था हजूरी बख्शी बनाकर हुक्म दिया कि अबुलहसनसे मिल कर काम करे। यह अकबर बादशाहका बांधा हुआ प्रबंध था कि बड़े बड़े कामोंमें दो योग्य आदमी शामिल कर दिये जाते थे। वह लोग अविश्वासके विचारसे नहीं शामिल किये जाते थे वरञ्च इस लिये कि यदि कुछ हरज मरज हो तो सहायता करें।

रामचन्द्र बुन्देला।

बादशाहको सुनाया गया कि अबदुल्लहखांने दसहरेके दिन अपनी जागीर कालपीसे बुन्देलोंके देशमें धावा मारा। नन्दकुमारके बेटे रामचन्द्रको जो बहुत समयसे उधरके जङ्गलोंमें लूट खसोट कर रहा था पकड़ कर कालपीमें लेआया। बादशाहने इसके उपहारमें उसको झंडा, तीन हजारी जात और दो हजार सवारका मनसब दिया।

राजा संग्राम।

सूबे बिहारकी अर्जियोंसे विदित हुआ कि जहांगीर कुलीखांने संग्रामके साथ जो सूबेबिहारके बड़े जमींदारोंमें ३।४ हजार सवार और बहुतसे पैदलोंका स्वामी था एक विषम मैदानमें उसकी दुष्टता और शत्रुताके कारण युद्ध किया। संग्राम गोलीसे मारा गया।

उसके आदमी जो मारे जानेसे बचे, भाग गये। बादशाहने इस कामके इनाममें उसका मनसब बढाकर साढ़े चार हजारी जाती और तीन हजार सवारोंका कर दिया।

शिकारकी गिनती।

बादशाहने ३ महीने ६ दिन तक शिकार खेला। ५८१ पशु बंदूकों, चीतों, जाल और हांकेसे शिकार हुए। उनमेंसे १५८ बादशाहकी बंदूकसे मारे गये। दो बार हांका हुआ। एक बार तो करछाकमें जहां बेगमें भी थीं १५५ पशु बध हुए। दूसरी बार नन्दनेमें १११। सबका ब्योरा यह है—पहाड़ी मेंढ़े १८०; गोरखर नीलगाय ८, पहाड़ी बकरे २८, हरिन आदि ३४८। जोड़ ५६६। कमी रही जोडमें १५।

बादशाहने कई बड़े भारी पशुओंका तोल भी लिखा है। जैसे एक पहाडी बकरा २ मन २४ सेर था। एक मेंढ़ा २ मन ३ सेर और एक गोरखर ८ मन १६ सेर निकला।

बादशाह लाहोरमें।

बादशाह शिकारसे लौटकर १६ शव्वाल (फागुन बदी २) बुधवारको लाहोरमें आया।

दलपत रायसिंहका बेटा।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको खबर पहुंची कि सादिकखांका बेटा जाहिदखां, शेख अबुलफजलका बेटा अबदुर्रहमान और मोअज्जुलमुल्क वगैरह मनसबदार दलपतका नागोरके परगनेमें होना सुनकर उसके ऊपर गये। वह भी भागनेका अवसर न पाकर लड़नेको खड़ा हुआ और थोडीसी लडाईमें अपने बहुतसे मनुष्योंको कटाकर माल असबाब सहित भाग निकला।

धायका मरना।

जीकाद (फागुन व चैत) में कुतुबुद्दीनकी मा जिसने बादशाहको दूध पिलाया था मर गई। बादशाह उसकी लाशका पाया अपने कन्धे पर रखकर कुछ दूर तक गया शोकके मारे कई दिन

तक खाना नहीं खाया न कपड़े बदले क्योंकि उसकी गोदमें पला था और उसका मोह सगी मासे अधिक समझता था।

दूसरा नौरोज।

२२ जीकाद (चैत वदी ८) बुधवारको साढ़े तीन घड़ी दिन चढ़े सूर्य्य अपने राजभवन मेषमें आया। बादशाह राजरीतिके अनुसार दौलतखानेको सजाकर सोनेके सिंहासन पर बैठा, अमीरों और मुसाहिबोंको बहुतसा दान दिया।

कन्धार और ईरानका दूत।

मिरजा गाजी सेना सहित १२ शव्वाल (फागुन सुदी १३) को कन्धारमें पहुंचा। कजलबाश हिलमन्द नदीके तटको जो ५०।६० कोस पर है चला गया। इन लोगोंने अकबर बादशाहका मरना सुनकर फरह और हिरातके हाकिमों और सेवस्तानके मलिकोंके कहनेसे शाहअब्बासके बिना हुक्मही इतना साहस किया था। परन्तु जब यह वृत्तान्त शाहको विदित हुआ तो उससे पुरानी प्रीतिकी प्रेरणासे हुसेनबेगको उन लोगोंके रोकनेके लिये भेजा। वह रास्तेमें उनको मिला और तिरस्कार करके क्षमा मांगनेके लिए लाहोरमें आया।

शाह बेग जैसा कि हुक्म था कन्धार सरदारखांको सौंपकर दरगाहमें आगया।

रामचन्द्र बुन्देला।

२७ (जीकाद चैत वदी १४) अबदुल्लहखां रामचन्द्र बुन्देलेको लेकर आया। बादशाहने उसके पांवसे बेड़ी कटकर खिलअत पहनाया और राजा बासूको सौंपकर आज्ञा दी कि जमानत लेकर उसको उसके भाई बन्धुओं सहित जो उसके साथ पकड़े आये हैं छोड़ दे। उसे इतनी कृपाकी आशा न थी।

खुर्रमको मनसब।

२ जिलहज्ज (चैत सुदी४ सं० १६६४) को बादशाहने खुर्रमको

हजार सवारोंके मनसब पर नियत किया और जागीर देनेकी भी आज्ञा दी।

पीरखां लोदीको सलाबतखां और पुत्रकी पदवी।

बादशाहने दौलतखां लोदीके बेटे पीरखांको जो सुलतान दानियालके बेटोंके साथ आया था नक्कारा निशान सलाबतखां उपनाम और ३ हजारी जात व डेढ़ हजार सवारोंका मनसब प्रदान किया और इसके सिवा पुत्रकी पदवी भी दी।

इसके दादा उमरखांके चचा बड़े दौलतखांने सुलतान सिकन्दर लोदीके बेटे इब्राहीम लोदीसे नाराज होकर अपने बेटे दिलावरखां को काबुलमें बाबर बादशाहके पास भेजा था। उसकी सलाह और सहायतासे पञ्जाब जीतकर वहांकी हाकिमी दौलतखांकेही पास रहने दी। दौलतखां बूढ़ा आदमी था इस लिये बाबर बादशाह उसको बाप कहता था।

दूसरी बार जब फिर काबुलसे आया तो दौलतखां उसी अवसर पर मर गया। बादशाहने दिलावरखांको खानखानांकी पदवी दी। वह सुलतान इब्राहीमकी लड़ाईमें बाबर बादशाहके साथ रहा था और हुमायूं बादशाहकी सेवामें बंगालेकी लड़ाइयोंमें भी गया था। मुंगेरकी लडाईमें पकड़ा गया। शेरखांने उससे अपनी नौकरी कर लेनेको बहुत कहा। परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया और कहा कि तेरे बाप सदा मेरे बड़ोंकी नौकरी करते थे फिर मैं कैसे तेरा नौकर रह सकता हूं। इस पर शेरखांने रोष करके उसे दीवारमें चुनवा दिया।

सलाबतखांका दादा उमरखां जो दिलावरखांका चचेरा भाई था सलेमखांके राज्यमें बहुत बढ़ा। पर सलीमखांके पीछे जो उसके बेटे फीरोजको मुहम्मदखांने मार डाला इससे उमरखां शङ्कित हो कर अपने भाइयों सहित गुजरातमें चला गया और वहीं मरा। उसका बेटा दौलतखां मिरजा अबदुर्रहीम खानखानांकी सेवामें रहा। खानखानां उसको सगे भाईके समान मानता था। उसने

बहुधा लडाइयोंमें इसी दौलतखांकी सहायतासे फतह पाई थी। जब अकबर बादशाहने खानदेश और आसेरगढ विजय करके सुलतान दानियालको दिया तो दानियालने दौलतखांको खानखानासे अलग करके अपनी सरकारका काम सौंपा। वह वहीं मरा। उसके दो बेटे मुहम्मदखां और पीरखां थे। मुहम्मदखां बापसे पीछे तुरन्त ही मर गया और पीरखांको बादशाहने बुलाकर बड़ा मान सम्मान दिया। उसकी खातिर यहांतक मंजूर थी कि बडे बडे अपराध जो किसीकी प्रार्थनासे भी माफ न किये जाते थे उसके कहनेसे क्षमा होजाते थे।(१)

बादशाह काबुलमें।

बादशाहका विचार अपने बाप दादाके देश तूरान जीतनेका था और चाहता था कि हिन्दुस्तानको निर्विघ्न करके सुसज्जित सेना जङ्गी हाथियों और पूरे कोष सहित उधर जाय। इसीलिये परवेज को राणाके ऊपर भेजा था और आप दक्षिण जानेके उद्योगमें था कि खुसरो प्रतिकूल होगया। न राणाकी लडाई फतह हुई न दक्षिणको जाना हुआ। खुसरोके पीछे लाहोर आना पडा उसके पकडे जाने और कजलबाशोंके कन्धार छोड देनेसे छुटकारा हुआ तो अपने पुराने स्थान काबुलके देखनेको रुचि हुई। तब ७ जिल्हज (चैत सुदी ८) को लाहोरसे कूच करके दिलामेजबागमें जो रावी नदीके उस पार था डेरा किया और वहीं १८ फरवरदीन रविवार (चैत सुदी ११) को मेख(२) संक्रान्तिका उत्सव करके कई आदमियोंके मनसब बढाये और ईरानके दूत हुसनबेगको दस हजार रुपये दिये।

---

(१) इसी पीरखांको फिर फरजन्द खानजहांकी भी पदवी मिल गई थी। इसका वृत्तान्त आगे बहुत जगह आवेगा इस लिये उसका सविस्तर वर्णन उसके घरानेका किया गया है। यह शाहजहां बादशाहसे बागी होकर जुझारसिंह बुन्देलेके हाथसे मारा गया।

(२) चण्डू पञ्चांगमें मेख संक्रान्ति चैत सुदी १० को लिखी है।

हरनकी कबर पर लेख।

बादशाहने शनिवारको उस बागसे रवाना होकर गांव हरहर-पुरमें और मंगलको जहांगीरपुरमें डेरा किया। बादशाहके शिकार खेलनेके जो स्थान थे उनमेंसे एक यह गांव भी था। इसकी सीमा में बादशाहके एक प्यारे हरन हंसराज नामककी समाधि पर स्मारकस्तम्भ बनाया गया था जिस पर यह लिखा था—"इस सुरम्य बनमें एक हरन नूरुद्दीन जहांगीर बादशाहके जालमें फंसा और एक महीनेमें पशुपन छोड़कर सब खासेके हरनोंका सरदार हुआ।" बादशाहने उस हरनके सद्गुणोंसे जो पाले हुए हरनों से लड़ने और जङ्गली हरनोंके शिकार करनेमें अद्वितीय था यह हुक्म दिया कि कोई इस जंगलके हरनोंको वध न करे और उनके मांसको हिन्दू मुसलमान गाय और सूअरके समान अपवित्र समझें। उसके कबरके पत्थरको हरनके आकारमें बनादे। सिकन्दर मुईनको जो उस परगनेका जागीरदार था जहांगीरपुरमें किला बनानेका हुक्म दिया।

गुजरात।

१४ गुरुवार (चैत्र सुदी १५) को बादशाह जगहाले(१) में और १६ शनिवारको हाफिजाबादमें ठहरा। वहांके करोरी मीर कमा-लुद्दीनने वहां एक मकान बनाया था उसीमें निवास किया। वहां से दो कूचमें चिनाब नदी पर पहुंचे। वहां जो पुल बांधा गया था २१ गुरुवारको उसके ऊपरसे पार होकर बादशाह गुजरातमें पहुंच गया।

गुजरात नामकी उत्पत्ति।

अकबर बादशाहने कशमीर जाते हुए एक किला चिनाबके तट पर बनाया और गूजरोंको जो इस प्रान्तमें चोरी धाड़ा किया

(१) जगड्याला।

करते थे उसमें बसाया। इसीसे उसका नाम गुजरात रखकर अलग परगना बना दिया।

गुजरातसे कूच।

शुक्रवारको गुजरातसे कूच होकर ५ कोस पर खवासपुरेमें जो शेरखांके गुलाम खवासखांका बसाया हुआ था मुकाम हुआ। वहां से दो कूचोंमें भटके तट पर पडाव हुआ। रातको मेह वायुके प्रकोप और ओले गिरनेसे पुल टूट गया। बादशाहको बेगमों सहित नावमें बैठकर उस नदीसे पार होना पडा। फिरसे पुल बांधनेका हुक्म हुआ। एक सप्ताहमें जब पुल बंध गया तो सारी सेना कुशलपूर्वक पार होगई।

भट नदीका निकास।

भट नदी कश्मीरमें नरनाग नामक एक झरनेसे निकली है। नरनाग कशमीरी बोलीमें सांपको कहते हैं कभी वहां सांप होंगे।

बादशाह लिखता है—"मैंने पिताके समयमें दो बार इस झरने को देखा है। कश्मीरसे यह २० कोसके लगभग है। वहां एक अठपहलू चबूतरा २० गज लम्बा और उतनाही चौडा बना है। उसके आसपास पत्थरकी कोठरियां और कई गुफाएं तपस्या करने वालोंके योग्य बनी हैं। इस झरनेका पानी ऐसा साफ है कि जो खसखसका एक दाना भी डालें तो तलेमें पहुंचने तक दिखाई देता रहे। इसमें मछलियां बहुत हैं। मैंने सुना था कि इस की थाह नहीं है इस लिये एक पत्थरसे रस्सी बंधवाकर उसमें डल-वाई और फिर नपवाई तो मालूम हुआ कि आदमीके कदके ड्योढ़े से ज्यादा गहरा नहीं है।

"मैंने सिंहासनारूढ होनेके पीछे इसके चौतरफ बगीचे पक्के घाट और महल बहुत उत्तम बनवा दिये थे जिनके समान प्रदेशोंमें फिरनेवाले लोग कही कम बताते हैं। यह पानी गांव पंपुरमें पहुंचकर जो शहरसे दो कोस है ज्यादा होजाता है। तमाम काशमीरकी केसर इसी गांवमें होती है। मालूम नहीं कि दुनिया

में कहीं इतनी केसर और होती है कि नहीं। हर साल पांचसौ मन केसर हासिलमें आती है। मैं केसर फूलनेके दिनोंमें पिताके साथ वहां आया हूं। संसारके सारे फूल कोंपल और पत्ते निकलनेके पीछे खिलते हैं और केसरकी सूखी जमीनसे पहले ४ उंगल लम्बी कोंपल निकलती है फिर सौसनी रंगके फूल निकलते हैं। उनमें चार पंखड़ियां और चार तंतु नारंगी रंगके कुसुम जैसे एक उंगल लम्बे होते हैं यही केसर है। कहीं एक कोस और कहीं आध कोसमें केसरकी क्यारियां होती हैं। दूरसे बहुत भली लगती है। फूल चुनते समय उसकी तीव्र सुगन्धसे पासवालोंके सिरमें दर्द होने लगा। मैं नशेमें था और प्याले पीरहा था तो भी मेरे सिरमें दर्द होगया। तब मैंने पशुप्रकृति फूल चुननेवाले काशमीरियोंसे पूछा कि तुम्हारा क्या हाल है? जाना गया कि उमर भर में कभी उनका सिर नहीं दुखा।"

"इस झरनेका पानी जिसको काशमीरमें भट कहते हैं दायें बायेंके नालोंके आ मिलनेसे दरिया होजाता है। यह शहरके बीचोंबीच होकर निकलता है। इसकी चौड़ाई बहुधा एक तुक्केके टप्पेसे अधिक न होगी। इस पानीको मैला और बेमजा होनेसे कोई नहीं पीता है। काशमीरके सब लोग डल नामके तालावका पानी पीते हैं जो शहरके पास है। भटका पानी इस तालावमें हो कर बारामूला, पगली और दन्तोरके रास्तेसे पञ्जाबमें जाता है। काशमीरमें नदी नाले और झरने बहुत हैं मगर अच्छा पानी लार के दरेका है जो एक गांव काशमीरके अच्छे स्थानोंमेंसे भटके तट पर है। वहां एक सौके लगभग चिनारके हरे भरे वृक्ष आपसमें मिले खड़े हैं। उनकी छाया इस सारी भूमिको घेरे हुए है जो दूबसे ऐसी हरी होरही है कि उस पर बिछौना बिछाना निर्दयता और फूहरपन है।"

यह गांव सुलतान जैनुलआबिदीनका बसाया हुआ है जिसने ५२ वर्ष काशमीरका राज्य स्वतन्त्रतासे किया था। उसको बड़ा

बादशाह कहते थे। उसकी बहुतसी करामातें कही जाती हैं काश्मीरमें उसकी बहुतसी इमारतें और निशानियां हैं जिनमेंसे एक जैनलङ्का तीन कोससे ज्यादा लम्बे और चौडे उलर नाम सरोवरमें बनी है। उसने इसके तय्यार करनेमें बहुत परिश्रम किया था। इस सरोवरका सोता गहरा दरियामें है। पहली बार तो बहुत पत्थर नावोंमें भर भर कर इस जगह पर डाले गये थे जब कुछ मतलब न निकला तो कई हजार नावें पत्थरों सहित डबोई गईं तब कहीं एक टीला १०० गज चौडा और इतनाही लम्बा पानीके ऊपर निकला जिसे ऊंचा करके चबूतरा बांधा। उस पर एक तरफको उसने एक भवन ईश्वराराधनके लिये बनाया था। वहां वह नावमें बैठकर आता और भजन करता। कहते हैं कि उसने कई चिल्ले इस जगहमें रहकर खैंचे थे। उसके कपूत पुत्रोंमें से एक कुपात्र उसे सेवाभवनमें अकेला देखकर मारने गया। परन्तु ज्योंही उसपर नजर पडी डरकर निकल आया। कुछ देर पीछे सुलतान बाहर आया और उसी बेटेको लेकर नावमें बैठा। रास्तेमें कहा कि मैं माला भूल आया हूं तू दूसरी नावमें बैठकर जा और लेआ। लडका जब वहां गया और बापको बैठा पाया तो लज्जित होकर उसके पांओंमें गिर पडा और माफी मांगने लगा। इस प्रकार उस की और भी बहुतसी बातें लोग वर्णन करते हैं और कहते हैं कि उसने परकाय प्रवेशविद्यामें भी खूब अभ्यास किया था। निदान जब बेटोंको राज्यप्राप्त करनेमें आतुर देखा तो उनसे कहा—मुझे राज छोडना क्या प्राण त्याग करना भी सहज है लेकिन मेरे पीछे तुमसे कुछ नहीं होसकेगा। राज्य तुम्हारे पास नहीं रहेगा और तुम थोडे ही समयमें अपनी करनीका फल पाओगे यह कहकर खाना पीना छोड़ दिया। ४० दिन तक सोया भी नहीं। भक्तों और तपस्वियोंके साथ भगवत भजन करता रहा। चालीसवें दिन परमगतिको प्राप्त हुआ। फिर उसके तीनों बेटे आदमखां हाजीखां और बहरामखां आपसमें लड़े और तीनोंही नष्ट होगये।

कश्मीरका राज वहींके साधारण सिपाहियोंमेंसे चक जातिके लोगोंके हाथ लगा।"

"जैनुलआबदीनने उलर तालावमें जो चबूतरा बनाया था उसके तीन कोनों पर वहांके तीन हाकिमोंने मकान बनाये है। मगर उनमेंसे एकभी मजबूतीमें जैनुलआबिदीनकी इमारतको नहीं पहुंचता।"

कश्मीरकी बहार और खिजां (पतझड़) देखने योग्य है। मैंने खिजांकी ऋतु देखी है जैसी सुनी थी उससे अच्छी पाई। बहार अबतक नहीं देखी है आशा है कि वह भी देखी जावेगी।"

तीसरा वर्ष।

सन् १०१६।

वैशाख सुदी २ संवत् १६६४ से वैशाख सुदी २ संवत् १६६५ तक।

---

१ मुहर्रम १०१५(वैशाख सुदी २) शनिवार(१)को बादशाह भट नदीके तटसे कूच करके तीसरे दिन रुहतासके किलेमें पहुंचा। यह किला शेरखांने उस प्रान्तके दंगई गक्खड़ोंके दबानेके लिये बनाया था। वह तो अधूराही छोड़ मरा था उसके बेटे सलेमखांने उसे पूरा किया। जो लागत आई वह हरेक पोल पर पत्थरोंमें खुदी हुई है। उससे ज्ञात होता है कि ४० लाख २५ हजार रुपये इसमें लगे थे।

४ मुहर्रम (वैशाख सुदी ५) मंगलको सवा चार कोस चलकर पीलेसे और वहांसे भकरामें पड़ाव हुआ। गक्खड़ोंकी बोलीमें पीला टीलेको और भकरा जङ्गलको कहते हैं। पीलेसे भकरा तक सारे रस्तेमें नदी आई जिसके किनारों पर बहुतसे फूल कनेरके फूले हुए थे। बादशाहने अपने साथके सवारों और पैदलोंको हुक्म दिया कि सब लोग इन फूलोंके गुच्छे सिर पर टांक लें जिसके सिर पर फूल न हो उसकी पगड़ी उतार दें। बादशाह लिखता है— "अजब बाग लग गया था।"

६ मुहर्रम (वैशाख सुदी ७) गुरुवारको शहर(२) में होकर सिहामें डेरा लगा। इस रस्तेमें पलाश बहुत फूले हुए थे। बादशाह उसके चमकीले रंग, बादलोंकी छाया और मेंहकी फुहारोंसे प्रसन्न मन होकर मदिराका सेवन करने लगा। उसके आनन्दमें बड़ी मौजसे रस्ता कटा।

---

(१) मूलमें चन्द्रवार गलत लिखा है।

(२) शहरका नाम नहीं लिखा है।

इस स्थानको हथिया भी कहते हैं क्योंकि हाथी नाम एक गक्खड़ का बसाया हुआ है और देशका नाम मारकल्लासे हथिया तक पून्हहार है। इधर वृक्ष बहुत कम होते हैं। रुहतासमे हथिया तक "भोकयाल" लोग रहते हैं जो गक्खड़ोंके भाई बन्द हैं।

७ मुहर्रम (वैशाख सुदी ८) शुक्रवारको सवा चार कोस चलकर पक्केमें डेरा लगा। यहां एक सराय पक्की ईंटोंकी बनी हुई थी इसलिये पक्का नाम हुआ। इस रस्तेमें धूल बहुत उड़ती थी गाड़ियां बड़ी कठिनतासे मंजिल पर पहुंचीं।

८ मुहर्रम (वैशाख सुदी ९) शनिवारको साढ़े चार कोस चल कर कोरमें मुकाम हुआ। इधर वृक्ष बहुत कम थे। कोर गक्खड़ों को बोलीमें टरेको कहते हैं।

९ (वैशाख सुदी १०) रविवारको रावलपिण्डीमें मंजिल थी। यह गांव रावल नामक एक हिन्दूने बसाया था पिण्डी गांवको कहते हैं। इसके पास घाटीमें पानी बहता था और एक झालरेमें इकट्ठा होता था। बादशाहने उस जगह कुछ देर ठहर कर गक्खड़ों से पूछा कि यह पानी कितना गहरा है? उन्होंने कहा कि इसमें एक मगर रहता है जो कोई जानवर या आदमी पानीमें जाता है वह घायल होकर निकलता है। बादशाहने पहिले एक बकरी डलवाई वह सारे तालावमें तैरकर आगई। फिर एक फर्राशको डुबा दिया, वह भी उसी तरह तैरकर साफ निकल आया। गक्खड़ों की बात सही न निकली।

१० (वैशाख सुदी ११) चन्द्रवारको गांव खरबूजेमें मुकाम हुआ यहां गक्खड़ोंने पिछले समयमें एक बुर्ज बनाया था और मुसाफिरों से कर लिया करते थे। उस बुर्जका आकार खरबूजेकासा था इसलिये यह नाम प्रसिद्ध होगया।

११ मंगल (वैशाख सुदी १२) को बादशाह कालापानीमें उतरे यहां एक घाटी मारकल्ला नाम है। कल्ला काफिलेको कहते हैं इस घाटीमें काफिले मारे जाते थे इस कारण ऐसा नाम हुआ।

इस जगह गक्खड़ोंके देशकी सीमा समाप्त होती है। बादशाह गक्खड़ों के वास्ते लिखते है कि अजब पशुप्रकृतिके लोग हैं आपसमें लड़ते झगड़ते रहते हैं। मैंने बहुत चाहा कि इनके झगड़े निबड़ जावें परन्तु कुछ सफलता न हुई।

१२ मुहर्रम (वैशाख सुदी १३) बुधवारको बाबा हसन अब्दाल में पड़ाव पड़ा। यहांसे एक कोस पूर्वको एक नाला है जिसका पानी बहुत वेगसे गिरता है। बादशाह लिखता है—"काबुलके तमाम रस्तेमें इसके समान और कोई नाला नहीं है कशमीरके रस्तेमें जरूर ऐसे तीन नाले हैं।

एक झरनेके बीचमें जहांसे इस नालेका पानी आता है राजा मानसिंहने कुछ मकान बनाये थे। यहां आध आध गज और पाव पाव गजकी लम्बी मछलियां बहुत थीं इसलिये बादशाह तीन दिन तक इस सुरम्य स्थानमें रहा। शराब पी और मछलियां पकड़ीं। वह लिखता है—"मैंने सफरादामको जिसे हिन्दीमें भंवरजाल कहते हैं अबतक अपने हाथसे पानीमें नहीं डाला था क्योंकि उसका डालना सहज नहीं है पर यहां अपने हाथसे डालकर दस बार मछलियां पकड़ीं और नाकमें मोती डालकर छोड़दीं।"

"हसनबाबाका समाचार वहांके इतिहास जाननेवाले और रहने वाले कुछ नहीं बता सके यहां जो प्रसिद्ध जगह है वह एक नाला है जो पहाड़मेंसे निकलता है बड़ा साफ सुथरा है। मानो अमीर खुसरोने उसीके वास्ते कहा है "इतना साफ है कि उसके नीचेकी रेतके कण अन्धा भी अंधेरी रातमें गिन सकता है।"

अकबर बादशाहके वजीर ख्वाजा शमसुद्दीन खाफीने यहां चबूतरा, कुण्ड और अपनी कबरके वास्ते एक गुंबद बनाया था। कुण्डमें पानी इकट्ठा होकर बागों और खेतोंमें जाता था। पर मरनेके पीछे यह गुंबद ख्वाजाके कुछ काम न आया। हकीम अबुलफतह गीलानी और हकीम हमाम दोनों भाई जो अकबर

बादशाहके सभासद थे मरनेके पीछे उसी बादशाहकी आज्ञासे यहां गाड़े गये।

१५ (जेठ बदी १) को अमरोहोमें मुकाम हुआ। अजब हरा भरा स्थान था। यहां ७१८ सहस्र घर "खर" और दिलाजाक जातिके रहते थे और भांति भांतिका अनाचार और लूट मार करते थे इसलिये बादशाहने वह प्रांत और अटककी सरकार जैनखां कोका के बेटे जफरखांको सौंपकर हुक्म दिया कि हमारे लौटने तक तमाम दिलाजाकोंको यहांसे उठाकर लाहोरकी तरफ चलता करें और खरोंके मुखियोंको पकड़कर कैद रखें।

१७ (जेठ बदी ३) सोमवारको कूच हुआ। बादशाह एक मंजिल बीचमें रहकर नीलाबके किनारे किले अटकमें पहुंचा। यह सुदृढ़ दुर्ग अकबर बादशाहका बनाया हुआ है। अटक पर १८ नावोंका पुल बांधा गया था परन्तु काबुलमें इतने लशकरकी समाई न देख-कर बादशाहने बखशियोंको हुक्म दिया कि पास रहनेवालोंके सिवा और किसीको अटकसे न उतरने दें लशकर अटकके किलेमें रहे।

१९ (जेठ बदी ५) बुधवारको बादशाह शाहजादों और निज सेवकों सहित जाले पर सवार होकर नीलाबसे उतरा और कामा नदीके किनारे ठहरा। उसका पानी जलालाबादके आगे बहता है।

जाला एक प्रकारकी नाव है। जो घास और बांसोंसे बनाई जाती है और उसके नीचे मशकें हवासे भरकर बांध दी जाती हैं उस तरफ उसको शाल कहते थे। जिन नदियोंकी तहमें पत्थर रहते हैं उनमें यह बड़ी काम आती थी।

अबदुलरज्जाक मामूरी और अहदियोंके बखशी बिहारीदासको हुक्म हुआ कि जिन लोगोंको जफरखांके साथ जानेको कहा गया है वह तय्यार करके भेजे जावें।

बादशाह फिर एक मंजिल बीचमें देकर बाड़ेमें पहुंचा, सरायमें ठहरा। यहां कामा नदीके उस पार जैनखां कोकाने जब वह यूसुफ-जई पठानोंको दण्ड देनेके वास्ते इधर आया था पचास हजार रुपये

लगाकर एक किला बनाया था। उसका नाम नया शहर रक्खा था हुमायूं और अकबर बादशाह यहां भेडियोंका शिकार खेला करते थे।

२५ (जेठ वदी १२) मंगलवार(१) को दौलताबादको सरायमें डेरे हुए। यहां परशावर (पिशौर) का जागीरदार अहमदबेग यूसुफजई और गोरियाखैलके मलिकों (चौधरियों)को लेकर आया। उससे इस जिलेका बन्दोबस्त बादशाहकी मरजीके मुवाफिक नहीं हुआ था इसलिये बादशाहने उसका काम छीनकर शेरखां अफगानको दिया।

२६ (जेठ वदी १३) बुधवारको परशावरके पास सरदारखांके बागमें डेरे हुए। यहां इस प्रान्तके जोगियोंका प्रसिद्ध तीर्थ गोरखखडी था बादशाह इस विचारसे कि कोई जोगी मिले तो उसके सतसङ्गसे लाभ उठावे वहां गया परन्तु कोई न मिला।

२७ (जेठ वदी १४) गुरुवारको जमरोदमें और शुक्रको खैबरघाटेके पार अलीमसजिदमें और शनिको मारपेच घाटोंसे उतरकर गरीबखानेमें बादशाहके मुकाम हुए। यहां जलालाबादका जागीरदार कासमतगीन जर्दालू लाया। बादशाह लिखता है—कश्मीर के जर्दालूसे अच्छे नहीं थे।" काबुलसे "कैलास" भी आये जिनका नाम अकबर बादशाहने शाहआलू रख दिया था। क्योंकि कैलास नाम छिपकलीका था।

२ सफर (जेठ सुदी ४) मंगलवारको पमावनके मैदानमें नदीके तट पर डेरे हुए। नदीसे उधर एक पहाड़ था जिसको हरयाली और वृक्ष नहीं होनेसे "कोहेबेदौलत" कहते थे बादशाह लिखता है कि मैंने अपने बापसे सुना है कि ऐसे पहाड़ोंमें सोनेकी खानें होती हैं।

आसिफखांका वजीर होना।

३ सफर (जेठ सुदी ५) बुधवारको बादशाहने बसीरुलउमराकी बीमारी बढ जानेसे जिसे जिसे लाहोरमें छोड आया था आसिफखां

(१) मूलमें भूलसे गुरुवार लिखा है।

को भारी सिरोपाव और जड़ाऊ दवात कलम देकर वजीरका काम सौंपा। २८ वर्ष पहले अकबर बादशाहने भी इसको इसी स्थान पर मीरबखशीका पद प्रदान किया था। इसने चालीस हजार रुपयेका एक माणिक्य वजीर होनेका सलाम करते समय बादशाह को भेट किया। ख्वाजा अबुलहसन बखशी भी उसके शामिल रखा गया।

नदीमें एक सफेद पत्थर पड़ा था बादशाहने उसका हाथी बनवाकर अपना नाम उसकी छाती पर खुदवा दिया।(१)

विक्रमाजीतके बेटे कल्याणको दण्ड।

इसी दिन राजा विक्रमाजीतका बेटा कल्याण, गुजरातसे आया उस पर कई दोष लगाये गये थे जिनमेंसे एक यह भी था कि एक मुसलमानी कसबनको घरमें डालकर भेद छुपानेके लिये उसके मा बापको मारा और अपने घरमें गाड दिया। बादशाहने निर्णय करके उसकी जीभ कटवा डाली और उमरकैद करके हुक्म दिया कि कुत्ते पालनेवालों और हलालखोरोंके साथ खाना खाता रहे।

बुधको सुरखाबमें और वहांसे चलकर जगदलगमें डेरे हुए। यहां बलूतकी लकडी बहुत थी और रस्तेमें पत्थर भी बहुत आये।

१२ (जेठ सुदी १३) शुक्रवारको आबतारीकमें १४ को यूरत बादशाहमें १५ रविवारको छोटी काबुलमें मुकाम हुआ। यहां शाहआलू गुलबहार नामक स्थानमें बहुत बढ़िया आये थे बादशाह ने १०० के लगभग खाये और कुछ अनोखे फूल भी देखे जो अबतक देखनेमें नहीं आये थे। "मीरमूशां" नामक एक जानवर भी भेटमें आया जिसकी आकृति गिलहरीकीसी थी। वह जिस घरमें रहता था चूहे वहां नहीं आते थे रंग काला और सफेद था। नेवले से बड़ा था सूरत बिल्लीकीसी थी। बादशाहने चित्रकारोंसे उसका

(१) ऐसाही एक बड़ा हाथी अजमेरमें भी जहांगीर बादशाहका मदार दरवाजेके बाहर एक मन्दिरमें है जिसको हाथी भाटा कहते हैं।

चित्र खिंचवाया। अहमदबेगखां दो हजार बरकन्दाजोंसे बंगालके पठानोंको दण्ड देनेके लिये नियत हुआ। अब्दुर्रज्जाक मामूरीको जो अटकमें था हुक्म लिखा गया कि दो लाख रुपये राजा विक्रमाजीतके बेटे मोहनदासके साथ खर्चके लिये भेजदे।

शैख अबुलफजलके बेटे शैख अबदुर्रहमानको दो हजारी जात, डेढ हजार सवारका मनसब और अफजलखांका खिताब दिया गया।

वाग शहरआरा।

१२ (आषाढ़ बदी ५) गुरुवारको बादशाह पुलेमस्तांसे वाग शहर आरा तक दोनोंतरफ रुपये अठन्नियां चवन्नियां लुटाता गया। बागकी शोभा देखकर शराब पीने लगा। बीचमें चारगज चौडी एक नदी बहती थी। बादशाहने मौजमें अपने मित्रों और समान वय वालोंसे उसके फलांगनेको कहा। फलांगनेमें कई एक नदी में गिर पडे। बादशाह फलांग गया तो भी उसको यह लिखना पडा कि जिस फुरतीसे ३० वर्षकी अवस्थामें अपने बापके सामने कूदा था अब ४० वर्षकी अवस्थामें नहीं कूद सकता हूं।

फिर पैदल सात वागोंमें फिरा जो काबुलमें मुख्य थे। पके हुए शाह आलू वृक्षोंमें ऐसे भले लगते थे कि मानो लाल और माणिक लटक रहे हैं।”

इन सातों बागोंमेंसे शहरआरा बाग तो बाबर बादशाहकी चची और मिरजा अबूसईदकी बेटी शहर बानू बेगमका था। और एक बाग अकबर बादशाहकी बडी मा बिग्गा बेगमका और एक बादशाहकी सगी मा मरयममकानीका बनाया हुआ था। पर शहरआरा बाग काबुलके सब बागोंसे श्रेष्ठ था। इसमें पीछेसे भी सुधार होता रहता था। बादशाह लिखता है—उसकी मनसाई यहां तक है कि जूता पहने उसके आंगनमें पाव रखना सद प्रकृति और सुसभ्य बुद्धिसे दूर है।

बादशाहने उसके पास धरती मोल लेकर और उसमें पानी

निकालकर एक नया बाग लगानेका हुक्म दिया जिसका जहांआरा नाम रखा।

बादशाह विशेषकर शहरआरा बागमें कभी सखाओं और कभी बेगमोंके साथ रहा करता था। रातोंको काबुलके मौलवियों और विद्यार्थियोंसे कहता था कि बगरा(१) पकानेकी सभा सजाकर आजाशक(२) नाच नांचें। फिर उन लोगोंको सिरोपाव देकर एक हजार रुपये नकद भी आपसमें बांट लेनेको दिये।

बादशाहने हुक्म देदिया था कि जबतक मै काबुलमें रहूं प्रति गुरुवारको एक हजार रुपये गरीबों और कङ्गालोंको बांटे जावें।

फिर बादशाहने चिनारके वृक्षोंके बीचमें गज भर लम्बा और पौन गज चौडा खेत पाषाण खडा कराकर उसपर एक तरफ अपना नाम और अपनी पीढियां अमीर तैमूर तक खुदवादीं और दूसरी तरफ यह लिखाया कि हमने काबुलके सब ज़कात और टैक्स माफ कर दिये। हमारे बेटों पोतोंमेंसे जो कोई उन करोंको लेगा वह ईश्वरके कोपमें पडेगा। बादशाहके काबुलमें आनेकी तारीख जो १३ सफर गुरुवार थी वही इस पत्थर पर खोदी गई।

यह टैक्स प्राचीन समयसे लिये जाते थे। बादशाहके आने पर माफ होजानेसे प्रजा बडी प्रसन्न हुई।

गजनीन और उसके आसपासके जो मलिक और खान आये थे उनको सिरोपाव मिले और जो उनके काम थे कर दिये गये।

काबुलके दक्षिणको एक पहाडमें एक पत्थरका चबूतरा तख्तशाहके नामसे प्रसिद्ध था। उस पर बैठकर बाबर बादशाह मद्य पिया करता और वहीं एक कुण्ड खुदा हुआ था जिसमें दो मन मदिरा हिन्दुस्थानके तौलकी आती थी। चबूतरेकी दीवार पर

(१) आईन अकबरीमें लिखा है कि बगरा एक प्रकारका पुलाव होता था जो मांस बेसन घी खांड और सिरकेसे बनाया जाता था।

(२) इस नाचका अर्थ वर्णन सहित किसी कोषमें न मिला।

यह लेख खुदा था कि यह सिंहासन जहीरुद्दीन मुहम्मदबाबर बादशाहका है जिसका राज्य चिरस्थायी रहे। सन् ८१४ (सं० १५६१)

बादशाहने इसके बराबर एक सिंहासन, और वैसाही एक कुण्ड पत्थर काटवाकर बनवाया और वहां अपना और अमीर तैमूर का नाम खुदवा दिया।

बादशाह जिस दिन इस सिंहासन पर बैठा था। उस दिन दोनो कुण्डोंमें मदिरा भरवा दी गई थी। जो नौकर वहां हाजिर थे उनको पीनेका हुक्म देदिया था।

गजनीनके एक शाइरने बादशाहके काबुलमें आनेकी यह तारीख कही थी।

बादशाहे बलाद हफ्त इकलीम (१)

अर्थात् सात विलायतोंके शहरोंका बादशाह।

बादशाहने उसको इनाम और सिरोपाव देकर यह तारीख भी उसी सिंहासनके पास दीवार पर खुदवा दी।

पचास हजार रुपये शाहजादे परवेजको दिये गये। वजीरुलमुल्क मीरबखशी हुआ और कुलीचखांके नाम हुक्म लिखा गया कि एक लाख १७ हजार रुपये लाहोरके खजानेसे कन्धारके लशकरमें खर्चके वास्ते भेजदे।

चकरीका रईस एक जङ्गको तीरसे मारकर लाया यह जानवर बादशाहने तबतक नही देखा था। लिखा है कि पहाडी बकरे में और इसमें एक सींगका फर्क है। बकरेका सीग सीधा होता है और जंगका टेढ़ा बलदार।

वाकेआत बाबरी।

काबुलके प्रसंगसे बादशाह वाकेआतबाबरीको पढा करता था। वह बाबर बादशाहके हाथको लिखी हुई थी। उसके ४२ पृष्ट बादशाहने अपने हाथसे लिखे और उनके नीचे तुरकी बोलीमें

(१) इसमें सन् १०१८ निकलते हैं और चाहिये १०१६।

समाप्ति लिखी। जिससे जाना जावे कि यह ३२ पृष्ठ उसके लिखे हुए हैं।

बादशाह लिखता है—मैं हिन्दुस्थानमें बड़ा हुआ हूं तो भी तुरकी भाषा बोलने और लिखनेमें असमर्थ नहीं हूं। (१)

काबुलमें पर्य्यटन।

२५ (अषाढ बदी) को बादशाह बेगमों सहित जलगाह सफेदसंगके देखनेको गया। जो अति सुरम्य और प्रफुल्लित बन था।

२६ (अषाढ बदी १३) शुक्रवारको बाबर बादशाहकी जियारत करने गया बहुतसा मीरा रोटी और रुपये पितृगणको पुण्य पहुंचानेके लिये फकीरोंको बांटे। मिरजा हिन्दालकी बेटी रुकैया सुलतान बेगमने अबतक बापकी जियारत नहीं की थी। अब वह भी करके कृतार्थ हुई। मिरजा हिन्दालकी कबर भी वहीं थी।

३ रबीउलअव्वल (अषाढ सुदी ४) गुरुवारको शाहजादों और अमीरोंने खासेके घोडे दौडाये। एक अरबी बछेरा जो दक्षिणके शाह आदिलखानने भेजा था सब घोडोंसे अच्छा दौडा।

हजारेके सरदार मिरजा संजर और मिरजा बाशीके बेटे हाजिर हुए जंग नाम जानवरोंको तीरोंसे मारकर लाये थे वैसे बड़े जंग बादशाहने नहीं देखे थे।

बुन्देले।

बरसिंह देव बुन्देलेकी अरजी आई कि मैंने अपने फसादी भतीजेको पकड लिया है तथा उसके कई आदमी मार डाले हैं। बादशाहने आज्ञा दी कि उसे गवालियरके किलेमें कैद रखनेके लिये भेजदो।

खुसरोका छूटना।

१२ (असाढ़ सुदी १३) को बादशाहने खुसरोको बुलाकर

(१) वाकेआत बाबरी भी तुरकीमें है।

शहरआरा बाग देखनेके लिये उसके पांवसे बेडी खुलवा दी वह काम पितृप्रेमसे हुआ।

अटकका किला अहमदबेगसे हटाकर जफरखांको दिया गया और ताजखांको जो बंगश जातिके पठानों पर भेजा गया था पचास हजार रुपये दिये गये।

मानसिंह।

राजा मानसिंहके पोते महासिंहको भी बादशाहने बंगशको मुहिम पर भेजा और राजा रामदासको उसका शिक्षक बनाया।

वर्षगांठको तुला।

१८ शुक्रवार (सावन वदी ४) को बादशाहकी ४० वीं सौर वर्षगांठका तुलादान दोपहर पीछे हुआ। उसमेंसे दस हजार रुपये गरीबोंको बांटे गये।

शाह ईरान।

सरदारखां हाकिम कन्धारकी अरजी हजारा और गजनीनके रास्तेसे १२ दिनमें पहुंची। लिखा था कि शाह ईरानका एलची जो दरगाहमें हाजिर होनेके लिये आता है हजारेमें पहुंच गया है और शाहने अपने सेवकोंको लिखा है कि कौन दुराचारी बिना हुक्म कन्धार पर गया है जो नहीं जानता है कि हमारे और हजरत अमीर तैमूर और हुमायूं बादशाहकी सन्तानमें क्या सम्बन्ध है। जो वह देश ले भी लिया हो तो मेरे भाई जहांगीर बादशाहके नौकरोंको देकर लौट आवे।

राना सगर व राय मनोहर।

१९ (सावन वदी ५) शनिवारको राना शंकर (सगर) का मनसब अढाई हजारी जात दो हजार सवारका, और राय मनोहरका एक हजारी ६०० सवारोंका होगया।

कुतुबुद्दीन कोकाका मारा जाना।

२७ रविवार (सावन वदी १४) को शामको इस्लामखांकी

अरजी जहांगीर कुलीखांकी पत्र सहित, जो बिहारसे आया था आगरेसे दरबारमें पहुंची। उसमें लिखा था कि २ सफर (जेठ सुदी ५) को पहर दिन चढे वर्दवानमें अलीकुलीने कुतुबुद्दीनखांको जखमी किया जिससे वह आधीरातको मर गया। यह अलीकुली ईरान के शाह इसमाइलका रसोइया था। शाहके मरे पीछे कुटिलप्रकृति से कन्धारमें भाग आया। वहांसे मुलतानमें पहुंचकर खानखानां से मिला जबकि वह ठट्टे के ऊपर जाता था। उसने अलीकुलीखांको बादशाही चाकरीमें रख लिया। फिर जब अकबर बादशाह दक्षिण जीतनेको जाता था और जहांगीर बादशाहको रानाके ऊपर जानेका हुक्म दिया था तब वह जहांगीसे मिला। जहांगीरने तब तो उसे शेरअफगनका खिताब दिया था और राजसिंहासन पर बैठनेके पीछे बंगालेमें जागीर देकर भेज दिया। वहांसे लिखा आया कि ऐसे दुष्टको इस देशमें रखना उचित नहीं है। इस पर कुतुबुद्दीनखांको लिखा गया कि अलीकुलीखांको हजूरमें भेजे। और जो वह दंगा करे तो दण्ड दे। कुतुबुद्दीनखां तुरन्त उसकी जागीर वर्दवानमें गया। वह दो पुरुषोंसे अगवानीको आया तो खानके नौकरोंने उसे घेर लिया। तब उसने खानसे कहा कि तेरी यह क्या चाल बदल गई है? खानने अपने आदमियोंको अलगकर दिया और बादशाही हुक्म समझानेके लिये अकेला उसके साथ हो गया। उसने तलवार निकालकर दो तीन घाव खानके लगाये और अम्बाखां काशमीरीको भी जो सहायताके लिये आया था जखमी किया। फिर तो कुतुबुद्दीनखांके चाकरोंने उसको भी मार डाला। अम्बाखां उसी जगह मर गया और कुतुबुद्दीनखां चार पहर पीछे अपने डेरेमें मरा।

बादशाह लिखता है—"कुतुबुद्दीनखां कोका प्रियपुत्र भाई और परम मित्रकी जगह था। पर ईश्वरकी इच्छा पर कुछ वश नहीं लाचार सन्तोष किया। पिताकी मृत्युके पीछे कोका और उसकी माताके दुःखके समान और दुःख मुझ पर नहीं पड़ा।

खुर्रमका तुलादान ।

२(१) रबीउस्सानी (सावन सुदी ३) शुक्रवारको बादशाह खर्रम के डेरे पर जो "ओरते" बागमें था गया। अकबर बादशाह आप तो सालमें दो बार अपने जन्मकी सौर और सौम तिथिको तुला दान करता था और शाहजादोंको एक बार उनके जन्मकी सौर-तिथिको तोलता था। परन्तु इस दिन जो सौमपक्षका सोलहवां साल खुर्रमको लगा था उसको ज्योतिषियोंने भारी बताया था और वह कुछ बीमार भी था इस लिये बादशाहने उसको सोने चांदी और धातु आदि पदार्थोंसे विधिपूर्वक तोलकर वह सब माल पुण्य करा दिया।

काबुलसे कूच ।

४(२) रबिउलअव्वल (सावन सुदी ५) को बादशाहने हिन्दुस्थान जानेके लिये बाहर डेरे कराये और कुछ दिन पीछे आप भी काबुल से "जलगाह संगसफेद"में आगया। उसने काबुलके मेवों और विशेष कर साहबी और किशमिशी जातिके अंगूरों, शाह आलू, जर्द आलू और शफतालूकी बहुत प्रशंसा की है। अपने चचाके लगाये हुए जर्द आलूको सबसे अच्छा बताया है। एक बडे फलको तोलमें २॥ रुपये भरका कहा है। अन्तमें लिखा है कि काबुली मेवोंके सरस होने पर भी मेरी रुचिमें उनमेंसे एक भी आमके स्वादको नहीं पहुंचता है।

एक समय बादशाहने चलते चलते देखा कि अलीमसजिद और गरीबखानेके पास एक बडी मकडीने जो केकडेके बराबर थी हाथ भर लम्बे सांपको गला पकडकर अधमरा कर रखा था। बादशाह यह तमाशा देखनेको ठहर गया। थोडी देरमें सांप मर गया।

---

(१) मूलमें ६ गलत लिखी है पृ० ५५।

(२) मूलमें ४ जमादिउलअव्वल गलत है रबीउस्सानी चाहिये पृष्ठ ५५।

पुरानी लोथ।

बादशाहने काबुलमें सुना था कि सुलतान महमूद गजनवीके समयमें जुहाक और बामियां स्थानोंके बीचमें ख्वाजा याकूत नाम एक मनुष्य मरा था जो एक गुफामें गडा हुआ है। उसका शरीर अबतक नहीं गला है।" इस पर आश्चर्य करके अपने भरोसेके एक समाचार लिखनेवाले और एक जर्राहको बादशाहने भेजा। उन्होंने वापिस आकर निवेदन किया कि उसका आधा अंग जो जमीन से लगा हुआ है गल गया है और आधा जो नहीं लगा है वैसाही बना है। हाथोंके नख और बाल नहीं गिरे हैं एक ओरकी डाढी मोछ भी ठीक है। गुफाके द्वार पर तिथि भी खुदी हुई है। उससे सुलतान महमूदके पहिले उसका मरना प्रगट होता है। पर इस बातको कोई यथार्थरूपसे नहीं जानता।

मिरजाहुसैन।

१५ (भादों बदी ७) गुरुवारको कहमर्दके हाकिम अबसलांबेगने जो तूरानके स्वामी वलीमुहम्मदखांका नौकर था हाजिर होकर सलाम किया और एक मनुष्यने मिरजा शाहरुखके बेटे मिरजाहुसैन को अरजी लाकर दी और प्याजी रङ्गका एक लाल भेंट किया जो १००) का था। अर्जीमें लिखा था कि यदि कुछ फौज मिले तो बदख्शांको उजबकोंसे फतह करलूं। परन्तु बादशाह कभीसे सुना करता था कि मिरजाहुसैनको उजबकोंने मारडाला है इसलिये जवाबमें लिखा कि जो तू वास्तवमें शाहरुखका बेटा है तो सेवामें उपस्थित हो फिर फौज देकर तुझे बदख्शांको बिदा करेंगे।

बंगश।

दो लाख रुपये उस सेनाकी सहायताके लिये भेजे गये जो महासिंह और रामदासके साथ बंगशके सरकश पठानों पर भेजी गई थी।

बालाहिसार।

२२ (भादों बदी ८) गुरुवारको बादशाहने बलाहिसार(१)के

(१) काबुलके किलेका नाम है।

मकानोंमेंसे किसीको भी अपने रहनेके योग्य न देखकर हुक्म दिया कि उनको गिराकर बादशाहोंके राजभवन और दीवानखाने बनावें।

अस्तालिफ नाम स्थानसे आये हुए शफतालुओंमेंसे एक तोलमें ६२ रुपये अकबरी (६० तोले) का हुआ उसको गुठलीका गूदा भी मीठा था।

शाहरुखकी मृत्यु।

२५ (भादों बदी १२) को मालवेसे मिरजा शाहरुखके मरनेकी खबर आई। यह बदख्शांका अमीर था। २५ वर्ष पहिले अकबर बादशाहके समयमें आया था और जबसे अबतक विनयपूर्वक सेवा करता रहा था। उसके चार बेटे हसन, हुसैन, सुलतानमिरजा और बदीउज्जमानमिरजा थे। हुसैन तो बुरहानपुरसे भागकर ईरानकी राह से बदख्शांको चला गया था। बदख्शियोंने उसे अपना स्वामी बना कर बहुतसा अंश अपने देशका उजबकोंसे छीन लिया था। उजबकों ने उसको मारडाला फिर बदख्शियोंने दूसरे आदमीको मिरजा हुसैनके नामसे अपना मुखिया बना लिया। इस प्रकार कई मनुष्य मिरजाहुसैन बने मारे गये और फिर होगये। उनमेंसे एक मिरजा हुसैनकी अर्जीका आना ऊपर लिखा गया है।

सुलतान मिरजाको बादशाहने अपने पास रखकर बेटोंके समान पाला था राज्याभिषेकके पीछे दो हजारी जात और हजार सवारोंका मनसब दिया था। उसीको अब मालवे भेजा और बदीउज्जमानको हजारी जात और ५०० सवारोंका मनसब दिया।

हांकेका शिकार।

बादशाहने काबुलमें आनेके पीछे हांकेका शिकार नहीं किया था इसलिये अब फर्क नामक पहाड़को जो काबुलसे ७ कोस पर है घिरवाकर ४ जमादिउलअव्वल (भादों सुदी ६) मंगलवारको वहां गया। सौ हरने निकले उनमेंसे ५० शिकार हुए और पांच हजार रुपये हांकेवालोंको इनाम दिये गये।

शेख अबुलफजलके बेटे अबदुर्रहमानका मनसब बढकर दो हजारी जात और दो हजार सवारका होगया।

बाबर बादशाहका सिंहासन।

६ (भादों सुदी ८) गुरुवारको जिसके तडकेही काबुलसे कूच होनेवाला था बादशाह ईदकी चान्दरातके समान पुनीत समझकर बाबर बादशाहके सिंहासनके निकट गया और वहां जो पत्थरमें कुण्ड खोदा गया था उसको मदिरासे भरकर सभासदोंको प्याले दिये। वह दिन बहुत आनन्द और हर्षमें बीता।

काबुलसे कूच।

७ (भादों सुदी ९) शुक्रवारको एक पहर दिन चढ़े बादशाह बाग शहरआरासे "जलगाह संगसफेद" तक दोनों हाथोंसे द्रव्य और चरन लुटाता गया।

११ (भादों सुदी १३) मंगलवारको एक कोस पर गिरामीमें और १८ मंगलवार (आश्विन वदी ६) को २॥ कोस पर नचाकमें डेरे हुए। यहां फिर हांकेका शिकार हुआ ११२ पशु मारे गये। जिनमें जङ्ग जातिके २४ हरन थे जो अबतक बादशाहने नहीं देखे थे। एक जङ्ग तोलमें २ मन १० सेरका हुआ और इतना भारी होकर भी ऐसा दौड़ता था कि १०।१२ कुत्ते दौड़ते दौड़ते थक गये थे तब कहीं बड़ी मुशकिलोंसे उसे पकड़ सके थे।

खुसरोका फिर कैद होना।

बादशाहने खुर्रमसे यह सुनकर कि खुसरो उसके प्राण लेनेके विचारमें है उसको हकीम अबुलफतहके बेटे फतहुल्लह सहित कैद कर दिया। गयासुद्दीनअली, आसिफखांके बेटे नूरुद्दीन और एतमादुद्दौलाके बेटे शरीफखांको जो उससे मिले हुए थे मरवा डाला।

हकीम मुजफ्फर।

२२ जमादिउलअव्वल (आश्विन बदी १०) शनिवारको हकीम मुजफ्फर अरदस्तानीके मरनेकी खबर पहुंची। यह अपनेको

यूनानी हकीम जालीनूसके वंशमें बताता था। ईरानके शाह तुहमास्पने इसके विषयमें कहा था कि अच्छा हकीम है ताकि हम सब बीमार होजावें।

२४ जमादिउलअव्वल (आश्विन बदी १२) को बागवफा और नीमलेके बीचमें शिकार हुआ।

२ जमादिउस्सानी (आश्विन सुदी ३) को बागवफामें डेरे हुए।

अरसलांबेग उजबक जो अबदुल मोमिनखांके अमीरोंमेंसे किले काहमर्दका हाकिम था किला छोड़कर बादशाहकी सेवामें हाजिर आया।

४ जमादिउस्सानी (आश्विन सुदी ५) को जलालाबादके हाकिम इज्जतखांको हांकेके शिकारका बन्दोबस्त करनेके वास्ते हुक्म दिया गया। तीन सौ जानवर शिकार हुए। गर्मी बहुत होनेसे अच्छे अच्छे शिकारी कुत्ते मर गये।

१२ (आश्विन सुदी १४) गुरुवार(१) को सराय अकोरामें डेरे हुए। शाह बेगखां हाकिम कन्धारने आकर मुजरा किया।

१४ शनिवार(२) (कार्त्तिक बदी १) को बादशाहने उड़ीसेकी सूबेदारी दी।

मिरजा बदीउज्जमान।

इसी दिनको यह खबर आई कि मिरजा शाहरुखका बेटा बदीउज्जमान मालवेसे भागकर रानाके पास जाता था परन्तु वहांके हाकिम अबदुल्लहखांने पीछा करके पकड़ लिया और उसके कई साथियोंको मार डाला। बादशाहने हुक्म दिया कि एतमाद खां आगरेसे जाकर मिरजाको हजूरमें ले आवे।

तूरान।

२५ (कार्त्तिक बदी १२) को खबर पहुंची कि वलीमुहम्मदखां

---

(१) मूलमें शनि भूलसे लिखा है।

(२) मूलमें चन्द्र भूलसे लिखा है।

भतीजे इमामकुलीखांने मिरजा शाहरुखके बेटे हुसैनको मार डाला है। बादशाह लिखता है कि मिरजा शाहरुखके बेटोंको मारना मानो दैत्यका काम होगया है जैसा कि कहते हैं कि एक दैत्यके लोहूकी हरेक बून्दसे दूसरा दैत्य उत्पन्न होजाता है।

दिलाजाक और गक्खड।

जफरखां दिलाजाक पठानों और गक्खडोंके एक लाख घरोंको, जो अटक और व्यास नदीके बीचमें उपद्रव मचाया करते थे लाहोर की तरफ कूच कराकर धक्के के डेरोंमें बादशाहके पास आगया।

अकबर बादशाहका तुलादान।

रज्जबके लगतेही जो अकबर बादशाहके जन्मका महीना है बादशाहने एक लाख रुपये जो उनके सौर और सौम पत्तोंके दोनों तुलादानोंके थे आगरा दिल्ली लाहोर और गुजरात आदि १२ शहरोंमें उनकी आत्माको प्रसन्न करनेके लिये पुण्यार्थ बांटनेको भेज दिये।

पदवी।

३ रज्जब (कार्तिक सुदी ५) गुरुवारको बादशाहने खानजहांको पदवी सलावतखांको और खानदौरांको काबुलके सूबेदार शाहबेग को, हाथी घोडे और सिरोपाव सहित दी। काबुल, तिराह, बंगशकी तमाम सरकार और स्वात बिजोरकी विलायत खानदौरांको जागीर में लगाई और पठानोंके दबानेके वास्ते फौजदारी भी उस प्रान्तकी उसीको प्रदान की। रामदास कछवाहा भी उन्हीं परगनोंमें जागीर पाकर इस सूबेके सहायकोंमें नियत हुआ।

मोटे राजाके बेटे किशनसिंहका मनसब हजारी जात और ५०० सवारोंका होगया।

शिकार।

बादशाहने रास्तेमें कई जगह लाल हरनोंका शिकार खेला जो बाराहसन अब्दाल रावलपिण्डी रुहतास करछाक और नन्दनेके सिवा कहीं नहीं होते हैं। कुछ जीते हरन भी पकड़े कि, उनसे

उम जातिके बच्चे पैदा कराये जावें। इन शिकारोंमें बेगमें भी शामिल थीं।

२५ (अगहन बदी १२) को दहतासकी तलहटीमें जलालखां गक्खडके चचा शम्सखांको साधुताका बखान सुनकर बादशाह उसके घर गये। दो हजार रुपये उसको और इतनेही उसकी स्त्रियों बालकोंको देकर पांच आबाद गांव उसकी जीविकाके वास्ते दिये।

६ शाबान (अगहन सुदी ८) को अमीरुलउमरा अच्छा होकर जखडाले(१) में बादशाहके पास हाजिर हुआ। सब मुसलमान हकीम और हिन्दू वैद्य कह चुके थे कि वह न बचेगा। उसे अच्छा देखकर बादशाहको बहुत हर्ष हुआ।

राय रायसिंह।

राय रायसिंह जो बडे राजपूत अमीरोंमेंसे था अमीरुलउमरा की सुफारिशसे दरबारमें उपस्थित हुआ। बादशाहने उसके अपराध क्षमा करके उसका अगला मनसब जागीर सहित बहाल कर दिया। जब बादशाह खुसरोके पीछे गया था तो रायसिंह पर भरोसा करके उसे आगरेमें छोडा था और कहा था कि महलके लोग बुलाये जावें तो उनके साथ आवे। परन्तु जब ऐसा अवसर आया तो दो तीन मंजिल तक साथ रहकर मथुरासे अपने देशको चला गया और देखने लगा कि यह उपद्रव जो उठा है कहांतक फैलता है। कुछ दिनों पीछे जब खुसरो पकडा गया तो रायसिंह बहुत लज्जित हुआ और अमीरुलउमराका वसीला पकडा।

बादशाह लाहोरमें।

१२ (अगहन सुदी १५) चन्द्रवारको बादशाह दिलामेजबागमें जो रावी नदी पर था पहुंचकर अपनी मातासे मिला। मिरजागाजी कन्धारसे आया।

१३ (पौष बदी १) मंगलवारको बादशाहने लाहोरमें डेरा किया।

---

(१) जखडयाला।

खुर्रमका मनसब और जागीर।

बादशाहने दीवानोंको आज्ञा की कि खुर्रमको ८ हजारी जात और ५ हजार सवारोंके अनुसार जागीर तो उज्जैनमें दें और सरकार फीरोजा (१) उसकी तनखाहमें लगा देवें।

आसिफखां वजीर।

२२ (पौष वदी ८) गुरुवारको बादशाह बेगमों सहित आसिफखां वजीरके घर गया। रातको वहीं रहा। उसने १० लाख रुपयेकी भेट जवाहिर जड़ाऊ गहनों हाथी घोड़ों और कपड़ों आदिकी बादशाहको दिखाई। बादशाहने कुछ लाल कुछ याकूत कुछ चीनके बढ़िया कपड़े पसन्द करके लेलिये और शेष पदार्थ उसीको बख्श दिये।

लालकी अंगूठी।

मुरतिजाखांने गुजरातसे एकही लालकी बनी हुई पूरी अंगूठी भेजी जो तोलमें एक टांक और एक रत्तीकी थी। रङ्गत और घडत भी उसकी बहुत उत्तम थी उसके साथ एक लाल भी २ टांक और १५ रत्तीका था। बादशाहको यह अंगूठी बहुत पसन्द आई। वह लिखता है कि ऐसी अंगूटी किसी बादशाहके हाथमें नहीं सुनी गई थी।

मक्का।

मक्केके शरीफ (महन्त) ने विनयपत्र और काबे(२) का परदा भेजा। बादशाहने लानेवालेको ५ लाख दाम दिये और शरीफके वास्ते एक लाख रुपयेके उत्तम पदार्थ भेजे।

कन्धार।

१४(३) रमजान (माघ वदी १) गुरुवारको कन्धारमें अच्छा

---

(१) हांसी हिसार।

(२) पूज्यस्थान मुसलमानोंका।

(३) मूलमें लेखकके दोषसे १० लिखी है।

काम करनेके इनाममें मिरजागाजीका मनसब पूरा पांच हजारी और पांच हजार सवारका होगया। टट्ठेका सारा देश उसके पट्टेमें था तोभी मुलतानके सूबेमें कुछ जागीर उसको मिली। कन्धारकी हुकूमत भी जो सीमा प्रान्तका सूबा था उसको समर्पित हुई। बिदा होते समय तलवार और सिरोपाव भी मिला यह मिरजा फारसी भाषाका कवि भी था।

खानखानाकी भेट।

१५ (माघ वदी ३) को खानखानांकी भेट बुरहानपुरसे पहुंची ४० हाथी कुछ जवाहिर कुछ जड़ाऊ चीजें तथा विलायत और दक्षिणके बने हुए कपड़े थे। सबका मूल्य डेढ लाख रुपये हुआ। ऐसीही उत्तम भेटें दूसरे अमीरोंने भी भेजी थीं जो उस देशमें नौकरी पर थे।

राय दुर्गाकी मृत्यु।

१८ (माघ वदी ५) को राय दुर्गाके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है कि यह मेरे पिताका बड़ा किया हुआ था। ४० वर्षसे अधिक उनकी सेवामें रहा और बढ़ते बढते चार हजारी मनसब तक पहुंचा। मेरे पिताकी सेवामें आनेसे पहिले राना उदयसिंहका प्रतिष्ठित सेवक था और सिपाहगरीकी समझ अच्छी रखता था।

सुलतानशाह पठान।

खुसरोका भेदू सुलतानशाह पठान खिजराबादके पहाड़में पकडा आया। बादशाहने उसको लाहोरके मैदानमें तीरोंसे मरवा डाला।

मुहम्मदअमीनसे मिलना।

१ शव्वाल (माघ सुदी २) को बादशाह मुहम्मदअमीन नामक एक साधुसे जाकर मिला और उसके उपदेशसे सन्तुष्ट होकर एक हजार बीघे जमीन और एक हजार रुपये देआया। हुमायूं बादशाह भी इस साधुसे बहुत भाव रखता था।

लाहोरसे कूच।

रविवार(१) को पहर दिन चढे वादशाहने लाहोरसे कूच किया कुलीचखांको हाकिम, मीर कवामुद्दीनको दीवान, शेख यूसुफको बख़शी और जमालुल्लहको कोतवाल करके हरेकको यथायोग्य सिरोपाव दिया।

२५ शव्वाल (फागुन वदी ११) को सुलतानकी नदीको उतरकर नकोदरसे २ कोस पर पडाव हुआ। अकवर वादशाहने तुलादानके कोषमेंसे शेख अवुलफजलको वीस हजार रुपये इन दोनों परगनों के वीचमें पुल वांधकर पानी रोकनेके लिये दिये थे। वादशाह लिखता है—"सच यह है कि यह जगह बडी साफ और हरी भरी है।" उसने नकोदरके जागीरदार मोअज्जुलमुल्कको हुक्म दिया कि इस पुलके एक तरफ वगीचा और मकान बनावे जिसको देख कर आने जानेवाले प्रसन्न हों।

पानीपत और करनालके वीचमें मुसाफिरोंको दो सिंह सताया करते थे। वादशाहने १४ रविवार(२) (चैत्र वदी १) को दोनों सिंह हाथियोंके हलकेमें घेरकर वन्दूकसे मार दिये। रस्ता जो वन्द होरहा था खुल गया।

दिल्लीमें प्रवेश।

१८ (चैत्र सुदी ५) गुरुवारको वादशाह दिल्लीमें पहुंचकर सलेमगढ़में उतरे जिसे सुलतान सलेमशाह पठानने यमुनाके वीचमें

---

(१) इस रविवारको क्या तिथि थी यह मूलमें नहीं लिखी है शव्वालकी १ तारीख माघ सुदी २ शनिवारको थी। पीछे एक रविवार तीजको, दूसरा एकादशीको, तीसरा फागुन वदी २ को और चौथा नवमीको था। इन चारों रविवारोंमेंसे किस रविवारको कूच किया? सुलतानपुर लाहोरके पासही है इससे सम्भव है कि फागुन वदी २ या नवमीको कूच किया होगा।

(२) मूलमें भूलसे सोमवार लिखा है।

बनाया था और अकबर बादशाहने सुरतिजाखांको बख्श दिया था जो दिल्लीका रहनेवाला था। सुरतिजाखांने यमुनाके तीर पर एक बडा चबूतरा पत्थरोंका बनाया था जिसके नीचे पानीमें मिली हुई एक चोखंडी काशी(१) के कामकी हुमायूं बादशाहके हुक्मसे बनाई गई थी। उसके समान हवादार स्थान कम था। हुमायूं बहुधा अपने सखाओं और सभासदों सहित वहां बैठा करता था।

बादशाहने ४ दिन तक उस स्थानमें रहकर अपने सखाओंके साथ खूब मद्य पान किया। उसका विचार सरकार पालमके रमनोंमें हाकेका शिकार खेलनेका था। पर राजधानीमें प्रवेश करनेका मुहूर्त्त निकट आगया था और दूसरा मुहूर्त्त इन दिनोंमें नहीं था इसलिये उसने नौकामें बैठकर जलके रस्तेसे आगरेको प्रस्थान किया।

चैत्र वदी ७ को मिरजा शाहरुखकी सन्तानमेंसे ४ लडके और ३ लडकियां जो अकबर बादशाहको नहीं दिखाई गई थी बादशाहके पास लाई गईं। बादशाहने लडके तो अपने विश्वासपात्र अमीरोंको सौंपे और लडकियां अन्तःपुरकी टहलनियोंको पालने के वास्ते दीं।

राजा मानसिंह।

२० (चैत्र वदी ८) को राजा मानसिंह ६।७ फरमानोंके पहुंचने पर सूबे बिहारके किले रुहतासमें आकर बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाह लिखता है—"यह भी खानआजमके समान इस राज्यके पुराने खुरांट भेडियोंमेंसे है। जो कुछ इन लोगोंने मेरे साथ और मैंने इनके साथ किया है उसको ईश्वर जानता है। शायद कोई मनुष्य किसी मनुष्यसे इतनी टाला नहीं दे सकता है। राजाने १०० हथिनी और हाथी भेट किये जिनमेंसे एक भी ऐसा न था जो खासेके हाथियोंमें रखा जाता। पर यह मेरे पिताके कृपापात्रोंमेंसे था इसलिये मैं उसका अपराध उसके मुंह पर नहीं लाया और बादशाहीकीसी दया मया करके उसका मान बढाया।

(१) पच्चीकारी।

तीसरा नौरोज।

२ जिलहज्ज (चैत्र सुदी ५) गुरुवारको सूर्य्य मेख राशिमें आया। बादशाहने रंगते गांवमें नौरोजका उत्सव करके खानजहांको पांच हजारी जात पांच हजारका मनसब और ख्वाजाजहांको बख्शीका पद दिया और वजीरखांको बंगालेसे बदलकर अबुलहसनको उसकी जगह भेजा।

५ जिलहज्ज (चैत्र सुदी ८) शनिवारको मध्यान्ह कालमें बादशाह पांच हजार रुपयेकी रेजगी अपने दोनों हाथोंसे लुटाता हुआ आगरेके किलेमें गया।

सफेद चीता।

राजा वरसिंहदेवने एक सफेद चीता भेट किया। बादशाहने और पशु पची तो सफेद रंगके देखे थे पर चीता नहीं देखा था। इसलिये विशेष रूपसे उसका वर्णन अपने ग्रन्थमें किया है।

रावरतन हाडा।

इन्हीं दिनोंमें भोज हाडाके बेटे रावरतनने जो राजपूत जातिके बड़े अमीरोंमेंसे था हाजिर होकर ३ हाथी नजर किये। उनमेंसे एक जो सबसे बडा था १५ हजार रुपयेका सरकारमें आंका गया और खासेके हाथियोंमें रखा गया। बादशाह लिखता है—"मैंने उसका नाम रतन गज रखा। हाथीका मोल हिन्दुस्थानके राजोंमें पचीस हजार रुपयेसे अधिक नहीं होता है लेकिन आजकल हाथी बहुत मंहगे होगये हैं। रतनको मैंने सरबलन्दरायके खिताबसे सम्मानित किया।

भावसिंह।

भावसिंहका मनसब दो हजारी जात और सौ सवारका होगया।

राजा सूरजसिंह।

२५ (वैशाख बदी ११) को राजा सूरजसिंहने हाजिर होकर नजर न्योछावर की। वह राना अमराके चचेरे भाई श्यामसिंहको

भी साथ लाया था जिसके विषयमें बादशाह लिखता है—"कुछ शऊरदार है हाथीकी सवारी अच्छी जानता है।"

"राजा सूरजसिंह हिन्दीभाषाके एक कविको भी लाया था जिसने मेरी प्रशंसामें इस भावकी कविता भेट की—जो सूरजके कोई बेटा होता तो सदाही दिन रहता रात कभी न होती। क्योंकि सूरजके अस्त होने पर यह लड़का उसका प्रतिनिधि हो जाता और जगतको प्रकाशमान रखता। परमेश्वरका धन्यवाद है कि उसने आपके पिताको ऐसा पुत्र दिया जिससे उनके अस्त होने के पीछे मनुष्योंमें शोकरूपी रात्रि नहीं व्यापी। सूरज बहुत पश्चात्ताप करता है कि हाय मेरा भी कोई ऐसा बेटा होता कि मेरी जगह बैठकर पृथ्वीमें रात न होने देता। जैसा कि आपके भाग्यके तेज और न्यायकी तपसे ऐसी भारी दुर्घटना हो जाने पर भी संसार इस प्रकारसे प्रकाशमय होरहा है कि मानो रातका नाम और पताही नहीं है—ऐसी नई उक्ति हिन्दीभाषाके कवियोंकी कम सुनी गई थी। मैंने इसके इनाममें उस कविको हाथी दिया। राजपूत लोग कविको चारण(१) कहते हैं। इस समय के एक फारसीके कविने इस कविताके भावको फारसी कविता की है।"

---

(१) राजपूत कविको चारण नहीं कहते चारण तो एक जाति है जो विशेष करके कविता करती है।

चौथा वर्ष।

सन् १०१७।

वैशाख सुदी २ संवत् १६६५ से चैत्र सुदी १ संवत् १६६६ तक।

जलाल ममऊटकी विचित्र मृत्यु।

८ मुहर्रम (वैशाख सुदी १०) गुरुवारको जलालममऊट जिसको चार मटी जातका मनमब मिला हुआ था और कई लड़ाइयोंमें वीरतासे काम करचुका था ५०।६० वर्षकी अवस्थामें दस्तोंसे मर गया। जहांगीर लिखता है—"यह अफीमको टुकडे टुकडे करके खाया करता था और बहुधा अपनी माके हाथसे भी अफीम खाता था। जब मरने लगा तो उसकी मा भी अति-मोहसे बहुतसी वही अफीम जो बेटेको खिलाया करती थी खाकर उसके मरनेसे एक दो घडी पीछे मर गई। अबतक किसी माकी बेटेसे इतनी ममता नहीं सुनी गई थी। हिन्दुओंमें रीति है कि स्त्रियां पतिके मरने पर प्रेम या अपने बाप दादाकी कीर्त्ति तथा लोकलाजसे जल जाती हैं परन्तु हिन्दू मुसलमानोंकी किसी मासे ऐसा काम नहीं हुआ(१)।

---

(१) जहांगीरके इस निश्चयके अनुसार बहुतसे हिन्दू मानते हैं कि मा बेटेके साथ सती नहीं होती। जैसा कि इस सोरठेसे प्रतीत होता है—

सगो सगाई नांह, मोह पगो मोहो सगो।
यह अचरज जग मांह, [illegible] बैठी तिरिया जले॥

पर मारवाडमें प्राचीनकालमें बेटे पोतोंके साथ भी स्त्रियां सती हुई हैं। इसका प्रमाण वह प्राचीन पुनीत पाषाण देते हैं जो उन की चिताओं पर सैकडों वर्षसे खडे हैं। उस पर तिथि संवत् नाम ठाम और संक्षिप्त वृत्तान्त उन सत्यवती स्त्रियोंका खुदा हुआ है जो अपने बेटे या पोतोंके मोहसे उनकी लाशको गोदमें लेकर जल

मानसिंहका घोडा।

१५ (जेठ वदी १) को बादशाहने एक घोडा जो सब घोडोंमें उत्तम था परम प्रीतिसे राजा मानसिंहको दिया। बादशाह लिखता है—"इस घोड़ेको ईरानके शाह अब्बासने कई दूसरे घोड़ों और उत्तम सौगातों सहित अपने विश्वासपात्र टाम मनूचिहरके हाथ मेरे पिताके पास भेजा था। इस घोडेके देनेसे राजाने इतनी प्रसन्नता और प्रफुल्लता प्रगट की कि यदि मैं एक राज्य भी उसको देता तो भी शायदही इतना आनन्द उत्साह दिखाता। यह घोडा यहां आया उस समय ४ वर्षका था। जब बडा हुआ तो सब मुगल और राजपूत चाकरोंने कहा कि इराक(१) से कोई ऐसा घोडा हिन्दुस्तानमें नहीं आया है। जब मेरे पिता खानदेश और दक्षिण मेरे भाई दानियालको देकर आगरेको आने लगे तो अति कृपासे दानियालको आज्ञा की कि एक वस्तु जो तेरी मनचाही हो मुझसे मांग। उसने अवसर पाकर यह घोडा मांगा और उन्होंने उसको दे दिया था।"

गईं। ऐसी सतियोंको मा-सती और पोता-सती कहते हैं। पतिके साथ जलनेवालीकी पदवी महासती है। इन घटनाओंके जो चित्र पत्थरों पर दिये जाते थे उनमें पहचानके लिये सतियोंकी मूर्त्तियां भी भिन्न भिन्न रूपसे खोदी जाती थीं। पतिके साथ जलनेवाली की मूर्ति पतिके घोडेके आगे खडी और कहीं पतिके सामने बैठी बनाई जाती थी। बेटे पोतोंके साथ जलनेवालियोंके चित्रमें वह मृत बालक उनकी गोदमें दिखाये जाते थे। ऐसे कितनेही चित्र अब भी महासती मासती और पोता सतियोंके पत्थरों पर खुदे हुए मारवाडके कितनेही गांवोंमें मौजूद हैं। उनका हाल हमने एक अलग पुस्तकमें लिखा है।

(१) ईरानको अरब लोग ईराक कहते थे इससे ईरानी घोडे का नाम इराकी होगया था।

जहांगीरकुलीको मृत्यु।

२० (जेठ वदी ७) मंगलको इसलामखांकी अरजीसे जहांगीर-कुलीखां सूबेदार बंगालेके मरनेका वृत्तान्त सुनकर बादशाहको रंज हुआ। यह उसका निजदास था और सुयोग्यतासे बड़े अमीरों की पांतिमें जा मिला था। बादशाहने बंगालेका शासन और शाहजादे जहांदारका संरक्षण इसलामखांको सौंपा और अफजल-खांको उसकी जगह विहारकी सूबेदारी पर भेजा।

करनाटकके बाजीगर।

हशीमअलीका बेटा बुरहानपुरसे करनाटकके कई बाजीगरोंको लाया जो १० गोलियोंका खेल करते थे। बड़ीसे बडी गोली नारङ्गीके और छोटी घूंघचीके समान थी। पर एक भी इधर उधर नहीं होती थी। ऐसेही और भी कई करतब करते थे जिनको देखकर बुद्धि चकित होजाती थी।

देवनक पशु।

ऐसेही सिंहलद्वीपसे एक फकीर देवनक नामका एक पशु लाया जिसकी सूरत बन्दरसे मिलती थी परन्तु पूंछ न थी। और काला बनमानसकीसी करता था। बादशाहने उसके कई चित्र खिंचवाये जिनमें उसके कितनेही चरित्रोंको अङ्कित किया गया था।

फरङ्गी पर्दा।

मुकर्रबखांने खम्भात बन्दरसे फरंगियोंका बनाया एक पर्दा भेजा। बादशाहने फरंगियोंका बनाया हुआ उतना कारीगरीका काम और कोई नहीं देखा था।

नजीबुन्निसा बेगम।

बादशाहकी चची या फूफी (क्योंकि दोनोंके वास्ते अरबीका एकही शब्द है) ६१ वर्षकी अवस्थामें मर गई। बादशाहने उसके बेटे मिरजावालीको हजारी जात और दोसौ सवारोंका मनसब दिया।

रूमका कृत्रिम दूत ।

तूरानका अकम नामक एक हाजी रूममें था वह अपनेको रूमके खुांदगार(१) (सुलतान) का दूत बनाकर आगरेमें बादशाह की सेवामें उपस्थित हुआ। एक जलजलूल पत्र भी उसके पास था। दरगाहके बन्दोंने उसके स्वरूप और दशाको देखकर उसके दूत होनेमें सन्देह किया। जहांगीर लिखता है—"हजरत अमीर तैमूरने रूमको जीता था। वहांका हाकिम एल्ड्रुमबायजीद पकड़ा आया। अमीरने उससे भेंट और रूमकी सालभरकी उपज लेकर वह देश पूर्ववत उसके अधिकारमें रहने दिया। एल्ड्रुम-बायजीद उन्हीं दिनोंमें मर गया और अमीर तैमूर उसके बेटे मूसा चिलपीको वहांका देशाधिपति करके लौट आये। तबसे अबतक ऐसे उपकारके होते हुए भी वहांके कैसरों(२)की तरफसे कोई नहीं आया न उन्होंने कोई दूत भेजा। अब क्योंकर प्रतीत होसके कि यह मावरुन्नहर (तूरान) का पुरुष खुांदगारका भेजा हुआ है। यह बात मेरी समझमें नहीं आई और न किसीने उसकी साक्षी दी। इसलिये मैंने कह दिया कि जहां जाना चाहता हो चला जावे।"

बादशाहका व्याह ।

४ रबीउलअव्वल (असाढ सुदी ६) को बादशाहका व्याह राजा मानसिंहके बड़े बेटे जगतसिंहकी बेटीसे मरयममकानीके महलमें हुआ। राजा मानसिंहने जो दहेज दिया उसमें ६० हाथी भी थे।

राणा ।

बादशाहको राणाका विजित करना अवश्य था इसलिये महा-बतखांको इस लड़ाई पर नियत किया और निम्नलिखित सेना और रुपये उसे दिये—

---

(१) मुगलोंकी तवारीखमें सुलतान रूम खुान्दगार लिखे जाते थे।

(२) रूमके सुलतानको कैसर भी कहते हैं।

मजे हुए सवार अनुभवी सरदारों सहित	१२०००
अहदी	५००
पियादा वरकन्दाज (बन्दूकची)	२०००
गजनाल और शतुरनाल तोपें	१७०
हाथी	६०
नकद रुपये	२० लाख

बुरहानपुरके आम।

बुरहानपुरके बखशीने कुछ आम भेजे थे उनमेंसे एक ५२ तोले का हुआ।

सङ्गयशमका प्याला।

महतरखांके बेटे मूनमखांने यशम जातिके पत्थरका एक स्वेत और स्वच्छ प्याला भेट किया जो मिरजा उलगबेग गोरगांके वास्ते बनवाया गया था और जिस पर मिरजाका नाम साल सहित खुदा था। बादशाहने भी अपना और अपने पिताका नाम उसकी कोर पर खुदा दिया।

संग्रामका देश।

१६ रबीउस्सानी (भादों बदी ३) बुधवारको हुक्म हुआ कि संग्रामका देश जो एक सालके लिये इसलामखांको इनाममें दिया गया था। एक साल अफजलखां सूबेदार विहारके इनाममें भी रहे।

राणाकी लड़ाई।

इसी दिन महाबतखां तीन हजारी जात और अढाई हजार सवारका मनसब सिरोपाव खासाहाथी और जड़ाऊ तलवार सहित पाकर भादों बदी १२ को बिदा हुआ। उसके साथ जफरखां, शुजाअतखां, राजा बरसिंहदेव, मंगलीखां, नरायणदास कछवाहा, अलीकुली, दरमन, हुजबरखां तुरुमतन, बहादुरखां और मुअज्जुल मुल्क बखशी आदि अमीर और सरदार उसके साथ गये। सबको यथायोग्य खासे सिरोपाव जड़ाऊ तलवारें और झंडे वगैरह मिले राजा बरसिंहदेवको खिलअत और खासेका घोड़ा मिला।

खानखानां।

इसी दिन पहरदिन चढ़े खानखानां जो बादशाहका अतालीक (शिक्षक) था बुरहानपुरसे आया उसके ऊपर हर्ष और उत्साह ऐसा छाया हुआ था कि पांवसे आता है या सिरसे यह कुछ नहीं जानता था और व्याकुलतासे बादशाहके चरणोंमें गिर पड़ा। बादशाहने भी दया करके उसका सिर उठाकर छातीसे लगाया और मुंह चूमा। उसने मोतियोंकी माला कई लाल और पन्ने भेट किये जिनका मोल तीन लाख रुपयेका हुआ। इसके सिवा और भी बहुतसी वस्तु अर्पण की।

बङ्गालका दीवान।

१७ जमादिउलअव्वल (द्वितीय भादों वदी ४) को वजीरखां बङ्गालके दीवानने ६० हाथी हथनियां और कई लाल कुतुबी(१) भेट किये उससे और इसलामखांसे नहीं बनती थी इसलिये बादशाहने उसको बुला लिया था।

आसिफखांकी भेट।

२२ (द्वितीय भादों वदी ९ तथा १०) को आसिफखांने ७ टंक भरका एक माणिक्य जो रंग ढंग और अंगमें अति सुन्दर था और ७५ हजार रुपयेमें खंभात बन्दरसे मंगाया था बादशाहको भेट किया। वह बादशाहकी जांचमें ६० हजार रुपयेसे अधिकका न था।

दलपत।

राय रायसिंहके बेटे दलपतने बड़े बड़े अपराध किये थे तोभी वह खानजहांकी सुफारिशसे जान बूझकर बख्श दिया गया।

खानखानांके बेटे।

२४ (द्वितीय भादों वदी १२) को खानखानांके बेटोंने बादशाह की सेवामें उपस्थित होकर पचीस हजार रुपये भेट किये और उसी दिन खानखानांने भी ८० हाथी नजर किये।

(१) लालकी एक जाति।

तुलादान।

१ जमादिउस्सानी (द्वितीय भादों सुदी २) गुरुवारको बादशाह की सौर वर्षगांठका तुलादान हुआ। उसका कुछ रुपया औरतोंको बांटा गया और बाकी रक्षित देशोंके दीन दरिद्रियोंके वास्ते भेजा गया।

दूध देनेवाली हरनी।

दूध देनेवाली एक हरनी भेटमें आई जो नित्य ४ सेर दूध देती थी उसका स्वाद गाय भैंसके दूधकासा था। कहते हैं कि यह दूध दमेकी बीमारीके लिये लाभदायक होता है।

राजा मानसिंह।

११ (द्वितीय भादों सुदी १३) को राजा मानसिंहने दक्षिण जानेकी आवश्यकतासे जहां उसकी नौकरी बोली गई थी सेना की सामग्री प्रस्तुत करनेके लिये अपने वतन आमेर जानेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने हुशियार मस्त नाम खासेका हाथी उसको देकर बिदा किया।

१२ (द्वितीय भादों सुदी १३) को अकबर बादशाहकी बरसी थी बादशाहने मामूली खर्चों के सिवा चार हजार रुपये उनके रौजे में गरीबों और फकीरोंको बांट देनेके लिये भेजे।

खुसरोकी बेटी।

१३ (द्वितीय भादों सुदी १४) को बादशाहने खुसरोकी बेटीको मंगवाकर देखा। उसकी सूरत बापसे ऐसी मिलती थी कि वैसी किसीकी सूरत कभी मिलते नहीं देखी गई थी। ज्योतिषियोंने बादशाहसे कहा था कि उसका जन्म बापके वास्ते शुभ नहीं है पर आपके वास्ते शुभ है। ऐसाही हुआ। यह भी कहा था कि तीन वर्ष पीछे आप उसको देखें। अब तीन सालकी होजाने पर बादशाहने उसे मंगवाकर देखा।

खानखानांकी प्रतिज्ञा।

२१ (आश्विन बदी ८) को खानखानांने निजामुलमुल्कके राज्य

को जिसमें अकबर बादशाहके मरे पीछे बहुतसा उपद्रव उठ खड़ा हुआ था दो वर्षमें साफ कर देनेकी प्रतिज्ञा की और यह बात लिखदी कि जो दो वर्षमें यह काम न करदूं तो अपराधी समझा जाऊं। पर उस सेनाके सिवा जो दक्षिणमें है बारह हज़ार सवार और १२ लाख रुपये फिर मुझको मिलें। बादशाहने हुक्म दे दिया कि तुरन्त तय्यारी करके उसको बिदा करें।

पेशरौखां।

१ रज्जब (आश्विन सुदी २) को पेशरौखां मर गया। इसको शाह तुहमास्पनें हुमायूं बादशाहकी सेवा करनेके लिये दिया था। इसका नाम तो आदत था पर अकबर बादशाहने फर्राशखाने का दारोगा बनाकर पेशरौखांका खिताब दिया था। इस काममें बहुत योग्य था ९० वर्षकी उमरमें १४ वर्षके जवानोंसे बढ़कर साहसी था। मरते समय तक दमभरके लिये भी मद्य पिये बिना नहीं रहता था। १५ लाख रुपये छोड़ मरा। बेटा सुपात्र न था इसलिये आधा फर्राशखाना उसके रहा और आधा "तहमास्प" को मिल गया।

उसी दिन कमालखां भी मर गया। वह दिल्लीके कलालोंमेंसे था। बादशाहको उसका बहुत भरोसा था इसलिये बावरचीखाने का दारोगा बनाया था।

लालखां कलावत।

२ (आश्विन सुदी ३) को लालखां कलावत जो अकबर बादशाहकी सेवामें छोटेसे बड़ा हुआ था ६० वर्षका होकर मर गया। अकबर बादशाह हिन्दोके जो गान सुनता वह उसे याद करा देता था। उसकी एक लौंडी इस शोकमें अफीम खाकर मर गई। बादशाह लिखता है कि ऐसी वफादार तो मुसलमानोंमें कम देखनेमें आई।

ख्वाजेसराओंका निषेध।

हिन्दुस्थान और विशेषकरके बङ्गालके ज़िले सिलहटमें बहुत

कालसे यह चाल पड़ गई थी कि वहांकी प्रजा अपने कुछ लड़कों को नपुंसक बनाकर मालगुजारीके बदले हाकिमोंको देदेती थी फेलते फेलते दूसरे देशोंमें भी यह चाल फैल गई। हर वर्ष कई हजार बालक नपुंसक बना दिये जाते थे। बादशाहने आज्ञादी कि अबसे यह खराब चाल बन्द हो। बालक ख्वाजेसराओंकी बिकरी रोकी जावे। इसलामखां और बङ्गालके सब हाकिमोंको लिखा गया कि अब जो कोई ऐसे कर्म्म करे उसे दण्ड दें और जिसके पास छोटे ख्वाजेसरा मिलें लेलिये जावें। जहांगीर लिखता है—"अबतक किसी बादशाहका इधर ध्यान नहीं गया था। जल्द यह कुरीति मिट जावेगी। जब ख्वाजेसराओंकी बिकरी बन्द हो गई तो कोई व्यर्थ बालकोंको नपुंसक क्यों बनावेगा?"

खानखानांको घोड़े हाथी।

समन्द घोडा जो शाह ईरानका भेजा हुआ था और उस समय तक उतना बड़ा और अच्छा कोई घोडा हिन्दुस्थानमें नहीं आया था बादशाहने खानखानांको दे दिया इससे वह बहुतही प्रसन्न हुआ। फिर फतूह नामक हाथी जो लड़नेमें अनुपम था २५ दूसरे हाथियों सहित उसको प्रदान किया।

किशनसिंह।

किशनसिंह महाबतखांके साथ भेजा गया था उसने अच्छा काम दिया। रानाके ३० मनुष्य मारे और तीनसौके लगभग पकड़े। उसके भी पावमें बरछा लगा था इस लिये उसका मनसब दो हजारी जात और एक हजार सवारोंका होगया।

कन्धार।

१४ (कार्तिक बदी १) को मिरजा गाजीको कन्धार जानेका हुक्म हुआ। उसके भक्करसे कूच करतेही कन्धारके हाकिम सरदारखांके मरनेकी खबर पहुंची। वह बादशाहके चचा मिरजाहकीम के निज नौकरोंमें था।

अकबर बादशाहका रौज़ा।

१७ (कार्तिक वदी ४) चन्द्रवारको बादशाह अपने पिताके रौज़ेका दर्शन करने गया। वह लिखता है—"जो होसकता तो मैं इस मार्ग में मस्तक और पलकोंसे जाता। मेरे पिता तो मेरे वास्ते फतहपुरसे अजमेर तक १२० कोस पैदल ख्वाजे मुईनुद्दीनके दर्शनोंको गये थे। फिर मैं इस मार्गमें सिर और आंखोंसे जाऊं तो क्या बड़ी बात है।"

इस रौज़ेकी जो इमारत बनी थी वह बादशाहको पसन्द न आई। क्योंकि उसका यह मनोरथ था कि यहां ऐसी इमारत बने जिसके समान पृथिवीके पर्य्यटन करनेवाले कहीं नहीं बता सकें। उक्त इमारतको जब जहांगीर खुसरोकी तलाशमें गया था तो उसके पीछेसे सिलावटोंने तीन चार वर्षमें अपनी समझसे बनाया था। बादशाहने उसको गिराकर नये सिरेसे बनानेका हुक्म शिल्प-निपुण सिलावटोंको दिया। बनते बनते एक विशाल भवन, बाग, ऊंची पौल और श्वेत पाषाणोंके मीनारों सहित बन गया जिसकी लागत पन्द्रह लाख रुपये बादशाहको सुनाई गई।

हकीमअलीका हौज़।

२३ (कार्तिक वदी १०) रविवारको जहांगीर अकबर बादशाह के समयका बना हकीमअलीका हौज अपने उन मित्रों सहित देखने गया जिन्होंने उसको नहीं देखा था। यह ६: गज लम्बा और उतनाही चौडा था और उसकी बगलमें एक कमरा बना था जिसमें खूब उजाला रहता था। इस कमरेका रास्ता भी पानीमें होकर था लेकिन पानी उस रास्तेसे भीतर नहीं जाने पाता था। इस कमरेमें १२ आदमी बैठ सकते थे।

हकीमने अवसरके अनुसार धन माल बादशाहको नज़र किया। बादशाह उसको दो हजारी मनसब देकर राजभवनमें आया।

खानखानांको दक्षिण जाना।

१४ आबान (अगहन वदी २) रविवारको खानखानां बहादुर

परतला खिलअत और खासेका हाथी पाकर दक्षिणको विदा हुआ। राजा सूरजसिंह भी उसके साथ भेजा गया और उसका मनसब तीन हजारी जात और दोहजार सवारोंका होगया।

गुजरात।

बादशाहने मुरतिजाखांके भाइयों और नौकरोंका प्रजा पर अन्याय करना सुनकर गुजरातका सूबा उससे छीन लिया और आजमखांको दिया। आजमखां तो हुजूरमें रहा और उसका बडा बेटा जहांगीरकुलीखां तीन हजारी जात और अढाई हजार सवारों का मनसब पाकर बापको नायबीमें गुजरातको गया। बादशाहने उसको मोहनदास दीवान और मसऊदखां बखशीकी सलाहसे काम करनेका हुक्म दिया।

बलन्द अख्तर।

४ जिलहज्ज (फागुन सुदी ६) बुधवारको खुसरोके घरमें खान-आजमकी बेटीसे लड़का उत्पन्न हुआ। बादशाहने उसका नाम बलन्द अख्तर रखा।

६ (फागुन सुदी ८) को मुकर्रबखांने एक तसवीर भेजी जिसे फरंगी अमीर तैमूरकी बताते थे। जब उनकी फौजने रूमके बाद-शाह एलद्रुम बायजीदको पकडा तो अस्तम्बोलके ईसाई हाकिमने एक दूत सौगातसहित अमीरके पास भेजा था। उसके साथ एक चित्र-कारभी था वह अमीरकी तसवीर खेंच लेगया था। बादशाह लिखता है—"जो यह बात कुछ भी सच होती तो कोई पदार्थ इस चित्रसे बढ़कर मेरे समीप नहीं था पर यह तो अमीर और उनके बेटों पोतोंकी सूरतसे कुछ भी नहीं मिलती इसलिये पूरी प्रतीत नहीं होती।"

चौथा नौरोज।

१४ (चैत बदी १) शनिवारको रातको सूर्य्य मेखमें आया। चौथा नौरोज हुआ।

पांचवां वर्ष।

सन् १०१८।

चैत सुदी २ संवत् १६६६ से चैत सुदी १ संवत् १६६७ तक।

५ मुहर्रम (चैत सुदी ७) शुक्रवार सं० १६६६ को हकीम अली मर गया। यह बडा हकीम था इसने अकबर बादशाहके समयमें बू अलीसीना(१) के कानूनकी टीका लिखी थी। बादशाह लिखता है कि यह दुष्टात्मा और दुर्बुद्धि था।

खान आलम।

२० सफर (जेठ बदी ७) को मिरजा बरखुरदारको खानआलम का खिताब मिला।

२३॥ सेरका तरबूज।

फतहपुरसे इतना बडा एक तरबूज आया कि बादशाहने वैसा अबतक नहीं देखा था तुलवाया तो २३॥ सेरका हुआ।

सीमतुलादान।

१९ रबीउलअव्वल (आषाढ बदी ५) चन्द्रवारको बादशाहकी सीस वर्षगांठका तुलादान उनकी मा मरयममकानीके भवनमें हुआ। जो स्त्रियां वहां जुड़ गई थीं उनको बादशाहने उनमेंसे कुछ रुपये दिलवाये।

दक्षिण पर चढाई।

बादशाहने दक्षिणके कामों पर एक शाहजादेका भेजा जाना आवश्यक समझ कर परवेजको भेजने और उसके वास्ते सफरकी तय्यारी कर देनेका हुक्म दिया।

---

(१) बूअलीसीना मुसलमानोंमें बडा हकीम होगया है उसने जो पुस्तक वैद्यकविद्याकी बनाई है उसका नाम कानून बूअली है।

राना की लड़ाई।

बादशाहने महाबतखांको कई कामोंकी सलाहके वास्ते बुला कर उसकी जगह अबदुल्लहखांको उस लशकरका अफसर किया जो रानाके ऊपर भेजा गया था और उसको फीरोज़ जंगका ख़िताब भी दिया। बख़शी अबदुर्रज्ज़ाकको सब मनसबदारोंसे यह कहला देनेके लिये भेजा कि फीरोजजंगको आज्ञा भंग न करें और उसके अच्छे बुरे कहनेमें अपना भला बुरा समझें।

दूध देनेवाला बकरा।

४ जमादिउलअव्वल (सावन सुदी ६) को चरवाहे एक खस्सी बकरा लाये जिसके थन बकरीकेसे थे और वह प्रतिदिन एक प्याला दूध देता था।

सूरतकी हुकूमत।

६ (सावन सुदी ७) को बादशाहने खानआजमके बेटे खुर्रमको दो हजारी जात और पांचसौ सवारका मनसब देकर सूरतकी हुकूमत पर भेजा जो जूनागढके नामसे प्रसिद्ध है।

राजा मानसिंह।

१६ (भादों बदी २) को तलवारका जड़ाऊ परतला राजा मान सिंहके वास्ते भेजा गया।

दक्षिण।

१६ (भादों बदी ८) को बादशाहने २० लाख रुपये उस लशकरके खर्चके वास्ते जो परवेजकी अफसरीमें तय्यार हुआ था एक अलग खजानचीको सौंपे और पांच लाख रुपये परवेजके खर्चके लिये भी दिये।

१ जमादिउस्सानी (भादों सुदी २) को अमीरुलउमरा भी उसी लशकरमें नियुक्त हुआ और उसको खिलअत और घोड़ा दिया गया।

जगन्नाथका बेटा करमचन्द भी दो हजारी जात और डेढ हजार सवारका मनसब पाकर परवेजके साथकी सेनामें शामिल हुआ।

राना की लड़ाई।

४ (भादों सुदी ५) को ३७० दक्षे सवार उदयपुरके लशकरको सहायताके लिये अबदुल्लहखांको दिये गये। १०० घोड़े भी सरकारी तवेलोंसे भेजे गये कि अहदियों और मनसबदारोंमेंसे जिन जिनको अबदुल्लहखां उचित समझे देदे।

लाल।

१७ (आश्विन वदी ३) को बादशाहने एक लाल साठ हजार रुपयेका परवेजको, दूसरा लाल दो मोतियों सहित खुर्रमको दिया। इनका मूल्य चालीस हजार था।

राजा जगन्नाथ।

२८ (आश्विन सुदी १) चन्द्रवारको राजा जगन्नाथका मनसब ५ हजारी जाती और तीन सौ सवारोंका होगया।

राय जयसिंह।

८ रज्जब (आश्विन सुदी ८) को राय जयसिंहका मनसब चार हजारी जाती और तीन हजार सवारोंका होगया। यह भी दक्षिण की सेनामें भरती हुआ।

शहरयार।

८ रज्जब (आश्विन सुदी १०) गुरुवारको शाहजादा शहरयार गुजरातसे हुजूरमें आया।

परवेजका दक्षिण जाना।

१४ (आश्विन सुदी १५) मंगलवारको बादशाहने परवेजको खासा खिलअत, घोड़ा, खासा हाथी, जड़ाऊ पेटी और तलवार देकर दक्षिण जीतनेको भेजा। जो अमीर और सरदार उसकी सेवामें नियत किये गये थे उनको भी घोड़े सिरोपाव जड़ाऊ पेटियां और तलवारें मिलीं। एक हजार अहदी भी शाहजादेके साथ भेजे गये।

रानाकी लड़ाई।

अबदुल्लहखांकी अर्जी आई कि मैंने विकट घाटियोंमें रानाका

पीछा किया। कई हाथी और उसका असबाब हाथ आया। राना रातको भागकर निकल गया परन्तु शीघ्रही पकडा जायगा या मारा जायगा। बादशाहने प्रसन्न होकर उसका मनसब पूरा पाच हजारी कर दिया।

परवेज।

बादशाहने दस हजार रुपयेकी एक मोतियोंकी माला परवेज को दी। खानदेश और वेरार तो पहिलेसे उसको दिये जाचुके थे अब आसिरका किला भी दिया गया और तीन सौ घोडे भी मिले कि अहदियों और मनसबदारोंमेंसे जिसको योग्य समझें दिये जायें।

भङ्ग गांजेका निषेध।

२२ (अगहन बदी ८) शुक्रवारको बादशाहने हुक्म दिया कि भङ्गगांजा जो झगड़ेकी जड़ है बाजारमें न बेचें और जुएके अड्डे भी उठा देवें।

वृश्चिक संक्रांतिका दान।

बादशाहने वृश्चिक(१) संक्रांतिके दिन एक हजार तोले सोने चान्दी और एक हजार रुपये अपने ऊपर वार कर दान किये।

दक्षिण पर सेना।

बादशाहने एक और नई फौज जिसमें १६३ मनसबदार और ४६ अहदी बरकन्दाज थे परवेजके पास दक्षिणको विदा की और पचास घोडे भी भेजे।

खुर्रमकी सगाई।

१५ (पोष बदी ३) रविवारको बादशाहने पचास हजार रुपये खुर्रमकी सगाईकी रस्मके मिरजा मुजफ्फरहुसैनके घर भेजे। उसकी लड़कीसे खुर्रमका व्याह ठहरा था। यह बहराम मिरजा का पोता और ईरानके शाह इसमाईल सफवीका पडपोता था।

(१) यह वृश्चिक संक्रान्ति अगहन बदी १० बुधवार सं० १६६६ को १८ घडी ५२ पल पर लगी थी।

दक्षिणका युद्ध।

बादशाहने आगरेके कानूंगो बिहारीचन्दके भतीजेको आगरेके किसानोंमेंसे भरती किये हुए एक हजार पैदलों सहित परवेजके पास भेजा। पांच लाख रुपये और उसके पास खर्चके लिये भेजे।

४ शव्वाल (पौष सुदी ५) गुरुवारको बादशाहने रुपये बांटे। उनमेंसे एक हजार रुपये पठान (१) मिश्रको मिले।

नक्कारा देनेका प्रबन्ध।

बादशाहने हुक्म दिया कि नक्कारा उन लोगोंको दिया जावे जिनका मनसब तीन हजारी या तीन हजारीके ऊपर हो।

चन्द्रग्रहण।

पौष सुदी १५ को चार घडी दिन रहे चन्द्रग्रहण लगा। गहते गहते सब चांद गह गया। पांच घडी रात गये तक गहाही रहा। बादशाहने उसके दोष निवारणके लिये सोने चान्दी कपडे और धानका तुलादान किया। घोडोंका दान भी किया। सब मिलाकर १५ हजारका माल दानपात्रोंको बांटा गया।

२५ (माघ बदी १२) को बादशाहने रामचन्द्र बुन्देलेकी बेटी उसके बापकी प्रार्थनासे अपनी सेवाके वास्ते ली।

बिहारीचन्द।

१ जीकाद (माघ सुदी ३) गुरुवारको बिहारीचन्दको पांच सदी जाती और तीन सौ सवारीका मनसब मिला।

दक्षिण।

बादशाहने मुल्लाहयातीको खानखानांके पास भेजकर बहुतसी कृपासे भरी हुई बातें कहला भेजीं थीं। मुल्ला वहां होकर लौट आया। खानखानांके भेजे एक मोती और दो लाल लाया। उनका मूल्य बीस हजार कूता गया।

---

(१) यह नाम फारसी लिपिमें अंसयुक्त होनेसे नहीं पढा गया।

(१) चण्डू पंचांगमें पौष सुदी १५ शनिवारको २५ घ० १९ प० पर चन्द्र ग्रहण लिखा है।

६ जीकाद (माघ सुदी ८) को परवेजके दक्षिण पहुंचनेसे पहले खानखानां और दूसरे अमीरोंकी यह अर्जी दक्षिणसे पहुंची कि दक्षिणी लोग फसाद किया चाहते हैं। बादशाहने परवेज और दूसरी सेनाओंके भेजे जाने पर भी अधिक सहायताकी आवश्यकता समझकर स्वयं दक्षिणकी तरफ जानेका विचार किया। आसिफ खांकी अर्जी आई कि बादशाहका इधर पधारना बहुत आवश्यक है। बीजापुरके आदिलखांकी भी अर्जी पहुंची कि राजसभाके विश्वासपात्रोंमेंसे कोई आवे तो उससे अपने मनोरथ कहूं और वह लौटकर बादशाहसे कहे तो दासोंका कल्याण हो।

बादशाहने मन्त्रियों और शुभचिन्तकोंसे सलाह पूछी और प्रत्येककी सम्मति ली। खानजहांने कहा कि जब इतने बड़े बड़े सुभट दक्षिण जीतनेको जाचुके हैं तो हजरतका पधारना आवश्यक नहीं है। यदि आज्ञा हो तो मैं भी शाहजादेकी सेवामें जाऊं और इस कामको पूरा करूं।

बादशाहको उसका वियोग स्वीकार न था और युद्ध भी बड़ा था इस लिये शुभचिन्तकोंकी सम्मति स्वीकार करके उसको फरमाया कि फतहपुर होतेही लौट आना एक वर्षसे अधिक वहां न रहना। १७ (फागुन सुदी ५) शुक्रवारको उसके जानेका मुहूर्त्त था। उस दिन बादशाहने उसको जरीका खासा खिलअत खासा घोड़ा जड़ाऊ जीनका जड़ाऊ परतला, खासा हाथी, तूमान और तोग देकर विदा किया। फिदाईखांको घोड़ा खिलअत और खर्च देकर खानजहांके साथ भेजा और उससे कह दिया कि जो किसी को आदिलखांके पास उसकी प्रार्थनाके अनुसार भेजनेकी आवश्यकता हो तो इसको भेजें। लंकू पण्डितको भी जो अकबरके समय में आदिलखांकी भेंट लेकर आया था घोड़ा सिरोपाव और रुपये देकर खानजहांके साथ कर दिया।

अबदुल्लहखांके पास जो अमीर रानाकी लड़ाईके वास्ते थे उनमें से राजा बरसिंह देव शुजाअतखां और राजा विक्रमाजीत आदिको

चार पांच हजार सवारोंसहित बादशाहने खानजहांको सहायतापर नियत किया। मोतमिदखांको उनके पास भेजा कि साथ जाकर उनको उज्जैनमें खानजहांके पास पहुंचा दे।

दरीखाने अर्थात दरबारमें रहनेवालोंमेंसे सैफखां आदि छः सात हजार सवारोंकी नौकरी भी खानजहांके साथ बोली गई। उनको भी मनसबकी वृद्धि मदद खर्च और सिरोपावसे सन्तुष्ट किया गया।

मुहम्मदी बेग इस लशकरका बख्शी नियत हुआ और १० लाख रुपये उसको खर्चके वास्ते दिये गये।

शिकार।

बादशाह लशकरको बिदा करके शिकार खेलनेके वास्ते नगरसे निकला। रबीकी फसल उस समय पक गई थी। इस लिये बादशाहने उसकी रक्षाके हेतु 'कोरियसावल(१)' को तो बन्दूकचियोंके साथ पहलेही भेज दिया था। अब कई मनुष्योंको हुक्म दिया कि हर कूचमें जितनी फसलकी हानि हो उसका अन्दाजा करके प्रजाको मूल्य देदिया जावे।

२२ (फागुन वदी ८) को जब कि बादशाह एक नीलगायको गोली मारना चाहता था अचानक एक जिलोदार (अर्दली) और दो कहार आगये। नीलगाय भडककर भाग गई। बादशाहने क्रोधमें आकर हुक्म दिया कि जिलोदारको इसी जगह मार डालें और कहारोंके पांव कटवाकर उनको गधे पर चढाके लशकरके आसपास फिरावें जिससे फिर कोई ऐसा साहस न करे।

पांचवां नौरोज।

१४ जिलहज्ज (फागुन वदी ११) रविवारको दो पहर तीन घड़ी दिन चढे सूर्य्यदेवताका रथ मेख राशि पर आया। बादशाह कोल वाकसल परगने दाडोमें पिताकी प्रथाके अनुसार सिंहासनपर बैठा। दूसरे दिन नौरोज था और पांचवें सनके फरवरदीन महीनेकी पहली तारीख थी। बादशाहने सवेरेही आमदरबार करके सब अमीरों और कर्म्मचारियोंका सलाम लिया। नाचने गानेवालों

(१) बादशाही हथियार रखनेवाला चोबदार।

भेंट भी हुई। खानआजमने चार हजार रुपयेका एक मोती नजर किया। महावतखांने भेटमें फरंगियोंका बनाया हुआ एक सन्दूक दिया जिसके आसपास बिल्लौरके तख्ते लगे हुए थे। उनमेंसे भीतर की वस्तु दिखाई देती थी।

फतहउल्लह शरबतचीका बेटा नसरुल्लह भेटका भाण्डारी नियत हुआ।

सारंगदेव जो दक्षिणके लशकरमें आज्ञापत्र पहुँचानेके लिये नियत हुआ था बादशाहने उसके हाथ परवेज और हरेक अमीर के वास्ते कुछ कुछ निजकी चीजें भेजीं।

दूसरे दिन बादशाहने सवारी करके दो सिंह और सिंहनीका शिकार किया। अहदियोंको जो बहादुरी करके सिंहसे जा लिपटे थे इनाम दिया और उनके वेतन बढ़ाये।

२६ (चैत बदी १३) को बादशाह रूपवास(१) में आकर कई दिन तक वहां हरनोंका शिकार खेलता रहा।

---

(१) अब यह रूपवास भरतपुर राज्यमें है।

छठा वर्ष।

सन १०१८।

चैत्र सुदी ३ संवत् १६६७ से चैत्र सुदी २ संवत् १६६८ तक।

---

१ मुहर्रम (चैत्र सुदी ३) शनिवारको रूपखवासने जिसका बसाया हुआ रूपवास था भेटकी सामग्री सजाकर बादशाहको दिखाई। बादशाहने उसमेंसे कुछ अपनी रुचिके अनुसार लेकर शेष उसीको देदी। सोमवारके दिन बादशाह मंडाकरके बागमें आगया जो आगरेके पास है।

बादशाहका आगरेमें आना।

मंगलवारको एक पहर दो घडी दिन चढे शहरमें प्रवेश होने का मुहूर्त था। बादशाह बस्तीके प्रारम्भ होने तक घोडे पर गया आगे इस अभिप्रायसे हाथी पर बैठकर चला कि जिसमें पास और दूरकी सब प्रजा देख सके। मार्गमें रुपये लुटाता चला। दोपहर बाद ज्योतिषियोंके नियत किये हुए समय पर सानन्द राजभवनमें सुशोभित हुआ जो नौरोजके निर्दिष्ट नियमोंके अनुसार अति सुन्दर और सुहावनी विधिसे सजाया गया था। बडे बडे मंड- श्रोले दल बादल डेरे और तम्बू ताने गये थे। बादशाहने सब सजावट देखकर ख्वाजेजहांकी भेटमेंसे जवाहिर और दूसरे पदार्थ स्वीकार किये शेष उसीको बख्श दिये।

शिकारकी संख्या।

बादशाहने मृगयाके कर्मचारियोंको हुक्म दिया था कि जानेके दिनसे लौटनेकी तिथि तक जितने पशु शिकार हुए हों उनकी संख्या बतावें। उन्होंने बताया कि पांच महीने छः दिनमें गिरगंमा आनन्द पशु पक्षी और हिंसक जन्तु मारे गये हैं—

सिंह ७

नीलगाय ८२

काले हरन	५१
काली हरनी	५१
हरन, पहाड़ी बकरे और रोझ	८२
मुर्गाबियां	१०२३
कुलंग मोर, मुर्गाब और सब पक्षेरू	१२९
	जोड़ १३६२।

नौरोजका उपहार।

७ (चैत सुदी ९) शुक्रवारको मुकर्रबखां खम्भात और सूरतके बन्दरोंसे आया। जवाहिर, जड़ाऊ गहने, सोने चांदीके बासन फरंगियोंके बनाये हुए, हबशी लौंडी, गुलाम, अरबी घोड़े और दूसरे उत्तमोत्तम पदार्थ लाया। वह अढ़ाई महीने तक बादशाहके दृष्टिगोचर होते रहे।

ऐसी ऐसी भेंटें १९ दिन मेख संक्रान्ति तक अमीरोंकी ओरसे अर्पण होती रहीं। बादशाहने भी कई अमीरोंको झंडे, कईको हाथी घोड़े और खिलअत दिये।

ख्वाजा हुसैनको जो ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्तीके पोतोंमेंसे था एक हजार रुपये आधे वर्षको बन्धानके मिले।

खानखानांने बादशाहके लिये मुल्ला मीरअली(१) की लिखी हुई यूसुफ जलेखा जिसके पुट्ठों और चित्रोंमें सोनेका काम अति सूक्ष्म और मनोहर रीतिसे किया था अपने वकील मासूमके हाथ भेजी वह एक हजार मोहरोंकी थी।

१३ (चैत सुदी १५) गुरुवारको १९वीं तिथि फरवरदीन महीनेकी थी और मेख संक्रान्तिका दिन था बादशाहने सब प्रकारके मादक पदार्थ मंगाए और आज्ञा की कि प्रत्येक मनुष्य अपनी रुचिके अनुसार सेवन करे। बहुतोंने तो मदिरा पी, कइयोंने माजूनें लीं और कइयोंने अफीम खाई जिससे सभा खूब प्रफुल्लित हुई।

(१) यह एक फारसी अक्षर बहुत अच्छा लिखता था।

जहांगीरकुलीखांने गुजरातसे चान्दीका एक सिंहासन भेजा जिसमें पच्चीकारीका काम नये रंग ढंगसे किया गया था।

महासिंहको झण्डा मिला।

अपराधियोंको दण्ड।

अफजलखांने बिहारसे कई दुष्टोंको पकड़ कर भेजा जिन्होंने निषेध हो जाने पर भी ख्वाजासरा बनाने और बेचनेका अपराध किया था। बादशाहने उनको जन्म भरके लिये कैद कर दिया।

विचित्र घटना।

अगली रातको एक विचित्र घटना हुई। दिल्लीके कुछ गवैये हुजूरमें गारहे थे और सेंटी शाहको अमीर खुसरोकी एक बैत पर जोश आरहा था जिसका यह आशय था—

हरेक कौमका एक पन्थ एक धर्म्म और एक धाम है।

मैंने तो एक टेढ़ी टोपीवालेको अपना इष्टदेव बनाया है।

बादशाह इसकी कथा पूछ रहे थे कि मुल्ला अलीअहमद मोहर खोदनेवाला जिसके बापसे बादशाह बाल्यावस्थामें पढ़ा करता था और जोअपने काममें उस्ताद था आगे बढ़कर अर्ज करने लगा कि एक दिन जमनाके तट पर शेख निजामुद्दीन औलिया बांकी टोपी झुकाये किसी छतसे हिन्दुओंकी पूजा देख रहे थे। इतनेमें उनका शिष्य अमीर खुसरो आया शेखने फरमाया कि तूने इन लोगोंको देखा साथही फारसीमें यह कहा—

हरेक जातिका एक पन्थ एक धर्म और एक धाम है।

खुसरोने अति भक्तिसे अपने गुरुकी ओर देखकर फारसीमें यह दूसरा चरण पढा—

मैंने तो एक टेढी टोपीवालेको अपना इष्टदेव बनाया है।

मुल्लाअली जब यह कथा कहता हुआ टेढ़ी टोपीवालेके शब्द तक पहुंचा तो उसका हाल बदल गया वह अचेत होकर गिर पड़ा। बादशाह घबराकर उसके पास गया। वैद्य हकीम जो सभामें थे मृगीका भ्रम करके नाड़ी देखने और दवा देने लगे। परन्तु उसका काम तो गिरतेही पूरा होगया था उसको उठाकर

पर ले गये। बादशाहने उसके बेटोंके पास रुपये भेजे। वह लिखता है कि ऐसा मरना मैंने आजतक नहीं देखा था।

उड़ीसा।

२१ (बैशाख बदी ८) शुक्रवारको किशवरखां दो हजारी जात और दो हजार सवारका मनसब, इराकी घोडा और जगजीत नाम खासा हाथी पाकर उड़ीसा देशकी फौजदारी पर नियत हुआ।

राजा मानसिंहको हाथी।

राजा मानसिंहके वास्ते बादशाहने खासा हाथी आलमगुमान नाम हबीबुल्लहके हाथ भेजा।

केशवमारूको खासा घोडा।

केशवमारूके वास्ते खासा घोड़ा बंगालमें भेजा गया।

सन्यासीके चेलेको दण्ड।

कासरद्दीनखांका बेटा कौकब नकीबखांके लड़के अबदुललतीफ और शरीफ जो कौकबके चचेरे भाई थे तीनों एक सन्यासीके चेले होकर उसके धर्म पर चलने लगे थे। बादशाहने उनको बुलाकर कुछ पूछ ताछ की। कौकब और शरीफको तो पिटवाकर कैद कर दिया और अबदुललतीफको अपने सामने सौ कोड़े लगवाये।

अमीरों पर कृपा।

पास और दूरके अमीरोंको सिरोपाव दिये और भेजे गये राजा कल्याणके वास्ते इराकी घोडा भेजा गया।

आग।

१ सफर (बैशाख सुदी ३) चन्द्रवारको रातको खिदमतगारोंकी भूलसे ख्वाजा अबुलहसनके घरमें आग लगी जिसमें बहुतसा माल असबाब जल गया। बादशाहने उसकी सहायतके लिये चालीस हजार रुपये दिये।

न्याय।

एक विधवा स्त्रीने मुकर्रबखां पर यह पुकार की कि खंभात बन्दरमें उसने मेरी लड़की जबरदस्ती छीन ली। जब मैंने मांगी

तो वाज़ा कि मर गई। बादशाहने बहुतसी छानबीनके पीछे मुकर्रबखांके एक नौकरको जो इस अन्यायका कारण हुआ था दण्ड दिया और आधा मनसब मुकर्रबखांका घटाकर उस बुढ़ियाकी जीविका करदी और रास्तेका खर्च भी दिया।

दान।

७ (वैशाख सुदी १०) रविवारको दो पापग्रहों(१) का योग हुआ। बादशाहने चांदी सोने और दूसरी धातुओं वस्तुओं और पशुओंका दान करके कई देशोंके कंगालोंको बांटनेके वास्ते भेजा।

कन्धार।

२ लाख रुपये लाहोरके खजानेसे कन्धारके किलेकी मामरीके वास्ते गाजीबेगतरखांके पास भेजे गये।

बिहारमें उपद्रव।

१८ फरवरदीन(२) (जेठ बदी ?) को पटनेमें एक विचित्र घटना हुई वहांका हाकिम अफजलखां अपनी नई जागीर गोरखपुरमें जो पटनेसे ६० कोस है गया था। उसका विचार था कि अब कोई शत्रु नहीं है तो अधिक प्रबन्ध करनेकी आवश्यकता नहीं है किला और शहर शेख बनारसी तथा दीवान गयासजैनखानीको सौंप गया था उस समय उरछाके लोगोंमेंसे कुतुब नाम एक प्रसिद्ध पुरुष फकीर बना हुआ उज्जैनियों(३)के देशमें जो पटनेके पास

---

(१) चण्डू पञ्चाङ्गमें वैशाख सुदी १० को मंगल और शनि [illegible] राशि पर थे शनि वैशाख बदी ७ को कुम्भ राशि पर [illegible] शामिल हुआ था। बादशाही पञ्चांगमें वैशाख सुदी १० [illegible] होगा।

(२) तुजुकजहांगीरीमें १८ फरवरदीन ४ [illegible] लिखा है [illegible] ४ सफर तो ८ फरवरदीनको थी और १८ फरवरदीनको १४ [illegible] पर आगे रविवारका दिन भी लिखा है सो रविवार १८ फरवरदीनको था इसलिये १८ और १४ ही सही है।

(३) उज्जैनियोंका देश वही गोरखपुर [illegible] जहां उज्जैनिया जातिके पंवार राजपूत रहते हैं।

है आया और वहांवालोंसे जो पक्के दंगई हैं मेलमिलाप करके बोला कि मैं खुसरो हूं बन्दीखानेसे भागकर आया हूं। जो तुम मुझे सहायता दोगे तो कार्य्यसिद्ध होनेके पीछे तुम्ही मेरे प्रधान कार्य्यकर्त्ता रहोगे।

उसने अपने खुसरो होनेका निश्चय करानेके लिये उन्हें अपनी आंखके पास घावका एक चिन्ह दिखाया। कहा कि कारागारमें मेरी आंख पर एक कटोरी बांधी गई थी उसका यह चिन्ह है। इस छलसे बहुतसे पैदल और सवार उसके पास जुड़ गये और अफजलखांके पटनेमें न होनेको अपना अहोभाग्य समझकर चढ़ दौडे और गत रविवारको २।३ घडी दिन चढे पटनेमें जा पहुंचे। किसी बातका विचार न करके सीधे किलेको गये। शेख बनारसी घबरा कर द्वार पर आया। परन्तु किवाड बन्द करनेका अवकाश न पाकर दीवान गयास सहित खिडकीसे बाहर निकला और नावमें बैठकर अफजलखांको समाचार देनेको गया।

इन दुराचारियोंने किलेमें घुसकर अफजलखांका धनमाल बादशाही खजाने सहित लूट लिया। शहरके भीतरी और बाहरी बदमाश सब उससे आमिले।

अफजलखांको गोरखपुरमें यह खबर लगतेही बनारसी और गयास भी जलमार्गसे वहां पहुंचे। शहरसे लिखा आया कि यह खुसरो नहीं है। तब अफजलखां रामभरोसे शत्रुसे लड़नेको चल कर पांचवें दिन पटनेके पास पहुंचा। यह सुनकर कुतुबने भी अपने एक विश्वासपात्रको किलेमें छोडा और चार कोस सामने आकर पुनपुन नदीके ऊपर अफजलखांसे लडाई की और शीघ्रही भागकर किलेमें घुस गया। पर अफजलखांके पीछे लगे चले आने से किवाड मूंदनेका औसान न पाकर उसीकी हवेलीमें जा बैठा और दोपहर तक लड़ता रहा। तीस आदमी तीरोंसे मारे। फिर जब उसके साथी मारे गये तो शरण लेकर अफजलखांके पास चला आया। अफजलखांने उपद्रव मिटानेके लिये उसको उसी दिन मार डाला और उसके साथियोंको पकड़ लिया।

बादशाहने जब यह समाचार सुने तो बनारसी गयास और दूसरे मनसबदारोंको जिन्होंने किलेकी रखवाली नहीं की थी बुलवाया उनके सिर और मूछें मुडवाकर चोटनी उढवाई और गधे पर बैठाकर आगरेके बाहर और बाजारोंमें फिरवाया जिससे दूसरे लोगोंको डर हो।

दक्षिण।

१६ सफर (जेठ बदी ३) को बादशाहने परवेज और शुभचिन्तक अमीरोंके लिखनेसे मीर जमालुद्दीन हुसैन अनजूको आदिल खां और दूसरे दक्षिणी जमींदारोंके मनका सन्देह दूर करने और उनको बादशाही सेवामें लगानेके लिये दस हजार रुपये देकर दक्षिणको भेजा।

बांधों पर सेना।

बांधोंके जमींदार विक्रमाजीतको दण्ड देनेके लिये जिसने अधीनता छोड दी थी बादशाहने राजा मानसिंहके पोते महासिंह को भेजा और यह हुक्म दिया कि उधरके दुराचारियोंको निध्वन्स करके राजाकी जागीर पर अपना दखल करले।

राणाकी मुहिम।

२८ (जेठ बदी ३०) को अबदुल्लहखां फीरोजजंगकी अरजी बाईस साहसी सरदारोंकी सुफारिशमें पहुंची। उन्होंने राणाकी लड़ाईमें अच्छे काम किये थे। बादशाहने उनमेंसे गजनीखां जालोरीकी सेवा सबसे अधिक देखकर उनके मनसब पर जो डेढ़ हजारी जात और तीनसौ सवारोंका था पांच सौ जात और चारसौ सवार और बढ़ा दिये। ऐसेही औरोंके भी मनसब बढ़ाये।

काले पत्थरका सिंहासन।

४ सफर चन्द्रवार(१) (आश्विन सुदी १०) [illegible]

(१) तुजुक जहांगीरी (पृष्ठ ८५) में ४ [illegible] [illegible] अशुद्ध है चन्द्रवारको चाहिये क्योंकि [illegible] रातको ठीक लिखी है दिनको गुरु[illegible] हिसाबसे होजाता है।

याटमे काले पत्थरका सिंहासन लाया उसे बादशाहने मंगवाया था। यह दो गिरह कम ४ गज लम्बा अढ़ाई गज और तीन तसू चौडा और ३ तसू मोटा बहुत काला और चमकदार था। बादशाहने उसकी कोरों पर कुछ कविता खुदवाकर पाये भी वैसेही पत्थरके लगवा दिये। बादशाह कभी कभी उस पर बैठा करता था।

दक्षिण।

१२ महर (कार्तिक बदी ३) को खानजहांकी अरजी पहुंची कि खानखानां, आज्ञानुसार महाबतखांके साथ दरबारको रवाने होगया और मीर जमालुद्दीनको आदिलखांके वकीलों सहित बीजापुरको भिजवा दिया है।

सूबेदारोंकी बदली।

२१ महर (कार्तिक बदी १३) मुरतिजाखां पंजाबकी सूबेदारी पर और ताजखां मुलतानसे काबुलकी सूबेदारी पर भेजा गया मुरतिजाखांको खासेका दुशाला मिला और ताजखांके मनसबमें पांच सौ सवार और बढ़कर तीन हजारी और दोहजार सवारोंका मनसब होगया।

राणा सगर।

अब्दुल्लहखां फीरोजजङ्गके प्रार्थना करनेसे राणा सगरके बेटेका भी मनसब बढ गया।

खानखानां।

१२ आबान (अगहन बदी ३।४)(१) को खानखानांने जिसे लेने महाबतखां गया था बुरहानपुरसे आकर मुजरा किया। बादशाह लिखता है—"इसके विषयमें बहुधा शुभचिन्तकोंने यथार्थ और अयथार्थ बातें अपनी समझसे कही थीं और मेरा दिल उससे फिर गया था। इसलिये जो कृपा मैं सदासे उसपर करता था या अपने बापको करते देखता था वह इस समय नहीं की। ऐसा करनेमें मैं सच्चा था क्योंकि वह इससे पहिले दक्षिण देशके साफ करनेको

(१ इस दिन तिथि छेद था अर्थात् दोनों तिथियां एक दिन थीं।

अवधि नियत करके प्रतिज्ञापत्र दे चुका था और सुलतान परवेजकी सेवामें दूसरे अमीरों सहित उस बड़े काम पर गया था। परन्तु बुरहानपुरमें पहुंचे पीछे समयानुसार रसद और दूसरी आवश्यक वस्तुओंका प्रबन्ध न किया। जब सुलतान परवेज बादशाही फौजें लेकर गया और सरदारोंकी फूटसे काम बिगड़ा तो अनाज का मिलना ऐसा कठिन हुआ कि एक मन बहुतसे रुपयोंमें नहीं मिलता था। घोड़े ऊंट और दूसरे पशु मर गये। सुलतान परवेजने देशकाल देखकर शत्रुओंसे सन्धि की और लशकरको बुरहानपुरमें लौटा लाया। इस दुर्घटनाका कारण सब शुभचिन्तकोंने खानखानांका विरोध और कुप्रबन्ध जानकर दरबारमें अर्जियां लिखीं। उन पर विश्वास तो न हुआ परन्तु दिलमें खटका पड़ गया। अन्तमें खानजहांकी अर्जी पहुंची कि यह सब खराबी खानखानांके अन्तरद्रोहसे हुई है। अब इस काम पर या तो उसी को स्वतन्त्रतासे रखना चाहिये या उसको दरगाहमें बुलाकर मुझ कृपापात्रको यह सेवा सौंपनी चाहिये और तीस हजार सवारोंकी सहायता भी देनी चाहिये। दो सालमें वह सब बादशाही मुल्क जो गनीमने लेलिया है छुड़ाकर कन्धार(१)का किला सीमान्तके दूसरे किलों सहित जीत लूंगा। बीजापुरका देश भी बादशाही राज्यमें मिला दूंगा। यह सब काम ऊपर कही अवधिमें न कर डालूं तो दरबारमें मुंह न दिखाऊंगा।

"जब सरदारोंमें और खानखानांमें यहांतक फिर गई तो मैंने उसका वहां रहना उचित न देखकर खानजहांको सेनापति किया और खानखानांको दरगाहमें बुला लिया। अभी तो यह कार्य्य क्या नहीं होनेका है आगे जैसा कुछ प्रगट होगा देखा जावेगा होगा।"

खानखानांके बेटे दाराबखांको हजारी जात और पांच सौ सवारकी नौकरी और गाजीपुरकी सरकार जागीरमें दी गई।

(१) मुसलमानी हिसाबसे गुरुकी रात।

१० आबान (अगहन बदी ९) मङ्गलवारको खुर्रमका व्याह मिरजा मुजफ्फरहुसैन सफवीकी बेटीसे हुआ। बादशाह खुर्रमके घर गया। रातको वहीं रहा। बहुतसे गरीबोंको सिरोपाव मिले और कुछ कैदी भी गवालियरके किलेसे छोड़े गये। कुछ चांदी सोना और अन्न आगरेके फकीरोंको बांटा गया।

दक्षिण।

इसी दिन खानजहांकी अर्जी पहुंची कि खानखानांके बेटे एरज को शाहजादेकी आज्ञा लेकर दरबारमें भेजा है। अबुलफतह बीजापुरीके भेजनेका भी हुक्म था परन्तु वह कामका आदमी है और अभी उसके भेजनेसे दक्षिणी सरदारोंकी आशा भङ्ग होती है जिनको वचनपत्र दिये गये हैं, इसलिये रख लिया है। राय कल्ला के बेटे केशवदास मारूके वास्ते हुक्म हुआ कि उसके भेजनेमें ढील भी हो तोभी जैसे बने वैसे भेजदो। शाहजादेने यह बात जानते ही उसे छुट्टी देदी और कहा कि मेरी तरफसे अर्जीमें लिखना कि अब मैं अपना जीना पूज्यपिताकी सेवाहीके लिये चाहता हूं तो केशव-दासका होना न होना ही क्या जो उसे भेजनेमें ढील करूं? पर मेरे विश्वासपात्र नौकरोंके किसी न किसी प्रसङ्गमें बुला लेनेसे दूसरे आदमी निराश और उदास होते हैं। इससे सीमाप्रान्तमें आपकी अप्रसन्नताका भ्रम फैलता है। आगे आपकी इच्छा।

अहमदनगरका छूटना।

जिस दिनसे अहमदनगर शाहजादे दानियालने लिया था अब तक ख्वाजाबेगमिरजा सफवीके संरक्षणमें था। यह मिरजा ईरानके शाहतुहमास्प सफवीके भाई बन्दोंमेंसे था। अब दक्षिणियोंने आकर उस किलेको घेरा तो मिरजाने उसके बचानेमें कोताही न की। खानखाना और दूसरे अमीर जो बुरहानपुरमें इकट्ठे हुए थे परवेज के साथ दक्षिणियोंसे लड़नेको गये परन्तु आपसके विरोधसे उस भारी लश्करको जो बड़े बड़े काम करनेको समर्थ था धान चारेका प्रबन्ध किये बिना औघट घाटी और विकट पहाड़ोंमेंसे लेगये। इससे थोड़े ही दिनोंमें यह दशा होगई कि लोग रोटीके वास्ते जान

देने लगे। तब लाचार होकर रास्तेमेंसेही लौट आये और किले वाले जो इनके आनेका रास्ता देख रहे थे यह समाचार सुनतेही घबराकर निकलने लगे। ख्वाजाबेगमिरजाने उनको बहुत रोका। जब नहीं रुके तो निदान सन्धि करके अपनी सेना सहित निकला और बुरहानपुरमें शाहजादेके पास आगया। बादशाहको जब इस हालकी अर्जी पहुंची तो उन्होंने ख्वाजाबेगका कुछ कसूर न देखकर उसका मनसब जो पांच हजारी जात और सवारका था बना रक्खा और उसके वास्ते जागीर देनेका भी हुक्म चढ़ा दिया।

बीजापुर।

८ रमजान (अगहन सुदी ११) को दक्खिनसे कई अमीरोंकी अर्जी पहुंची कि मीर जमालुद्दीन २२ शाबान (अगहन बदी ८) को बीजापुर पहुंचा। आदिलखांने अपने वकीलको ७० कोस अग वानीमें भेजा था तीन कोस तक आप भी आकर मीरको अपने स्थान पर लेगया।

शिकार।

१५ (पौष बदी २) गुरुवारकी रात(१)को एक पहर [illegible] रात गये ज्योतिषियोंके बताये हुए मुहूर्तमें बादशाहने [illegible] शिकारके वास्ते प्रयाण करके दहराबागमें डेरा किया। [illegible] बिगाड न होनेके अभिप्रायसे हुक्म दिया कि आवश्यक सेवकों और निज अनुचरोंके अतिरिक्त और सब लोग नगरमें रहें। नगरकी रक्षा ख्वाजेजहांको सौंपी।

२८ आजर २१ रमजान (पौष बदी ८) को १४ [illegible] कासिमखांके बेटे हाशिमखांने उडीसेसे भेटके लिये भेजे थे, पहुंचे। उनमेंसे एक हाथी बादशाहके बहुत पसन्द आया। [illegible] हाथियोंमें बांधा गया।

सूरज गहन।

२८ रमजान (पौष बदी ३०) को सूरजगहन(१) हुआ।

---

(१) मुसलमानी हिसाबसे गुरुकी रात।

(१) चण्डू पञ्चांगमें यह गहन धन राशि पर १५ [illegible]

बादशाहने उसका भार निवारण करनेके वास्ते अपनेको सोने चांदी में तौला। अठारहसौ तोले सोना और उनचास सौ रुपये चढ़े। यह धन अनेक प्रकारके धान्य और हाथी घोड़े गाय आदि सहित आगरे तथा अन्य नगरोंमें भेजकर गरीबोंको बंटवा दिया।

दक्षिण और खानआजम।

दक्षिणमें परवेजके सेनापति, खानखानांके मुखिया, राजा मानसिंह, खानजहां, आसिफखां, अमीरुलउमरा जैसे बड़े बड़े अमीरों तथा दूसरे सरदारों और मनसबदारोंके सहायक होनेसे भी कुछ काम नहीं निकला था बल्कि यह लोग अहमदनगर जाते हुए आधे रास्तेसे लौट आये थे जिसके विषयमें भरोसेके मनुष्यों और सच्चे खबरनवीसोंने बादशाहको अर्जियां लिखी थीं कि इस लशकरके तितर बितर होनेके और भी कई कारण हैं। परन्तु उनमें मुख्य अमीरोंकी फूट और विशेष करके खानखानांकी अन्तरदुष्टता है। इसपर बादशाहने उस गड़बड़की शान्तिके लिये खानआजमको नई सेनाके साथ भेजना स्थिर करके ११ दे (माघ बदी ३) को यह सेवा उसे सौंपी और दीवानोंसे शीघ्रही उसके जानेका प्रबन्ध कराके एक हजार मनसबदार सवारों दोहजार अहदियों और खानआलम आदि अमीरोंके साथ उसको बिदा किया। कई हाथी और तीस लाख रुपये दिये। भारी सिरोपाव जड़ाऊ तलवार जड़ाऊ जीनका घोड़ा और खासा हाथी देकर पांच लाख रुपये मददखर्चके लिये दिलाये जिनके वास्ते दीवानोंको उसकी जागीरसे भरा लेनेका हुक्म हुआ। उसके साथके अमीरोंको भी घोड़े और सिरोपाव मिले। महाबतखांके मनसबके चार हजारी जात और तीन हजार सवारों पर पांचसौ सवार और बढ़ाकर हुक्म दिया कि खानआजम और इस लशकरको बुरहानपुरमें पहुंचाकर खानआजमकी सरदारीका हुक्म वहांके सब अमीरोंको सुना दे और पहले भेजे हुए लशकर में जो गड़बड़ हुई है उसका निर्णय करके खानखानांको अपने साथ ले आवे।

अनूपरायका सिंहदलन होना।

४ शव्वाल (पौष सुदी ४) रविवारको बादशाह चीतेके शिकार में लगा हुआ था कि एक सिंह उठा और अनूपराय उससे लड़ा। इसका वृत्तान्त बादशाह यों लिखता है—"मैंने यह बात ठहराई है कि रविवार और गुरुवारको कोई जीव नहीं मारा जावे और मैं भी इन दोनो दिनोंमें मांस नहीं खाता हूं।"

"रविवारको तो इस हेतु कि मेरे पिता उस दिनको पवित्र जानकर मांस नहीं खाते थे। पशुहिंसाका भी निषेध था क्योंकि उस दिन रातको उनका जन्म हुआ था। वह फरमाया करते थे कि इस दिन उत्तम बात यही है कि जीव जन्तु कसाइयोंकेसे स्वभाववाले मनुष्योंकी दुष्टतासे बचे रहें।

गुरुवार मेरे राज्याभिषेकका दिन है। इस दिन मैंने भी जीवों के नहीं मारनेका हुक्म देरखा है। दोनों दिन शिकार भी मैं तीर और बन्दूकसे नहीं मारता हूं।

जब चीतेका शिकार होरहा था तो अनूपराय जो निज सेवकों मेंसे है, कई लोगोंको जो शिकारमें साथ रहते हैं मुझसे कुछ दूर छोडकर आता था। एक वृक्ष पर कई चीलें बैठी देख कमान और कई तुक्के लेकर उधर गया तो एक अधखाई गाय पड़ी देखी और साथही एक बडा भयङ्कर सिंह झाडोंमेंसे निकल कर चला। उससमय दो घडीसे अधिक दिन नही था तोभी उसने उस सिंहको घेर कर मेरे पास आदमी भेजा। क्योंकि वह खूब जानता था कि मेरी रुचि सिंहके शिकार में कितनी अधिक है।

मेरे पास यह खबर पहुंची तो मैं तत्काल [illegible] घोडा दौडाता हुआ गया। बाबा खुर्रम, रामदास, एतमादराय, हयात खां तथा एक दो और मेरे साथ हुए। वहां पहुंचतेही मैंने देखा कि सिंह एक वृक्षकी छायामें बैठा है। मैंने चाहा कि घोड़े पर चढ़े ही चढे बन्दूक मारूं परन्तु घोडा एक जगह नहीं ठहरता था इस लिये मैं पैदल होगया और बन्दूक सीधी करके दागी। निश्चै

लगी या नहीं इसका कुछ पता न लगा। क्योंकि मैं ऊंचे पर था और सिंह नीचे। क्षणभर पीछे मैंने घबराहटमें दूसरी बन्दूक चलाई। शायद यह गोली उसके लगी। वह उठा और दौडा। एक मीर शिकारी शाहीनको हाथ पर लिये उसके सामने पडा। वह उसको घायल करके अपनी जगह जा बैठा। मैंने दूसरी बन्टूक तिपाये पर रखकर तोली। अनूपराय तिपायेको पकडे खडा था एक तलवार उसकी कमरमें थी और लाठी हाथमें। बाबा खुर्रम बाईं ओर कुछ फासिलेसे था और रामदास तथा दूसरे नौकर उसके पीछे थे। कमाल किरावल (शिकारी) ने बन्दूक भर कर मेरे हाथमें दी। मैं चलायाही चाहता था कि इतनेमें शेर गरजता हुआ हमारे ऊपर झपटा। मैंने बन्दूक मारी। गोली उसके मुंह और दांतोंमें होकर निकल गई। बन्दूककी कडकसे वह और बिफरा। बहुतसे सेवक जो वहां आ भरे थे डरकर एक दूसरे पर गिर गये। मैं उनके धक्केसे दो एक कदम पीछे जापडा। यह मुझे निश्चय है कि दो तीन आदमी मेरी छाती पर पांव रख कर मेरे ऊपरसे निकल गये। मैं एतमादराय और कमाल किरावल के सहारेसे खडा हुआ इस समय सिंह उन लोगों पर गया जो बाईं तरफ खडे थे। अनूपराय तिपायेको हाथसे छोडकर सिंहके सामने हुआ। सिंह जिस फुरतीसे आरहा था उसी फुरतीसे उसकी ओर लौटा। उस पुरुष सिंहने भी वीरतासे सम्मुख जाकर वही लाठी दोनों हाथोंसे दो वार उसके सिर पर मारी। सिंहने मुंह फाडकर अनूपरायके दोनो हाथ चबाडाले। परन्तु उस लाठी और कई अंगूठियोंसे जो हाथमें थीं बडा सहारा मिला और हाथ बेकार न हुए। अनूपराय सिंहके धक्केसे उसके दोनो हाथोंके बीचमें चित गिर गया। उसका मुंह सिंहकी छातीके नीचे था। बाबा खुर्रम और रामदास अनूपरायकी सहायताको बढ़े। खुर्रम ने एक तलवार सिंहकी कमर पर मारी रामदासने दो मारी। जिनमेंसे एक उसके कन्धे पर पूरी बैठी हयातखांके हाथमें

लाठी थी वही उसने कई वार उसके मस्तक पर दी। अनूपरायने वल्ल वारके अपने हाथ सिंहके मुंहसे छुड़ा लिये और दो तीन घूंसे जबड़े पर मारे और करवट लेकर घुटनेके बल उठ खड़ा हुआ। सिंहके दांत उसके हाथोंमें पार होगये थे इसलिये उसने मुंहसे हाथ खेंचे तो उस जगहसे फट गये और सिंहके नाखून भी उसके कन्धे से निकल गये थे।

अनूपरायके खड़े होतेही शेर भी खड़ा होगया और उसकी छाती पर नाखून और पंजे मारने लगा। जिनके घावोंने कई दिन तक उसको व्याकुल रखा। फिर वह दोनो दो मल्लोंके समान एक दूसरेसे लिपटकर उस ऊंची नीची धरतीमें लुढ़क गये। मैं जहां खड़ा था वह भूमि समान थी। अनूपराय कहता था कि पर मेश्वरने मुझे इतना औसान दिया कि सिंहको मैं उधर लेगया और मुझे कुछ खबर नहीं है।

अब सिंह उसको छोड़कर चल देता है। अनूपराय उसी बेहोशी में तलवार सूंतकर उसके पीछे जाता है और उसके सिर पर मारता है। सिंह जो पीछेको मुंह फेरता है तो दूसरा हाथ फिर उस पर झाड़ता है जिससे दोनो आंखें उसकी कट जाती हैं और भंवोंका मांस कटकर आंखों पर आजाता है। उसी अवसर पर सालह नाम चरागची (नाई) घबराया हुआ आता है क्योंकि दीपक का समय होगया था सिंह एक ही तमांचेमें उसको गिरा देता है। गिरना और मरना एक था। दूसरे आदमियोंने पहुंचकर सिंहको मार डाला।

अनूपरायसे इस प्रकारकी सेवा बन आई और उसका ऐसा जान लड़ाना देखा गया। घाव भर जानेके पीछे अच्छा होकर जब वह मुजरा करनेको आया तो मैंने उसको अनीराय सिंहदलनका खिताब दिया और कुछ उसका मनसब भी बढ़ाया। अनीराय हिन्दी भाषामें फौजके सरदारको कहते हैं और सिंहदलनका अर्थ शेर मारनेवाला है।

शिकार।

२३ जीकाद (फागुन वदी ८) रविवार(१)को बादशाहने ७६६ मछलियां पकड़कर अपने सम्मुख अमीरों और दूसरे नौकरोंको बांटीं।

एक ऊंट जिस पर ५ नीलगायें ४२ मनकी लादी गई थीं उठ कर खड़ा होगया था। यह ऊंट शिकारके घरमें उत्पन्न हुए ऊंटों मेंसे था।

मुल्ला नजीरी जो फारसी भाषाका अच्छा कवि था गुजरातमें व्यापार करता था। बादशाहने प्रशंसा सुन कर उसे बुलाया। उसने आकर एक कविता सुनाई। बादशाहने एक हजार रुपये घोड़ा और सिरोपाव उसको दिया।

मुरतिजाखांने हकीम हमीद गुजरातीकी बहुत प्रशंसा की थी बादशाहने उसको बुलाया और हकीमोंसे अधिक उसमें सज्जनता देखी। परन्तु यह भी सुना कि गुजरातमें उसके सिवा कोई हकीम नहीं है और वह भी जाना चाहता था इसलिये एक हजार रुपये कई शाल दुशाले और एक गांव देकर बिदा किया।

बकरईद।

१० जिलहज्ज (फागुन सुदी १२) गुरुवारको पशुवध बन्द हो चुका था इसवास्ते बादशाहने शुक्रवारको ईदका बलिदान करनेकी आज्ञा दी और तीन बकरियां अपने हाथसे वध कीं। फिर शिकार को गया एक नीलगायने बहुत थकाया जो कईबार गोली खाकर

(१) तुजुक जहांगीरीमें तारीख २ जीकाद रविवारको लिखी है जब पंचांगसे नहीं मिलती जिसके हिसाबसे तारीख २ मंगलको होती है यह तारीख २ मूलमें २२ होगी। लेखककी भूलसे २ लिखी रह गई। २३ को चण्डू पंचांगसे तो चन्द्रवार होता है पर बादशाही पंचांगमें रविवार होगा और शव्वालका महीना २९ दिनका माना गया होगा जो चण्डू पंचांगके हिसाबसे ३० दिनका होता है।

चली गई थी और अब भी तीन गोलियां खाचुकी थी। बादशाह उसके पीछे पीछे फिरता रहा। निदान यह संकल्प किया कि जो यह नीलगाय गिरेगी तो इसका मांस ख्वाजे मुईनुद्दीनके अर्पण कर के फकीरोंको बांट दूंगा एक मोहर एक रुपया अपने बापके भी भेट करूंगा।

ऐसा कहतेही वह नीलगाय थककर गिरी और बादशाहने इस का मांस तथा मोहर और रुपयेका शीरा पकवाकर अपने सामने भूखों और फकीरोंको खिला दिया।

दो तीन दिन पीछे फिर एक नीलगायके पीछे बादशाह कंधे पर बन्दूक रखे हुए शाम तक फिरता रहा परन्तु वह एक जगह नहीं ठहरती थी दिन छिपने पर उसके मारने से निराश होकर फिर बादशाहने कहा कि ख्वाजा यह नीली भी तुम्हारे नजर है यह कहना था कि वह बैठ गई और बादशाहने उसको बन्दूकसे मार कर उसका मांस भी उसी भांति फकीरों को खिला दिया।

चैत बदी ७ शनिवारको ३३० मछलियोंका शिकार हुआ।

१८ शनि (चैत बदी ३०) को रातको बादशाह रूपबासमें आगया। जो उसकी निज शिकारगाह थी और जिसमें आसपास भी किसीको शिकार मारनेकी आज्ञा न थी। इससे वहां इतने हरन भर गये थे वह बस्ती में चले आते थे और सब प्रकारकी हानि से बचे रहते थे। बादशाहने दो तीन दिन वहां शिकार खेलकर बहुतसे हरन बन्दूकसे मारे और चीतोंसे मरवाये।

सातवां वर्ष ।

सन् १०२० ।

चैत्र सुदी ३ संवत् १६६८ से फागुण सुदी २ संवत् १६६८ तक ।

राजधानीमें प्रवेशका मुहूर्त्त समीप आजानेसे बादशाह २ मुहर्रम (चैत्र सुदी ३) गुरुवारको अबदुर्रज्जाक मामूरीके बागमें आया । ख्वाजाजहां वगैरह आगरेसे वहां आगये । खानखानांके बेटे एरजने भी जो दक्षिणसे बुलाया गया था वहीं उपस्थित होकर मुजरा किया ।

शुक्रको भी बादशाह उसी बागमें रहा । अबदुर्रज्जाकने अपनी भेंट दिखाई ।

शिकारकी संख्या ।

तीन महीने बीस दिनमें १४१४ पशु पक्षी शिकार हुए थे—

सिंह	१२	खरगोश	६
भेंडा	१	नीलगाय	१०८
चिकारे	४४	मछलियां	१०८६
कोतापाचा	१	उकाब	१
हरनके बच्चे	२	तगदरी	१
काले हरन	६८	मोर	५
हरनी	३१	करवानक	५
लोमड़ी	४	तीतर	५
कोरानखर	८	सुरखाब	१
पाढल	१	सारस	५
रोझ	५	ढींक	१
जरख	३	कुल	१४१४

आगरेमें प्रवेश ।

४ मुहर्रम २८ असफंदार (चैत्र सुदी ५ संवत् १६६८) शनिवार

को बादशाह हाथीपर सवार हो अबदुर्रज्जाकके बागसे किलेके दौलतखाने तक जिसका फासिला एक कोस और २० जरीबका था पन्द्रहसौ रुपये लुटाता गया और ज्योतिषियोंके दिये हुए मुहूर्तमें नये राजभवनमें पहुंचा जिसके बनानेका हुक्म शिकारको जाते हुए देगया था। उस राजभवनको ख्वाजिजहांने इतनी थोड़ी अवधिमें, अति परिश्रमसे बनवाकर और रंग भरवाकर तैयार कर छोड़ा था और अपना भेट भी उसामें सजा रखी थी जिसमेंसे बादशाहने कुछ लेकर शेष उसको बख्श दी और भवनको पसन्द करके उसकी कार्य्यवाईकी प्रशंसा की।

बाजार भी नौरोजके प्रसंगसे सजाये गये थे।

छठा नौरोज।

६ मुहर्रम (चैत सुदी ७) चन्द्रवारको दो घडी ४० पल दिन चढे सूरज भगवान अपने उच्चभवन मेख राशिमें आये। बादशाहके राज्याभिषेकका छठा नौरोज हुआ जिसकी मजलिसें जुड़ी। बादशाह तख्त पर बैठा। अमीरों और सब चाकरोंने मुजरा किया बधाई दी। मीरान सदरजहां, अबदुल्लहखां, फीरोजजंग और जहांगीरकुलीखांकी भेट स्वीकार हुई।

८ (चैत सुदी १०) बुधको राजा कल्याणकी भेट जो बंगालसे आई थी दृष्टिगोचर हुई।

९ (चैत सुदी ११) गुरुवारको शुजाअतखां और कई मनसबदार जो दक्षिणसे बुलाये गये थे हाजिर आये।

मुरतिजाखांकी भेटमें बहुत तरहके बहुतसे पदार्थ थे। बादशाहने सबको देखकर कुछ जवाहिर उत्तम कपड़े और हाथी घोड़े लेलिये बाकी उसीको देदिये।

शुजाअतखां बङ्गालमें इसलामखांके पास [illegible] काम करनेको भेजा गया। ख्वाजाजहां आदि कई [illegible] बड़े कईको सिरोपाव मिले। खुसरो [illegible] पाच हज़ार सवारोंके मनसब पर दो हजारी [illegible]

ईरानका एलची।

१८(१) फरवरदीन (वैशाख वदी १०) को संक्रांति(२)का उत्सव हुआ। ईरानके शाह अब्बासके एलची यादगारअलीने हाजिर होकर मुजरा किया। शाहका पत्र दिया सौगातें जो लाया था दिखाईं। उनमें अच्छे अच्छे घोडे और कपडोंके थान थे। बादशाहने उसको भागे खिलअत और तीस हजार रुपये दिये। पत्रमें अकबर बादशाहके मरनेका शोक और जहांगीरके गद्दी पर बैठने का हर्ष था।

खानखानांके बेटे एरजको शाहनवाजखांका खिताब मिला।

मोहरों और रुपयोंका तौल।

बादशाहने तखत पर बैठतेही बाट और गज बढ़ा दिये थे। रुपये और मोहरका तौल तीन रत्ती अधिक कर दिया था। परन्तु अब यह बात जानकर कि प्रजाका हित मोहर और रुपयेका पुराना तौल रहनेहीमें है अपने तमाम देशोंमें हुक्म भेज दिया कि ११ उर्दीबहिश्त (जेठ बदी ४) से टकसालोंमें रुपये और मोहरें जैसे पहिले बनती थीं वैसीही बना करें।

२ सफर १०२० (वैशाख सुदी ४) शनिवारको अहदाद यह सुनकर कि काबुलमें कोई बडा सरदार नहीं है खानदौरां बाहर गया हुआ है केवल मुअज्जुलमुल्क थोडेसे आदमियोंसे है, बहुतसे सवार और पैदल लेकर काबुलपर चढ आया। उसके पठान अलग अलग टोलियां बांधकर शहरके बाजारों और कूचोंमें घुस गये। परन्तु मुअज्जुलमुल्क और पुरवासी काबुलियों और कजलबाशोंने लडकर उनको भगा दिया और उनके मुखियाको जिसका नाम बारी था मार डाला। अहदाद यह दशा देखकर भाग गया उसके ८० आदमी मारे और २५० घोडे पकडे गये।

---

(१) तुजुकमें इस दिन २४ मुहर्रम लिखी है, २२ चाहिये क्योंकि १ फरवरदीन ६ मुहर्रमको थी।

(२) चण्डूपञ्चाङ्गमें भी मेष संक्रान्ति इसी दिन लिखी है।

बादशाहने यह समाचार सुनकर मुअज्जुलमुल्क और नाटअली के मनसब बढ़ाये और अहदादके दमन करनेमें खानदौरां और काबुलियोंकी सुस्ती देखकर बेटों सहित खानखानाके भेजनेका विचार किया जो दरबारमें बेकार बैठा था। इतनेमें ही कुलीचखां जो पञ्जाबसे बुलाया गया था आगया और खानखानाके नियत होनेसे दिलमें दुखी हुआ। निदान जब उसने इस कामका दृढ़ वचन दिया तो बादशाहने पञ्जाबका सूबा तो मुर्तिजाखांको दिया और कुलीचखांको छः हजारी जात और पांच हजार सवारों का मनसब देकर काबुलके संरक्षण तथा अहदाद और पहाड़ी चोरों के शासन पर नियत किया। खानखानासे कहा कि सूबे आगरेमें सरकार कन्नौज और कालपीको जागीरकी तनखाहमें लेकर उस देशके दुष्टोंका दमन करे। बिदा करते समय प्रत्येकको खासे खिलअत हाथी और घोड़े दिये।

महावतखां जो दक्षिण सेनाके अमीरोंको आपसमें मेल मिलाप रखनेका हुक्म सुनानेके लिये गया था २१ रबीउस्सानी (द्वितीय अषाढ़ बदी ८) को दक्षिणसे लौट आया।

इसलामखांके लिखनेसे इनायतखांका मनसब पांच सदी जात बढ़कर दो हजारी होगया और राजा कल्याण पांच सदी जात और तीन सौ सवार बढ़नेसे डेढ़ हजारी जात और आठ सौ सवारोंके मनसबको पहुंचा।

हाशिमखांको जो उड़ीसेमें था कशमीरकी सूबेदारी दीगई। इसके वहां पहुंचने तक काम करनेके लिये इसका चचा ख्वाजा मुहम्मदहुसैन कशमीरमें भेजा गया। हाशिमखांके बाप मुहम्मद कासिमने अकबर बादशाहके समयमें कशमीरको जीता था।

कुलीचखांके बेटे चीनकुलीचको खान पदवी मिली। इसको बापकी प्रार्थना तथा तिराहदेशके प्रबन्धकी प्रतिज्ञा करने पर इसे पांच सदी जात और तीन सौ सवारोंकी तरक्की मिली।

१४ अमरदाद (सावन बदी ११) को एतमादुद्दौलाके हुक्म

और स्वामिभक्त नौकर होनेसे समग्र राज्यकी दीवानीका महत् पद पाया।

गुजरात।

अबदुल्लहखां फीरोजजङ्गने गुजरातकी ओरसे दक्षिण पर जाने का वचन दिया। इसलिये बादशाहने उसको राणाकी लड़ाईसे बदलकर गुजरातका सूबेदार कर दिया और राजा बासूको पांच सौ सवार बढ़ाकर उसकी जगह राणाकी मुहिम पर भेजा।

मालवा।

खान आजमको गुजरातके बदले मालवेका सूबा दिया गया।

दक्षिण।

अबदुल्लहखांके साथ दक्षिणको एक लशकर नासिकके मार्गसे भेजना ठहरा था उसके खर्चके वास्ते चार लाख रुपये भेजे गये।

विचित्र चित्र।

एक बादशाही गुलामने जो हाथीदांतके कारखानेमें काम करता था फिन्दकके छिलके पर हाथीकी हड्डीमें कटे हुए चित्र जोड़कर चार विचित्र चित्र बनाये। पहिला चित्र मल्लोंका अखाड़ा था दो मल्ल कुश्ती लड़ रहे थे। एक हाथमें बरछा लिये खड़ा था दूसरेके हाथमें एक बड़ा पत्थर था एक और जमीन पर हाथ टेके बैठा था एक लड़का एक धनुष और एक बरतन आगे रखा था।

दूसरे चित्रमें एक सिंहासन बना था ऊपर शामियाना तना था। उस सिंहासन पर एक भाग्यवान पुरुष पांव पर पांव रखे बैठा था तकिया पीठसे लगा था पांच सेवक आगे पीछे खड़े थे और एक दरख्तकी शाखा उस सिंहासन पर छाया किये हुई थी।

तीसरे चित्रमें नटोंका नाटक होरहा था एक लकड़ी खड़ी थी तीन रस्से उससे बंधे थे एक नट उस पर दाहिने पांवको पीठके पीछे बांये हाथमें पकड़े खड़ा था और एक बकरा सी उस लकड़ी पर था। एक आदमी गलेमें ढोल डाले बजाता था दूसरा हाथ ऊंचा किये नटोंको तक रहा था। पांच आदमी और खड़े थे जिनमेंसे एकके हाथमें लाठी थी।

चौथे चित्रमें एक वृक्ष था उसके नीचे पैगम्बर थे। एक मनुष्य उनके पांव पर सिर रखे हुए था। एक बूढ़ा उनसे बातें कर रहा था चार आदमी और खड़े थे।

बादशाह लिखता है—"ऐसी कारीगरी अबतक मैंने न देखी थी न सुनी इस वास्ते उसको इनाम दिया और वेतन बढ़ाया।"

३० शहरेवर (भादों सुदी १५) को मिरजा सुलतान दक्षिणसे बुलाया हुआ आया। सफदरखांको मनसब बढ़ाकर उस सेनाकी सहायताके वास्ते भेजा जो राना के ऊपर गई थी।

रामदास कछवाहा।

अबदुल्लहखां बहादुर फीरोजजंगने यह इरादा किया था कि नासिकके मार्गसे दक्षिणमें जावे। बादशाह लिखता है—मेरे मनमें यह आया कि रामदास कछवाहेको जो मेरे बापके स्वामि भक्त सेवकोंमेंसे है उसके साथ करूं। वह सब जगह उसकी हिफा जत रखे। अनुचित साहस और जल्दी न करने दे। इसके लिये मैंने उस पर बड़ी कृपा की। उसे राजाकी उपाधि दी जिसका उसे ध्यान भी न था। उसे नकारा दिया और रणथम्भोरका प्रसिद्ध किला दिया। उत्तम खिलत और हाथी घोड़े देकर बिदा किया।

राजा कल्याण।

बादशाहने बंगालके सूबेदार इसलामखांके लिखनेसे सरकार उड़ीसाकी सरदारी राजा कल्याणको दी। दो सदी जात और दो हजार सवार भी उसके मनसबमें बढ़ाये।

तूरान।

तूरानमें गड़बड़ होनेसे बहुतसे उजबक सरदार और सिपाही बादशाहकी सेवामें आये बादशाहने सबको सिरोपाव घोड़े मनसब रुपये और जागीर देकर नौकर रख लिया।

दक्षिणकी लड़ाई।

२ आजर (अगहन बदी ५) को पांच लाख रुपये रूपदास और शेख अंबियाके हाथ अहमदाबादको उस सेनाकी सहायताके वास्ते

भेजे गये जो अबदुल्लहखां फीरोजजंगकी अफसरीमें दक्षिण जानेको नियत हुई थी।

शिकार।

१ दे (पौष वदी ३) को बादशाह समू नगरमें शिकार खेलने गया। दो दिन दो रात वहां रहकर रविवारको रातको शहरमें आगया।

बादशाहकी कविता।

बादशाहने फारसी भाषाका एक शेर बनाया और चराग-चियों तथा कहानी कहनेवालोंको याद कराकर फरमाया कि उजास करने तथा कहानी कहते समय इसको पढा करें। जिससे वह शेर बहुत प्रसिद्ध होगया। उसका यह आशय था—

जब तक आकाशमें सूरज चमकता है।
उसका प्रतिबिम्ब बादशाहके छत्रसे दूर न हो।

३ दे (पौष वदी ५) शनिवारको खानआजमकी अर्जीमें लिखा आया कि बीजापुरवाला आदिलखां अपने अपराधोंसे पछताकर पहलेसे अधिक आज्ञाकारी और शुभचिन्तक होगया है।

बादशाहकी धर्मनिष्ठा।

बादशाहने हुक्मदिया कि बादशाही शिकारके हरनोंके चमडेकी जानमाजें(१) बनाकर दीवान खास और आममें रख छोडें उन पर लोग नमाज पढा करें। मीरअदल और काजीसे जो धर्माधि-कारी थे धर्मकी प्रतिष्ठाके लिये फरमाया कि जमीन चूमकर मुजरा न किया करें। क्योंकि वह एक प्रकारकी दण्डवत है (२)।

शिकार।

समूनगरमें बहुतसे हरन इकट्ठे होगयेथे इससे बादशाहने ख्वाजिजहां

---

(१) जिनको बिछाकर नमाज पढते हैं।

(२) मुसल्मानी मतमें परमेश्वरके सिवा और किसीको दण्ड-वत करना मना है।

को हाकिका प्रबंध करनेके लिये भेजा था। उसने डेढ़ कोसमें कनातें और गुलालबारें(१) लगाकर हरनोंको हर तरफसे उनमें घेरा और बादशाहको खबर दी बादशाह २७ दे (पोष सुदी ८) गुरुवारको मसूरागर गया शुक्रवारसे शिकार शुरू हुआ। नित्य बेगमों सहित उन कनातोंमें जाकर मनमाने हरन तीर और बंदूकसे मारता। रविवार और गुरुवारको बंदूक नहीं चलाता था। जाल डालकर जीते हरन पकड़ता था। शुक्रवारसे गुरुवार तक ७ दिन में ९१७ हरनी और हरन शिकार हुए। उनमें ६४१ जीते पकड़े थे। जीतोंमेंसे ४०४ तो फतहपुर भेजकर वहांके रमनोंमें छुड़वा दिये। ८४ को नाकमें चांदीकी नथें पहनाकर उसीजगह छोड़ दिया। २७६ जो तीर बंदूक और चीतोंसे मारे गये थे नित्य बेगमों महल की टहलनियों, अमीरों और ओढीके चाकरोंको बांटे जाते थे। जब बादशाह बहुत शिकार करके थकता गया तो अमीरोंको हुक्म दे दिया कि जो बच गये हैं उन्हे वह मारलें और आप शहरमें आगया

पुण्यशालाएं।

१ बहमन (माघ वदी ३।४) को बादशाहने हुक्म दिया कि बादशाही देशोंके बड़े बड़े शहरोंमें अहमदाबाद, इलाहाबाद लाहौर, आगरा और दिल्ली आदिके समान खैरातखाने बनावें। छः नगरोंमें पहलेसे थे। २४ नगरोंमें और नियत हुए।

राजा बरसिंहदेव।

४ (माघ वदी ६) को राजा बरसिंहदेवका मनसब बढ़कर चार हजारी जात और दो हजार सवारका होगया। बादशाहने उसको जड़ाऊ तलवार भी दी। दूसरी खासेकी तलवार जिसका नाम शेरबच्चा था शाहनवाजखांको इनायत की।

---

(१) गुलालबाद लाल रंगकी बादशाही क़िनातेंके घेरेका नाम था।

आठवां वर्ष।

सन् १०२१।

फागुन सुदी ३ संवत् १६६८ से फागुन सुदी २ संवत् १६६९ तक।

राणाकी लड़ाई।

फागुन सुदी ३ को मिरजा शाहरुखका बेटा बदीउज्जमान राणाके लशकरमें नियत किया गया और उसके हाथ एक तलवार राजा बासूके वास्ते भेजी गई।

जहांगीरी आईन।

बादशाहको सुनाया गया था कि सीमाप्रांतके अमीर कुछ अयोग्य वर्ताव करते हैं उनके तौरे(१) तथा जावतेका ध्यान नहीं रखते। बादशाहने बख्शियोंको हुक्म दिया कि सीमाप्रान्तके अमीरोंको लिख देवें कि अबसे फिर यह बातें जो विशेष करके बादशाहोंके करनेकी है न किया करें।

१ झरोखेमें न बैठे।

२ अपने सहायक सरदारों और अमीरोंको सलाम करने और चौकी देनेकी तकलीफ न दें।

३ हाथी न लडावें।

४ दण्ड देनेमें किसीको अन्धा न करें नाक कान न काटें।

५ किसी पर मुसलमान होनेके वास्ते दवाव न डालें।

६ अपने नौकरोंको खिताब न देवें।

७ बादशाही नौकरोंको कोरनिश(२) और तसलीम(३) करनेको न कहें।

---

(१) चङ्गेजखांके बांधे हुए प्रबन्धोंको तौरा कहते हैं।

(२) झुककर सलाम करना।

(३) गरदन आगे रखकर मुजरा करना।

८ गवैयोंको दरबारके ढङ्ग पर चौकी देनेका कष्ट न देवें।

९ बाहर नक्कारा न बजावें।

१० घोडा हाथी चाहे बादशाही नौकरोंको देवें चाहे अपने चाकरोंको, पर बाग और अंकुश उनके कंधे पर रखाकर तसलीम न करावें।

११ सवारीमें बादशाही नौकरोंको अपनी अरदलीमें पैदल न ले जावें और जो कुछ उनको लिखें तो उस पर मोहर न करें।

यह जाबते जहांगीरी आईनके नामसे प्रचलित होगये थे।

सातवां नौरोज।

१६ मुहर्रम (चैत्र वदी ४) मंगलवारको सातवें नौरोजका आगरेमें उत्सव हुआ। बादशाह चैत्र वदी ६ गुरुवारको ४ घडी रात गये ज्योतिषियोंके बताये हुए मुहूर्त्तमें सिंहासन पर बैठा। अफजलखांकी भेट बिहारसे पहुंची। तीस हाथी १८ गोंट(१) बंगालके कुछ कपडे अगर चन्दनके लट्ठे, कस्तूरीके नाफे तथा अन्यान्य बहुतसी चीजें थीं।

खानदौरांकी भेटमें ४५ घोडे ऊंट दो कतार, चीनी खताई बरतन, समूरके चमडे और वह पदार्थ जो काबुल मण्डलमें मिल सकते थे आये।

ऐसेही और अमीरोंकी भेटें भी विधिपूर्वक उत्सवके दिनोंमें होती रहीं।

बङ्गालमें फतह।

१२ फरवरदीन (चैत्र वदी ३०) को इसलामखांकी अर्जी बंगाल से पहुंची उसमें उसमान पठानके मारे जानेका हाल लिखा था। पहिले बंगालमें पठानोंका राज्य था। वह अकबर बादशाहने छीन लिया था। केवल यह उसमान एक कोनेमें स्वतन्त्र रह गया था। इसलामखांने ढाकेसे शुजाअतखांको फौज देकर उसके ऊपर भेजा। जब यह उसमानके किलेके पास पहुंचा तो दूत भेजकर उसको

(१) एक जातिके घोड़े।

बादशाहके अधीन होजानेके वास्ते कहलाया परन्तु उसने नहीं माना। लडाईकी तैयारी की। ८(१) मुहर्रम रविवार (फागुन सुदी ११) को लडाई हुई उसमान बडी वीरतासे लडा। उसने बादशाही सेनाके हिरावल और दोनों भुजाओंको विध्वन्स कर डाला। तीनों फौजोंके सरदार मारे गये। फिर बीचकी अनी पर भी धावा किया और गजपति नाम लडाईके हाथीको शुजाअत-खां पर छोडा। शुजाअतखां भी उस हाथीसे खूब लडा और कई घाव बरछे और तलवारके लगाकर उसको भगाया तब उसमानने दूसरा हाथी बादशाही झण्डे पर दौडाया जिसने झंडेके घोड़ेको गिरा दिया। शुजाअतखांने पहुंचकर झंडेवालेको बचाया और उसको दूसरा घोडा देकर फिर झंडा खडा कराया। इतनेमें एक गोली न जाने किसके हाथकी उसमानके ललाटमें आकर लगी जिससे वह शिथिल तो होगया परन्तु दोपहर तक फिर भी अपने आदमियोंको लडाता रहा। अन्तको भाग निकला। उसके भाई वली और बेटे ममरेजने अपने डेरों पर बादशाही फौजका जो उसमानके पीछे गई थी तीरों और बंदूकोंसे ऐसा सामना किया कि वह अन्दर न घुस सकी। आधीरात बीतनेपर उसमान मर गया। वह लोग उसकी लाश लेकर और माल असबाब वहीं छोड़कर अपने किलेमें आगये।

---

(१) तारीख ८ मुहर्रमको रविवार नहीं मंगलवार था रविवार को तो ७, १४, २१ और २८ थी इसमें दो दिनकी भूल है आगे ८ सफर चन्द्रवारको सही है पर इसमें यह शंका होती है कि बाद-शाहके पास १७ फरवरदीनको जिस दिन कि २८ मुहर्रम थी और बादशाह न मालूम क्योंकर २८ लिखता है ६ सफर २१ फरवरदीन चैत सुदी ८।८ तकको खबरें पहिलेही कैसे आगई थीं जो उसने १२ फरवरदीनके वृत्तान्तमें लिखी है यह तो २१ फरवरदीनके पीछे की तारीखोंमें लिखी जाना चाहिये थीं।

दूसरे दिन चन्द्रवारको शुजाअतखांने यह समाचार किशवर्ने से सुनकर पीछा किया। वलीने अब अधीन होजानाही उचित जानकर सन्धिका सन्देसा भेजा। शुजाअतखांने भी अपने साथियों की सम्मतिसे स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन वली और उसमानके भाई बेटे आकर मिले और ४८ हाथी भेटको लाये। शुजाअतखां कुछ लोगोंको अधार नाम उनके राज्य स्थानमें छोडकर ६ सफर चन्द्रवार (चैत्र सुदी ८) को जहांगीरनगरमें इसलामखांके पास आगया और वली आदि पठानों को भी लेआया।

बादशाह इस विजयसे बहुत प्रसन्न हुआ विशेषकर इसलिये कि बंगालका सूवा निष्कण्टक होगया। बारम्बार परमात्माको धन्यवाद करके इसलामखांका मनसब बढाकर छः हजारी करदिया और शुजाअतखांको रुस्तमजमांका खिताब देकर हजारी जात और हजार सवार उसके भी अधिक कर दिये। इसी तरह दूसरे सर्दारों का भी जो इस लडाईमें थे यथायोग्य मनसब बढाया और उन्हें दूसरी कृपाओंसे सन्तुष्ट किया।

फरंगदेशके पदार्थ।

चैत सुदी २ को मुकर्रबखां खंभात बन्दरसे आया। वह बादशाहकी आज्ञासे गोवा बन्दरमें जाकर वहां फरंगियोंसे बहुतसे पदार्थ मुंहमांगे दामों पर खरीद लाया था। बादशाह उनको देखकर आह्लादित हुआ। उसने कई विचित्र पक्षियोंके चित्र चित्रकारों से जहांगीरनामे(१) में खिंचवाये और तुजुकमें लिखा कि बाबर बादशाहने कई जानवरोंकी सूरत शकल तो अपने ग्रन्थमें लिखी परन्तु चित्रकारोंको उनकी तसवीर बनानेका हुक्म नहीं दिया।

(१) जहांगीरनामा अभी हमारे देखनेमें नहीं आया है जो लखनऊमें मुंशी नवलकिशोरप्रेससे छापा है वह जहांगीरनामा नहीं है इकबालनामे जहांगीरीका तीसरा भाग है इकबालनामा भी वहीं छपा है फिर न जाने यह कैसे भूल होगई है।

उसने एक पत्तीका (जिसे अब पीरू कहते हैं) और एक बन्दर का विशेष करके वर्णन किया है चकोरोंके वास्ते लिखा है कि मेरे पिताने इनके बच्चे लेनेका बहुत परिश्रम किया पर उस वक्त तो नहीं हुए। अब मेरे समयमें इनके अंडे लिये और मुर्गियोंके नीचे रखे गये तो दो वर्षमें ६०।७० बच्चे निकले ५०।६० बड़े भी होगये जो सुनता है इसका बड़ा अचम्भा करता है।

इन दिनोंमें महाबतखां, एतमादुद्दौला, एतकादखां आदि अमीरोंके मनसब बढे। महासिंहका मनसब पांच सदी जात और पांच सौ सवारोंके बढनेसे तीन हजारी और दो हजार सवारोंका होगया।

१८ फरवरदीन (चैत्र सुदी ६) को मेख(१) संक्रांतिका उत्सव हुआ खुर्रमका मनसब दस हजारीसे बारह हजारी होगया। ऐसेही और भी कई अमीरोंके मनसब नौरोजके प्रसंगसे बढ़े।

दलपत(२)।

इसी दिन दलपत दच्छिणसे आया उसका बाप रायसिंह मर चुका था इसलिये बादशाहने उसको राय पदवी देकर खिलअत पहनाया। रायसिंहके एक बेटा और भी सूरजसिंह नामका था जिसकी मासे रायसिंहको अधिक प्रेम था। दलपत टीकाई था तोभी वह सूरजसिंहको अपनी जगह बैठाना चाहता था। बादशाह लिखता है—"जिन दिनोंमें रायसिंहके मरनेकी बात चल रही थी सूरजसिंहने अल्पबुद्धि और अल्पावस्था होनेसे प्रार्थना की कि बापने मुझे अपनी जगह बिठाकर टीका दिया है। यह बात मुझको नहीं भाई। मैंने कहा कि जो बापने तुझे टीका दिया है तो हम दलपतको टीका देते हैं।" बादशाहने अपने हाथ से दलपतको टीका देकर उसके पिताकी जागीर और वतन उसको दे दिया।

---

(१) चण्डू पञ्चाङ्गमें भी मेख संक्रान्ति इसी दिन लिखी है।

(२) बीकानेरका राव।

एतमादुद्दौला ।

एतमादुद्दौलाको वड़ाऊ कलम दावात बादशाहने दी ।

गाव १

कमाऊंका राजा लखमीचन्द पहाड़के मुख्य राजोंमेंसे था। उसका बाप राजा रुद्र भी अकबर बादशाहकी सेवामें आया था। आनेसे पहिले अर्ज कराई थी कि राजा टोडरमलका बेटा मेरा हाथ पकड़कर सेवामें लेजावे। बादशाहने वैसाही किया। इसी प्रकार लखमीचन्दने भी अर्ज कराई कि एतमादुद्दौलाका बेटा आकर मुझे दरबारमें लेजावे। बादशाहने शापूरको भेजा। राजा उसके साथ आया। गोंट जातिके उत्तम घोड़े शिकारी पक्षी बाज कुर्रे शाहीन कुतास(१) कस्तूरीके नाफे कस्तूरी हरनके चमड़े जिनमें नाफे भी लगे थे तलवारें और खञ्जर जिनको वह लोग खांडे और काटार कहते हैं और अनेक प्रकारकी चीजें भेटको लाया। पहाड़ी राजोंमें यह राजा इस बातके लिये अति प्रसिद्ध था कि इसके पास सोना बहुत है। लोग इसके देशमें सोनेकी खान बताते थे।

दक्षिणमें हार।

दक्षिणके काम खानआजमको बेपरवाईसे नहीं सुधरे। अब-दुल्लहखांको हार हुई। बादशाहने इन बातोंका निरपक्ष करनेके लिये अबुलहसनको बुलाया था। बहुतसी पूछ ताछ करने पर विदित हुआ कि अबदुल्लहखा बारहकी हार तो उसीके चलन्त दौड़ धूप और किसीकी बात नही सुननेसे हुई पर इसमें सर्दारोंकी ईर्षा और फूटका भी अंश मिला हुआ था। बात यह ठहरी थी कि इधर अबदुल्लहखां गुजरातके लशकर और उन सर्दारोंके साथ जो उसकी सहायता पर नियत हुए थे नासिक त्रिम्बकके रास्ते दक्षिणको जावे। यह लशकर राजा रामदास खानदौरान सैफ्खां अली मरदान बहादुर तथा दूसरे नामी और नामी सरदारोंके

---

(१) सुरागायकी पंछके बाल।

मजा हुआ था इसकी संख्या भी दस हजारसे बढ़कर चौदह हजार तक पहुंची थी।

उधर बरारसे राजा मानसिंह खानजहां अमीरुलउमरा और दूसरे अमीर चले। दोनो दल एक दूसरेके कूच मुकामकी खबर रक्खें और एक दिन नियतकर गनीमको दोनो ओरसे जा घेरें। जो उस नियत दिनका ध्यान रहता, सबके दिल एक होते और आपाधापी न होती तो आशा थी कि परमात्मा जय देता। अबदुल्लहखां जब घाटियोंसे उतर कर गनीमके देशमें गया तो उसने न तो हरकारोंको भेजकर उस फौजकी खबर ली न ठहरावके अनुसार अपने कूचको उनके कूचसे मिलाया और न एकही दिन और समयमें मिलकर गनीमको मारनेका प्रबन्ध किया। वरञ्च उसने अपनेही बल और वृतिका विश्वास करके यह विचारा कि जो मुझहीसे फतह होजावे तो बहुत अच्छा हो। रामदासने बहुत चाहा कि वह धैर्य्यसे बढे और जल्दी न करे परन्तु कुछ फल न हुआ। गनीमने जो उससे डर रहा था बहुतसे सरदार और बरगी(१) भेज दिये थे जो दिनको तो लडते थे और रातको बाण तथा दूसरे अग्न्यस्त्र फेंका करते थे। यहां तक कि गनीमके पास तो पहुंच गये पर उस सेनाके कुछ समाचार नहीं पहुचे। अम्बर चम्पूने जो दौलताबादमें बडे जमावसे निजामुलमुल्कके घरानेके एक लडकेको लिये बैठा था बारी बारीसे फौजें भेजीं। इस तरह दक्खिणियोंका बल बढ़ गया इन्होंने बाणों और दूसरे यन्त्रोंसे आग बरसाकर अबदुल्लहखां को नाकमें दम करदिया। राजहितैषियोंने यह दशा देखकर कहा कि उस फौजसे तो कुछ भी सहायता नहीं पहुंची और दक्खिणी सब हमारे ऊपर चढ़े चले आते हैं इसलिये उचित यही है कि अभी तो लौट चलें फिर देख लेंगे। यह बात सबने स्वीकार की। तडके ही कूच कर दिया। दक्खिणी अपनी सीमा तक पीछा करते चले आये। रोज लडाई होती थी। कई कामके आदमी काम आये।

(१) लुटेरे।

अली मरदानखां बहादुर बहादुरीसे लडा और घायल होकर पकड़ा गया। जब राजा भुरजी(१)के राज्यमें पहुंचे जो बादशाहकी अधीनतामें था तो गनीम लौट गया। और अबदुल्लहखां गुजरातमें आया।

अबदुल्लहखांके लौटनेकी खबर सुनतेही राजा मानसिंह वगैरह भी रास्तेसे लौटकर परवेजके कम्पमें चले आये जो बुरहानपुरके पास आदिलाबादमें था।

बादशाह लिखता है—जब यह समाचार आगरेमें मेरे पास पहुंचे तो मेरा चित्त बहुत विक्षिप्त होगया। मैंने यह विचार किया कि आप जाकर इन खुदाके मारे हुए नौकरोंका पाप काट दूं। परन्तु शुभचिन्तक लोग सहमत न हुए और ख्वाजा अबुलहसनने प्रार्थना की कि उधरके कामोंको जैसा कुछ खानखानाने समझा है और दूसरा कोई नहीं समझ सकता। उसीको भेजना चाहिये। इस बिगडी हुई बाजीको सम्भाल कर गनीमसे समयके अनुसार सन्धि करले। फिर जो यथार्थ करना हो करे यह बात और हितैषियोंको भी जची और सबने यही सलाह दी कि खानखानाको भेजना चाहिये और अबुलहसन भी साथ जावे। निदान यह बात ठहर गई और दीवानोंने तय्यारी कर दी। खानखानां १७ उर्दी बिहिश्त रविवार (बैसाख सुदी ६) को बिदा हुआ शाहनवाजखां अबुलहसन और कई सरदार उसके साथ गये। बादशाहने खान-खानांका मनसब छः हजारी, शाहनवाजखांका तीन हजारी और दाराखांका दो हजारी कर दिया। छोटे बेटे रहमानदादको भी उसके योग्य मनसब मिल गया। खानखानांको सुन्दर खिलअत जडाऊ कटार खासा हाथी तलायर(२) सहित और इराकी घोडा मिला। उसके बेटों और साथियोंने भी यथायोग्य खिलअत और घोडे पाये।

(१) यह बगलानेका राजा था।
(२) हाथीका गहना।

बंगश।

कुलीचखांके लिखनेसे बादशाहने श्यामसिंह और रायधर मंगत भदोरियेके मनसब बढा दिये। यह बंगशमें बादशाही लश्करके साथ थे।

श्यामसिंह तो डेढ हजारीसे दो हजारी होगया और रायधर मंगतका भी मनसब बढा।

आसिफखांकी मृत्यु।

आसिफखां जो अकबर बादशाहके समयसे वजीर रहता आया था और ५ हजारी मनसबको पहुंच गया था दक्षिणमें ६० वर्षका होकर मर गया यह बहुत बुद्धिमान और विचक्षण था कवि भी था। इसने बादशाहके नाम पर नूरनामा नामक एक ग्रन्थ फारसी भाषामें रचा था जिसमें शीरीं और खुसरोके प्रेमकी प्राचीन कथा है बादशाह लिखता है कि जितनी मैंने उसकी परवरिश की उतना उसको स्वामिभक्त नहीं पाया।

मिरजागाजीकी मृत्यु।

वैसाख सुदी १५ को मिरजा गाजीके मरनेकी खबर आई। यह ठट्ठेके स्वामी मिरजा जानीका बेटा था जो अकबर बादशाहका अधीन होगया था इससे अकबरने ठट्ठा उसीके पास रहने दिया था यह बुरहानपुरमें मरा तब उसके बेटे मिरजा गाजीको अकबर बादशाहने कन्धारकी हुकूमत पर भेज दिया वह वहीं मरा उसकी जगह अबुलबेग उजबक बहादुरखांका खिताब और तीन हजारी मनसब पाकर कन्धारका हाकिम हुआ।

रूपखवास।

रूपखवासको जो अकबरका निज सेवक था बादशाहने खवास खांका खिताब हजारी जात पांचसौका मनसब और सरकार कन्नौजकी फौजदारीका काम दिया।

खुर्रमका दूसरा व्याह।

बादशाहने एतमादुद्दौलाके बेटे एतकादखांकी बेटी(१) खुर्रमके

(१) यह ताज बीबी थी जिसका रौजा आगरेमें अति सुन्दर और सुरम्य बना है।

वास्ते मांगी थी और अब उसका व्याह था इस लिये १८ खुरदाद (जेठ वदी ८) गुरुवारको बादशाह खुर्रमके घर गया एक दिन और एक रात वहां रहा। खुर्रमने बादशाहको नजराने और बेगमों, अपनी माताओं और महलके सेवकोंको तोरे जोड़े और अमीरोंको सिरोपाव दिये।

ठट्ठा।

बादशाहने अबदुर्रज्जाकको जो चौकीका बख्शी था हाथी और परम नरम खासा देकर ठट्टेको रवाने वास्ते भेजा जो मिरजा गाजीके मर जानेसे विना खासोंके था। मुअज्जुलमुल्कको उसकी जगह बख्शी किया।

मिरजा ईसातरखां मिरजा गाजीके भाई बन्दोंमेंसे दक्खिनकी सेनामें था। बादशाहने उसको बुलाकर हजारी जात और पांचसौ सवारोंका मनसब दिया।

फसद लेना।

बादशाहको रक्त विकार होगया था इस लिये बहुतसे हकीमोंकी सलाहसे फसद खुलाकर सेर भर रक्त निकलवाया इससे शरीर हल्का होगया तो हुक्म दिया कि आगेसे फसद खुलानेको हलका होना कहा करे। सब ऐसाही कहने लगे।

मुकर्रबखांको जिसने फसद खोली थी बादशाहने जड़ाऊ खपवा दिया।

राजा किशनदास।

किशनदास अकबर बादशाहके समयसे तवेले और हाथियोंका कर्मचारी था और बरसोंसे राजा पदवी तथा हजारी मनसबकी उसको अभिलाषा थी सो पदवी तो पहले पा चुका था और हजारी मनसब अब देकर बा.शाहने उसकी इच्छा पूर्ण की।

तातारा।

भक्करका हाकिम ताजखां पुराने अमीरोंमेंसे था बादशाहने उसके मनसबपर पांचसौ सदी जात और पांचसौ सवार बढ़ा दिये।

शुजाअतखांकी विचित्र मृत्यु।

शुजाअतखांको उसमान पर जीत पानेके पीछे इसलामखांने उडीसे जानेकी आज्ञा दी थी। वह एक रात चौखण्डीदार हथनी पर सवार हुआ और एक बालक नाजिरको पीछे बैठा लिया जब अपने डेरेमे निकला तो रास्तेमें एक मस्त हाथी बंधा था वह घोडोंकी टापोंसे भड़ककर सांकलें तुडाने लगा जिससे बडा कोलाहल मचा। शुजाअतखां उस समय या तो नींदमें था या शराबके नशेमें अचेत था नाजिरने घबराकर उसको जगाया और कहा कि मस्त हाथी खुल गया है इधर आता है। शुजाअतखां व्याकुल होकर चौखण्डीसेंसे कूदा पांवकी उंगली एक पत्थर पर लग कर फट गई बस इसी चोटसे दो तीन दिनमें वह मर गया।

बादशाहको सुनकर बडा आश्चर्य हुआ कि ऐसा पुरुष सिंह जो जंगी हाथियोंसे लड चुका था एक बालककी बातसे घबराकर हाथी परसे कूद पडा।

हाथी।

इसलामखांने बंगालसे १६० हाथी भेजे थे वह खासेके हाथियों में दाखिल किये गये।

कमाऊंका राजा।

कमाऊके राजा टेकचन्दने विदा चाही। उसके बापको अकबर बादशाहके समय एक सौ घोडे दिये गये थे उसी मर्यादासे बादशाहनेभी उसे घोडे दिये एक हाथीभी दिया। जबतक यहां रहा सिरोपाव पाये जडाऊ कटार भी मिला। उसके भाइयोंको भी खिलअत और घोडे मिले। उसका देश उसीके पास रहा और वह सब प्रकारसे प्रसन्न और पूर्णकाम होकर गया।

अबुलफतह दक्खिणी।

१० अमरदाद (सावन सुदी ५) को अबुलफतह दक्खिणी जो आदिलखांके मुख्य सरदारोंमेंसे था बादशाहकी सेवामें उपस्थित

हुआ यह दो वर्ष पहले भी आया था बादशाहने खिलअत खासा घोडा और खांडा दिया।

ठट्ठा।

२ शहरेवर (भादों सुदी १६) को बादशाहने मिरजा रुस्तम सफवीको खासेका हाथी जड़ाऊ जीनका घोड़ा जड़ाऊ तलवार भारी सिरोपाव और पांच हजारी मनसब देकर ठट्ठे(१)की सूबेदारी पर भेजा और उसके बेटे भतीजोंको भी मनसब बढ़ाकर और हाथी घोड़े खिलअत देकर उसके साथ किया।

राय दलपत।

राय दलपतको बादशाहने मिरजा रुस्तमके सहायकोंमें इस हेतुसे नियत किया कि इसका देश उसी दिशामें है अच्छी सेना सेवाके वास्ते देगा। दलपतका मनसब पांच सदी जात और पांचसौ सवारोंके बढ़नेसे दो हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

नागपुर।

अबुलफतह दक्षिणीको नागपुरमें जागीर मिली।

तुलादान।

१७(२) रज्जब २२ शहरेवर (आश्विन बदी ३) बादशाहकी सौर वर्षगांठका तुलादान मरयममकानीके महलमें हुआ।

उसमान पठानके भाई बन्द।

बंगालका दीवान मोतिकिदखां पदच्युत होकर आया। इसके साथ इसलामखांने उसमानके भाई बेटों और कुल सेवकोंको भेजा था बादशाहने एक पठानको अपने एक विश्वासपात्र चाकरकी चौकसीमें रख दिया।

---

(१) छापेकी तुजुक जहांगीरीमें ठट्ठेकी जगह भूलसे पटना छप गया है।

(२) पञ्चांगकी गणितसे १६।

मोतकिदखां।

मोतकिदखांने बादशाहको भेट दी जिसमें २५ हाथी दो लाल जडाऊ फूल कटारें विश्वास योग्य नाजिर और बंगाली कपडोंके थान थे।

११ महर (आश्विन सुदी ८) को बादशाहने उसको बख्शीका उच्च पद दिया उसका मनसब हजारी जात और तीनसौ सवारका नियत हुआ।

राय मनोहर।

बादशाहने खानखानांके लिखनेसे राय मनोहरका मनसब हजारी जात और आठसौ सवारोंका कर दिया।

राजा बरसिंहदेव।

राजा बरसिंह देवका मनसब भी खानखानांकी सिफारिशसे ४ हजारी जात और बाइस सौ सवारोंका होगया।

भारत बुंदेला।

रामचन्द्र बुंदेलेके मरनेसे बादशाहने उसके पोते भारतको राजाका खिताब दिया।

अमीरुलउमराकी मृत्यु।

६ आजर ३ शव्वाल (अगहन सुदी ५) को बुरहानपुरसे खबर आई कि अमीरुलउमरा २७ आबान (अगहन बदी १०।११) को परगने निहालपुरमें मर गया उसके कोई बेटा न था।

बिहार।

बादशाहने जफरखां कोकाको बिहारकी सूबेदारी दी और उसका मनसब बढाकर तीन हजारी जात और दो हजार सवारका करदिया।

शिकार।

२ जीकाद ४ दे मंगल (पौष सुदी ३) को बादशाह शिकारके वास्ते आगरेसे कूच करके चार दिन तक दहराबागमें रहा।

सलीमा सुलतानकी मृत्यु।

१० (पौष सुदी ११) को सलीमा सुलतान बेगमके मर जानेकी

खबर आई यह बाबर बादशाहकी नवासी गुलरुख बेगमकी बेटी थी। बापका नाम मिरजा नूरुद्दीन था। हुमायूं बादशाहने अपनी यह भानजी अति सयाने बैरामखांको दी थी बैरामखांके मारे जाने पर अकबर बादशाहने सलीमा सुलतानसे निकाह कर लिया था।

बादशाह लिखता है—"जितने अच्छे गुण और लक्षण इसमें थे उतने सब स्त्रियोंमें नहीं होते हैं।"

बादशाह एतमादुद्दौलाको उसके उठाने और उसीके बनाये मण्डाकारबागमें उसको रखनेका हुक्म देकर दहराजागसे कूच कर गया बेगमकी अवस्था ६० वर्षकी थी।

काबुल।

७ दे (पौष सुदी ५) को ख्वाजाजहाने काबुलसे आकर १० मोहरें और १२ रुपये नजर किये। बादशाहने कुलीचखां सूबेदार काबुल और खानआलमके परस्पर मेल न होनेके समाचार सुनकर इसको इस बातका निर्णय करनेके लिये कि किसका कसूर है भेजा था काबुल जाने और आनेमें इसको ३ महीने ११ दिन लगे थे।

राजा रामदास।

इसी दिन राजा रामदासने दक्षिणसे आकर १०१ मोहरें भेंट कीं। बादशाहने इसको घोडा खिलअत और तीस हजार रुपये देकर कुलीचखां और दूसरे अमीरोंके समझानेके वास्ते भेजा जिनमें अनबन होगई थी।

दक्षिण।

१५ बहमन (माघ सुदी १३) को शाहनवाजखां दक्षिणसे खान-खानाका भेजा हुआ आया एक सौ मोहरें और एक सौ रुपये नजर किये।

जब दक्षिणके मामले अबदुल्लहखांकी भागदौड़ और अमीरों की फूटसे ठीक नहीं हुए तो दक्षिणियोंने अवसर पाकर अमीरोंसे सन्धिकी बात छेड़ी और आदिलखांने कहलाया कि जो दक्षिणका काम मेरे ऊपर छोड़ा जावे तो ऐसा करूं कि जो देश बादशाही अधिकारसे

से निकल गये हैं फिर अधीन होजावें। शुभचिन्तकोंने समयका रंग ढङ्ग देखकर इस बातकी अर्जी भेजी एक प्रकारकी संधि होगई और खानखानांने वहांके कामोंको ठीक करदेनेका जिम्मा कर लिया तो बादशाहने खानआजमको जो पुण्य(१) की प्राप्तिके लिये सदा राणासे लड़नेको जानेकी प्रार्थना किया करता था हुक्म भेजा कि अपनी जागीर मालवेमें जाकर बाद तैयारीके राणाके ऊपर जावें।

---

(१) कट्टर मुसलमान हिन्दुओंसे लड़ने उनको मारने या उनके हाथसे मरनेको पुण्य समझते हैं।

नवां वर्ष।

सन् १०२२।

फागुन सुदी ३ संवत् १६६८ से फागुन सुदी २ संवत् १६७० तक।

बादशाह आगरेमें।

बादशाह दो महीने बीस दिन शिकारमें रहकर नौरोजके समीप आजानेसे २४ असफंदार (चैत बदी ११) को बागदहरेमें लौट आया और २७ (चैत बदी १४) को आगरेमें आया।

इस बार इतना शिकार हुआ था—

हरन आदि	२२३	कारवानक आदि पक्षी	३६
नीलगाय	८५	मछलिया	४५७
सूअर	२		

आठवां नौरोज।

२७ मुहर्रम १ फरवरदीन (चैत बदी ३०) गुरुवारको साढ़े तीन घड़ी रात गये सूर्य्य भगवान मीनसे मेख राशिमें पधारे। दूसरे दिन आठवें नौरोजका उत्सव हुआ पिछले दिनमें बादशाह तख्त पर बैठा। अमीरों और वजीरोंने नजर और न्यौछावर की।

बादशाह रोज आमदरबार करता था लोगोंकी अर्ज सुनता था और चाकरोंकी भेट लेता था।

४ फरवरदीन (चैत सुदी ८) शुक्रवारको अफजलखांने बिहारसे आकर एक सौ मोहरें और एक सौ रुपये नजर किये इस दिन एक और चौथे दिन १० हाथी उसके हाथियोंसे भेट हुए।

मोतकिदखां एक जगह मोल लेकर कई दिन उसमें रहा तो उस पर लगातार कई दुःख और कष्ट आपड़े। यहां बादशाह लिखता है—"हमने सुना है कि १ घो २ गुलाम ३ घर और ४ घोड़ेमें शुभाशुभ कहा जाता है। घरके शुभाशुभ देखनेकी यह विधि है जो मिलती भी है कि थोड़ी धरतीको खोदकर फिर

निकालें और उस मट्टीको उसमें भरें जो बराबर होजावे तो सम, घटे तो नष्ट और बढ़े तो श्रेष्ठ।”

मग जातिके लोग।

इसलामखांका बेटा होशंग बङ्गालसे आया। मग(१) जातिके लोगोंको भी साथ लाया था उनका देश(२) पेगू, दारजीलिङ्गके पास है बल्कि इन दिनों यह प्रदेश भी उनके अधिकारमें था।

बादशाह लिखता है कि इनके धर्म्मपन्थकी बातें निर्णय कीगई। सारांश यह है कि यह मनुष्य आकृतिके पशु हैं। जल और स्थल के सब जीवोंको भक्षण करते हैं। कोई वस्तु इनके धर्म्म निषिद्ध नहीं है। प्रत्येक मनुष्यके साथ खालेते हैं अपनी सौतेली बहनको ग्रहण करलेते हैं इनकी शकलें किराकअलमाक(३) जातिके तुर्कोंसे मिलती हुई हैं परन्तु बोली तिब्बतकी है जो तुरकीसे कुछ भी नहीं मिलती है। यहां एक पहाड़ है जिसका एक सिरा तो काशगरसे जामिला है दूसरा पेगूमें है। इनका कोई ठीक मत नहीं है कि जिसकी किसी मतसे तुलना कर सकें। मुसलमानी मतसे भी दूर हैं और हिन्दूधर्म्मसे भी विमुख।

बादशाह खुर्रमके घर।

मेख संक्रान्तिके दो तीन दिन रहे थे कि बादशाह खुर्रमकी प्रार्थनासे उसके घर चला गया। एक दिन एक रात रहा वहीं नौरोजकी भेटें होती रहीं। खुर्रमने भी भेट की जिसमेंसे कुछ बादशाहने चुनकर ले ली।

मेख संक्रान्ति।

१४ फरवरदीन (वैशाख वदी ४)(४) चन्द्रवारको मेख संक्रान्ति

---

(१) ब्रह्माके लोग मग कहलाते हैं।

(२) यह वृत्तान्त ब्रह्मदेशका है जो आजकल वृटिश गवर्नमेण्ट के अधिकारमें है।

(३) तुर्कोंकी एक जाति।

(४) चण्डूपञ्चाङ्गमें मेख संक्रान्ति वैशाख वदी ३ को लिखी है।

को बड़ा भारी उत्सव हुआ बादशाह राजसिंहासन पर बैठा। सब प्रकारके मादक पदार्थ मंगाये और सब लोगोंको अपनी अपनी रुचिके अनुसार खाने पीनेकी आज्ञा दीगई। प्रायः सब लोगोंने शराब कवाबका सेवन किया। ईरानके दूत यादगारअलीको सौ तोलेकी एक मोहर जिसका नाम कौकबेताला था दीगई। मजलिसका रंग खूब जमा। उठते समय बादशाहने हुक्म दिया कि सब सामग्री और सजावट लाट लावें।

मुकर्रबखांकी भेटमें बारह इराकी और अरबी घोड़े थे जो जहाजमें आये थे और फरंगियोंका बनाया हुआ एक जड़ाऊ जीन था।

मोमयाई।

बादशाहने मुहम्मदहुसेन चिलपीको जो जवाहिर खरीदने और अनोखे पदार्थोंके ढूंढ निकालने में प्रवीण था कुछ रुपये देकर ईरानके मार्गसे अस्तंबोलके उत्तम द्रव्य खरीद लानेके वास्ते भेजा था और उसको मार्गमें ईरानके शाह अब्बाससे मिलना पड़ता इस लिये एक पत्र उसके नाम भी लिखदिया था। वह सफाहनके पास शाहसे मिला। शाहने पूछा कि किन किन वस्तुओंके खरीदनेका हुक्म है उसने बहुत आग्रहसे सूची दिखाई। शाहने उसमें फिरोजे और मोमयाईका नाम देखकर कहा कि यह चीजें मोल नहीं मिलती हैं मैं उनके वास्ते भेजता हूं। यह कहकर छः थैलियां जिनमें तीस सेर फिरोजोंकी मट्टी थी चौदह तोले मोमयाई और चार घोड़े इराकी जिनमें एक अबलक था उसको सौंपे और एक पत्र भी लिखदिया जिसमें मट्टीके तुच्छ होने और मोमयाईके कम होनेकी क्षमा मांगी थी।

जब यह चीजें बादशाहके पास पहुंचीं तो बहुत निकम्मी निकलीं वेगड़ियों और नग बनानेवालोंने बहुत छान बीन की पर एक फीरोजा भी अंगूठीके लायक नहीं निकला ऐसे फिरोजे जो तुहमास्पके समयमें निकले थे वैसे खानमें नहीं रहे थे यह बात भी अपने पत्रमें लिखा था।

मोमयाईके गुणकी बाबत बादशाह लिखता है कि जो बातें मैंने हकीमोंसे सुनी थीं जब परीक्षा की गई तो कुछ भी प्रकट नहीं हुई मैं नहीं जानता कि हकीमोंने मोमयाईके विषयमें अत्युक्ति की है या पुरानी होजानेसे वह गुणही नहीं रहा है।

मैंने हकीमोंके ठहराये हुए सिद्धान्तोंके अनुसार मुर्गेकी टांग तोड़कर उसको उनकी कही हुई मात्रासे अधिक मोमयाई खिलाई और टांग पर भी लगाई तथा तीन दिन तक रखवाली कराई। वह तो प्रातःकालसे सायंकाल तककाही समय बहुत बताते थे यहां तीन दिन पीछे देखा तो कुछ चिन्ह उस गुणका नजर नहीं आया टांग वैसीही टूटी हुई थी।

सलासुल्लह अरब।

शाह ईरानने सलासुल्लह अरबकी सुफारिश की थी बादशाहने उसी क्षण उसका मनसब और वेतन बढ़ा दिया।

अबदुल्लहखां।

अबदुल्लहखांके वास्ते बादशाहने एक खासा हाथी तलवार सहित भेजा और उसकी बिरादरीके बारह हजार सवारोंको दुअस्पे और तिअस्पेके जाबतेसे तनखाह देनेका हुक्म दिया।

सीम सालगिरह।

२७ उर्दीबहिश्त २६ रबीउलअव्वल (जेठ बदी १२) गुरुवारको बादशाहकी सौम वर्षगांठका तुलादान उसकी माताके भवनमें हुआ। जिसमेंसे कुछ रुपये उन दीन स्त्रियोंको बांटे गये जो वहां जुड़ गई थीं।

मुरतिजाखांका मनसब छः हजारी जात और पांच हजार सवारका होगया।

चीते और सिंहके बच्चे।

अकबर बादशाहने एक हजार तक चीते पाले थे और बहुत चाहता था कि उनकी वंशवृद्धि हो परन्तु यह बात नहीं हुई। फिर कईबार उनके जोड़े भी पट्टे खोल खोलकर बागमें छोड़े तो वहां

वह अलग अलग ही रहे। पर इन दिनोंमें एक चीता पट्टा तुड़ा कर माटा पर जापडा। अढाई महीने पीछे तीन बच्चे जने और बड़े हुए।

इसी प्रकार एक सिहनी भी गर्भवती हुई और तीन महीने पीछे बच्चा जना। बादशाह लिखता है कि मेरे समयमें पशुओंकी प्रकृति निकल गई है सिंह ऐसे हिल गये हैं कि मनुष्योंके भयसे लोगोंमें खुले फिरते हैं और किसीको नहीं सताते। यह कभी नहीं हुआ था कि जङ्गली शेर पकड़े जानेके पीछे सिंहनीसे संग करें और बच्चे हों। हकीमोंसे सुना गया था कि सिंहनीका दूध आंखोंके जालेके वास्ते बहुत गुण करता है मैंने बहुत परिश्रम किया कि जब व्याई हुई सिंहनीका दूध हाथ लगे पर उसके बच्चेको पकड़कर थनोंमें हाथ डाला तो क्रोधसे उसका दूध सूख गया।

बादशाह खरबूजोंकी बाड़ीमें।

ख्वाजाजहांने शहरके पास खरबूजे बोये थे। बादशाह १० खुरदाद (जेठ सुदी ११) गुरुवारको नावमें बैठकर वहां गया महल के लोग भी साथ थे। दो तीन घड़ी रात गये वहां पहुंचा। रात बड़ी भयङ्कर थी। आंधी आई डेरे तम्बू उड़ गये बादशाहने नावमें रात बिताई। शुक्रवारको खरबूजे खाकर शहरमें आया।

अफजलखांकी मृत्यु।

अफजलखां जो बहुत दिनोंसे फोड़े फुंसियोंका कष्ट भोग रहा था मर गया।

राजा जगमन।

राजा जगमनसे दक्खिनकी नौकरीमें कुछ चूक होगई थी इस लिये बादशाहने उसकी जागीर छीनकर महाबतखांको दी।

दीवानखानेके कटहरे।

दीवानखाने खास और आममें दो कटहरे लकड़ीके बनाये जाते थे। पहले कटहरेमें तो अमीर, एलची और बादशाहके लोग रहते थे इसमें बिना आज्ञा कोई नहीं जाने पाता था। दूसरे

पहिलेसे अधिक चौडा था उसमें तमाम नौकर और वह लोग जिन पर नौकरीका नाम लगा हुआ था जगह पाते थे। इस कटहरेके बाहर अमीरों और सब लोगोंके नौकर जो दीवानखानेमें आते थे खडे रहते थे।

पहिले और दूसरे कटहरेमें कोई विशेषता नहीं थी इसलिये बादशाहने पहिले कटहरेको और उस नालको जो इस कटहरेमेंसे झरोखे पर लगाई गई थी और उन दोनों हाथियोंको जो झरोखे की बैटकके दोनों ओर कारीगरोंने बनाये थे चान्दीसे मढ़ देनेका हुक्म दिया। जब यह काम बन चुका तो बादशाहको सुनाया गया कि इसमें १२५ मन चान्दी लगी है। बादशाह लिखता है कि इनसे बडी शोभा होगई और ऐसाही होना भी चाहता था।

पागल कुत्ता।

एक खासे हाथी और एक हथनीको पागल कुत्तेने काटा। कुत्ते को हाथीने मारडाला था तोभी एक महीने पांच दिन पीछे हथनी बादलकी गर्ज सुनकर चिल्लाई कांपी गिरी फिर खडी हुई। सात दिनतक उसके मुंहसे पानी बहता रहा। आठवें दिन मरगई। कोई दवा नहीं लगी। इससे एक महीने पीछे हाथीको पानीके किनारे जंगलमें लेजाते थे कि इतनेमें बादल उमडा और गरजने लगा हाथी उस समय मस्तीमें था तोभी कांपकर बैठ गया मेहावत लोग बडी कठिनतासे उठाकर स्थान पर लाये ७ दिन पीछे यह भी उसी प्रकारसे मर गया।

बादशाह बडे अचरजसे लिखता है कि इतने बडे डीलडौलका जन्तु इतने छोटे जीवके काटनेसे मर गया।

दक्षिण।

खानखानांने शाहनवाजखांको बुलाया था इसलिये बादशाहने सावन सुदी ११ को उसे दक्षिण जानेकी आज्ञादी।

राखी।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुओंके चार वर्ण ठहराये गये हैं

और हरेक निजधर्म पर चलता है। हरेक मालमें एक दिन अपना त्योहार मनाता है। पहला ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मको जाननेवाला उसके छः कर्म हैं—

१ विद्या पढना　　२ दूसरोंको पढाना

३ आग पूजना　　४ दूसरोंसे पुजाना

५ दान लेना　　६ दान देना

इनका त्योहार सावनके अन्तमें होता है जो बरसातका दूसरा महीना है। इस दिनको पवित्र समझकर पुजारी लोग नदियों और तालावों पर चले जाते हैं और मन्त्र पढकर डोरों और रंग [illegible] तागों पर फूंकते है। दूसरे दिन जो नये साल(१) का पहिला दिन होता है उन डोरोंको राजों और बडे लोगोंके हाथोंमें बांधते हैं और शकुन समझते हैं। इस डोरेको राखी यानी रक्षा कहते हैं। यह दिन तीरके महीनेमें आताहै। जब सूर्य्य कर्कराशिपर होता है।

दूसरा क्षत्रिय वर्ण है जो खत्री भी कहलाता है। क्षत्रिय [illegible] हैं जो अन्याय करने वालोंसे दीनोंकी रक्षा करे। इसके [illegible] धर्म्म है।—

१ आप पढे दूसरोंको न पढावे

२ आप आग पूजे दूसरेको न पुजवावे।

३ आप दान दे दूसरेका दान न ले।

इसका त्योहार विजयादशमी है इस दिन सवारी करना और शत्रु पर चढ़कर जाना इसको मसझमे शुभ होता है। रामचन्द्रजी जिसको यह लोग पूजते हैं इसी दिन चढाई करके अपने [illegible] जीता था। इस दिनको उत्तम समझते हैं हाथी घोडोंको [illegible] पूजते हैं।

यह दशहरेका दिन शहरेवरके महीनेमें आता है [illegible]

(१) इस लेखसे जाना जाता है कि [illegible] और [illegible] आगरेमें भी उस समय लौकिक संवत्सर भादों बदी १ से [illegible] जाता था।

कन्या राशि पर होता है। हाथी घोड़ोंके रक्षकोंको पारितोषिक देते हैं।

तीसरा वैश्य वर्ण है यह ऊपर लिखे दोनों वर्णोंकी सेवा करता है। खेती लेन देन व्याज और सौदा इनका कर्तव्य है। इनका भी एक त्यौहार है उसको दीवाली कहते हैं यह दिन महर महीनेमें आता है, जब सूर्य्य तुला राशि पर होता है। इस दिनकी रातको दीपमाला कहते हैं। मित्र और बांधव एक दूसरेके घरमें जुडकर जुआ खेलते हैं। इन लोगोंका धन्धा व्याज और लेन देनका है इसलिये इस दिन हारने जीतनेको शकुन जानते हैं।

चौथा शूद्र वर्ण है। यह हिन्दुओंका सबसे नीचा जथा है। यह सबकी सेवा करताहै। जो ऊपरके वर्णोंके अधिकार हैं उससे इसको कुछ प्रयोजन नहीं हैं। इसका त्यौहार होली है जो इसके निश्चय में वर्षका अन्तिम दिन है। यह दिन असफन्दार महीनेमें आता है जब सूर्य्य मीन राशिमें होता है। इस दिनको रातको रास्तों और गलियोंमें आग जलाते हैं जब दिन निकलता है तो पहर भर तक एक दूसरे पर राख डालते है। फिर नहाकर कपड़े पहिनते हैं बागों और जङ्गलोंमें विचरनेको चले जाते हैं।

हिन्दुओंमें मुर्दा जलानेकी रीति है इसलिये इस रातको आग जलानेसे यह अभिप्राय है कि पिछला वर्ष जो मरेके समान होगया है उसे जलाते हैं।

मेरे पिताके समयमें हिन्दू अमीरों और दूसरे लोगोंने ब्राह्मणों की देखादेखी राखीकी रीति इतनी फैलादी थी कि रत्न मोतियों और जडाऊ फूलोंको डोरोंमें पिरोकर उनके हाथमें बांधा करते थे। कई वर्ष तक ऐसा होता रहा। फिर जब यह आडम्बर बहुतही बढ गया तो उन्होंने उकता कर बन्द कर दिया। ब्राह्मण अपने डोरों और रेशमके धागोंको निज नियमानुसार शकुनके वास्ते बांधते रहे। मैंने भी इस वर्ष उन्हींके शिष्टाचरणका बरताव करके हुक्म दिया कि हिन्दू अमीर और हिन्दुओंके मुखिया मेरे हाथोंमें

राखी न बांधे। परन्तु राखीके दिन जो ८वीं(१) अमरदादको था फिर वही दङ्गल हुआ दूसरे लोगोंने वह देखादेखीकी बात रस्म नहीं छोडी। तब मैंने इसी वर्षके लिये स्वीकार करके कहा कि ब्राह्मण लोग उसी प्राचीन रीतिसे डोरे और रस्म बांधा करें।"

इसी दिन अकबर बादशाहका उर्स(२) था बादशाहने गुरुमको उसके रौजे पर उर्स करनेको भेजा और दस हजार रुपये अपने दस विश्वासपात्रोंको फकीरोंके लिये दिये।

इसलामकी भेट।

१४ अमरदाद (भादों वदी ७) को इसलामखांकी भेट बादशाह की सेवामें उपस्थित हुई उसने बङ्गालसे २८ हाथी ४० टांगन ५० नाजिर और पांच सौ उत्तम वस्त्र सितारगांवके भेजे थे।

समाचारपत्र।

यह प्रबन्ध किया गया था कि सब सूबों और विशेषकरके सीमा प्रान्तके समाचार कर्णगोचर होते रहें और इस काम पर दरबारसे वाकआनवीस (समाचार लिखनेवाले) भेजे जाते थे। बादशाह लिखता है कि यह जावता मेरे बापका बांधा हुआ है। मैं भी

(१) ८ अमरदादको भादों वदी १ थी।

(२) हिन्दुस्थानके मुसलमानोंमें यह रीति है कि जिस दिन कोई बडा या प्यारा पुरुष मरता है तो सालभरके बाद उसी दिन मौलवियों और दूसरे लोगोंको बुलाकर खाना खिलाते हैं। कुरान लगाते हैं गानाबजाना करते हैं खैरात बांटते हैं इसीको उर्स कहते हैं। कहीं कहीं एक सप्ताह तक भी उर्सकी मजलिसें होती रहती हैं। परन्तु ८ अमरदादको अकबर बादशाहका उर्स कैसे हुआ वह तो ३ आबानकी रातको मरा था यह कुछ समझमें नहीं आता। हां १८ अमरदादको १३ जमादिउस्सानी थी और उसके देहान्तके दिन भी यही तारीख थी इसलिये इस साल ८ अमरदादको हुआ होगा।

[illegible] करता हूं। इसमें बहुतसे लाभ देखे जाते हैं। [illegible] और मनुष्योंके वृत्तान्त विदित होते हैं। जो इसके गुण [illegible] लिखे जावें तो बात बढ़ती है। उन दिनोंमें लाहोरके [illegible]ने लिखा था कि तीर(१) महीनेके अन्तमें दस [illegible] शहरसे अमनाबादको गये जो १२ कोस है। जब लू चलने [लगी] तो एक वृक्षकी छायामें ठहर गये। फिर ऐसी हवा चली कि उसके लगतेही कांपकर नौ तो वहीं मर गये और दसवां बहुत दिनों तक कष्ट पाकर अच्छा हुआ। पक्षी जो उस वृक्ष पर बैठे थे सब गिरकर मर गये। उस प्रान्तमें इस वायुसे ऐसी हानि हुई कि जंगलके जन्तु खेतोंमें आकर घास पर लोटे और मर गये।

शिकार।

३१ अमरदाद गुरुवार (भादों सुदी ७) को बादशाह नावमें बैठ कर समूनगर गया।

३ शहरेवर (भादों सुदी ११) को खानआलमने दक्षिणसे आकर एक सौ मोहरें नजर कीं। बादशाहने इसको ईरान भेजनेके लिये बुलाया था।

समूनगर महावतखांकी जागीरमें था और उसने नदीके तट पर एक सुरम्य स्थान बनाया था, वह बादशाहको प्रिय लगा। महावतखांने एक हाथी और एक पन्नेकी अंगूठी भेट की।

६ (भादों सुदी १४) तक बादशाहने शिकार किया। ४७ हरन आदि पशु मारे।

सौर तुलादान।

२० (आश्विन बदी १३) गुरुवारको मरयममकानीके महलमें बादशाहके सौर जन्मदिवसका तुलादान हुआ। वह लिखता है कि इस बरस मेरा ४४वां सौरवर्ष पूरा हुआ।

ईरानके दूतकी विदाई।

इसी दिन शाह ईरानका एलची यादगारअली और खानआलम

---

(१) यह महीना सावन सुदी ६ को समाप्त हुआ था।

ईरानको बिदा हुआ। बादशाहने उसे जड़ाऊ जीनका घोड़ा जड़ाऊ परतला चार कुब्ब सुनहरी कलंगी पर तथा जीगे सहित और तीस हजार रुपये दिये। सब माल चालीस हजार रुपयेका होगा। खानआलमको जड़ाऊ खपवा फूल कटारे सहित जिसमें मोतियोंकी लड़ी लगी थी मिला।

पितृदर्शन।

२२ (आश्विन वदी ३०)को बादशाह पांच हजार रुपये लुटाता हुआ हाथी पर सवार हो अपने पिताके दर्शनको बहिश्ताबाद(१)में गया और पांच हजार रुपये ख्वाजाजहांको फकीरोंको बांटनेके लिये दिये। एतमादुद्दौलाके घर रहा जो जमनाके तट पर था। दूसरे दिन एतकादखांके नये बनाये मकानमें बेगमों सहित ठहरा। उसने जवाहिर और दूसरी उत्तम चीजें भेट कीं जिनमेंसे बादशाह कुछ अपनी रुचिके अनुसार लेकर सायंकालको राजमन्दिरमें आगया।

अजमेरको कूच।

२(२) शाबान २४ शहरेवर (आश्विन सुदी २) चन्द्रवारको सात घड़ी रात गया बादशाहने आगरेसे अजमेरको कूच किया। वह लिखता है कि इस यात्रासे मेरे दो मनोरथ थे—एक ख्वाजामुईनुद्दीन चिश्तीके दर्शन करना जिनकी आत्माके प्रतापसे इस घरानेका बहुत कल्याण हुआ है, और मैं तख्त पर बैठनेके पीछे यात्रा न कर सका था, दूसरे राणा अमरसिंहका सर करना, जो हिन्दुस्थानके मुख्य राजोंमेंसे है और जिनकी सरदारी और बड़ाईको इस विलायतके राजा और राव सब मानते हैं। बहुत दिनोंसे राज्य और ऐश्वर्य इसके घरानेमें चला आता है। पहले पूर्व दिशामें

(१) सिकन्दरा जहां अकबरकी समाधि है।

(२) चण्डूपञ्चांगकी गणितसे १ शाबान, मगर मुसल्मानी मत से रातको २ ही थी।

इनका राज्य था और राजा कहलाते थे फिर दक्षिणको चले गये और वहांकी अधिक भूमिको जीतकर राजाके बदले रावल कहलाने लगे। वहांसे मेवात(१)के पहाड़ोंमें आये और होते होते चित्तौड़गढ़के मालिक होगये। उस दिनसे आजतक (आठवां साल मेरे राज्य पर बैठनेका है) १४७१ वर्ष होते हैं। इस वंशके २६ पुरुष जिनका राज्य १०१० वर्ष रहा रावल कहलाते रहे। रावल(२) से जो पहिला पुरुष इस पदवीका हुआ है राना अमरसिंह तक जो आज राना है—२६ राना ४६१ वर्षमें हुए हैं और इतने लम्बे समयमें हिन्दुस्थानके किसी बादशाहके आगे नहीं झुके हैं, बल्कि बहुधा सिर उठाते और सामना करते रहे हैं बाबर बादशाहके समय में राणा सांगाने इस देशके सब राजा राव और जमीन्दारोंको एकत्र करके एक लाख असी हजार सवारों और कई लाख पैदलो से बयानेके पास मैदानकी लड़ाई कीथी। ईश्वरकी कृपा और भाग्य के बलसे मुसलमानोंको काफिरों पर जीत हुई जिसका वृत्तान्त तवारीखके विश्वासी ग्रन्थों और विशेष करके बाबर बादशाहके वाकेआतमें जो उन्हींके लिखे हुए हैं सविस्तर लिखा है। मेरे पूज्य पिताने इन दंगई लोगोंके दबानेमें पूरा परिश्रम किया और कई बार इनके ऊपर सेना भेजी अपने राज्यशासनके बारहवें वर्षमें आप चित्तौड़गढ जीतनेको गये जो दुनियाभरके सुदृढ दुर्गोंमेंसे है और ४ महीने एक दिन तक उसको घेरे रहे। फिर उसको राणा अमरसिंहके पिता(३) के मनुष्योंसे बल पूर्वक छीनकर और नष्टभ्रष्ट करके चले आये। जब जब बादशाही फौजें उसको(४) घेरकर ऐसा कर देती थीं कि या तो पकड़ा जाय या मारा जाय तबही कोई ऐसी बात होजाती थी कि जिससे यह अस सफल नहीं होने पाता था। निदान अपने राज्यके पिछले समयमें आप तो

(१) मेवाड चाहिये। (२) महाराना चाहिये।

(३) पिता नहीं दादा।

(४) राणा प्रतापसिंह अमरसिंहके पिताको।

दक्षिण जीतनेको गये और उसी महूर्त्तमें मुझे भी [illegible]
और मुख्य मुख्य अमीरोंके साथ राणाके ऊपर भेजा। [illegible]
यह दोनो काम नहीं बने यहांतक कि मेरा समय आया और इस
लड़ाई मेरीको अधूरी छोड़ी हुई थी इसलिये मैंने अपने पहिले वर्ष
में जो सेना अपने राज्यकी सीमा पर भेजी वह वहीं थी जिस पर
परवेजको सेनापति किया था। बड़े बड़े अमीरोंको जो राज-
धानीमें उपस्थित थे उसमें नियत करके प्रचुरद्रव्य और तोपखाना
साथ दिया। परन्तु प्रत्येक कार्यके सिद्ध होनेका एक समय होता है
उसी अवसर पर दुर्बुद्धि खुसरोका उपद्रव उठ खड़ा हुआ और
मुझे उसके पीछे पंजाबको जाना पड़ा। राज्य और राजधानीके सूने
रहनेसे मैंने परवेजको लिखा कि कुछ अमीरों सहित लौट आवे
और आगरेकी रखवाली करे। सारांश यह है कि इस समयमें राणा
का झगड़ा जैसा चाहिये था वैसा नहीं निबटा। जब खुसरोके झगड़े
से चित्तको शांति हुई और मैं उर्दू सहित आगरेमें आया तो महाबत
खां, अबदुल्लह खां और दूसरे सरदारोंके साथ फिर फौजें भेजीं।
उस तिथिसे मेरे अजमेरको प्रस्थान करनेके वक्त तक उनके देश ही
लशकरोंके पैरोंमें रौंदे गये पर लड़ाईका रूप वैसा [illegible]
नहीं बंधा। मैंने सोचा कि आगरेमें कोई काम नहीं है और इस
भी मुझको निश्चय होगया था कि जबतक मैं आप नहीं जाऊं
इस लड़ाईमें सफलता नहीं होती इसलिये निर्दिष्ट समयमें आगरेके
किलेसे निकलकर दहराबागमें मुकाम किया।

दूसरे(१) दिन दशहरेका उत्सव था बादशाहने नियमानुसार
हाथी घोड़ोंको सजवाकर देखा।

खुसरोका छूटना।

खुसरोकी मा बहने बादशाहसे कहा करती थीं और बादशाह-
को भी पुत्रस्नेहसे करुणा आई तो खुसरोको बुलाया और कहा कि
सलाम करनेको आया करे।

---

(१) आश्विन सुदी ३ को दशहरेका उत्सव न जाने कैसे हुआ।

राजा रामदासकी मृत्यु।

२८ (आश्विन सुदी ७) को खबर आई कि राजा रामदास जो बंगश और काबुलकी सीमामें कुलीचखांके साथ था मर गया।

ठहरेबागसे कूच।

१ मह्‌र (आश्विन सुदी ११) को ठहरेबागसे कूच हुआ खान-जहांको आगरेकी, महलोंकी और खजानोंकी रखवाली पर छोड़ा गया।

राजा बासूकी मृत्यु।

२ (आश्विन सुदी १३) को खबर पहुंची कि राजा बासू थाने शाहबादमें जो अमरराणाकी विलायतकी सीमा पर था मर गया।

रूपबास।

१० (कातिक बदी ४) को रूपबासमें जिसका नाम अब अमना-बाद होगया था डेरे हुए। पहिले रूपबास रूपखवासकी जागीर में था फिर बादशाहने महाबतखांके बेटे अमानुल्लहको जागीरमें देकर फरमा दिया था कि अब इसको अमनाबादके नामसे पुकारा करें। यहां ११ दिन डेरे रहे यह शिकारकी जगह थी इसलिये बादशाह रोज शिकार खेलनेको जाया करता था। १५८ हरन और दूसरे पशु शिकार हुए।

अमनाबादसे कूच।

२५ (कातिक सुदी ५) को अमनाबादसे कूच हुआ।

३१ मह्‌र ८ रमजान (कार्त्तिक सुदी १०) को ख्वाजा अबुलहसन दक्षिणसे बुलाया हुआ आया। ५० मोहरें १५ जड़ाऊ पदार्थ और एक हाथी नजर किया।

कुलीचखांकी मृत्यु।

२ आबान १० रमजान (कार्तिक सुदी १२) को कुलीचखांके मरनेकी खबर पहुंची। वह पुराना नौकर था ८० वर्षका होकर पश्शावर(१)में मरा जहां पठानोंके प्रबन्धके वास्ते ठहरा हुआ था। उसका मनसब छः हजारी जात और पांच हजार सवारोंका था।

(१) पेशावर।

मुरतिजाखां दक्खिणी ।

बादशाहने मुरतिजाखां दक्खिनीको जिसने बड़ी तरह उसकी पटेबाजी सीखी थी बरजिशखांका ख़िताब दिया ।

पालन ।

दीन दरिद्र और पालन करनेके योग्य लोग बादशाहकी आज्ञानुसार रात्रिमें उनके सम्मुख लाये जाते थे और वह प्रत्येकको देखकर जमीन रुपये और कपड़े देता था ।

अजमेरमें प्रवेश ।

५ शव्वाल २६ आबान (अगहन सुदी ७) चन्द्रवारको अजमेरमें प्रवेश करनेका मुहूर्त्त था इसलिये बादशाह इस दिन तड़केही सवार हुआ । जब किला और ख़ाजाजीका रौज़ा नज़र आनेलगा तो एक कोससे पैदल चलने लगा विश्वासपात्र नौकर आसपास दोनों ओरसे मांगनेवालोंको रुपये देते जाते थे । चारघड़ी दिन चढ़े शहरमें पहुंचा और पांचवी घड़ीमें ज़ियारत करके दौलतखानेको लौट आया ।

दूसरे दिन हुक्म दिया कि इस पुण्यस्थानके सब रहनेवालों और रास्ते चलनेवालोंको लावें और हरेककी योग्यताके अनुसार दान दिया जावे ।

पुष्कर ।

७ आजर (पौष वदी २) को बादशाह हिन्दुओंके तीर्थ पुष्करके देखनेको जो अजमेरसे तीन कोस है गया और जलमुर्गियां मारीं । तालावके तट पर नये पुराने मन्दिर भी देखे जिनमें अमरा[illegible] चचा राणा सगरने जो बादशाही दरबारका बड़ा अमीर था [illegible] रुपये लगाकर एक भड़कीला मन्दिर बनवाया था । बादशाह उसमें गया और वहां वाराह अवतारकी मूर्त्ति देखकर हुक्म दिया कि इसको तोड़कर तालावमें डाल देवें । फिर एक पहाड़ पर सफेद बुर्ज और उसमें हर तरफसे आदमियोंको जाते हुए देखकर [illegible] पूछा तो लोगोंने कहा कि वहां एक योगी रहता है, जो मूर्ख

लोग उसके पास जाते हैं उनके हाथमें मुट्ठीभर आटा देकर उस जानवरको बोली बोलनेको कहता है जिसको उसने कभी सताया हो। ऐसा करनेसे पापकी निवृत्ति होजाती है।

बादशाहने उस स्थानको गिरवाकर योगीको निकलवा दिया और मूर्त्ति जो वहां थी तुडवा डाली। फिर यह सुनकर कि तालाब की गहराईका पता नहीं है निर्णय किया तो कहीं भी बारह गज से अधिक गहरा नहीं निकला। उसके घेरेको भी नपवाया तो डेढ कोसका हुआ।

शिकार।

१६ (पौष बदी १२) को खबर पहुंची कि शिकारियोंने एक सिंहनीको घेर रखा है। बादशाह गया और उसको बन्दूकसे मार कर आगया।

फरंगियोंका अत्याचार।

इस महीनेमें खबर पहुंची कि गोवा बन्दरके फरंगियोंने वचन छोडकर सूरत बन्दरके आनेवाले जहाजोंमेंसे चार परदेशी जहाजों को लूटा और बहुतसे मुसलमानोंको पकडकर उनके जहाजोंका सब मालभी लेलिया। यह बात बादशाहको बुरी लगी। १६ आजर (पौष बदी १४) को उसने लुटेरोंको दण्ड देनेके लिये मुकर्रबखांको हाथी घोडा और सिरोपाव देकर विदा किया।

खुर्रमका राना पर जाना।

बादशाहका मूल अभिप्राय इस यात्रासे रानाको अधीन करने का था इस लिये आप तो अजमेरमें ठहर गया। और खुर्रमको आगे भेजनेका विचार करके ६ दै (पौष सुदी १५) का मुहूर्त्त निकलवाया। उस दिन उसको जरीकी सिली हुई जड़ाऊ फूलोंकी कबा(१) जिन फूलोंकी कोरों पर मोती टंके हुए थे, जरीका चोग मोतियोंकी लडियोंदार जरीका पटका मोतियोंकी झालरका, फतहगज नाम खासेका हाथी तलापर मंडित,

(१) अचकन।

खासका घोडा, जड़ाऊ तलवार, जड़ाऊ खपवा, फूल कटार सहित देकर विदा किया अगले सिपाहियोंके सिवा जो पहलेसे खानआ-जमकी सरदारीमें इस मुहिम पर लगे हुए थे बारह हज़ार सवार और दिये। उनके अफसरोंको खासेके घोडे खासेके हाथी और [illegible] सिरोपावोंसे सुशोभित करके उसके साथ दिया। फिदाईखां इस लशकरका बख्शी नियत हुआ।

काशमीर।

इसी मुहूर्त्तमें सफदरखांको हाशिमखांकी जगह काश्मीर-की सूबेदारी पर घोडा खिलअत देकर भेजा।

बख्शीकुल।

११ दे (माघ वदी ५।६) बुधवारको ख्वाजा अबुलहसन बख्शी-कुल अर्थात् मीरबख्शी हुआ।

देग।

बादशाहने ख्वाजाजीकी दरगाहके वास्ते एक बडी देग(१) आगरेमें बनवाई थी। वह इन दिनोंमें आई तो उसमें खाना पकवाकर पांच हजार फकीरोंको अपने सामने खिलाया और सबको रुपये भी दिये।

---

(१) यह देग अबतक मौजूद है इसमें [illegible] मन चावल और घी डालकर रातको पकाते हैं और तड़केही लुटा देते हैं। साल भरमें दोचार देगें चढ़ा करती हैं। इनके सिवा [illegible] अपने नामके वास्ते देग चढाते और लुटाते हैं।

दशवां वर्ष।

सन् १०२३

फागुन सुदी ३ संवंत् १६७० से माघ सुदी १ सवंत् १६७१ तक।

---

१ असफंदार १०(१) मुहर्रम (फागुन सुदी १०)को बादशाह अजमेरसे नीलगायोंके शिकारको गया। नवें दिन लौट आया। फिर हाफिज जमालके चश्मे पर गया जो शहर से दो कोस है जुमेको रातको वहां रहा।

इसलामखांकी मृत्यु।

३ (फागुन सुदी १२)को इसलामखांके मरनेकी खबर आई कि वह ५रज्जब (गुरुवार भादों(२) सुदी७)को मरगया। बंगालमें इसने बादशाही राज्यको खूब बढ़ाया था इसका मनसब भी छः हजारी जात और छः हजार सवारका था।

खानआजम पर कोप।

बादशाहने खानआजमको शाहजादेसे अनबन सुनकर इब्राहीम हुसैनको उसके समझानेके वास्ते भेजा और कहलाया कि जब तू बुरहानपुरमें था तो तूने मुझसे यह काम मांगा था। तू इसमें अपना कल्याण समझता था और लोगोंमें बैठकर कहा करता था कि जो इस लड़ाईमें मारा जाऊंगा तो शहीद हूंगा और जीतूंगा तो गाजी कहलाऊंगा। फिर तूने लिखा कि बादशाही सवारीके आये बिना यह फतह होनी मुशकिल है और तेरी सलाहसे हमारा अजमेरमें आना हुआ। अब तूने शाहजादेको बुलाया। मैंने बाबा खुर्रमको जिसे कभी अलग नहीं किया था, तेरे भरोसे पर भेजा। यह सब काम तेरीही सलाहसे हुए हैं।

---

(१) पञ्चाङ्गके गणितसे ८।

(२) यह खबर न जाने क्यों छः महीने पीछे आई थी।

फिर क्या मतब है कि तू अब इस लडाईमें अपना प्राण देता है। चाहिये कि शुभचिन्तक और स्वामिभक्त रहकर नारनौलमें रात दिन सेवा करता रहे अगर इसके विरुद्ध किया तो याद रख कि अपना बिगाड तू आपही करेगा।

इब्राहीमने जाकर यह सब बातें खानआज़मसे कहीं परन्तु कुछ लाभ न हुआ। वह अपनी हठमें नहीं हटा। तब हुजूरने उसको पहरेमें रखकर बादशाहसे अर्ज़ कराई कि इसका यहां रहना अच्छा नहीं है। क्योंकि यह खुसरोके संबधमें काम बिगाडनेवाला होता है। बादशाहने महाबतखांको हुक्म दिया कि जाकर उदयपुरसे उसको लेआवे और उसके बालबच्चोंको मंदसोरसे ग्वालियरमें लानेके लिये बयूतात(१) के दीवान मुहम्मद तकीको भेजा।

दलपतरायका मारा जाना।

११ (चैत्र वदी ६) को पहले खबर पहुंची कि रायसिंहका बेटा दलपत जो दुष्ट स्वभाव था अपने भाई सूरजसिंहसे जिसे बादशाहने उसके ऊपर भेजा था लडाई हारकर सरकार हिसारके एक जिलेमें घिरा हुआ है और इसके साथही वहांके फौजदार हाकिम और उस जिलेके जागीरदारोंने दलपतको पकडकर भेज दिया। बादशाहने उसको मरवा(२) डाला क्योंकि उसने कई बार बुराइयां की थी। इस कामके इनाममें सूरजसिंहके मनसबमें पांच सदी जात और दो हजार सवारकी वृद्धि हुई।

आलमगुमान हाथी।

१४ (चैत्र वदी ८) को खुर्रमकी अर्ज़ी पहुंची कि आलमगुमान हाथी जिस पर रानाको बडा घमण्ड था मेरे हाथ आगया है ...

---

(१) कारखानों।

(२) दलपतने क्या क्या अपराध किए थे इसका कुछ पता उसमें नहीं पाया है और न इस बातका कुछ उल्लेख है कि सूरजसिंह दलपतके ऊपर कब और क्यों भेजा गया था।

सहित फौजमें पकड़ा आया है और उसका स्वामी भी शीघ्रही पकडा जायगा।

नवां नौरोज।

८ सफर (चैत्र सुदी १०) गुरुवारको दोपहर एक घडी रात जाने पर सूर्य्य मेख राशि पर आया। दूसरे दिन नवां नौरोज हुआ। अजमेरमें सभा जुडी। राजभवन दिव्य वस्त्रों रत्नों और जडाऊ पदार्थोंसे सजाया गया। बादशाह राजसिंहासन पर बैठा। उसीसमय खुर्रम बाबाके भेजे हुए आलमकमान हाथी और सतरह दूसरे हाथी हथनियोंके आनेसे सभाकी शोभा बढ़ गई। बडा आनन्दमंगल हुआ।

दूसरे दिन बादशाहने शुभशकुन समझकर उस हाथी पर सवारी की। उस समय बहुतसे रुपये न्यौछावर हुए।

तीसरे दिन एतकादखांका मनसब दोहजारीसे तीनहजारी हो गया और उसको आसिफखांका खिताब मिला जो पहले भी उसके घरानेके दो पुरुषोंको मिल चुका था। उसके बाप एतमादुद्दौलाका भी मनसब बढकर पांच हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

खुर्रमके लिखनेसे सैफखांके बारह और दिलावरखांके पांच पांच सदी जात तथा दो दो सौ सवार और किशनसिंहके पांचसौ सवार बढ़े।

इसी तरह और अमीरोंके मनसबोंमें भी वृद्धि हुई।

१५ फरवरदीन (बैसाख बदी ११) को महाबतखां खानआजम और उसके बेटे अबदुल्लहको लेकर आगया। बादशाहने खानआजमको, यह सोचकर कि कहीं खुसरोके पक्षपातसे रानाकी फतहमें विघ्न न डाले आसिफखांके हवाले किया और कहा कि गवालियरके किलेमें आरामसे नजरबन्द रखे।

खुसरो।

१८ उर्दी बहिश्त (प्रथम जेठ बदी ३०) को खुसरोको छोढ़ी

बन्द होगई क्योंकि वह दरबारमें तो आता था परन्तु उदास रहा करता था।

मिरजा रुस्तम।

मिरजा रुस्तम(१) सफवीके अन्यायसे ठट्ठे की प्रजाने पुकार की। बादशाहने उसे बुलाया वह २६ उर्दीबिहिश्त (प्रथम जेठ सुदी ८) को आया तो वह अनीराय सिंहदलनको सौंप दिया गया कि निर्णय होने तक कुछ दुःख पावे और दूसरे लोग भी सरम जावें।

अहदादकी हार।

मोतकिदखां पोलमकी घाटीमें जो परशावरके पास है और खानदौरां काबुलके पास अहदादका रास्ता रोके हुए थे। इतनेमें अहदाद बहुतसे सवारों और पैदलोंके साथ जलालाबादसे चार कोस कोटतिराहमें आकर ठहरा और वहांके जो लोग अधीन होगये थे उनमेंसे कुछको मार और कुछको पकड़कर जलालाबाद और पेशबुलागके ऊपर आनेका विचार करने लगा।

मोतकिदखांने यह सुनकर ६ फरवरदीन (बैसाख बदी १) बुधवारको उसपर चढ़ाई की। वह खानदौरांके सिवा और किसी सेना के उस प्रान्तमें विद्यमान होनेकी सूचना न होनेसे निश्चिन्त बैठा था, तो भी खूब लड़ा। अन्तको बन्दूकोंकी मारसे घबराकर भाग निकला। मोतकिदखांने तीन चार कोस तक पीछा करके उसके पन्द्रह सौ आदमी मारे। शेष हथियार डालकर भाग गये। मोतकिदखां रातको तो रणभूमिमें रहा और तड़के हज़ार सिर लड़ाकों के लेकर परशावरमें आया और वहां उनका बुर्ज(२) और [illegible] बनाया। पांचसौ गाय बैल बकरी घोड़े और दूसरा धन माल

(१) यह ईरानके शाह तुहमास्प सफवीके भतीजे सुलतान हुसैन मिरजाका बेटा था इसका बाप कन्धार और जमींदावर का हाकिम था मगर तूरानके बादशाह अबदुल्लाखां उजबकके भयसे अपना मुल्क अकबर बादशाहको देकर हिन्दुस्तानमें आगया था।

(२) बैरियोंके मस्तकोंका स्तम्भ।

लाय आया। मिरज़ाके जो बन्दी थे वह भी छूट गये। इधरसे कोई बड़ा आदमी नहीं मरा। बादशाहने मोतकिदखांको लश्करखांका ख़िताब दिया।

शिकार।

१ खुरदाद (प्रथम जेठ सुदी १४) गुरुवारकी रातको बादशाह शिकारके वास्ते पुष्करको गया और शुक्रवारको दो शेर बन्दूकसे मारे।

नकीबखांकी मृत्यु।

इसी दिन नकीबखांके मरनेकी अर्जी हुई। उसकी बीबी दो महीने पहले मर गई थी दोनो मियां बीबीमें बड़ा प्यार था। इस लिये बादशाहने इसको भी बीबीके पास ख्वाजाजीकी दरगाहमें गाड़नेका हुक्म दिया।

रानाकी लड़ाई।

बादशाहने दियानतखांको उदयपुरमें खुर्रमके पास हुक्म पहुंचाने के वास्ते भेजा था उसने आकर खुर्रमके साहस और प्रबन्धकी बड़ी तारीफ की।

फिदाईखांकी मृत्यु।

फिदाईखां जो खुर्रमके लशकरका बख्शी था १२ (द्वितीय जेठ बदी १०) को मर गया। यह बादशाहका लड़कपनका नौकर था।

मिरजा रुस्तम।

मिरजा रुस्तम अपने कुकर्मोंसे लज्जित होकर पछताने लगा था इसलिये बादशाहने उसका अपराध क्षमा करके उसको सम्मुख बुलाकर खिलअत पहनाया और दरबारमें आनेकी आज्ञा दी।

हथनीका बच्चा देना।

११ तीर (आषाढ़ बदी ३०) रविवारकी रातको शाही हथनीने बादशाहके सम्मुख बच्चा दिया। बादशाहने गर्भकी अवधि निर्णय की तो विदित हुआ कि जो बच्चा नर हो तो डेढ सालमें और मादा, हो तो उन्नीस महीनेमें जनतो है। आदमीका बच्चा तो

विशेष करके सिरकी ओरसे जन्मता है और छवनोंका दांतोंकी ओरसे।

बच्चे के जन्मतेही डयनी उस पर धूल डालकर प्यार करने लगी और बच्चा भी क्षण भर पीछे उठकर दूध पीने लगा।

राजा मानसिंहकी मृत्यु।

५ असफन्दार (सावन बदी ७) को दक्षिणमें राजा मानसिंहके मरनेकी खबर आई। बादशाहने भावसिंहको जो उसके बेटोंमें बहुत सुशील था बुलाया। राज्यका अधिकारी तो हिन्दुओंकी रीति और इस घरानेकी मर्य्यादासे राजा मानसिंहके बड़े बेटे जगतसिंहका बेटा महासिंह था क्योंकि जगतसिंह बापके जीतेजी मर चुका था। परन्तु भावसिंह बादशाहकी सेवामें लड़कपनसे रहा था इसलिये बादशाहने उसको चार हजारी जात तीन हजार सवारका मनसब मिरजा राजाका खिताब और आमेरका राज्य दिया। इसके बदलेमें महासिंहको गढ़ेका राज देकर पांच सदी मनसब भी उसका बढ़ाया घोड़ा सिरोपाव और जड़ाऊ जमधरपट्टा भी उसके लिये भेजा।

बादशाहकी बीमारी।

८ असफन्दार (सावन बदी १०) को बादशाहकी तबीयत नासाज़ हुई। माथा दुखने और ज्वर आने लगा। परन्तु राज्यमें विघ्न पड़नेकी आशंकासे नूरजहां(१) बेगमके सिवा और किसीसे अपनी दशा नहीं कही। खुराक घट गई थी तो भी नित्य नियमानुसार आम खास, दीवानखाने, झरोखे और गुसलखानेमें जाना आना रहा। निदान जब थक गया तो हकीमोंसे कहा और ख्वाजाजी की दरगाहमें जाकर परमेश्वरसे अपने अच्छे होनेकी प्रार्थना की। प्रसाद और मन्नत मानी तब आराम हुआ। फिर जो कुछ दर्द बाकी था वह हकीम अबदुलशकूरकी दवासे जाता रहा।

(१) बादशाहने नूरजहांका नाम पहले पहल यहां लिखा है असलमें तो वह तीन वर्ष पहलेही ब्याही थी।

बादशाह लिखता है कि नौकर चाकर क्या प्रजाने भी इस प्रसन्नतामें दान पुण्यके लिये बहुतसा द्रव्य देना चाहा परन्तु मैंने किसीका कुछ नहीं लिया। सबसे कह दिया कि अपने अपने घरों में जो चाहें फकीरोंको बांटें।

कर्ण छेदन।

१२ शहरेवर २८(१) रज्जब (भादों वदी ३०) गुरुवारको बादशाहने दोनो कान छिदवाकर मोती पहने। क्योंकि बीमारीमें यह मन्नत मानी थी कि जो ख्वाजाजीके प्रभावसे अच्छा होजाऊंगा तो जैसे अन्तःकरणमे उनकी भक्ति करूंगा वैसेही प्रत्यक्षमें कान छिदवा कर उनके दासोंमें मिल जाऊंगा।

बादशाहको कान छिदाते देख कर बहुत लोगोंने भी क्या दूर क्या हजूरमें अपने कान छिदवा लिये। बादशाहने भी अपने रत्न-भाण्डारसे उनको मोती दिये। होते होते सर्वसाधारणमें भी कान छिदवानेकी चाल चल पडी।

२२ गुरुवार १० शाबान (भादों सुदी ११) को बादशाहकी सौर वर्षगांठका तुलादान हुआ। इसी दिन मिरजा राजा भावसिंह कृतार्थ और पूर्णकाम होकर अपने देशको गया। दो तीन महीने से अधिक न ठहरनेकी प्रतिज्ञा करने पर उसको छुट्टी मिली थी।

६ आबान (कार्त्तिक वदी ११) को किरावलोंने छः कोस पर तीन सिंहोंकी खबर दी। बादशाह दोपहर ढलतेही गया और तीनोंको बन्दूकसे मार लाया।

८ (कार्त्तिक वदी १३) को दिवालीका द्वन्द मचा। दरबारी लोग बादशाहकी आज्ञासे उनके समक्ष दो तीन रात जुआ खेलते रहे। खूब हार जीत हुई।

---

(१) चंडूपञ्चाङ्गकी गणित से २७।

२) तु० ज० पृ० १३१ में २२ शहरेवर १० शाबान गुरुवारको तुलादान होना लिखा है इसमें इतनी भूल है कि २२ शहरेवर तो गुरुवारको नहीं रविवारको थी और शाबानकी ८वीं तारीख थी।

१८ (कार्त्तिक सुदी ११) को सिकन्दर मईन किरावलकी लाश उदयपुरसे जहां खुर्रमके डेरे थे अजमेरमें आई। यह पुराना नौकर था इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि सब किरावल साथ जाकर आना सागर(१)के तट पर गाड देवें।

१२ आजर (अगहन सुदी ७) को २ लडकियां (जो इसलामखां ने कोचके जमींदारोंसे, जिनकी विलायत पूर्वके अन्तिम सीमा पर है ली थीं) और ८४ हाथी भेट हुए और उसके बेटे होशंगने दो हाथी सौ मोहर और एक सौ रुपये नजर किये।

सपना।

बादशाहने एक रात अपने पिताको सपनेमें यह कहते हुए देखा कि बाबा खानआजम अजीजखांके गुनाह मेरी खातिरसे बख्श दे।

नूर चश्मा।

अजमेरकी तलहटीमें हाफिज जमालके नामसे एक दर्रा और चश्मा प्रसिद्ध है बादशाहने उस सुरम्य स्थानको पसन्द करके वहांके योग्य राजभवन बनानेका हुक्म दिया था। एक वर्षमें ऐसा उत्तम भवन बना कि पृथ्वी पर्य्यटन करनेवाले उसके समान कोई स्थान नहीं बताते थे। वहां ४० गज लम्बा और उतनाही चौड़ा एक झालरा निर्माण हुआ था जिसमें चश्मेका पानी फव्वारेसे लाया गया था। इसका पानी १०।१२ गज ऊंचा उछलकर गिरता था। झालरेके ऊपर बैठकें बनी थीं। ऐसेही ऊपरके खण्डमें भी एक तालाब और चश्मा था मनोहर मन्दिर सुखद सदन और सुन्दर झरोखे झुके थे कईएकमें तो चतुर चित्रकारोंने विचित्र चित्रकारी की थी। बादशाहने उस स्थानका नाम नूरचश्मा रखा जो उसके नाम नूरुद्दीनसे मिलता हुआ था। वह लिखता है—"इसमें यही दोष है कि किसी बड़े नगरमें या ऐसी जगह पर न हुआ

(१) आना सागरका नाम राना सागर तु० ज० में लेखकके दोषसे लिखा गया है।

जहां बहुत लोग आते जाते। वन जानेके पीछे मैं गुरुवार और शुक्रवारको बहुधा वहीं रहता हूं। मैंने कवियोंको प्रशस्ति लिखनेकी आज्ञा की तो भूषणागारके कर्मचारी सईदाय गीलानीने जो प्रशस्ति भेंट की वही मैंने पत्थर पर खुदवाकर नीचेके भवन पर लगवादी।(१)

अनार और खरबूजे।

माघ महीनेके लगतेही विलायतके व्यापारी आये और यज्द(२)के अनार और कारेज(३) के खरबूजे लाये जो खुरासानके देशमें सर्वोत्तम होते हैं। बादशाह लिखता है—"दरगाहके सब बन्दों और सीमा प्रान्तके अमीरोंने इस मेवेका हिस्सा पाकर परमेश्वरका धन्यवाद किया। अबतक मुझको उत्तम अनार और खरबूजे नहीं मिले थे। यों तो वर्षभर बदख्शांसे खरबूजे और काबुलसे अनार आया करते है पर वह यज्दके अनार और कारेजके खरबूजोंके समान नहीं होते। मेरे पिताको मेवेकी बहुत रुचि थी मुझे बडा अफसोस हुआ कि यह मेवे उनके समयमें नहीं आये। आते तो वह बहुत प्रसन्न होते।

जहांगीरी अतर।

ऐसाही अफसोस मुझे अतर जहांगीरीका भी है कि जो उनके संघनेमें नहीं आया। यह अतर मेरे राज्यमें नूरजहां बेगमकी माके

(१) यह स्थान प्रशस्ति सहित नूरचश्मेमें अब भी है। झालरा और फव्वारा टूट गया है। तीस वर्ष पहले अंगरेजी सरकार से कुछ मरम्मत हुई थी पर न अब वैसी छटा है न वह पानी है। न फव्वारा चलता है न चादर गिरती है। सब मकान सूने और उजडे पडे हैं। नूरचश्मेकी जामनें मशहूर थीं अब कई वर्षसे अच्छी वर्षा न होनेसे वह भी वैसी नहीं होतीं।

(२) 'यज्द' ईरानमें एक पुराना प्रदेश है।

(३) कारेज, हिरानमें खरबूजोंके खेत हैं हिरात अब काबुलके राज्यमें है।

परिश्रमसे नया निकला है। जब गुलाबका जल निकालते हैं तो उस के ऊपर कुछ चिकनाई आजाती है। उसको थोड़ा थोड़ा लेकर यह अतर बनाया गया है इसमें इतनी अधिक सुगन्ध होती है कि एक बूंद हथेलीमें मल लीजाय तो मजलिसभर महक उठती है और ऐसा मालूम होता है कि बहुतसे गुलाबके फूल खिलगये हैं। इसका सौरभ ऐसा सुन्दर और सुरम्य होता है कि जिससे मुरझाया हुआ हृदय कमलसा प्रफुल्लित होजाता है। मैंने इस अतरके इनाममें एक माला मोतियोंकी उसको इनायत की। सलीमा सुलतान बेगम उस समय जीती थी उसने इस तेलका नाम जहांगीरी अतर रखा।

हिन्दुस्थानकी विचित्रता।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुस्थानकी हवामें बहुत विचित्रता देखी जाती है लाहोर जो हिन्दुस्थान और विलायतके बीचमें है वहां इस ऋतुमें तूत बहुत फला। और वैसाही मीठा और रसीला हुआ जैसा कि अपनी ऋतु गरमी में होता है।

कई दिन लोग उनके खानेसे प्रसन्न रहे। यह बात वहांके अखबार लिखनेवालोंने लिखी थी।

बख्तरखां कलावंत।

बख्तरखां कलावंत जिसको आदिलखांने अपनी बेटी ब्याही थी और जो ध्रुपद गानेमें उसका मुख्य मित्र था फतहपुरमें प्रगट हुआ। बादशाहने उसको बुलाकर हाल पूछा। बहुत आदर किया। दस हजार रुपये सब प्रकारके ५० पदार्थ और एक मोतियोंकी माला देकर आसिफखांके घरमें उतराया। बादशाहके मनमें यह आदिलका भेजा हुआ भेद लेनेको आया था और इस बात की पुष्टि मीर जमालुद्दीनकी [illegible] से हुई जो आदिलखांके पास गया हुआ था। उसने यहांसे लिखा था कि आदिलखांके [illegible] है कि जो कुछ काम लयोंका बख्तरखांका हुई है [illegible] हैं। यह जानकर बादशाहने और भी उस पर दया की। [illegible]

गानेको सेवामें रहता था और आदिलखांके बनाये हुए ध्रुपद जिनका नाम उसने नवरस* रखा था सुनाया करता था।

एक विचित्र पक्षी।

इन दिनोंमें जेरबाद देशसे एक पक्षी बादशाहके पास लाया गया जिसका रंग तोतेकासा था परन्तु आकारमें उससे छोटा था। उसमें विशेष बात यह थी कि जिस लकडी या वृक्षकी शाखा पर उसे बैठाते उसको वह एक पांवसे पकडकर औंधा लटक जाता और सारी रात गाया करता। जब दिन निकलता तो फिर उस शाखा पर जा बैठता। बादशाह लिखता है कि लोग पशु पक्षियोंकी भी एक तपस्या बताते हैं। पर इसका यह काम स्वाभाविक जाना जाता है।

वह पक्षी पानी नहीं पीता था जो और सब जीवोंके वास्ते जीवनका मूल है वह इसके लिये विष था।

राणाका अधीन होना।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको लगातार कई बधाइयां पहुंचीं जिनमें मुख्य राणा अमरसिंहके अधीन होजानेकी थी। खुर्रमने जगह जगह और विशेष करके उन कई स्थानोंमें जहां-जल वायुके विकार और विकट घाटियोंकी कठिनतासे लोग थानोंका बैठना संभव नहीं समझते थे थाने बैठाने शिशिर ग्रीष्म और पावस ऋतुमें भी सेनाके पीछे सेना दौडाने तथा वहांकी अधिक प्रजाके बालबच्चे पकड लेनेसे रानाको ऐसा कायर कर दिया था कि उसको यह निश्चय होगया कि जो इस दशामें कुछ दिन और बीतेंगे तो या तो मैं अपने देशसे निकाला जाऊंगा या पकडा जाऊंगा।

---

* नवरस इब्राहीम आदिलखांके ग्रन्थका नाम है जिसमें संगीत का विषय है। जहूरी नाम मुसलमान कविने इसकी व्याख्यामें एक काव्य फारसी भाषाका रचा है आदिलखां गानविद्यामें निपुण था।

उसने और कुछ उपाय न देखकर अधीनता स्वीकार करके अपने मामा शुभकरणको हरदास झालाके साथ जो उसका एक बुद्धिमान सचिव था खुर्रमके पास भेजा और यह कहलाया कि जो आप बादशाहसे प्रार्थना करके मेरे अपराध क्षमा करा देवें और मेरे चित्तकी शान्तिके लिये बादशाहके पंजेकी छाप मंगवा देवें तो मैं आपके पास आऊं और टीकाई बेटे करणको बादशाहकी सेवामें भेजूं वह दूसरे सब राजाओंकी रीतिके अनुसार सेवा किया करेगा। मुझे बुढापेके कारण दरगाहकी हाजिरीसे माफी दीजावे।

खुर्रमने उनको अपने दीवान शुक्रुल्लह और मीर सामानसुन्दर के साथ बादशाहके पास भेजा। बादशाह लिखता है कि मेरा नियत शुरूसे यथासाध्य पुराने घरानोंके बिगाडनेकी नहीं रहा है मुख्य मन्तव्य यही था कि राणा अमरसिंह और उसके बाप दादोंने अपने विकट पहाडों और सुदृढ स्थानोंके घमण्डसे न तो हिन्दुस्थानके किसी बादशाहको देखा है और न सेवा की है। मेरे राज्यमें उनकी वह बात न रहे। मैंने लडकेकी प्रार्थनासे राणाके अपराध क्षमा करदिये। उसकी शांतिके लिये प्रसादपत्र और पंजा हथेलीकी छाप भी भेजी और खुर्रमको लिखा कि तुम ऐसा करो जो यह काम बन जावे। जिससे यह प्रगट हो कि तुमने मेरे एक मनचाहे कामको पूरा किया।

खुर्रमने भी उनको मुल्ला शुक्रुल्लह और सुन्दरदासके साथ राणाके पास भेजा। उसने उनको बादशाही दयापात्र करके वह कृपापत्र और पंजेका चिन्ह दिया और यह बात ठहराई कि २६ बहमन (फागुन बदी २) रविवारको राणा अपने बेटा सहित आकर खुर्रमसे भेंट करे।

बहादुरका मरना।

दूसरी बधाई यह थी कि बहादुर जो गुजरातके पहले बादशाहोंके वंशमें था और बहुत उपद्रव किया करता था मरगया।

मीरजाई।

तीसरी बधाई मीरजाई†को हार थी यह सूरत बन्दर लेने को बड़े ठम्सेसे आया था। उससे और अंगरेजोंसे जो इस बन्दरके शरणागत आये थे लडाई हुई। उसके बहुतसे जहाज अंगरेजों के गोलोंसे जल गये। तब वह भाग गया और बन्दरोंके हाकिम मुकर्रबखांके पास आदमी भेजकर सन्धि करली। कहलाया कि मैं लडनेके विचारसे नहीं आया था मिलाप करनेको आया था अङ्गरेजोंने यह लडाई खडी करदी।

अंबर चम्पू।

कई राजपूतोंने अंबरके मारनेका बीडा उठाया था वह अवसर पाकर उसके ऊपर गये और एक राजपूतने उसके एक चोट भी दी परन्तु जो मनुष्य अंबरके साथ थे वह उन राजपूतोंको मारकर अंबरको बचा लेगये नहीं तो उसके मारेजानेमें कुछ कसर न थी।

---

† यह कोई फरंगी मालूम होता है।

ग्यारहवां वर्ष।

सन् १०२४।

माघ सुदी २ संवत् १६७१ ता० २१ जनवरी सन् १६१५ से
माघ सुदी २ सं० १६७२ ता० १० जनवरी १६१६ तक।

रानाका खुर्रमके पास आना।

इस महीनेके अन्तमें बादशाह अजमेरके बाहर शिकार खेल रहा था कि खुर्रमका नौकर मुहम्मदबेग उसकी अर्जी लेकर आया। उसमें लिखा था कि रानाने बेटों सहित आकर मुजरा किया। इस बातके ज्ञात होतेही बादशाहने खुदाकी दरगाहमें शुकराना सिजदा किया और मुहम्मद बेगको हाथी घोड़ा तथा जुल्फिकार खांका खिताब दिया।

रानाके अधीन होनेका वृत्तान्त।

अर्जीमें यह लिखा था कि २६ बहमन (फागुन बदी ७) रविवारको रानाने जिस अदबसे बादशाही ताबेदार मुजरा करते हैं उसी तौर¹ से खुर्रमको मुजरा किया। एक बड़ा प्रसिद्ध माणिक जो उसके घरमें था कुछ जड़ाऊ पदार्थ, अपने पासके सात हाथी और ८ घोड़े नजर किये। खुर्रमने भी उसके ऊपर कृपा दिखाई। राना जब उसका पांव पकड़ कर अपने अपराधोंकी क्षमा मांगने लगा तो शाहजादेने उसका सिर बगलमें उठा उसकी ऐसी तसल्ली की जिससे उसकी शान्ति होगई। फिर बढ़िया खिलअत जड़ाऊ तलवार जड़ाऊ सजाईका घोड़ा और [illegible] उसको दिया। उसके साथके मनुष्योंमें सिरोपाव पानेके योग्य एक सौसे अधिक नहीं थे इस लिये सौ सिरोपाव पचास घोड़े और १२ जड़ाऊ खपवे उनको दिये। जमींदारोंकी यह चाल है कि बाद

---

¹ कायदा।

शाहोंकी सेवामें टीकाई बेटा बापके साथ नहीं आता है उसीके अनुसार राना भी अपने बड़े बेटे कर्णको साथ नहीं लाया था परन्तु खुर्रमके कूच कर जानेका मुहूर्त उसीदिन सायंकालको था इससे उसने रानाको कर्णके भेजनेके लिये शीघ्रही विदा करदिया।

रानाके जानेके बाद कर्णने मुजरा किया। उसको भी खुर्रम ने उत्तम सिरोपाव जड़ाऊ तलवार, कटार, सोनेकी जीनका घोड़ा और खासेका हाथी दिया और उसीदिन उसको साथ लेकर अजमेरको प्रस्थान किया।

शिकार।

३ असफंदार (फागुन बदी ८) को बादशाह शिकारसे लौटकर अजमेरमें आया। १७ बहमन माघ सुदी ८ को गया था। १६ दिन मे एकसिंहनी तीन बच्चों सहित और तेरह नीलगायका शिकार हुआ।

खुर्रमका सम्मान।

१० (फागुन सुदी १) शनिवारको खुर्रमके डेरे देवरानीगांव* में हुए जो अजमेरके पास है। बादशाह ने हुक्म दिया कि सब अमीर अगवानीको जावें और यथायोग्य शाहजादेको भेंट दें।

खुर्रमका दरबारमें आना।

११ (फागुन सुदी २ रविवार) दूसरे दिन खुर्रमने बड़े ठाठबाटसे सब सेनाओंके साथ खासोआम दौलतखाने में प्रवेश किया। दो पहर पर दो घड़ी दिन आये उसके मुजरा करनेका मुहूर्त था। उसने बादशाहकी सेवामें उपस्थित होकर बार बार सिजदे किये। १०००) और १००० मोहरें नजर तथा इतनेही रुपये और मोहरें न्योछावर कीं।

बादशाहने उसको पास बुलाकर छातीसे लगाया। उसका सिर और मुंह चूमा। उसने प्रार्थना की कि हुक्म हो तो कर्ण मुजरा करनेको आवे। बादशाहने फरमाया कि हां उसको लावें। बख्शियोंने नियमानुसार लाकर उसको खड़ा किया। उसने—मुजरा

कारके सिर झुकाया। खुर्रमको घर्मसे हुक्म हुआ कि उसको दहने हाथको श्रेणीमें सबके ऊपर खड़ा करें।

फिर बादशाहने खुर्रमसे फरमाया कि जाकर अपनी माताओंसे मिलो। खिलअत खासा जो चार जड़ाऊ कुलचा था, उसमें बनी हुई कबा और एक मोतियोंकी माला उसको इनायत हुई। खिलअतका मुजरा करनेके पीछे खासेका घोड़ा जड़ाऊ जीनका और खासेका हाथी उसको दिया। कर्णको भी उत्तम खिलअत और जड़ाऊ तलवार मिली।

जो अमीर साथ गये थे उनपर भी यथायोग्य कृपा हुई।

कर्ण पर कृपा।

बादशाह लिखता है कि कर्णका मन लगाना जरूर था वह वन्य प्रकृति था कभी सभा नहीं देखी थी और पहाड़ोंमें रहा आया था इसलिये मैं नित्य नई कृपा उसके ऊपर करता था। मुजरा करने के दूसरे दिन जड़ाऊ कटार और तीसरे दिन जड़ाऊ जीनका खासा इराकी घोड़ा उसको दिया। इसी दिन वह जनानी ड्योढ़ी पर गया तो नूरजहां बेगमकी ओरसे भी उत्तम सिरोपाव जड़ाऊ तलवार घोड़ा और हाथी उसे मिले। फिर मैंने बहुमूल्य मोतियोंकी माला दी। दूसरे दिन खासेका हाथी तलायर [illegible] दिया। मैं चाहता था कि उसको अनेक प्रकारके पदार्थ दिये जावें। इस लिये तीन बाज तीन जुर्रे एक खासी तलवार [illegible] एक खासी कवच एक अंगूठी लालकी और एक पन्नेकी उसे दी। महीने के अन्तमें मैंने सब भांतिके कपड़े कालीन नमदे तकिये सब [illegible] की सुगन्ध सोनेके बर्तन २ गुजराती बहल मंगाये। इन सब [illegible] को अहदी लोग सौ थालोंमें सिरों और हाथों पर उठाकर [illegible] खासोआममें लाये और मैंने सब कर्णको बख्श दिये।

बादशाहका दान।

बादशाहने यह नियम बांधा था कि जो अमीर [illegible] दरबारमें आते थे उनको दोपहर रात व्यतीत होने पर बादशाह

मेवालें लेजाते थे। इस वर्ष ऐसे लोगोंको बादशाहने नीचे लिखे अनुसार दान दिये थे।

नकद ५५०००)	खेत २६ हल
जमीन १८०००० बीघे	धान ११००० गोन
पूरे गांव १४	मोती ७३२ नग ३६०००) के कान छिदानेवालोंको।

पोता।

इन्हीं दिनोंमें बधाई आई कि ११ असफन्दार (फागुन सुदी २) रविवारको बुरहानपुरमें शाह मुरादकी बेटीसे परवेजको ईश्वरने बेटा दिया है। बादशाहने उसका नाम सुलतान दूरन्देश रखा।

दसवां नौरोज।

१ फरवरदीन २० सफर (चैत वदी ७) को ५५ घडी दिन चढ़े सूर्य मीन राशिसे मेखमें आया। बादशाह तीन घडी रात गये नौरोजकी सभामें सिंहासन पर बैठा। सब लोगोंने मुजरा किया। एतमादुद्दौलाके पांच हजारी जात और दो हजार सवारोंके मनसब पर हजारी जात और एक हजार सवार बढ़े। कुंवर कर्ण, जहांगीर कुलीखां और राजा बरसिंह देवको शाही घोडे मिले।

आसिफखांकी भेट रत्नों और रत्नजडित सोनेके पदार्थोंकी थी। दूसरे दिन बादशाहने उसमें पचासी हजारकी चीजें पसन्द करके ले लीं। इसी दिन जड़ाऊ तलवार परतलें सहित कर्णको दी।

माडों (मंडू)।

बादशाहका विचार दक्षिण जानेका था इसलिये अबदुर्रहीम मामूरीको हुक्म हुआ कि माडोंमें जाकर नया राजभवन बनावें और अगले बादशाहोंके स्थानोंका भी जीर्णोद्धार करें।

तीसरे दिन राजा बरसिंह देवकी भेट हुई। बादशाहने उसमेंसे एक लाल कई मोती और एक हाथी लेलिया।

चौथे दिन मुरतिजाखांका मनसब पांच सदी जात और दो सौ सवारोंके बढ़ानेसे दो हजारी जात और अढ़ाईसौ सवारोंका

होगया। पांचवें दिन एतमादुद्दौलाको नक्कारा और झण्डा मिला साथही नक्कारा बजानेकी आज्ञा होगई।

आसिफखांका मनसब बढ़कर चार हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

राजा बरसिंहदेवके सात सौ सवार बढ़े और वह जानेकी छुट्टी नियत समय पर उपस्थित होजानेके इकरार पर मिली।

उसी दिन इब्राहीमखांकी भेट हुई।

किशनचन्दको जो नगरकोटके राजोंकी सन्तानमें था राजाकी पदवी दी गई।

छठे दिन गुरुवारको एतमादुद्दौलाकी भेट नूरमहलमें हुई। बादशाहने एक लाख रुपयेके जवाहिर और जड़ाऊ पदार्थ लेकर शेष उसके वास्ते छोड़ दिये। इस दिन बड़ा उत्सव हुआ था।

सातवें दिन किशनसिंहका मनसब हजारी जात बढ़कर तीन हजारी जात और डेढ़ हजार सवारका होगया। इसी दिन नूर चश्मेकी तलहटीमें एक सिंह शिकार हुआ।

आठवें दिन (चैत बदी १४) को बादशाहने करणको पांच हजारी जात और पांच हजार सवारोंका मनसब देकर हीरों और मोतियोंकी एक छोटी माला दी जिसमें मोतियोंकी सुमरनी लगी थी।

राजा श्यामसिंहका मनसब पांच सदी जातके बढ़नेसे ढाई हजारी जात और चौदहसौ सवारोंका होगया।

सूर्यग्रहण।

दसवें दिन (चैत्र बदी ३०) रविवारको १२ घड़ी दिन चढ़ने पर पश्चिमसे सूर्य ग्रहण लगा। पांच भागमेंसे चार भागका ग्रास हुआ। आठघड़ीमें मोक्ष हुआ। बादशाहने नाना प्रकारके दान दिये।

इसी दिन राजा सूरजसिंहकी भेट हुई। उसमेंसे जो लाल बादशाहने लिया वह तैंतालिस हजार रुपयेका था।

चौदह हजार रुपयेकी भेट कन्धारके हाकिम बहादुरखांकी भी पहुंची।

दाराशिकोहका जन्म।

१४ सफर (चैत्र सुदी १) चन्द्रवार संवत् १६७२ को आधीरात गये धन लग्नमें खुर्रमके घरमें आसिफखांकी बेटीसे पुत्र जन्मा। बादशाहने उसका नाम दाराशिकोह रक्खा।

इसी दिन एतबारखांकी भेंटमेंसे चालीस हजार रुपयेका माल लिया गया।

ग्यारहवें दिन मुरतिजाखांकी भेटमें सात लाल एक मोतियोंकी माला और २७० मोती एक लाख ४५ हजार रुपयेके स्वीकृत हुए।

बारहवें दिन मिरजा राजा भाऊसिंह और रावतशंकर (राना* सगर) की भेट हुई।

तेरहवें दिन ख्वाजा अबुलहसनने बत्तीस सौ रुपयेके रत्न भेट किये।

चौदहवें दिन अबुलहसनका मनसब चार हजारी जात और ढाई हजार सवारोंका होगया।

ईरानका दूत।

इसी दिन ईरानका वकील मुस्तफा बेग आया। उसको शाहने गुर्जिस्तान फतह करके भेजा था। कई घोड़े ऊंट और कुछ हलब देशके कपडे जो रूमसे शाहके वास्ते आये थे और नौ बडे फरंगी कुत्ते फाड़नेवाले (जो मंगाये गये थे) उसके हाथ पहुंचे।

कांगडे पर सेना।

इसीदिन (चैत्र सुदी ५ शुक्रवार) को मुरतिजाखां किले कांगडको फतह करनेके लिये बिदा हुआ। उक्त किला संसारके सुदृढ़ दुर्गों मेंसे था और मुसलमानी राज्य होनेके समयसे अबतक किसी बादशाहने उसको नहीं जीता था। एक बार अकबर बादशाहके हुक्म से पञ्जाबकी सेनाने उसको घेरा भी था परन्तु फतह न हुआ।

मुरतिजाखांको जाते समय हाथी तलापर समेत मिला और

* यह वही सगर है जिसको पहले रानाकी पदवी मिली पर रानासे सन्धि होजाने पर यह रावतही रह गया।

राजा वासूका बेटा सूरजमल भी जिसका देश इन फिसादमें लिया हुआ था वहां भेजा गया। उसके मनसबमें पांच सदी जात और पांचसौ सवार बढाये गये।

राय सूरजसिंहने अपनी जगह और जागीरमें आकर ... मोहरें भेट कीं।

सतरहवें दिन मिरजा रुस्तमने अपनी भेट दिखाई उसमेंसे पन्द्रह हजार रुपयेका और एतकादखांकी भेटमेंसे अठारह हजार रुपयेका माल बादशाहने लिया।

अठारवें दिन पन्द्रह हजार रुपयेका माल जहांगीरकुलीखांकी भेटमेंसे पसन्द हुआ।

बीसवें दिन चैत सुदी ११ गुरुवारको दोपहर साढे चार घड़ी दिन बीतने पर मेख संक्रान्ति* लगी। बादशाहने दरबार किया। जब पहर भर दिन रहा तो नूरचश्मेको चला गया। ... खांकी भेट वहां हुई जो बडी कीमती थी। बादशाहने एक लाख अडतालिस हजार रुपयेका माल उसमें लेलिया एक लाख रुपयेका तो एक जड़ाऊ खपवा ही था जिसे उसकी प्रार्थनासे सरकारी सुनारोंने बनाया था।

ईरानके दूत मुस्तफा बेगको दस हजार रुपये और बीस हजार दरब दिये गये।

२१ (चैत्र सुदी १२) को अबदुलअजीजके साथ दक्खिनके पन्द्रह अमीरोंको सिरोपाव भेजे गये।

राजा विक्रमाजीत अपनी जागीरको विदा हुआ। घर्म सरक खासा उसको मिला।

२३ (चैत सुदी १४) को इस्माईलखां दिवानका सूबेदार ... जफरखांको दरबारमें आनेका हुक्म गया।

---

* जोधपुर।

** चण्डू पञ्चांगमें मेख संक्रान्ति चैत सुदी ८ को ४८ घड़ी १४ पल पर लिखी है।

खुर्रमकी भेट।

वैशाख बदी ३ गुरुवारको पिछले दिनसे बादशाह खुर्रमके घर गया। उसने दूसरी भेट फिर दिखाई। पहले जब उसने मेवाड़ में आकर मुजरा किया था तो एक प्रसिद्ध माणिक्य जो रानाने मुजरा करते समय उसको भेटमें दिया था बादशाहको नजर किया उसका मूल्य जौहरियोंने साठ हजार बताया था परन्तु जैसी उसकी तारीफ होती थी वैसा नहीं था। तौलमें ८ टंक था। यह लाल पहले राव मालदेवके पास था जो राठौडके कौमका सरदार और हिन्दुस्थानके बडे राजोंमेंसे था। उससे उसके बेटे चन्द्रसेनको मिला। चन्द्रसेनने विपदमें राना उदयसिंहको बेच दिया। उससे राना प्रताप ने पाया। प्रतापसे राना अमरसिंहको मिला था। इसके घरमें इससे बढ़कर कोई पदार्थ नहीं था। इसलिये इसने जब राना खुर्रमसे मेल किया तो इस माणिक्यको अपने सारे हाथियों समेत पेचार* (भेट)में दिया था। बादशाहने उस पर यह लेख खुदवाया "सुलतान खुर्रमको रानाने भेट किया।"

उसी दिन और पदार्थ भी खुर्रमकी भेटमेंसे बादशाहने लिये थे। उनमें फरंगियोंका बनाया हुआ एक बहुत सुन्दर बिल्लौरी सन्दूकचा, कई पन्ने; तीन अंगूठियां, चार इराकी घोड़े और दूसरी फुटकर चीजें अस्सी हजार रुपयेकी थीं।

इस दिन बादशाह उसके घर गया तो उसने बहुत बड़ी भेट चार पांच लाख रुपयेकी सजाई थी। जिसमेंसे बादशाहने एक लाख रुपयेके पदार्थ उठा लिये।

कुंवर कर्ण।

बादशाह लिखता है—"कुंवर कर्णके विदा होनेका मुहूर्त समीप आगया था और मैं चाहता था कि उसको अपने बन्दूक लगानेसे भी कुछ परिचित करूं। इतनेहीमें शिकारी लोग एक सिंहनीकी खबर लाये। मेरा यह नियम है कि शेरके सिवा औरको नहीं

* यह शब्द योंही लिखा है।

मारता हूं तोभी इस विचारसे कि कदाचित् कुंवरके जाने तक सिंह न मिले, उसी सिंहनीके ऊपर गया। कर्ण भी साथ था। उससे कहा कि जिस जगह तू कहे मैं उसी जगह उसके गोली मारूं। उसने आंख पर मारनेको कहा। जब वह सिंहनी घेरी गई हम वहां पहुंचे तो पवन प्रचण्ड वेगसे चलने लगा और मेरी हथिनी भी सिंहनीके भयसे एक जगह नहीं ठहरती थी। इन दोनों बड़ी बाधाओंके होते हुए भी मैंने उसकी आंखको ताककर बंदूक चलाई। परमेश्वरने अपनी कृपासे मुझे उस राजकुमारके सामने लज्जित नहीं किया क्योंकि मैंने उसकी आंखमें गोली मारकर गिरा दिया।

कर्णने इसी दिन खासेकी बंदूक मांगी तो मैंने अपनी खासी बंदूक उसको इनायत की।"

८ उर्दबहिश्त (वैशाख सुदी १) को बादशाहका सौर तुलादान हुआ।

९ (वैशाख सुदी २) को खानआज़म बादशाहके हुक्मसे आगरेसे (जहां वह गवालियरसे छूटकर आगया था) दरबारमें लाया गया। उसने कई अपराध किये थे तोभी बादशाह को उसको देखकर लज्जित हुआ। उसने अपनी शाल उसको ओढ़ादी और उसके सब अपराध क्षमा कर दिये।

कर्णको एक लाख दरब इनायत हुए।

इसी दिन राजा सूरजसिंहने रणरावत नामक एक बड़ा हाथी जो उसके खासा हाथियोंमेंसे था लाकर नज़र किया। बादशाहने उसको बड़ा अनोखा देखकर अपने निजके हाथियोंमें रख लिया।

१२ (वैशाख सुदी ४) को राजा सूरजसिंहने फिर सात हाथी भेट किये। वह भी शाही हाथियोंमें शामिल किये गये।

बख्तरखां चार महीने तक बादशाहके डेरोंमें रहकर विदा हुआ। बादशाहने आदिलखांको कहनेके लिये उसके सुपुर्द

बातें मित्रताके लाभ और शत्रुताकी हानिकी कहीं और इस समय भी उसको बहुत कुछ माल दिया। उसको बादशाह, शाहजादों और अमीरोंकी सरकारोंसे जिन्होंने आज्ञानुसार उसकी मनुहार की थी सब मिलाकर एक लाख रुपया मिला था।

१४ (वैशाख सुदी ६) को खुर्रमके मनसब और इनामका निरूपण हुआ। उसका मनसब १२ हजारी जात और छः हजार सवार का और परवेजका १५ हजारी जात और आठ हजार सवारका था। बादशाहने खुर्रमका मनसब भी परवेजके बराबर कर दिया। उस पर भी एक सवाई इनामकी बढ़ाई। पंचीगज नामक खासेका हाथी उसको दिया जो सामान सहित बारह हजार रुपयेका था।

१७ (वैशाख सुदी ८) को राजा सूरजसिंहका मनसब जो चार हजारी जात और तीन हजार सवारोंका था एक हजारी जातके बढ़नेसे पांच हजारी होगया।

खानआजमका बेटा अबदुल्लह जो रणथम्भोरके किलेमें कैद था खानआजमकी प्रार्थनासे बुलाया गया और पांवकी बेड़ी कटवाकर बापके घर भेजा गया।

२४ (जेठ बदी १२) को राजा सूरजसिंहने फिर एक हाथी फौज सिंगार नामक बादशाहके भेट किया। वह शाही हाथियों में बंध गया परन्तु अगले हाथीके समान न था। मूल्य बीस हजार कूता गया।

कजलबाशखां जिसकी नौकरी गुजरातमें थी सूबेदार की आज्ञा बिनाही वह दरबारमें आगया। बादशाहने अहदी को हुक्म दिया कि उसको पकड़कर फिर सूबेदारके पास पहुंचादे।

२८ (जेठ बदी ७) को बादशाहने एक लाख रुपये खानआजम को दिलाये और डामना तथा कामनाके परगने जिनकी जमा पांच हजारी मनसबके बराबर थी उसकी जागीरमें लगा दिये।

३१ (जेठ बदी ८) को बीस घोड़े परम नरम खासेकी कथा बारह हरन और दस ताजी कुत्ते बादशाहने कर्णको दिये।

मारने चलें चाहे जो हो। उसका यह मनोरथ न था कि राजाको कुछ हानि पहुंचे। उधर राजा भी इस घटनासे अज्ञात था। किशनसिंह बड़े तड़केही अपने भतीजे कर्ण और दूसरे साथियोंको लेकर चला जब राजाकी हवेलीके दरवाजे पर पहुंचा तो अपने कई अनुचरोंको घोड़ोंसे उतारकर गोयन्दासके घर भेजा। जो राजाके घरके पास था। वह आप वैसाही घोड़े पर चढा हुआ ड्योढ़ीमें खडा रहा। वह प्यादे गोयन्दासके घरमें घुसकर पहरेवालों पर तलवार चलाने लगे। गोयन्दास इस मारा मारीसे जाग उठा और तलवार लेकर घबराया हुआ घरके एक कोनेसे बाहर निकला। प्यादे जब उन पहरेवालोंको मार चुके तो गोयन्दासको ढूंढ़ने लगे। सामने पाकर उसका काम पूरा कर दिया। किशनसिंह गोयन्दासके मारे जानेका निश्चय होनेके पहले ही घबराहटमें घोडेसे उतरकर हवेलीके भीतर गया। उसके साथियोंने बहुतेरा कहा कि इस समय पैदल होना ठीक नहीं है परन्तु उसने कुछ नहीं सुना। यदि कुछ देर ठहरता और शत्रुके मारे जानेके समाचार पहुंच जाते तो सम्भव था कि वैसाही घोडे पर सवार अपना काम करके कुशलपूर्वक लौट जाता परन्तु भाग्यमें कुछ औरही लिखा था। उसके पैदल होकर अन्दर जातेही राजा जो अपने महलमें था बाहरवालोंके कोलाहलसे जाग गया और नंगी तलवार हाथमें लेकर अपने घरके दरवाजे पर आया। लोग हर तरफसे सावधान होकर उन पैदलोंके ऊपर दौडे। पैदल थोडेसे थे और राजाके आदमियोंकी कुछ गिनती न थी। किशनसिंहके एक एक आदमीके सन्मुख दस दस आगये। जब कर्ण और किशनसिंह राजाके घर पहुंचे तो उसके आदमियोंने उनको घेरकर मार डाला। किशनसिंहके ७ और कर्णसिंहके ९ घाव लगे थे। इस बखेडेमें ६६ आदमी दोनों पक्षके मारे गये। राजाके तीस और किशनसिंहके छत्तीस मरे। जब दिन निकला तो इस झगड़े

* पुष्कर।

का पता लगा। राजाने अपने भाई भतीजे और प्रिय पारिषदों को मरा देखा। बाकी लोग बिखरकर अपनी अपनी जगह पर चले गये थे।

यह खबर पहोकरमें मेरे पास पहुंची तो मैंने हुक्म दिया कि जो लोग मारे गये हैं उनको उनकी रीतिके अनुसार जला देवें और इस झगडेका पूरा पूरा निर्णय करें। पीछे प्रगट हुआ कि बात वही थी जो लिखी गई।

राय सूरजसिंह।

२०* (जेठ सुदी १४) को राय सूरजसिंह दक्षिणको बिदा हुआ। बादशाहने उसको कानोंके वास्ते एक जोडी मोतियोंकी और एक परम नरम खासा इनायत किया। खानजहांके वास्ते भी एक जोडी मोतियोंकी उसके हाथ भेजी।

कर्णकी बिदाई।

२५ (आषाढ बदी ४।५) को कर्ण अपनी जागीरको बिदा हुआ। बादशाहने शाही हाथी घोडे पचास हजार रुपयेकी मोतियोंकी कण्ठी और दो हजार रुपयेकी जडाऊ कटार उसको बिदाईमें दी। मुजरा करनेके दिनसे बिदा होने तक जो कुछ नकद माल जवाहिर और जडाऊ पदार्थ बादशाहने उसको दिये थे वह सब इस प्रकार थे

रुपये २ लाख, हाथी ५ और घोडे ११० ।

खुर्रमने जो कुछ दिया था वह इससे अलग था।

बादशाहने मुबारकखां सजावलको हाथी घोडा देकर उसके साथ किया और कुछ बातें राणाको भी कहला भेजी।

राजा सूरजसिंहकी छुट्टी।

राजा सूरजसिंहने भी घरजानेके वास्ते दो महीनेकी छुट्टी ली और

शाह ईरानका अपने बेटेको मारना।

बादशाहको यह खबर सुनकर बडा विस्मय हुआ कि ईरानके

* असल पोथीमें लेखकके दोषसे २ लिखा है।

शाहने अपने बड़े बेटे सफी मिरजाको मरवा डाला है। वह ८ मुहर्रम सन् १०२४, (पौष सुदी १२ संवत् १६७१) को हम्मामसे निकलते समय बहबूद नामके एक दासके हाथसे मारा गया। बादशाहने ईरानके आनेवालोंसे इसका कारण बहुत पूछा परन्तु किसी ने कोई सन्तोषदायक बात नहीं कही।

३ तीर (आषाढ सुदी ८) को पानी छिड़कनेका त्यौहार हुआ। बादशाही सेवकोंने एक दूसरे पर गुलाबजल डालकर खुशी मनाई।

१८ (आषाढ़ सुदी १५) को खानखानां और शाह नवाजखांकी भेट बादशाहके पास पहुंची। खानखानांकी भेटमें इतने पदार्थ थे—

लाल ३, मोती १०२, याकूत १०२, जड़ाऊ कटार २, कलगी जड़ाऊ याकूत और मोतियोंकी १, जड़ाऊ सुराही १, जड़ाऊ तलवार १, तरकश मखमलका मढ़ा हुआ १, कङ्गन जड़ाऊ १, अंगूठी हीरेकी १।

यह सब एक लाख रुपयेके हुए। इनके सिवा यह चीजें भी थीं—

दक्खिणी कपड़े सादे और जरीके, कर्नाटकके कपड़े सादे और जरीके, ५ हाथी और एक घोड़ा जिसकी गरदनके बाल जमीन तक पहुंचते थे।

शाह नवाजखांकी भेटमें ५ हाथी और २०० थान नाना प्रकार के कपड़ोंके थे।

राजा रोजअफजूं।

राजा संग्राम बादशाही अमीरोंसे लड़कर मारा गया था। उसका बेटा बचपनसे बादशाहके पास रहता था। बादशाहने उसको मुसलमान करके राजा रोजअफजूंकी पदवी दी। उसके बापका राज्य भी उसको देदिया और एक हाथी इनायत करके घर जानेकी छुट्टी दी।

जगतसिंहका आना।

२४ (सावन बदी ६) को कुंवर कर्णके बेटे जगतसिंहने जो १२

वर्षका था आकर बादशाहसे मुजरा किया। अपने पिता और दादा राणा अमरसिंहकी अर्जी पेश की। बादशाह लिखता है कि कुलीनता और बड़े घरमें जन्मनेके चिन्ह उसके चेहरेसे पाये जाते हैं। मैंने सिरोपाव और मधुर वाक्योंसे उसका चित्त प्रसन्न किया।

राजा नथमल।

५ अमरदाद (सावन सुदी ३) को राजा नथमलके मनसब पर जो डेढ हजारी जात और ग्यारह सौ सवारोंका था पांच सदी जात और एक सौ सवार बढाये गये।

केशव मारू।

७ (सावन सुदी ५) को केशव मारूने आकर मुजरा किया। ४ हाथी नजर किये। इसको सरकार उड़ीसेमें जागीर दीगई थी परन्तु वहांके सूबेदारने शिकायत लिखी थी इसलिये बादशाहने उसे बुला लिया।

खानजहां लोदी।

८ (सावन सुदी ६) शुक्रवार*को खानजहां लोदीने दरबारमें उपस्थित होकर एक हजार मोहर एक हजार रुपये नजर और चार लाल, एक पन्ना जड़ाऊ फूल कटारा और २० मोती भेट किये। यह सब चीजें पचास हजार रुपयेकी थीं।

सावन सुदी ८ रविवारको रातको बादशाह ख्वाजाजीके उर्समें गया। आधीरात तक रहा। छः हजार रुपये पुत्र पुत्री और मुरीद और कहरवा**की ७० मालायें अपने हाथसे [illegible] दिलाया।

---

* असल पोथीमें पृष्ठ १४५ में संवत् ८ लिखी [illegible] शुक्र चाहिये। क्योंकि आगे उर्स रविवार [illegible] सही है।

** एक प्रकारकी मणि।

महासिंहको राजाकी पदवी।

राजा मानसिंहके पोते महासिंहको बादशाहने राजाका खिताब नक्कारा और झण्डा दिया।

केशव मारू।

२० (भादों बदी ४) को केशवमारूके मनसब पर जो दोहजारी जात और एक हजार सवारका था दो सौ सवार बढ़े और खिल-अत भी मिला।

मिरजा राजा भावसिंह।

२२ (भादो बदी ६) को मिरजा राजा भावसिंहने अपने घर आमेर जानेको छुट्टी ली। बादशाहने पहुपण¹ काश्मीरीका शाही जामा इनायत किया।

गिरधर।

१ शहरेवर (भादों बदी ३०) को दक्षिण जानेवाले अमीरोंके मनसब बादशाहने बढ़ाये। उनमें राय साल दरबारीके बेटे गिरिधरका मनसब आठ सदी जात और सवारोंका होगया।

इतनाही मनसब अलफखां क्यामखानीका भी हुआ।

नूरजहानी मोहर।

८ (भादों सुदी ७) को नूरजहानी मोहर जो ६४०० रुपये की थी बादशाहने ईरानके दूत मुस्तफा बेगको दी।

शबरातकी दीपमालिका।

आश्विन बदी १ की रातको शबरातका त्योहार था। बादशाहके हुक्मसे आनासागरके किनारों और उसके आसपासके पहाड़ों पर दीपमालिका की गई। बादशाह भी देखनेको गया था और बड़ी रात तक बेगमों सहित आनासागरके तट पर रहा। चिरागों का प्रतिबिम्ब पानीमें पड़कर अनोखी शोभा दिखाता था।

आदिलखांकी भेंट।

१७ (आश्विन बदी २) को मिरजा जमालुद्दीन हुसैनने जो

---

¹ एक प्रकारका कपड़ा।

वकील होकर बीजापुरको गया था वहांसे आकर तीन जडाऊ अंगूठियां नजर कीं। एकमें बहुत बढिया अकीक, यमन देशकी खानका जडा था। आदिलखांने भी सैयद कबीर नामके एक मनुष्यको अपनी तरफसे भेंट सहित भेजा था।

२४ (आश्विन बदी ९) को आदिलखांकी भेंट बादशाहके दृष्टिगत हुई। चांदी सोनेकी सोंजके हाथी, इराकी घोड़े, जवाहिर, जडाऊ पदार्थ और अनेक प्रकारके कपड़े थे जो उस देशमें होते हैं।

इसी दिन बादशाहने सौरपक्षकी वर्षगांठका तुलादान किया।

ईरानके दूतकी विदाई।

२६ (आश्विन बदी ११) को ईरानका दूत मुस्तफाबेग विदा हुआ। बादशाहने उसको बीस हजार रुपये और सिरोपाव देकर शाह ईरानके प्रेमपत्रका उत्तर प्रीतिपूर्वक लिख दिया।

दक्षिण पर सेना।

५ महर (आश्विन सुदी ६) को महाबतखां और १० (आश्विन सुदी ११) को खानजहां दक्षिणको विदा हुआ। बादशाहने दोनोको हाथी घोडे हथियार और सिरोपाव दिये। महाबतखांके सतरहसौ सवारोंको दुअस्पा और तिअस्पाकी तनखाह देनेकी आज्ञा दी।

इसबार इतनी सेना दक्षिणको ओर भेजी गई—

मनसबदार ३३० अहदी ३००० उबेमाक* ७०० सवार दिलाजाक पठान ३०० सवार तोपखान जंगीहाथी और ३० लाख रुपये।

सरबुलन्दराय।

सरबुलन्दरायका† मनसब पांच सदी जात और २६० सवारोंके बढनेसे दो हजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका होगया।

राजा किशनदासके मनसबमें पांच सदी जातकी वृद्धि हुई।

---

* एक जातिके तुर्क।

† राव रतन हाडा।

राजा सूरजसिंह।

१८ (कार्तिक वदी ६) को राजा सूरजसिंहने जो अपने पुत्र गजसिंह सहित घरको गया था वापस आकर मुजरा किया। सौ मोहर और एक हजार रुपये नजर किये।

आदिलखांके वकील सैयद कबीरको एक नूरजहानी मोहर पांचसौ तोले सोनेकी इनायत हुई।

२३ (कार्तिक वदी ८) को नव्वे हाथी कासिमखांके भेजे हुए पहुंचे जो उसने कोच और मगके देशोंको जीतकर तथा उड़ीसेके जमींदारोंसे लेकर भेजे थे।

बीजापुर।

२६ (कार्तिक वदी १२) को सैयद कबीर हाथी घोड़ा और सिरोपाव पाकर बीजापुरको विदा हुआ यह आदिलखांका भेजा हुआ दक्षिणके दुनियादारों*के अपराध क्षमा कराने और किले अहमदनगर और दूसरे बादशाही मुल्कोंके छुडा देनेकी प्रतिज्ञा करनेको आया था जो बादशाही अधिकारसे निकल गये थे।

रामदास कछवाहा।

उसी दिन राजा राजसिंह कछवाहा (जो दक्षिणमें मारा गया था) के बेटे रामदासको बादशाहने एक हजारी जात और चार हजार सवारका मनसब दिया।

राजा मान।

४ आबान (कार्तिक सुदी ५) को राजा मान जो गवालियरके किलेमें कैद था मुरतिजाखांकी जमानत पर छोडा गया। वह अपने मनसब पर बहाल होकर मुरतिजाखांके पास कांगडेकी लड़ाईमें भेजा गया।

राजा सूरजसिंह।

१६ (अगहन वदी ३) को राजा सूरजसिंह भी दक्षिणकी मुहिम पर भेजा गया। उसका मनसब तीनसौ सवारके बढनेसे पांच

* दक्षिणके बादशाहोंको दिल्लीके बादशाह दुनियादार कहते थे।

हजारी जात और तेतीससौ सवारोंका होगया। घोडा और सिरो-पाव भी मिला।

राजा सारंगदेव।

अगहन सुदी ७ को दाराबखांको जडाऊ खञ्जर इनायत हुआ और राजा सारंगदेवके हाथ दक्षिणके अमीरोंको खिलअत भेजेगये।

काश्मीर।

बादशाहने सफदरखांकी ऐसी कुछ बातें सुनीं थीं कि जिससे उसको कश्मीरकी सूबेदारीसे हटाकर अहमदबेगखांको उसकी जगह पर भेजा।

बङ्गाल।

बङ्गालेके सूबेदार कासिमखां और वहांके अमीरोंके वास्ते एह-तमामखांके हाथ जडावल* भेजी गई।

सूअरका शिकार।

७ दे (पौष सुदी ८) को पोहकरसे अजमेरको आते हुए बादशाह ने रास्तेमें बयालीस सूअर मारे।

खुर्रमको मद्य पिलाना।

२५ (माघ बदी ११) शुक्रवारको खुर्रमका तुलादान हुआ। बादशाह लिखता है कि २४ वर्षका होगया है कई विवाह होगये है बच्चे भी जन्म गये हैं तोभी अबतक इसने कभी मद्यपान नहीं किया था। इस तुलादानकी सभामें मैंने इससे कहा कि बाबा तू बेटोंका बाप होगया है बादशाह और शाहजादे शराब पीते रहे हैं आज तेरे तुलादानका उत्सव है मैं तुझे शराब पिलाता हूं और आज्ञा देता हूं कि उत्सवके दिन नौरोजके उत्सवों और बडे बडे त्यौहारोंमें तू शराब पिया कर। परन्तु कम पीनेका ध्यान रखना। बुद्धिमानोंने इतनी पीनेकी आज्ञा नहीं दी है कि जो बुद्धिको भ्रष्ट करदे। इसके पीनेसे गुण और लाभकी इच्छा रखना चाहिये। बूअलीसीनाने जो एक बडा भारी हकीम होगया है कहा है—

* जाडेमें पहननेकी पोशाकें।

"मद्य मतवालेका तो शत्रु है और सावधानका मित्र है। थोडा तो औषधि है और ज्यादा सांपका विष। बहुत पीनेमें थोडी हानि नहीं है और थोडीमें बहुत लाभ है।"

निदान बहुत हठसे उसको शराब दीगई।

जहांगीरकी शराबीपनकी कहानी।

इतना लिखनेके पश्चात् बादशाह अपने शराबी होनेकी कहानी इस प्रकार लिखता है—

"मैने १५ वर्षकी अवस्था होजाने तक शराब नहीं पी थी परन्तु बचपनमें दो तीन बार मेरी मा और दाइयोंने दूसरे बच्चोंको देनेके बहाने मेरे पितासे अर्क मंगवाकर उसमेंसे एक तोला गुलाबजलमें मिलाकर और खांसीकी दवा कहकर मुझे पिलाया था। जब मेरे बापका उर्दू यूसुफजई पठानोंका दंगा दबानेके लिये नीलाब नदीके तट पर अटकके किलेमें था। तब एक दिन मैं शिकारको गया। श्रम बहुत करना पडा था इससे बडी थकावट आगई थी। उस्ताद शाहकुली नामक तोपचीने जो मेरे चचा मिरजा हकीमके तोपचियों का नायक था मुझसे कहा कि आप एक प्याला शराब पीलें यह थकावट जाती रहेगी।

वह जवानीके दिन थे और चित्तमें ऐसी बातोंका चाव था। मैने महमूद आबदारसे कहा कि हकीमअलीके घर जाकर नशेका शरबत लेआ।

हकीमने पीले रङ्गकी डेढ़ प्याला मीठी शराब छोटे शीशेमें भेजी। मैंने उसको पी लिया। उसका नशा सुहावना लगा। फिर तो मैं शराब पीने लगा। यहांतक कि अंगूरी शराबका नशा नहीं आने लगा तब अर्क पीना शुरू किया। नौ वर्षमें यह भी इतना बढ़ गया कि बीस प्याले तक दुआतिशा अर्कके पीजाता था। चौदह प्याले दिनमें और ६ रात्रिमें पीता था जिनमें हिन्दुस्थानकी तौलसे ६ सेर और ईरानकी तौलसे डेढ मन शराब समाती थी। मैं उन दिनोंमें एक मुर्गेका मांस रोटी और मूलीके साथ खालेता था।

किसीको मना करनेकी सामर्थ्य नहीं थी। मेरी यह दशा होगई थी कि जब नशा उतरता तो बदन कांपने लगता। हाथमें प्याला नहीं ठहर सकता था। दूसरे लोग मुझको अपने हाथसे पिलाते थे। निदान मैंने पिताके मन्त्री हकीम अबुलफतहके भाई हकीम हमामको बुलाकर अपना हाल कहा। उसने अत्यन्त करुणा और भक्तिभावसे स्पष्ट कह दिया कि साहिबेआलम*। इस प्रकार जो आपको शराब पीते हुए ६ महीने और निकले तो फिर यह रोग असाध्य होजावेगा। यह बात उसने हितकी कही और जान प्यारी होती है इस वास्ते मैंने मान ली। उस दिनसे मैं अर्क घटाने और फलोनिया‡ खाने लगा। जितनी शराब घटाता था उतनीही फलोनिया बढ़ती जाती थी। तब मैंने कहा कि अर्कको अंगूरी शराबमें मिला दिया करें। दो भाग तो शराब हो और एक भाग अर्क रहे। मैं इसीको पीता था और कुछ कुछ घटाता भी जाता था। सात वर्षमें ६ प्याले पर आरहा। एक प्यालेमें १८। मिसकाल† शराब होती है अब पन्द्रह वर्ष होगये इसी ढंगसे शराब पीता हूं न कम होती है न अधिक। रातको पीता हूं परन्तु गुरुवारके दिन जो मेरे राज्याभिषेकका दिन है पिछले पहरमें पी लेता हूं, रातको नहीं पीता। क्योंकि यह रात जो सप्ताह भरकी रातोंमें पवित्र है और एक पवित्र दिन (शुक्र) की लानेवाली है, मैं नहीं चाहता कि मतवालेपनमें व्यतीत हो और सुख सम्पत्ति देने वाले प्रभुके भजन और स्मरणमें चूक पड़ जावे।

मैं गुरुवार और रविवारको मांस भी नहीं खाता। गुरुवार तो

* जैसे बादशाहोंको जहांपनाह कहते थे वैसेही शाहजादोंको साहिबे आलम कहते थे।

‡ फलोनिया भंग और अफीमसे बनी हुई माजून।

† एक मिसकाल ४॥ माशेका होता है १८ मिसकालके ६ तोले ९ माशे होते हैं ६ प्यालेके ४०॥ तोले हुए।

मेरे राज्यतिलकका और रविवार मेरे पिताका जन्मदिन है। यह उनको बहुत प्रिय था वह इसको पर्वके समान मानते थे।

कुछ दिनों पीछे मैंने फलोनियाको अफीमसे बदल दिया। अब मेरी आयु सौर पक्षसे ४६ वर्ष ४ महीनेकी और सौम पक्षसे ४७ वर्ष ८ मासकी होगई है। आठ रत्ती अफीम पांच घड़ी दिन चढे और छः रत्ती एक पहर रात गये खाता हूं।

बारहवां वर्ष ।

सन् १०२५ ।

माघ सुदी ३ सं० १६७२ ता० ११ जनवरी १६१६ से
पौष सुदी १ सं० १६७३ ता० २९ दिसम्बर सन् १६१६ तक ।

ईरानकी सौगात ।

९ बहमन (माघ सुदी ११) को ईरानके बादशाहकी भेजी हुई एक अकीककी माला और कारसन्दीकां* की एक रकेबी जो बहुत सुन्दर और उत्तम थी ख्वाजा अबदुलकरीम व्यापारीके हाथ बादशाहके पास पहुंची ।

भंवर जगतसिंहकी बिदा ।

१० बहमन (फागुन सुदी ११) को कुवर कर्णका बेटा जगतसिंह अपने घरको बिदा हुआ । बादशाहने बीस हजार रुपये एक घोडा एक हाथी खिलअत और शाही दुशाला उसको दिया और उसके रक्षक हरदास झालाको भी पांच हजार रुपये घोडा और सिरोपाव इनायत किया । उसके हाथ सोनेकी छः परां** रानाके वास्ते भेजीं ।

राजा सूरजमल ।

२० (चैत बदी ६) को राजा बासूका बेटा सूरजमल बादशाह की सेवामें उपस्थित हुआ । इसका राज्य कांगडेके पडोसमें था इस लिये मुरतिजाखांके साथ कांगडा फतह करनेको भेजा गया था परन्तु मुरतिजाखांको इससे कुछ सन्देह होगया था और उसने इसके वहां रहनेमें हानि देखकर बादशाहको बड़े अर्जियां भेजी थीं इससे बादशाहने इसे बुलाया था ।

---

* एक प्रकारका जडावका काम ।

** इस वस्तुका कुछ ब्योरा नहीं मिला ।

अहदाद पठानकी हार।

अकबर बादशाहके समयसे अबतक अहदादका उपद्रव काबुल के पहाड़ोंमें चला जाता था। दस वर्षसे लगातार फौजें उसके ऊपर जारही थीं जिनसे वह लड लडकर अन्तको जरखी नामक एक पहाडोंमें जा बैठा था। उसको भी खानदौरांने घेर रखा था। अहदाद रातको अनाज और चारा लानेके वास्ते निकला करता था। कभी कभी उसके साथी मवेशी चरानेको पहाडोंसे उतरते थे। एक रात जरखीकी तराईमें अहदादसे और खानदौरांसे मुठभेड़ होगई। अहदाद दोपहर तक लडकर भागा। परन्तु जरखीमें जानेका अवसर न पाकर कन्धारकी ओर निकल गया। बादशाही फौजने जरखीमें प्रवेश करके उसके घर जला दिये तीनसौ पठान मारे गये और एकसौ कैद हुए।

अम्बरकी हार।

बहुतसे बरगी जो दक्षिणमें उपयुक्त और मजबूत लोग हैं अंबर से रूठकर बालापुरमें शाह नवाजखांके पास चले आये थे। शाह नवाजखांने आदमखां, याकूतखां, जादूराय बापूकाटिया आदि उनके सरदारोंको हाथी घोडे रुपये और सिरोपाव देकर शाही नौकरीमें लगा लिया और फिर इनको साथ लेकर अंबरके ऊपर कूच किया। उधरसे दक्षिणी सरदार महलदार, दानिश, दिलावर, बिजली और फीरोज सेना लेकर आये। परन्तु लड़ाई में परास्त होकर अंबरके पास लौट गये। अंबरने बडे अभिमान से लडनेका उद्योग करके बादशाही छावनी पर चढ़ाई की। कुतुबुलमुल्क और आदिलखांकी सेनाएं भी एक तरल तोपखाने सहित उसके साथ थीं। २५ बहमन (फागुन बदी १२) रविवारको पिछले दिनसे अन्धेरे और उजालेके दो दलोंमें दंगल हुआ। पहले बाण और गोले चले। फिर दाराबखांने जो अगली सेनाका अफसर था राजा बरसिंहदेव रायचन्द अलीखां तातारी और जहांगीरकुली आदि सरदारोंके साथ तलवारें सूतकर शत्रुकी अगली सेनापर धावा

किया और उसको हराकर गोल अर्थात् बीचकी सेनाको जा दबाया। वहां दो घडी तक ऐसे घमासानका युद्ध हुआ कि देखने वाले दङ्ग होगये। लाशोंके ढेर लग गये अंबर सम्मुख ठहर न सका भागा। जो अन्धेरी रात उसके बचानेको बीचमें न आजाती तो वह और उसके साथियोंमेंसे कोई न बचता। बादशाही सवार दोतीन कोसतक तो पीछे गये फिर घोडोंके थक जानेसे आगे न जा सके। शत्रुका पूरा तोपखाना तीनसौ ऊंटवानोंसे भरे हुए जंगी हाथी ताजी घोड़े और बहुतसे हथियार हाथ आये। बहुतसे सरदार पकडे गये। जो कटकर या घायल होकर पडे थे उनकी कुछ गिनती न थी। फिर बादशाही सेना करकी पर गई जहां शत्रुकी छावनी थी। परन्तु वहां किसीको न देखा क्योंकि सब लोग खबर पाकर भाग गये थे। सेना कई दिन करकीमें रही और शत्रुओंके घर जलाकर रोहनखेडकी घाटीसे उतर आई।

बादशाहने इस सेवाके बदलेमें अपने नौकरोंके मनसब बढ़ाये।

खोखरा और हीरेकी खान।

तीसरी बधाई बादशाहको यह पहुंची कि खोखरेकी विलायत और हीरेकी खान इब्राहीमखांके परिश्रमसे फतह हुई। बादशाह लिखता है—"यह विलायत तथा खान बिहार और पटनेके अन्तर्गत है। वहां एक नदी बहती है। जब उसका पानी कम होता है तो उसमें खड्डे और गढ़े निकल आते हैं उनमेंसे जिसके नीचे हीरे होते हैं उस पर बहुतसे भींगे उडा करते हैं। इस पहचानसे वह लोग जो इस कामको जानते हैं नदी तक उन गढ़ोंके किनारों में पत्थर चुन देते हैं और फिर उनको कुदाल फावडोंसे दो डेढ़ गज गहरा खोदते हैं और वहां जो रेत और कांकर निकलते हैं उसमें ढूढ़कर छोटे बड़े हीरे निकालते हैं। कभी कभी ऐसे हीरे भी निकलते हैं जिसका मूल्य एक लाख रुपये तक होता है।

यह भूमि और खान दुर्जनसाल नामक एक हिन्दूके अधिकार में थी। बिहारके हाकिम उसके ऊपर बहुत सेना भेजते थे और आप

भी जाते थे परन्तु रास्ता विकट था जंगल बहुत पडते थे। इस लिये दो तीन हीरोंके लेने पर सन्तोष करके चले आते थे। जब यह सूबा जाफरखांसे उतरकर इब्राहीमखांको मिला तो मैंने बिदा करते समय उससे कहा कि उस विलायत पर जाकर उसको उस अधम पुरुषसे छीन ले। इब्राहीमखां विहारमें पहुँचतेही सेना सजकर उस जमींदारके ऊपर गया और उसने पूर्ववत् अपने आदमी भेजकर कई हीरों और हाथियोंके देनेकी प्रार्थना की। पर खानने स्वीकार न करके शीघ्रतासे उसके देशमें प्रवेश किया और उसकी सेनाके तय्यार होनेसे पहलेही धावा किया। उसको समाचार पहुँचते पहुंचते उस घाटीमें जा पहुँचा जहां उसका घर था। घाटीको घेरकर उसकी खोजमें आदमी भेजे वह एक गुफामें छिपा हुआ मिला और अपनी सगी तथा सौतेली दो माता और एक भाईके साथ पकडा गया। जो हीरे उसके पास थे वह सब लेलिये गये। २३ हाथी हथिनी भी हाथ आये।

इस सेवाके बदलेमें इब्राहीमखांका मनसब बढ़कर चार हजारी जात और सवारोंका होगया और उसको फतहजंगकी पदवी मिली। जो लोग साथ थे उनकी भी वृद्धि हुई। अब वह विलायत राज पारिषदोंके अधीन है। लोग उस नदीमें काम करते हैं। जितने हीरे निकलते है दरगाह में आते हैं। इन्हीं दिनोंमें एक बड़ा हीरा पचास हजार रुपयेका मिला था। जब कुछ और काम होगा तो आशा है कि अच्छे अच्छे हीरे मेरे निजके रत्न भाण्डारमें आने लगेंगे।

ग्यारहवां नौरोज।

१ रबीउलअव्वल (चैत सुदी ३) रविवार संवत् १६७२ को सूर्य्य मीनसे मेख राशिमें आया। दीवानखाने खासोआमका आंगन बहुमूल्य डेरों तम्बुओं और फरंगी परदों तथा जरीके दिव्य वस्त्रोंसे सजाया गया था बादशाह वहीं राज्यसिंहासन पर बैठा। शाहजादों अमीरों मन्त्रियों और सब नौकरोंने झुकाकर सलाम किया और बधाई दी।

हाफिज नादअली कलावत पुराने सेवकोंमेंसे था इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि सोमवारको जो भेट आवे वह सब इसको दीजावे।

चौथे दिन खानजहांकी भेट आगरेसे आई उसमें हीरे मोती एक हाथी और कुछ जडाऊ पदार्थ पचास हजार रुपयेके थे।

पांचवें दिन कुंवर कर्णने अपने देशसे आकर मुजरा किया। एक सौ मुहरें और एक हजार रुपये नजर तथा एक हाथी साज सहित और चार घोडे भेट किये।

सातवें दिन आसिफखांके मनसब पर जो चार हजारी जात और दो हजार सवारका था हजारी जात और दो हजार सवार और बढाये गये। उसको नक्कारा और झण्डा भी इनायत हुआ।

इसी दिन मीर जमालुद्दीनकी भेंट हुई वह सबही बादशाहको पसन्द आगई। उसमें एक खञ्जरकी जडाऊ मूठ पचास हजार रुपये की थी जिसमें हीरे मोतियोंके सिवा पीलेरङ्गका एक बडा अपूर्व याकूत* जडा हुआ था वह मुर्गीके अंडेके बराबर था। बादशाहने उसके मनसब पर एक हजार सवार बढा दिये जो पांचहजारी जात और साढे तीन हजार सवारोंका होगया।

नवें दिन अबुलहसनकी भेटमें चालीस हजार रुपयेके जवाहिर जडाऊ चीजें और उत्तम कपडे लिये गये।

तातारखां बकावलबेगी (बावरचीखानेके दारोगा) की भेट हुई उसमें लाल, याकूत, एक जडाऊ तखतो और कपडे थे।

दसवें दिन दक्षिणसे तीन हाथी राजा महासिंहके और लाहोर से एक सौ कई जरीके थान मुरतिजाखांके भेजे हुए पहुचे।

दियानतखांने भी दो मोतियोंकी माला दो लाल छः बड मोती और सोनेका थाल भेट किया। सब २८ हजार रुपयेके थे।

११ फरवरदीन (चैत्र सुदी १२) गुरुवारको पिछले दिनमें बाद-

---

* याकूत एक प्रकारका रत्न है जिसका रङ्ग पीला नीला और सफेद होता है।

शाह एतमादुद्दौलाके घर गया और उसकी भेटका एक एक पदार्थ देखकर दो मोती तीस हजार रुपयेके एक लाल बाइस हजार रुपये का तथा और भी कई लाल और मोती एक लाख दस हजार रुपये के और पन्द्रह हजार रुपयेके कपडे पसन्द करके लेलिये। भेंट लेनेके पीछे बादशाह पहर रात गये तक वहां बैठा। सुन्दर सभा जुडी थी जो अमीर और अनुचर सेवामें थे उनको प्याले देनेका हुक्म हुआ। महलके लोग भी साथ थे।

सभा विसर्जन होने पर बादशाह एतमादुद्दौलासे बिदा होकर राजभवनमें आगया।

नूरमहलसे नूरजहां बेगम।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहने हुक्म दिया कि नूरमहल बेगमको नूरजहां बेगम कहा करें।

१२ (चैत्र सुदी १४) को एतबारखांकी भेट हुई उसमेंसे बादशाहने छप्पन हजार रुपयेके जवाहिर और जडाऊ पदार्थ लिये। जिनमें मछलीके आकारका एक जडाऊ बर्तन बहुत सुन्दर और सुडौल बादशाहके नित्यप्रति पीनेकी मदिराके अन्दाजका था।

कन्धारके हाकिम बहादुरखांके भेजे हुए सात इराकी घोड़ और नौ थान कपडोंके पहुंचे।

१३ (चैत्र सुदी १४) को इरादतखां और राजा बासूके बेटे सूरजमलकी भेंट आई।

१५ (वैशाख बदी २) को ठट्ठेकी सूबेदारी शमशेरखांसे उतरकर मुजफ्फरखांको मिली।

१६ (वैशाख बदी ३) को एतमादुद्दौलाके बेटे एतकादखांको भेट बादशाहको दिखाई गई उसमेंसे बत्तीस हजार रुपयेकी चीजें बादशाहने उठाईं।

१७ (वैशाख बदी ४।५) को तरबीयतखांकी भेट बादशाहने देखी। उसमेंसे सतरह हजार रुपयेके जवाहिर और कपड़े पसन्द किये।

१८ (वैशाख वदी ६) को बादशाह आसिफखांके घर गया जो दौलतखानेसे एक कोस था। आसिफखांने आधे रास्तेमें सादे और जरीके मखमल बिछा दिये थे जिनका मूल्य दस हजार रुपये बादशाहको सुनाया गया। बादशाह उस दिन आधीरात तक बेगमों सहित वहां रहा। उसने जो भेंट सजाई थी वह सब अच्छी तरह बादशाहने देखी। एक लाख चौदह हजार रुपयेके जवाहिर जड़ाऊ पदार्थ, कपडे, एक ऊंट और चार घोडे पसन्द करके लिये।

मेख संक्रान्ति।

१९ (वैशाख वदी ७) को सूर्य्यकी मेख संक्रान्ति*का उत्सव था। दौलतखानेमें बडी भारी मजलिस जुडी। बादशाह मुहूर्त्तके अनुसार अढाई घडी पिछले दिनसे सिंहासन पर बैठा। उसी समय बाबा खुर्रमने ८००००) का एक लाल भेट किया। बादशाहने भी उसका मनसब बढ़ाकर बीस हजारी जात और दस हजार सवारोंका कर दिया।

इसी दिन बादशाहके सौर जन्मदिवसका तुलादान१ हुआ।

एतमादुद्दौलाकी पदवृद्धि।

उसी दिन बादशाहने एतमादुद्दौलाका मनसब सात हजारी जात और पांच हजार सवारोंका करके उसको तुमन और तौग भी इनायत किया और यह हुक्म दिया कि खुर्रमके नक्कारेके पीछे उसका नक्कारा बजे।

पोता।

२१ (वैशाख वदी ९) को महतर फाजिल रकाबदारके बेटे मुकीमकी बेटीसे खुसरोके घरमें पुत्र जन्मा।

अलहदाद पठानका अधीन होना।

अलहदाद पठान अहदादसे फटकर दरबारमें आया। बाद-

* चंडूपञ्चाङ्गमें यह मेख संक्रान्ति वैशाख वदी ६ को लिखी है।

१ यह तुलादान १७ रबीउलअव्वल अर्थात् वैशाख वदी ३ को होना चाहिये था सप्तमीको मुहूर्त्तसे हुआ होगा।

शाहने २०००) रुपए उसको इनायत किये और कुछ दिन पीछे एक जड़ाऊ खपवा भी दिया।

रायमनोहरकी मृत्यु।

२५ (वैशाख बदी १२) को दक्षिणसे राय मनोहरकी मृत्युका समाचार पहुंचा। बादशाहने उसके बेटेको पांच सदी जात और तीनसौ सवारोंका मनसब देकर बापकी जागीर भी देदी।

काबुलमें उपद्रव।

कटम नाम अफरीदी पठान खैबरके घाटेका मार्गरक्षक था उसने थोड़ेसे सन्देहमें सेवा छोड़कर सिर उठाया और अपने आदमी प्रत्येक थाने पर भेज दिये जिन्होंने थानेवालोंको मारकर लूट मार मचा दी। नये सिरसे काबुलके पहाड़ोंमें अशान्ति फैल गई। जब यह समाचार बादशाहको सुनाया गया तो उसने कटमके भाई हारून और बेटे जलालको जो दरबारमें हाजिर थे पकड़वाकर ग्वालियरके किलेमें कैद रखनेके लिये आसिफखांको सौंपा।

भुजबन्ध।

खुर्रमने ६००००) का एक लाल राना का दिया हुआ बादशाह को भेट किया था। बादशाह उसको अपने हाथमें बांधना चाहता था परन्तु उसके आसपास पिरोनेके लिये वैसेही उत्तम मोतियोंकी जोड़ी भी दरकार थी। एक मोती तो मुकर्रबखांने बीस हजार रुपयेमें लेकर नौरोजकी भेंटमें अर्पण कर दिया था उसीके समान एक और मोतीकी आवश्यकता थी। खुर्रम जो बचपनमें रातदिन अकबर बादशाहके पास रहता था उसने उतनीही तौल और आकृतिका मोती पुराने सरपेचमें बताया। बादशाहने सरपेच मंगाया तो वैसाही मोती निकल आया। मानो दोनो एकही सांचेमें ढाले हुए थे। इससे सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाहने इस बातको ईश्वरकी कृपा समझकर बहुत धन्यवाद किया और

उन मोतियोंको उस लालके दोनो ओर पिरोकर प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथमें बांधा।

देशान्तरकी सौगातें।

५ उर्दीबहिश्त (वैशाख सुदी ८) को तीस इराकी और तुर्की घोड़े लाहोरसे मुरतिजाखांके भेजे हुए पहुंचे।

खानदौरांने जो काबुलसे भेंट भेजी थी उसमेंसे तिरसठ घोडे पन्द्रह ऊंट ऊंटनी, कलगीके परोंका एक दस्ता आकरी* ६, चीनी खताई† ६, मछलीके दांत जौहरदार ६ और तीन बन्दूकें बादशाह को पसन्द आईं।

एक छोटा हाथी जो हबश देशसे जहाजमें आया था मुकर्रबखां ने भेंटमें भेजा। हिन्दुस्थानके हाथियोंसे उसके कान बडे थे सूंड और पूंछ भी लम्बी थी।

अकबर बादशाहके समयमें एतमादखांने गुजरातमे हाथीका एक बच्चा भेजा था। वह जब बडा हुआ तो बहुत क्रूर और बदमाश निकला।

पठानोंका उपद्रव।

पगाना और बंकाना जातिके अफरीदी पठानोंने जो दङ्गा मचाया था उसमें खानआजमका भाई अबदुल सुबहान जो एक थाने पर था वीरता पूर्वक उन लोगोंसे लडकर मारा गया। खानआलम ईरानमें गया हुआ था। इसलिये बादशाहने वहीं उसके वास्ते शोकनिवारक पत्र और सिरोपाव भेजा।

अलहदाद पठान।

२१ (जेठ बदी १०) को अलहदाद पठान खानका खिताब मिलनेसे अलहदादखां होगया और उसका मनसब भी बढ़कर दो हजारी जात और एक हजार सवारी तक पहुंचा।

---

* आकरीका अर्थ कोशमें नहीं मिला।

† चीनकी मट्टीके उत्तम पात्र।

खानदौरां।

खानदौरांने पठानोंका बलवा मिटानेमें बड़ा परिश्रम किया था इसलिये उसको लाहोरके खजानेसे तीन लाख रुपये इनाम और मदद खर्चके दिलाये गये।

कुंवर कर्णको बिदाई।

२८ (जेठ सुदी २) को कुंवर कर्ण अपना विवाह करनेके वास्ते बिदा हुआ। बादशाहने खिलअत खासा इराकी घोड़ा जीन सहित, हाथी और जड़ाऊ परतला तलवारका उसको दिया।

मुरतिजाखां और सैफखांकी मृत्यु।

३ खुरदाद (जेठ सुदी ७) को मुरतिजाखांके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह सुनकर दुःखी हुआ क्योंकि वह अकबर बादशाहके समयका नौकर था। खुसरोके पकड़नेका बड़ा काम इसीने किया था। छः हजारी जात और पांच हजार सवारके मनसब को पहुंचा था। इन दिनोंमें किले कांगड़ेके फतह करनेमें लगा हुआ था।

७ (जेठ सुदी ११) को सैफखां बारहके भी मरनेकी खबर दक्षिणसे पहुंची, वह हैजेसे मरा था। उसने भी खुसरोंके पकड़नेमें परिश्रम करके तरक्की पाई थी। बादशाहने उसके बेटे अली-मुहम्मद और बहादुरको मनसब दिया और भतीजे सय्यदअलीका मनसब बढ़ाया।

शहबाजखां कम्बोके बेटे खूबउल्लहको रणबाजका खिताब मिला।

राजा विक्रमाजीत।

८ (जेठ सुदी १२) को बांधोंगढ़के राजा विक्रमाजीतने खुर्रमके वकीलसे दरबारमें आकर मुजरा किया। बादशाहने इसके अपराध क्षमा कर दिये। इसके बाप दादे हिन्दुस्थानके नामी राजाओंमेंसे थे।

कल्याण जैसलमेरी।

९ (जेठ सुदी १३) को कल्याण जैसलमेरीने जिसके लानेके लिये

राजा किशनदास गया था आकर मुजरा किया। एक हजार मोहरें और एक हजार रुपये नजर किये। उसका बड़ा भाई राव भीम था। जब वह मरा तो उसका लड़का दो महीनेका बालक था। वह भी ज्यादा न जिया। बादशाहने पिछली पीढ़ियोंके संबंधसे इसको बुलाकर राजतिलक और रावलका खिताब दिया।

राजामान।

बादशाहको खबर पहुंची कि मुरतिजाखांके मरने पर राजा मानने कांगड़ेके किलेवालोंको ढारस देकर वहांके राजकुमारको जो २९ वर्षका था दरबारमें लेआनेकी बात ठहराई है।

बादशाहने इस उत्साहके बदलेमें उसका मनसब जो हजारी जात और आठ सौ सवारोंका था बढ़ाकर डेढ़ हजारी जात और एक हजार सवारोंका कर दिया।

पोतीकी मृत्यु।

बादशाह लिखता है कि इस¶ तारीखको एक दैवघटना हुई। उसके लिखनेको मैंने बहुत चाहा परन्तु हाथ और हृदयने साथ नहीं दिया। जब लेखनी पकड़ता था औरही दशा होजाती थी। विवश होकर एतमादुद्दौलाको लिखनेका हुक्म दिया।

एतमादुद्दौलाका लेख।

बूढ़ा भक्त गुलाम एतमादुद्दौला हुक्मसे इस तेजमय ग्रन्थमें लिखता है कि ११ तारीख खुरदाद (जेठ सुदी १४) को श्रीमान् शाह खुर्रमकी श्रीमती राजकुमारीको जिसे बादशाह बहुत प्यार करते थे बुखार चढ़ा। तीन दिन पीछे छाले निकल आये और २६ बुधवार २९ जमादिउलअव्वल (आश्विन सुदी १) को उसका प्राणपची पंचभूतके पींजरेसे स्वर्गको उड़ गया। इसलिये हुक्म हुआ कि अब चारशंबे (बुधवार) को कमशंबा लिखा करें। मैं क्या लिखूं कि इस हृदयदाहक दुर्घटनासे हजरतको कितना दुःख हुआ।

¶ तारीखका अङ्क नहीं दिया है।

दूसरे लोगोंके शोकका तो कहनाही क्या है जिनके प्राण श्रीमान की पवित्रात्मासे बंधे हुए हैं। दो दिन तक किसीका मुजरा न हुआ। जिस घरमें राजकुमारीका उठना बैठना था उसके आगे दीवार उठा देनेका हुक्म हुआ जिससे दिखाई न दे। तीसरे दिन बादशाह बड़ी व्याकुलतासे शाहजादेके घर पधारे। वहां सब बन्दे मुजरा करके निहाल हुए। रास्तेमें हजरतने अपनेको बहुत रोका तोभी आसू आंखोंसे चले आते थे और बहुत दिनों तक यही दशा रही कि जब कोई दुःखसूचक अक्षर सुननेमें आता तो अधीर होजाते थे।

शाहजादेके घर कई दिन रहे। फिर सोमवार (६) तीर* को आसिफखां‡के घर पधारे। वहांसे लौटकर नूरचश्मेमें गये। दो तीन दिन वहां दिल बहलाया। परन्तु जबतक अजमेरमें डेरे रहे अपनेको सम्हाल न सके। जब कभी राजकुमारीके नामकी भनक कानमें पड़ती तो सहसा आंसू टपकने लगते थे और राजभक्तोंका कलेजा टुकड़े टुकड़े होजाता था। जब दक्षिणको कूच हुआ तो कुछ शान्ति हुई।

राय पृथ्वीचन्द।

इस† तारीखमें राय मनोहरके बेटे पृथ्वीचन्दको राय पदवी, पांच सदी जात चार सौ सवारका मनसब और जागीर वेतनमें मिली।

---

* मूलमें तारीखका अङ्क नहीं लिखा है पर सोमवार ६ तीरको था इसलिये हमने कोष्टमें ६ बना दिया है।

‡ वह लडकी आसिफखांकी दौहित्री और एतमादुद्दौलाकी परदौहित्री थी।

† मूलमें तारीखका अङ्क नहीं है यहांसे तु० जहांगीरीमें फिर बादशाहका लेख है।

सावन वदी ३ शनिवारको बादशाह नूरचश्मेसे अजमेरके राज-भवनमें आया ।

शुजाका जन्म ।

१२ तीर (सावन वदी ७) रविवारको ३७ पल रात गये जबकि हिन्दू ज्योतिषियोंके मतसे धन लग्न २७ अंश और यूनानियोंके मत से मकर लग्न १५ अंश था आसिफखांकी बेटीसे खुर्रमके घर फिर एक लडका हुआ। बादशाहने सोच विचार कर उसका नाम शाह शुजा रखा इसके जन्मसे सबलोग हर्षित हुए।

रावल कल्याण ।

इसी दिन बादशाहने राव कल्याणको जड़ाऊ मूठकी एक तल-वार और एक हाथी दिया ।

राय कुंवर ।

गुजरातके दीवान राय कुंवरको हाथी दिया गया ।

राजा महासिंह ।

२२ (सावन वदी ३०) को राजा महासिंहका मनसब पांच सदी जातकी वृद्धि होनेसे चार हजारी जात और तीन हजार सवारोंका होगया ।

सोनेका कटहरा ।

बादशाहने कई मनोरथोंकी सिद्धिके लिये ख्वाजाजीकी कबर पर सोनेका कटहरा चढानेका संकल्प किया था। वह एक लाख दस हजार रुपयेमें बनकर तय्यार हुआ और सावन सुदी ४ को बादशाहके हुक्मसे वहां लेजाकर लगाया गया ।

परवेजका बुलाया जाना ।

परवेजसे दक्षिणकी मुहिम बादशाहके मन मुआफिक नहीं सुधरी थी। बादशाहने खुर्रमका उत्साह देखकर उसको वहां भेजने और पीछेसे आप भी कूच करनेका विचार करके परवेजको इलाहाबाद जानेका हुक्म इस आशयसे लिखा था कि जबतक हम सफरमें रहें वहांकी रक्षा करे। २८ तीर (सावन सुदी ६) को

बिहारीदास वाकआनवीसकी अर्जी बुरहानपुरसे आई जिसमें लिखा था कि शाहजादेने २० तीर (सावन वदी १२*) को यहांसे इलाहाबादको कूच कर दिया है।

राजा भावसिंह।

१ अमरदाद (सावन सुदी ८) को बादशाहने राजा भावसिंह को जड़ाऊ तुर्रा दिया।

कन्नौज और सम्भल।

खवासखांके मरनेसे कन्नौजकी हुकूमत सम्भलके फौजदार सय्यद अबदुल वहाबको मिली थी। अब मीर मुगल उसकी जगह सम्भलका फौजदार नियत हुआ और फौजदार रहने तक उसका मनसब पांच सदी जात और सवारका होगया।

रावल कल्याण।

२१ (भादों वदी ३०) को रावल कल्याणने बादशाहको तीन सौ मोहरें ८ घोड़े २५ ऊंट और १ हाथी भेंट किया।

महामारी।

इस साल हिन्दुस्थानके शहरोंमें महामारी फैल रही थी जो पिछले वर्ष पंजावके परगनोंमें प्रगट हुई थी। बढते बढते लाहोर में जा पहुंची। जिसमें बहुतसे हिन्दू मुसलमान मर गये। फिर सरहिन्द होकर दिल्ली तक फैल गई और उसकी तलहटीमें बहुतसे गांव और परगने उजड गये। बडी उमरके आदमियों और पुरानी तवारीखोंसे विदित हुआ कि यह रोग इस देशमें कभी नहीं आया था। उसका कारण हकीमों और विद्वानोंसे पूछा गया तो किसी किसीने कहा कि दो वर्ष लगातार सूखे निकले और मेह कम बरसा। कोई बोला कि सूखा पडने और बरसात कम होनेसे हवा

* यह खबर १० दिनमें आई थी शायद पहिले ही आगई हो। बादशाहके पास कागज पेश होनेमें भी कुछ देर लगतीही रही होगी।

बिगडकर यह रोग फैला है। कुछ लोगोंने और और बातें कहीं। पूरा ज्ञान परमेश्वरको है।

शाह ईरानकी बेटी।

५ शहरेवर (भादों सुदी १५ तथा आश्विन बदी १) को पांच हजार रुपये मीरमीरांकी माके वास्ते जो ईरानके शाह दूसरे इसमाईलकी बेटी थी व्यापारियोंके हाथ ईरानमें भेजे गये।

अबदुल्लहखां पर कोप।

६ (आश्विन बदी २) को अहमदाबादके बखशी और वाकआ नवीसकी अर्जी आई। उसमें लिखा था कि अबदुल्लहखां फीरोज जङ्गकी इच्छाके विरुद्ध मैंने कई समाचार, समाचारपत्रमें लिख दिये थे इस पर उसने मुझसे बुरा मानकर कुछ सिपाही मेरे ऊपर भेजे और अपने घर बुलाकर मेरा अपमान किया।

बादशाहने पहले क्रोधमें आकर उसको मरवा डालना चाहा परन्तु फिर दियानतखांको अहमदाबाद भेजा और उससे कहा कि वहांके निष्पक्ष पुरुषोंसे निर्णय करे। जो सच्ची बात हो तो अबदुल्लहखांको अपने साथ ले आवे और अहमदाबादका शासन उसके भाई सरदारखांके अधिकारमें रहे।

दियानतखांके जानेके पहलेही यह समाचार अबदुल्लहखाको पहुंच गये और वह डरके मारे अपनेको अपराधी ठहराकर पैदल ही राजद्वारको चल दिया। दियानतखा मार्गमें उसको मिला और उसकी यह अद्भुत दशा देखकर सवार होनेकी आज्ञा दी क्यों कि पैदल चलनेसे उसके पांव घायल होगये थे।

मुकर्रबखांको गुजरात।

मुकर्रबखां पुराना सेवक था और बादशाहकी युवराजावस्थासे ही गुजरात देशके लिये प्रार्थना किया करता था। अब जो अबदुल्लहखांसे ऐसा अपराध बन आया तो बादशाहने अपने पुराने सेवककी आशा पूरी करके उसको गुजरातकी सूबेदारी देदी।

आनन्दखां तमूरची।

शौकी तमूरा बजानेवालेको बादशाहने आनन्दखांकी उपाधि दी। बादशाह लिखता है—यह तमूरा बजानेमें अजीब है और हिन्दी फ़ारसी गतोंको ऐसा बजाता है कि दिलोंके दुःख दूर कर देता है। इस लिये मैंने इसको आनन्दखांका खिताब दिया। हिन्दी भाषामें आनन्दका अर्थ खुशी है और खुशीके दिन हिन्दुस्थान में तीर महीने (बैशाख जेठ) से आगे नहीं होते।

राना और कर्णकी मूर्ति।

बादशाहने राना और उसके बेटे कर्णकी सर्वाङ्ग मूर्त्तियां सफेद पत्थरों से गढनेकी सिलावटोंको आज्ञा दी थी। वह तैयार होकर १०(प्र० आश्विन बदी ४) को बादशाहके पास आईं। बादशाहने देखकर हुक्म दिया कि आगरे में लेजाकर दर्शनके झरोखेके नीचे बाग में खडी कर देवें ❋।

तुलादान।

२६ (प्रथम आश्विन सुदी ६)को बादशाहके सौर पचीय जन्म दिवसका पहिला तुलादान सोनेका दूसरा पारेका तीसरा रेशमका चौथा अम्बर कस्तूरी चन्दन और लोबान आदि सुगन्धित द्रव्यका हुआ। इसी प्रकार १२ तुलादान बहुमूल्य पदार्थोंके होते थे जिन का मूल्य एक लाख रुपयेसे कम नहीं होता था। इसके सिवा बादशाह बकरे और मुरगे अपनी उमरके वर्षोंके बराबर छू छू कर फकीरोंको देता।

महावतखांकी भेंट।

उसी दिन महावतखांने एक लाल जो ६५०००) में अबदुल्लह खांसे बुरहानपुरमें खरीदा था बादशाहको भेंट किया।

खानआजम और दियानतखां।

खानआजमका मनसब सात हजारी हुआ और उसके अनुसार

❋ आगरेमें अब यह मूर्त्तियां नहीं हैं होतीं तो चीजें बहुत अनोखी थीं।

जागीर देनेका हुक्म दीवानोंको दिया गया। दियानतखांका मनसब पिछली बदचलनियोंसे घट गया था। एतमादुद्दौलाके कहने से पूरा होगया।

रावल कल्याण जैसलमेरी।

रावल कल्याणका मनसब दो हजारी जात और दो हजार सवारोंका हुआ। उसका वेतन भी उसीके देशमें लगाया गया। उसको विदाका मुहूर्त्त भी उसी दिन था इसलिये हाथी, घोड़ा, जड़ाऊ खपवा, परम नरम खासा और खिलअत उसको मिला और राजी खुशी अपने देशको गया।

मुकर्रबखां।

२१ (प्रथम आश्विनसुदी १२) को मुकर्रबखां पांच हजारी जात पांच हजार सवारका मनसब, खासा खिलअत, नादरी और मोती के तुकमें सहित एक खासेके हाथी और खासेका घोड़ा पाकर आनन्दपूर्वक अहमदाबादको विदा हुआ।

जगतसिंह।

द्वितीय आश्विन बदी ८ को कुंवर कर्णका बेटा जगतसिंह स्वदेशसे आया।

कुतुबुलमुल्ककी भेंट।

११ महर (द्वितीय आश्विन सुदी ३) को गोलकुंडेके शाह कुतुबुलमुल्ककी भेंट बादशाहके सामने पेश हुई।

मिरजा अलीबेग अकबरशाही।

मिरजा अलीबेग अपनी जागीरसे जो अवधमें थी १६ (द्वितीय आश्विन बदी १३) को आया उसने एक हाथी जिसे वह शाही आज्ञानुसार वहांके किसी जागीरदारसे लाया था भेंट किया। उसकी उमर ७५ वर्षकी थी और अच्छे काम करनेसे चार हजारी मनसबको पहुंचा था। २२ (द्वितीय आश्विन सुदी ४) शुक्रवार की रातको वह ख्वाजा साहिबकी जियारतको गया था। वहीं मर गया और वहीं बादशाहके हुक्मसे गाड़ा गया।

पहलवान "पाये तख्त"।

बादशाहने बीजापुरके दूतोंको बिदा करते समय कहा था कि तुम्हारे यहां कोई नामी पहलवान या खांडेत हो तो आदिलखांसे कहकर हमारे वास्ते भिजवाना। बहुत दिन पीछे दूत फिरकर आये तो शेरअली पहलवान और कई खांडेतोंको साथ लाये। खांडेत तो कुछ योंहीसे निकले पर शेरअलीने कुश्तीमें बादशाही पहलवानोंको पछाड दिया। बादशाहने उसको एक हजार रुपये सिरोपाव, हाथी, मनसब जागीर सहित देकर अपने पास रखलिया और पहलवान "पाये तख्त" का खिताब दिया।

दियानतखां।

२४ (द्वितीय आश्विन सुदी ६) को दियानतखां अबदुल्लहखां को लेकर आया और एकसौ मोहरें भेंट कीं।

रामदास।

इसी दिन राजा राजसिंहके बेटे रामदासको हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसब मिला।

अबदुल्लहखां फीरोजजङ्ग।

२६ (द्वितीय आश्विन सुदी ८) को बाबा खुर्रमकी सिफारिशसे अबदुल्लहखांका मुजरा हुआ। बहुत सङ्कोच और पछतावेके साथ उसने एकसौ मोहरें और एक हज़ार रुपये भेंट किये।

बीजापुरके दूत।

बादशाहने बीजापुरके दूतोंके पहुंचनेसे पहले निश्चय कर लिया था कि खुर्रमको आगे भेजकर आप भी दक्षिणको प्रयाण करें और बिगडे हुए कामको सम्हालें। यह भी हुक्म दे रखा था कि दक्षिणके दुनियादारोंकी बात खुर्रमके सिवा और कोई न करे। इसलिये शाहजादा खुर्रम उस दिन बीजापुरके दूतोंको हुजूरमें लेगया। वह लोग जो प्रार्थनापत्र लाये थे वह भी बादशाहको दिखाये।

राजा मान और कांगड़ेकी मुहिम।

मुरतिजाखांके मरे पीछे राजा मान और दूसरे सहायक सरदार

दरगाहमें आगये थे। बादशाहने एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे राजा मानको कांगडा जीतनेके वास्ते भेजा और उन सब सहायकोंको उसके साथ कर दिया। सबको यथायोग्य हाथी, घोडे, सिरोपाव और रुपये दिये।

अबदुल्लहखां।

बादशाहने खुर्रमकी प्रार्थनासे अबदुल्लहखांको फिर अगला मनसब देकर शाहजादेके साथ दक्षिण जानेवाली सेनामें भरती कर दिया।

खुसरो।

खुसरो अनीराय सिंहदलनके पहरेमें था उसे ४ आबान (कार्त्तिक वदी २) को बादशाहने किसी कारण विशेषसे आसिफखां को सौंपा और एक खासेका शाल भी दिया।

ईरानका दूत।

१ आबान १७ शव्वाल (द्वितीय आश्विन सुदी ५) को ईरानका दूत मुहम्मद रजा अपने बादशाहका प्रेमपत्र घोडे और दूसरे पदार्थ लेकर आया। बादशाहने उसको जडाऊ मुकुट और सिरोपाव प्रदान किया। उस पत्रमें ईरानके शाहने बहुत कुछ प्रीति और एकता दरसाई थी इसलिये बादशाहने उसको अपनी 'तुजुक' में लिख लिया। उसके सुललित पदोंमेंसे एक पद यह भी था—हम तुम ऐसे एक होगये है कि मुझे यह सुध नहीं रही है कि तुम हो सो मैं हूं या मैं हू सो तुम हो—दोनोमें कुछ भेद भाव इस लोकमें क्या परलोकमें भी नहीं रहा है।

खुर्रमका दक्षिण जाना।

१८ शव्वाल २० आबान (कार्त्तिक वदी ६) रविवारको बाबा खुर्रमका पेशखीमा अजमेरसे दक्षिण भेजनेके वास्ते बाहर निकाला गया।

(कार्त्तिक वदी ७) सोमवारको ३ घडी दिन चढे बादशाहका दौलतखाना (कपडोंका राजभवन) भी उसी दिशाको रवाने हुआ।

१८।८ (कार्त्तिक बदी ८) को राजा सूरजमलका मनसब दो हजारी जात और दोसी सवारोंका होगया। वह शाहजादेके साथ भेजा गया था।

उल्लूका शिकार।

१८ आबान (कार्त्तिक सुदी १) को छः घड़ी रात गये एक उल्लू महलकी ऊंची छत पर आकर बैठा जो बहुत कम दिखाई देता था। बादशाहने बन्दूक मंगाकर जिधर लोग उसको बताते थे छोडी। उल्लूके टुकडे टुकडे उड़ गये। इस पर सब लोगोंने जिनमें ईरानका दूत रजाबेग भी था बडा आनन्द-घोष किया।

शाह ईरानका बेटेको मारनेका कारण।

इसी रातको बादशाहने बातोंही बातोंमें सफीमिरजाके मारनेका कारण पूछा तो रजाबेगने कहा कि वह बापके मारनेके विचारमें था। उन दिनोंमें वह न मारा जाता तो शाहको मार डालता। यही जानकर शाहने उसको मरवा डाला।

२० शुक्रवार (कार्त्तिक सुदी २) को खुर्रमके विदा होनेका मुहूर्त्त था इस लिये वह अपने सजे हुए सेवकोंको लेकर राजभवन में मुजरा करने आया। बादशाहने अति अनुग्रहसे उसको इतनी चीजें दीं—

१—शाह सुलतान खुर्रमका खिताब।

२—खिलअत जडाऊ चार कुब्बका जिसके दामन और गिरेबान में मोती टंके हुए थे।

३—एक इराकी घोडा जीन सहित।

४—एक तुरकी घोडा।

५—खासेका बंसीबदन नामक एक हाथी।

६—रथ अङ्गरेजी चालका बैठकर चलनेके लिये।

७—जडाऊ तलवार खासेके परतले सहित जो अहमदनगरकी पहली जीतमें हाथ आई थी और जिसका परतला बहुत उमदा और नामी था।

८—जड़ाऊ कटार।

इस प्रकार खुर्रमने बड़ी धूमसे दक्षिणके देशोंके जीतनेको प्रयाण किया।

उसके साथियोंको भी यथायोग्य घोड़े और सिरोपाव मिले। अबदुल्लह फीरोजजङ्गको बादशाहने अपनी कमरसे तलवार खोल कर इनायत की।

चोरोंको दण्ड और नवलका हाथीसे लड़ना।

कई धाड़ी कोटवालीके चबूतरे पर धाडा डालकर बादशाही खजाना लूट लेगये थे उनमेंसे सात आदमी कुछ रुपयों सहित पकड़े आये। बादशाहने सबको तरह तरहका दण्ड दिया। जब उनके सरदार नवलको हाथीके पांवोंमें डालने लगे तो उसने अर्ज की कि हुक्म हो तो मैं हाथीसे लड़ूं। बादशाहने कहा ठीक है। एक मस्त हाथी मंगाकर नवलके हाथमें कटार दिया और हाथीके सामने किया। हाथीने कई बार उसको गिराया तो भी वह निडर वीर अपने साथियोंको भांति भांतिके कष्टोंसे मरते देखकर भी पांव रोपकर दृढतासे मरदाना हाथीके सूंड पर कटारें मारता रहा। हाथीको ऐसा बेबस कर दिया कि वह उसपर हमला करनेसे रुककर खड़ा होगया। बादशाहने उसकी बहादुरी और मरदानगी देखकर पहरेमें रखनेका हुक्म दिया। परन्तु थोड़ेही दिनों में वह दुष्टतासे अपने घरको भाग गया। बादशाहने इस बातसे अप्रसन्न होकर उधरके जागीरदारोंको उसे ढूंढकर पकड़नेका हुक्म लिखा। दैवयोगसे वह फिर पकड़ा आया। बादशाहने उसका सिर उड़वा दिया।

बादशाहका अजमेरसे कूच।

१ जीकाद २१ आबान (कार्त्तिक सुदी ३) शनिवार¶ को दो पहर पर ५ घड़ी दिन आये बादशाहने चार घोड़ोंके फरंगी रथ

¶ तुजुक पृष्ठ १६८ में भूलसे मंगल लिखा है।

(बन्ची) में बैठकर अजमेरसे प्रस्थान किया। अमीरोंको भी रथोंमें बैठकर साथ आनेका हुक्म दिया।

पौने दो कोस चलकर शामको गांव दोराईमें मुकाम हुआ।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुस्थानियोंने ऐसा स्थिर कर रक्खा है कि जो राजा और बादशाह पूर्वको ओर जावें तो दन्तीले हाथी पर सवार हों। पश्चिमको जावें तो इकरंगे घोडे पर बैठें, उत्तर को जावें तो पालकी या सिंहासन पर और दक्षिणको जावें तो रथ पर सवारी करें।

अजमेर।

बादशाह पांच दिन कम तीन वर्ष अजमेरमें रहा। अजमेरके वास्ते लिखा है कि "यहां ख्वाजा मुईनुद्दीनकी पवित्र समाधि है यह दूसरी इकलीम*में गिना जाता है। हवा यहांकी समभावकी है। पूर्वमें आगरा, उत्तरमें दिल्लीके परगने, दक्षिणमें गुजरात और पश्चिममें मुलतान तथा देपालपुर है। यह सूबा तमाम रेतीला है। खेती बरसातके पानीसे होती है। जाडा समभावका और गरमी आगरेसे कम है। ८६००० सवार और ३०४००० पैदल राजपूत लडाईके समय इस सूबेसे निकलते हैं। इस बस्ती में दो बडे तालाब हैं, एक बीसल ताल और दूसरा आनासागर। बीसल ताल सूखा है और उसका बान्ध टूट गया है। मैंने बांधनेका हुक्म दिया है आनासागर जिस पर इतने दिनों तक रहना हुआ था हमेशा पानीसे भरा रहा, यह डेढ़ कोस और पांच डोरीका है।

अजमेर ठहरनेके दिनोंमें ९ बार ख्वाजाजीकी जियारतको गया और १५ बार पुष्कर देखने। ३८ बार नूरचश्ममें जाना हुआ। ५० बार शिकारको गया। १५ सिंह १ चीता १ स्याहगोश ५३ नील गायें ३३ गेंडे ९० हरन ३४० मुरगाबी और ८० सूअर शिकार हुए।"

* दुनियाकी बस्तीका सातवां टुकड़ा।

दोराई।

दोराईमें सात दिन डेरा रहा। २८ (कार्त्तिक सुदी १२) को दोराईसे कूच होकर सवा दो कोसपर गांव रामावलीमें डेरा हुआ।

२ आजर (अगहन वदी १) को फिर सवा दो कोस पर गांव मावलमें मुकाम हुआ।

रामसर।

४ आजर (अगहन बदी २) को डेढ कोस चलकर बादशाह रामसरमें आठ दिन रहा। उक्त गांव नूरजहांबेगमकी जागीरमें था। छठे दिन कुंवर कर्णका बेटा जगतसिंह हाथी और घोडा पाकर अपने घरको विदा हुआ। केशव मारूको भी घोडा इनायत हुआ।

इन्ही दिनोंमें राजा श्यामसिंहके मरनेकी खबर सुनी गई जो बंगशके लश्करमें तैनात था।

आतिथ्यसत्कार।

गुरुवारको नूरजहां बेगमने बादशाहका आतिथ्यसत्कार किया। रत्नों, जडाऊ आभूषणों, दिव्य वस्त्रोंसे सिले हुए जोड़ों और नाना प्रकारके पदार्थोंसे सजी हुई भेंट दी। रातको वहांके विशाल तालाब पर रोशनी हुई बहुत अच्छी मजलिस जुड़ी थी। बादशाह ने अमीरोंको बुलाकर प्याले दिये।

बादशाहके साथ खुश्कीमें भी कई नावें रहा करती थीं जिनको मल्लाह लोग गाड़ियों पर लादे चलते थे। शुक्रवारको बादशाह उन्हीं नावों पर बैठकर रामसरके तालाबमें मछलियां पकडने गया और एकही जालमें २०८ मछलियां पकड लाया। उनमें आधी रोहू मछलियां थीं। वह सब रातको अपने सामने नौकरोंको बांट दीं।

१३ (अगहन वदी ११) रामसरसे कूच होकर चार कोस पर गांव वलोदेमें और १६ (अगहन वदी १४) को सवा तीन कोस चल कर गांव निहालमें डेरे हुए। १८ (अगहन सुदी १) को सवादो कोस पर गांव जोंसेमें मुकाम हुआ। वहां बादशाहने ईरानके दूतको एक हाथी दिया।

सारसोंकी पुकार।

२७ (अगहन सुदी २) को बादशाह शिकार खेलता सवा तीन कोस चलकर देवगांवमें उतरा। यहां यह विचित्र बात उसके देखनेमें आई कि सवारी आनेसे पहले एक खोजा तालावसे दो बच्चे सारसके पकड लाया था। रातको दो सारस गुसलखानेके पास जो उसी बड़े तालाब पर लगाया गया था चिल्लाते हुए आये और निर्भय होकर फरयादीकी भांति पुकारने लगे। बादशाहने अपने दिलमें कहा कि अवश्य इनके ऊपर अन्याय हुआ है। शायद कोई इनके बच्चे पकड लाया होगा। जब इस बातकी खोज की गई तो उस खोजेने वह दोनो बच्चे लाकर भेंट किये। ज्योंही सारसोंने बच्चोंकी बोली सुनी दौडकर उनके ऊपर आगिरे और भूखा समझकर अपनी चोंचसे चुग्गा उनके मुंहमें देने लगे। फिर उनको बीचमें लेकर पर फटकारते हुए प्रसन्नतापूर्वक चले गये।

२३ (अगहन सुदी ६) को देवगांवसे कूच होकर सवातीन कोस पर गांव भालूमें दो दिन तक सवारी ठहरी।

२६ (अगहन सुदी १०) को दो ही कोसकी मञ्जिल हुई बादशाह दो दिन गांव काकलमें ठहरा।

२९ (अगहन सुदी १२) को (उस दिन त्रयोदशी भी थी) पौने तीन कोस सवारी चली और गांव लासेमें पड़ाव हुआ। इसी दिन बकराईद भी थी।

३० (अगहन सुदी १४) को "आजर"का महीना पूरा हुआ। बादशाहने अजमेर छोडनेके पीछे इस महीनेमें ६७ नील गायें तथा हरन और ३७ मुर्गावियां और जलकव्वे मारे थे।

२६ (पौष बदी १) को लासेसे डेरे उखड़े। तीन कोस दस जरीब पर गांव छानड़ेमें लगे।

४ (दूसरी तीज) को कूच होकर सवा तीन कोस गांव सूरठमें मुकाम हुआ। चौथ को साढ़े चार कोस पर गांव बरदड़ामें सवारी उतरी।

राणाकी हाजिरी।

पौष वदी ५ को मोतमिदखांकी अर्जी आई जिसमें लिखा था कि जब शाह खुर्रम राणाकी विलायतके पास पहुंचा और उधरका कुछ उद्योग नहीं था तोभी राणा बादशाही सेनाकी धाकसे उदय-पुरमें आकर पूरा पूरा आदाब बजा लाया।

शाहखुर्रमने भी उसका पूरा सत्कार किया। खिलअत, चारकुब्ब जडाऊ तलवार, जडाऊ खपवा तुरकी और इराकी घोडे तथा हाथी देकर बडे मानसे बिदा किया। उसके बेटे और पास वालों को भी सिरोपाव दिये। राणाने जो पांच हाथी २४ घोडे जवाहिर और जडाऊ पदार्थ एक थालमें भरकर भेट किये थे उनमेंसे केवल तीन घोडे लेकर बाकी उसीको देदिये और यह बात ठहरी कि उसका बेटा पन्द्रह सौ सवारोंसे इस दिग्विजयमें साथ रहे।

राजा महासिंहके बेटे।

१० (पौष वदी ८) को राजा महासिंहके बेटोंने अपने वतनसे आकर रणथम्भोरके पास बादशाहको मुजरा किया। तीन हाथी और ८ घोडे भेट किये। बादशाहने उनको यथायोग्य मनसब दिये।

बादशाह रणथम्भोरमें।

जब बादशाह रणथम्भोरमें पहुंचा तो उस किलेके बहुतसे कैदी छुडवा दिये। यहां दो दिन डेरे रहे। बादशाह रोज शिकारको जाता था ३८ मुर्गाबियां और जलकव्वे शिकार हुए।

१२ (पौष वदी १०) को चार कोस चलकर गांव कोदलेमें सवारी ठहरी १४ (१२) को सवा तीन कोस पर गांव पलाटोरमें मुकाम हुआ। यहांका तालाब जिस पर बादशाही दौलतखाना खडा हुआ था बादशाहके पसन्द आगया। इससे दो दिन मुकाम रहा। रणथम्भोर महाबतखांकी जागीरमें था उसका बेटा बहरेवर किलेमें रहता था। उसने आकर दो हाथी भेट किये दोनोंको खासेके हाथियोंमें रखे गये।

आप मर जावेगा। बादशाहने कहा कि जो ऐसाही है तो जिबहकर डालो। पर जब उसके गले पर छुरी रखी गई तो वह फरसे उड़ गया। फिर जब बादशाह नावसे उतरकर घोड़े पर बैठा तो एक चिड़िया हवाके झोंकेसे एक शिकारीके बरछे पर गिरी और उसकी भालमें छिद कर मर गई। बादशाहने दैवगतिकी इस विचित्रता से अति आश्चर्य करके कहा "वहां तो मृत्युविहीन तीतरको थोड़े ही समयमें वैसे तीन संकटोंसे बचाया और यहां मृत्युवश चिड़ियाको इस प्रकार भालेमें पिरोकर मारा।" जलवायु और स्थलकी उत्तमता देखकर यहां भी दो दिन बादशाहने विश्राम किया।

रावत सगरके मनसब पर इब्राहीमखां फीरोजजंगकी प्रार्थनासे पांच सदी जात और एक हजार सवारकी वृद्धि हुई।

६ (माघ बदी ४) को कूच हुआ। बादशाह डेढ़ पाव चार कोस चलकर चांदाके घाटेसे गांव अमजारमें पहुंचा। यह घाटा हरे भरे वृक्षोंसे बहुत शोभायमान था। वहां तक अजमेरकी सीमा ८४ कोस थी। अब इस गांवसे मालवेका सूबा लगता था। यहां नूरजहांने एक कुरीशा (पक्षी) बन्दूकसे मारा था। अबतक वैसा बड़ा और सुरंग कुरीशा बादशाहने नहीं देखा था तुलवाया तो १९ तोले ५ माशेका उतरा

सूबा मालवा।

बादशाह लिखता है—"मालवा दूसरी इकलीममें है इसकी लम्बाई विलायत "करने" (गढ़)के नीचेसे बांसवाडेकी विलायत तक २४५ कोस और चौड़ाई चंदेरीसे नंदखार परगनेतक २३० कोसकी है। इसके पूर्वमें बांधोंकी विलायत उत्तरमें नरवरका किला दक्षिणमें बगलाना और पश्चिममें गुजरात तथा अजमेरके सूबे हैं। यह बहुत सजल विलायत है जलवायु अच्छा है नहरों नदियों और झरनोंके सिवा इसमें पांच बड़े दरिया बहते हैं—१ गोदावरी २ भीमा ३ कालीसिन्ध ४ नीरा (वेतवा) ५ नर्बदा। यहां वायु समभाव रहता है भूमि

पास पड़ौससे कुछ ऊंची है। दाखकी बेलें एक वर्षमें दोबार फलती हैं—एक बार मीनकी सक्रान्ति लगनेके समय और दूसरे सिंह संक्रान्तिके प्रारम्भमें। परन्तु पहली ऋतुका अंगूर अधिक मीठा है। मालवेकी जमा चौबीस करोड सात लाख दामकी है और काम पडने पर नौ हजार तीन सौ कई सवार चार लाख सत्तर हजार तीन सौ पैदल और एक सौ हाथी इस सूबेसे निकलते हैं।

८ (माघ वदी ५) को ४ कोस अढाई पाव रास्ता काटकर बादशाह गांव खैराबादके पास उतरा। फिर तीन कोसतक शिकार खेलता हुआ गांव सिधारेमें पहुंचा और माघ वदी ८ को वहीं रहा।

१२ (माघ वदी ९) को गांव वछयाडोमें ठहरा। यहां राना अमरसिंहके भेजे हुए कई टोकरे अंजीर पहुंचे। बादशाह लिखता है—"सच तो यह है कि अच्छा मेवा है। अबतक मैंने हिन्दुस्थानके अंजीर ऐसे सरस नहीं देखे थे परन्तु थोड़े खाने चाहियें बहुत खानेमें हानि है।"

१४ (माघ वदी ११) को कूच हुआ। डेढपाव चार कोस चलकर गांव वलवलीमें पडाव पडा। राजाने जो उसप्रान्तके बडे जमीन्दारोंमेंसे था दो हाथी बादशाहके नजरको भेजे थे वह यहां देखे गये और यहीं हिरातके खरबूजे भी आये। पचास ऊंट भरकर खान-आलमने भी भेजे थे। पिछले वर्षोंमें कभी इतने अधिक खरबूजे नहीं आये थे। एक थालमें कई प्रकारके मेवे लगकर आये जैसे—

हिरात, बदख्शां और काबुलके खरबूजे।

समरकन्द और बदख्शांके अंगूर।

समरकन्द, बदख्शां, कश्मीर, काबुल और जलालाबादके सेव।

अनन्नास जो फरङ्गदेशके टापुओंका मेवा है और आगरेमें उसकी पौद लगाई गई थी। हरसाल कई हजार महालके सरकारी बागोंमें फलता है।

कोला जो नारङ्गीसे छोटा, बहुत मीठा और बङ्गालमें अच्छा होता है।"

बादशाह लिखता है—"इन न्यामतोंका शुक्र मैं किस जबानसे अदा करूं। मेरे बापको मेवेका बहुत शौक था खासकरके खरबूजे अनार और अंगूरका। उनके समयमें हिरातके उत्तम खरबूजे यज्दके अनार, जो जगत प्रसिद्ध हैं और समरकन्दके अंगूर हिन्दुस्थानमें नहीं आये थे। यह मेवे देखकर अफसोस होता है कि उस समयमें आते तो वह भी इनका स्वाद लेते।"

१६ (माघ बदी १३।१४) को कूच होकर डेढ़ पाव चार कोस पर गांव गिरीमें बादशाहकी सवारी ठहरी। यहां बादशाहने बटूकसे एक शेरबबर मारा। इस सिंहकी वीरता बहुत मानी जाती है इसलिये बादशाहने उसका पेट चिरवाकर देखा। और सब पशुओंका पित्ता तो कलेजेके बाहर होता है पर इसका कलेजेके भीतर था इससे उसने अनुमान किया कि इसकी वीरता इसी कारणसे होती है।

१८ (माघ सुदी १) को २॥ कोस पर गांव अमरियामें डेरा हुआ दूसरे दिन बादशाह शिकारको गया तो दो कोस पर एक गांव बहुत सुन्दर और सुथरा मिला। एक बागमें आमके एक सौ पेड़ इतने बड़े और डहडहे थे कि वैसे कम देखे गये थे उसी बागमें एक बड़ भी बहुतही बड़ा था। बादशाहने उसको नपवाया तो वह जमीनसे ७४ गज ऊंचा और १७५॥ गज चौड़ा निकला। तनेकी गोलाई ४४॥ गजकी थी।

एतमादुद्दौलासे परदा न करनेका हुक्म।

२० (माघ सुदी ३) को कूच और ४ को मुकाम हुआ। एतमादुद्दौलाके घरमें ख्वाजा खिजरका उत्सव था। बादशाह भी वहां गया और खाना खाकर एक पहर रात गये लौट आया। एतमादुद्दौलासे कुछ भेद भाव नहीं रहा था। इसलिये बादशाहने बेगमों को उससे मुंह न छिपानेकी आज्ञा देकर उसकी और प्रतिष्ठा बढ़ाई।

दुधारिया ।

२२ (माघ सुदी ५) को तीन कोस आध पाव चलकर बादशाह नवलखेडीमें ठहरा। २३(७) को पांच कोस चलकर कासिमखेडेमें उतरा। एक सफेद जानवर मारा जिसके सिर पर चार सींग थे। दो तो आंखोंके पिछले कोयोंके पास दो दो उङ्गल ऊंचे थे। बाकी दो जो पहलेसे चार उङ्गल पोछेको थे चार चार उङ्गल ऊंचे थे। हिन्दुस्थानी इसको दुधारिया कहते हैं। नरके चार सींग होते है मादाके सींग नहीं होते।

लोग कहते थे कि इसके पित्ता नहीं होता। बादशाहने चिरवा कर देखा तो पित्ता था। लोगोंका कहना झूठ निकला।

कुलीचखां ।

२५ (माघ सुदी ८) को बादशाहने कुलीचखांके भतीजे मालजू को दो हजारी जात दो हजार सवारका मनसब और कुलीचखां का खिताब देकर अवधसे जहां उसको जागीर थी बङ्गालमें भेज दिया।

२६ (माघ सुदी ९) को सवारी ४॥ कोस चलकर कासियोंके गांवमें उतरी जो उज्जैनके पास था। यहां बहुतसे हच आमोंके बौराये हुए थे और डेरा नदीके तट पर बहुत सुन्दरतासे लगाया गया था।

पहाड जालोरीको प्राणदण्ड ।

गजनीखांका बेटा पहाड इस स्थान पर मारा गया। बादशाह लिखता है—"इस कुपात्रको मैंने उसके बापके मरे पीछे कृपाकरके जालोरका किला और इलाका जो इसके बाप दादाका स्थान था इनायत किया था। यह बालक था। इसको माता इसे कई बुराइयोंसे बचानेकी चेष्टा करती थी। इससे इस कलङ्कीने एक रात कई नौकरोंके साथ अपनी जननीके घरमें जाकर उसे अपने हाथसे मारा। यह खबर जब मुझे मिली तो मैंने उसे बुलाया और अपराध साबित होने पर प्राणदण्डका हुक्म दिया।"

खजूरका पेड।

यहां बादशाहने एक विचित्र खजूरका पेड देखा। जडमें उसका तना एक था। ६ गज ऊपर जाकर वह दोहरा होगया था। एक तरफ दस गज ऊंचा था दूसरी तरफ ९॥ गज। बीचमें ४॥ गजका अन्तर था। जमीनसे फल पत्तों तक एक तनेकी ऊंचाई १६ गज और दूसरेकी १५॥ गज थी। पत्तोंसे चोटी तक अढ़ाई गज ऊंचाई थी। गोलाई पौने तीन गज थी। बादशाहने उसके नीचे तीन गज ऊंचा एक चबूतरा बनवाकर चित्रकारोंको आज्ञा दी कि जहांगीरनामेमें उसका चित्र खेंचलें।

२७ (माघ सुदी १०) को कूच होकर आधपाव दो कोस पर गांव हिन्दुवालमें सवारी ठहरी।

२८ (माघ सुदी ११) को बादशाह दो कोस चलकर कालिया-दहमें ठहरा।

कालियादह।

कालियादह एक राजभवन है जो मालवेके सुलतान महमूद खिलजीके पोते सुलतान गयासुद्दीनके बेटे सुलतान नासिरुद्दीनने उज्जैनमें बनवाया था। कहते हैं कि गरमी उसके मिजाजमें बहुत बढ गई थी। इससे पानीमें रहा करता था और इस भवनको नदीमें बनवाकर पानीकी नहरें हर तरफसे अन्दर लाया था। उचित स्थानों पर छोटे छोटे हौज बनवाये थे उनमें वह नहरें गिरती थीं।

बादशाह लिखता है—"यह बहुत मनोहर और आनन्दप्रद विलासस्थान है। हिन्दुस्थानके उत्तमोत्तम विशाल भवनोंमेंसे एक भवन यह भी है। मैंने अपने आनेसे पहिले सिलावटोंको भेजकर इस स्थानको सुधरवा दिया था। मै इसकी शोभा पर मोहित होकर तीन दिन तक वहां ठहरा रहा।"

उज्जैन।

उज्जैनके विषयमें बादशाह लिखता है—"उज्जैन पुराने शहरों

मेंसे है हिन्दुओंके पूज्य स्थानोंमेंसे एक यह भी है। राजा विक्रमाजीत जिसने खगोलका शोधन कराया था इसी नगर और देशमें हुआ है। उस समयसे अबतक कि हिजरी सन् १०२६ है और ११ वर्ष मेरे राज्याभिषेकको हुए हैं १६७५ वर्ष बीते हैं। हिन्दुस्थानके ज्योतिषियोंका आधार उसी शोधन पर है।

सपरा नदी।

यह नगर सपरा नदी पर बसा है हिन्दुओंका ऐसा विश्वास है कि साल भरमें एक बार जिसका कोई दिन निश्चित नहीं है इस नदीका पानी दूध होजाता है। मेरे पिताके समयमें शेख अबुलफजल मेरे भाई शाहमुरादको सम्हालके वास्ते यहां भेजा गया था। तब उसने इस शहरसे अर्जी लिखी थी कि बहुतसे हिन्दू मुसलमानों ने साखी दी है कि मेरे आनेसे पहिले एक रातको यह पानी दूध होगया था। उस रात्रिमें जिन लोगोंने उस पानीको भरा था तड़के उनके घड़ोंमें दूध था, परन्तु मेरी बुद्धि इस बातको नहीं मानती है।"

जदरूप सन्यासी।

बादशाह लिखता है—"२२ असफन्दार (माघ सुदी १५) को नावसे बैठकर मैंने कालियादहसे प्रयाण किया। यह बात अनेक बार सुनाई गई थी कि जदरूप नाम एक तपस्वी सन्यासी कई वर्षों से उज्जैनसे कुछ दूर जङ्गलमें भगवत् भजन करता है। मुझे उसके सत्सङ्गकी बड़ी इच्छा थी। जब मैं आगरेमें था तो चाहता था कि उसको बुलाकर मिलूं परन्तु उसकी तकलीफका विचार करके नहीं बुलाया था। अब उज्जैन पहुंचकर नावसे उतरकर आधपाव कोस पैदल उसके देखनेको गया। वह एक गुफामें रहता है जो एक गज लम्बी दस गज चौड़ी एक टेकरीमें खुदी हुई है। पहला द्वार उसमें जानेको महराबके आकारका है। वहांसे उस गढ़े तक कि जिसमें वह बैठता है दो गज पांच गिरह लम्बाई और एक गज ग्यारह गिरह चौडाई है और ऊंचाई धरतीसे छत तक एक गज

तीन गिरह है। जो सुरङ्ग उस खोहमें जाती है वह साढे पांच गिरह लम्बी और साढ़े तीन गिरह चौडी है। उसमें एक दुबला पतला पुरुष भी बड़े परिश्रमसे प्रवेश कर सकता है और उसकी लम्बाई चौडाई भी इसी प्रमाणकी होगी। न उसमें चटाई है न कोई घासका बिछौना है। वह अकेला उसी अन्धेरे गढ़ेमें रहता है। निपट नङ्गा होकर भी जाड़े और शीतल वायुमें कभी सिवा एक लंगोटीके और कोई कपडा नहीं रखता। न आग जलाता है जैसा कि मौलवी रूमने किसी एक तपस्वीका वाक्य लिखा है—

'हमारा वस्त्र दिनमें धूप है, रात्रि बिछौना और चान्दनी ओढना है।'

वही गति इसकी भी है। इस विश्रामस्थानके पासही पानी बहता है वह उसमें नित्य दोबार जाकर नहाता है और एकबार बस्तीमे आकर सात ब्राह्मणोंके घरोंमेंसे जो उसने अङ्गीकार कर रखे है तीन घरोंसे पांच ग्रास भोजनके (जो उन्होंने अपने वास्ते बनाया हो) हथेलीपर लेकर बिना चबाये और स्वाद लियेही निगल जाता है। यह ब्राह्मण भी गृहस्थ हैं और उसके भक्त हैं पर इसके साथ यह कई नियम भी है कि उन तीन घरोंमे शोक और सूतक न लगा हो न कोई स्त्री रजस्वला हुई हो। उसकी यही जीवनवृत्ति है। वह लोगोंसे नहीं मिलना चाहता है परन्तु बहुत विख्यात होजानेसे लोग आपही उसके दर्शनको आते है। बुद्धिसे शून्य नहीं है वेदान्तविद्यामें निपुण है। मैं छः घडी तक उसके पास रहा उसने अच्छी अच्छी बातें कहीं जिनका मुझ पर बड़ा प्रभाव हुआ और उसको भी मेरा मिलना अच्छा लगा। मेरे पिता भी जबकि वह आसेरगढ़ और खानदेश जीतकर आगरेको लौटे थे उससे इसी जगह पर मिले थे और उसे सदा याद किया करते थे।"

ब्राह्मणोंकी वर्णव्यवस्था।

हिन्दुस्थानके विद्वानोंने हिन्दुओंमें उत्तम वर्ण ब्राह्मणके जीवनके चार आश्रम नियत किये हैं। ब्राह्मणोंके घरमें जो बालक जन्म

लेता है उसको सात वर्ष तक ब्राह्मण नहीं कहते न कोई बन्धन उसके वास्ते है। जब आठवां वर्ष लगता है तो एक सभा रचकर ब्राह्मणोंको बुलाते हैं जो मन्त्र पढकर मूंजको सवा दो गज लम्बी एक रस्सीमें तीन गांठें अपने पूज्य तीन देवताओंके नामकी लगाते है और उस लडकेकी कटिमें बांधते हैं। फिर कच्चे सूतका जनेऊ बटकर उसके दहने कन्धेमें बद्धीकी भांति डालते है और एक गजसे कुछ अधिक लम्बी लकडी और एक कमण्डल आत्मरक्षा और पानी पीनेके लिये उसके हाथमें देकर उसे किसी विद्वान ब्राह्मणको सौंप देते है। वह बारह वर्ष तक उसके घरमें रहकर वेद पढता है। उस दिनसे वह ब्राह्मण कहलाता है उसका यह कर्तव्य है कि भूलकर भी विषयवासनामें,न पडे। जब आधा दिन बीत जावे तो किसी दूसरे ब्राह्मणके घरमें जाकर जो कुछ भिक्षा मिले गुरुके पास ले आवे और उसकी आज्ञासे (आप भी) भक्षण करे और सिवा एक लङ्गोटी और दो तीन गज गलीके और कुछ कपडा अपने पास न रखे। इस अवस्थाको ब्रह्मचर्य्य अर्थात् वेदपाठ कहते हैं। इसके पीछे गुरु और पिताकी आज्ञासे विवाह करे और जबतक पुत्र न हो पांचों इन्द्रियोंका सुख भोगे। पुत्र न होनेकी दशामें ४८ वर्ष की उमर तक पांचों इन्द्रियोंके सुख भोगनेका निषेध नहीं है। इस दशाको गृहस्थाश्रम कहते हैं। इसके पीछे भाई बन्धु इष्ट मित्र तथा भोग बिलासको छोडकर घरसे निकल जाना और जङ्गलमें रहना पडता है इसका नाम वानप्रस्थ है। हिन्दुओंमें यह भी विधान है कि धर्मका कोई काम बिना स्त्रीके जिसको अर्द्धांगिनी बोलते है सिद्ध नहीं होता है और वाणप्रस्थाश्रममें भी बड़े कृत्य करने पडते है इसलिये स्त्रीको साथ लेजाना आवश्यक है। पर वह गर्भवती हो तो घर रहे। जब बालक जन्मे और पांच वर्षका होजावे तो उसे बडे पुत्र या कुटम्बियोंको सौंपकर स्वयंभी वाणप्रस्थमें होजावे और ऐसाही स्त्रीके रजस्वला होनेपरभी करे यह तक कि वह पवित्र न होजावे। वाणप्रस्थ हुए पीछे स्त्रीका सङ्ग न

करे और रातको अलग सोवे इस प्रकार बारह वर्ष जंगलमें र
और कन्द मूल खाकर उदर पूर्ण करे। जनेऊ पहने र
और अग्निहोत्र भी करे, नख और दाढ़ी मूछ तथा मस्त
के बाल लेनेमें वृथा समय न खोवे। जब इस आश्रमकी
अवधि ऊपर लिखे विधानसे पूरी होजावे तो फिर अपने घ
आवे और स्त्रीको बेटों वा भाई बन्धुओंके पास छोडकर सतगुरु
सेवामें जावे और उसके आगे जनेऊ और जटा आदिको आग
जलाकर कहे कि मैंने सब बंधन और जप तप अपने मनसे अल
कर दिये। ऐसा करके फिर कोई वासना चित्तमें न रखे स
परमेश्वरके ध्यानमें लगा रहे और जो किसी विद्याकी भी बात क
तो वह भी वेदान्तविद्याकीही हो जिसका तात्पर्य "बा
फुगानी" ने इस प्रकार कहा है।

'इस घरमें एकही दीपक है कि जिसके प्रकाशसे जिधर देख
हूं उधरही एक समाज बनाया हुआ है।'

और इस दशाको सर्वविनाश और उसके स्वामीको सर्वविना
कहते हैं।

जदरूपके मिलापके पीछे मैं हाथी पर चढ़कर उज्जैनके बीच
से निकला और साढ़े तीन हजार रुपये दायें बायें लुटाये। फि
सवा कोस चलकर दाऊदखेडेमें जहां लशकर पडा था उतरा।

२ (फागुन बदी १) को मुकामका दिन था। फिर जदरूप
मिलनेकी इच्छा हुई। दोपहर पीछे उसके दर्शनको गया और
घड़ी तक उसके सत्संगसे अपने चित्तको प्रसन्न करता रहा। इ
दिन भी अच्छी अच्छी बातें हुईं। संध्या समय राजभवनमें लौ
आया।

आगेको कूच।

फागुन बदी ३ को बादशाह सवातीन कोस चलकर गांव जर
के पास बाग परानियामें पहुंचा। यह पड़ाव भी बहुत सुन्द
और हरा भरा था।"

फागुन वदी २ को साढ़े तीन कोस पर देपालपुरमें भेरिये तालाव पर डेरे हुए। यह सजल और सरस स्थान था इसलिये बादशाह चार दिन तक यहां रहकर जलजन्तुओंका शिकार खेलता रहा। यहां अहमदनगरके बढ़िया अंगूर आये जो बड़ाईमें तो काबुलके बढ़िया अंगूरोंको नहीं पहुंचते थे परन्तु रसमें उनसे कम न थे।

एक बड़ा वटवृक्ष।

११ (फागुन वदी १०) को कूच होकर सवातीन कोस पर दौलताबादके परगनेमें डेरे हुए। ११ को मुकाम रहा। बादशाह शिकारको गया। गांव शेखोपुरेकी सीमामें उसने एक वटवृक्ष देखा जो बहुतही बड़ा था। मोटाई १८॥ गज और ऊंचाई जड़में डालियोंकी चोटी तक १२८। गजकी थी। शाखाएं जो उसमें फूटी थीं उनका फैलाव २०३॥ गजमें था। उनमेंसे एक शाखा जो हाथी दांतके आकारमें थी चालीस गज लम्बी थी। अकबर बादशाह जब इधर होकर निकला था तो उसने एक जड़के डालेमें सवा तीन गजके ऊपर अपना पञ्जा स्मृतिके वास्ते खुदवा दिया था। अब इस बादशाहने भी दूसरी जड़की शाखामें ८ गजके ऊपर अपनी हथेली का चिन्ह खुदवा दिया और चिरस्थायी रहनेके लिये दोनों पञ्जोंको सकराने पर भी खुदवाकर उस वड़की जड़में लगा देनेका हुक्म फरमाया। फिर उसके नीचे एक सुन्दर चबूतरा बना देनेका हुक्म दिया। बादशाह जब युवराज था तो मीर जियाउद्दीन कज्वीनी (मुस्तफाखां) से मालदह*का परगना देनेको प्रतिज्ञा की थी अब इस स्थान पर उसका आलतमगा‡ कर दिया।

केशव मारू कमालपुरा।

यहांसे लशकर तो १२ (फागुन वदी ११) को बालछमें गया और बादशाह कुछ बेगमों, पारिषदों और निज सेवकों सहित इस

---

* मालदह एक प्रसिद्ध परगना बंगालमें है जहांके आम बहुत विख्यात हैं।

‡ लाल मोहरका पट्टा।

बिहार और शिकारके लिये हासिलपुरको कूच करके गांव सांगोर में पहुंचा। वहांकी हरियाली और आमोंकी छटाने उसको ऐसा मोहित किया कि तीन दिन तक वहीं रह गया। यह गांव केशो मारूसे छीनकर कमालखां किरावलको देदिया और फरमाया कि आजसे इसको कमालपुरा कहा करें।

शिवरात्रि।

यहीं शिवरात्रि हुई। बहुतसे योगी जमा होगये थे। बादशाहने इस रात्रिका विधान और विद्वान योगियोंका सत्संग किया।

राजा मानका मारा जाना।

राजा मानको बादशाहने कांगड़े पर भेजा था। जब लाहोरमें पहुंचा तो सुना कि संग्राम जो पञ्जाबके पहाड़ी राजोंमेंसे था उसके राज्यमें आकर कुछ विभाग उसका दबा बैठा है।

राजा मान पहिले संग्राम पर चढ़कर गया। संग्राममें उससे लड़नेकी शक्ति न थी। इसलिये उसके परगनोंको छोड़कर विकट पहाड़ोंमें जाछिपा। मान अभिमानसे आगे पीछेका विचार न करके उसको तलाशमें गया और थोड़ेसे सैनिकोंसे उस पर जापहुंचा। वह भी बच निकलनेका मार्ग न पाकर लड़नेको आया। दैवसंयोग से एक पत्थर राजा मानके लगा जिससे उसके प्राण निकल गये। उसके साथी बहुतसे तो मारे गये और जो बाकी बचे वह घोड़े और हथियार छोड़कर बड़े कष्टसे निकल भागे।

बादशाहका कूच।

१७ (फागुन बदी ३०)को बादशाह सांगोरसे तीन कोस चलकर हासिलपुरमें पहुंचा जो मालवेका प्रसिद्ध परगना है। वहां अंगूर और आमके वृक्षोंकी सीमा न थी। नदियां बह रही थीं अंगूर विलायतकी ऋतुसे विरुद्ध इस ऋतुमें भी यहां इतने आए हुए थे कि एक "पाजी„ भी जितने चाहता उतने मोल ले सकता था। अफीमकी क्यारियां भी खूब खिली हुई थीं। जिन में रंग

रंगके फूल देखकर बादशाह प्रसन्न होगया। अपने रोजनामचे में यह बात लिखे बिना न रहा कि ऐसी शोभाका गांव कम होता है।

२१ (फागुन सुदी ४।५)को बादशाह हासिलपुरसे चलकर दो कूचमें वडे उर्दू (लशकर) से जामिला।

सिंहका शिकार।

२२ (फागुन सुदी ६) रविवारको बादशाह लालचेमें कूच करके मांड़ोगढके नीचे एक तालावके ऊपर ठहरा। शिकारियों ने आकर तीन कोस पर एक सिंहके होनेको खबर दी। बादशाह लिखता है कि मैं रविवार और गुरुवारको बन्दूकका शिकार नहीं करता हूं तो भी यह सोचकर कि सिंह हिंसक जन्तु है मारनाही चाहिये, उसके ऊपर गया। वह एक वृक्षकी छायामें बैठा था। मैंने हाथी पर से उसके अधखुले मुंहको ताककर बन्दूक मारी। गोली उसके मुंहमें लगकर जवड़े और सिरमें बैठ गई और उनका काम तमाम होगया। जो आदमी साथ थे उन्होंने इसबातकी बहुतसी खोज की कि गोली कहां लगी। परन्तु कुछ पता न लगा. क्योंकि उसके अङ्ग प्रत्यंङ्ग पर कहीं भी गोली लगनेका चिन्ह न था। तब मैंने कहा कि इसके मुंहमें देखो। मुंह देखा तो गोली मुहमें लगी थी और उसीसे वह मरा।"

भेडियेका पित्ता।

इतने में मिरजा रुस्तम एक भेडियेको मारकर लाया। बादशाह यह देखना चाहता था कि उसका पित्ता भी सिंहकी भांति कलेजेके भितर होता है या बाहर जैसा कि और पशुओंका होता है। देखने से पाया गया कि उसका पित्ता भी कलेजेके अन्दरही होता है।

माडोंगढमें प्रवेश।

२३(फागुन सुदी ७) सोमवारको शुभ घड़ीमें बादशाह माडोमें

प्रवेश करनेको हाथी पर सवार हुआ और एक पहर २ घड़ी दिन चढे वहां पहुंचकर उस राजभवन में उतरा जो उसके वास्ते बना था। डेढ़ हजार रुपये रास्तेमें लुटाये। मांडों अजमेरसे १५८ कोस है बादशाह चार महीने दो दिनमें ४६ कूच और ७८ विश्राम करके वहां पहुंचा था। इन ४६ कूचोंमें डेरा भी दैवयोग से सुरम्य स्थानों तालावों नदियों और बड़ी बडी नहरोंके तट पर होता था जहां हरेभरे वृक्ष, लहलहाते खेत और अफीमकी फूलीहुई क्यारियां मिलती थीं। कोई दिन शिकारसे खाली नहीं गया। बादशाह लिखता है कि मैं तमाम रास्ते हाथी और घोडे पर बैठा बनविहार करता और शिकार खेलताहुआ आता था। यात्रामें कुछ कष्ट नहीं मालूम हुआ मानो एक बागसे दूसरे बागमें बदली होती थी। इन शिकारोंमें आसिफखां, मिरजा रुस्तम, मीरमीरां, अनीराय, हिदायतउल्लह, राजा सारंगदेव, सय्यद कासू और खवासखां हमेशा मेरी अर्दलीमें रहते थे।

मांडोंके राजभवन।

बादशाहने अजमेरसे अबदुलकरीम मासूरीको मांडोंमें अगले हाकिमोंकी इमारतोंके सुधारके वास्ते भेजा था। उसने बादशाह के अजमेरमें रहने तक कई पुराने मकानोंकी मरम्मत करादी थी और कई स्थान नये बनवाये थे। बादशाह लिखता है—"उस ने ऐसा निवासस्थान प्रस्तुत करदिया था कि उस समय किसी जगह वैसा सुन्दर और सुरम्य भवन न था। तीनलाख रुपये इसमें लगे थे। ऐसी विशाल इमारत उन बडे शहरोंमें होना चाहिये थी जो हमारे निवास करनेको योग्यता रखते हैं।"

मांडोंगढ़का विवरण।

बादशाह लिखता है—"यह गढ़ एक पहाडके ऊपर बना है। इसका घेरा दस कोस नापा गया। बरसातके दिनोंमें इस गढ के समान कोई स्थान स्वच्छवायु और सुन्दरतासे पूर्ण नहीं होता। यहां सिंह संक्रान्तिमें रातको ऐसी ठण्ड पड़ती है कि रजाई ओढ़े

विना निर्वाह नहीं होता। दिनको पंखेकी आवश्यकता नहीं पडती।"

कहते हैं कि राजा विक्रमाजीतसे पहिले जयसिंहदेव नामक एक राजा था उसके समयमें एक मनुष्य घास काटनेको जङ्गलमें गया। दैवसंयोगसे उसका हंसवा सुनहरा होगया उसने मांडन नाम लुहारको दिखाया। लुहारने पहिलेसे सुन रखा था कि इसदेशमें पारस पत्थर है जिसके छूजानेसे लोहा और तांबा सोना होजाता है। इसलिये वह उस घसियारेके साथ उस जगह गया और उस पारसको ढूंढकर राजाके पास लाया। राजाने उससे बहुतसा सोना पैदा करके किला बनवाया और उस लुहारकी प्रार्थनासे बहुतसे पत्थर अहरनके आकारके तरशवाकर कोटमें लगाये। अन्तावस्थामें संसारको त्यागकर नर्मदाके निकट एक बडी सभा की और ब्राह्मणोंको बुलाकर धनमाल दिया। पारस पत्थर अपने पुराने पुरोहितको दिया परन्तु उसने अज्ञतासे तडककर नदीमें फेंक दिया। पर जब यथार्थ बात जानी तो उमरभर पछताता और ढूंढता रहा पर वह कहीं न मिला।

यह कथा लिखी नहीं है जबानी सुनी गई है मेरी बुद्धि इसको स्वीकार नहीं करती मेरी समझमें यह गप्प जान पडती है।

मालवेकी बडी सरकारोंमेंसे एक सरकार मांडोंकी है। इसकी जमा १ करोड ३९ लाखकी है। यह बहुत वर्षों तक इस देशके बादशाहोंका राजस्थान रहा है जिनकी बहुतसी इमारतें और निशानियां यहां हैं। उनमें कुछ टूटा फूटा नहीं है।

२४ असफंदार (फागुन सुदी ८) को मैं पिछले बादशाहोंके स्थान देखनेको सवार हुआ। पहिले सुलतान होशंग गोरीकी बनाई हुई 'जामेमसजिद' में गया जिसकी इमारत बहुत बडी है। इसको बने हुए १८० वर्ष बीत गये हैं तोभी ऐसा मालूम होता है कि मानो आजही मेमार काम करके गये हैं।

फिर मैं खिलजी हाकिमोंकी कबरें देखने गया। इस लोग

और परलोकमें जिसका काला मुंह हुआ ऐसे नसीरुद्दीनकी कबर भी वहीं थी। यह प्रसिद्ध है कि इस कपूतने अपने ८० वर्षके बूढे बाप सुलतान गयासुद्दीनको दोबार विष दिया जो उसने अपने भुजबन्दके जहरमोहरेसे मार दिया। तीसरी बार फिर उसने शरबतमें जहर मिलाकर अपने हाथसे बापको दिया कि इसको पी जाना चाहिये। बापने जब उसका यह आग्रह उस काममें देखा तो जहरमोहरा भुजासे खोलकर उसके आगे डाल दिया और परमेश्वरको दण्डवत करके कहा कि हे प्रभो! मैं ८० वर्षका होगया हूं मैंने अपनी अवस्थाको बडे ऐश्वर्य्य और सुखचैनमें बिताया है वैसा सुख किसी बादशाहको प्राप्त नहीं हुआ। अब मेरा अन्तिम समय आ पहुंचा है इसलिये यह प्रार्थना करता हूं कि नसीरको मेरे खूनमें न पकडना और मेरी मृत्युको स्वाभाविक मानकर उसको दण्ड न देना। यह कहकर उसने वह विष मिश्रित शरबत पीलिया और प्राण देदिया।

इस बातके कहनेसे कि मैंने अपने राजत्वकालको ऐसे सुख और विलासमें व्यतीत किया है जो किसी बादशाहके भाग्यमें नहीं था उसका यह अभिप्राय था कि जब वह ४८ वर्षकी अवस्थामें सिंहासनारूढ हुआ तो अपने मित्रोंसे कहा कि मैंने बापके राज्यमें तीस वर्ष खूब लडाइयां की हैं और परिश्रम करनेमें कुछ कसर नहीं रखी है। अब मुझे राज्य मिला है मेरा विचार किसी मुल्कके लेनेका नहीं है। मैं चाहता हूं कि शेषावस्था सुख चैनमें व्यतीत करूं।

कहते हैं कि उसने पन्द्रह हजार स्त्रियां अपने रनवासमें भरती करके उनका एक गांव बसा दिया था। उसमें हाकिम पेशकार काजी कोतवाल आदि कर्म्मचारी जो एक नगरीके प्रवन्धके लिये आवश्यक होते हैं सब स्त्रियोंमेंसेही नियत किये थे। वह जहां कहीं सुन्दरदासी सुनता जबतक उसको हस्तगत न कर लेता निश्चिन्त न बैठता। उसने नानाप्रकारकी विद्या और कलाएं उन दासियोंको

सिखाती थीं। उसको शिकारकी बड़ी लत थी। एक शिकारखाना बनवाया था जिसमें अनेक प्रकारके पशु एकत्र किये थे। वह बहुधा स्त्रियों सहित वहां जाकर शिकार खेलता था। उसने जैसा स्थिर किया था उसीके अनुसार अपने राज्यशासनके ३२ वर्षोंमें कभी किसी शत्रुके ऊपर चढाई नहीं की और अपने समयको बड़ी मौज में बिताया। वैसेही और कोई शत्रु भी उसके ऊपर चढ़कर नहीं आया।

लोग कहते हैं कि जब शेरखां पठान अपने समयमें नसीरुद्दीन की कबर पर पहुंचा था तो स्वयं पशुप्रकृति होने पर भी उसने नसीरकी बुरी करनीके वास्ते अपने साथियोंको हुक्म दिया कि इस कबरको लकड़ियोंसे पीटो।

मैंने भी उसकी कबरपर पहुंच कर कई लातें मारीं और मेरे सेवकोंने भी मेरी आज्ञासे लातें लगाईं। तोभी मुझे सन्तोष न हुआ और कहा कि कबरको खोदकर उसमें जो अपवित्र हड्डियां हों उनको आगमें जलादें। फिर यह विचारा कि आग तो परमेश्वरका रूप है उसके मलिन शरीरके जलानेमें यह दिव्य पदार्थ अपवित्र हो तो बड़े खेदकी बात है और ऐसा न हो कि कहीं इस जलानेसे उसके परलोकके सन्तापमें कमी हो जावे। इसलिये मैंने यह हुक्म दिया कि इसकी गलीज अस्थियों और मट्टीमें मिले हुए अवयवोंको नर्मदा नदीमें डालदें।

यह प्रसिद्ध है कि नसीरुद्दीनकी प्रकृतिमें गर्मी बहुत भरी हुई थी इसलिये वह हमेशा पानीमें रहा करता था। कहते हैं कि एक बार वह उन्मत्ततासे कालियादहके टांकेमें जो बहुत गहरा था कूद पड़ा था। अन्तःपुरके सेवकोंने बड़े परिश्रमसे उसके बाल पकड़े और बाहर निकाला। जब कुछ सुध आई और लोगोंने कहा कि ऐसी घटना हुई थी तो बाल पकड़कर निकाले जानेका नाम सुनतेही ऐसा क्रोधित हुआ कि उस सेवकके हाथ कटवा डाले जिसने बाल पकड़े थे।

दूसरी बार जब फिर वैसी दशा हुई तो किसीने उसको पानीसे निकालनेका साहस नहीं किया और वह डूबकर मर गया। अब दैवकोपसे ११० वर्ष बाद उसको देहके गले हुए टुकड़े भी पानीमें मिल गये।"

२८ (फागुन सुदी १२) को बादशाहने मांडोंकी इमारतें तैयार करनेकी खुशोमें अबदुलकरीमका मनसब आठ सदी जात और चारसौ सवारोंका करके उसको मामूरखांकी पदवी दी।

सुलतान खुर्रम और दक्षिणकी व्यवस्था।

जिस दिन बादशाहने मांडोंमें प्रवेश किया उसी दिन सुलतान खुर्रम भी बुरहानपुरमें जो खानदेशके सूबेका-मुख्य स्थान है पहुंचा था। कई दिन पीछे अफजलखां और रायरायांकी अर्जियां पहुंचीं। वह खुर्रमके अजमेरसे प्रस्थान करने पर आदिलखांके प्रतिनिधिके साथ विदाहुए थे। इन अर्जियोंमें लिखा था कि जब हमारे आनेकी खबर आदिलखांको पहुंची तो सात कोस फ़रमान और निशान* की अगवानीको आया। दरबारमें सिजदा करनेकी जो रीति बरती जाती है उसमें उसने जरा भी कसर न की। उसी मुलाकातमें बडी सेवा और अधीनता दिखाकर यह प्रतिज्ञा की कि जो देश बादशाही अधिकारसे निकल गये हैं उन सबको अभागे अम्बरसे छीनकर राजकीय अनुचरोंके अधिकारमें कर दूंगा और यह भी स्वीकार किया कि एक उत्तम भेट बडे ठाठसे अपने दूतोंके साथ दरबारमें भेजूंगा। यह कहकर राजदूतों को अति आदर सत्कारसे योग्य स्थानोंमें लेजाकर उतारा और उसी दिन अम्बरके पास आदमी भेजकर उचित सन्देसा उसको कहलाया।

शिकारकी संख्या।

अजमेरसे मांडों पहुंचनेतक चार मासमें बादशाहने जो शिकार किया उसका व्यौरा यह है—

---

* बादशाहका आज्ञपत्र फरमान कहलाता था और शाहजादों का निशान।

सिंह	२	हरन	६०
नीलगाय	२७	खरगोश और लोमड़ी	२३
चीतल	६	जलमुर्गी और दूसरे जन्तु	१२००

बादशाह लिखता है कि जिन रातोंमें मैं पिछले शिकारों और उसकी रुचिकी बातें उन लोगोंसे कह रहा था जो राजसिंहासनके नीचे खड़े थे, तो मेरे मनमें आया कि क्या होश सम्हालनेसे अबतक अपने शिकारकी संख्या हस्तगत कर सकता हूं। इसके वास्ते मैंने समाचार लिखनेवालों, मृगयाध्यक्षों शिकारियों और इस खातेके कर्म्मचारियोंको हुक्म दिया कि निर्णय करके जितने जानवर शिकार हुए हों वह सब मुझको सुनावें। मालूम हुआ कि मेरी १२ वर्षकी अवस्थासे जबकि हिजरी सन् ९८८ (संवत्१६३७) था इस वर्षके समाप्त होने तक जो ११वां वर्ष मेरे राज्याभिषेकका है और मेरी अवस्था ५० वर्षकी चांद्रमासके लेखेसे हुई है २८५३२ जानवर मेरे सामने शिकार हुए हैं जिनमेंसे १७१६७ जानवर मैंने बन्दूक आदि शस्त्रोंसे इस प्रकार मारे हैं—

बनचर पशु ३२०३ जिनका ब्योरा यों है।

सिंह	८६
रीछ, चीते, लोमड़ी, ऊदबिलाव जरख	९
नीलगाय	८८९
म्हा—जो गेंडेकी जातिसे नीलगायके बराबर होता है	३५
हरन चिकारे चीतल पहाड़ी बकरे आदि	१६७०
मेढे और लालहरन	२१५
भेड़िये	६४
जंगली भैंसे	३६
सूर	९०
जंग	२६
पहाड़ी मेढे	२२
अरगली	३२

गोरखर	६
खरगोश	२३

पक्षी १३९६४ जिनका व्यौरा यों है।

कबूतर	१०३४८
लगडभगड	३
उकाब	२
कलेवाज (चील)	२३
चुगद	३९
कौतान	१२
मूशखोर	५
चिडियां	४१
फाखता	२५
उल्लू	३०
मुर्गाबी कुर्ज करवानक आदि	१५०
काग	३२७६
मगरमच्छ	१०

बारहवां नौरोज।

३० असफंदार १२ रबीउलअव्वल १०२६ (फागुन सुदी १३) सोमवारको एक घडी दिनसे सूर्य्य मीन राशिसे मेखमें आया। बादशाह उसी शुभमुहूर्त्तमें सिंहासन पर बैठा। आमखास दीवानखाना कीमती कपडोंसे सजाया गया था अधिकांश अमीर और बडे बडे आदमी खुर्रमके पास दक्षिणमें थे तोभी ऐसी मजलिस जुड गई थी कि पिछले वर्षों से कुछ न्यूनता नहीं रही थी मंगलवारकी भेंट आनन्दखांको देनेका हुक्म हुआ।

इसी दिन शाह खुर्रमकी अर्जी पहुंची कि लोग सफर और लडाईमें हैं इसलिये वर्षभरकी भेंटें माफ होजाना चाहिये। इस पर बादशाहने हुक्म देदिया कि इस नौरोजमें कोई कुछ भेंट न करे।

तम्बाकूका निषेध।

बादशाह लिखता है—"तम्बाकूके अवगुण देखकर मैंने हुकम दिया था कि कोई आदमी उसका सेवन न करे और मेरे भाई शाहअब्बासने भी उसकी बुराइयोंको जानकर ईरानमें मनाही करदी थी। परन्तु खानआलमको तम्बाकूका व्यसन था इसलिये ईरानके दूत यादगारअली सुलतानने शाहसे प्रार्थना की कि खान-आलम दम भर भी तम्बाकू बिना नहीं रह सकता है। शाहने उसकी अरजी पर पद्यमें हुकम लिखा—"जो दोस्तका दूत तम्बाकू पीना चाहता है तो उसको दोस्तीसे आज्ञा देता हूं।"

३ फरवरदीन (चैत्र वदी १) को बंगालेके दीवान हुसैनबेगने मुजरा करके १२ हाथी भेट किये और वहांके बखशी ताहिरने भी जिस पर कई कसूरोंके कारण बादशाहका कोप था २१ हाथी भेट दिये उनमेंसे १२ पसन्द होकर रख लिये गये।

४ (चैत्र वदी २) को बादशाहने किलेके शक्कर तालाव पर एक बड़ा सिंह जिसने १२ अहदियों और अरदलीवालोंको घायल किया था तीन गोलियोंमें मारा।

८ (चैत्र वदी ७) को शाह खुर्रमकी अर्जीसे खानजहांका मनसब छः हजारी जात और छः हजार सवारोंका होगया ऐसेही और भी कई अमीरोंके मनसब बढाये गये।

ईरानका दूत।

११ (चैत्र वदी ८) को ईरानका दूत हुसैनबेग तबरेजी जिसे शाहने गोलकुंडेके हाकिमके पास भेजा था और जो कज़लबाशों और फरंगियोंमें झगड़ा होनेके कारण समुद्रका मार्ग बन्द होनेसे वापिस न जासका था। गोलकुंडेके वकीलके साथ बादशाहकी सेवा में आया। दो घोड़े और कुछ कपड़े दक्षिण तथा गुजरातके उसने भेट किये।

१५ (चैत्र वदी १३) को एक हजारी जातके बढ़ जानेसे मिरजा

राजा भावसिंहका मनसब पांच हजारी और तीन हजार सवारोंका होगया।

अनीरायके मनसबमें भी पांच सदी जात और एक सौ सवार बढ़े जिससे वह डेढ़ हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसबदार होगया।

१८ (चैत्र सुदी ३) शनिवारको तीन घडी दिन रहे मेख संक्रांति लगी। बादशाहने फिर राजसिंहासन पर सुशोभित होकर उत्सव किया।

कैदीका भागना।

जब शाह नवाजखांने अंबरको लड़ाईमें हराया तो उसकी सेनाके बाईम सिपाही पकड़े आये थे। उनमेंसे एक जो एतकादखां को सौंपा गया था पहरेवालोंकी गफलतसे भाग गया। बादशाहने जमादारको सजा देकर तीन महीनेसे एतकादखांकी ड्योढ़ी बन्द कर रखी थी। अब वह एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे मुजरा करनेको आने पाया।

सूबेदारोंकी बदली।

बंगालेका हाल और कासिमखांका चलन ठीक नहीं सुना गया था और बिहारके सूबेदार इब्राहीमखां फतहजंगने अच्छा प्रबन्ध करके हीरेकी खान भी बादशाही अधिकारमें करदी थी इस लिये बादशाहने जहांगीरकुलीको उसकी जागीर सूबे इलाहाबादसे बिहारमें और इब्राहीमखांके बिहारसे बङ्गालमें जाने और कासिमखांके दरबारमें आनेके हुक्म लिखकर सजावलोंके हाथ भेज दिये।

२१ (चैत्र सुदी ५) को ईरानका एलची मुहम्मदरज्जाक बिदा हुआ। उसको साठ हजार दरब * जो तीस हजार रुपयेके थे मिले। एक लाख रुपयेकी सौगात जो दक्षिणके दुनियादारोंके भेजे हुए जड़ाऊ पदार्थों और उत्तम वस्त्रोंसे सज्जित कीगई थी उसके साथ शाह अब्बासके वास्ते भेजी गई।

* अठन्नीका नाम दरब था।

पहले शाहने एक बिल्लौरी प्याला इस अभिप्रायसे भिजवाया था कि मेरे भाई इसमें शराब पीकर उसे लौटादें तो बडी कृपा हो। बादशाहने दूतके सामने कई बार उसमें शराब पीकर उसको भी रकाबी और ढकने सहित सौगातमें रख दिया था। यह दोनों चीजें नई बनी थीं। ढकनेके ऊपर मीनाका काम हुआ था।

२१ (चैत्र सुदी ६) को बादशाहने एक सिंह बन्दूकसे मारा।

२५ (चैत्र सुदी ९) को एतमादुद्दौलाकी फौजकी हाजिरी दर्शनके झरोखेके मैदानमें हुई। दो हजार अच्छे घुडसवार जिनमें बहुधा मुगल थे पांच सौ तीरन्दाज तोपची और चौदह हाथी थे। बखशियोंने गिनती करके बादशाहसे कहा कि सब सेना ठीक सजी हुई है।

चैत्र सुदी १५ गुरुवारको मुकर्रबखांका भेजा हुआ एक हीरा जो २३ रत्ती था जौहरियोंने तीस हजार रुपयेका कूता। बादशाह ने पसन्द करके अंगूठीमें जड़वाया।

नूरजहांका चार शेर मारना।

१ उर्दीबहिश्त (वैशाख वदी ६) को किरावलोंने अर्ज कराई कि हमने चार शेर घेर रखे हैं। बादशाह दो पहर तीन घडी दिन चढे राजमहिषियों सहित शिकार खेलने गया। जब शेर दिखाई दिये तो नूरजहां बेगमने बादशाहसे अर्ज की कि आज्ञा हो तो मैं इन शेरोंको बन्दूकसे मारूं। बादशाहने कह दिया कि मारो। बेगम ने दोको बन्दूकसे और दोको दो दो तीरोंसे मारकर गिरा दिया। बादशाह लिखता है—"अबतक ऐसी निशानेबाजी नहीं देखी गई थी कि हाथीके ऊपर अम्मारीमेंसे छः तीर मारे जावें जिनमेंसे एक भी खाली न जावे और ४ सिंह हिलने चलने और उछलनेका अव काश भी न पावें। मैंने इससे प्रसन्न होकर एक हजार मोहरें नूरजहांके ऊपरसे न्यौछावर की और एक लाख रुपयेके हीरोंकी पहुंचियां उसे दीं।

५ खुरदाद (जेठ बदी ५) को मिरजाहुसैन, केशवकी जगह गुजरातका दीवान हुआ।

नाई गवैया।

उस्ताद मुहम्मद नाई गवैयेको सुलतान खुर्रमने बादशाहके पास भेजा था बादशाहने कई मजलिसोंमें उसके बाजे सुने। उसने बादशाहके नामकी रागनियां गजलमें बनाई थीं। वह भी गाईं। १२ (जेठ बदी १३) को बादशाहने उसे रुपयोंमें तुलवाया। पैंसठसौ रुपये और हौदे सहित हाथी देकर फरमाया कि हाथी पर बैठकर रुपये दांयें बायें रखले और लुटाता हुआ अपने डेरेको चला जा।

मुल्ला असद कहानी कहनेवाला।

मुल्ला असद कहानी कहनेवाला जो मिरजागाजीके नौकरोंमें से था इन्हीं दिनोंमें ठट्ठेसे बादशाहके पास आया। उसकी मीठी कहानियों और मीठी बातोंमें बादशाहका मन लग गया। इसलिये उसे महजूजखांका खिताब देकर एक हजार रुपये हाथी घोड़ा पालकी और सिरोपाव दिया। कईदिन पीछे उसे रुपयोंमें तोलकर दो सदी जात और बीस सवारका मनसब भी बखशा और फरमाया कि हमेशा "गप"की मजलिसमें हाजिर रहा करे। वह तोलमें चार हजार चार सौ रुपये भरका हुआ।

महासिंहकी मृत्यु।

२४ (जेठ सुदी १०) को खबर पहुंची कि राजा मानसिंहका पोता महासिंह जो बड़े अमीरोंमेंसे था बालापुर बराडमें शराब ज्यादा पीनेसे मर गया। उसका बाप भी ३२ वर्षकी अवस्थाहीमें अधिक मद्य पान करनेसे मरा था।

आमोंकी परीक्षा।

इन दिनोंमें बहुतसे आम दक्षिण गुजरात बुरहानपुर और मालवेसे बादशाही मेवेखानेमें आये थे। बादशाह लिखता है— "ये सब देश अच्छे आमोंके वास्ते प्रसिद्ध हैं मिठास, बड़ापन और रेशा कम निकलनेमें थोड़े ही स्थानोंके आम इन देशोंके आमोंको

तुलना कर सकते हैं। कई बार मैंने अपने सामने यहांके आम तुलवाये तो सवा सवा सेरसे अधिक हुए। पर सच यह है कि रस स्वाद मिठास और कम गुठियल होनेमें कपरामऊ जिले आगरेके आम यहांके और हिन्दुस्थानके दूसरे स्थानोंके आमोंसे बढ़कर हैं।

नादिरी (सदरी)।

२८ (जेठ सुदी १२) को खासेकी नादिरी जिसके समान जरीकी दूसरी नादिरी बादशाही सरकारमें नहीं मिली थी बादशाहने खुर्रमके वास्ते भेजी और लेजानेवालेको जबानी कहलाया कि इस नादिरीमें यह विशेषता है कि मैं दक्षिणदेश जीतनेके विचारसे अजमेरसे कूच करनेके दिन इसको पहिने हुए था।

इसी दिन बादशाहने अपनी पगड़ी वैसीकी वैसी बंधी हुई एत-मादुद्दौलाको पहिनाकर भारी इज्जत दी।

तीन पन्ने, एक जड़ाऊ उर्वसी और एक अंगूठी याकूती महा-बतखांकी भेजी हुई बादशाहकी नजर हुई। यह सब माल सात हजार रुपयेका था।

इसी दिन वर्षा हुई। मांडोंमें जल कम होजानेसे प्रजा दुःखित थी। बादशाहने ईश्वरसे प्रार्थना की। उसकी कृपासे इतना जल बरसा कि नदी नाले तालाब सब भर गये।

१ तीर (आषाढ़ वदी ४) को राणाके भेजे हुए दो घोड़े गुज-राती कपड़े और कई घड़े अचार तथा मुरब्बेके बादशाहकी सेवा में पहुंचे।

३ (आषाढ़ वदी ६) को अबदुल्लतीफके पकड़े जानेकी खबर आई जो गुजरातके पिछले हाकिमोंकी सन्तानमेंसे था और वहां सदा उपद्रव करता रहता था। बादशाहने उसके पकड़े जानेसे प्रजाको सुखी होता देखकर परमेश्वरका धन्यवाद करके मुकर्रबखां को लिखा कि उसको किसी मनसबदारके साथ दरबारमें भेजदे।

मांडोंकी तलहटीके बहुधा भूपति भेंटें लेकर आये।

८ (आषाढ़ बदी-११) को बादशाहने राजा राजसिंह कछवाहे के बेटे रामदासको राजतिलक देकर राजाकी पदवी दी।

कन्धारके हाकिम बहादुरखांने नौ घोड़े, नौ थान कपड़ोंके और दो चमड़े काली लोमड़ियोंके भेटमें भेजे।

इसी दिन गढ़के राजा पेमनारायणने आकर सात हाथी भेट किये।

१३ (आषाढ़ सुदी २) को गुलाब छिड़कनेका त्यौहार हुआ।

१४ (आषाढ़ सुदी ३) को बांसवाड़ेके रावल उदयसिंहके बेटे रावल समरसिंहने आकर तीस हजार रुपये तीन हाथी एक जड़ाऊ पानदान और एक जड़ाऊ कमरपट्टा भेट किया।

१५ (आषाढ़ सुदी ४) को बिहारके सूबेदार इब्राहीमखां फतहजंगने ९ हीरे वहांकी खानसे निकले हुए तथा वहांके जमीन्दार के संग्रह किये हुए भेजे। उनमें एक हीरा १४॥ टांकका था वह एक लाख रुपयेका आंका गया।

दक्षिणमें सफलता।

२९ (सावन बदी २) गुरुवारको बारहका सैयद अबदुल्लह सुलतान खुर्रमकी अर्जी लेकर आया जिसमें लिखा था कि दक्षिणके सब दुनियादार अधीन होगये। अहमदनगर आदि किलोंकी कुञ्जियां आगईं। बादशाहने खुदाका शुक्र करके टोड़ेका परगना जिसकी उपज दो लाख रुपयेकी थी नूरजहां बेगमको दिया। क्योंकि यह बधाई उसके द्वारा उसके पास पहुंची थी। इससे २५ दिन पहले एक रातको बादशाहने दीवानेहाफिजमें फाल देखी थी तो काम बन जानेकी बात निकली थी। बादशाह लिखता है—"मैंने बहुत कामोंमें दीवानेहाफिजको देखा है। जो उसमें निकला वही हुआ।

दोपहर बाद बादशाह बेगमों सहित "हफ्तमंजर" महलको देखने गया संध्याको लौट आया। यह सतखण्डा प्रासाद सुलतान महमूद खिलजीका बनाया हुआ है। प्रत्येक खण्डमें चार चार

झरोखे हैं। ५४॥ गज ऊंचा और ५०गज चौड़ा है। नीचेसे सातवें खण्ड तक १७१ सीढ़ियां हैं। बादशाहने आनेजानेमें चौदह सौ रुपये लुटाये।

३१ (सावन बदी ४।५) को बादशाहने तीस हजार रुपयेका एक लाल जो अपने सिर पर बांधा करता था सुलतान खुर्रमके वास्ते भेजा।

५* अमरदाद (सावन बदी १०) गुरुवारको बादशाह रनवास सहित नीलकुंडके देखनेको गया जो मांडोगढ़में एक सुरम्य स्थान है। अकबर बादशाहके समयमें शाह बदाकखांने जब कि यह प्रान्त उसकी जागीरमें था यहां एक मनोहर महल बनाया था बादशाह दो तीन घड़ी रात तक वहां ठहर कर राजभवनमें आगया।

राणा अमरसिंहको हाथी।

७ (सावन बदी १२) को आदिलखांके भेजे हुए हाथियोंमेंसे एक मस्त हाथी बादशाहने राणा अमरसिंहके वास्ते भेजा।

शिकार।

११ (सावन सुदी १) को बादशाह शिकारके वास्ते किलेसे उतरा था। परन्तु मेह और कीचडसे रास्ता बन्द था इसलिये आदमियों और जानवरोंके सुखके विचारसे गुरुवारको बाहर रहकर शुक्रकी रातको लौट आया।

अति वर्षा।

इस बरसातमें इतना पानी बरसा कि बूढ़े बूढ़ोंने वैसी वर्षा न देखी थी। ४० दिन बादल घिरे रहे। सूर्य्य कभी कभी दिखाई दिया। आंधी पानीके जोरसे बहुतसे नये पुराने मकान गिर गये। पहली रातको वर्षा होते समय बिजली ऐसी कड़ककर गिरी कि बीस स्त्री पुरुष मरे। कई दृढ़ मकान टूट गये। आधे सावन तक जल वायुका जोर रहा। फिर धीरे धीरे कम होगया।

---

* असलमें तारीख रह गई है परन्तु गुरुवार लिखा है। गुरुवारको ५ तारीख थी।

मांडोकी हरियाली और फुलवार।

बादशाह लिखता है—"हरयाली और वनस्पतिकी बात क्या लिखी जाय सब पहाड और जंगल उससे छिप गये है। मालूम नहीं कि पृथ्वी पर शीतल वायु और सुन्दर छटावाली कोई जगह मांडोके समान हो। विशेषकर बरसातमें रातको रजाई ओढनी पडती है और दिनमें पखे या स्थान बदलनेकी जरूरत नहीं पड़ती। इस विषयमें जितना लिखा जाय उसकी उत्तमताको देखते हुए थोड़ा है। यहां दो वस्तु ऐसी देखी गई जो हिन्दुस्थानमें मैंने कहीं नहीं देखी थीं। एक जङ्गली केले जो इस किलेके पासके जंगलो मे उगे हुए है; दूसरे ममोले (खंजन)-के घोंसले जिनका पता किसी चिडीमारने भी नहीं दिया था—जहां मैं रहता था वहीं उसका घोंसला था और दो बच्चे भी उसमें थे।

एतमादुद्दौलाको हाथी।

१८ (सावन सुदी ८) को तीसरे पहर बादशाह बेगमों सहित शकरतालावके महल देखने गया जो पिछले पृथ्वीपतियोंके बनाये हुए हैं। रास्तेमें जगजोत नाम एक खासेका हाथी एतमादुद्दौलाको दिया। उसे पञ्जावको सूबेदारी पहले मिल गई थी पर हाथी नहीं मिला था जो सूबेदारको मिला करता था।

खास बादशाही कपड़े।

जहांगीर लिखता है—"नीचे लिखे कईएक कपडे मैंने शाही पोशाकमें दाखिल कर दिये थे और हुक्म देदिया था कि वैसे कपड़े बनवाकर कोई न पहने। केवल वही लोग उन कपड़ोंको पहनने पावें जिनको मैं इनायत करूं—

१—दगला नादिरी—यह कबा * के ऊपर पहना जाता है। यह कमरसे नीचे जांघों तक लम्बा होता है। इसके अस्तीनें नहीं होतीं और इसका आगा तुकमेंसे बांधा जाता है। विलायतमें इसका नाम करती था मैंने नादिरी रखा।

* अचकन।

२—तूसी† शालका जामा जिसे मेरे पिताने शाही खिजानेमें दाखिल किया था।

३—पट्टूकी कबा, जिसके गले और आस्तीनोंमें चिकनका काम हो। इसको भी मेरे पिताने अपने लिये रखा था।

४—हाशियेदार कबा, जिसके पल्लों गले और आस्तीनोंमें महरमात ¶ के कपड़ोंकी धज्जियां काट काटकर सीगई हो।

५—गुजराती अतलसकी कबा।

६—रेशमी चीरे और पटके, जो चान्दी और सोनेके कलावतून से बने हों।

सवारोंकी तनखाह।

महावतखांके कुछ सवारोंका महीना दोअस्पा और तिअस्पाके नियमसे दक्षिणमें चाकरी देनेके वास्ते बढ़ाया गया था। वह काम उससे नहीं बना इसलिये बादशाहने दीवानोंको हुक्म दिया कि तनखाहकी बढ़तीके वह रुपये महावतकी जागीरसे काटलिये जावें।

उत्सव और दीपमालिका।

२६ (भादों बदी १※) गुरुवार १४ शाबानको शबबरात थी। बादशाहने नूरजहां बेगमके एक महलमें जो बड़े बड़े तालावोंके बीचमें था नूरजहांकी सजाई एक बड़ी मजलिसके लिये अमीरों और मुसाहिबोंको बुलाया। हुक्म दिया कि जिसे जो नशा पसन्द हो उसे वही दिया जावे। बहुत लोगोंने शराबके प्यालोंकी प्रार्थना की। बादशाहने फरमाया कि जो प्याले पियें वह अपने मनसब और दरजेसे बैठ जावें और उनके आगे नाना प्रकारके कबाब और

---

† तूस खुरासानके एक शहरका नाम है।

¶ महरमातके दो अर्थ हैं एक पूज्य स्त्रियां दूसरे पूज्य स्थान मक्के मदीने आदिमें बरता हुआ कपड़ा।

※ गुरुवारको भादों बदी १ चण्डूपञ्चाङ्गसे हमने लिखी है। बादशाही पञ्चाङ्गसे तो इस दिन सावन सुदी १५ थी।

मेवे गजक* के वास्ते रख दिये जावें। रात होतेही तालावों और मकानों पर चिराग और फानूस लगा दिये गये थे। बड़ी सुन्दर दीपमालिका होगई थी। बादशाह लिखता है—"जबसे यह चाल चली है कहीं ऐसी दीपमालिका नहीं हुई होगी। सब चिरागों और फानूसोंका प्रतिबिम्ब पानीमें पड़नेसे ऐसा प्रतीत होता था कि मानो सारा तालाब अग्निका एक आंगन बन गया है। मजलिस खूब खिली हुई थी। प्याले पीनेवालोंने अपनी रुचिसे अधिक प्याले पिये। तीन चार घड़ी रात जाने पर मैंने सब लोगोंको बिदा करके रनवासको बुलाया और एक पहर रात तक इस सरस स्थानमें मौज उड़ाई।"

गुरुवार और बुधवारके शुभाशुभ नाम।

इस गुरुवारको कई विशेष बाते एकत्र होगई थीं जैसे कि—

एक तो मेरे राज्यसिंहासनारूढ़ होनेका दिन था। दूसरे शब-बरात थी। तीसरे राखी थी।

इसलिये मैंने इसका नाम मुबारकशंबा रखा और जैसा गुरुवार मेरे वास्ते शुभ हुआ वैसेही बुधवार अशुभ हुआ इससे उसका नाम कमशंबा रख दिया जिससे उक्त बार पृथिवीमें न्यून रहे।

महासिंहके बेटे जयसिंहका आना।

बादशाहने महासिंहके बेटे जयसिंहको बुलाया था वह इन्हीं दिनोंमे आया और हाथी नजर किया। यह बीस वर्षकी अवस्था मे था।

नीलकुण्डकी शोभा।

२ शहरेवर गुरुवार (भादों बदी ८।९) को बादशाह एक पहर तीन घड़ी दिनसे नीलकुंडको गया वहांसे ईदगाहके टीलेपर आया। चम्पा और दूसरे जङ्गली फूल खूब खिले हुए थे जिधर नजर पड़ती थी उधरही हरियाली और फुलवार दिखाई देती थी। एक पहर रात गये राजभवनमें आगया।

* मद्यपानके साथ साथ खानेकी चटपटी चीजें।

केलेकी मिठाई।

बादशाह सुना करता था कि जङ्गली केलेसे एक प्रकारकी मिठाई निकलती है जिसको साधु और गरीब लोग खाया करते हैं। बादशाहने उसको खोज की तो पता लगा कि जङ्गलमें केला निकलता है वहां एक कडी गांठ बंधी हुई होती है जिनका स्वाद फालूदेके समान फीका होता है लोग उसे खाकर उसके स्वाद से सन्तुष्ट होते हैं।

पत्र पहुंचानेवाले कबूतर।

बादशाह लिखता है—"पत्र पहुंचानेवाले कबूतरोंके विषयमें भी बहुत कुछ सुना गया था। अब्बासी खलीफाओंके समयमें बगदादी कबूतरोंको जो नामाबर कहलाते थे और जङ्गली कबूतरोंसे छोटे होते थे यह काम सिखाया जाता था। मैंने कबू-तरबाजोंसे कहा कि इन जङ्गली कबूतरोंको भी सिखावें। उन्होंने कई जोड़ोंको ऐसी शिक्षादी कि जब हम उनको मांडोंमें उड़ाते थे तो बरसातमें दोपहरमें बुरहानपुर पहुंचते थे और जो बादल नहीं होते तो बहुधा कबूतर एक पहर और कोई कोई तो चार घड़ीहीमें पहुंच जाते थे।*

आदिलखांको पुत्र पदवी।

३ (भादों वदी १०) को शाह खुर्रमकी अर्जी पहुंची कि अफजलखां रायरायां और आदिलखांके दूत आये रत्नोंके जडाऊ पदार्थों और हाथियोंको भेट लाये। वसी भेट भी नहीं आई थी। आदिलखाने अच्छी सेवाकी और अपने वचनको पूरा किया अब उसके लिये पुत्र पदवी और वह कृपा होनी चाहिये जो अबतक नहीं हुई थी। बादशाहने शाह खुर्रमकी बात मान कर मुंशियोंको आदिलखांका अलकाब

* सुना है कि जोधपुर और नागोरमें भी महाराजा बख्तसिंह जी और विजयसिंहजीके हुक्मसे उपाध्या जातिके पुष्करना ब्राह्मण कबूतरोंसे यह काम लेते थे।

सवाया करके पुत्रकी उपमासे फरमान लिखनेकी आज्ञा दी और उसके सिरे पर अपनी लेखनीसे लिखा—"तू शाह खुर्रमकी प्रार्थना से हमारा पुत्र होकर जगतमें विख्यात हुआ।

४ (भादों वदी ११) को यह फरमान लिखाकर नकल सहित खुर्रमके पास भेजा गया कि वह नकल देखकर असल आदिलखांके पास भेज दे।

आसिफखांके डेरे पर जाना।

८ गुरुवार (भादों वदी ३०) को बादशाह बेगमों सहित आसिफ खांके डेरे पर गया जो एक स्वच्छ और सुहानी घाटीमें था। उसके पास और भी कई घाटियां थीं जहां पानीके झरने थे और आम आदि हरे भरे वृक्षोंकी छाया थी। दो तीन सौ केवड़े भी एक घाटीमें फूले हुए थे। यह दिन बडी प्रफुल्लतामें निकला। मद्य-पानकी मजलिस भी जडी। बादशाहने अमीरों और मुसाहिबों को प्याले दिये। आसिफखांने भेट दिखाई। उसमेंसे कुछ चीजें बादशाहने पसन्द करके लेलीं शेष फेर दीं।

राजा पेमनारायणको मनसब।

गढेके जमींदार राजा पेमनारायणको हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसब मिला। और जागीरकी तनखाह भी उसीके वतनमें लगाई गई।

राजा सूरजमलकी प्रतिज्ञा।

१२ (भादों सुदी ३) को खुर्रमकी अर्जी पहुंची कि राजा बासू का बेटा सूरजमल जिसका राज्य कांगडेके पास है प्रतिज्ञा करता है कि मैं एक वर्षके अन्दर कांगडेका किला बादशाही अधिकारमें करा दूंगा। शाहजादेने उसका प्रतिज्ञापत्र भी लिखाकर भेज दिया था। बादशाहने जवाबमें लिखा कि उसकी बातोंको समझकर उसे यहां भेज दो। वह अपने मनोरथोंका साधन करके उस काम पर चला जावे।

रौशनआरा।

इसी दिन रमजानकी पहली ¶ तारीख और रविवार था। चार घडी ७ पल दिन चढे आसिफखांकी पुत्रीसे खुर्रमके एक लडका पैदा हुई जिसका नाम रौशनआरा रखा गया।

जमीन्दार जैतपुर पर चढाई।

जैतपुरका जमीन्दार मांडोके पास रहने पर भी बादशाहकी सेवामें नहीं आया था इसलिये बादशाहने फिदाईखांको कई मनसबदारों और चार पांच सौ बन्दूकचियों सहित उसके देश पर धावा करनेकी आज्ञा दी।

जयसिंहको मनसब।

१६ (भादों सुदी ७) को राजा महासिंहके बेटे जयसिंहको जो १२ वर्ष* की अवस्थामें था हजारी जात और पांचसौ सवारोंका मनसब मिला।

भोज भदोरिया।

राजा विक्रमाजीत भदोरियाके बेटे भोजने बापके मरे पीछे दक्षिणसे आकर मुजरा किया और एकसौ मोहरें भेट कीं।

राजा कल्याण।

भादों सुदी ८ को अर्ज हुई कि राजा कल्याण उडीसासे आकर मुजरा करनेके विचारमें है। परन्तु उसकी कुछ बुरी बातें बादशाहके सुननेमें आई थीं इसलिये वह पुत्रसहित आसिफखांको उन बातोंका निर्णय करादेनेके लिये सौंपा गया।

¶ चण्डू पञ्चाङ्गके अनुसार १ रमजान शनिको थी।

* तुजुकके पृष्ठ १९१ में जयसिंहकी उमर बीस वर्षकी और यहां १२ वर्षकी लिखी है दोनोंमें कौन सही है इसका निर्णय प्राचीन जन्मपत्रियोंके संग्रहमें किया गया तो जयसिंहका जन्म आषाढ वदी १ सं० १६६१ को होना पाया गया। इस हिसाबसे उसकी अवस्था बारह वर्षकी ही थी। बीस वर्ष लिखना भूल है।

जयसिंहको हाथी।

१९ (भादों सुदी १०) को बादशाहने जयसिंहको हाथी दिया।

केशव मारू।

२० (भादों सुदी ११) को केशव मारूका मनसब बढ़कर दो हजारी जात और बारह सौ सवारोंका होगया।

अहदाद पठान।

२३ (भादों सुदी १४) को बादशाहने अहदाद पठानको रशीद-खांका खिताब और खासा परम नरम दिया।

राजा कल्याणको हाथी।

राजा कल्याणसिंहकी ओरसे १८ हाथी नजर हुए जिनमेंसे सोलह तो बादशाहने निज गजशालामें भेजे और दो उसीको लौटा दिये।

जैतपुर पर चढ़ाई।

२५ (आश्विन बदी २) को फिदाईखां सिरोपाव पाकर अपने भाई रुहुल्लह और दूसरे मनसबदारोंके साथ जैतपुरके ज़मीन्दारको दण्ड देनेको बिदा हुआ।

नर्मदाको जाना।

२८ (आश्विन बदी ५) को बादशाह बेगमों सहित किलेसे उतर कर नर्मदाको देखने और शिकार खेलनेको गया। दो मञ्जिलोंमें वहां पहुंचा। परन्तु मच्छरों और खटमलोंके मारे एक रातसे अधिक न रह सका। दूसरे दिन तारापुरमें आगया और आश्विन बदी ८ शुक्रवारको लौट आया।

राजा कल्याणकी भेंट।

राजा कल्याण आसिफखांकी तहकीकातमें निर्दोष निकला इसलिये २ महर (आश्विन बदी १०) को उसका मुजरा हुआ उसने इतने पदार्थ भेंट किये।—

१ मोतियोंकी एक लड़ जिसमें ८० मोती थे।

२ लाल दो।

३ एक लाल और दो मोतियोंकी पहुंची।

४ जवाहिरातका एक जड़ाऊ घोड़ा।

जैतपुरमें जीत।

फिदाईखांकी अर्जी पहुंची कि जैतपुरका जमींदार बादशाही फौजके सामने न ठहर सका भाग गया। उसकी विलायत लुट गई। अब वह अपने कियेको पछताकर सेवामें उपस्थित हुआ चाहता है। रूहुल्लह उसके पीछे गया है। या तो उसको पकड़ कर दरगाहमें ले आवेगा या नष्ट करदेगा। उसकी स्त्रियां जो पडोसके जमींदारोंके यहां चली गई थीं पकड़ी जाचुकी हैं।

मोखा बन्दरके अनार।

८ (आश्विन सुदी १) को ख़ाजा निजाम १४ अनार मोखाबन्दर के लाया जो चौदह दिनमें सूरत पहुंचे थे और आठ दिनमें वहांसे मांडोंमें आये थे। बादशाह लिखता है—"यह अनार ठट्ठेके अनारों से बड़े हैं ठट्ठेके अनारोंमें गुठली नहीं होती इनमें है। कोमल और रस ठट्ठेके अनारोंसे अधिक है।"

जैतपुर।

८ (आश्विन सुदी २) को समाचार मिला कि रूहुल्लह एक गांव में पहुंचकर और यह सुनकर कि जैतपुरवालोंकी स्त्रियां और कुछ संबधी यहां हैं वहां ठहर गया और गांव वालोंको बुलाया। वह हथियार खोलकर कुछ लोगों सहित एक गलीचे पर बैठा था कि एक घातकने उसके पीछे आकर बरछा मारा जो उसकी छातीसे पार होगया। बरछेके खेंचतेही रूहुल्लहकी रूह भी खिंच गई जो लोग वहां थे उन्होंने उस घातकको भी मार डाला। फिर सब हथियार बांधकर उस गांवमें गये और शत्रुओंको रखनेके अपराधमें सबको घडी भरमें काट छांटकर स्त्रियों तथा लड़कियोंको पकड़ लाये। गांवमें आग लगादी जिससे राखके ढेरोंके सिवा और कुछ न रहा। फिर रूहुल्लहकी लाश लेकर फिदाईखांके पास आये। रूहुल्लहकी वीरतामें तो कुछ कसर न थी पर गफलतसे मारा गया।

जब उस विलायतमें कुछ बस्ती न रही तो वहांका जमीन्दार पहाड़ों और जंगलोंमें जाछिपा और दूत भेजकर फिदाईखांसे अपराध क्षमा करा देनेको कहलाया। बादशाहने हुक्म दिया कि उसको वचन देकर दरगाहमें ले आवें।

हरभान जमीन्दार चन्द्रकोटा।

मुरव्वतखांने चन्द्रकोटेके जमीन्दार हरभानको नष्ट करनेकी प्रतिज्ञा की जो मुसाफिरोंको सताया करता था। इस पर उसका मनसब दो हजारी जात और पन्द्रह सौ सवारोंका होगया।

राजा सूरजमल।

१२ (आश्विन सुदी ५) को राजा सूरजमलने खुर्रमके बख्शी तकीके साथ उपस्थित होकर अपने मनोरथ निवेदन किये उनका साधन उस सेवाके वास्ते जो उसने स्वीकार की थी अच्छी तरहसे होगया और खुर्रमकी प्रार्थनाके अनुसार उसको झण्डा और नक्कारा दिया गया। तकीको भी जो उसके साथ जानेके लिये नियत हुआ था जड़ाऊ खपवा मिला। हुक्म हुआ कि अपने काम का प्रबन्ध करके शीघ्रही कूच कर जावे।

सूरजमलका कांगड़े जाना।

१७ (आश्विन सुदी १०) को बादशाहने राजा सूरजमलको हाथी सिरोपाव जड़ाऊ खपवा और तकीको सिरोपाव देकर कांगड़ेको विदा किया।

खुर्रमका दक्षिणसे कूच।

शाह खुर्रमके दूत आदिलखांके वकीलों और उसकी भेजी हुई भेटको लेकर बुरहानपुरमें आये और उसका चित्त दक्षिणके कामों से निश्चिन्त होगया तो उसने बराड, खानदेश और अहमदनगरको सूबेदारी सेनापति खानखानांके वास्ते बादशाहसे मागकर उसके बेटे शाहनवाजखांको जो जवान खानखाना था बारह हजार सवारोंसे नये जीते हुए देशोंकी रक्षाके लिये भेजा। प्रत्येक ठौर और स्थानोंको विश्वासपात्र पुरुषोंको जागीरमें देकर वहांका प्रबन्ध

वैसा उचित था कर दिया। जो सेना उसके साथ थी उसमेंसे तीस हजार सवारों और सात हजार बन्दूकची पदातियोंको वहां छोड़ कर शेष पचीस हजार सवारों और दो हजार तोपचियोंके साथ पिताकी सेवामें उपस्थित होनेके लिये कूच किया।

खुर्रमका दक्षिण विजय करके आना।

बादशाह लिखता है—"मेरे राज्यशासनके बारहवें वर्ष २० महर गुरवार ११ शव्वाल सन १०२६ हिजरी (आश्विन सुदी १२ संवत् १६७४) को तीन पहर एक घड़ी दिन व्यतीत होने पर मांडोके किलेमें खुर्रम कुशल और विजय पूर्वक पन्द्रह महीने ग्यारह दिन का वियोग रहनेके पीछे सेवामें उपस्थित हुआ। जब "कोरनिश" और "जमीं बोस" बिधि पूर्वक कर चुका तो मैंने उसको झरोके पर बुलाया। अति स्नेह और अनुराग वश अपनी जगहसे उठकर छातीसे लगाया। वह जितना झुक विनय और नम्रतामें अग्रह करता था उतनाहीमैं कृपा और अनुग्रहमें बढ़ता जाता था। मैंने उसको अपने पास बैठनेका हुक्म दिया। उसने एक हजार मोहरें और १०००) रुपये नजर तथा एक हजार मोहरें और १०००) रुपये न्योछावर किये। उस समय इतना अवकाश न था कि वह अपनी सारी भेंट दिखाता। इसलिये "सर-नाक" नामक हाथी जो आदिलखाकी भेटके हाथियोंमें शिरोमणि था, उत्तम रत्नोंकी पेटीके साथ भेट किया। फिर बख्शियोंको हुक्म हुआ कि जो अमीर उसके साथ आये हैं वह मनसबोंके क्रमसे सेवामें आवें। पहले खानजहां उपस्थित हुआ। मैंने उसको ऊपर बुलाकर पद्मकमलोंके चूमनेका मान प्रदान किया। उसने एक हजार मोहरें २०००) रुपये रत्नों और जड़ाऊ पदार्थोंकी पेटी सहित भेट किये। उसमेंसे जो मैंने स्वीकार किये उनका मूल्य ४५०००) था।"

फिर अबदुल्लहखांने चौखट चूमकर एक हजार मोहरें नजर कीं उसके पीछे महाबतखांने जमीन चूमकर एक सौ मोहरें एक हजार रुपये और एक गठड़ी रत्नों तथा जड़ाऊ पदार्थोंकी भेट की। दर

एक लाख २४ हजार रुपयेके आंके गये। उनमें एक लाल ११ मिसकाल (४८॥ रत्ती) का है जिसको पिछले वर्ष अजमेरमें एक फरंगी लाया था। दो लाख मूल्य मांगता था जौहरी ८० हजार देते थे इससे सौदा नहीं बना था। फिर वह बुरहानपुरमें गया और महाबतखांने एक लाख रुपयेमें उसको लेलिया।

फिर राजा भावसिंहने सेवामें आकर १० हजार रुपये कुछ रत्न और कुछ जड़ाऊ पदार्थ भेट किये।

ऐसेही खानखानांका बेटा दाराबखां, अबदुल्लहखांका भाई, सरदारखां, शुजाअतखां अरब, दियानतखां, मोतमिदखां बख्शी, और उदाराम, जो निजामुल्मुल्कके श्रेष्ठ सरदारोंमें थे और खुर्रमके वचन देनेसे शुभचिन्तकोंकी श्रेणीमें प्रविष्ट हुए थे और दूसरे अमीर अपने अपने मनसबोंके क्रमसे मुजरा करनेको आये।

इनके पीछे आदिलखांके वकीलोंने जमीन चूमकर उसकी अरजी पेश की।

इससे पहिले रानाको विजय करनेके प्रसादमें बीस हजारी जात और १० हजार सवारोंका मनसब इस उग्रभागी पुत्रको मैंने प्रदान किया था और जब दक्षिण जीतनेको जाता था तो शाह की पदवी दी थी अब इस उत्तम सेवाके बदलेमें मैंने तीस हजारी जात और बीस हजार सवारोंका मनसब और शाहजहांका खिताब इनायत फरमाया और हुक्म दिया कि अबसे दरबारमें एक चौकी सिंहासनके पास रखदी जाय जिस पर यह पुत्र बैठा करे। यह एक कृपा इसीके वास्ते कीगई जो पहिले हमारे वंशमें प्रचलित न थी।

५० हजार रुपयेका एक खासा खिलअत जिसमें ४ कुब्ब (पान) जरीके सिले हुए थे और जिसके गले, बांहों, और पल्लोंमें, मोती टके हुए थे, जडाऊ तलवार जडाऊ परतला और जडाऊ कटार उसको दिया और उसका मान बढ़ानेके लिये झरोकेसे नीचे आकर एक थाल जवाहिरातका और एक मोहरोंका उसके ऊपर

न्योछावर किया। "सरनाक" हाथीको पास मंगाकर देखा निस्सन्देह उसके जो गुण सुने थे सब ठीक थे। डीलडौल सुंदरता और सजीलेपनमें पूरा था। ऐसी छबिका हाथी कम देखा था। मेरी आंखोंको बहुतही भला लगा। इसलिये मैं स्वयं सवार होकर उसे खास दौलतखानेके भीतर तक लेगया और कुछ रुपये भी उस पर न्योछावर किये। हुक्म दिया कि दौलतखानेमेंही बंधा करे। उसका नाम नूरबख्त रखा गया।

बगलाणेका भरजीव।

"कार्तिक बदी २ चन्द्रवार[1]को बगलाणेके जमींदार भरजीवने आकर प्रणाम किया बादशाह लिखता है—"इसका नाम प्रताप है। जो कोई वहांका राजा होता है उसको भरजीव कहते हैं। बगलाणेकी विलायत गुजरात खानदेश और दक्षिणके बीचमें है। इस देशमें पानीके झरने अच्छे हैं। पानी बहुत बहता है। यहां आम अत्यंतरसीले और बड़े होते हैं। ९ महीने तक मिलते हैं। अंगूर भी बहुत होते हैं परन्तु उत्तम नहीं होते। यह राजा गुजरात दक्षिण और खानदेशके हाकिमोंसे मेल तो रखता था पर आज तक किसी के पास नहीं गया था। जब गुजरात दक्षिण और खानदेशमें स्वर्गवासी हजरत[2]का अधिकार हुआ तो यह बुरहानपुरमें उपस्थित होकर सेवकोंमें शामिल हुआ था। उसे तीन हजारी जातका मनसब मिला था। अब जो शाहजहां बुरहानपुरमें पहुंचा तो ११ हाथी भेट करके मिला और उसीके साथ दरबारमें आकर अपनी भक्तिके अनुसार राजकीय कृपासे सम्मानित हुआ। जड़ाऊ खञ्जर हाथी, घोड़ा और खिलअत तो मिलाही था कई दिन पीछे तीन अंगूठियां लाल हीरे और याकूतकी भी मैंने उसको दीं।"

नूरजहांका उत्सव।

२७ (कार्तिक बदी ५) गुरुवारको नूरजहां बेगमने दक्षिणकी विजयका उत्सव करके शाहजहांको इतने दिव्य पदार्थ दिये—

---

[1] मूलमें इस दिन शुक्रवार लिखा है सो गलत है।

[2] अकबर बादशाह।

बहुमूल्य सिरोपाव नादिरी सहित जिसमें रत्नों और मोतियोंके फूल टके थे, रत्नोंका जडाऊ सरपेच मोतियोंके तुर्रेकी पगडी मोती की लडियोंका पटका, तलवार जडाऊ परतलेको फूलकटारे सहित, दो घोड़े जिनमेंसे एक जडाऊ जीनका था एक खासा हाथी दो हथनियां, इसीप्रकार बहुतसे सुनहरी सजावटोंके जोडे और कपडे उसको स्त्रियोंको भी दिये। भडकीले वस्त्र और रत्न जडित शस्त्र इसके प्रधान पारिषदोंको प्रदान किये। इस महोत्सवमें सब मिला कर ३ लाख रुपये लगे थे

महावतखांको काबुल।

खांनदौरां बहुत बूढ़ा हो गया था इस लिये बादशाहने इसको ठट्ठेमें बदल कर महावतखांको काबुल और बंगशकी सूबेदारी दी। वहां सदा पठानोंका उपद्रव रहनेसे बराबर दौड़ धूप करना पडती थी।

४८ हाथियोंकी भेट।

इब्राहीमखां फतहजंगने बिहारसे ४८ हाथी भेजे थे वह भेट हुए।

सोनकेले।

बादशाह लिखता है—"इन दिनों सोनकेले मेरे वास्ते आये जो आज तक मैंने कभी नहीं खाये थे। लंबाईमें एक उंगलके लगभग हैं कुछ मीठे और मजेदार हैं। अन्य प्रकारके केलोंसे इनकी कुछ तुलना नहीं है पर बादी हैं। मैंने दो खाये थे पेटमें बोझ मालूम हुआ। लोग तो कहते है कि ७।८ तक खाना चाहिये। वास्तवमें केला खाने योग्य नहीं है, परन्तु उसकी अनेक जातियोंमेंसे अगर कुछ खाने लायक है तो यही सोनकेला है।

गुजरातके आम।

मुकर्रबखां गुजरातके आम २३ महर (कार्तिं बदी १) तक डाकचौकीमें भेजता रहा।

जदाराम दक्षिणी।

२१* आबान (कार्तिक बदी १२) गुरुवारको बादशाहने जदारामको तीन हजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका मनसब दिया। यह ब्राह्मण अंबरके पास बडी इज्जतसे रहता था। जब शाहनवाजखांने अंबर पर चढ़ाईकी तो आदमखां हबशी, जादूराय, बाबू राय कायस्थ, और जदाराम आदि निजामुलमुल्कके कई सरदार अंबरको छोड कर शाहनवाजखांके पास चले आये थे। अंबरकी हार होने पर यह लोग आदिलखांके कहने और अंबरके धोखेमें आकर बादशाही नौकरी छोड बैठे। अंबरने आदमखांको तो कुरानकी कसम खाकर बुलाया और छलसे पकड कर मारडाला। बाबू राय और जदाराम निकल कर आदिलखांकी सीमामें आये पर उसने आने न दिया। बाबू राय कायस्थ तो उन्हीं दिनोंमें अपने एक मित्रके धोखेसे मारा गया। जदाराम पर अंबरने सेना भेजी जिसको वह हरा कर बादशाही सीमामें आ गया और वचन लेकर अपने बालबच्चों भाई बन्दोंको भी ले आया। शाहजहां उस को ३ हजारी जात और हजार सवारके मनसब दिलानेकी प्रतिज्ञाकर अपने साथ लेआया। बादशाहने ५०० सवार अधिक दिये।

शाहजहांकी भेट।

१० (कार्तिक सुदी ४) बृहस्पतिवारको शाहजहांने अपनी भेट बादशाहको दिखाई। जवाहिरात, जड़ाऊ चीजें और सब बहुमूल्य द्रव्य भरोखेके चौकमें सजाये गये थे। हाथी और घोड़े सोने चांदीके साजोंसे सजे हुए बराबर बराबर खडे थे।

बादशाह लिखता है कि "मैंने शाहजहांका मन प्रसन्न करनेके लिये भरोखेसे उतर कर सब चीजें व्योरेवार देखीं। उनमें एक सुन्दर लाल है जो शाहजहांके लिये गोवा बंदरमें २ लाखको मोल

* तुजुक जहांगीरीमें इस दिन १३ आबान गलत लिखा है २१ चाहिये।

लिया गया था। तौलमें १८ टांक २। रत्ती है। मेरी सरकारमें कोई लाल १२ टांकसे अधिक न था। जौहरियोंने उसका वही मूल्य स्वीकार किया।

(२) एक नीलम आदिलखांकी भेटमेंसे ६ टांक ७ रतीका है अब तक इतना बडा और ऐसे रंग रूपका नीलम नहीं देखा गया था।

(३) चमकोडा हीरा आदिलखांकी भेटमेंसे १ टांक ६ रतीका है। इसका मोल ४० हजार बताया गया है। दक्षिणमें चमकोडा एक सागका नाम है। जब मुरतिजा निजामशाहने बरारका देश जीता था तो एक दिन स्त्रियों सहित बागमें गया। वहां एक युवतीने चमकोडेके सागमें इस हीरेको पडापाया। उस दिनसे इसका नाम चमकोडा हुआ। अहमदनगरका राज छिन्न भिन्न होने पर इब्राहीम आदिलखांके हाथ आया।

(४) एक पन्ना अदिलखांकी भेटमेंसे है जोनिकला तो नई खानमेंसे है पर इतना सुरङ्ग और स्वच्छ है कि वैसा अब तक देखनेमें नहीं आया था।

(५) दो मोती एक तो ६४ रत्ती भरका है पचीस हजार रुपये उसका मोल ठहरा और दूसरा १६ रतो भरका बहुत चमकीला और उज्वल है इसका मोल बारह हजार रुपये हुआ।

(६) क्षुतुबुल्मुल्ककी भेटमेंसे एक हीरा एक टांक भरका जो पचीस हजार रुपयेका आंका गया।

(७) १५० हाथी जिनमें ३ के साज तो सांकलों तक सोनेके और ९ के चांदीके थे। उनमेंसे २० हाथी लिये गये जिनमें ५ बहुत बडे और विख्यात है।

नूरवख्त् कि जिसको शाहजहांने पहिले दिन भेट किया था सवा लाखका आंका गया।

---

* बीजापुरपति।

महीपति – आदिलखांका भेजा हुआ जिसका मोल मैंने १ लाख रुपये नियत करके दुर्जनमाल नाम रखा।

बखत्‌बलन्द—यह भी आदिलखांकी हो भेटमेंका है एक लाख रुपयेका आंका गया। मैंने इसका नाम "गजांगार" रखा।

चौथे और पांचवें हाथीका नाम कद्दूमखा और इमामरज़ा था।

(८) एक सौ अर्बी और इराकी घोड़ जिनमें ३ जड़ाऊ साजदार हैं।

शाहजहांने जो भेट अपनी, और दक्षिणके दुनियादारोंमें की हुई बादशाहको दिखाई थी बहुत बड़ी थी। उसमेंसे जो बादशाहने छांट करली वह २० लाख रुपयेकी थी। २ लाख रुपये की भेट उसने अपनी मा नूरजहांको दी। ६००००) की भेट दूसरी मताओं और बेगमोंको दी। सबका मूल्य २२ लाख ६०हज़ार रुपये हुआ। बादशाह लिखता है कि ऐसी भेट कभी इस राज्यमें नहीं देखी गई थी।

गुजरातको कूच।

१२ (कार्तिक सुदी ५) शुक्रवारको बादशाहने अपनी माता और बेगमोंको तो सब कारखानोंके साथ आगरे भेजा और आप गुजरातको अहमदाबाद और समुद्रकी शोभा देखने तथा लौटते हुए हाथियोंका शिकार खेलनेके विचारसे गुजरातको रवाना हुआ मांडोसे उतर कर नालछेमें ठहरा।

महावतखां।

शनिवारको रातको महावतखांको काबुल जानेकी आज्ञा हुई घोड़ा और खासा हाथी चलते समय मिला।

कल्याण टोडरमलका बेटा।

राजा टोडरमलका बेटा कल्याण उड़ीसेसे आकर कई दिनों तक दरबारमें आनेसे विमुख रहा था क्योंकि उस पर कई दोष लगाये गये थे। परन्तु निर्णय होने पर निर्दोष निकला। बादशाह ने घोड़ा और खिलअत देकर उसे महावतखांके साथ बंगशमें भेजा।

आदिलखांके वकील।

सोमवारको आदिलखांके वकीलोंको जड़ाऊ तुर्रे दक्षिणी चाल के मिले। एक पांच हजार और दूसरा चार हजारका था।

रायरायांको विक्रमाजीतकी पदवी।

दक्षिणमें अच्छा काम करनेसे बादशाहने शाहजहांके वकील अफजलखां और रायरायांके मनसब बढाये। रायरायांको विक्रमाजीतकी पदवी दी। बादशाह लिखता है—"हिन्दुओंमें यह उत्तम पदवी है और रायरायां अच्छा बन्दा, कदर करनेके योग्य है।"

इसी दिन बादशाह ४॥ कोस चलकर गांव केदहसनमें ठहरा। १५ (कार्त्तिक सुदी ८) मङ्गलको बादशाहने १२ मनकी एक नील गाय मारी। दूसरे दिन डेरोंके पास पहाडकी घाटीमें एक नदी पर जो बीस गजकी ऊंचाईसे गिरती थी, जाकर दारू पी और रातको लशकरमें आगया।

जैतपुरका जमींदार।

शाहजहांकी प्रार्थनासे जैतपुरके जमींदारके अपराध क्षमा किये गये थे। वह बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ।

हासिलपुरमें जाना।

बादशाह तीन कोस पर हासिलपुरमें शिकारकी बहुतायत सुन कर बडे लशकरको वहीं छोडकर २० (कार्त्तिक सुदी १५) उधर गया।

काबुलके अंगूर।

हुसैनी नामके बिना गुठलीके अंगूर काबुलसे आये। खूब ताजा थे। बादशाह लिखता है कि मेरी जीभ परमेश्वरका गुणानुवाद करनेमें असमर्थ है कि ३ महीनेका रास्ता होने पर भी काबुलके ताजा अंगूर दक्षिणमें पहुंचते हैं।

प्याले।

२४ (अगहन बदी ४) बृहस्पतिवारको हासिलपुरके तालाब पर

बादशाहने सभा सजाकर शाहजहां और बड़े बड़े अमीरोंको प्याले दिये। यूसुफखांका मनसब तीन हजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका करके उसको गोंडवानेकी फौजदारी पर भेजा।

राय बिहारीदास।

दक्षिणके सूबेका दीवान बिहारीदास दरबारमें आया।

बाईस गज पर गोली।

बादशाहने कुरीआ नामक पक्षीको वृक्ष पर बैठा देखकर बंदूक मारी। गोली बाईस गज पर लगी पक्षीकी केवल कुछ छाती दिखती थी।

कमालपुर।

२६ (अगहन बदी ६) शनिवारको बादशाह दो कोस चलकर कमालपुरमें उतरा।

गोंडोंकी भेंट।

शाहजहांका नौकर रुस्तमखां बुरहानपुरसे गोण्डवानेके जमींदारों पर भेजा गया था। वह ११० हाथी और एक लाख बीस हजार रुपये लेकर दरबारमें उपस्थित हुआ।

दांतवाली दो जुड़ी लड़कियां।

१ आजर (अगहन बदी १०) बुधवारको काशमीरके समाचार पत्रसे विदित हुआ कि एक रेशम बेचनेवालेके घरमें दो लड़कियां जन्मीं जिनके मुंहमें दांत थे पीठसे कमर तक जुड़ी हुई थीं। परन्तु सिर हाथ और पांव दोनोंके अलग अलग थे कुछ समय तक जीती रहकर मर गईं।

गुरुवारको एक तालाब पर डेरे होकर प्यालोंकी मजलिस जुड़ी। आदिलखांके वकीलोंको पांचसौ तोलेकी एक मुहर दी गई। शुक्रवारको साढ़े चार कोस चलकर परगने दकनाम डेरे लगे। शनिवारको भी इतनाही कूच होकर धारमें मुकाम हुआ।

धार।

बादशाह लिखता है—"धार पुराने शहरोंसेसे है। प्रसिद्ध

राजा भोज यहीं रहता था। उसके समयसे एक हजार वर्ष व्यतीत हुए हैं। मालवेके बादशाह भी बहुत वर्षोंतक धारमें रहे। सुलतान मुहम्मद तुगलक जब दक्षिण विजय करनेको जाता था तो उसने यहां छिले हुए पत्थरोंका किला एक टीलेपर बनाया जो बाहरसे तो बहुत सुन्दर है परन्तु भीतर सूना है। मैंने लम्बाई चौड़ाई मापनेका हुक्म दिया तो किला भीतरसे लंबा १२ जरीब ७ गज और चौड़ा ७ जरीब-१३ गज हुआ। कोटकी चौड़ाई १९१ गज और ऊंचाई कंगूरों तक १७॥ गज निकली। किलेके बाहरका भाग पचास जरीबका था।

अमीदशाह गोरी जिसका दिलावरखां खिताब था दिल्लीके बादशाह सुलतान फीरोजके बेटे सुलतान मुहम्मदके समयमें मालवेका स्वतन्त्र सूबेदार था। उसने किलेके बाहरकी बस्तीमें जामा मसजिद बनाई थी जिसके सामने लोहेकी एक लाठ गाड़ी थी। जब सुलतान बहादुर गुजरातीने मालवेको अपने अधीन किया तो इस लाठको गुजरातमें लेजाना चाहा। पर कर्मचारियोंने उखाड़ते समय सावधानी नहीं रखी जिससे जमीन पर गिरकर उसके ७॥ गज और ४। गजके दो टुकडे होगये। गोलाई सवा गजकी है यह टुकडे वहां योंही पडे थे इस लिये मैंने हुक्म दिया कि बडे टुकडेको आगरेमें लेजाकर स्वर्गवासी श्रीमानके रौजेमें खडा करदें और रातको दीपक उस पर जला करे।†

इस मसजिदके दो दहलीजें हैं। एकके ऊपर यह लेख खुदा है कि अमीदशाह गोरीने सन् ८७० में यह मसजिद बनाई और दूसरीके ऊपर कवितामें भी यही वर्ष खुदा हुआ है।

जब दिलावरखां मरा तो उस समय हिन्दुस्थानमें कोई प्रबल

† अब यह लोहेकी लाठ अकबर बादशाहके रौजेमें नहीं है जो आगरेके पास सिकन्दरेमें है। उसके दोनों टुकड़े धारमेंही हैं बडा तो अपनी जगहही पड़ा है और दूसरा एजेण्टकी कोठीमें खडा है धारके लोग इसको तेलीकी लाठ कहते हैं।

बादशाह न था और अफरातफरीके दिन थे। इसलिये दिलावर खांका बेटा होशंग जो योग्य और साहसी था अवसर पाकर मालवे के सिंहासन पर बैठ गया। उसके मरने पर यह राज्य उसके वजीर "खानजहां" के बेटे महमूद खिलजीके हाथमें चला गया। उससे उसके बेटे गयासुद्दीनको मिला। उसको विष देकर उसका बेटा नासिरुद्दीन गद्दी पर बैठा। उसके पीछे उसका बेटा महमूद उत्तराधिकारी हुआ। उससे सुलतान बहादुर गुजरातीने मालवा छीन लिया और मालवेके बादशाहोंकी परम्परा नष्ट होगई।

ऊदाराम।

६ (अगहन बदी १४) सोमवारको बादशाहने जड़ाऊ तलवार, एक सौ तोलेकी मोहर और बीस हजार दरब ऊदारामको दिये।

सादलपुर।

बादशाह ४॥ कोस चलकर सादलपुरमें ठहरा। इस गांव में एक नदी है जिसपर नासिरुद्दीन खिलजीने पुल बांधकर दालि यादहके समान विलासभवन बनाये थे। बादशाहने रातको उस नदी और उसके कुण्डों पर दीपमालिका कराई।

शाहजहांको लाल और मोती।

८ (अगहन सुदी २) गुरुवारको प्यालेकी मजलिस हुई। बादशाहने एक लाल और दो मोती शाहजहांको दिये। लाल [illegible] हजार रुपयेका ८ टांक और ५ रत्ती भरका था। बादशाह लिखता है—"यह लाल मेरे जन्मकालमें मेरी दादीने मेरे मुह दिखाईमें दिया था। वर्षों तक मेरे पिताके सरपेचमें रहा। उनके पीछे मैंने भी सरपेचहीमें रखा था। बहुमूल्य और सुन्दर होनेके सिवा यह इस राज्यके वास्ते शुभ भी रहता आया है इसीलिये शाहजहांको दिया गया।"

ऊदाराम दक्षिणमें।

इसी दिन बादशाहने खिलअत हाथी और इराकी घोड़े देकर

ऊदारामको दक्षिणमें नियत किया और उसके हाथ एक खास सुन-हरी कटार खानखानांके वास्ते भी भेजा।

केशव मारू।

११ (अगहन सुदी ४) शनिवारको ४। कोसका कूच होकर गांव जलोतमें और दूसरे दिन पांच कोस पर मदलोरमें डेरे हुए। बाद-शाह लिखता है—"यह परगना मेरे पिताके समयसे केशवदास मारूकी जागीरमें है और उसके वतनके समान होगया है उसने बाग और भवन बनाये हैं। उनमेंसे एक बावली जो रास्ते पर है बहुत सुन्दर और सजीली बनी है। मेरी समझमें अगर कहीं कोई बावली रास्ते पर बनाई जावे तो चाहिये कि इसी ढङ्गकी बनावे पर इससे दूनी हो।"

हाथीको गर्म्म पानी।

जबसे नूरबखत हाथी आया था खासोआम दौलतखानेमें बांधा जाता था। हाथी जाड़ेमें भी पानीसे प्रसन्न होता है इसलिये जहां कहीं नदी तालाब नहीं मिलता तो नूरबख्त मश्कमेंसे पानी लेकर अपने शरीर पर डालता। जाड़ेमें पानी ठण्डा होता है इसलिये बादशाहने अपने मनमें ठण्डका बिचार करके गुनगुना पानी उसकी सूंडमें डलवाया। और दिनों तो ठण्डे पानीसे कांपने लगता था अब जो गर्म्म पानी मिला तो स्वस्थ और प्रसन्न हुआ। बादशाह लिखता है—"यह मेरीही उपजाई हुई बात है।"

सबलगढ।

१४ (अगहन सुदी ७) मङ्गलवारको ६ कोस चलकर सबलगढमें और ८ बुधको मही नदीसे उतरकर रायगढ़में डेरे हुए यह भी ६ कोसका पड़ाव था।

राजा पेमनारायण।

१६ (अगहन सुदी १०) गुरुवारको गढ़ेका राजा पेमनारायण जिसका एक हजारी मनसब था अपनी जागीरको बिदा हुआ।

राजा भरजीव।

बगलाणेके राजा भरजीवको बादशाहने चार हजारी मनसब

देकर विदा किया और यह हुक्म दिया कि जब अपने देशमें पहुंचे तो बड़े बेटेको दरगाहमें भेजदे कि वह हुजूरमें रहा करे।

धावला।

१७ (अगहन बदी ११) शुक्रवारको बादशाह पांच कोस चलकर गांव धावलेमें ठहरा।

बकरईद।

१८ (अगहन सुदी १२) शनिवारको बकरईद थी। बादशाह उसका कृत्य करके ३। कोस चला और गांव नागोरमें तालावके तट पर उतरा।

गांव ममरिया।

१९ (अगहन सुदी १३) रविवारको ५ कोस चलकर गांव मम-रियाके तालाव पर डेरे हुए।

दोहद।

२० (अगहन सुदी १४) सोमवारको ४। कोस पर परगने दोहद में पड़ाव हुआ। यह परगना गुजरात और मालवेका सिवाना है। जबसे बादशाहने बदनोर छोड़ा था सारे रास्तेमें जंगल और पहाड़ आये थे।

रैनाव।

११ (पौष बदी १) बुधवारको ५। कोस चलकर गांव रैनावमें मंजिल हुई। दूसरे दिन मुकाम हुआ।

जालोत।

२४ (पौष सुदी ३) शुक्रवारको अढ़ाई कोस चल कर गांव जालोतमें डेरा लगा। यहां कारनाटकके बाजीगरोंने पहुंचकर बाद-शाहको अपने खेल दिखाये। एक बाजीगर ४॥ गज लम्बी और एक सेर दो दाम वजनकी जञ्जीरको मुंहमें रखकर थोड़े थोड़े पानी के घूंटोंसे निगल गया। घड़ी भर तक पेटमें रखकर फिर बाहर ले आया।

नीमदह ।

२६ (पौष बदी ५) रविवारको बादशाह पांच कोसका सफर करके गांव नीमदहमें ठहरा। सोमवारको भी पांचही कोस चला। और एक तालाबके निकट उतरा।

सहरा ।

मंगलको पौने चार कोसकी ही यात्रा हुई। गांव सहराके पास एक सरोवरके किनारे तम्बू तने।

कुमुदिनी और कमला ।

बादशाह लिखता है—कुमुदिनी तीन रंगकी होती है सफेद नीली और लाल। हमने सफेद और नीली तो देखी थी लाल नहीं देखी थी। इस तालमें लाल फूलोंकी खिली कुमुदिनी देखनेमें आई। बहुतही कोमल और मंजुल फूल थे। कमलका फूल कुमुदिनीसे बड़ा होता है। उसका चेहरा लाल होता है। मैंने काशमीरमें सौ सौ पंखड़ियोंके भी कमल बहुत देखे हैं। यह बंधी हुई बात है कि कमल दिनको फूलता है और रातको बन्द हो जाता है। कुमुदिनी दिनको बन्द होजाती है और रातको खिलती है। भौंरा सदा इन फूलों पर बैठता है और इनके भीतर जो मिठास होता है उसके चूसनेके लिये इनकी नालियोंमें भी घुस जाता है। बहुधा ऐसा होता है कि कमल मुंद जाता है और भौंरा सारी रात उसीमें बैठा रहता है। इसी तरह कुमुदिनीमेंभी। उनके खिलने पर भौंरा निकलकर उड़ जाता है।

इसी वास्ते हिन्दुस्थानके कवीश्वरोंने बुलबुलके समान उसको फूलका प्रेमी मानकर अपनी कवितामें उत्तम उक्तियोंसे उसका वर्णन किया है।

तानसेन कलावत मेरे बापकी सेवामें रहता था वह अपने समय में अद्वितीयही नहीं था वरञ्च किसी समयमें भी उसके तुल्य गवैया नहीं हुआ है। उसने अपने ध्रुपदमें नायिकाके मुखको सूर्यकी, उसके आंख खोलनेको कमलके खिलने और उसमेंसे भौंरेके उड़नेकी

उपमा दी है। दूसरी जगह कनखियोंसे देखनेको भौंरके बैठनेसे कमलका हिलना कहा है।

अंजीर।

यहां अहमदाबादके अंजीर आये। बादशाह लिखता है कि बुरहानपुरके अंजीर भी मीठे और बड़े होते हैं। परन्तु यह अंजीर उनसे कम दानेदार और अधिक मीठे हैं स्वादमें अच्छे हैं।

बुध और वृहस्पतिवारको भी वहीं पड़ाव रहा।

सरफराजखांकी भेट।

सरफराजखांने गुजरातसे आकर भेट दिखाई। उसमेंसे बादशाहने मोतियोंकी एक माला जो ११ हजार रुपयेमें खरीदी गई थी, दो हाथी, दो घोड़े, ७ बैल, बहल और कई थान गुजराती कपड़ोंके अंगीकार किये। शेष पदार्थ उसीको लौटा दिये। वह तीन पीढ़ीका नौकर था।

रोहू मछली।

१ दे (पौष वदी १०) शुक्रवारको बादशाह सवा चार कोस चलकर गांव भासोदके तालाव पर उतरा। यहां खिदमतिये प्यादों का सरदार राय मान रोहू मछली पकड़कर लाया जो बादशाह को बहुत रुचिकर थी। बादशाह सब प्रकारकी हिन्दुस्तानी मछलियोंमें रोहूको उत्तम समझता है और इधर ११ महीनेसे बहुत खोजने परभी नहीं मिली थीं। इसलिये उसको देखकर अति प्रसन्न हुआ और राय मानको एक घोड़ा दिया।

अहमदाबाद गर्दाबाद।

बादशाह लिखता है कि दोहदका परगना गुजरातमें है यहां से सब वस्तुओंमें भिन्नता विदित होती है। जंगल और भूमि और तरहकी, मनुष्य भी पृथक प्रकृतिके तथा बोलियां और ही बोलते हैं। वन जो इस मार्गमें देखे गये उनमें आम खिरनी और इमली आदि फलोंके वृक्ष थे। खेतोंकी रक्षा थूहरके भाड़ोंसे होती है। किसानोंने खेतियोंके चारों ओर थूहरकी बाड़ें लगाकर अपनी

अपनी भूमि पृथक पृथक करली है। बीचमें आने जानेके लिये तंग गलियां छोडदी हैं। यह देश सारा रेतीला है। थोड़े चलने और भीड होजानेसे यहां इतनी धूल उडती है कि आदमीका चेहरा मुशकिलसे नजर आता है। मेरे जीमें आया कि अहमदाबादको अबसे "गर्दाबाद" कहना चाहिये न कि अहमदाबाद।

२ (पौष वदी ११) शनिवारको बादशाह ३॥ कोस चलकर मही नदीके किनारे पहुंचा।

रविवारको फिर ३॥ कोस चला और गांव वर्दलेमें ठहरा। जो मनसबदार गुजरातके सूबेमें नियत थे इस स्थान पर हाजिर हुए थे।

४ (सोमवार) को ५ कोस पर चित्रसीमामें और मङ्गलवारको ५॥ कोस पर परगने मोंदेमें लशकरके डेरे लगे। यहां एक नीलगाय १३ मनकी शिकार हुई।

६ (बुध) को छः कोसका कूच होकर परगने नीलावमें मुकाम हुआ। बादशाह कसबेमें होकर निकला और १५००) लुटाये।

नीलाव।

पौष सुदी १ गुरुवारको ६॥ कोस चलकर बादशाह परगने नीलावमें उतरा। गुजरातमें इससे बडा कोई परगना नहीं था। इसकी उपज ७ लाख रुपयेकी थी बसती भी अच्छी थी। बादशाह उनमें होकर आया और एक हजार रुपये लुटाये। वह लिखता है—"मेरी इच्छा रहती है कि हर बहानेसे जगतको लाभ हो।"

गुजरातमें गाडीका सवारी देखकर बादशाहका भी जी चाहा और दो कोस तक गाडीमें बैठे। परन्तु रेत और धूलसे बहुत कष्ट पाया। इसलिये फिर पडाव तक घोडे पर गया। रास्तेमें मुकर्रबखांने अहमदाबादसे आकर तीस हजार एक मोती भेट किया।

८ (पौष सुदी २) शुक्रवारको बादशाह ६॥ कोस चलकर समुद्र के तट पर (खंभात) में उतरा।

चौदहवां वर्ष।

सन् १०२७ हिजरी।

पौष सुदी ३ संवत् १६७४ से पौष सुदी १ सं० १६७५ तक।

ता० २० दिसम्बर सन् १६१७ से ता० ८ दिसम्बर १६१८ तक।

खंभात।

बादशाह लिखता है—"खंभात पुराने बन्दरोंमेंसे है। ब्राह्मणों के कथनानुसार कई हजार वर्ष इसको बसे होगये। पहले इसका नाम त्रवावती था। राजा त्र्यम्बककुमारका इस देशमें राज्य था। यदि सविस्तर वृत्तान्त इस राजाका जैसा कि ब्राह्मण लोग कहते हैं लिखा जावे तो बहुत बडा होता है। उसके पोतोंमेंसे जब राजा अभयकुमारका राज्य था तो दैव प्रकोपसे इतनी राख और धूल बरसी कि सब बस्ती उससे भर गई और बहुतसे मनुष्य भी दब मरे। इस अनर्थपात होनेके समाचार राजाको पहलेही उसके इष्टदेवने स्वप्नमें दर्शन देकर कह दिये थे। राजा उस देवताकी मूर्त्ति को लेकर सकुटुम्ब जहाजमें बैठ गया। वह जहाज भी भवरमें फस गया। परन्तु राजाकी आयु थी इसलिये एक खम्भेके सहारे जिस पर वह मूर्त्ति टिकाई गई थी किनारे आलगा और उसने फिर नगर बसानेका विचार करके बस्तीके चिन्ह और मनुष्योंके एकत्र होनेके लिये उसी स्तम्भको गाड दिया जिससे त्रिंबावतीका नाम खंभावती पडगया। वही बिगडकर खंभात हुआ है। यह हिन्दुस्थान के बडे बन्दरोंमेंसे है और समुद्रके *औरोंमेंसे एक बडे औरके पास है जो सात कोस चौडा और चालीस कोस लम्बा अनुमान किया

---

* जिसको अङ्गरेजीमें डोवर कहते हैं अर्थात् समुद्रके किनारे पर वह जगह जहांसे नावमें बैठकर या माल लादकर जहाज पर जाते है।

जाता है। जहाज जोरमें नहीं आता। बन्दर गोगीमें ठहरता है जो खंभातके अन्तर्गत और समुद्रके निकट है। वहांसे माल गिराबों (नावों) में लादकर खंभातमें लाते हैं। और इन जहाजोंको भरते हैं तो उसी तरह यहांका माल लेजाकर उनमें डालते हैं। मेरे आनेसे पहले कई गिराब फरङ्गदेशके बन्दरोंसे खंभातमें आये थे और लौट जानेके विचारमें थे। १० (पौष सुदी ४) रविवारको उन्हें सजाकर मेरे देखनेके लिये लाये और आज्ञा लेकर अपने जानेके स्थानको गये। सोमवारको मैं भी गिराबमें बैठकर एक कोस तक पानी पर फिरा मङ्गलको शिकारके वास्ते जाकर चौतेसे दो हरन पकड़वाये।"

१२ (पौष सुदी ७) बुधको नारङ्गसर तालाबके देखनेको बाजार में होकर गया और ५०००) न्योछावर किये।

स्वर्गवासी श्रीमान्‌के समयमें इस बन्दरके कर्मचारी कल्याणराय ने उनकी आज्ञासे इस नगरका पक्का कोट ईंट और चूनेका चुनवाया है और बहुतसे व्यापारी देशान्तरसे आकर यहां बसे हैं जो सुरम्य स्थान और सुन्दर हर्म्य बनाकर सुख सम्पत्ति भोगते हैं। बाजार छोटा तो है पर स्वच्छ और खूब बसा हुआ है। गुजराती बादशाहोंके समयमें इस बन्दरकी जकातके बहुत रुपये थे। अब इस राज्यमें यह हुक्म है कि चालीसमें १) से अधिक न लें*। दूसरे बन्दरोंमें 'अशूर' के नामसे† १०) में १) और ८¶ में भी १) लेते हैं और नाना प्रकारका कष्ट व्यापारियों तथा यात्रियों को देते हैं। जद्दे में जो मक्केका बन्दर है ४)§ में १) लेते हैं, वरन इससे भी अधिक। इससे जान लेना चाहिये कि गुजरातके बन्दरों का तमगा‡ अगले हाकिमोंके समयमें कितना था। भगवत कृपासे मैंने अपने सब देशोंमें तमगा जो बहुत अधिक था छोड़ दिया है। मेरे राज्यसे तमगेका नामही उठ गया है।

---

* २॥) सैकडा। † १०) सैकडा। ¶ १२॥) सैकडा।
§ २५) सैकडा। ‡ दरियाका महसूल।

चान्दी सोनेके टके ।

वहां बादशाहने चान्दी सोनेके टके चलाये। जिनका तोल मामूली रुपयों और मोहरोंसे दूना था। सोनेके टकेमें एक ओर जहांगीरशाही, सन १०२७ और दूसरी ओर जर्बखंभात सन १२ जिलूस खुदा था। चांदीके टकेमें एक तरफ जहांगीरशाही, सन १०२७ और उसके ऊपर गोलाकार एक पद्य खुदा था जिसका यह अर्थ था—

विजय प्रकाशक जहांगीरने चांदीके ऊपर यह छाप मारी।

और दूसरी तरफ बीचमें जर्बखंभात सन १२ जिलूस और उसके ऊपर गोलाईमें यह दूसरा पद्य था—

जबकि दक्षिण जीतकर मंडूसे गुजरातमें आया।

बादशाह लिखता है—"मेरे सिवा किसी समयमें भी टके पर सिक्का नहीं लगा था चांदी और सोनेका टका मेराही निकाला हुआ है।"

भेट।

१४ गुरुवार (पौष सुदी ८) को बन्दर खंभातके वाकेनवीस अमानतखांकी भेट हुई। उसका मनसब कुछ बढ़कर डेढ़ हजारी जात और चारसौ सवारोंका होगया।

हाथीकी दौड़।

१५ शुक्रवार (पौष सुदी ९) को बादशाहने सवार होकर नूर बख्त हाथीको घोड़ेके पीछे दौड़ाया। बहुत अच्छा दौड़ा। जब ठहराया तो झट खड़ा होगया। बादशाह लिखता है—मेरी यह सवारी तीसरी बार थी।

रामदास।

१६ शनिवार (पौष सुदी १०) को जयसिंहके बेटे रामदास*

---

* रामसिंह आमेरके राजा जयसिंहका बेटा था मगर वह तो संवत् १६८२ में पैदा हुआथा। यह रामदास राजा [illegible] बेटा होगा यहां गलतीसे राजसिंहकी जगह जयसिंह लिखा गया है ऐसा जाना जाता है।

का मनसब कुछ बढ़कर डेढ़ हजारी जात और सात सौ सवारोंका होगया।

खंभातसे प्रयाण।

बादशाह समुद्र और ज्वार भाटा देखनेको १० दिन खंभातमें रहा और वहांके रहने वाले व्यापारियों, कारीगरों और पालने योग्य प्रजाको खिलअत, घोड़े, खर्च और जीविका देकर १८ (पौष सुदी १४) मङ्गलके दिन अहमदाबादको गया।

अरबी मछली।

बादशाह लिखता है—"उत्तम जातिकी मछली खम्भातमें अर्वी नामका है जिसको मछवे अनेक बार पकडकर मेरे वास्ते लाये। वह स्वाद भी बहुत होती है पर रोहूको नहीं पहुंचती।

बाजरेकी खिचडी।

गुजरातवालोंके निज भोजनोंमेंसे बाजरेकी खिचडी है जिसको लजीजा भी कहते हैं। बाजरा मोटा अनाज है। हिन्दुस्थानके सिवा दूसरी विलायतमें नहीं होता। हिन्दुस्थानके सब प्रान्तोंसे अधिक गुजरातमें होता है और सब अनाजोंसे सस्ता रहता है। बाजरेकी खिचडी मैंने कभी नहीं खाई थी अब हुक्म दिया तो पका कर लाये। बेस्वाद नहीं थी मुझे तो अच्छी लगी। मैंने कह दिया कि सूफियाना१ दिनोंमें जबकि पशु संबंधी भोजन छोडे हुए हों और बिना मांसके खाना खाता हूं तब यह खिचडी विशेष करके लाया करें।"

बादशाह मङ्गलको ६। कोस चलकर कोसालेमें और बुधको परगने बावरेमें होकर समुद्रके किनारे उतरा। यह मंजिल भी ६ कोसकी थी। गुरुवारको वहीं रहकर प्यालेकी सभा सजाई-

---

१ मुसलमानोंके भक्त सूफी कहलाते है वह जब कोई अनुष्ठान करते है तो मांस क्या घी, दूध और दही तक नहीं खाते हैं इसको भी एक प्रकारकी पशुहिंसा समझते हैं।

और बहुतसी मछलियां शिकार कीं और सब सभासदोंको बांटो गईं।

रास्तेमें दीवार।

शुक्रवारको चार कोसका कूच और गांव बाडोदेमें मुकाम हुआ रास्तेमें बादशाहने कई जगह दीवारें देखीं जो दो दो गज तक ऊंची थीं। पूछा तो मालूम हुआ कि यह दीवारें लोगोंने पुण्यार्थ बनाई हैं कि जो कोई बोझ लेजाने वाला थक जावे तो अपना बोझ इन पर रखकर सुस्ता ले और फिर विना किसीके सहारेही उठाकर अपना रस्ता ले। यह बात बादशाहके बहुत पसन्द आई। उसने हुक्म दिया कि सब बडे बडे शहरोंमें इसी प्रकार दीवारें बादशाही व्ययसे बनवा दें।

कांकरिया ताल।

२२ (माघ वदी १) शनिवारको पोने पांच कोस चलकर कांकरियाताल पर डेरा हुआ जो अहमदाबादके बसानेवाले सुलतान अहमदके पोते कुतुबुद्दीनका बनाया हुआ है। उसका घाट पत्थर और चूनेसे पक्का बंधा है। तालके बीचमें छोटासा बागीचा और एक भवन है। तालके किनारेसे वहांतक जानेके लिये पुल बना है। बहुत वर्षों से यह स्थान टूट फूट गया था और कोई ठौर बादशाहके रहनेके योग्य नहीं रही थी इसलिये गुजरातके बख्शी सफोखांने सरकारसे जीर्णोद्धार करके बागीचा भी [illegible] दिया था और एक नया झरोखा भी ताल और बागीचेके ऊपर झुका दिया था। वह बादशाहको बहुत पसन्द आया।

पुलके पासही निजामुद्दीनने जो अकबर बादशाहके [illegible] कुछ समय तक यहां बख्शी रहा था एक बाग लगाया था।

अबदुल्लहखांको दण्ड।

बादशाहसे अर्ज हुई कि निजामुद्दीनके बेटे आबिदके और अब-दुल्लहखांसे बिगाड है। इससे अबदुल्लहने इस [illegible] पैर [illegible] डाले हैं। यह भी सुना गया कि जब अबदुल्लहखां [illegible]

था तो एक दिन शराबकी मजलिसमें एक गरीब आदमीको जो कुछ ठठोल भी था, बेसमझीसे हंसी की कोई बात कहने पर उसी जगह मरवा डाला था। इन दोनों बातोंके सुननेसे बादशाह ने कोप करके बख्शियोंको हुक्म दिया कि उसके १००० दुअस्पे और तिअस्पे सवारोंको इकअस्पे रखकर ७० लाख दाम जो बढ़ें वह जागीरमेंसे काटलें।†

शाहआलमका मकबरा।

इसी जगह कुतुबआलमके बेटे शाहआलमका मकबरा भी है जिसको सुलतान महमूद बेगड़के पोते सुलतान मुजफ्फरके अमीर ताजखां नामीने एक लाख रुपये लगाकर बनाया था। शाहआलम सुलतान महमूदके समयमें सन ८८० (संवत् १५३२) में मरा था गुजरातियोंका उस पर बड़ा प्रेम था और वह कहते थे कि शाहआलम मुर्दोंको जिला दिया करता था। उसके बापने मना कर दिया था तोभी एक सेवकके मृतपुत्रको अपने पुत्रके प्राण देकर जिला दिया। उसका पुत्र उसी समय मर गया और सेवकका पुत्र जी उठा। बादशाह लिखता है—"मैंने यह बात उसके गद्दीनशीन सैयद महमूदसे पूछी थी। उसने कहा कि मैं अपने बाप दादोंसे ऐसाही सुनता आया हूं। आगे ईश्वर जाने। यह बात अकलसे दूर तो है पर लोगोंमें बहुत विख्यात है इसलिये अद्भुत समझकर लिखी गई।"

मुहूर्त्त।

बादशाहके अहमदाबादमें प्रवेश करनेका मुहूर्त्त सोमवारको था इस लिये रविवारको भी बादशाह कांकरिया तालाबही पर ठहरा रहा।

---

† हजार सवार दुअस्पा और तिअस्पाकी तनखाहके ७० लाख दाम अर्थात् पौने दो लाख रुपये होते थे वह जागीरमेंसे काटे गये एक सवारका १७५) सालाना और १४।/)४ पाई महीना हुआ।

कारेजके खरबूजे।

हिरातमें "कारेज" एक स्थान है जहांके खरबूजोंके बराबर सारे खुरासानमें कहीं अच्छे खरबूजे नहीं होते हैं। वहांके खरबूजे १४०० कोससे पांच महीनेमें आने पर भी तर ताजा आये। आये भी इतनी बहुतायतसे कि सब नौकरोंको दिये जासके।

बंगालका कोला।

ऐसेही बंगालके कोले भी एक हजार कोस चलकर ताजा पहुंचे। बादशाह लिखता है—यह फल बहुत कोमल होता है इससे मेरे निजके खाने लायक प्यादोंकी डाकमें हाथों हाथ पहुंचता है।

हाथीके दांत।

इसी दिन अमानतखांने दो हाथी दांत भेट किये जो बहुत बड़े थे। एक ३ गज ८ तसू लम्बा और १६ तसू मोटा था। तौलमें ३ मन २ सेर निकला।

अहमदाबादमें प्रवेश।

२५ (माघ बदी ५) चन्द्रवारको छः घड़ी दिन चढ़े पीछे बादशाह अपने सुन्दर और सुशील हाथी सूरत गज पर सवार होकर अहमदाबादमें दाखिल हुआ। लिखता है—"यह हाथी उस समय मस्त होरहा था तो भी उसके सरल स्वभावका विश्वास था। बहुत से स्त्री पुरुष, गलियों बाजारोंमें छतों और दीवारों पर बैठे बाट देख रहे थे। अहमदाबादकी जैसी प्रशंसा सुनी थी वैसा न निकला। बाजार चौड़ा लम्बा है परन्तु दुकानें बाजारकी चौड़ाईके तुल्य नहीं है। सब घर लकड़ीके हैं, दुकानोंके खम्भे पतले और भद्दे हैं। बाजार और गलियोंमें धूल उड़ती है। मैं कांकरिया तालसे किले तक जिसको भद्र कहते हैं रुपये लुटाता हुआ गया। भद्रका अर्थ शुभ है। गुजराती बादशाहोंके भवन जो भद्रमें थे वह सब इन ५०[1] वर्षोंमें गिर गये हैं। वर्त्तमान मकान हमारे नौकरोंने बनाये हैं जो

---

[1] अर्थात् जबसे कि उनका राज्य नष्ट हुआ है।

इस देशमें शासन करनेको आते रहे हैं। अब जो मैं मडूसे अह-मदाबादको चला तो मुकर्रबखांने पुराने स्थानोंको नये सिरसे ठीक किया और जरूरी नये मकान भी बनवाये जैसे झरोखा आमखास आदि।”

आज शाहजहांके तुलादानका शुभदिन था। मैंने नियमानुसार सुवर्ण और दूसरे पदार्थोंसे उसको तोला। उसे अबसे २७ वां वर्ष लगा है। आजही गुजरातका देश भी उसको जागीरमें दिया गया।

मांडूके किलेसे बन्दर खम्भात जिस रास्तेमें आया था १२४ कोस था २८ कूच और ३० मुकाम हुए थे खम्भातमें दस दिन रहा था—वहांसे अहमदाबाद २१ कोस था जो ५ कूच और दो मुकाम में काटे गये। इस तरह पर हम मांडूसे खम्भात होकर १४५ कोस २ महीने १५ दिनमें आये। सब मिलाकर ३३ कूच और ४२ मुकाम हुए।

जामा मसजिद।

२६ (माघ सुदी ८) मंगलको बादशाह जामा मसजिद देखनेको गया जो अहमदाबादके बाजारमें है। वहांके फकीरोंको पांच सौ रुपये दिये।

वह लिखता है—यह मसजिद सुलतान अहमदकी बनाई हुई है उसीने अहमदाबाद बसाया है। इसके तीन दरवाजे हैं और तीनोंके आगे बाजार हैं। जो दरवाजा पूर्वको है उसके सामने उक्त सुलतानका कबरस्तान है जिसमें वह, उसका बेटा मुहम्मद और पोता कुतुबुद्दीन सोये हुए हैं। मसजिदके चौककी लम्बाई कोठडियोंको छोडकर १०३ और चौडाई ८९ गज है। फिर ४॥ गज चौडे दालान हैं। चौकमें छिली हुई ईंटोंका फर्श है। दालानों के खम्भे लाल पत्थरके हैं और कोठडियोंके खम्भे ३५४ हैं। खम्भोंके ऊपर गुम्बद बने हैं। कोठडियोंकी लम्बाई ७५ गज है और चौड़ाई

२७ गज है। कोठड़ियोंका फर्श, महराब और मिमबर* सरमर पत्थरके हैं। आगेको दो मीनार तीनतीन खण्डके हैं उनके पाषाणों में बेलबूटे बड़ी कारीगरीके बने हैं। मिमबरकी दहनी भुजामें कोठड़ीके कोनेसे मिली हुई एक बैठक छांट दी है जो नर्मीके साथ पत्थरके तख्तोंसे ढकी हुई है और उसके गिर्द छत तक पत्थरका कटहरा लगा हुआ है। तात्पर्य यह है कि जब बादशाह जुमे या ईदकी नमाजके वास्ते आवे तो अपने सभासदों सहित उसपर जाकर नमाज पढ़े। उसको यहांवाले अपनी बोलीमें मक्सूरखाना (राजभवन) कहते हैं। भीड़से बचनेके लिये ऐसी युक्ति की गई है सच यह है कि यह बहुत बड़ी ममजिद है।

शेख वजीहकी खानगाह।

२७ (माघ सुदी १०) बुधवारको बादशाह शेख वजीहुद्दीनकी खानगाहको देखने गया, जो राजभवनके समीपही थी। उसके चौकमें उसकी कबर पर फातहा पढ़ा। यह खानगाह सादिक खांने जो अकबर बादशाहके बड़े अमीरोंमेंसे था बनवाई थी। शेख ३० वर्ष पहले मरा था। वह शेख मुहम्मदगौसके खलीफोंमें से था। शेखके बेटे तथा पोते अबदुल्लह और असदुल्लह भी मर चुके थे। असदुल्लहका भाई शेख हैदर दादाकी गद्दीपर था। बादशाह ने उसको पन्द्रहसौ रुपये मृत शेखका उर्स करनेको दिये जो उन्हीं दिनोंमें होनेवाला था और उतनेही रुपये वहांके फकीरोंको अपने हाथसे खैरात किये। पांच सौ रुपये शेख हैदरके भाई [illegible] को दिये। ऐसेही उसके दूसरे सम्बन्धियोंको रुपये और भूमि दी। शेख हैदरसे कहा कि जिन फकीरों और गरीबोंको वह जानता हो हुजूरमें लाकर खर्च और जमीन दिलानेकी प्रार्थना करे।

रुस्तम बाड़ी।

२८ (माघ सुदी ११) गुरुवारको बादशाह रुस्तमबाड़ीमें गया। पन्द्रहसौ रुपये मार्गमें लुटाये। यह बाग बादशाहके भाई शाह

* सकरानेकी रंगतके श्वेत पाषाणको सरमर कहते हैं।

मुरादने अपने बेटे रुस्तमके नामसे बनाया था और गुरुवारका उत्सव वहीं करके कई निज सेवकोंको प्याले दिये।

दिनढले शेख सिकन्दरकी हवेलीके बागीचेमें गया जो रुस्तम बाग के पडोसमें था। उसमें अञ्जीर खूब पके हुए थे। बादशाह लिखता है कि अपने हाथसे मेवा तोडनेमें बडा मजा आता है। मैंने आज तक हाथसे अञ्जीर नहीं तोडे थे और इस प्रसंगसे शेख सिकन्दरका मान बढ़ाना भी अभीष्ट था इसलिये सीधा चला गया। शेख सिकन्दर गुजराती है और सज्जनतासे शून्य नहीं है। गुजरातके बादशाहोंका वृत्तान्त* खूब जानता है। ९ वर्षसे मेरे बन्दोंमें नौकर है।

रुस्तमखांको रुस्तमबाडी।

बादशाहने शाहजहांकी प्रार्थनासे रुस्तमबाडी उसके नौकर रुस्तमखांको देदी। वह अहमदाबादका हाकिम बनाया गया था।

ईडरका राजा कल्याण।

इसी दिन ईडरके राजा कल्याणने उपस्थित होकर एक हाथी और ९ घोडे भेट किये। बादशाहने हाथी उसीको बखश दिया। वह लिखता है—"यह गुजरातके सीमाप्रान्तका मोतबिर जमींदार है। इसका राज्य रानाके पहाडोंसे मिला हुआ है। गुजरातके बादशाह सदा उस पर चढाई करते रहे हैं। यद्यपि किसी किसीने कुछ अधीनताभी स्वीकार की और भेटभी भेजी पर आप कभी किसी के मिलनेको नहीं गया। जब स्वर्गवासी श्रीमानने गुजरात विजय की तो राजा पर भी सेना भेजी थी। जब उसने अधीन होनेके सिवा अपना बचाव न देखा तो सेवा स्वीकार करके चौखट चूमने को आया। उस दिनसे अबतक सेवकोंमें शामिल है और जो कोई अहमदाबादके शासन पर नियत होता है और जब काम पड़ता है तो सेना सहित उपस्थित होजाता है।

---

* इसने मिरआत सिकन्दरी नामक एक अच्छी तवारीख गुजरात की बनाई है।

चन्द्रसेन।

१ बहमन (माघ वदी ९) शनिवारको चन्द्रसेनने जो इस देश
मुख्य जमींदारोंमेंसे था चौखट चूमकर ८ घोड़े भेट किये।

राजा कल्याणको हाथी।

२ (माघ वदी १०) रविवारको बादशाहने ईडरके राजा कल्याण
र सय्यद मुस्तफा तथा मीरफाजिलको हाथी दिये।

शेख अहमद खट्टूकी जियारत।

३ (माघ वदी ११) चन्द्रवारको बादशाह बाज और कुलंकि
कारको निकला। रास्तेमें पांचसौ रुपये न्योछावर किये। उधर
शेख अहमद खट्टूकी जियारत थी। बादशाहने वहां जाकर
तहा पढा।

यह शेख गांव खट्टू परगने नागोरमें पैदा हुआ। अहमदाबाद
बसानेवाला सुलतान अहमद इसका भक्त था। यहांके लोगोंको
में बड़ी श्रद्धा है। शुक्रवारको रातको बहुतसे छोटे बड़े मनुष्य
यारत करने आते हैं।

सुलतान अहमदका बेटा सुलतान मुहम्मद उसकी कबर पर
बड़ा मठ बनाने लगा था जो उसके बेटे सुलतान कुतुबुद्दीनके
यमें पूरा हुआ। यहां दक्षिण दिशामें एक बड़ा पक्का तालाब
ोका बनाया हुआ है। गुजराती बादशाहोंकी कबरें इसी
ाब पर है जिनमें सुलतान महमूद बेगड़ा, उसका बेटा मुज-
र, मुजफ्फरका पोता महमूदशहीद जो गुजरातका अन्तिम
शाह था सोये हुए हैं। महमूदकी मूंछें मोटी और मुड़ी हुई
जिससे उसको बेगड़ा कहते थे। इन कबरोंके पासही इनके
दारोंकी भी कबरें हैं।

बादशाह लिखता है—"शेखका मकबरा अति विशाल और
नल है ५ लाख रुपये इसमें लगे होंगे।"

---

† यह हलवदका झाला राजा था।

फतहवाडी।

जियारत करके बादशाह फतहबागमें गया। यह उस जगह पर है जहां खानखानाने नन्हूसे जो अपनेको सुलतान मुजफ्फर कहलाता था युद्ध करके जीत पाई थी। गुजरातवाले इसको फतहबाडी कहते हैं।

नन्हू।

एतमादखां गुजरातीने अकबर बादशाहसे कहा था कि यह नन्हू वहलवानका बेटा था। जब सुलतान महमूद तथा गुजरातके और किसी बादशाहकी सन्तान न रही थी तो हमने इसको सुलतान महमूदका बेटा बनाकर सिंहासन पर बिठा दिया क्योंकि वह समय ऐसाही था।

इस प्रसङ्गसे बादशाहने सविस्तर वृत्तान्त खानखानांके गुजरात विजय करनेका लिखा है परन्तु वह अकबरनामेमें लिखा जाचुका है इसलिये यहां अनावश्यक समझकर छोड दिया गया।

खानखानांने विजय प्राप्त होनेके पश्चात् साबरमती नदीके तट पर यह बाग १२० डोरी भूमिमें लगाया था। इसके आसपास पक्का कोट बना है। बादशाह लिखता है—"अति उत्तम विहारस्थान है दो लाख रुपये इसमें लगे होंगे। मुझको बहुत पसन्द आया। यह कहना चाहिये कि गुजरात भरमें कोई बाग इसके समान न होगा। मैंने यहां गुरुवारका उत्सव करके निज पारिषदोंको प्याले दिये और रातको वहीं रहकर शुक्रको पिछले दिन से शहरमें आया। १०००) रास्तेमें लुटाये।"

उस समय बागवानने प्रार्थना की कि कई चम्पाके झाड़ जो नदी पर बने हुए चबूतरेमें लगे थे मुकर्रबखांके नौकरने काट डाले हैं। बादशाहको यह बात बहुत बुरी लगी और स्वयं निर्णय करके साबित होने पर उसकी दो उङ्गलियां काटनेका हुक्म दिया जिससे दूसरोंको भय हो। बादशाह लिखता है—"मुकर्रबखां को खबर नहीं हुई होगी नहीं तो वह उसी समय दण्ड देदेता।"

११ (माघ वदी १२) मंगलके दिन कोतवाल एक चोरको पकड़कर लाया जो पहले कईवार चोरियां करचुका था और प्रति चोरीमें उसका एक एक अंग काटा गया था। पहली वार दहना हाथ दूसरी वार बाईं अंगुली, तीसरी वार बायां कान और चौथी वार दोनों पावोंकी पीचें काटी गई थीं। तोभी उसने अपनी आदत नहीं छोड़ी थी। रातको एक घसियारेके घरमें घुसा था उसने जागकर पकड़ लिया पर इसने उसे छुरियोंसे मार डाला। इस पर बड़ा कोलाहल हुआ और घसियारेके भाईबन्दोंने आ पकड़ा। बादशाहने उन्हींको सौंपकर दण्ड देनेकी आज्ञा देदी।

१२ (माघ वदी १३) बुधको बादशाहने तीन हजार रुपये अजमतखां और मोतकिदखांको दिये कि अलग अलग शेख खुद्दूकी कबर पर जाकर वहांके मुजावरों और गरीबोंको बांटदें।

१३ (माघ वदी ४) गुरुवारको बादशाहने शाहजहांके डेरे पर जाकर गुरुवारका उत्सव किया और मुख्य मुख्य सेवकोंको प्याले दिये। शाहजहां सुन्दर मथन हाथीको मांगा करता था जिसे अकबर बादशाह बहुत प्यार करता था और जो घोड़ेके साथ दौड़ता था। अब बादशाह वह हाथी सोनेके गहनो, सांकलो और एक हथनी सहित उसको देआया।

खुर्दा।

इन दिनोंमें समाचार मिला कि मुकर्रबखांके बेटे मुकर्रमखां उड़ीसाके सूबेदारने खुर्दाकी विलायत जीत ली और वहांका राजा भागकर राजमहेन्द्रीमें चला गया। बादशाहने मुकर्रमखांका मनसब बढ़ाकर तीन हजारी और दो हजार सवारोंका कर दिया। घोड़ा सिरोपाव और नक्कारा भी बख्शा। बादशाह लिखता है कि उड़ीसा और गोलकुंडेके बीचमें दो जमींदारोंकी आड़ थी एक खुर्देका दूसरा राजमहेन्द्रीका। सो खुर्दा तो बादशाही बन्दोंके अधीन होगया है अब दूसरेकी बारी है।

कुतुबुलमुल्ककी अर्जी।

इन्हीं दिनोंमें कुतुबुलमुल्ककी अर्जी शाहजहांके नाम पहुंची। जिसमें लिखा था कि अब मेरा राज्य बादशाही सीमाके निकटवर्त्ती होगया है और मैं बादशाही बन्दा हूं इसलिये मुकर्रमखांको मेरे राज्यमें हस्तक्षेप न करनेका हुक्म होजावे।

बादशाह लिखता है कि यह दृष्टान्त उसी मुकर्रमखांके बल वीर्य्यका है कि जिससे कुतुबुलमुल्क जैसा पड़ोसी घबड़ा गया।

हलवदका चन्द्रसेन।

हलवदके जमींदार चन्द्रसेनको घोडा सिरोपाव और हाथी मिला।

मुजफ्फर।

टट्ठेके अगले बादशाह मिरजा बाकीतरखांका बेटा मुजफ्फर जो मिरजा बाकीके मरने पर उस राज्य पर मिरजा जानीका अधिकार होजानेसे अपने नाना काच्छके राव भाराके पास रहा करता था बादशाहका पधारना सुनकर सेवामें उपस्थित हुआ। अमीर तैमूर के समयसे उसके पूर्वज अधीन रहते आये थे। इसलिये बादशाह ने उसका पालन करना उचित समझकर खर्चके वास्ते दो हजार रुपये खिलअत सहित दिये।

फतहबागके अञ्जीर।

(माघ सुदी १४) गुरुवारको बादशाह फतहबागमें गुलाबकी बहार देखनेको गया जो एक क्यारीमें खूब फूला हुआ था। बादशाह लिखता है कि "गुलाब इस मुल्कमें कम होता है अञ्जीर भी पके हुए थे कई अपने हाथसे तोड़े। उनमेंसे एक बड़ा था वह तौलमें ७॥ तोलेका हुआ।"

कारेजके खरबूजे।

इसी दिन खाने आजमके भेजे कारेजके १५०० खरबूजे बादशाहके पास पहुंचे। बादशाहने १००० तो उन सेवकोंको दिये जो सेवामें उपस्थित थे और ५०० अन्तःपुरमें भेजे।

बादशाह चार दिन भोग विलासमें व्यतीत करके २४ (फागुन

वदी ३) चन्द्रवारको रात्रिको नगरमें आया और कारंजके खरबूजे अहमदाबादके बड़े बूढ़ोंको दिये। वह उनको आश्चर्यमें रह गये कि दुनियामें ऐसी न्यामत भी होती है। क्योंकि बादशाहके कथनानुसार गुजरातमें खरबूजे बहुत खराब होते हैं।

गुजरातके अंगूर।

२७ (फागुन वदी ६) गुरुवारको बकौना नामक बागीचेमें बादशाहने प्यालेकी मजलिस जोड़ी, और निजसेवकोंको प्याले भर भर कर दिये। यह बागीचा राजभवनमें ही किसी गुजराती बादशाहका लगाया हुआ था और इस समय एक क्यारीमें पके हुए दाख देखकर बादशाहने कह दिया कि जिन बन्दोंने प्याले पिये हैं वह अपने हाथसे तोड़ तोड़कर दाखोंका भी स्वाद लें।

अहमदाबादसे मालवेको लौटना।

१ असफन्दार (फागुन वदी ८) चन्द्रवारको अहमदाबादसे मालवे को कूच हुआ। बादशाह रुपये लुटाता हुआ कांकरिया तास तक गया जहां डेरे लगे थे। वहां तीन दिन तक रहा।

मुकर्रबखांकी भेट।

४ (फागुन वदी १२) बृहस्पतिवारको मुकर्रबखांकी भेट हुई। बादशाह लिखता है कि कोई उत्तम पदार्थ न था जिससे [illegible] रुचि मनमें होती। उसने इसी संकोचसे यह भेट अपने बेटोंको दी थी कि अन्तःपुरमें पहुंचा दें। मैंने एक लाख रुपयेके रत्न और रत्नजड़ित आभूषण लेकर शेष उसीको फेर दिये। [illegible] घोड़ोंमेंसे १०० लिये परन्तु कोई घोड़ा ऐसा न था कि जिसकी प्रशंसा की जावे।

रुस्तमखांको झंडा और नक्कारा।

५ असफन्दार शुक्रवार (फागुन सुदी १३) को ५ कोस [illegible] अहमदाबादकी नदी पर डेरे हुए। बादशाहने रुस्तमखांको [illegible] खांकी प्रार्थनाके अनुसार जो उसने उसे गुजरातमें [illegible] छोड़ते समय की थी झण्डा नक्कारा सिरोपाव और [illegible]

इनायत किया। रुस्तमखां शाहजहांके मुख्य सेवकोंमेंसे था। बादशाह लिखता है कि इस राज्यमें यह प्रथा नहीं थी कि शाह-जादोंके सेवकोंको झण्डा और नक्कारा दिया जावे। मेरे पिताकी मुझ पर बहुत कृपा थी तो भी उन्होंने मेरे अनुचरोंके वास्ते कभी पदवी नक्कारे और झण्डे देनेकी चेष्टा नहीं की। परन्तु मुझे शाह-जहांसे इतना अधिक स्नेह है कि मैं लेशमात्र भी कभी उसकी मनोकामना पूर्ण करनेसे विमख नहीं रहता हूं। वास्तवमें वह मेरा सपूत बेटा है और सम्पूर्ण कृपाओंका पात्र है। युवावस्था और राजलक्ष्मी प्राप्त होनेके पीछे जिधर उसने चढाई की है उधर मेरी इच्छाके अनुसार लडाई जीती है।

इसी दिन मुकर्रबखांको घर जानेकी आज्ञा हुई।

बादशाहने कुतुबआलमकी कबर पर जाकर वहांके मुजावरोंको पांच सौ रुपये दिये।

६ असफन्दार शनिवार (फागुन बदी १४ तथा अमावस) को बादशाहने महमूदाबादकी नदीमें नाव पर जाकर मछलीका शिकार किया।

सैयद मुबारकका मकबरा।

इसी नदीके तट पर सैयद मुबारकका मकबरा उसके बेटे सैयद मीरांने दो लाख रुपयेसे अधिक लगाकर बहुत पक्का और ऊंचा बनाया था। बादशाह उसके विषयमें लिखता है कि गुजराती बादशाहोंके मकबरे जो देखे गये तो उनमें कोई इसका दशमांश भी नहीं है यद्यपि वह देशाधिपति थे और यह नौकर था। श्रद्धा और साहस परमेश्वरका दिया हुआ होता है। सहस्रों धन्यवाद है ऐसे पुत्रको जिसने अपने पिताका ऐसा मकबरा बनाया है।

मछलीमें मछली।

रविवार (फागुन सुदी १) को भी वहीं डेरे रहे। चारसौ मछ-लियां शिकार हुईं। एक बिना छिलके की थी जिसे संगमाही कहते हैं। बादशाहने उसका पेट बहुत बड़ा देखकर चिरवाया

तो उसमेंसे एक छिलकेदार मछली निकली जो तुरन्त निकलते ही मर गई थी । संगमाहो तोलमें ६॥ सेरकी और दूसरी २ सेरकी हुई ।

गुजरातकी वर्षा ।

८ सोमवार (फागुन सुदी २) को बादशाह ईद पाव चार कोस चलकर गांव सोटेके पास ठहरा । लोग गुजरातकी बरसातकी बहुत तारीफ करते थे पिछली रातसे दोपहर दिन तक छूट मेह बरसा—धूल बैठ गई और बादशाहने यहांकी वर्षा भी देख ली ।

मंगलवारको ५॥ कोस कूच होकर जरीसमा गांवके पास डेरे लगे । यहां मानसिंह सेवडाके मरनेका समाचार मिला ।

मानसिंह सेवडा ।

बादशाह लिखता है कि सेवड़े हिन्दू नास्तिकोंमेंसे हैं जो सदैव नंगे सिर और नंगे पांव रहते हैं । उनमें कोई तो सिर और दाढ़ी मूछके बाल उखाड़ते हैं और कोई मुड़ाते हैं । सिला हुआ कपड़ा नहीं पहनते । उनके धर्मका मूलमन्त्र यह है कि किसी जीवको दुःख न दिया जावे । बनिये लोग इनको अपना गुरु मानते हैं दण्डवत करते हैं और पूजते हैं । इन सेवड़ोंके दो पन्थ हैं । एक तपा दूसरा करतल (खरतर) । मानसिंह करतलवालों का सरदार था और बालचन्द तपाका । दोनों सदा स्वर्गवासी श्रीमानकी सेवामें रहते थे । जब श्रीमानके स्वर्गारोहण पर खुसरो भागा और मैं उसके पीछे दौड़ा तो उस समय बीकानेरका जमीं-दार रायसिंह भुरटिया जो उक्त श्रीमानके प्रतापसे अमीरोंके पदको पहुंचा था मानसिंहसे मेरे राज्यकी अवधि और दिन दशा पूछता है और वह कलजीभा जो अपनेको ज्योतिषविद्या और मोहन मारण वशीकरणादिमें निपुण कहा करता था उससे कहता है कि इसके राज्यकी अवधि दो वर्षकी है । वह तुच्छ जीव उसकी बात का विश्वास करके बिना छुट्टीही अपने देशको चला गया । फिर उस पवित्र परमात्मा प्रभुने मुझ निज भक्तको अपनी दयासे सुशोभित किया और मैं विजयी होकर राजधानी आगरेमें उपस्थित हुआ तो

लज्जित होकर सिर नीचा किये हुए दरबारमें आया। शेष वृत्तान्त उसका अपनी जगह पर लिखा जाचुका है। और मानसिंह उन्हीं तीन चार महीनेमें कोढी होगया। उसके अंग प्रत्यङ्ग गिरने लगे वह अबतक अपना जीवन बीकानेरमें ऐसी दुर्दशासे व्यतीत कर रहा था कि जिससे मृत्यु कई अंशोंमें उत्तम थी। इन दिनों में जो मुझको उसकी याद आई तो उसके बुलानेका हुक्म दिया उसको दरगाहमें लाते थे पर वह डरके मारे रास्तेमेंही जहर खाकर नरकगामी होगया।

अब मुझ भगवद्भक्तकी इच्छा न्याय और नीतिमें लीन हो तो जो कोई मेरा बुरा चेतेगा वह अपनी इच्छाके अनुसारही फल पावेगा।

सेवडे हिन्दुस्थानके बहुधा नगरोंमें रहते हैं। गुजरात देशमें व्यापार और लेनदेनका आधार बनियों पर है इस लिये सेवड़े यहां अधिकतर हैं।

मन्दिरोंके सिवा इनके रहने और तपस्या करनेके लिये स्थान बने हुए हैं जो वास्तवमें दुराचारके आगार हैं। बनिये अपनी स्त्रियों और बेटियोंको सेवडोंके पास भेजते हैं लज्जा और शील-वृत्ति बिलकुल नहीं है। नाना प्रकारकी अनीति और निर्लज्जता इनसे होती है। इस लिये मैंने सेवडोंके निकालनेका हुक्म देदिया है और सब जगह आज्ञापत्र भेजे गये हैं कि जहां कहीं सेवडा हो मेरे राज्यमेंसे निकाल दिया जावे।

कच्छी घोडा।

१० बुधवार (फागुन सुदी ४) को दिलावरखांके बेटेने अपने बापकी जागीर पट्टनसे आकर एक सुन्दर कच्छी घोडा भेट किया। बादशाह लिखता है कि जबसे मैं गुजरातसे आया हूं ऐसा अच्छा घोडा कोई मनुष्य भेटमें नहीं लाया था एक हजार रुपयेका था।

सेवकों पर कृपा।

११ गुरुवार (फागुन सुदी ५) को उसी तालावके तट पर प्यालों की मजलिस जुड़ी। बादशाहने शुजाअतखां, सफीखां आदि कई

सेवकोंको जो इस सूबेके कामों पर नियत थे घोड़े सिरोपाव और नक्कारा देकर बिदा किया। कईके मनसब भी बढ़ाये गये।

कुतुबुलमुल्कके वकीलको जो उसकी भेट लेकर आया था तीन हजार दरब मिले।

अनार और बिही।

इसी दिन शाहजहांने बिही और अनार जो फराह†से उसके वास्ते लाये गये थे भेट किये। बादशाह लिखता है कि अबतक इतने बड़े अनार नहीं देखे थे बिही तो तौलमें २८ तोला ८ माशा और अनार ४०॥ तोलेके हुए।

शेखोंको उपहार।

१६, सोमवार (फागुन सुदी ८) को बादशाहने गुजरातके शेखों को जो पहुंचाने आये थे फिर सिरोपाव खर्च और भूमि देकर बिदा किया और हरेकको एक एक धर्मपुस्तक भी निज पुस्तकालयसे दी जिनकी पीठ पर अपने गुजरातमें आने और पुस्तक देनेकी मिती लिखदी।

बादशाह लिखता है—"इस समय जबतक अहमदाबाद मेरी सवारीके उतरनेसे शोभायमान रहा दिन रात मेरा यही काम था कि सुपात्रोंको अपनी आंखोंसे देखकर धन और पृथिवी प्रदान करूं। शेख अहमद सदर (दानाध्यक्ष) और दूसरे कई निकट के सेवक नियत कर दिये गये थे कि फकीरों और दरवेशोंको मेरी सेवामें लाते रहें। तोभी शेख मुहम्मदगोसके बेटे शेख वजीहुद्दीनके पोते और दूसरे सज्जनों को भी रुपया देदिया था कि उनके जाननेमें इच्छा वाले कोई हकदार हो उसको खिदमतमें हाजिर करें। ऐसेही महलोंमें कई स्त्रियां इसी काम पर लगाई हुई थीं कि दीन और दरिद्री ब्याहवालियोंको मेरे पास लाया करें। क्योंकि यह उद्देश्य संपूर्ण रूपसे था कि इन बहुत वर्षोंके पीछे मुझ जैसा बादशाह इस देशमें गरीबोंके भाग्यसे

† खुरासानका एक नगर।

यहां आगया हो तो चाहिये कि कोई भी विमुख न रहे। खुदा गवाह है कि इस उद्योगमें मैंने कोई कसर नहीं रखी है और किसी समय भी इस कामके करनेसे निश्चिन्त नहीं बैठ रहा हूं। यद्यपि अहमदाबादमें आनेसे कुछ हर्ष नहीं हुआ है तो भी अपने ज्ञानी मनको इस अनुभवसे प्रसन्न रखता हूं कि मेरा आना दीन दरिद्रोंके एक बड़े झुण्डको जीविकाका हेतु हुआ है और बहुत लोग निहाल होगये हैं।

कोकबकी विचित्र घटना।

१६ मंगलवार (फागुन सुदी १०) को कमरखांका बेटा और मीर अबदुललतीफ कजवीनीका पोता कोकब पकड़ आया। यह पीढ़ियोंका नौकर था दक्षिणकी सेनामें संयुक्त था। कई दिन तक वहां खर्चसे तंग रहा और इसके अतिरिक्त बहुत वर्षों तक मनसब में कुछ भी वृद्धि नहीं हुई थी इस लिये बादशाहकी कृपा न होनेके भ्रमसे विरक्त होकर बुरहानपुरसे निकल गया और ६ महीने तक दक्षिणके सब देशोंमें दौलताबादसे बिदुर बीजापुर करनाटक और गोलकुण्डे पर्यन्त फिरकर दाबुल बन्दरमें गया। वहांसे नावमें बैठकर बन्दर गोवेमें आया। सूरत बन्दर भड़ौच और मार्गकी दूसरी बस्तियोंको देखता हुआ अहमदाबादमें आया था कि शाह-जहांका एक नौकर जाहिद उसको पकड़कर दरगाहमें लाया। बादशाहने देखकर पूछा कि तुमने वंशपरम्परासे सेवामें रहने पर भी ऐसा कपूतपन क्यों किया? उसने अर्ज की कि सतगुरु और सच्चे स्वामीकी सेवामें असत्य नहीं कहा जाता। सत्य यह है कि पहले तो कृपाभिलाषी था परन्तु जब भाग्य अनुकूल न हुआ तो घर छोड़कर जंगलको निकल गया। बादशाह लिखता है कि उस की वाणीकी सत्यता मेरे दिलमें खुब गई और मैंने क्रूरता छोड़कर पूछा कि इस भ्रमणमें तूने आदिलखां, कुतुबुलमुल्क और अंबरको भी देखा था? उसने सविनय कहा—जब मेरे प्रारब्धने इस दरगाहमेंही सहायता न की और अपार समुद्र रूपी

सभ्य राज्यमें भी मेरो प्यास नहीं बुझी तो मैं उन छोटे नालों खोलों में कब होंठ डवोनेवाला था। वह मस्तकही छिद जाय कि जो इस दरगाहमें न झुककर दूसरी जगह झुके।

मैं जिस दिनसे निकला हूं आजतककी दिनचर्य्या एक वर्क़में लिखता रहा हूं। उससे मेरा वृत्तान्त विदित होजावेगा।" उसका यह कहना और भी कृपाका कारण हुआ। मैंने उसके लेखोंको मंगाकर पढा तो ज्ञात हुआ कि इस पर्यटनमें उसको बहुत कष्ट हुआ है। बहुधा पैदल फिरा है। खाना भी नहीं मिला है। इससे मेरा मन उस पर मेहरबान हुआ। दूसरे दिन मैंने अपने सम्मुख बुलाकर उसके हाथ पांवकी बेडियां खुलवा दीं। खिलअत घोडा और १०००) खर्चके वास्ते देकर उसका मनसब पहलेसे ड्योढ़ा कर दिया। उसके ऊपर इतनी कृपा और अनुग्रह की जिसका उसको कभी ध्यान भी न हुआ था।

काश्मीरकी मरी।

१७ बुधवार (फागुन सुदी ११) को ६ कोस चलकर गाय बारा-सिकोरमें कम्प लगा। काश्मीरकी मरीके विषयमें तो पहले लिखा ही गया। इस दिन वहांके समाचारलेखककी विनयपत्रिका पहुंची कि इन देशोंमें मरीका बडा जोर है। बहुतसे मनुष्य इस प्रकारसे मरते हैं कि पहले दिन शिरमें पीडा और ज्वर होता है नाकसे लहू बहुत निकलता है। दूसरे दिन प्राण निकल जाता है। जिस घरमें एक मनुष्य मरता है फिर उस घरके सब प्राणी मर जाते हैं। जो कोई रोगी या मृतकके पास जाता है वह भी रोगग्रस्त होजाता है। एक मनुष्य मर गया था उसको घासके ऊपर रखकर धोया था। एक गायने वह घास खाई और मर गई। उसका मांस कई कुत्तोंने खाया वह भी सब मरगये। यहांतक होगया है कि रोगके भयसे बेटा बापके और बाप बेटेके पास नहीं जाता है। अनोखी बात यह है कि जिस बस्तीसे यह रोग फैला था वहां तीन हजार घर जल गये। इस विपदके पीछे तहदेहा [illegible]

गांवों और आसपासके लोग उठे तो क्या देखते हैं कि घरोंके द्वारों पर एक लंबी चौकोरकी शकल बनी है २ बड़े चक्र एक दूसरेके सामने, २ चक्र मझोले एक चक्र छोटा और फिर दूसरे चक्र जिन के बीचमें सफेदी नहीं थी। यह शकलें सब घरोंमें होगई थीं और मसजिदोंमें भी। कहते हैं कि तभीसे मरीमें भी न्यूनता होगई है। बादशाह लिखता है कि यह वृत्तान्त बहुत विचित्र था इस लिये लिख दिया है परन्तु मेरी बुद्धि इसको स्वीकार नहीं करती है।

राजा जाम।

१८ गुरुवार (फागुन सुदी १२) को २॥ कोस चलकर मही नदी के तट पर ठहरना हुआ। बादशाह लिखता है—इस दिन जमींदार जामने जमीन चूमकर ५० घोडे १०० मुहरें और १०० रुपये भेट किये। इसका नाम जस्सा है जाम पदवी है जो कोई गद्दी पर बैठता है उसको जाम कहते हैं। यह गुजरात देशके बडे नामी जमींदारोंमेंसे है। इसका देश समुद्रसे मिला हुआ है पांच छः सहस्र सवार सदा अपने समीप रखता है। काम पडने पर दस हजार तक ला सकता है। इसकी विलायतमें घोडे बहुत होते हैं कच्छी घोडा दो हजार तकका होता है। मैंने इस राजा को सिरोपाव दिया।

कूचबिहारका राजा,

इसी दिन कूचके राजा लक्ष्मीनारायणने जो बंगालके कोनेमें है बादशाही चौखटको चूमकर ५०० मुहरें नजर कीं, खिलअत और जडाऊ खंजर पाया।

सईदखांका बेटा नवाजिशखां जो जूनागढ़का हाकिम था उपस्थित होकर जमीन चूमनेके सौभाग्यको प्राप्त हुआ।

१९ शुक्रवार (फागुन सुदी १३) को मुकाम रहा। २० शनिवारको ३॥ कोस चलकर भनूदके तालाब और २१ रविवारको ४॥ कोस पर सदरवालेके तालाब पर मुकाम हुआ। यहां अजमतखां

गुजरातीके मरनेका समाचार अहमदाबादसे आया। अच्छा सेवक और गुजरातकी व्यवस्थाका पूरा ज्ञाता था। इससे बादशाहका चित्त उदास हुआ।

लजवन्ती।

बादशाह लिखता है कि इस तालमें एक दूब देखी गई जिसके पत्ते उंगली या लकड़ीकी नोक लगतेही सुकड़ जाते हैं और कुछ देर पीछे फिर खिल जाते हैं। यह इमलीके पत्तोंसे मिलते हुए होते हैं। इसका नाम अरबी भाषामें लज्जाका वृक्ष है जिन्दीमें लजवन्ती कहते हैं। यह भी अनोखी है और नाम भी अनोखा है।

सिंहका शिकार।

२२ सोमवार (चैत्र बदी १) को वहीं मुकाम रहा। बादशाह ने बन्दूकसे एक बड़ा शेर मारा जो ७। मनका था। वह इससे भी बड़े बड़े बहुत मार चुका था। जो माण्डोंगढ़में मारा था वह ८॥ मनका था।

२३ (मंगलवार) को ३॥ कोस चलकर बायव नदी और २४ बुधवारको ६ कोसके लगभग इमदहके तालाब पर मुकाम हुआ। २५ को वहां प्यालेकी मजलिस हुई। प्याले देकर निज सेवकों का मान बढ़ाया गया।

नवाजिशखां पांच सदी जातके बढ़नेसे तीन हजारी जात दो हजार सवारका मनसब और हाथी सिरोपाव पाकर अपनी जागीर को विदा हुआ।

बलखके घोड़े।

मुहम्मदहुसेन सबलक घोड़े खरीदनेके लिये बलखको भेजा गया था। उसने इसी दिन आकर घोड़े दिये। इनके साथे भर घोड़ोंमेंसे एक अबरश घोड़ा बादशाहको बहुत पसन्द आया। ऐसा सुरंग और सुडौल घोड़ा अबतक उसने नहीं देखा था। वह और भी कई राहवार घोड़े अच्छे लाया था। बादशाहने उसको तिजारतखांकी पदवी दी।

कूचका राजा।

२६ शुक्रवार (चैत्र वदी ५) को ५॥ कोस पर गांव आलोटमें डेरे हुए। बादशाहने कूचनरेशके चचा लक्ष्मीनारायणको जिसे अब गुजरातका मुल्क दिया गया था घोड़ा दिया।

लंगूरका बच्चा और बकरी।

२८ रविवार (चैत्र वदी ७) को बादशाह पांच कोस चलकर कनवै दोहदमें ठहरा जो गुजरात और मालवेकी सीमा पर है। यहां पहलवान बहाउद्दीन बरकन्दाजने एक लंगूरका बच्चा बकरीके साथ लाकर प्रार्थना की कि रास्तेमें मेरे एक निर्दयी तोपचीने किसी वृक्ष पर लंगूरनीको गोदमें बच्चा लिये देखकर बन्दूक मारी। लंगूरनी गोली लगतेही बच्चेको एक डाली पर छोड़कर गिर पड़ी और मर गई। मैं उस बच्चेको उतारकर इस बकरीके पास लेगया। परमेश्वरने बकरीके दिलमें दया उपजाई वह उसको चाटने लगी और विभिन्न जाति होने पर भी इसको लंगूरके बच्चेसे ऐसा मोह होगया है कि जैसे पेटका बच्चा हो।

बादशाह लिखता है—"मैंने बच्चेको बकरीसे अलग कराया तो वह व्याकुल होकर चिल्लाने लगी। उधर बच्चा भी बहुत घबराया। लंगूरके बच्चेका मोह तो जो दूध पीनेसे है उतना अधिक विस्मय-जनक नहीं है जितना बकरीका मोह लंगूरके बच्चेके साथ होनेसे होता है और इसी आश्चर्यसे यह बात लिखी गई है।"

२९ सोम और ३० मंगल (चैत्र वदी ८ और ९) को भी वहीं डेरे रहे।

इति प्रथम भाग समाप्त।

बादशाहकी आज्ञा।

"मैंने आज्ञा की कि इस बारह वर्षके वृत्तान्तका एक ग्रन्थ बना कर कई प्रतियां तैयार करें जिन्हें मैं निज सेवकोंको दूं और समग्र देशोंमें भेजूं और राजवर्गीय तथा विद्वान लोग इसको अपने कामोंका पथदर्शक बनावें।"

जहांगीरनामा ।

दूसरा भाग ।

चौदहवें वर्ष (सन १०२७) का शेषभाग १ला नौरोज़ फरवरदीन महीना ।

२३ रबीउल अव्वल सन १०२७ चैत्र वदी १० संवत् १६[illegible] बुधवारको १४॥ घडी रात जाने पर सूर्य मेष राशि [illegible] । इस नये दिन तक बादशाहके राजतिलकसे लेकर १२ वर्ष [illegible] बीते और शुभ घडी शुभ मुहूर्त्त में नयावर्ष लगा ।

वर्षगांठके उत्सवमें दान—२ फरवरदीन गुरुवार (चैत्र [illegible] को ५१वां वर्ष लगनेका तुलादान हुआ इस उत्सवमें बादशाह[illegible] निज सेवकोंको प्याले देकर प्रसन्न किया ।

आसिफखांके ५ हजारीजात और ३ हजार सवारोंके [illegible] पर १००० सवार दुअस्पा और तिअस्पा बढाये गये ।

साबितखांको अर्ज मुकर्रर और मोतमिदखां जो [illegible] काम मिला ।

दिलावरखांके बेटेका भेट किया हुआ कच्छी घोडा [illegible] गुजरातमें और घोडा न था बादशाहने मिरजा [illegible] और प्रार्थनासे उसको देदिया ।

[illegible]को हीरे, लाल, पन्ने और मोतियोंके हार [illegible] कगन और राजा लक्ष्मीनारायणजी की बेटी[illegible]

मुरव्वतखांने तीन हाथी बङ्गालेसे भेजे थे, उनमेंसे दो खासे वनाये गये।

शुक्रको रातको तालाब पर दीपमालिका बहुत अच्छी हुई।

रविवारको हाजी रफीक, शाह अब्बासका पत्र, पंचाक जातिके घोडे और दिव्य वस्त्रोंके थान लेकर ईरानसे आया। बादशाहने कई घोडे खासे तवेलेमें भेजे और उसे मलिकुलतुज्जार (व्यापारियोंके राजा) की पदवी दी।

सोमवारको बादशाहने खासी तलवार जड़ाऊ माला और ४ मोती कुंडलोंके वास्ते राजा लक्ष्मीनारायणको दिये।

मिरजा रुस्तम ५ हजारी, एतकादखां चारहजारी, और सरफराजखां अढाई हजारी हुआ।

अनीराय सिंहदलन और फिदाईखांको सौ सौ मोहरोंके घोड़े मिले।

पंजाब का सूबा एतमादुद्दौलाको दे रखा था उसकी प्रार्थनासे बादशाहने अहदियोंके बख्शी मीरकासिमको हजारीजात ४०० सवारोंका मनसब और कासिमखांका खिताब देकर वहां शासन करनेको भेजा।

राजा लक्ष्मीनारायणको बादशाहने पहिले इराकीघोड़ा दिया था। इस दिन हाथी और तुरकी घोडा देकर बङ्गाले जानेकी आज्ञा दी।

जामको भी घरजानेकी विदाईमें, जड़ाऊ कमरपेटी जड़ाऊ माला २ तुरकी और इराकी घोड़े सिरोपाव सहित मिले। इसी मितीको मीरजुमलाने इराकसे आकर चौखट चूमी।

मीरजुमला—यह इसफहानके प्रतिष्ठित सैयदोंमेंसे था। पहले १० साल तक गोलकुंडेके मुहम्मदकुली कुतबुलमुल्कका मंत्री था। नाम था मुहम्मदअमीन। कुतबुलमुल्कने उसे मीरजुमलाकी पदवी दी। १४ साल गोलकुंडेमें रहकर ईरानमें शाह अब्बासके पास चला गया था। उसका भतीजा मीर रजी, शाहका

दानाध्यक्ष था। शाहने अपनी बेटी उससे व्याही थी। बादशाहने मीरजुमलाका विचार अपने दरबारमें नौकरी करनेका सुनकर उसे बुलाया था। दक्ष १२ घोड़े ६ थान अण्डोंके और २ पातुरिया भेट लेकर आया। बादशाहने २०००० दरब सिरोपाव सहित उसे दिये।

११ शनिवार (चैत सुदी ५-६ संवत् १६७५) को बादशाह हाथी का शिकार खेलनेके लिये चलकर गांव कड़वाड़ेमें और १२ को गांव नजारामें ठहरा। यहांसे दोहद (१) ८ कोस और शिकार का स्थान १॥ कोस था।

हाथीका शिकार—१३ सोमवार (चैत सुदी ८) सवेरे बादशाह बहुत से निज सेवकों सहित हाथी के शिकारको गया। पहिलेसे बहुतसे सवारों और पंदलोंने जाकर पहाड़ोको घेरलियाथा। बादशाहके बैठनेको १ वृक्षपर सिंहासन बनाया गयाथा। उसके आसपास अमीरोंको बैठकें वृक्षों पर बनीथीं। २०० हाथी बहुतसी हथनियों और सुदृढ़ नागपाशों समेत वहां लाये गये थे। एक एक हाथी पर दो दो महावत "जरगा" जातिके जिनका कामही हाथीका शिकार है बैठे थे। यह बात ठहरी थी कि जङ्गली हाथी चौतरफसे घेरकर, बादशाहके सम्मुख शिकारका कौतुक दिखानेके लिये लाये जावें। परन्तु लोग जब जङ्गलमें आये तो घने वृक्षों और ऊंची नीची भूमिके होनेसे शिकारका प्रबन्ध टूट गया। जङ्गली हाथी घबराकर हर तरफको चलेगये। केवल १२ हथनियां और हाथी इधर आये उनके भी निकल जानेका भय था इसलिये पालतू हाथियोंको आगे करके जहां मिले वहीं उनको बांधा। यद्यपि बहुत हाथी हाथ नआये तथापि दो उत्तम हाथी पकड़े गये। बादशाह लिखता है—"जिस जङ्गलमें यह हाथी पकड़े गये एक पहाड़ है। उसको रावस पहाड़ी कहते हैं। इसी प्रसंगसे मैंने उन दोनों हाथियोंके नाम भी रावसोंके नामपर रावसनर और पावननर रक्खे।

(१) अब दोहद पंचमहाल जिले गुजरातमें है।

बादशाह १४ मङ्गल और १५ बुधको भी वहीं रहा। १
ब्रहस्पतिवार (चैतसुदी ११) की रातको कूच करके "काडे बारह
में आगया। तीन हजार रुपये पंजाबके पहाड़ी राजा संग्रामक
इनायत हुए। गर्मी बहुत पड़ती थी दिनको चलना कठिनथा इ
लिये रातका कूच ठहरा।

१८ शनिवारको दोहदमें डेरे हुए।

१९ रविवार (चैतसुदी १४) को मेष संक्रांति थी(१) बादशा
सिरे दरबार करके सिंहासन पर बैठा। शहनवाजखांके मनसब
हजारीजातमें २००० सवार दुअस्पा और तिअस्पा हुए। ख्वाज
अबुलहसन मीर बख्शीका मनसब बढ़कर ४ हजारीजात औ
२००० सवारोंका होगया।

काश्मीरकी सूबेदारी—अहमदबेगखां काबुली, काश्मीर
हाकिमने यह प्रतिज्ञा की थी कि दो वर्षमें तिब्बत और किश्तव
को जीत लूंगा परन्तु यह काम उससे न बना। इस लिये बा
शाहने उसे पदच्युत करके दिलावरखां काकड़को काश्मीरक
सूबेदारी दी और हाथी सिरोपाव प्रदान करके बिदा किया। उस
भी दो वर्षमें तिब्बत और किश्तवार फतह करदेनेका प्रतिज्ञा प
लिख दिया।

मिर्जा शाहरुखका बेटा "बदीउज्जमां" अपनी जागीर सुलत
पुरसे आया।

पंजाबकी सूबेदारी—बादशाहने कासिमखांको जड़ाऊ खं
और हाथी देकर पञ्जाबकी सूबेदारी पर भेजा।

अहमदाबादको लौटना—२१ मङ्गलवार (बैशाखबदी १) क
रातको बादशाहने अहमदाबादकी ओर बाग फेरी। गर्मीकी ते
और हवाके बिगड़ जानेसे लोगोंको बहुत कष्ट होने लगा था इ
लिये राजधानीको जानेका विचार छोड़कर अहमदाबादमें रह

(१) चंडूपञ्चाङ्गमें मेष संक्रांति पहले दिन लिखी है।

स्थिर किया। क्योंकि गुजरातकी बरसातकी बहुत प्रशंसा सुनीथी। अहमदाबादकी भी बहुत बड़ाई होतीथी।

आगरेमें मरी—उसी समय यह भी खबर आई कि आगरे में फिर मरी फैलगई है, बहुतसे आदमी मरते हैं। इससे आगरे न जानेका विचार और भी स्थिर होगया।

२३ (वैशाख वदी २) को गुरुवारका उत्सव गांव जालोदमें हुआ।

सिक्केमें राशि—पहिले सिक्केमें १ ओर बादशाहका नाम और दूसरी ओर स्थानका नाम महीना और सन जुलूसी होता था। अब बादशाहने महीनेकी जगह उस महीनेकी राशिका चित्र खुदवाया जैसे फरवरदीनमें मेष, उरदीबहिश्तमें वृष। राशिके चिह्नमें उदय होता सूर्य्य बनाया गया। बादशाह लिखता है यह बात मैंने निकाली पहले न थी।

कोयल—२७ चन्द्रवार(१) (वैशाख वदी ६) की रातको गाव बदरवाले परगने सहरामें डेरे हुए। यहां बादशाहने कोयलकी बोली सुनी। बादशाह लिखता है—"कोयल एक चिड़िया कव्वेकी किसम से है, पर उससे छोटी। कव्वेकी दोनों आंखें काली होतीहैं और कोयलकी लाल—नर काला होता है और मादाके बदन पर सफेद तिल होते हैं। नरकी बोली बहुत प्यारी होती है मादाकी बोली वैसी नहीं होती। कोयल हिन्दुस्तानकी बुलबुल है। जैसे बुलबुल बहारमें मस्त होती है वैसेही कोयलभी बरसातमें मस्त होजाती है। उसकी कूक बहुत सुहावनी और मनभावनी होती है। यह बहुधा आमके वृक्षपर बैठती है और आमोंके रंग और सौरभसे लदित रहती है। अजब बात यह है कि कोयल अपने अंडोंको आप नहीं सेती जहां कहीं कव्वेका घोंसला देखती है उसमेंसे उसके अंडे को चोंचसे तोडकर फेंक देती है और अपना अंडा उसमें उनकी जगह रख आती है। कव्वा उसको अपनाही अंडा समझ कर सेता है और बच्चा निकालकर पालता है। यह बात मैंने अपनी आंखोंसे देखी है।

२८ बुध (वैशाखबदी ८) को महीनदीके तटपर डेरे हुए। इस

---

(१) मूलमें लेखक दोषसे शनिवार लिखा है।

गुरवारके उत्सवकी सभा हुई। वहीं २ झरने भी थे जिनका पानी ऐसा निर्मल था कि जो उसमें खशखाशका १ दाना भी पड़जाता तो पूरा देखाई देता। बादशाह दिनभर वेगमों सहित वहीं रहा और दोनों झरनों पर चबूतरे बना देनेका हुक्म दिया।

शुक्रवारको महीनदीमें मछलियों का शिकार हुआ। बडी बडी छिलकेदार मछलियां जालमें फंसीं। बादशाहने पहिले शाहजहांको और फिर अमीरोंको हुक्म दिया कि अपनी अपनी कमरमें बंधी हुई तलवारें इन पर मारें। शाहजहांकी तलवारने सबसे अच्छा काट किया। मछलियां उपस्थित सेवकोंको बांटदी गईं।

उर्दीबहिश्त—१ शनिवार (वैशाखबदी ११) को रातको बादशाहने वहांसे कूच करके यसावलों(१) और तवाचियोंको हुक्म दिया कि रास्तेके और आसपासके गांवोंमेंसे विधवाओं और अपाहजों को इकट्ठां करके मेरे सामने लाओ। मै अपने हाथसे उन्हें दान दूंगा। इससे मेरे लिये एक काम होगा और उनको लाभ पहुंचेगा इससे अच्छा काम क्या होगा"।

२ सोमवार (वैशाखसुदी १३—१४) को शुजाअतखां अरब, और हिम्मतखां, आदिने जो गुजरात और दक्षिण में नियत थे आकर चौखट चूमी। मशायख और काजी मुफती जो अहमदाबादमें रहते थे वह भी हाजिर हुए।

४ मङ्गलवार (वैशाखसुदी ३०) महमूदाबादकी नदी पर डेरे हुए। रुस्तमखांने जिसको शाहजहांने गुजरातके शासन पर छोडा था, चौखट चूमनेका मान पाया।

शाह ईरानको सौगात—६ गुरवार (वैशाखसुदी २) को गुरवार का उत्सव कांकरियाताल पर हुआ। नाहरखांने आज्ञानुसार दक्षिणसे आकर सिर झुकाया।

बादशाहने कुतुबुल्मुल्कको भेजी हुई १ सहस्र स्वर्ण मुद्राकी हीरेकी अंगूठी शाहजहांको दी। उसपर तीन लकीरें तो बराबर और एक टेढ़ी लकीर नीचे थी जिससे अल्लाहके नामके से अक्षर

(१) नकीब चोबदार।

बन गये थे। यही अनोखापन देखकर कुतुबुल्मुल्कने वह भेजा था। जवाहिरों में लकीर होना दोष है तोभी यह हीरा देखनेमें अच्छा था। पर किसी उत्तम खानिका न था। बादशाह लिखता है "शाहजहां चाहता था कि दक्खिन की फतहके माल में से कोई निशानी मेरे भाई शाह अब्बासके वास्ते भेजे इस लिये उसने इस हीरेको दूसरी सौगातोंके साथ ईरानको भेज दिया।

रूपराय भाट—इसी दिन बादशाहने रूपरायको एक हजार रुपये इनामके दिये। बादशाह लिखता है "यह गुजराती है और इस देशकी बातें खूब जानता है। इसका नाम बूटा था मेरे जीमें आया कि बूढे आदमीको बूटा कहना बेमेल बात है और विशेष कर उस दशामें जबकि मेरी कृपादृष्टिसे हरा होकर फलफलसे लद गया हो। इसलिये मैंने हुक्म दिया कि इसे रूपराय कहा करें रूप (वृक्ष) हिन्दीमें दरख्तको कहते हैं"।

नगर में प्रवेश—७ शुक्रवार १ जमादिउलअव्वल (वैशाख सुदी ३) को बादशाह शुभ मुहूर्त्त में कल्याण विजय पूर्वक अहमदाबाद में प्रविष्ट हुआ। सवारीके समय शाहजहां पांचहजार रुपयेके बीसहजार चरण लायाथा। बादशाह उन्हें लुटाता राजभवन तक गया। वहां उतरतेही शाहजहांने एक तुरां २५०००) का भेट किया। उसके नौकर भी जो इस सूबेमें रखे गये थे अपनी अपनी भेट लाये। वह सब मिलकर चालीस हजार रुपयेकी थी।

अहमदनगर—ख्वाजाबेग मिरजा सफवी अहमदनगरमें मर गया था इस लिये बादशाहने उसके गोद लिये हुए नपुत लड़के .... को दो हजारीजात और सवारका मनसब देकर अहमदनगरकी किलेदारी पर नियत किया।

बीमारी—बादशाह लिखते हैं कि इन दिनों गर्मी बहुत पड़ने और हवाके बिगड़ जानेसे लोग रोगग्रस्त होगये। नगर और उर्दूमें कम ही कोई रहा होगा जो बीमार न हुआ हो। दारुण ज्वर चढ़ता है या हाथ पांव टूटते हैं दो तीन दिन बहुत

कष्ट रहता है फिर अच्छे होजाने पर भी बहुत दिनों तक निर्बलता और शिथिलता रहती है परिणाम कुशल है। मौत इसरोगसे बहुतही कम होती है। इसप्रांतके पुराने पुरुषों से सुना गया कि कि ३० वर्ष पहिले भी इसी प्रकार का ज्वर फैला था और कुशल रही थी। कुछ हो गुजारातका जल वायु बिगड़ चला है मैं यहां आकर बहुत पछताता हूं। परमात्मा कृपा करके यह चिन्ता दूर करें।

पट्टनकी फौजदारी—१३ गुरुवार (वैशाख सुदी ८) को बादशाहने मिर्जा शाहरुखके बेटे, बदीउज्जमां को डेढ हजारीजात और सवारका मनसब तथा झंडा देकर पट्टनकी फौजदारी पर नियत किया—इसी प्रकार और भी कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये।

बाज—कासिम, दहबन्दीने, तूरानसे "तवेगूं" जातिके ५ बाज अपने एक सजातिके हाथ भेजेथे, उनमेंसे एक तो रास्तेमें मरगया। बाकी चार उज्जैनमें पहुचे। बादशाहने १०००) लानेवालेको दिलाये और ५०००) उसे इस वास्ते दिये थे कि जिस प्रकारका माल ख्वाजा को पसन्दका समझें मोल लेजावे और अब खानआलमने जो शाह ईरानके पास गया हुआ था एक बाज "आशयानी" (१) जिसको फारसी भाषा में "अकना" बोलते हैं भेजा था वह भी भेट हुआ। बादशाह लिखता है—यों तो इसमें और "दामी" (२) बाज में कोई भेद नहीं दिखाई देता, किन्तु उड़ानेपर अन्तर प्रगट होता है।

२० गुरु (जेठ बदी १) को मिरजा यूसुफखांके जमाई अबूसालहने आज्ञानुसार दक्षिण से आकर चौखट चूमी। एक हजार स्वर्ण मुद्रा और एक कलगी भेट की। यूसुफखां मशहदके सैयदों में से था। खुरासानमें इस घरानेकी बडी प्रतिष्ठा थी। ईरानके बादशाह अब्बासने अपनी बेटी मीर अबूसालहके भाई को दी थी। मिरजा यूसूफखां को अकबर बादशाहने बढाकर पांच हजारी कर-

(१) घोंसले में रहने वाला।

(२) जाल में पकड़ा हुआ।

दिया था वह अच्छा अमीर था। अपने नौकरोंको बड़े प्रबन्धसे रखता था। वह दक्षिणमें मरा उसके बहुत बेटे थे। बादशाहने पुराना हक देखकर सबका पालन किया और बड़े बेटेको थोड़ेही दिनोंमें अमीरीके पद पर पहुंचा दिया।

हकीमों को पारितोषक—२७ गुरुवार (जेठ बदी ८) को बादशाहने हकीम मसीहुज्जमांको बीस हजार द्रव्य और हकीम रुहुल्लाहको १०० मुहरें और एक हजार रुपये दिये। यह बादशाह की प्रकृति को खूब पहचान गया था। उसने गुजरातकी आबहवा बादशाहसे सधते न देखकर कहा कि आप शराब और अफीम कुछ कम करदें तो बहुत लाभ हो। बादशाहने ऐसा किया तो एकही दिन में बहुत लाभ हुआ।

खुरदाद।

हाथियोंका शिकार—३ गुरुवार (जेठ बदी ३०) को गजशाला के अध्यक्ष गजपतिखां और किरावल बेगी (शिकारके कर्मचारी) बलोचखां की अर्जीसे जाना गया कि ६८ हाथी हथनियां पकड़ी गई हैं। बादशाहने उस अर्जी पर हुक्म चढ़ाया कि बूढ़े और बच्चों को छोड़कर बाकी सब हाथी हथनियां पकड़ी जायें। बलोचखां को एक हजार रुपये इनाम भी दिये।

बरसिंहदेव को घोड़ा—१४ चन्द्रवार (जेठ सुदी १२) को इराक के भेंट किये हुए उत्तम घोड़ोंमेंसे १ खासा कच्छी घोड़ा बादशाहने राजा बरसिंहदेव को प्रदान किया।

बादशाहका अस्वस्थ होना—१५ मङ्गल (जेठ सुदी १३) से बादशाहके सिरमें पीड़ा होकर ज्वर चढ़ गया। रातको नियमके प्याले भी न पिये। दूसरेदिन थोड़ा ज्वर उतरा तो हकीमोंके कहने से प्यालों की तिहाई मात्रा ली। खानेके वास्ते उड़दकी दालका पानी और चावल बताये गये थे। बादशाहने यह पथ्य लिया। वह लिखता है—"जबसे मैंने होश सम्हाला है याद नहीं कि कभी उड़द की दालका जूस खायाहो"। एक रातदिन में [illegible]

ऐसा निर्बल होगया मानो बहुत दिनका बीमार है। भूख बन्द होगई खाने की रुचि न रही। तीन दिन और दो रात लंघन किया।

अहमदाबादकी निन्दा—बादशाह लिखता है—"मुझे आश्चर्य है कि इस नगरके बसाने वालेने क्या शोभा और सुन्दरता देखकर ऐसी रूखी सूखी भूमिमें नगर बसाया। उसके पीछे दूसरोंने भी अपनी प्यारी जानें इसी धूल में मिलादीं। यहां की हवा जहरीली भूमि निर्जल धूल अपार पानी खराब बदमजा, नदी जो नगरके निकट है सिवा बरसातके सदा सूखी पडी रहती है। कूपोंका जल बहुधा खारा है। बस्तीके आसपासके तालाबोंका जल धोबियोंके साबुन से छाछके समान बना हुआ है। धनियोंने अपने घरों में टांके बनये हैं उनमें वर्षा का जल भरते हैं और अगली बरसात तक पिया करते है। जिस पानी पर हवा न लगे और जिससे भाप न उठे वह विकारयुक्त होगा यह स्पष्टही है। नगरके बाहर हर-याली और बागोंकी जगह थोहर हैं। उनमें होकर जो हवा निकले उसका कहनाही क्या। मैंने अहमदाबादको गर्दाबाद कहा है। अब नहीं जानता कि इसका नाम लूओंका स्थान रखूं या रोगका घर, थोहर नगर कहूं या एकदम दोजख, जो सब कष्टोंका आगार है! यदि वर्षा कालसे रुकावट न होती तो एक दिन भी इस क्लेश भरे स्थानमें न ठहरता। सुलेमानकी भांति हवाके तख्त पर बैठकर उड़जाता। और ईश्वर की प्रजा को इस कष्टसे छुडाता। (१)

बादशाह की न्याय नीति—बादशाह लिखता है—"इस नगरके मनुष्य बडे दीनहीन हैं। मैं इस विचारसे कि कहीं फौजवाले जबरदस्ती किसीके घरमें न घुसजायें या किसी दुर्ब्बलको तंग न करें काजी और मीर अदल उनके भयसे कुछ बोल न सकें और उन

(१) अफसोस है कि उस समय रेल न थी। होती तो विलासी बादशाह को इतना दुःख न देखना पड़ता।

अत्याचारियों को दबा न सकें, इन लू और तपतके दिनोंमें भी नित्य दोपहरको इबादतके बाद उस झरोकेमें बैठता हूं जो नदीकी तरफ है। वहां न कुछ रोकटोक है न कोई चोबदार। दो दो तीन तीन घण्टे वहां बैठा रहता हूं। जो फरयादी आता है उसकी पुकार सुनकर दुराचारियों को दण्ड देता हूं। बड़ी कमजोरी तकलीफ और बीमारीके दिनो में भी नियम पूर्वक झरोके में बैठता हूं। शरीर को सुख देना बुरा समझता हूं।

ईश्वरकी कृपासे ऐसी प्रकृति होगई है कि रात दिनमें दो तीन घण्टेसे अधिक नहीं सोता हूं। इसमें दो स्वार्थ हैं एक तो देश को व्यवस्थासे सचेत रहना दूसरे भगवत स्मरणमें जागना। बड़े खेद की बात है जो यह थोडेसे दिनकी आयु प्रमादमें हवा जाय। जब आगे एक गहरी निद्रा आने वाली है तो फिर इस जाग्रत अवस्था को जिसे पुनः स्वप्न में भी नही देखूंगा दुर्लभ [illegible] भी भगवत स्मरणसे असावधान नही रहना चाहिये।

शाहजहांका रोगग्रस्त होना—जिस दिन बादशाह [illegible] आयाथा उसी दिन शाहजहां को भी आने लगा था। [illegible] होकर वह १० दिन तक दरबार करने न आसका था। [illegible] वार (असाढ़ बदी ६) को आया तो इतना दुर्बल [illegible] मानो महीनेसे बीमार है।

२१ गुरुवार (असाढ़ बदी १४) को बादशाहने [illegible] डेढ़ हजारी और २०० सवारोंका मनसब दिया।

दान—इसी दिन बादशाहने कष्ट निवारणके लिये [illegible] एक घोड़ा अनेक पशु चांदी सोना और दूसरे पदार्थ दान दिये बहुधा सेवक भी अपनी अपनी शक्तिके अनुसार दानकी [illegible] बादशाहने कहा सच्चेजीसे यह दानको [illegible] येही दान करते होंगें। [illegible]

तीर [illegible]।

[illegible] गुरुवार [illegible]

शाहने बखशी सादिकखां आदि कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये झंडे और हाथी भी दिये।

कशमीरके सूबेदारके बेटोंको मनसब—इसी दिन कशमीरके सूबेदार अहमदबेगखांके मरने की खबर आई। बादशाहने उसके बेटों को मनसब देकर बंगश और काबुलके सूबेमें नियत कर दिया उसका मनसब तो अढ़ाई हजारीही था पर उसके बड़े बेटे को २ हजारी और २ छोटों को नौ नौसदी मनसब दिये।

१४ गुरुवार (अषाढ सुदी १३) को राय घनसूर जो पहिले सूबे गुजरात का दीवान था मालवे का दीवान हुआ।

सारसका मैथुन और उसका प्रेम—यह बात लोगों में प्रसिद्ध थी कि कभी किसीने सारस को मैथुन करते नहीं देखा है। बादशाहके यहां एक जोडा सारस का था जिस का उसने "लैलामजनूं" नाम रखा था। एक दिन एक नाजिरने उसे मैथुन करते देखा। और बादशाह को भी दिखाया। बादशाह उसका वर्णन करके लिखता है—"सारसके स्नेहकी विचित्र विचित्र बातें सुनी हैं। उनमें से एक यह है जो कयामखांने कही थी—"एक दिन मैं शिकार को गया था। एक सारस बैठा देखा। उसके पास गया तो वह उठकर चल दिया पर उसकी चालसे कुछ पीडा पाई जाती थी। फिर वह ठौर देखी तो वहां कुछ पंख और अस्थियां पडी थीं उन्हीं पर वह बैठा था। मैंवहां जाल लगाकर दूर बैठगया वह फिर वहीं आया और जाल में फंस गया। पकड़ा तो बहुत हलका था उसकी छाती और पेटके पर उड़गये थे। चमडा भी गलगया था और कीडे पड गये थे मांस सब सूख गया था मुट्ठीभर पर रह गये थे। अन्त में विदित हुआ कि इस की जोड़ी का सारस मरगया था जिसके वियोग में इसकी यह दुर्दशा होगई थी।"

फिर हिम्मतखांने जो विश्वासी आदमी था कहा कि दोहदके परगने में एक तालकी पाल पर सारसका एक जोडा नजर आया। मेरे बन्दूकचियोंमेंसे एकने बन्दूकसे एक सारसको मारा फिर

वहीं दो दिन रहना भी होगया तो देखा कि दूसरा सारस आसपास फिरता और पुकारता है। उसको व्याकुल देखकर मेरा दिल बहुतही दुखता था पर पछतानेके सिवा और उपाय न था २०।२५ दिन पीछे फिर उधर जाना हुआ। वहां वालोंने उस सारस का परिणाम पूछा तो उन्होंने कहा कि वह तो तबही मर गया। उसके पर और अस्थियां अभी वहीं पडी हैं। मैंने जाकर देखा तो बात ठीक थी। इस प्रकार बहुत सी बातें लोगों में सारसकी प्रसिद्ध हैं"।

रावत शंकर की मृत्यु—शनिवार (आषाढ सुदी १५) को रावत शंकरके मरजाने की खबर लगी। वह सूबे बिहार में नौकरी पर था। बादशाहने उसके बडे बेटे मानसिंहको दोहजारी जात और ६०० सवारों का मनसब दिया। दूसरे बेटों तथा उसके सजातियोंके भी मनसब बढाये और उन्हें उसके अधीन रहने की आज्ञा दी।

हाथी बावनसर—२१ गुरुवार (सावन बदी ५) को बावनसर हाथी जो जिताये जानेके लिये परगने दोहद में छोड़ा गया था दरगाहमें पहुंचा। बादशाहने फरमाया कि झरोकेके पास नदीके निकट इसे बांधें जिससे हमेशा आंखोंके आगे रहे। बादशाह लिखता है—"स्वर्ग वासी श्रीमानके फीलखाने में दुर्जनसाल हाथी से बडा कोई हाथी मेरे देखने में नहीं आया था। वह सब हाथियों में प्रधान था उसकी ऊंचाई साढेपांच कम पांचगजकी शरई गजसे थी जो ४० उंगल का होता है। अब मेरी सरकारके हाथियों में सबसे बडा हाथी "गजराज पसन्दबानेआलम" है वह पौने पांच गज ऊंचा है"

ठट्ठेका सूबेदार—इसी दिन मुजफ्फरखांने जो ठट्ठेकी सूबेदारी पर नियत हुआ था वीस्ट सूरतसे १०० मुहरें एक हजार रुपये और एक लाख रुपयेके जवाहिर और जड़ाऊ पदार्थ भेंट किये।

रायभारा—२४ रविवार (सावन बदी ८) को रायभारा दीवान

चूमनेकी इज्जत पाई। बादशाह लिखता है—"गुजरात देशमें इससे बड़ा कोई जमींदार नहीं है। इसका राज्य समुद्रसे मिला हुआ है। भारा और जाम एक दादाके पोते हैं। १० पीढियोंमें मिलते हैं। राज्य और सेनामें भारा जामसे भारी है। कहते हैं कि वह गुजरातके किसी बादशाहके देखनेको नहीं गया। सुल-तान महमूदने इस पर सेना भेजी थी। यह मैदानकी लड़ाई लड़ा और इसने उस सेनाको हराया। फिर जब खानेआजम जूनागढ़ और सोरठ पर चढ़ा तो नन्नू जो सुलतान मुजफ्फर कहलाता था और जमींदारोंके पास भागा भागा फिरता था जामके पास गया। जाम सामने आकर खानेआजमसे लड़ा और हारा। तब नन्नूने जाकर रायभाराकी शरणली। खानआजमने उसको मांगा तो इसने बादशाही लशकरसे लडनेको सामर्थ्य अपनेमें न देखकर नन्नूको खानके हवाले किया। इस सेवासे उसने अपना राज्य बचालिया। पहले जब अहमदाबादमें सवारी आई और जल्दही कूच होगया तो यह हाजिर न होसका था। इसका देश दूर था और तब इस पर सेना भेजनेका भी अवकाश न था। अब जो दैवयोगसे फिर इधर आना हुआ तो शाहजहांने राजा विक्रमाजीतको कुछ बाद-शाही कर्म्मचारियोंके साथ इस पर भेजा। इसने आनेहीमें अपनी रक्षा देखकर चौखट चूमी। दोसौ मोहरें हजार रुपये और सौ घोड़े भेंट किये। घोडा एक भी ऐसा नहीं जो काम आवे। इसकी उमर ८० सालसे अधिक जान पड़ती है। यह ९० साल बताता है। इसकी शक्ति और इन्द्रियोंमें कुछ निर्बलता नहीं जान पडती। इसका साथी एक बूढा देखा गया, जिसकी डाढ़ी मोंछें भवें सब सफेद हैं। उसने कहा मेरा लड़कपन भाराको याद है। मैं उसके सामने बूढा हुआ हूं।"

अबुलहसन चित्रकार—इसी दिन बादशाहने अबुलहसन चित्र-कारको "नादिरुज्जमां"की उपाधि दी। बादशाह लिखता है— "इसने मेरे दरबारका चित्र जहांगीरनामेके मंगलाचरणमें खेंचकर

दिखाया जो सराहने योग्य था और जिससे उस पर बड़ी कृपा हुई। इसका चित्र दुनिया भरमें प्रसिद्ध होगया। वह नामानी है। यदि आज उस्ताद अबदुलहई और बहज़ाद जीते रहते तो, इसके कामको सराहते। इसका पिता आकारजाई मेरी युवराजावस्थामें आकर नौकर हुआ था। इससे यह इस दरगाहका खानाजाद चाकर है। मैं बचपनसे अबतक निरन्तर इसका लालन पालन करता रहा हूं जिससे यह इस पदको पहुंचा है। ऐसेही उस्ताद मनसूर नक़्क़ाश भी जिसे 'नादिरुल अस्र' का खिताब मिलाहुआ है। नक़्शे बनानेके काममें अपने समयका एकही है। मेरे और मेरे पिताके साम्राज्य में यह दो आदमी अपना सानी नहीं रखते।"

"मेरी चित्रकी रुचि और पहचान यहांतक बढ़गई है कि प्राचीन और नवीन उस्तादोंमेंसे जिस किसीका काम मेरे देखनेमें आता है मैं उसका नाम सुने विनाही झट उसे पहचान लेता हूं कि अमुक उस्तादका बनाया है। यदि एक चित्रमें कई चेहरे हों और प्रत्येक चेहरा अलग अलग चित्रकारका बनाया हुआ हो तो मैं जान सकता हूं कि कौन चेहरा किसने बनाया है। और यदि एकही चेहरेमें आंखें किसीकी और भवें किसीकी बनाई हुई हों तो भी मैं पहचान लूंगा कि बनानेवाले कौन हैं।"

वर्षा—२१ रविवार (सावन सुदी १) की रातको वर्षा आरम्भ हुई।

अमरदाद।

वर्षा और साबरमती नदी—१ मंगलवार (सावन सुदी ३) तक मेह बहुत बरसा और फिर १६ दिन तक बरसता रहा। कच्चे मकान, रेतमें जड़ पक्की न होनेसे गिरपड़े। कुछ लोग भी मर गये। बादशाह लिखताहै—"नगरनिवासियोंसे सुनागया कि जैसा मेह इस वर्ष बरसा है हमें स्मरण नहीं है कि वैसा पहले कभी बरसा हो। साबरमती भरी दिखाई देती है तथापि कई जगह पायाब है। हाथी तो सदा नदीसे पार जाते हैं। जिस दिन यहां नदी पानी

उस दिन घोडे और आदमी भी पार होने लगते है। इस नदीका निकास रानाके पहाडोंसे है। कोकरेके घाटेसे निकलती है। जब डेढ कोस बहकार सेरपुरमें आती हैं तो इसे बागल कहते है। पीछे तीन कोस चलकर सांभरमती कहलाती है।

राव भारा—१० गुरुवारको बादशाहने हाथी, हथनी, जडाऊ खञ्जर और ४ अंगूठियां लाल, पीलेयाकूत, नीलम, पन्नेकी राव भाराको दीं।

हीरेकी खान—इससे पहले खानखानांने खानदेशके जमींदार पनजूसे हीरेकी खान लेनेके लिये अपने बेटे असरुल्लहको बादशाह के हुक्म सहित भेजा था। इस दिन उसकी अर्जी पहुंची कि उस जमींदारने बादशाही सेनासे लड़ना अपने बूतेके बाहर देखकर वह खान भेट कर दी और बादशाही दारोगा उस पर बैठ गया। वहांके हीरे असली और उत्तम होनेके कारण सब हीरोंसे बढ़ चढ़ कर है। जौहरी उन पर बडा विश्वास रखते हैं। सब सुडौल और बढिया होते हैं। दूसरी गोंकड़ेवाली हीरोंकी खान बिहारमें है। पर वहां खानसे हीरे नहीं निकलते। वर्षाकालमें पहाड़से पानीका रेला आता है। उसके आगे बांध बांधते हैं। जब रेला उस बांध परसे निकल जाता है तो जाननेवाले लोग वहां जाकर हीरे निकालते हैं। तीन सालसे वह देश बादशाही कर्म्मचारियोंके अधिकार मे है। वहांका जमींदार कैद है। जल वहांका विषैला है। बाहरका आदमी वहां नहीं रह सकता।

तीसरी खान करनाटकमें कुतुबुलमुल्ककी सीमाके पास हैं। यहां पचास कोसके बीचमें खानें है यह जमींदारोंके पास है इन खानो का हीरा पक्का होता है।

दीपमालिका—१४ शाबान चन्द्रवार (सावन सुदी १५) को शबबरात थी। बादशाहके हुक्मसे कांकरिया ताल और उसके बीचके मकानों पर बडी भारी दीपमाला हुई और आतिशबाजी छोडी गई। उस समय मेह खुल गया था ऐसीही दीपमालिका शुक्रवार को रातको भी हुई तब भी बादल वर्षा न थी।

इसी दिन एतमादुद्दौलाने एक उत्तम नीलमणि और एक हाथी बिना दांतका चांदीके साज सहित भेंट किया। हाथी सुन्दर और सुडौल था इस लिये बादशाहने निजके हाथियोंमें लेलिया।

सन्यासी—बादशाह लिखता है—"कांकरिया तालके ऊपर एक कुटीमें एक संन्यासी रहता था। मेरा चित्त हमेशा ज्ञानी पुरुषोंके सत्सङ्गमें लगा रहता है इस लिये मैं सीधा उससे मिलने गया और बहुत देर तक उसका सत्सङ्ग करता रहा। वह ज्ञान और बुद्धिसे शून्य नहीं है। वेदान्तका पूरा ज्ञाता है पूरा त्यागी और आशा तृष्णासे रहित है। यह कह सकते हैं कि संन्यासियोंमें इससे बढ़ कर कोई नहीं देखा गया।

सारसके अन्डे—चन्द्रवार, २१ अमरदाद (भादों बदी ८) को उस सारसने जिसके गर्भधारणका वर्णन पहले लिखा जाचुका है बगीचे में घास फूस इकट्ठा करके पहले एक अंडा और तीसरे दिन दूसरा अंडा दिया। मादा रातको अकेली अंडे पर बैठती है और नर उसके पास खड़ा होकर पहरा देता है। ऐसा चौकस रहता है कि किसी जानवरको वहां फटकनेकी मजाल नहीं। एकबार एक बड़ा नेवला उधर आनिकला। सारस उस पर वेगसे झपटा। जबतक उसे उसके बिलमें न घुसा दिया तबतक उसका पीछा न छोड़ा। जब सूर्य्य चमकता है तो नर मादाके पास जाकर चोंचसे उसकी पीठ खुजाता है। इसी प्रकार मादा भी नरको उठा कर आप बैठती है। सारांश यह है कि रातको मादा अकेली अंडे पर बैठी रहती है और दिनको बारी बारीसे बैठते हैं। उठते बैठते बड़ी सावधानीसे हैं कि जिसमें कहीं अंडेको ठेस न लग जावे।

शिकारके हाथी—इसी दिन गजपतिखां, [illegible] और शाह-जहांके शिकारी जिन्हें बादशाह हाथी पकड़नेके लिये छोड़ आया था सेवामें उपस्थित हुए। सब मिलाकर ७३ हाथी ११२ हथनियां पकड़ी गईं। इन १८५ मेंसे ४७ हाथी और ७५ हथनियां बादशाही महावतोंने और २६ हाथी और ३७ हथनियां शाहजहांके शिका-रियोंने पकड़ी थीं।

फतहबाग—२४ गुरुवार (भादों वदी ११) को बादशाह फतह-बागमें जाकर दो दिन सुख पूर्वक रहा। शनिको पिछले दिनसे राजभवनमें आगया।

आसफखांके बगीचेमें जाना—आसफखांने प्रार्थना की थी कि उसकी हवेलीके बगीचेमें नाना प्रकारके फूल फूलने लगे हैं इस लिये बादशाह गुरुवार (भादों सुदी ३) को उसके घर गया और उस खिलेहुए बगीचेको देखकर बहुत प्रफुल्लित हुआ। उसने ३५०००) के जवाहिर जड़ाऊ पदार्थ और दिव्य वस्त्र भेट किये।

ठट्ठेकी सूबेदारी—बादशाहने मुजफ्फरखांको हाथी सिरोपाव देकर फिर ठट्ठेकी सूबेदारी पर भेजा।

ईरानके बादशाहको पत्र—ईरानका व्यापारी ख्वाजा अबदुल-करीम गीलानी, ईरानके शाह अब्बासका पत्र और थोड़ीसी सौगात लाया था। इस दिन बादशाहने उसको भी हाथी सिरोपाव देकर विदा किया और शाहके लिये भी कुछ उपहार पत्रोत्तर सहित उसको दिये। खानआलमके लिये भी प्रसादपत्र और अपने पहननेके वस्त्र भेजे।

शहरेवर।

सारसके अंडे—शुक्रवार (भादों सुदी ४) को शहरेवर महीना लगा। २ रविवारसे गुरुवारकी रात तक मेह बरसता रहा। बादशाह लिखता है—"विचित्र बात यह है कि और दिनों तो सारस ५।६ बेर बारी बारीसे अंडोंपर बैठा करते थे। परन्तु इन दिनोंमें मेह निरन्तर बरसता रहा था और पवन भी ठण्डी होगई थी, अण्डोंको गर्म रखनेके लिये प्रातःकालसे दोपहर तक नर बराबर बैठा करता था। आजसे मादाही अगले प्रभात तक बैठने लगी है कि कहीं बहुत उठने बैठनेसे अंडोंको ठण्ड न लग जावे। मनुष्य जो काम अपनी समझसे करता है पशु वही प्रकृतिके सिखानेसे करने लगता है। यह विचित्रबात है कि पहले तो सारस अंडोंको बहुत पास अपनी छातीके नीचे रखते थे। पर जब १४।१५ दिन होगये

तो उनको कुछ अलग रखने लगी कहीं पास रहनेसे बहुत गर्मी पाकर सड़ गल न जावें।

आगरेको कूच—७ गुरुवार (भादों सुदी १०) को आगे जाने वाले डेरे आगरेकी ओर लगाये गये। इससे पहले भी ज्योतिषियों ने मुहूर्त्त निकालाथा, परन्तु जब मेंह बहुत बरसा और महमूदाबाद की नदी तथा महानदीसे लश्करका उतरना कठिन प्रतीत हुआ तो रुक गये। अब इस दिन डेरे बाहर निकाले गये।

२१ (आश्विन वदी १०) गुरुवारको बादशाहके प्रयाणका मुहूर्त निश्चय हुआ।

कांगड़ेका किला और राजा विक्रमाजीत—बादशाह लिखता है—शाहजहांने कांगड़ा जीत लेनेकी प्रतिज्ञा करके जिसके कंगूरे तक किसी बादशाहका हाथ नहीं पहुंचा था अपने विश्वासियोंमेंसे राजा बासूके बेटे सूरजमल और तकीको वहां भेजा था पर अब जाना गया कि उस दुर्गम दुर्गका विजय करना उन लोगोंसे सम्भव नहीं है। इस लिये उसने राजा विक्रमाजीतको जो उसके प्रतिष्ठित पारिषदोंमेंसे है अपने पासके दो हजार सवारों और जहांगीरी बन्दोंमेंसे शाहबाजखां लोदी, हृदयनारायण हाडा, राय पृथ्वीचन्द, रामचन्द्रके पुत्रों, २०० बर्कन्दाज सवारों, ५०० तोपची प्यादों सहित भेजना ठहरायाथा। उसके जानेका मुहूर्त आजका था, इसलिये उसने १००००) का कण्ठा पन्नोंका भेट करके तलवार और सिरोपाव पाया और उस काम पर विदा हुआ। उस सूबेमें उसको जागीर नहीं थी सो पुत्र शाहजहांने बढानेका परगना जो २२ लाख दाम का था उसको जागीरमें देनेके लिये अपने इनाममें मांग लिया।

कारखानोंका दीवान ख्वाजा तकी मोतमिदखांका खिताब और खिलअत पाकर दक्षिणके सूबेका दीवान हुआ और हिम्मतखां खासा परम नरम पाकर सरकार भरूंचकी फौजदारी पर गया।

राय पृथ्वीचन्द—राय पृथ्वीचन्दको कांगड़े जाते समय सात सदी जात और साढ़े चारसौ सवारोंका मनसब मिला।

जहांगीरनामा—बादशाह लिखता है, "जहांगीरनामेमेंसे १२ वर्षका वृत्तान्त पुस्तकाकार तय्यार होगया। मैंने निज पुस्तकालय के कर्मचारियोंको हुक्म दिया था कि इस बारह सालके वृत्तान्तको एक पुस्तक बनाकर उसकी कई नकलें की जावें। वह मैं सेवकों को दूंगा और सब देशोंमें भेजूंगा। राजकर्मचारी और विद्वान उसे अपना पथप्रदर्शक बनावें। अब ८ शुक्रवार (भादों सुदी ११) को उसकी एक जिल्द नकल होकर और बंधकर आई। वह पहली पुस्तक मैंने पुत्र शाहजहांको दी। उसे मैं सब बातोंमें सब पुत्रोंसे श्रेष्ठ जानता हूं। अपने हाथसे मैंने उक्त पुस्तक पर लिख दिया कि अमुक तिथिको अमुक स्थानमें यह पुस्तक पुत्र शाह-जहांको दीगई। आशा है कि उसे ईश्वरकी प्रसन्नता और प्रजाका आशीर्वाद प्राप्त करनेकी श्रद्धा होगी।

सुबहान कुली किरावलको प्राणदण्ड—सुबहान कुली हाजी जमाल बलोचका बेटा था। वह अकबर बादशाहके अच्छे किरा-वलोंमेंसे था। उनके स्वर्गलाभके पीछे सुबहानकुली बंगालेमें इस-लामखांके पास चला गया। इसलामखां उसे बादशाही खानाजाद जानकर उसका आदर और विश्वास करता था। परन्तु वह उसमान पठानके लालच देनेसे इसलामखांको मार डालनेके विचारमें था कि इसलामखांने भेद पाकर उसको तुरन्त पकड लिया और कारागारमें डाल दिया। इसलामखांके मरे पीछे वह फिर आकर बादशाही किरावलोंमें भरती होगया। इसलामखांके बेटेने बादशाहसे अर्ज की कि यह पास रहनेके योग्य नहीं है। बादशाहके कारण पूछने पर उसने वह सब वृत्तान्त कह दिया। इस पर बादशाह उसे दण्ड देना चाहता था। परन्तु उसके भाई बन्दोंने जो सब किरावल थे प्रार्थना की कि उस पर वृथा दोष लगाया गया है। बलोचखां किरावलबेगी (किरावलोंका नायक) उसका जामिन होगया। बादशाहने क्षमा करके कह दिया कि बलोचखांके साथ रहकर काम किया करे। इस पर भी वह बिना प्रयोजन भागकर आगरेको

चला गया। बादशाहने बलोचखांपर उसके हाजिर करनेकी ताकीद की। उसने अपने आदमी ढूंढनेको भेजे। बलोचखांके भाईको वह झाडा नामक गावमें मिला, जहां फसादी लोग रहते थे। वह उसका पक्ष करके लडनेको उद्यत हुए। तब उसने आगरेमें जाकर ख्वाजा जहांसे हाल कहा। उसने कुछ फौज भेजी तो गांववालोंने डरकर उसको पकडवाया। वह इस दिन जंजीरोंसे जकडा हुआ दरगाहमें लाया गया। बादशाहने उसके मार डालनेका हुक्म देदिया, "मीर गजब" तुरन्त उसको दण्डस्थानमें लेगया। थोडी देर पीछे बादशाहने एक पारिषदके निवेदन पर उसको जान बख्श दी पर उसका एक पांव काटनेकी आज्ञा दी। इस आज्ञाके पहुचनेसे पहलेही वह मारा जाचुका था। बादशाहने पछताकर यह स्थिर किया कि अब जो हुक्म किसीको बध करनेका दिया जाय तो उसमें चाहे कितनीही ताकीद और जल्दी की जाय तथापि दिन छिपे तक उसे न मारें। यदि उस समय भी कोई हुक्म उसके छोड देनेको न पहुंचे तो फिर प्राणदण्ड देदें।

महीनदीका चढ़ाव—रविवारको मही नदी बहुत जोरसे चढ़ी। दिन चढ़ेसे चढने लगी थी अगले दिन उतर गई। वहांके वृद्ध लोगों ने बादशाहसे कहा कि हमने केवल एक वेर मुर्तिजाखांकी हाकिमीमें इस नदीका इतना चढाव देखा था।

कविता पर इनाम—पूर्वकालमें मगरबी नाम एक शाइर था उसने खुरासानके बादशाह सुलतान सजरकी प्रशंसामें कविता लिखी थी। उसका एक शेर सुलतानने बहुत पसन्द किया था। बादशाने सुना तो बहुत सराहा। इसपर सईदायजरगरबाशी (आभूषणागारके अध्यक्ष) ने बादशाहकी प्रशंसामें कविता बनाकर सुनाई। उस पर प्रसन्न होकर बादशाहने १४ गुरुवार (आश्विन वदी २) को हुक्म दिया कि सईदायके बराबर सोना तोल दें।

दिन ढले बादशाह रुस्तमवाड़ीको हवा खाने गया जो खिली हुई थी।

मुल्ला अमीरी—१५ शुक्र (आश्विन वदी २) को मुल्ला अमीराने जो अवदुल्लह ख़ां उजवककी पास रहा करता था तूरानसे आकर चौखट चूमी। उसको बादशाहने एक हजार रुपये और शाहजहां ने पांच सौ रुपये सिरोपाव सहित दिये।

मोलसिरीके वृक्ष पर लेख—शाहजहांके भवनमें कुण्डके पास चबूतरेपर एकमौलसिरीका वृक्ष पीठलगाकर बैठनेके योग्य था, परन्तु एक ओरसे २ गज तक खोखल होजानेसे बुरा लगता था। बादशाह ने उसे देखकर आज्ञादी कि वहां सङ्गमर्मरका एकटुकड़ा ऐसा जोड दें कि जिससे पीठ लगाकर बैठ सकें। बादशाहने तुरन्तही एक शेर भी कह कर सिलावटोंको उस शिला पर खोद देनेके वास्ते दिया। उस दोहेका मतलब यह है—"यह बैठक सात विलायतोंके स्वामी सम्राट अकबरके बेटे जहांगीरकी है।"

खास दौलतखानेमें बाजार—१८ मंगलवार (आश्विन बदी ७।८) को रातको दौलतखाने खासमें बाजार सजाया गया। बादशाह लिखता है—"पहले ऐसी प्रथा थी कि कभी कभी शहरके कारीगर और बाजारवाले आज्ञा पाकर राजभवनके राय-आंगनमें दुकानें लगाते थे। जवाहिर, जडाऊ गहने और नाना प्रकारके पदार्थ सजाकर दिखाते थे। मैंने सोचा कि जो यह बाजार रातको लगाया जावे और दुकानोंके आगे बहुतसे फानूस रखे जावें तो और ही शोभा होगी। ऐसाही हुआ। मैंने सब दुकानोंमें फिरकर जवाहिर जडाऊ गहने और जो जो चीजें पसन्द आईं खरीदीं। हर दुकान में कुछ कुछ अनोखे पदार्थ मुल्ला अमीरीको लेदिये। वह इतने अधिक थे कि वह सम्हाल न सकता था।

आगरेको कूच—२१ शहरेवर गुरु सन१३ ता० २२ रमजान १०२७ २॥ घटे दिन चढ़े बादशाहने आगरेको कूच किया। दौलतखानेसे कांकरिया ताल तक सोना उछालते गये। इसी दिन सौर प्रचीय तुलादानका उत्सव भी हुआ। बादशाहको ५०वां सौर वर्ष लगा। उसने नियमानुसार सोने और दूसरे पदार्थोंमें तुलकर

मोती और सोनेके फूल लुटाये। रातको दीपमालिकाकी रात अन्तःपुरमें सुखपूर्वक बिताई।

रोजा खोलना और ईश्वर स्तुति—२२ शुक्रवार (आश्विन वदी ११) को बादशाहने आज्ञा दी कि इस शहरमें जितने मौलवी मुल्ला और शेख रहते हैं वह सब बुलाये जायं। वह सब मेरे साथ रोजा खोलें। बादशाह लिखता है—तीन रातें इसी प्रकारसे व्यतीत हुईं। मैं प्रत्येक रात्रिमें सभा विसर्जन होने तक खड़ा रहता था और यह स्तुति पढ़ा करता था—

"हे परमात्मा समृद्धिवान तूही है, तूही समर्थ है तूही दीनपालक है। मैं न तो दिग्विजयी हूं और न शासक हूं। तेरे द्वारके भिक्षुकोंमेंसे एक भिक्षुक हूं। तूही मुझको भलाई और सुकृति करनेकी सामर्थ्य देता है; नहीं तो मुझसे किसीके वास्ते क्या भलाई होसकती है। मैं दासोंका स्वामी तो हूं पर अपने स्वामीका कृतज्ञ दास हूं।"

"बहुतसे दीन दरिद्री जो सेवामें नहीं पहुंचे थे और जीविका की अभिलाषा रखते थे मैंने उन सबको योग्यतानुसार भूमि और खर्च दिलाकर सबकी मनोकामना पूर्ण करदी।"

सारसके बच्चे—२१ गुरुवार (आश्विन वदी १०) को सारसने एक बच्चा निकाला फिर सोमवारको रातको दूसरा। पहला बच्चा ३४ दिन और दूसरा ३६ दिन पीछे हुआ। यह राजहंसके बच्चोंसे सवाये थे। या मोरके एक महीनेके बच्चेके बराबर थे। इनके रूयें नीले रंगके थे। पहले दिन उसने कुछ नहीं खाया। दूसरे दिन उसकी मा छोटी छोटी टीडियां चोंचमें लेकर कभी तो कबूतर के समान खिलाती थी और कभी मुर्गीकी भांति बच्चोंके आगे डाल देती थी कि स्वयं चुग लें। छोटी टीडी तो समूचीही बच्चोंके मुंह में डाल देती थी और बड़ीके दो तीन टुकड़े करदेती थी जिसमें बच्चे सुगमतासे खालें। बादशाह लिखता है—"मुझे उनके देखनेकी अत्यन्त लालसा थी। इस लिये आज्ञा दी कि बहुतही सावधानीसे

रावभाराकी बिदा—२८ शहरेवर १ शव्वाल (आश्विन सुदी ३) को राव भारा खिलअत जडाऊ तलवार और खासा घोड़ा पाकर अपने देशको बिदा हुआ। उसके बेटोंको भी घोड़े और सिरोपाव मिले।

कुरानका अनुवाद—शनिवारको बादशाहने शाह आलमके पोते सैयद महमूदको कुरानकी सौगन्द देकर कहा कि जो तू चाहता हो बेधड़क मांगले। उसने कहा कि जब मुझे कुरानकी कसम दिलाई जाती है तो मैं एक ऐसा कुरान मांगता हूं जिसको सदैव अपने पास रखूं और उसके पाठ करनेका पुण्य हजरतको मिले। इसपर बादशाहने छोटेआकारका एककुरान याकूतका लिखाहुआ जो जगत के अपूर्व पदार्थोंमेंसे था उसको इनायत किया और उसकी जिल्द पर अपने हाथसे लिख दिया कि अमुक मितीको अमुक स्थान पर सैयद महमूदको दिया गया। बादशाह उसकी विद्वता और सज्जनताकी प्रशंसा करके लिखता है—"मैंने उससे कहा कि कुरानका पूरा अनुवाद जिसमें मूलसे एक अक्षर भी घटाया बढाया न जावे सीधी और सरल फारसी भाषामें करके अपने सुयोग्य पुत्र सैयद जमालके हाथ मेरे पास भेजदे।

शेखोंको बिदा—गुजरातके शेखोंको बादशाहने कई बार धन दिया था। अब फिर उनमेंसे हरेकको रुपये और कपड़े देकर बिदा किया।

शराब—बादशाह लिखता है, गुजरातका जलवायु मुझे नहीं रुचा था। इससे हकीमोंने मुझे शराब कम करनेकी सलाह दी। मैं उनकी सलाहसे शराब छोडने लगा। एक सप्ताहमें एक प्याला कम करदिया। पहले साढे सात सात तोलेके छः प्याले एक रातमें पीता था अब सवा छः छः तोलेके छः प्याले। सोलह सतरह साल पहले इलाहाबादमें मैंने प्रतिज्ञा की थी कि जब मेरी उमर पचास सालकी होजायगी तो तीर बन्दूकका शिकार छोडकर जीव जन्तुओं का अपने हाथसे मारना बन्द कर दूंगा। आज मुझे पचासवां साल

लगा। एक दिन धुएं और तपकी अधिकतासे मेरा सांस रुकने लगा था। बड़ा कष्ट होता था। उस दशामें ईश्वरकी प्रेरणासे वह प्रतिज्ञा याद आगई। पुराना सङ्कल्प दृढ़ होगया। मैंने जीमें निश्चय किया कि पचासवां साल उतरने पर जब सङ्कल्पकी अवधि पूरी होगी तो जिसदिन स्वर्गीय श्रीमानके दर्शनको जाऊंगा उसदिन उनकी पवित्र आत्मासे इस काममें सहायता लूंगा और इसे छोड़ दूंगा। यह कल्पना करतेही मेरा कष्ट छूट गया। मैंने प्रसन्न होकर परमेश्वरका धन्यवाद किया। फिरदौसी(१)ने क्या अच्छा कहा है कि चींटीको भी मत सता कि उसके जान् है और जान सबको प्यारी है।

मेहर महीना।

४ गुरुवार (आश्विन सुदी ८) को आदिलखांके वकील सैयद कबीर और बखतरखां जो भेट लेकर आये थे विदा हुए। बादशाह ने सैयद कबीरको खिलअत, जड़ाऊ खञ्जर, घोड़ा दिया और बखतरखांको घोड़ा, सिरोपाव और जड़ाऊ उर्वसी जिसे उस देशके मनुष्य गलेमें लटकाते हैं दी। ६००० दरब खर्चके वास्ते दोनोंको दिये। आदिलखांने कई बेर शाहजहां द्वारा बादशाहकी तसवीर मांगी थी। इस लिये अपना एक बहुमूल्य चित्र, एक लाल और एक खासा हाथी उसके वास्ते भेजा। पत्रमें लिखा कि निजामुल्-मुल्क और कुतुबुल्मुल्ककी विलायतमेंसे जितना कुछ लेसकेगा वह उसके इनाममें दिया जावेगा। जब कभी वह सहायता चाहेगा तो शाहनवाजखां एक सजी हुई फौज उसके पास भेज देगा। बादशाह लिखता है—"पिछले समयमें जब कि निजामुल्मुल्क दक्षिण के हाकिमोंमें बड़ा था तो सब उसको बड़ा मानते थे और बड़ा भाई जानते थे। अब जो आदिलखांने अच्छी सेवा की तो वह पुत्रकी पदवीसे सम्मानित हुआ और मैंने सारी दक्षिणकी सरदारी उसीको दी और तसवीर पर यह छन्द अपने हाथसे लिख दिया—

(१) शाहनामेके कर्त्ता फारसीका कवि।

"तेरी ओर हमारी कृपादृष्टि है, तू हमारी छत्रछायामें सुखसे बैठा रह, हमने तेरे वास्ते अपना चित्र भेजा है जिससे तू हमारा स्वरूप देखकर हमाराअन्तःकरण पहचाने।"

शाहजहांने हकीम हमामके बेटे हकीम खुशहालको जो बचपनसे उसके पास रहता था ऊपर कहे वकीलोंके साथ बादशाही कृपाकी बधाई देनेके वास्ते भेजा।

जहांगीरनामा—इन दिनों जहांगीरनामेकी दो नकलें फिर तय्यार होकर आई थीं। बादशाहने एक एतमादुद्दौलाको दी और दूसरी उसके पुत्र आसफखांको।

बिहारकी सूबेदारी—५ शुक्रवार (आश्विन सुदी ६) को जहांगीरकुलीखांके बेटे बहरामने सूबे बिहारसे आकर कोकरेकी खानसे निकले हुए कई हीरे भेट किये।

जहांगीरकुलीसे उस सूबेमें अच्छी सेवा नहीं बनी थी और बादशाहसे अनेक बार अर्ज हुई थी कि उसके भाई बन्द उस देशमें अन्याय करके प्रजाको सताते हैं और उनमेंसे हरेक अपनेको हाकिम ठहराकर जहांगीरकुलीखांको कुछ माल नहीं समझता है। इस लिये बादशाहने पुराने सेवक मुकर्रबखांको बिहारकी सूबेदारी पर नियत करके अपने हाथसे हुक्म लिखा कि झट बिहारको चढ जावे।

कोकरेकी खानके हीरे—कोकरेकी खानको जीते पीछे इब्राहीमखां फतहजंगने वहांके कुछ हीरे भेजे थे। उनमेंसे कुछ बादशाहने कारीगरोंको जिला करनेको दिये थे। अब जो बहराम आगरेमें पहुंचकर दरगाहमें आने लगा तो जो हीरे उनमेंसे तय्यार होगये थे वह ख्वाजाजहांने उसके हाथ भेज दिये। उनमेंसे एक उटे रंगका था। देखनेमें नीलमसे भिन्न नहीं लगता था। बादशाह लिखता है—इस रंगका हीरा देखनेमें न आया था। तोलमें कई रत्ती है। जौहरियोंने तीन हजारका कूता। कहा कि यदि सफेद और सुडौल होता तो बीस हजारका होता।

आम और नीबू—बादशाह लिखता है—इस वर्ष ६ महर (आश्विन सुदी १०) तक आम खाये गये। इसदेशमें नीबू बहुत है और बड़े भी होते हैं। काकर नामक एक हिन्दूके बागसे कई नीबू आये थे जो खूब नर्म और बडे थे। सबमें बडेको मैंने तुलवाया तो ७ तोलेका निकला।

दशहरा—६ शनिवार (विजयादशमी) को दशहरेका उत्सव हुआ। पहले खासेके घोड़े सजाकर लाये गये फिर खासेके हाथी।

महीनदीका चढ़ाव—मही नदी अभी तक लशकरके उतरने योग्य पायाव नहीं हुई थी और महमूदाबादके जलवायुको दूसरे स्थानोंके जलवायुसे कुछ लगाव न था, इसलिये दो दिन फिर वहां बादशाहका पडाव रहा।

महीनदी पर पुल—८ चन्द्रवारको वहांसे कूच होकर गांव मोदे में डेरे हुए। बादशाहने ख्वाजा अबुलहसन बखशीको बहुतसे सेवकों और मल्लाहोंके साथ मही नदी पर पुल बांधनेके लिये भेजा। जिससे सेना पार होजावे और नदीके पायब होनेकी प्रतीक्षा न करना पडे।

९ मंगलको वहां मुकाम रहा और १० बुधवारको एना नामक स्थानमें डेरे हुए।

सारस—पहले सारस बच्चोंके पांव चोंचमें पकडकर उन्हें औंधा कर देता था। उससे यह शङ्का होती थी कि कहीं वह उन्हें मार न डाले। इसलिये बादशाहने नरको बच्चोंसे न्यारा रखनेका हुक्म दिया था। अब फिर इस बातकी जांचके लिये कि सारसको अपने बच्चोंसे मोह है या नहीं उसे बच्चोंके पास छोड़ा। देखा गया कि नर सारसका स्नेह बच्चोंके साथ मादा सारससे कम नहीं है। वह बच्चोंको प्यारसे औंधा किया करता था।

११ गुरुवार (आश्विन सुदी १४) को मुकाम रहा। पिछले दिन ३ काले हरन ४ हरनियां और चिकारे चीतेसे पकडवाये गये।

१४ रविवारको भी चीते द्वारा शिकार हुआ। १५ हरनियां और हरन पकड़वाये गये। मिरजा रुस्तम और सुहराबखां दोनों

बाप बेटे बादशाहके कहनेसे सात नील गायें शिकार करके लाये।

शेरका शिकार—बादशाहने यह सुनकर कि इस प्रान्तमें मनुष्य के मांस पर हिला हुआ एक सिंह प्रजाको पीडित कर रहा है शाह-जहांको उसके मारनेकी आज्ञा दी। वह उस शेरको मारकर रातको ले आया। बादशाहने अपने सामने उसकी खाल उधडवाई। यह बादशाहके मारे हुए शेरोंसे तोलमें कम निकला।

१५ चन्द्रवार और १६ मंगलवारको बादशाहने शिकारको जा कर दो नील गायें बन्दूकसे मारीं।

कंवल—१८ ब्रहस्पतिवार (कार्तिक वदी ८) को एक तालके तट पर तंबू तने। प्यालोंकी सभा जुडी। पानी पर कंवलके फूल खिले हुए थे। बादशाहने अपने नौकरोंको प्याले दिये।

हाथियोंकी भेट—जहांगीर कुलीखांने बिहारसे २० और मुर-व्वतखांने बंगालेसे ८ हाथी भेजे थे। उनमेंसे बादशाहने एक एक हाथी खासे हाथियोंमें लेकर शेष बांट दिये और कई अमीरोंके मन-सब भी बढाये।

शिकार—१९ शुक्रवार (कार्तिक वदी९) को बादशाहने शिकार में एक नील गाय मारी। वह लिखता है—मुझे स्मरण नहीं कि मैंने उमर भरमें कभी नर नीलगायके शरीरको छेदकर गोली पार निकलते देखी हो। हां मादाके शरीरसे निकल जाती है। आज २५ पांवडेकी दूरी थी तो भी गोली नर नीलगायके दोनों चमडोंसे पार निकल गई। शिकारी लोग आगे पीछेके पांवोंके फासलेको पांवडा कहते हैं।

शिकार—२१ रविवार (कार्तिक वदी ११) को बादशाह स्वयं तो बाज जुर्रोंके शिकारको गया और मिरजा, रुस्तम, दाराबखां और मीरमीरां आदि अनुचरोंको कहगया कि नीलगायोंका शिकार करो और जितने चाहो बन्दूकसे मारो। वह १९ नर मादा मार कर लाये। सबने दस दस हरन भी चीतोंसे पकडवाये।

सूबे दक्खिणके बखशी इब्राहीमखांका मनसब खानखानाकी

प्रार्थनासे हजारी जात और दोसौ सवारोंका होगया ।

महीनदीका पुल और अकबर बादशाहका एक चरित्र—२२ चन्द्र और २३ भौमवारको लगातार कूच हुआ । रास्तेमें बादशाहने एक सिंहनीको तीन बच्चों सहित बन्दूकसे मारा । आगे जाकर महीनदीके पुलसे उतरा जो १४० गज लम्बा और १४ गज चौडा था । उसे ख्वाजा अबुलहसन मीरबख्शीने अति परिश्रमसे ऐसा मुहढ बंधवाया था कि बादशाहने जब अपने सबसे प्रचण्डहाथी गुण-सुन्दरको तीन हथनियों सहित परीक्षाके लिये उसके ऊपरसे उतारा तो वह हिला तक नहीं । बादशाह लिखता है—मैंने स्वर्गवासी श्रीमानसे सुना । वह कहते थे कि मैं जवानीमें एक दिन दो तीन प्याले पीकर एक मस्त हाथी पर चढा । मुझे नशा न था और न हाथी मस्त था वरच वह मेरे काबूमें था । तोभी मैं अपने को मतवाला और हाथीको मस्त जनाकर लोगों पर दौडाता था फिर दूसरा हाथी मगवाकर लड़ाया । दोनो हाथी लड़ते लडते जमनाके पुल तक चले गये । वहां वह हाथी भागा पर राह न पाकर पुल पर गया । मैं जिस हाथी पर बैठा था वह उसके पीछे दौडा । उसका ठहरा लेना मेरे हाथमें था । पर मैंने सोचा कि जो हाथीको पुल पर जानेसे रोकूंगा तो लोग समझेंगे कि यह सब कौतुक नखरे न थे बनावटी थे और यह बात स्पष्ट जानली जावेगी कि न मैं मतवाला था न हाथी मस्त । बादशाहोंको ऐसी पोल खुल जाना ठीक नहीं । इसलिये मैंने परमेश्वरकी सहायताका भरोसा करके अपने हाथीको उसके पीछे जाने दिया । दोनो पुल पर चले । पुल नावोंका बना था । जब हाथीके अगले पैर नाव पर पड़ते थे तो आधी नाव पानीमें डूब जाती थी और आधी ऊपर उठ आती थी । पद पद पर यह आशंका होती थी कि नावोंके रस्से टूट जावेंगे । इधर लोग यह हाल देखकर हाहाकार कर रहे थे । पर भगवानकी कृपासे जो सब जगह और सब दशाओंमें मेरी सहायता करता है दोनों हाथी कुशलपूर्वक पुलसे पार होगये ।

२५ गुरुवार (कार्तिक वदी ३०) को मही के तट पर प्यालेकी सभा हुई और कई निज पारिषदोंको जो ऐसी सभाओंमें आसकते थे बादशाहने प्यालोंसे छका दिया। और दो हेतुसे वहां चार मुकाम किये। एक तो स्थान सुरम्य था दूसरे यह कि लोग घबराहटसे नदीमें न उतर पड़ें।

सारसोंकी लड़ाई—२८ रवि और २९सोमवारको दो कूच बराबर हुए। इस दिन बादशाहने एक अजब तमाशा देखा। सारस का जोड़ा बच्चों सहित गुरुवारको अहमदाबादसे लाया गया था। वह राजभवनके चौकमें जो एक तालके तट पर सजाया गया था फिर रहे थे। अचानक उनकी बोली सुनकर एक जङ्गली सारसोंका जोड़ा तालके उधर बोला और उड़कर सीधा इधर आगया। नर नरसे लड़ने लगा और मादा मादासे लड़ने लगी। उस समय कई मनुष्य वहां खड़े थे परन्तु उन्होंने किसीकी कुछ शंका न की। अन्तको रक्षक दौड़े। एकने नरको पकड़ा दूसरेने मादाको। नर बड़े परिश्रमसे पकड़ा गया और मादा हाथसे निकल गई। बादशाहने नरके गले और पांवोंमें अपने हाथसे कड़ियां डालकर छोड़ दिया। दोनो अपने स्थानको चले गये। फिर जब जब यह घरेलू सारस बोलते थे तो वह जङ्गली भी हांक लगाते थे।

हरनोंकी लड़ाई—बादशाह लिखताहै—ऐसाही कौतुक जङ्गली हरनोंका देखा। मैं एक बार करनालके परगनेमें शिकार खेलने गया था। तीस शिकारी और खिदमतगार साथ थे। एक काला हरन कई हरनियों सहित दिखाई दिया। मैंने एक पाला हुआ हरन जो दूसरे हरनोंको पकड़ा करता था उससे लड़नेके लिये छोड़ा। वह दो तीन बेर सींगोंसे लड़कर लौट आया। मैं उसके सींगोंमें फंदे बांधकर दूसरी बेर छोड़ाही चाहता था जिसमे वह उसे फांस लावे। पर इतनेहीमें वह जङ्गली हरन अति क्रोधसे लोगोंकी शंका न करके दौड़ा आया और दौड़नेहीमें उस हरनसे दो चार टक्करें लड़ाके निकल गया।

इनायतखांकी मृत्यु—इसी दिन इनायतखांके मरनेकी खबर आई। यह निज सेवकोंमेंसे था अफीमी होकर भी मद्यप होगया था। पहले दस्त आने लगे थे फिर मृगीवालेके समान अचेत भी होजाता था। हकीम रुकना, बादशाहकी आज्ञासे उसका इलाज करता था पर रोगकी शान्ति न हुई। अन्तमें जलन्धर हो गया तब उसने आगरे जानेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने बिदा करनेको सामने बुलाया तो पालकीमें डालकर लाया गया। बादशाह लिखता है—"इतना दुबला और कमजोर होगया था कि मानो हड्डियों पर चमडा तना हुआ है। हड्डियां भी गल गई थीं। चित्रकार दुबली पतली तसवीरोंके बनानेमें बहुत दक्षता दिखाते हैं परन्तु कोई ऐसी या इसके जैसी तसवीर देखनेमें नहीं आई थी धन्य है परमेश्वर कि मनुष्य भी इस खाकेका होजाता है। उस्ताद के यह दो शेर यहां खूब घटते थे,—

"मेरी छाया जो मेरे पैर न पकडती, तो मैं प्रलय तक भी उनको न ठहरा सकता।

मेरी हाय पुकार मेरे हृदयकी क्षीणता देखकर कई जगह बैठती है तब होठों तक आती है।"

"अति आश्चर्य्यसे मैंने कहा कि चित्रकार इसका चित्र खेंचलें। उसका हाल बिगडा हुआ देखकर कहा कि ऐसी दशामें क्षण भर भी भगवत स्मरणको न भूले। अपने बालबच्चोंकी चिन्ता न करे। उनकी थोड़ीसी सेवा हम बहुत समझेंगे। खर्चके लिये दो हजार रुपये देकर उसे बिदा किया। वह दूसरेही दिन परलोकगामी हुआ।

३० मंगलवार (कार्तिक सुदी ५) को मानव नदीके ऊपर डेरे हुए।

आबान।

नये मनसब—१ आबान (कार्तिक सुदी ७) को गुरुवारका उत्सव हुआ जिसमें इतने लोगोंको मनसब मिले—

१ महाबतखांके बेटे असानुल्लहको हजारी जात ३०० सवार।

२ गिरिधर, राव सालके बेटेको हजारी जात ८०० सवार।

३ खान आजमके बेटे अबदुल्लहको हजारी जात ३०० सवार।

४ दिलेरखांको जो गुजरातके जागीरदारोंमेंसे था हाथी और घोड़ा।

५ शहबाजखां केम्बोका बेटा रणबाजखां जो दक्षिणसे बुलाया गया था, ८ सदी जात और ४०० सवारोंका मनसब पाकर बंगशकी बखशीगरी और वाकिआनवीसके काम पर नियत हुआ।

शाहजादा शुजा—३ शुक्रवार (कार्तिक सुदी ८) को कूचहुआ। शाहजहांका बेटा शाहजादा शुजा नूरजहां बेगमके पास पलता था। और बादशाहको उससे बहुत मोह था, हब्बे उब्बेके रोगमें ग्रस्त होकर अचेत होगया। जब बहुतसे उपचार करने पर भी चैतन्य न हुआ तो बादशाहने परमेश्वरसे उसके कष्ट निवारण करनेकी दुआ मांगी। ५० वर्षकी अवस्था होजाने पर जो तीर और बन्दूका से जीवोंके न मारनेकी कल्पना मनमें कर रखी थी उसकी प्रतिज्ञा विशुद्ध चित्तसे की कि अब फिर किसी जीव जन्तुको अपने हाथसे न मारूंगा। इस पर भगवत कृपा होकर उसका कष्ट निवृत्त होगया।

अकबर बादशाहका संकल्प—बादशाह लिखता है—"जब मैं माके पेटमें था तो एक दिन हलाचला नहीं। दासियोंने विह्वल होकर मेरे पिताके कान तक यह बात पहुंचाई। वह उन दिनों सदा चीतेका शिकार किया करते थे। उस दिन शुक्रवार था। उन्होंने मेरे आरोग्यके लिये यह सङ्कल्प किया कि जीवन भर शुक्रवारको चीतेका शिकार न करूंगा।" वह जब तक जिये अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहे और मैंने भी उनका अनुसरण करके अबतक कभी शुक्रके दिन चीतेका शिकार नहीं किया है।

शुजाकी निर्बलतासे तीन दिन तक वहीं निवास हुआ।

ऊंटनीका दूध—७ मंगलवार (कार्तिक सुदी १२) को कूच

हुआ। एक दिन हकीम(१)का बेटा ऊंटनीके दूधकी प्रशंसा करता था। आसफखांके पास एक विलायती ऊंटनी दूधवाली थी। बादशाहने उसका कुछ दूध पिया तो मीठा और स्वादिष्ट प्रतीत हुआ। दूसरी ऊंटनियोंके दूधकी भांति खारा न था। बादशाह महीने भर तक नित्य एक प्याला जो पानी पीनेके प्यालेसे आधा था उक्त दूध का पीता रहा। वह लिखताहै—"इससे बहुत लाभ हुआ और प्यास जाती रही। अजब बात यह है कि दो वर्ष पहले जब आसफखांने यह ऊंटनी मोल ली थी तो न इसके साथ बच्चा था न इसके दूध था। इन दिनोंमें अकस्मात दूध उसके थनोंसे उतरने लगा था। उसे नित्य ५ सेर गायका दूध ५ सेर गेहूं १ सेर गुड और १ सेर सौंफ खाने को दी जाती है। जिससे उसका दूध मीठा और गुणकारी हो। यह मुझे अच्छा लगता है। मैंने परीक्षाके लिये गाय और भैंसका दूध मगाकर भी चखा तो मिठासमें ऊंटनीके दूधसे उनके दूधका कुछ लगाव न था। तब हुक्म दिया कि कई दूसरी ऊंटनियोंको भी इसी प्रकारकी खुराक दें। जिससे यह जाना जावे कि दूधका मिठास अच्छे रातबसे होता है या इस ऊंटनीका दूध मूलमें ही मीठा है।"

कशमीरी नाव—८ बुधवार (कार्तिक सुदी १३) को कूच होकर ९ गुरुवार (कार्तिक सुदी १४) को डेरे एक बड़े तालके ऊपर लगे। शाहजहांने एक कशमीरी नाव जिसमें चांदीकी बैठकें बनी हुई थीं भेट की। बादशाहने पिछले दिन उसमें बैठकर जलविहार किया।

१० शुक्रवारको कूच होकर ११ शनि (अगहन बदी १) को परगने दोहदमें निवास हुआ।

पोतेका जन्म—१२ आबान रविवार सन १३ जुलूस १५ जीकाद १०२७ हिजरी (अगहन बदी २) को तुला लग्नके १९ वें अंशमें आसफखांकी बेटीसे शाहजहांके बेटा हुआ। बादशाह इस प्रसंगसे तीन दिन वहां ठहरा।

(१) हकीमका नाम नहीं है।

१५ बुधवार(१) (अगहनबदी ५।६) को गांव समरनेमें डेरे हुए। पर वहां कोई सुरम्य स्थान गुरुवारके उत्सव होनेके योग्य न था। बादशाहने यह नियम कर रखा था कि उक्त उत्सव यथासाध्य किसी जलाशय या मंजुल स्थानमें किया जावे। इस वास्ते १६ गुरुवार की आधीरात(२) को वहांसे कूच होकर दिन निकलतेही बाघोरके तालाव पर डेरे हुए। दिन ढलेसे प्यालोंकी मजलिस आरम्भ हुई।

केशव मारू—१७ शुक्रवार (अगहन बदी ८) को वहांसे प्रयाण हुआ। उस प्रान्तका जागीरदार केशवदास मारू, जो दक्षिणसे बुलाया गया सेवामें उपस्थित हुआ।

धूमकेतु—१८ शनिवार (अगहन बदी ६) को रामगढमें डेरे हुए। कई रातोंसे तीन घडीके तडके आकाशमें कुछ धुआं और भाप मिलकर एक स्तम्भ बनता जाता था। जब बन चुका तो एक शस्त्रसा दिखाई देने लगा। उसके दोनो सिरे महीन बीच मोटा और बांका धुरेके समान, पीठ दक्षिणमें थी और मुंह उत्तरमें था। बादशाह लिखता है—"अब पहर रात रहे से उगने लगा है। ज्योतिषियोंने यन्त्रराजसे देखा तो जाना गया कि आकाशके २४वें अंशमें दिखता है और महत आकाशकी गतिके साथ इसकी भी गति है। उस गतिमें उसका चार भी प्रगट होता है जैसे पहले कर्कराशिमें था फिर उसको छोडकर तुलामें पहुचा है उसकी गति विशेषकर दक्षिण दिशाको है। ज्योतिर्विदोंने इस प्रकारके तारोंका नाम 'हरबा(३)' लिखा है और इसका निकलना अरब देशके अधिपतियोंकी निर्बलता और उन पर उनके वैरियोंके प्रबल होनेका कारण बताया है। इसके प्रादुर्भावको १६ राती के पीछे उसी दिशामें एक तारा चमकने लगा। जिसके मस्तकसे

(१) मूलमें लेखक दोषसे रवि लिखा है।

(२) तारीख आधीरातसे मानी जाती थी।

(३) शस्त्र।

तो प्रकाश था पर पूंछमें कुछ भी न था। पूंछ दो तीन गज लम्बी दिखाई देती थी। इसको दिखते हुए आठ रातें हुई हैं। जब यह दिख चुकेगा तो जो कुछ इसका फल प्रगट होगा वह आगे लिखा जायगा।

१९ रविवारको बादशाह वहीं निवास करके २० सोमवार (अगहन वदी ११) को गांव सीतलखेडेमें उतरा। २१मंगलको भी वही रहा। रशीदखां पठानके वास्ते हाथी और खिलअत रणबाज खांके हाथ भेजा गया।

२२ बुधवार (दूसरी द्वादशी) को मदनपुरमें सवारी ठहरी। २३ (अगहन वदी १३) गुरुवारको वहीं प्यालोंकी मजलिस हुई। दाराबखांको नादरीका सिरोपाव मिला।

२५ शनिवार (अगहन वदी अमावस) को नवाड़ीके परगनेमें डेरे हुए।

२६ रविवार (अगहन सुदी १) को चंबल पर, २७ को खनर नदी पर और २८ मंगल (अगहन सुदी ३) को उज्जैनकी तलहटीमें सवारी उतरी।

उज्जैन—बादशाह अहमदाबादसे उज्जैन तक ९८ कोस दो महीने नौ दिन २८ कूच और ४१ मुकाम करके पहुंचा था।

सन्यासी जदरूप—२९ बुधवार (अगहन सुदी ४) को बादशाह जदरूपसे मिलकर कान्शियादह देखनेको गया। वह लिखता है— उसका सत्सङ्ग बहुत गनीमत है।

चूहे—कन्धारके हाकिम बहादुरखांकी अरजीसे बादशाहको विदित हुआ कि गत वर्ष सन १०२६ हिजरीसे कन्धार और उसके आसपास इतने चूहे होगये हैं कि सब खेतों और वृक्षोंको खागये हैं। जब तक खेत न कटे थे तबतक चूहे बालियोंको खाते थे। जब किसानोंने खलियान लगाये तो आधा अन्न फिर खागये। सरकारी हासिल कोई चौथाई वसूल हुआ। चूहे खरबूजोंकी बेलों और बागोंको भी चाट गये। अब उनका जोर कुछ घटा है।

शाहजहांकी भेट—शाहजहांने अपने नवजात पुत्रका उत्सव अबतक नहीं किया था और उज्जैन उसकी जागीरमें था। इस लिये उसने बादशाहसे प्रार्थना की कि गुरुवारका उत्सव उसके यहां किया जावे। बादशाह ३० गुरुवार (अगहन सुदी ५) को उसके यहां गया। जो लोग ऐसी मजलिसोंमें जानेके अधिकारी थे उनको प्याले दिये। शाहजहांने उस बालकको बादशाहकी सेवामें लाकर एक थाल रत्नों और जड़ाऊ गहनोंसे भरा हुआ २० हथनियां और ३० हाथी भेट किये और उसके नाम रखनेकी विनती की। बादशाहने उन हाथियोंमेंसे ७ तो निज हलकेमें रखनेके वास्ते लेलिये। शेष फौजदारों (महावतों) को देदिये। यह भेट दोलाखकी थी।

आजर महीना।

१ आजर शुक्रवार (अगहन सुदी ६) को बादशाह बाज जुर्रोका शिकार खेलने गया। रास्तेमें जुंवारका खेत पड़ा। जुवारकी एक डण्डीमें एकही भुट्टा निकलता है। पर वहां एक डंडीमें १२ भुट्टे देखे गये। इस पर बादशाहको एक बादशाह और एक मालीकी कहानी याद आई—

कथा बादशाह और मालीकी—"एक बादशाह गर्मियोंमें किसी बागके पास पहुंचा। एक बूढ़ा माली द्वार पर खड़ा था उससे पूछा कि क्या इस बागमें अनार है? उसने कहा हां है। कहा कि एक कटोरा उनके रसका भर ला। मालीने अपनी कन्यासे कहा। वह सुन्दरी तुरन्त कटोरा भर लाई।' उसमें कुछ पत्ते भी पडे हुए थे। बादशाहने कटोरा उसके हाथसे लेकर पी लिया और उससे पूछा कि पत्ते क्यों डाले थे। उस प्रियवादिनीने कहा कि ऐसी तमतमाहट और पसीनेमें एक सास पानी पीना वैद्यकके विरुद्ध है इसलिये मैं रसमें पत्ते डाल लाई कि आप जरा ठहर ठहरके पियें। उसकी यह चतुराई बादशाहके मनमें बहुत भाई और उसको अपने विलास-भवनमें सम्मिलित करनेकी चेष्टा करके मालीसे पूछने लगा कि बरस भरमें इस बागसे तुमको क्या प्राप्त होजाता है? उसने कहा कि

३०० दीनार (स्वर्ण मुद्रा)। फिर पूछा—इसकी मालगुजारी क्या देता है? बोला—बादशाह वृक्षोंका कुछ नहीं लेता है। बादशाहने मनमें कहा कि मेरे राज्यमें बाग बहुत हैं। उनकी पैदावार का दसवां भाग भी लिया जाय तो बहुत रुपये आजावें और इसमें प्रजाकी भी कुछ बडी हानि नहीं है। मैं अब कह दूंगा कि बागों की आय पर भी कर लिया करें। यह कल्पना करके फिर लड़कीसे कहा कि कुछ रस अनारका और लेआ। वह गई और कुछ विलम्ब में कटोरा भरकर लाई। बादशाहने कहा कि पहली बार तो तू जल्दी आगई थी और रस भी बहुत लाई थी। इसबार तूने प्रतीक्षा भी बहुत कराई और रस भी थोडा लाई। कन्याने कहा कि जब तो एकही अनारसे कटोरा भर गया था और अब ५।६ अनार निचोड़े तो भी उतना रस नहीं निकला। बादशाह यह सुनकर चकित होगया। मालीने कहा कि उपजमें बरकत बादशाहकी नीयतसे होती है। मेरा अन्तःकरण कहता है कि तुम बादशाह हो बागकी उपजका वृत्तान्त सुनकर तुम्हारी नीयत बिगड़ गई होगी। जिससे फलोंकी बरकत जाती रही। इस बातसे बादशाह के मन पर चोट लगी। उसने वह खयाल जीसे हटाकर कहा कि एक कटोरा फिर भर ला। लडकी फिर गई और हंसती हंसती झटपट कटोरा भरकर लौट आई।

बादशाहने मालीकी बुद्धिमानीको सराहकर अपना परिचय दिया और वह लडकी उससे मांगकर व्याह ली। उस बुद्धिमान बादशाहकी यह कीर्ति पृथ्वीमें अमर हुई।"

बादशाह लिखता है—बेशक ऐसी बातोंका होना न्याय और नीतिका फल है। जब न्यायवान बादशाहोंकी नीति सम्पूर्ण रीति से प्रजाके हितमें रत रहती है तो बागों और खेतोंमें ऐसी वृद्धि होना असम्भव नहीं है। ईश्वरकी कृपासे इस महत राज्यमें बाग और बाडियोंके कर लेनेकी रीति कभी न थी और न अब है। समस्त सूबोंमें इस विभागकी एक दमड़ी क्या एक कौड़ी भी खजाने

में नहीं पड़ती। बल्कि यह हुक्म है कि जो कोई अपने खेतमें बाग लगावे उसका हासिल माफ रहे। आशा है कि पवित्र परमात्मा मुझे सदैव इसी नीति पर स्थिर रखेगा।

जदरूप—२ शनिवार (अगहन सुदी ७) को फिर जदरूपसे मिलनेको अभिलाषा बादशाहको हुई। दोपहरको उपासनासे निवट कर नावमें बैठा और दिन ढले उसीको कुटीमें जाकर मिला। खूब ज्ञानचर्चा हुई। बादशाह लिखता है—निस्सन्देह वेदान्तका रहस्य बहुत स्पष्ट रूपसे कहता है। इसके सत्सगसे अति आनन्द होता है। अवस्था ६० वर्षसे ऊपर है। जब २२ वर्षका था तो विरक्त होगया। ३८ वर्षसे परमहंस गतिमें रहता है। विदा होते समय बोला कि मैं परमात्माके इस अनुग्रहका धन्यवाद किस मुखसे करूं कि ऐसे न्यायवान बादशाहको छत्रछायामें एकाग्रचित्तसे अपने इष्ट देवको आराधनामें लगा हुआ हूं, किसी प्रकारसे कोई विघ्न मेरी तपस्यामें नहीं पड़ता है।

बाज और करवानक—३ रविवार (अगहन सुदी ८) को बादशाह कालियादहसे चलकर कासिमखेडेमें ठहरा। रास्तेमें बाज और जुर्रेसे शिकार कराता आता था कि अकस्मात एक करवानक उडी। बादशाहने उसके ऊपर तवीगूं जातिका बाज छोडा। करवानक तो बाजके पंजेसे छूट गई पर बाज इतना ऊंचा चढा कि दृष्टिसे अलोप होगया। किरावल और मीरशिकार उसके पीछे इधर उधर बहुत दौडे पर कुछ पता न लगा और ऐसे जंगलमें उस का हाथ आना असम्भव होगया। इससे लशकरमीर कशमीरी जो कशमीरके मीर शिकारोंका मीर था बहुत घबराया क्योंकि वह बाज उसीको सौंपा हुआ था। वह जंगलमें बेपते दौडता फिरता था। अन्तको दूरसे एक वृक्ष देखा। जब पास गया तो बाजको उस पर बैठा पाया। तब एक पला मुर्गा दिखाकर तीन घडी बीतने से पहले उसे बादशाहके पास पकड लाया। यह बाज बादशाहको बहुत प्यारा था। उसने मिलनेकी आशा सबने त्याग दी थी। उसे

पाकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। लशकर मीरका मनसब बढ़ाया और उसे घोड़ा और सिरोपाव दिया।

४ चन्द्र ५ मंगल और ६ बुधवारको लगातार कूच हुआ। ७ गुरुवार (अगहन सुदी १२) को एक तालकी तट पर तम्बू तने और उत्सव हुआ।

हकीम रूहुल्लहको तीन गांव—नूरजहां बेगमको एक बीमारी थी। बादशाहकी सेवामें रहनेवाले हिन्दू मुसलमान हकीम वैद्य सब उपचार कर हारे थे। अन्तको हकीम रूहुल्लहकी औषधसे शीघ्रही आराम होगया। बादशाहने प्रसन्न होकर उसको उचित मनसब और तीन गांव उसके देशमें दिये और उसके बराबर चांदी भी तोल दी।

८ शुक्रसे १३ बुधवार तक निरन्तर कूच होते रहे। नित्य मंजिल पर पहुंचने तक बाज और जुर्रोंसे शिकार कराया जाता था। बहुत से तीतर पकड़वाये गये थे।

कांवर करन—पिछले रविवार (पौष वदी १) को राणा अमरसिंहके पुत्र करनने जमीन चूमनेकी प्रतिष्ठा प्राप्त करके दक्षिण दिग्विजयकी मुबारकबादी, १००० मुहरें, १००० रुपये नजर और २१००० के जड़ाऊ पदार्थ, कई हाथी तथा घोड़े पेश किये। हाथी घोड़े तो बादशाहने उसीको बख्श दिये शेष पदार्थ रख लिये।

दूसरे दिन बादशाहने उसको सिरोपाव दिया।

कुतुबुलमुल्कके वकीलको हाथी—कुतुबुलमुल्कके वकील, मीर शरीफ और इरादतखां, मीर सामानको एक एक हाथी मिला।

हुजब्रखां सरकार सेवातकी फौजदारी पर और सैयद मुबारक रोहतासगढ़की किलेदारी पर नियत हुए। उनके मनसब भी बढ़े।

१४ रविवार (पौष वदी ५) को बादशाहने गांव सम्भारेके तालाब पर पहुंचकर प्यालोंकी मजलिस की। निज अनुचर प्याले देकर मतवाले किये।

शिकारी जानवर—शिकारी जानवर जो आगरेमें बंधे थे उनको

ख्वाजा अबुललतीफ कोश्रवेगी इस दिन बादशाहकी सेवामें लाया। उनमेंसे निज सरकारमें रखने योग्य देखे वह बादशाहने छांट लिये शेष अमीरों और दूसरे सेवकोंको बख्श दिये।

राजा सूरजमलका प्रतिकूल होना—इसी दिन राजा वासूके बेटे सूरजमलके बागी होनेका समाचार बादशाहको सुनाया गया बादशाह लिखता है—"राजा बासूके कई पुत्र थे। सूरजमल सबमें बडा था। परन्तु अशुभचिन्तक और दुराचारी होनेसे पिता सदैव उसको कारागारमें रखता था। जब वह उसी अप्रसन्नता और खिन्न दशामें मर गया तो बडा लडका यही था और दूसरा लडका योग्य न था। इस लिये मैंने राजा बासूकी सेवाका ध्यान करके जमींदारीके प्रबन्ध और वतन तथा देशकी रक्षाके लिये इस दुष्टको राजाकी उपाधि, दो हजारी मनसब और वह जागीर भी जो उसके बापने सेवा और स्वामिधर्म्मसे पाई थी और वह सब जमापूंजी जो वर्षोंकी जोडी हुई थी देदी। जिस समय मुर्तिजाखां कांगडा जीतनेके वास्ते भेजा गया था तब यह कुपात्र भी जो उन पहाडोंका मुख्य जमींदार था सेवा और शुभचिन्तकताकी प्रतिज्ञा करने पर उसकी सहायता पर नियत किया गया था। मुर्तिजाखांने वहां पहुंच कर किलेको घेरा और अन्दरवालोंको तंग किया तो वह दुष्ट यह देखकर कि अब शीघ्रही किला फतह होजावेगा बदल गया और खुल्लम खुल्ला प्रतिकूल होकर उसके आदमियोंसे शत्रुता करने लगा। मुर्तिजाखांने उसकी यह दशा देखकर दरगाहमें अरजी लिखी और स्पष्ट रूपसे उसके वैरभाव और अहितकारी होनेका वृत्तान्त लिखा उस कुपात्रने भी मुर्तिजाखां जैसे सुभटके प्रबल सैन्य सहित उन पहाडोंमें होनेसे उपद्रव करनेका समय न पाकर शाहजहांकी सेवा में एक अर्जी भेजी कि मुर्तिजाखां स्वार्थी लोगोंके बहकानेसे असन्तुष्ट होकर मेरा अनर्थ करना चाहता है। राजविद्रोहका मुझ पर झूठा कलङ्क लगाता है। आप मेरी रक्षा करें और मुझे जीवनद न देकर दरगाहमें बुला लेवें! मुझे मुर्तिजाखांकी बातका पूरा

भरोसा था। तो भी उसको दरबारमें बुलाये जानेकी प्रार्थनासे मनमें शंका हुई कि कदाचित मुर्तिजाखांने दुर्जनोंकी प्रेरणासे क्रुद्ध होकर और विचार न करके उसको कलंकित किया हो। पुत्र शाहजहांकी सुफारिशसे उसके अपराध क्षमा करके उसे दरगाहमें बुला लिया। इतनेमें मुर्तिजाखां तो मर गया और कांगड़ेका फतह होना किसी दूसरे सरदारके भेजने तक रुक गया। जब वह दरगाहमें आया तो मैंने उसकी ऊपरी दशा पर दृष्टि देकर शीघ्रही कृपापूर्वक शाहजहांकी सेवामें दक्षिण जीतनेके वास्ते भेज दिया। जब वह देश राजकीय कर्मचारियोंके अधिकारमें आगया तो इसने शाहजहांकी सेवामें अपना पक्ष बढ़ाकर कांगडा विजय कर देनेकी प्रतिज्ञा की। यद्यपि इस कृतज्ञताविहीन पुरुषको उन पहाडोंमें भेजना सावधानीसे दूर था परन्तु इस कामको उस पुत्रने अपने जिम्मे ले रखा था इसलिये उसीके विचार और अधिकारमें इसे छोडना पडा। उस प्रतापी पुत्रने अपने अनुचरोंमेंसे तकी नामके एक सेवक तथा बादशाही मनसबदारों, अहदियों और बर्कन्दाजों की एक सुसज्जित सेना उसके साथ भेजी। उसका वृत्तान्त पिछले पन्नेमें लिखा जाचुका है। जब वह वहां पहुंचा तो तकीसे भी नटखटी और दुष्टप्रकृति प्रकट करने लगा। तकीने कई बार उसकी शिकायत लिखी और स्पष्ट कह दिया कि मेरी उसकी नहीं बनती है और यह काम उससे बन भी नहीं सकता है; दूसरा सरदार भेजें तो शीघ्रही यह किला फतह होजावे। शाहजहांने तकी को हजूरमें बुलाया और अपने प्रधान मन्त्रियोंमेंसे राजा विक्रमाजीत को एक प्रबल सेना सहित उसके साथ भेजा। तब इस कुपात्रने जाना कि अब विशेष छल छिद्र नहीं चलेगा। उसने विक्रमाजीत के पहुंचनेसे पहले बहुतसे बादशाही बन्दोंको यह कहकर बिदाकर दिया कि बहुत दिनों तक लडाईमें कष्ट उठानेसे शोभाविहीन हो गये हो सो अपनी अपनी जागीरोंमें जाकर राजा विक्रमाजीतके आने तक फिर तय्यारी करलो। जब इस भांति शुभचिन्तकोंका

दल टूट गया, बहुतसे अपनी जागीरोंमें चले गये और थोडेसे वहां रहे तो उसने अवसर पाकर उपद्रव उठाया। सैयद सफी बारह जो बडा वीर था अपने थोडेसे भाइयों और सम्बन्धियोंको लेकर उससे शूरता पूर्वक लडा और मारा गया। कुछ लोग घायल भी हुए जिन्हें वह दुष्ट रणस्थलसे पकडकर अपने स्थानमें लेगया। जो बाकी रहे वह भागकर बचे। उस अभागेने पहाडकी तलहटीके परगनोंको लूट लिया जो अधिक एतमादुद्दौलाकी जागीरमें थे। लूटमें कुछ बाकी न छोडा।"

१७ रविवार (पौष बदी ८) को बादशाह चांदाकी घाटीसे उतरा।

खानखानाका उपस्थित होना—१८ चन्द्रवार (पौष बदी ९) को खानखाना सेनापतिने चौखट चूमी। यह बहुत दिनोंसे दूर था। अब बादशाहकी सवारी खानदेश और बुरहानपुरकी सरकारमें हो कर निकली तो उसने सेवामें उपस्थित होनेके वास्ते प्रार्थनापत्र भेजा। बादशाहका हुक्म हुआ कि जो सब प्रकारसे उसका चित्त निश्चिन्त हो तो कुछ आकर शीघ्रही लौट जावे। इस पर वह इस तारीखको आया था। बादशाहने बादशाहोंकीसी कृपा करके उस का मान बढाया। उसने १००० मुहरें और १००० रुपये भेंट किये।

घाटेसे उतरनेमें सेनाको बहुत कष्ट हुआ इस लिये बादशाहने सर्वसाधारणके सुखके लिये १९ मंगलवार (पौष बदी १०) को वहीं निवास किया।

खानखानाको घोडा—२० बुधवार (पौष बदी ११) को कूच और २१ गुरुको मुकाम हुआ। सिन्धु नदीके कूलमें प्यालो का कुतूहल हुआ। बादशाहने खानखानाको सुमेरु नाम घोडा दिया जिसने रंग और डीलडौलके कारण यह नाम पाया था।

निर्म्मल नाला—२२ शुक्र और २३ शनिवारको लगातार कूच होता रहा। इस दिन बादशाहने एक अद्भुत नाला निर्म्मल जल का देखा जो ऊंची टेकरीसे गिरता था। उसके आसपास कुदरती बैठकें बनी हुई थीं। उस प्रान्तमें ऐसी छविका कोई झरना बाद-

शाहके देखनेमें न आया था। इससे कुछ देर उसे देखकर प्रमुदित हुआ।

२४ रविवार (पौष बदी ३०) को मुकाम हुआ। डेरोंके आगे एक तालाब था बादशाहने नावमें बैठकर जलमुर्गियोंका शिकार किया।

खानखानाको पोस्तीन और घोड़े—२५ सोम २६ मंगल और २७ बुधवारको लगातार कूच हुआ। खानखानाको खासा पोस्तीन जो बादशाह पहने हुए था और खासे तवेलेके ७ घोड़े मिले जिन पर बादशाह सवारी कर चुका था।

पन्द्रहवां वर्ष।

सन् १०२८ हिजरी।

पौष सुदी २ संवत् १६७५ ता० ९ दिसम्बर सन् १६१८ से
मार्गशीर्ष सुदी द्वितीय १ संवत् १६७६
ता० २८ नवम्बर सन् १६१९ तक।

दे महीना।

गढरणथम्भोर—२ रविवार (पौष सुदी५) को बादशाहने रणथम्भोरमें प्रवेश किया। बादशाह लिखता है कि यह किला हिन्दुओंके बड़े दुर्गोंमेंसे है। सुलतान अलाउद्दीन खिलजीके समयमें राय हमीरदेव(१) के पास था। सुलतानने वर्षों तक घेरा रखकर बड़े कष्ट और कठिन परिश्रमसे उसे विजय किया था। स्वर्गवासी श्रीमान के राज्यके प्रारम्भमें राय सुरजन हाडाके अधिकारमें था। ६।७ सहस्र सवार सदैव उसकी सेवामें रहते थे। स्वर्गवासी श्रीमानने पवित्र परमात्माकी सहायतासे एक महीने १० दिनमें लेलिया। राय सुरजन भाग्यकी अनुकूलतासे चौखट चूमनेका सौभाग्य पाकर शुभचिन्तकोंकी श्रेणीमें संकलित होगया और विश्वासपात्र सुभटोंमें गिना गया। उसके पीछे उसका पुत्र भोज भी बड़े अमीरोंमें रहा। अब उसका पोता सरबलन्दराय, शिरोमणि सेवकोंमेंसे है।

रणथम्भोरका विवरण—बादशाह लिखता है, "३ चन्द्रवार (पौष सुदी ४) को मैं किले रणथम्भोरके देखनेको गया। दो पहाड़ बराबर बराबर है एकको रण और दुसरेको थम्भोर कहते हैं। किला थम्भोरके ऊपर बना है। इन दोनोंको मिलाकर उसका रणथम्भोर नाम रखा है। किला यद्यपि अति दृढ़ है और पानी भी उसमें पुष्कल है तो भी रण स्वयं सुदृढ है और उसी पर इस किलेका

(१) मूलमें लेखक दोषसे पीतम्बर देव लिखा है।

टूटना भी निर्भर है। मेरे पिताने हुक्म दिया था कि रणके ऊपर तोपें चढाकर किलेके मकानोंपर गोले मारें। पहला गोला रायसुरजनकी चौखण्डी पर लगा। उसके गिरनेसे उसके साहसकी नीव हिल गई और उसका अन्तःकरण भयभीत होगया। उसने अपनी मुक्ति किलेके सौंप देनेमें देखकर क्षमाशील श्रीमानकी चौखट पर अपना मस्तक घिसा।" मैंने मनमें यह ठान ली थी कि रातको किले पर रहकर दूसरे दिन उर्दूमें जाऊंगा। परन्तु किलेके भवन और निवासस्थान हिन्दुआना ढंग पर बने हैं। घर खुले नहीं हैं। हवाका संचार कम है इसलिये वहां रहनेको जी न हुआ। वहां एक हम्माम देखनेमें आया जो रुस्तमखांके नौकरने किलेकी दीवार के पास बनाया है। वहीं एक बागीचा और एक बैठक जंगलके ऊपर बनी है। यहां हवा है और जगह भी खुली है। किले भर में इससे अच्छी जगह नहीं है। रुस्तमखां स्वर्गवासी श्रीमानके सुभटोंमेंसे था। बचपनसे पास रहता था। उसका बड़ा विश्वास था इसीसे यह किला उसे सौंपा था।"

"किले और उसके मकानोंके देखनेके पीछे मैंने हुक्म दिया कि उन अपराधियोंको जो इस किलेमें कैद हैं मेरे पास लावें जिससे प्रत्येककी व्यवस्था समझकर न्यायपूर्वक हुक्म दियाजावे। सिवा खूनी कैदियोंके या ऐसे लोगोंके जिनके छोड़नेसे राज्यमें अशान्ति फैलने का भय था सब कैदी छोड दिये गये। सबको यथायोग्य खर्च और खिल्अत दिये।"

४ मंगलवार(१) को एक पहर तीन घड़ी रात व्यतीत होने पर राजभवनको लौटा।

५ बुधवार(२) को पांच कोसके लगभग कूच होकर ६ गुरुवार

(१) ऐसा जाना जाता है कि यहां तारीख और वार संध्यासेही मुसलमानी प्रथासे बदला गया है।

(२) लीथो छापसे सूचीमें बुधको जगह रवि लिखा गया है।

(पौष सुदी १०) को मुकाम हुआ। यहां खानखानाने अपनी भेंट अर्पण की। जवाहिर, जडाऊ पदार्थों, कपडों और हाथियोंमेंसे जो बादशाहको पसन्द आये वह चुन लिये और शेष उसीको बख्श दिये। सब मिलाकर डेढ लाखका माल पसन्द आया था।

७ शुक्रवार (पौष सुदी ११।१२) को ५ कोसका कूच हुआ।

दरनाका शिकार—बादशाह लिखता है—मैंने सारसको तो शाहीनसे पकडवाया पर दरनाके शिकारका तमाशा अबतक न देखा था। पुत्र शाहजहांको शाहीनके शिकारका बहुत शौक है और उसके शाहीन भी अच्छे हैं। मैं तडकेही उस पुत्रकी प्रार्थना से सवार हुआ। एक दरना तो मैंने अपने हाथसे पकड़वाया और दूसरा उस शाहीनने पकडा जो उस पुत्रके हाथमें था। यह शिकार खूब हुआ। मैं अत्यन्त प्रमुदित हुआ। सारस बडा जानवर है पर उडनेमें शिथिल और भद्दा है। दरनाके शिकारको उससे कुछ लगाव नहीं है। मैं शाहीनके कलेजेकी तारीफ करता हूं कि ऐसे बडे डीलडौलके पक्षियोंको पकडकर साहस और पंजेके बलसे दबा लेता है। इस शिकारकी खुशीमें उस पुत्रके कोशची (मीर शिकार) हसनखांने हाथी घोडा और सिरोपाव पाया। उसके बेटेका भी घोडे और खिलअतसे मान बढाया।

खानखानाकी बिदा—८ शनि (पौष सुदी १३) को बादशाह सवा चार कोस चलकर ६ रविको फिर ठहर गया। इस दिन खानखाना सिपहसालारने खासा खिलअत जडाऊ कमरपेटी और खासा हाथी तलायर सहित पाया। वह नये सिरेसे दक्षिण और खानदेशकी सूबेदारीपर नियुक्त हुआ और उसका मनसब भी बढकर सात हजारी जात और सातहजार सवारोंका होगया। उससे और लश्करखांसे नहीं बनती थी इस लिये बादशाहने उसकी प्रार्थनासे कारखानोंके दीवान आबिदखांको दक्षिणका दीवान करके उधर भेजा। उसको हजारी जात चारसौ सवारोंका मनसब देकर हाथी घोडा और सिरोपाव दिया।

खानदौरांका आना—इसी दिन खानदौरांने भी कावुलके सूबेसे आकर ज़मीन चूमी। १००० मोहर १००० रुपये मोतियोंकी माला, ५० घोड़े, १० विलायती ऊंट ऊंटनियां, कई चीनी और खताई शिकारी जानवर भेट किये।

खानदौरांकी फौजकी हाजिरी—१० सोमवार (पौष सुदी १५) को ३। कोस और भौमको ५॥। कोसका कूच हुआ। इस दिन खान दौरांने अपने लोगोंको सजाकर दिखाया। १००० मुगल जिनमेंसे बहुधा तुरकी तुरंगों और कुछ इराकी और मुजन्नस घोडोंपर सवार थे गिने गये। उसकी सेना बहुत तो बिखर गई और कुछ महावत खांकी नौकर होकर उसी सूबेमें रह गई थी। कुछ लाहोरसे अलग होकर देश देशान्तरमें चली गई थी तो भी यह इतने अच्छे घोड़ोंके सवार गनीमत थे।

बादशाह लिखता है—निस्संदेह खानदौरां वीरता और सेना सजानेमें इस समयके अद्वितीय मनुष्योंमेंसे है परन्तु खेदकी बात है कि बहुत बूढा होगया है। उसकी दृष्टि भी मन्द पड़ गई है। उसके दो जवान और सपूत बेटे हैं परन्तु खानदौरांके बराबर निकलना कठिन काम है। इस दिन खानदौरां और उसके बेटोंको खिलअत और तलवारें दीगईं।

सांडोंका ताल—१२ रविवार (माघ बदी २) को बादशाह ३॥ कोस चलकर सांडों(१) के ताल पर उतरा जिसमें एक बैठक बनी थी और उसके थम्भे पर किसीकी बनाई हुई फारसी कविता खुदी थी। उसे पढकर बादशाह विह्वल होगया। भावार्थ उसका यह था—

"हाय! सब साथी हाथसे निकल गये, वह एक एक करके मृत्युसे पराजित होगये। वह आयु रूपी मजलिसमें मद्यसे शीघ्र अनुमत्त होनेवाले थे। सो हमसे एक क्षण पहलेही मतवाले हो गये।"

---

(१) शायद यह सांवडा हो।

बादशाहको ऐसी एक और कविता भी याद थी वह भी उसने वहां लिख दी। उसका अर्थ यह है—

"हाय! विद्वान और बुद्धिमान लोग चले गये, पास रहनेवालों के चित्तसे उतर गये, जो सैकडों भाषाओंमें भाषण करते थे, उन्होंने न जाने क्या सुना कि चुप होगये।"

१४ शुक्रवार (माघ वदी ४) को ५ और १५ शनिवार (माघ वदी ५) को ३ कोसका कूच होकर बयानेके पास डेरे हुए। बादशाह बेगमों सहित किला देखनेको गया। यहां हुमायूं बादशाहके बख्शी मुहम्मदने जो यहांका किलेदार था एक विशाल भवन बनवाया था। वह जंगलकी तरफ खुला हुआ था। शेख मुहम्मद गौसके बडेभाई शेख बहलोलकी कबर इस किलेमें है उसकी हुमायूं बादशाहको बहुत भक्ति थी। जब वह बंगाल विजय करने गया और बहुत दिनों तक वहीं रहा तब मिरजा हिन्दाल उसके हुक्मसे आगरेमें रह गया था। कुछ राजविद्रोही सिपाही बंगालेसे प्रतिकूल होकर मिरजाके पास आगये और मिरजा उनके बहकानेसे स्वयं बादशाह बन बैठा। हुमायूंने यह सुनकर शेख बहलोलको मिरजाके समझानेके लिये भेजा। परन्तु मिरजाने उन्हीं लोगोंकी प्रेरणासे चारबागमें जो बाबर बादशाहका बनाया हुआ कालिन्दीके कूलमें था शेखको मार डाला। मुहम्मद बख्शीको भी शेख पर भक्ति थी इसवास्ते उसने शेखकी लाश बयानेके किलेमें लाकर गाड दी।

बादशाहकी मांकी बावडी—१६ रविवार (माघ वदी ६) को बादशाह ४॥ कोस चलकर करबरेसे उतरा। उसकी मांने जोसतके परगनेमें रास्ते पर एक बावडी बाग सहित बनाई थी। बादशाह उसके देखनेको गया और पसन्द करके कर्मचारियोंसे पूछा तो विदित हुआ कि २०००) उसमें लगे है।

१७ सोमवार (माघ वदी ७) को बादशाह शिकारके वास्ते वहीं रहा।

१८ मंगलवार (माघ वदी ८) को डेढ़ पाव तीन कोसका कूच करके गांव डाबरमल्लमें ठहरा। १९ बुधवार (माघ वदी ९) को २॥ कोस परही फतहपुरके ताल पर डेरा हुआ। रणथम्भोरसे फतहपुर तक २३४ कोस ६३ कूच और ५६ मुकाम अर्थात् ११९ दिनमें पूरे हुए। सौर पक्षसे इसके एक दिन कम चार महीने और चान्द्र माससे पूरे चार महीने हुए। जबसे बादशाह राना और दक्षिण देश जीतनेको चढ़ा तबसे राजधानीसे पहुंचने तक ५ वर्ष और चार महीने लगे।

आगरेमें प्रवेशका मुहूर्त—बादशाह लिखता है,—ज्योतिषियोंने २७(१) दे बुधवार सन् १३ तारीख ३० मुहर्रम सन् १०२८ (माघ सुदी२ सं०१६७५) को राजधानीमें प्रवेश करनेका मुहूर्त निकालाथा।

ताजन(२)—परन्तु इन दिनों शुभचिन्तकोंने अनेक बार प्रार्थना की थी कि ताऊनका रोग आगरेमें फैला हुआ है। एक दिनमें न्यूनाधिक १००मनुष्य, कांख तथा जांघके जोड़ वा गलफड़ेमें गिलटी उठकर मरते हैं। यह तीसरा वर्ष है। जाड़ेमें यह रोग प्रबल होजाता है और गर्मीमें जाता रहता है। अजब बात यह है कि इन तीन वर्षोंमें आगरेके सब गांवों और कसबोंमें तो फैल चुका है परन्तु फतहपुरमें बिलकुल नहीं पहुंचा है। अमनाबादसे फतहपुर २॥ कोस है जहांके मनुष्य मरीके डरसे घरबार छोड़कर दूसरे गांवोंमें चले गये हैं। इस लिये विचार पूर्वक यह बात ठहराई गई कि इस मुहूर्त पर फतहपुरमें प्रवेश करूं और जब रोग धीमा पड जावे तब दूसरा मुहूर्त निकलवाकर आगरेमें जाऊं।

गुरुवार (माघ वदी १०) का उत्सव फतहपुरके ताल पर हुआ। और मुहूर्त आने तक बादशाह ८ दिन यहीं ठहरा। तालका घेरा

(१) मूलमें २८ गलत लिखी है।

(२) इस ताऊनके लक्षण प्लेगसे ठीक मिलते हैं जो आठ दस

नपवाया तो सात कोस निकला। यहां बादशाहको माके सिवा जो कुछ बीमार थी और सब बेगमें और नौकर चाकर अगवानी आये।

ताऊन चूहोंसे—मृत आसफखांकी बेटीने जो खानआजमके बेटे अबदुल्लहखांके घरमें है, बादशाहसे यह विचित्र चरित्र ताऊनके विषयमें कहा और उसके सत्य होने पर बहुत जोर दिया। इससे बादशाहने वह घटना तुजुकमें लिख ली।

उसने कहा था कि एक दिन घरके आंगनमें एक चूहा दिखाई दिया। वह मतवालोंकी भांति गिरता पडता इधर उधर दौड रहा था। उसे कुछ सुझाई न देता था। मैंने एक लौंडीसे इशारा किया। उसने उसको पूंछ पकड़कर बिल्लीके आगे डालदिया। पहले तो बिल्लीने बड़े मोदसे उछलकर उसको मुंहमें पकडा किन्तु पीछे घिन करके तुरन्त छोड़ दिया। बिल्लीके चेहरे पर धीरे धीरे मांदगी के चिन्ह दिखाई देने लगे। दूसरे दिन वह मरणप्राय होगई। तब मेरे मनमें आया कि थोड़ासा तिरियाक फारूक (विष उतारनेवाली एक औषध) इसको देना चाहिये। जब उसका मुंह खोला गया तो देखा कि उसकी जीभ और तालू काला पड़ गया था। तीन दिन बुरा हाल रहा। चौथे दिन उसे कुछ सुध आई। फिर एक लौंडीको ताऊनकी गांठ निकली। उसकी जलन और पीड़ासे वह सुध भूल गई। रंग बदलकर पीला और काला होगया। प्रचण्ड ज्वर चढा। दूसरे दिन वह मर गई। इसी प्रकार सात आठ मनुष्य उस घरमें मरे और कई रोगग्रस्त हुए। तब मैं उस स्थानसे निकल कर बागमें चली गई। वहां फिर किसीके गांठ नहीं निकली पर जो पहलेके बीमार थे वह नहीं बचे। आठ नौ दिनमें १७ मनुष्य मर गये। उसने यह भी कहा कि जिनके गांठें निकली हुई थी वह जो किसीसे पानी पीने या नहानेको मांगते थे तो उसको भी यह रोग लग जाता था। अन्तको ऐसा हुआ कि मारे डरके कोई उनके पास नहीं जाता था।

अली आगरेकी रक्षा पर छोड़ा गया था चौखट चूमकर ५०० मोहरें भेट और चारसौ रुपये न्यौछावर किये। २४मीसवार (माघवदी १४) को बादशाहने उसे खासा खिलअत दिया।

फतहपुरमें प्रवेश—२७ गुरुवार (माघ सुदी २) को ४ घड़ी दिन चढ़े जो ज्योतिषकी दो घड़ीके लगभग होती हैं बादशाह ने फतहपुर में प्रवेश किया इसी दिन शाहजहां के तुलादान का मुहूर्त था। बादशाहने उसको सोने और दूसरे पदार्थोंमें तोला। सौर-मतसे उसको २८ वां वर्ष लगा। इसी दिन बादशाह की माता मरयमजमानी भी आगरे से आई और बादशाह उनकी सेवा में उपस्थित हुआ।

अकबरबादशाहके राजभवन—उसीदिन बादशाहने अपने पिता के भवन एक एक करके देखे और शाहजहां को दिखाये। बादशाह लिखता है—राजभवन के बीचमें तराशेहुए पत्थरों का एक कौजकपूर तालाव नामका अति सुन्दर है। वह ३६ गज लम्बा और उतनाही चोडा चौकोर बना है। उसमें खजाने के कर्मचारियों ने रुपये पैसे भरदिये थे जिन का मूल्य ३४ करोड ४८ लाख ४६ हजार दामया १६७६४०० रुपये था। यह गरीबों को बटते रहे।

बहमन महीना।

१ रविवार (माघ सुदी ५) को १००० दरब हाफिज नादअली गवैये को और एक एक हजार रुपये मुहिबअली और अबुलकासिमगीलानी को मिले जिन्हें ईरान के बादशाह ने अन्धा करके जंगल में छुड़वादिया था और वह इस दरबार की शरण लेकर कुदने रहतेथे।

गुरुवारकी सभा—५ (माघ सुदी ८) को गुरुवारकी सभा फतहपुरके राजभवन में जुडी। निज सेवकों को प्याले मिले।

---

(१) यहां फिर मूलमें भूलसे २७ को जगह २८ लिखी है गुरुवार २७ को था २८ को नहीं था।

सुलतान परवेज को जहांगीरनामा—सुलतान परवेज ने नमरुलह के साथ एक बहुत बडा हाथी बादशाह के लिये भेजा था। बादशाहने उसके हाथ परवेजके वास्ते जहांगीरनामा और पनचाक जाति का एक घोडा भेजा।

कुंवरकरण—८ रविवार (माघ सुदी १२-१३) को बादशाह ने राना अमरसिंह के बेटे कुंवर करण को हाथी घोडा खिलअत जडाऊ खपवा फूल कटारे सहित देकर अपनी जागीर मे जाने को आज्ञादी और उसके हाथ एक घोडा राना के वास्ते भी भेजा।

शिकार—इसी दिन बादशाह शिकार के अभिप्रायसे अमनाबाद गया। वहां बादशाह ने हरनों के न मारने की आज्ञादे रखी थी। इमसे छः सालसे वहां बहुत हरन होगये थे और हिलमिल गये थे।

१२ गुरुवार (फाल्गुण सुदी २) को बादशाह राजभवन मे आया। नियमानुसार प्यालों की मजलिस हुई।

शेख सलीम चिश्ती—१३शनिवार(१)की रातको बादशाहने शेख सलीमके रोजेमें जाकर फातिहा पढा। वह लिखता है—भगवत् भक्तोंको अपनी सिद्धि जतानेकी इच्छा तो नहीं होती है परन्तु कभी कभी उनको बिना इच्छा भी किसीको भलाईके वास्ते वह सिद्धि प्रकट होही जाती है। जैसे मेरे जन्मसे पहले इन्होने मेरे और मेरे भाइयोंके पैदा होनेकी आशा स्वर्गवासी श्रीमानको बंधा दी थी। एक दिन श्रीमान्ने उनसे पूछा कि आपकी उमर कितनी है और कब आपकी मुक्ति होगी, तो जवाब दिया कि यह भेदकी बातें तो खुदाही जानता है। फिर इधरसे बहुत आग्रह होने पर मेरी तरफ इशारा करके कहा कि जब शाहजादा स्वयं पढकर या किसी दूसरेके पढानेसे कोई चीज याद करके पढ़ने लगेगा तो वह हमारे अन्त समयकी सूचनाका चिन्ह होगा। इस पर श्रीमानोंने उन सब सेवकोंको जो मेरी सेवामें नियुक्त थे ताकीद करदी थी कि

---

(१) यहां रात से वार माना है क्योंकि १२ को शुक्रवार था।

कोई कुछ गद्य तथा पद्य शाह्जादेको न सिखावे। जब इस बातको दो वर्ष सात महीने व्यतीत होगये तो एक स्त्री जो उस मुहल्लेमें रहती थी और मुझे नजर नहीं लगनेके हेतुसे हमेशा स्पन्द (धूनी) जलाया करती थी और इस प्रसंगसे मेरे पास आया जाया करती। और कुछ दान लेजाया करती थी। उसने मुझको अकेला पाकर और उस बातको भूलकर एक दोहा मुझे सिखा दिया। मैंने जाकर शेखको सुनाया। वह उसी दम उठकर स्वर्गवासी श्रीमानके पास गये और इस व्यवस्थाको उनको सूचना दी। उसी रातको उन्हें ज्वर होगया और दूसरे दिन श्रीमानके पास आदमी भेजकर तानसेनको जो अद्वितीय गवैयोंमेंसे था बुलाया। जब तानसेन इनकी सेवामें उपस्थित होकर गाने लगा तो श्रीमानके बुलानेको भी आदमी भेजा। श्रीमान पधारे तो कहा कि हमारा समय आगया है तुमसे विदा होते हैं। अपने मस्तकसे पगडी उठाकर मेरे मस्तक पर रखी और कहा—हमने सुलतान सलीमको अपना प्रतिनिधि किया और उसे रक्षा करने और विजय देनेवाले परमेश्वरको सौंपा। शेख की निर्बलता पल पल बढती जाती थी और निर्वाणके चिन्ह प्रबल होते जाते थे। अन्तको ईश्वरमें मिल गये।

स्वर्गीय पिताके शासनकालमें जो जो बड़े काम हुए उनमेंसे एक यह मसजिद और रौजा (समाधिभवन) भी है। यह कहनेमें अत्युक्ति नहीं कि इमारत बहुत बडी है। ऐसी मसजिद किसी शहरमें नहीं है। सब पत्थरकी है। पांच लाख रुपये खजानेसे लगे थे तब बनी थी। कुतुबुद्दीनखां कोकाल्ताशने जो कटहरा, रौजेकी चारदीवारी, गुम्बदका फर्श और मसजिदका बरामदा मकरानेके पत्थरसे बनवाया वह उससे अलग है। इस मसजिदके दो दरवाजे हैं बडा तो दक्षिण को है जो बहुत ऊंचा है जिसकी चौडाई १२ गज लम्बाई १६ गज और ऊंचाई ५२ गजकी है। ३२ सीढियों पर चढकर वहां तक पहुंचते हैं। छोटा दरवाजा पूर्वको है। मसजिदकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको दीवारोंके आसार सहित २१२

गज और चौडाई उत्तरसे दक्षिणको १७२ गज है। ऊपर ३ गुम्बट है बीचवाला बडा और आसपासवाले छोटे है। बडा गुम्बट लम्बा १५ और चौडा भी १५ही गजका है छोटोकी लम्बाई चौडाई १०।१० गजकी है। चारो तरफ ८० दालान और ८४ हुजरे है। दालानोकी चौड़ाई साढे सात सात गजकी है और हुजरोकी लंबाई पांच पांच और चौड़ाई चार चार गजकी। मसजिदका चौक १६९ गज लम्बा और १४३ गज चौड़ा है। छतों पर छोटे छोटे गुम्बट है जिन पर उर्सकी रातों और दूसरे पुनीत दिनोंमें रंगीन कपडोंके कान्दील जलते है। चौकके नीचे टांका है जिसको मेहके पानीसे भर लेते है जो साल भर तक शेखके वंशजों और इस मसजिदमें रहनेवाले फकीरोंके काम आता है। क्योंकि फतहपुरमें पानीकी कमी है और वहांका पानी अच्छा भी नहीं होता।

वडे दरवाजेके सामने उत्तरको पूर्वमें झुकता हुआ शेखका रौजा है। गुम्बटका बीच ७ गजका है उसके गिर्द मकरानेके पत्थरके दालान है जिनके आगे भी उसी पत्थरके कटहरे बहुत कारीगरीसे बने है। इस रौजेके सामने पश्चिमको कुछ हटकर एक गुम्बट और है जिसमें शेखके बेटे और जमाई दफन हैं। जैसे कुतुबुद्दीनखां इस्लामखां और मुअज्जमखां आदि जो सब इस(१) घरानेके प्रसंग से अमीरोंके दरजों और बडे बडे ओहदों पर पहुंचे थे जिनका वृत्तान्त अपनी अपनी जगह पर आचुका है। अब इसलामखांका बेटा जिसका खिताब इकरामखां है यहांकी गद्दीका मालिक है और बहुत योग्य है मुझे उसका बहुत ध्यान है।

कांगडा—१८ गुरुवार (फाल्गुण वदी ६) को बादशाहने अबदुल अजीजखांको दो हजारी जात एक हजार सवारोंका मनसब झण्डे घोडे और खिलअत देकर कांगडा फतह करने और सूरजमलको दण्ड देनेके वास्ते विदा किया। तरसूनखांको भी १२ सदी जात ४५० सवारोंका मनसब और घोड़ा देकर इसी काम पर भेजा।

(१) बादशाही घराने।

एतमादुद्दौलाके घर जाना—२६ गुरुवार (फाल्गुण बदी ३०) को बादशाह एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे उसके मकान पर पधारा जो तालके तट पर बना था और बड़ा सुन्दर था। एतमादुद्दौलाने पायन्दाज और पेशकशकी रीति विधि पूर्वक की। बड़ी मजलिस लगी थी। बादशाह वहीं रातका खाना खाकर महलमें आगया।

असफन्दार महीना।

१२ शनिवारको बादशाह बेगमों सहित शिकार खेलनेको अमनाबादमें गया। २७ रविवार (चैत्र सुदी १ सं० १६७६) तक वहीं रहा। मंगलके दिन शिकारमें मोतियोंकी एक माला नूरजहां बेगमके गलेमें टूट पड़ी। उसमेंसे एक मोती और एक लाल दस दस हजार रुपयेके खोगये। बुधके दिन किरावलोंने बहुत खोज की परन्तु कुछ पता न लगा। बादशाहने कहा कि जब इस दिन का नामही कमशम्बा(१) है तो इसमें उनका मिलना मुशकिल है और गुरुवार सदा मेरे वास्ते शुभ रहा है। उस दिन थोड़े ढूंढ़नेसेही उस विशाल वनमें दोनो रत्न उन किरावलोंको मिल गये और वह मेरी सेवामें ले आये। और भी सुअवसर यह हुआ कि इसी दिन चान्द्र मासका तुलादान और वसन्तवाड़ीका उत्सव हुआ और दलमऊके किलेकी फतह तथा सूरजमलके पराजयकी बधाई भी आई।

दलमऊकी फतह और सूरजमलकी हार—राजा विक्रमाजीत जब उस प्रांतमें पहुंचा तो सूरजमलने चाहा कि कुछ बात बनाकर समय टाले परन्तु राजा बड़ा भेदी था उसके कहनेमें न आकर आगे बढ़ा। सूरजमल न मैदानकी लड़ाई लड़ा और न किला सजाकर बैठा। थोड़ी सी झड़पमेंही बहुतसे मनुष्योंको कटाकर भाग गया। मऊका किला और नगर दोनो अनायासही फतह होगये। जो देश बाप दादोंसे उसके अधिकारमें चला आता था वह बादशाही लशकरके आक्रमण से छिन्न भिन्न होगया। वह स्वयं बुरे हालसे पहाड़ोंकी टेकरियोंमें

(१) बादशाहने बुधका नाम कमशम्बा रखा है।

जा छिपा। राजा विक्रमाजीतने उसके देशको तो पीछे छोडा और उसका पीछा करनेको अपनी सेना आगे बढाई।

बादशाहने यह समाचार सुनकर राजा विक्रमाजीतको इस सेवा के बदलेमें नक्कारा दिया और यह हुक्म लिखा कि सूरजमलके किले और उसकी तथा उसके बापकी बनाई हुई इमारतोंको जडसे उखाडकर उनका चिन्ह तक मिटा दो।

जगतसिंह—बादशाह लिखता है, "अद्भुत लीला यह हुई कि सूरजमलका एक भाई जगतसिंह था। जब मैंने सूरजमलको राजा की पदवी देकर अमीरीके पद पर पहुंचाया और राज्य तथा धन सम्पत्ति और सेनाका स्वामी अकेले उसीको बनाया तो उसकी खातिरसे जगतसिंहको जो उससे मेल नहीं रखता था थोडासा मनसब देकर बंगालेके सूबेमें भेज दिया। वहां वह बिचारा अपने घरबारसे दूर पडा हुआ कष्ट भोग रहा था और किसी दैवी घटना की प्रतीक्षा करता था। उसके भाग्यसे ऐसा सुअवसर आगया। कुपात्र सूरजमलने अपने पांवोंमें अपने हाथसेही कुल्हाडा मारा। मैंने शीघ्रही जगतसिंहको बुलाकर राजाका खिताब हजारी जात ५०० सवारोंका मनसब, जड़ाऊ खपवा, हाथी, घोडा, खिलअत और २०००० दरब खजानेसे देकर राजा विक्रमाजीतके पास भेजा और राजाको यह हुक्म लिखा कि यदि वह भाग्यकी अनुकूलतासे अच्छा काम दे और राजभक्ति प्रकट करे तो उसका अधिकार उस देशमें स्थिर कर दे।

नूरमंजिल बाग—बादशाह नूरमंजिल बाग और वहांके नये बने हुए महलोंकी शोभा सुना करता था इस लिये सोमवारको स्वार होकर 'बुस्तांसरा' नामक मनोहर बागमें ठहरा। मंगलका दिन उसी मनोरम उपवनमें बिताकर रातको नूरमंजिलमें पहुंचा। यह बाग ३३० जरीबमें था उसके चौतरफा ईंट और चूनेकी पक्की दीवार चौडी और ऊंची बनी थी बीचमें विशाल भवन, सुन्दर बैठकें और मंजुल जलाशय थे। दरवाजेके बाहर एक बड़ा कूआ तय्यार हुआ

था जिसका पानी बैलोंकी बत्तीस जोडियां बराबर खेंचती थीं। उसका नाला एक नदीके समान बागके हौजोंमें गिरता था। इसके सिवा कई कूए और भी थे जिनके पानीसे जलाशय भरते थे फव्वारे चलते थे। बागके बीचोंबीच एक तालाब भी था जो मेहके पानी से भरा रहता था जब कभी गरमीमें उसका पानी कम होजाता तो कूएके पानीसे मदद पहुंचाई जाती थी। जिससे सदा भरा रहता था। डेढ लाख रुपये तो इस बागमें लग चुके थे ५००००) और लगनेवाले थे।

२४ गुरुवार (चैत्र सुदी १३) को ख्वाजाजहांने अपनी भेट सजा कर पेश की। बादशाहने डेढ लाख रुपयेके जवाहिर जड़ाऊ आभूषण कपड़े और हाथी घोड़े उसमेंसे छांट लिये। शनिवार तक बादशाह सुखपूर्वक उस बागमें रहा और २७ रविवार (चैत्र सुदी १) को रातको फतहपुरमें लौट आया। बड़े अमीरोंके नियमानुसार नवरोजके वास्ते राजभवनके सजानेका हुक्म हुआ।

२८ सोमवार (चैत्र सुदी २) को बादशाहकी आंखोंमें रक्तविकारसे कुछ पीड़ा हुई तो उन्होंने अलीअकबर जर्राहसे कहकर तुरन्त फसद खुलवा ली। जिसका लाभ दूसरे दिनही प्रगट होगया। उसे १०००) मिल गये।

चौदहवां नौरोज।

गुरुवार ४ रबीउलअव्वल १०२८ (चैत्र सुदी ६ संवत् १६७६) को तड़केही सूर्य्य भगवानने मेषराशिमें प्रवेश किया। बादशाहके राज्यशासनका १४वां वर्ष प्रारम्भ हुआ। शाहजहांने नौरोजके उत्सवकी बड़ी मजलिस रचाकर देश देशान्तरोंके चुने हुए पदार्थोंकी भेट बादशाहको दिखलाई जिसमें मुख्य पदार्थ इतने थे।

१—एक याकूत सुडौल और सुरंग २२ रत्तीका जिसका मोल जौहरियोंने ४० हजार रुपये कूता।

२—एक लाल कुतबी अति श्रेष्ठ ४० हजारका।

३—मोती ६ जिनमें एक नग एक टांक और ८ रत्तीका था।

यह शाहजादेके वकीलोंने गुजरातमें २५ हजार रुपयेको खरीदे थे।

४—५ मोती ३३ हजार रुपयेके।

५—एक हीरा अठारह हजार रुपयेका।

६—एक जड़ाऊ परदला तलवारकी मूठ सहित जो शाहजादेके जरगरखानेमें शाहजादेकी निकाली तरकीबसे नई चालका तय्यार हुआ था। जिसमें रत्न काट काटकर बैठाये गये थे। मोल ५०हजार रुपये।

७—चांदीका पूरा नक्कारखाना ढोल, नक्कारे, करना, शहनाई सहित जिसमें एक जोड़ी सोनेके नक्कारोंकी थी और जब बादशाह सिंहासन पर बिराजा तो बजाया गया था। मूल्य ६५ हजार रुपये।

८—सोनेका हौदा ३० हजार रुपयेका।

९—दो बडे हाथी सोनेकी ५ तलायर सांकलों सहित कुतुबुन्मुल्क हाकिम गोलकुंडेके भेट किये हुए, इनमें एक हाथीका नाम दाद-इलाही था, बादशाहने उसका नाम नूरनौरोज रखा। उक्त हाथी बहुत विशाल और सुन्दर था। बादशाह पसन्द करके उस पर सवार हुआ दौलतखानेके चौकमें उसे फिराया। मूल्य ८० हजार कूतागया और छः सोनेकी सांकलोंका २० हजार। नूरनौरोजके सोनेके साज और सांकल आदिका मूल्य ३०हजार। दूसरे हाथीका १०हजार।

१०—गुजरातके दिव्य वस्त्रोंके थान जो शाहजादेके कपडा बुनने-वालोंने बुनकर भेजे थे।

पूरी भेट साढे चार लाखकी थी।

२ शुक्रको शुजाअतखां अरब और नूरुद्दीनकुलीकी और ३ शनिको खानखानाके बेटे दाराबखांकी भेटे पेश हुई।

४ रविवारको खानजहांकी भेट एक लाख ३०हजारकी स्वीकृत हुई। उसमें एक मोती २० हजार रुपयेका था।

५ सोमवारको राजा किशनदास और हाशिमखांने, ६ मंगलको सरदारखांने, ७ बुधको मुस्तफाखां और अमानतखांने भेट पेश की। उसमेंसे बादशाहने कुछ कुछ लिया।

८ गुरुवारको एतमादुद्दौलाने एक बड़ी शाही मजलिस रचाकर बादशाहको बुलाया। उसने सभा और भेटके सजानेमें बडीचेष्टा की थी। तालके किनारों और गली कूचोंको जहांतक दृष्टि जाती थी रंग बरंगी चिरागों और फानूसोंसे चौचन्द कर दिया था। उसकी भेटमें एक सोने चांदीका सिंहासन था। उसके पाये सिंहके स्वरूपके थे। वह मानो सिंहासनको उठाये हुए थे। यह सिंहासन तीन बर्समें ४ लाख ५० हजार रुपयेकी लागतसे बना था। इसको हुनरमन्द नाम एक फरंगीने बनाया था जो गहना घडने, नग जड़ने और दूसरी कारीगरीके कामोंमें अद्वितीय था। उसका यह नाम भी बादशाहने उसके इन्हीं गुणोंसे रखा था।

इस भेटके सिवा उसने एक लाख रुपयेकी भेट बेगमों और महलवालियोंको भी दी थी। बादशाह लिखता है—स्वर्गवासी श्रीमान के समयसे अबतक १४ वां वर्ष मुझ भगवत्भक्तके राज्याभिषेकका है। किसी बड़ेसे बडे अमीरने भी ऐसी भारी भेट नहीं दी थी। सच तो यह है कि एतमादुद्दौलाकी दूसरोंसे बराबरीही क्या है।

इसी दिन इसलामखांके बेटे इकरामखांका मनसब दोहजारी और १००० सवारका और अनीराय सिंहदलनका दोहजारी १६०० सवारोंका होगया।

९ शुक्रवार (चैत्र सुदी १४) को एतबारखांकी भेट पेश हुई। खानदौरां घोड़ा और हाथी पाकर पटनेकी सूबेदारी पर बिदा हुआ। उसका मनसब वही ६ हजारी ५,००० सवारोंका रहा।

१० शनिवारको फाजिलखांने, ११ रविको मीरमीरांने, १२ सोमको एतकादखांने, १३मंगलको तातारखां और अनीराय सिंहदलनने, १४ बुध (वैशाख बदी ४) को मिरजा राजा भावसिंहने अपने अपने उपहार बादशाहके सम्मुख उपस्थित किये। उनमें जो नई तथा अनोखी वस्तु थी वह तो बादशाहने लेली शेष इन्हींको फेर दी।

१५ गुरुवार (वैशाख वदी ५) को आसफखांने अपने डेरे पर जो एक मंजुल मनोरमस्थानमें था बादशाहोंकीसी सभा सजवा-कर बादशाहसे वहां सुशोभित होनेकी प्रार्थना की। बादशाह बेगमों सहित वहां पधारा। आसफखांने इस आगमनको ईश्वरका अनुग्रह समझकर सभाकी शोभा और भेटकी सजावटमें अत्यन्त श्रम किया था। अमूल्यरत्न, स्वर्णमयवस्त्र और दूसरे अमूल्य पदार्थ, जो बादशाहने पसन्द करके लिये वह १ लाख ६७ हजार रुपयेके थे जिनमें एक लाल ही १२॥ टांकका १ लाख २५ हजार रुपयेका खरीदा हुआ था।

ख्वाजेजहांका मनसब ५ हजारी २५०० सवारोंका होगया।

लशकरखां दक्षिणसे आया। बादशाहका विचार बरसात पीछे कशमीर जानेका था। इसलिये इसको ख्वाजाजहां की जगह किले तथा शहर आगरे की रक्षा और उस प्रांतकी फौजदारी पर छोड़ जाने के लिये बुलाया था। अमानतखां, दाग की दरोगाई और खुदमहले सवारों(१)को सेवामें उपस्थित करने पर नियुक्त हुआ।

१६ शुक्रको ख्वाजा अबुलहसन मीरबखशी, और १७ शनिको सादिकखां बखशी, १८ रविको इरादतखां मीरसामान, और १९ सोमवार (वैशाख वदी ८) को सूर्यके उच्च होने, अर्थात् मेष सक्रांति का दिन था, अजदुद्दौलाने, अपनी अपनी भेट पूजा उपस्थित की। उनमें जो वस्तु बादशाहको पसन्द आई वह लेली।

भेटोंका मूल्य—इस नौरोजमें बादशाहने जो भेट ली उनका मूल्य २० लाख रुपये था।

सुलतान परवेजका मनसब२०हजारी १० हजार सवारका, एत-मादुद्दौलाका सात हजारी सात हजार सवारका होगया। अजदु-द्दौला, शाह शुजाकी अतालीकी पर नियत हुआ। कासिमखां और बाकरखांके भी मनसब बढ़े।

महाबतखांकी प्रार्थना पर ५०० सवार सूबे बंगशमें भेजे गये

(१) आपही अपनी हाजिरी देनेवाले सवार।

और इज्जतखांको उस सूबेमें अच्छी सेवा करनेसे हाथी और जड़ाऊ खपवा मिला।

हुमायूं बादशाहकी हस्तलिखित पुस्तक—अबदुस्सत्तारने हुमायूं बादशाहके हाथका लिखा हुआ एक संग्रह ग्रन्थ बादशाहके भेंट किया। उसमें कुछ बातें धर्मकी कुछ ज्योतिषकी कुछ तंत्र की लिखी हुई थीं। उनमेंसे कई एक अनुभव की हुई थीं। बादशाह लिखता है—"मुझे उनके अक्षर देखनेसे इतना हर्ष हुआ कि कभी कम हुआ होगा खुदाकी कसम है मैंने सब पदार्थों से उसे बढ़कर समझा। मैंने प्रसन्न होकर उसे यह पद दिया, जिस की उसे आशा भी न थी। साथही एक हजार रुपये इनाम दिये।"

हुनरमन्दफरंगी—हुनरमन्द फरंगीको जिसने रत्नजटित सिंहासन बनाया था बादशाहने तीन हजार दरब घोड़ा और हाथी दिया कई अमीरोंके मनसब बढ़े कईके नये हुए जैसे—

१—राजा सारङ्गदेव	७ सदी ३० सवार
२—राय बनमालीदास	६ सदी १२० सवार
३—फीलखानेका मुशरिफ, रामायणदास	६ सदी १०० सवार
४—किशनसिंहके बेटे नथमल	५ सदी २०० सवार
दूसरा बेटा जगमल	५ सदी २०० सवार

१५०० जीते हरन—२१ बुधवार (वैशाखबदी ११) को बादशाह शिकारके वास्ते अमनाबादमें गया। ख्वाजाजहां और कायमखां किरावलबाशीने पहले से जाकर एक बड़े जंगलको कनातोंसे घेर लिया था। उसमें बहुतसे हरन घिर गये थे। परन्तु बादशाहने यह प्रण करलिया था कि अपने हाथसे किसी जीवकी हत्या न करेंगा इसलिये विचार किया कि यदि सबको जीता पकड़कर फतहपुरके चौगानमें छोड़ दिया जावे तो शिकारका मजा भी आजावे और उनका भी बाल बांका न हो। इस लिये ७०० हरन पकड़कर फतहपुरमें भेज दिये और रायमान खिदमतियेको आज्ञाकी कि शिकारकी जगहसे फतहपुरके चौगान तक रस्तेमें दोनों ओर कना-

तोंकी गली बनाकर हरनोंको उसमें हांकदे। इस युक्तिसे ८०० हरन फिर फतहपुर पहुचाये गये। सब मिलकर १५०० होगये।

२८ बुधवारको बादशाह अमनाबादसे चलकर एक बागमें रहा।
२९ गुरुवारको रातको नूरमंजिल बागमें ठहरा।

शाहजहांकी माकी मृत्यु—३० भृगुवारको शाहजहांकी मा मर गई। दूसरे दिन बादशाह शाहजहांके डेरेपर गया और बहुत तरहसे उसे संतोष देकर अपने साथ राजभवनमें लेआया।

उर्दी बहिश्त।

१ रविवार (वैशाख सुदी ८) को बादशाहने ज्योतिषियोंके बताये हुए महूर्त्तमें दिलेर नामके खासे हाथीपर सवार होकर राजधानीमें प्रवेश किया। गली कूचों बाजारों छतों और झरोखोंमें बहुत भीड स्त्री पुरुषोंकी लगी हुई थी। बादशाह अपनी प्रथाके अनुसार दौलतखाने तक रुपये बखेरता गया। ५ वर्ष ७ महीने ९ दिन पीछे सफरसे लौटा था।

सुलतान परवेजको बादशाहने बहुत वर्षोंसे नहीं देखा था इस लिये उसके नाम हाजिर होनेका हुक्म लिखा।

बादशाहकी उदारता—इस वर्ष बादशाहने दरिद्रों और हकदारोंको निम्न लिखित दान दिया।

भूमि ४४७८६ बीघे। गांव २

कश्मीरमें अन्न ३२० गोन। काबुलमें जमीन ७ हल।

अलहदादका बागी होना—जब महाबतखां बंगशके बन्दोबस्त करने और पठानोंकी जड उखाड़नेके वास्ते बिदा हुआ था तो जलाला पठानके बेटे अलहदादको साथ लेगया था कि शायद वह कुछ अच्छी सेवा करेगा। बादशाहने दूरदर्शितासे उसके भाई और बेटेको अपने पास औलमें रहनेके वास्ते बुलवा लिया था और उनपर बहुत कुछ कृपाभी कीजाती थी। तोभी अलहदाद जिसदिन से गया उसीदिनसे खिंचाहुआ सा था। महाबतखां काम सुधारनेकी कामनासे उसका मन मनाता रहता था। इन दिनों उसने कुछ

सेना पठानोंकी एक टुकड़ी पर भेजी थी जिसके साथ उसको भी कर दिया था। जब सेना वहां पहुंची तो अलहदादके कपटसे वह काम न बना निष्फल लौटनापड़ा। अलहदादको भय हुआकि महा-बतखां इस बातका निर्णय करेगा तो दण्ड देगा। इससे वह बागी होगया। महाबतखांने बादशाहसे रिपोर्ट की। बादशाहने उसके भाई और बेटेको पकड़कर गवालियारके किलेमें भेजदिया। इसका पिता भी बादशाहके बापसे इसीभांति प्रतिकूल होगया था।

मानसिंह—५ गुरुवारको बादशाहने रावतशंकर(१) के बेटे मानसिंहका मनसब हजारी जात छःसौ सवारोंका कर दिया। वह सूबे बिहारके सहायकोंमें था।

बंगश—बादशाहने आकिलखांको हाथी देकर बंगशमें फौजकी हाजिरी और मनसबदारोंकी सेनाका निर्णय करनेके वास्ते भेजा।

सोमवारकी भेट—सोमवारके दिनकी भेट महमूद आबदारके लिये जो बचपनसे सेवा करता था नियत की गई।

तरबियतखांकी मृत्यु—तरबियतखां जो पीढियोंका नौकर और अमीरोंकी श्रेणीमें था, मर गया। बादशाह लिखता है—मौजी आदमी था। अपनी सब आयु सुख पूर्वक बिताना चाहता था। हिन्दी रागोंका बड़ा रसिया था और समझता भी अच्छा था।

राजा सूरजसिंह—राजा सूरजसिंहका मनसब दोहजारी२००० सवारका होगया।

राय कंवरचन्द—बादशाहने कई सरदारोंको हाथी दिये। एक हाथी राय कंवरचन्द मुस्तोफी (दफ्तरके अध्यक्ष) को भी मिला।

शाहनवाजखांकी मृत्यु—इसी तारीखको सिपहसालार (सेनापति) खानखानाके बेटे शाहनवाजखांकी मृत्युकी खबर पहुंचनेसे बादशाह को उदासी हुई। बादशाह लिखता है—"जब वह अतालीक (खानखाना) मेरे पाससे विदा होता था तो मैंने बड़ी ताकीदसे फर-माया कि हम सुनते हैं कि शाहनवाजखां शराबका व्यसनी होकर

(१) सही नाम मगर।

बहुत पीने लगा है। यह बात सच है तो अफसोस होगा कि वह इस अवस्थामें अपनेको नष्ट करदे। उसको स्वतन्त्र मत रहने दो और पूरी तरहसे रोको। जो यह तुमसे न होसके तो साफ अर्ज करो हम उसको हजूरमें बुलाकर उसकी व्यवस्था ठीक करनेकी कृपा करेंगे। जब वह बुरहानपुर पहुंचा तो शाहनवाजखांको बहुत शिथिल और कृश पाकर यत्न करने लगा। परन्तु कुछही दिन पीछे वह खाटमें पड गया। हकीमोंने बहुतसी दवादारूकी कुछ लाभ न हुआ। ३३ वर्षकी जवान अवस्थामें बहुतसे अरमान मनमें लेकर परलोकको चल दिया। इस अशुभ समाचारको सुननेसे मैंने बहुत सोच किया। सच यह है कि वह पूरा खानाजाद था। चाहिये तो यह था कि इस राज्यको अच्छी अच्छी सेवायें करता और बडा नाम और यश छोडता। यद्यपि यह मार्ग सभीके आगे है और मृत्युसे किसीको छुटकारा नहीं है परन्तु इस प्रकार मरना बुरा लगता है आशा है कि उसके अपराध क्षमा होंगे। राजा सारंगदेवको जो पास रहनेवाले सेवकों और मिजाज जाननेवाले चाकरोंमेंसे है मैंने अपने उस अतालीकके पास भेजकर बहुतसी मेहरबानियों और बखशिशोंसे उसकी सहानुभूति की और शाहनवाजखांका मनसब जो ५ हजारी था वह उसके भाइयों और बेटोंके मनसब पर बढा दिया। उसके छोटे भाई दाराबखांका मनसब असल और इजाफे से ५ हजारी जात ५ हजार सवारका करके खिलअत घोडा और जडाऊ तलवार दी और उसको बापके पास शाहनवाजखांकी जगह बराड़ और अहमदनगरके सूबोंमें शासन करनेके वास्ते भेज दिया। उसके दूसरे भाई रहमानदादको दोहजारी जात और ७०० सवारोंके मनसबसे सन्मानित किया। शाहनवाजखांके एक बेटे मनूचहरको २ हजारी जात १००० सवार और दूसरे बेटे तुगरलक को हजारी जात और ५०० सवारका मनसब दिया।

भारत बुन्देला—१२ गुरुवार (ज्येष्ठ वदी ४) को बादशाहने कुछ अमीरों पर कृपा करके मनसब हाथी और घोड़े दिये उनमें

भारत बुंदेलेको भी ६ सदी जात और ४०० सवारोंका मनसब मिला।

संग्राम—जमूके जमींदार संग्रामको हाथी दिया गया।

बक्का और बकरीकी औलाद—अहमदाबादमें बादशाहके पास २ बक्के(१) थे। पर उनकी मादा न थी। बादशाहने उनको सात बरबरी बकरियोंमें छोड दिया। उक्त बकरियां अरबसे जहाजोंमें लाई गई थीं। उनको उन बक्कोंसे गर्भ रहा। छः महीने पीछे उन्होंने फतहपुरमें एक एक बच्चा जना। उनमें तीन नर थे चार मादा। यह सब सुन्दर और सुडौल थे। उनमें जिनका रंग बक्कों से विशेष मिलता था वह समन्द थे और लाल भी थे। काली लकीरें पीठ पर थीं। यह सब खूब कूदते फांदते और ऐसी चपलतासे पैंतरे बदलते थे कि जिनको देखकर हंसी आती थी। बादशाह लिखताहै —"लोगोंमें यह बात प्रसिद्ध थी कि चित्रकार बकरोंकी उछलकूदका चित्र नहीं खेंचसकता सो इन बच्चोंकी कूदफांद देखकर इसका पूरा विश्वास होगया। कदाचित वह बकरेकी एक चालकी कूद फांदका चित्र खेंचले। परन्तु नई नई गतें, नानाप्रकारकी दौडधूप और चञ्चलताका चित्र खेंचनेमें निःसंदेह थक जायगा। एक महीना क्या बीस दिनकाही बच्चा ऊंचेऊंचेस्थानोंसे इसप्रकार कूदकरपृथ्वीपर आरहता है कि बकरेके सिवा और कोई जानवर कूदे तो एकभी अंग साबित न रहे। यह मुझे बहुत भले लगते हैं इस लिये हमेशा पास रखने को फरमा दिया है और सबके उचित नाम भी रखे गये हैं। मैं इनसे बहुत प्रसन्न हूं और सांप खानेवाले बक्के और असील बकरियोंके एकत्र करनेका बहुत ध्यान रखता हूं। चाहता हूं कि इनका नसल बढे। लोगोंमें भी इसकी चाल फैले। इन बच्चोंको आपसमें

(१) पश्चिमोत्तरसीमा प्रान्तमें एक जातिका पहाड़ी बकरा होता है जिसे मारखोर भी कहते हैं। वह सांप खाता है। उसीका नाम बक्का भी है।

मिलाया जायगा इनकी औलाद आशा है कि और भी अच्छी होगी। इनमें बकरोंसे यह विलक्षणता है कि बकरा तो जन्मते ही जबतक थन मुंहमें लेकर दूध न पीले चिल्लाता रहता है और यह बिलकुल नहीं बोलते चुप खड़े रहते हैं।

खुरदाद।

बिहार—२ गुरुवार (ज्येष्ठ सुदी १०) को बादशाहने मुकर्रबखां को हाथी तलायर सहित और दो घोड़े एक जड़ाऊ खपवा और ५० हजार रुपये खर्चके वास्ते देकर बिहारकी सूबेदारी पर जो पहले मिल चुकी थी बिदा किया। वह वहां जानेसे पहले सलाम करने को दरगाहमें उपस्थित हुआ था।

मुंगेर—इसी दिन सरदारखां हाथी घोड़ा और खिलअत पाकर सरकार मुंगेरकी जागीरदारी पर बिदा हुआ।

गोलकुण्डा—कुतुबुल्मुल्कका वकील मीर मुशरिफ भी बिदा हुआ। शाहजहांने अपने दीवान अफजलखांके भाईको उसके साथ भेजा। कुतुबुल्मुल्कने भक्ति प्रकाश करके कई बार बादशाहके चित्र की प्रार्थना की थी। इस लिये बादशाहने अपनी जड़ाऊ तस्वीर खपवे और फूल कटारे सहित भेजी। और मीरको २४ हजार दरब जड़ाऊ खञ्जर घोड़ा और खिलअत दिया।

बंगाला—बादशाहने हसनअलीखां जागीरदार सरकार मुंगेरको अढ़ाई हजारी जात और सवारका मनसब देकर बंगालेके सूबेदार इबराहीमखां फतहजंगकी मदद पर भेजा। इबराहीमखांने दो नावें जिनको बंगालेमें कोशा कहते हैं भेजी थीं। एकमें सोनेकी और दूसरीमें चांदीकी बैठक बनी थी। बादशाहने पसन्द करके उनमेंसे एक शाहजहांको दी।

सुलतान परवेज—परवेजके वास्ते बादशाहने नादिरीका मनसब चीरा और पटका भेजा जो उसने सेवामें उपस्थित होनेके वास्ते मगाया था।

मिरजावाली—२३ गुरुवार (आषाढ सुदी १।२) को बादशाहको

फूफी, मिरज़ा मुहम्मद हकीमकी बहनके बेटे मिरजावालीने दक्षिण से आकर चौखट चूमी। बादशाहने इसको शाहज़ादे दानियालकी बेटी देनेके वास्ते बुलाया था।

सरबलन्दराय—इसी दिन सरबलन्दरायका मनसब अढ़ाईहजारी ज़ात और पन्द्रहसौ सवारोंका होगया यह दक्षिणमें नौकरी पर था।

शेख अहमद धूर्त—शेख अहमद नामक एक धूर्तने सरहिन्दमें कपटका जाल फैलाकर बहुतसे चेले करके देश देशान्तरोंमें लोगोंके बहकानेके लिये भेज दिये थे और मकतूबात नामका एक ग्रन्थ भी अपने मतका बनाया था जिसमें बादशाहने बहुतसी बातें मुसलमानी मतके विरुद्ध देखकर उसको पकड़वा मंगाया और गवालियरके किले में कैद रखनेके लिये अनीराय सिंहदलनको सौंप दिया।

सुलतान परवेजकी भेट—२५ खुरदाद शनिवार (आषाढ सुदी ४) को सुलतान परवेजने इलाहाबादसे आकर राजद्वारकी चौखट पर माथा टेका और फिर ज़मीन चूमी। बादशाहने बड़ी कृपा करके बैठनेका हुक्म दिया। उसने दो हजार मोहरें, दो हजाररुपये और एक हीरा भेट किया।

रतनपुरका राजा कल्याण—सुलतान परवेजके साथ रतनपुरके राजा कल्याणने भी चौखट चूमनेकी प्रतिष्ठा पाई। परवेजने इसके ऊपर फौज भेजी थी। ८० हाथी और एक लाख रुपयेकी भेट ले कर इसको साथ ले आया था।

परवेजके दीवान वजीरखांने २८ हथनियां और हाथी भेट किये जिनमेंसे ८ बादशाहने रख लिये।

तगा—सुरब्वतखां बंगालेकी अन्तिम सीमामें तगा जातिके लोगोंसे युद्ध करके काम आया था इसलिये बादशाहने उसको सर-कार बगी रखनेके लिये उसके भाइयोंको मनसब देकर नौकर रख लिया।

तीर।

शिकार—२ सोमवार (अषाढ सुदी ७) को शहरके बाहर चार

काले हरन एक हरनी और एक हरनका बच्चा शिकार हुआ। बादशाह सुलतानपरवेजकी हवेलीके आगेसे निकलता था इसलिये उसने दो दन्तीले हाथी तलायर सहित भेट किये। दोनोंको खासे हाथियों में रखे गये।

ईरानका दूत—२३ गुरुवार (सावन बदी ७) को शाह अब्बास ईरानीका एलची मयद हसन एक प्रेमपत्र और बिल्लौरका आबखोरा जिसके ढकने पर एक लाल लगा हुआ था लेकर आया। शाहकी इस प्रीतिकी रीतिसे और भी प्रीति बढ़ी।

खानआलमकी ईराजसे अरजी—२० गुरुवार (सावन बदी ३०) को खान आलमका नौकर हाफिज हसन उसकी अरजी और शाह अब्बासका कृपापत्र लेकर राजद्वारमें उपस्थित हुआ। शाहने खान आलमको अबलक अर्थात् चितकबरे लहरदार मछलीके दांतकी बनीहुई तलवारकी मूठ दीथी। वह उसने अति अनोखी और सुन्दर होनेसे बादशाहकी सेवामें भेजी। बादशाह भी उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। क्योंकि अबतक उसने ऐसे रंगका दांत नहीं देखा था।

अमरदाद।

शबबरात—४ शनिवार १५ शाबान (द्वितीय सावन बदी १) को रातको शबबरात थी। जमनामें दीपमाला और आतिशबाजीसे नावें सजाकर बादशाहको दिखाई गईं। बादशाह बड़ी प्रसन्नतासे बहुत देर तक उनका तमाशा देखता रहा।

सम्नूगर—८ गुरुवार (सावन बदी ६) को बादशाह शिकारके वास्ते गांव सम्नूगरमें गया और सोम तक वनविहार करके मगलको रातको राजभवनमें लौट आया।

विशोतनको मनसब—१६ गुरुवार (द्वितीय सावनबदी १४) को शेख अबुलफजलके पोते विशोतनको सात सदी जात २५० सवारोंका मनसब मिला।

गुलअफशां बाग—फिर बादशाह गुलअफशा बागमें गया।

रस्ते में पानी बरसा जिससे बागको और शोभा बढ़गई थी। वह यमुनाके तटपर था। उसमें जो भवन बनेथे उनपरसे बादशाह दूरतक हरयालीका यौवन देखकर बहुत प्रफुल्लित हुआ। यह बाग ख्वाजाजहांके अधिकारमें था इस लिये उसने नईचालकी जरी के बने हुए कुछ कपड़े जो उसके वास्ते इराक देशसे आये थे बादशाहको भेट किये। बागको भी उसने सुन्दरतासे सजाया था। अनन्नास खूब पके हुए थे। बादशाहने उसका मनसब बढ़ाकर ५ हजारी जात तीनसौ सवारोंका करदिया।

अबलकदान्त—बादशाहका मन खानआलमकी भेजीहुई मूठ को देखकर अबलक रंगके दान्तोंपर लोटपोट होरहा था और लोग उसको ढूंढते फिरते थे कि कहीं मिलजावे तो भेटकरके बादशाहकी प्रसन्नता प्राप्त करें। बादशाहने भी चतुर चाकरोंको ईरान और तूरानमें भेजाथा। दैवयोगसे आगरेमेंही एक अजनबी आदमीने वैसा दान्त थोड़ेही दामोंमें मोल लेलिया था और यह अनुमान करता था कि कभी आगमें पड़जानेसे काला पड़गया है। उसने एक दिन शाहजहांकी सरकारके एक बढ़ईको दिखाकर कहा कि इसकी कलौंस उतार दीजिये। वह नहीं जानता था कि इस कलौंसनेही उसकी सफेदीकी कीमत बढ़ा दी है। बढ़ईने अपने दरोगाके पास जाकर बधाई दी कि जिस अलभ्य वस्तुके ढूंढनेको बहुतसे आदमी देशदेशान्तरमें भटक रहे हैं वह बहुत सस्ती एक अनाड़ीके हाथ लगगई है जो उसकी कदर और कीमत कुछ नहीं जानता है उससे थोड़ेमें मिलसकती है। वह दान्त लिया गया और दूसरे दिन शाहजहांको भेटकिया गया। शाहजहांने बादशाहकीसेवामें उपस्थित होकर पहिले तो बहुत कुछ प्रसन्नता दिखाई और जब शराबका नशा बादशाहकी आंखोंमें खिला तो वह दान्त उसको दिखाया। बादशाह लिखता है—"मैंने अत्यन्त प्रफुल्लित होकर उसको इतने आशीर्वाद दिये कि यदि सौमें एकभी खौलत हो तो उसके इस लोक और परलोकके कल्याणके वास्ते बहुत है।"

आदिलांका नौकर वहलीमखां—इसी दिन आदिलखांका उत्तम सेवक वहलीमखां नौकर होनेको आया। बादशाहने घोड़ा खिल-अत तलवार और १० हजार दरब देकर हजारी जात और ५०० सवारोंके मनसबसे सम्मानित किया।

खानदौरां—खानदौरांकी अरजी पहुंची कि श्रीमानने कृपाकर के इस बूढे दासको ठट्टेकी सूबेदारी दी पर बुढापेसे लाचार होकर प्रार्थना करता हूं कि दासको पेंशन मिले। इसपर बादशाहने खुशाबका रसल परगना जो बहुत वर्षोंसे उसकी जागीरमें था जिसकी उपज ३० लाख दाम की थी उसके नाम स्थिर रख दिया। उसके बडे लडके शाहमुहम्मदको हजारी जात ६०० सवारका, मंझले बेटे याकूबबेगको ७ सदी ३५० सवारका, और छोटे असदबेग को २ सदी ५० सवारका मनसब दिया।

शहरेवर।

१ शनिवार (द्वितीय सावन सुदी १४) को बादशाहने खान-खानां और दूसरे बडे बडे अमरोंके वास्ते जो दक्षिणमें थे बरसाती कपडे भेजे।

कशमीर—बादशाहका विचार कशमीर जानेका था इसलिये जहांगीरकुलीको विदा किया कि आगे जाकर पुणिचके रस्तेको ऐसा साफ करे कि बोझ उठानेवाले जानवर वहांकी विकट घाटि-योंमेंसे सुगमता पूर्वक निकल जावें और मनुष्योंको भी किसी प्रका-रका कष्ट न भुगतना पडे। इस कामके वास्ते बहुतसे बढ़ई बेलदार और सिलावट उसके साथ भेजेगये। एक हाथी भी उसको दिया गया।

नूरमंजिल—१२ गुरुवार (भादों बदी १०) को बादशाह नूरमं-जिल बागमें जाकर १६रविवार तक वहां विहार करता रहा।

विक्रमाजीत बघेला—राजा विक्रमाजीत बघेलेने अपने वतन बांधोगढसे आकर एक हाथी और एक जड़ाऊ कलगी भेट की।

१५ वीं सालगिरह—२४ (भादों सुदी ८) को राजमाता

मरयमजमानीके भवनमें सौरपक्षीय वर्षगांठके तुलादानका उत्सव हुआ। बादशाहको ५१वां वर्ष सौरपक्षसे लगा।

चांदनीका उत्सव—३० रविवार १४ शव्वाल (भादों सुदी १४) की रातको बादशाहने चांदनीरातका उत्सव यमुना तटस्थ बागके भवनमें किया।

अबलकदांतकी मूठ—शाहजहांने जो चितकबरा दांत नजर किया था बादशाहने उसे कटवाकर, दो तलवारकी मूठें बनानेका हुक्म दिया। यह दान्त भीतरसे बहुत सुथरा और सुरंग निकला। उस्ताद पूर्ण और कल्याणको जो खातिमबन्दीके काममें अद्वितीय थे हुक्म हुआ कि एक मूठ तो उसी कैंडेकी बनावें जो आजकल सर्व-प्रिय होकर जहांगीरीकैंडेके नामसे प्रसिद्ध होचुका है। तेगा गिला-फगीरी और बन्दूबान बनानेका उन उस्तादोंको हुक्म हुआ जो इन कामोंमें दक्ष थे। बादशाह लिखता है—जैसी मनोवाञ्छा थी वैसाही काम बना। एक मूठ तो ऐसी चितकबरी है कि जिसके देखनेसे आश्चर्य मालूम होता है। इसमें सात रंग झलकते हैं। इसके कई फूल ऐसे दिखाईदेते हैं कि मानो शिल्पके सिरजनहारने स्वयं अपनी विचित्रलेखा लेखनीसे उन पर काली रेखाएं खेंची हैं। वास्तवमें यह इतनी अद्भुत है कि मैं इसे एक क्षण अलग करना नहीं चाहता। खजानेमें जितने अमूल्य रत्न हैं उन सबसे इसकी अधिक सम्हाल रखताहूं। गुरुवारके दिन हर्ष और उत्साह पूर्वक मैंने उसको कमरमें बांधा और जिन चतुर कारीगरोंने उसके बनानेमें दिल लगाकर अपनी कारीगरी दिखाई थी उनको पुरस्कार दिया। उस्ताद पूर्णको हाथी सिरोपाव और सोनेके कड़े दिये।

कल्याणको "अजायबदस्त"की पदवी, सिरोपाव, और जड़ाऊ पहुंचियां दीं। इसी तरह सबको उनकी कारीगरीके अनुसार इनाम दिया।

अहदादकीहार—महाबतखांके बेटे अमानुल्लहने अहदाद पठा-नसे युद्ध करके बहुतसे पठानोंको मारा या बादशाहने इसके इनाम में खासी तलवार उसके वास्ते भेजी।

मह्र महीना।

राजा सूरजसिंह-गजसिंह—५ शनिवार (आश्विन वदी ५) को दक्षिणसे राजा सूरजसिंहके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है—यह मालदेवका पोता था। मालदेव हिन्दुस्थानके बड़े जमींदारोंमेंसे था जो राणासे बराबरीका दम भरता था। यहां तक कि एक लड़ाईमें राणासे जीत भी गया था। उसका अहवाल अकबरनामेमें विस्तारपूर्वक लिखा है। राजा सूरजसिंह स्वर्गवासी श्रीमान और सुझ ईश्वरभक्तकी कृपासे उच्च पदको पहुंचा था। उस का राज्य भी बाप और दादासे बढ़ गया था। उसके बेटेका नाम गजसिंह है। बापने जीते जीही राज्यका सारा काम उसके अधिकारमें कर दिया था। मैंने भी उसको शिक्षा और कृपाके योग्य पाकर तीन हजारी जात और दोहजार सवारका मनसब. झण्डा, राजाकी उपाधि और देश जागीरमें दिया। उसके छोटे भाईको पांच सदी जात और २५० सवारोंका मनसब बख्शा।

आसफखांके घर जाना—१० गुरुवार (आश्विन वदी ११) को बादशाह आसफखांकी प्रार्थना पर उसकी हवेलीमें गया जो उसने जमन.पर नई बनवाई थी। उसमें एक हम्माम बहुत सुन्दर बना था। उसकी शोभा देखकर बादशाह बहुत मुदित हुआ। उसमें नहानेके पीछे वहीं प्यालोंकी मजलिस हुई। निज सेवकोंको प्याले दिये। तीस हजार रुपयेके पदार्थ आसफखांकी भेटमेंसे लिये।

आगरेसे बंगाले और लाहोरतक मीनारे—बादशाहकी आज्ञानुसार आगरेसे इधर अटक नदी और उधर बंगाले तक रास्तेके दोनों और वृक्ष तो पहलेही लग कर उपवनसे बन गये थे। अब उसने हुक्म दिया कि आगरेसे लाहोर तक कोस कोस पर एक एक मीनारा(१) बनाया जाय और तीन तीन कोस पर एक एक कुआ।

(१) यह खम्भ अब तक कहीं टूटे और कहीं साबित खड़े हैं। और कोसमीनारेके नामसे प्रसिद्ध हैं। पहला मीनारा दिल्लीके बाहर ही है जो एक चबूतरे पर बना है। उसका चित्र सन् १८६४ की छपी तुजुक जहांगीरीमें लगा है।

जिससे पथिक सुख पूर्वक आवें जावें। धूप प्यासका कष्ट न हो।

दशहरा—२४ गुरुवार (आश्विन सुदी ९*) को दशहरेका उत्सव हुआ। भारतवर्षकी प्रथानुसार घोड़े सिंगार कर बादशाहको सेवा में लाये गये फिर कई हाथी लाये गये। बादशाहने उन्हें देखा।

मोतमिदखांकी भेट—मोतमिदखांकी भेट पिछले नौरोजमें नहीं हुई थी इसलिये उसने इस उत्सवमें सोनेका एक सिंहासन, याकूत और बुसद (मूंगे) की एक अंगूठी और ऐसेही और फुटकर पदार्थ भेट किये जो १६ हजार रुपयेके थे। सिंहासन सुन्दर बना था। बादशाह लिखता है—उसने यह भेट विशुद्ध भावसे की थी इसलिये स्वीकार की गई।

कशमीरको कूच।

कशमीर जानेका मुहूर्त दशहरेको निकला था इसलिये बादशाहने उसी दिन शामको नावमें बैठकर प्रस्थान किया। ८ दिन तक पहले पड़ावमें इस अभिप्रायसे ठहरा कि सब लोग सुगमतासे तय्यारी करके आजावें।

बंगशके सेव—महावतखांने बंगशके सेव डाकचौकीमें भेजे थे। वह ताजा ताजा बादशाहके पास पहुंचे। बादशाह लिखता है—मैं इनको खाकर बहुत खुश हुआ। काबुलके सेवोंसे जो वहीं खाये थे और समरकन्दके सेवोंसे जो हरसाल आते हैं इनको कुछ तुलना नहीं होसकती। मिठास कोमलता और स्वादमें उनको इन की कुछ बराबरी नहीं है। अबतक ऐसे कोमल और सरस सेव नहीं देखे थे। कहते हैं कि बंगशबाला(१)में लशकरदरेके पास सिवरां नाम एक गांव है उस दरेमें तीनही वृक्ष इन सेवोंके हैं। बहुत

* चंडूपञ्चांगमें तो इस दिन ९ है बादशाही पञ्चांगमें १० होगी।

(१) बंगश देशके दो विभाग हैं एक ऊंचा और दूसरा नीचा। ऊंचेको बंगशबाला और नीचेको बंगशपाईं कहते हैं। बंगशके रहनेवाले पठान भी बंगशही कहलाते हैं।

म किया गया पर दूसरी ठौर इस खूबीके सेव नहीं हुए। मैंने
ाह अब्बासके एलची सैयदहसनको इन सेवोंका कुछ उच्छिष्ट
और पूछा कि इराकमें इनसे उत्तम सेब होते है या नहीं ?
विनय की कि ईरान भरमें इसफहानके सेव सबसे उत्तम होते
भी इनसे बढकर नहीं।

आवान महीना।

कबर बादशाहका रौजा—१ आवान गुरुवार (कार्तिकवदी१)
दशाहने अपने पिताकी कबर पर माथा टेककर १०० मोहरें
। सब बेगमों और महलवालियोंने भी परिक्रमा देकर भेट
ी। शुक्रवारकी रातको बडी मजलिस जुड़ी। मौलवी
हाफिज, शेख, सूफी और गाने बजानेवाले बहुतसे आजुड़े थे।
हने सबको यथायोग्य खिलअत फरजी और शाल दिये।
जेकी इमारत अति विशाल थी तो भी बादशाहने और बहुत
ी।

सरी रातको ४ घडी व्यतीत होने पर वहांसे कूच हुआ।
ह जलमार्गसे ५॥ कोस चलकर ४ घड़ी दिन चढ़े मंजिल पर
। पानीसे निकलकर उसने सात तीतर शिकार किये।

ानके एलचीको बिदा—तीसरे पहर बादशाहने ईरानके
सैयद हसनको २० हजार रुपये, सोनेका सिलाहुआ सिरो-
डाऊ जीगे सहित, और हाथी देकर बिदा किया। शाह
के वास्ते मुर्गकी शक्लकी जड़ाऊ सुराही जिसमें बादशाहके
योग्य शराब समाती थी सौगातमें भेजी।

लशकरखां—लशकरखांको खिलअत हाथी घोड़ा नौबत
ड़ाऊ तलवार देकर राजधानीके शासन और रक्षापर भेजा।

रामखां चिश्ती—इकरामखांको जो इसलामखांका बेटा और
लीम चिश्तीका पोता था दो हजारी जात और १५०० सवार
सब देकर मेवातकी फौजदारी पर विदा किया।

लामखांका बादशाह पर सदके होना—बादशाह लिखता

है—"इन दिनों एक विश्वास योग्य पुरुषसे सुनागया कि जब मैं अज-मेरमें बीमार होगया था तो अशुभ समाचार पहुंचनेसे पहिले एक दिन इसलामखां बङ्गालेमें अकेला बैठा था। अकस्मात् उसको मूर्छासी आगई। जब सुध आई तो अपने भेदी शेख भीकनसे कहा—मुझे ऐसा दृष्टान्त हुआ है कि हजरत शाहनशाहका शरीर कुछ अस्वस्थ है इसका उपाय यही है कि कोई बहुतही प्यारी वस्तु उनके ऊपर सदके कीजाय। पहले तो उसने अपने पुत्र होशङ्गका बलि-दान देना विचारा परन्तु फिर उसकी बाल्यावस्था पर दया करके अपनी आत्माकोही अपने स्वामीपर न्यौछावर करना स्थिर किया। यह संकल्प उसका सच्चे मनसे था, इसलिये परमेश्वरको भी स्वीकार हुआ। उसकी मनोकामना पूर्ण होगई। शीघ्रही वह रोगग्रस्त होकर परलोकको गया और मुझे ईश्वरने अच्छा करदिया। यद्यपि स्वर्गवासी श्रीमान शेखके बेटों पोतोंका बहुत ध्यान रखते थे और उन्होंने यथायोग्य सबका पालन पोषण किया था। परन्तु जबसे मैं बादशाह हुआहूं उस महात्माके ऋणसे उऋण होनेकेलिये इनलोगोंकी बड़ी खातिर कीजाती है। इनमेंसे बहुतसे अमीरों और सूबेदारोंके दरजेको पहुंचे हैं।"

मथुरा—वहांसे ४ कूचमें बादशाह मथुरा पहुंचा।

वृन्दावन—८ गुरुवार (कार्तिकवदी ९) को बादशाह वृन्दावनके मन्दिर देखने गया। वह लिखता है—"स्वर्गवासी श्रीमानके राज्यमें राजपूत अमीरोंने अपने ढंगकी इमारतें बनाकर बाहरसे खूब टीप टाप की हैं। पर भीतर इतनी अधिक चमगादड़ों और अबाबीलों के बीटसे सना रक्खे हैं कि उनकी दुर्गंधसे सांस बन्द होता है।"

आसेर—९ शुक्रवार (कार्तिक बदी १०) को किले आसेरकी रक्षाके लिये ६ लाख रुपये खानखानांके पास भेजे गये।

चिद्रूप (जदरूप) गुसाईं—बादशाह लिखता है—"चिद्रूप गुसाईंका हाल जो उज्जैनमें तपस्या करता था पहले लिखा जा-चुका है। अब वह उज्जैनसे मथुरामें जो हिन्दुओंका बहुत बड़ा तीर्थ

है आकर जमनाके तटपर भगवत स्मरणमें तत्पर है। उसके सत्संग की इच्छा मनमें सदा रहती है। मैं उससे मिलने गया। बहुत कालतक एकान्तमें वार्तालाप करता रहा। सचतो यह है कि वह एक अच्छा साधु है। उसकी सभामें आनन्द मिलता है और तृप्ति होती है।"

शेरका शिकार—१० शनिवार (कार्तिक वदी ११) को किरावलोंने रिपोर्ट की कि इस प्रान्तमें एक सिंह है जिससे प्रजा और यात्री पीड़ित हैं। बादशाहने हुक्म दिया कि बहुतसे हाथी लेजाकर जंगल घेर लो। दिन ढले आप भी बेगमों सहित गया और नूरजहां बेगमको बन्दूक मारनेकी आज्ञा दी। क्योंकि बादशाह अपने हाथसे जीव-वध न करनेका प्रण कर चुका था। वह लिखता है—"हाथी शेरकी बूसे एक जगह नहीं ठहरता था। मेघाडम्बरमें से ठीक गोली मारना बहुत कठिन है। मिरजा रुस्तमने जो बन्दूक मारनेमें मेरे बाद अद्वितीय है कई बार हाथी परसे तीन तीन चार चार गोलियां मारी हैं और नहीं लगी है। पर नूरजहांने पहली ही गोली ऐसी मारी कि शेरका ढेर होगया।

चिदरूपसे फिर मिलना—१२ सोमवार (कार्तिक वदी १३) को बादशाहके मनमें फिर गुसाईं चिदरूपसे मिलनेकी उत्कण्ठा हुई। वह तुरन्त उसकी कुटीमें चलागया। वह लिखता है—"सत्सङ्ग किया गया बडी बडी बातें हुईं। परमात्माने अजब श्रद्धा दी है, उग्र समझ, उच्च प्रकृति, तीक्ष्ण ज्ञानशक्ति, गम्भीर बुद्धि, मन सब बन्धनोंसे मुक्त, संसारकी बातों पर लात मारकर निश्चिन्त बैठा है। एक आध गज कपड़ेकी लंगोटी और एक ठीकरा पानीपीनेको है। जाडे गर्मी बरसात सदा बिना वस्त्र रहता है। एक सकडी गुफा रहनेको है जिसमें बडी कठिनाईसे करवट ली जासकती है। भीतर जानेका मार्ग ऐसा है कि दूध पीते बालकको भी कठिनाईसे उसमें लासके।

गुसाईंसे बिदा होना—१४ बुधवार (कार्तिकवदी अमावस) को बादशाह फिर गुसाईं चिदरूपके पास जाकर उससे बिदा हुआ।

वह लिखता है—"उसका वियोग जीको बहुत अखरा।"

परविजकी बिदा—१५ गुरुवार (कार्तिक सुदी १) को बादशाह ने मथुरासे कूच करके वृन्दावनके पास डेरा किया। सुलतान परविज को पंचाक घोड़ा, चितकबरी लहरदार मूठकी कटारी, खासी तल-वार और खासी ढाल देकर इलाहाबाद जानेकी आज्ञा दी। बाद-शाह उसे साथ लेजाता था। पर उसकी इच्छा न देखकर उसे बिदा किया।

खुसरोको छोडना—खुसरो अबतक कैद था। बादशाहने उसके अपराध क्षमा करके सम्मुख बुलाया और सलाम करनेकी आज्ञादी।

१६ भृगुवार (कार्तिक सुदी २) को मुखलिसखां जो बंगालेसे बुलाया हुआ आया था शाहजादे परविजका दीवान नियत किया गया। उसका मनसब वही दो हजारी सातसौ सवारोंका रहा जो बंगालेमें था।

१७ शनिवार (कार्तिक सुदी ३) को वहीं मुकाम रहा। कन्नौज के फौजदार सैयद निजामने सेवामें उपस्थित होकर दो हाथी और कई शिकारी पक्षी भेट किये। बादशाहने एक हाथी और एक बाज लेलिया।

शनकार पक्षी—एक सुन्दर शनकार ईरानके बादशाहने और दूसरा खानआलमने मीरशिकार परीविगके हाथ भेजा था। खान-आलमवाला तो रास्तेमें मर गया और बादशाहवालेको भी मीरशिकार की असावधानीसे बिल्लीने पकडकर घायल कर दिया जो दरगाहमें आनेके पीछे एक सप्ताहसे अधिक न जी सका।

बादशाह लिखता है—"मैं उसके रंग रूपका क्या वर्णन करूं। काले काले सुन्दर तिल पीठ बाजू और परों पर थे। इसी अनोखे-पनमें मैंने उस्ताद मनसूर चित्रकारको जिसे 'नादिरुल अस्र'की उपाधि दी हुई है हुक्म दिया कि इसका चित्र उतार रक्खे। मीर शिकार को १०००) देकर बिदा किया।

मेरकी तौल—बादशाह लिखता है—स्वर्गवासी श्रीमानके राज्य

में सेर ३० दामका था। मैंने सोचा इसे क्यों वदला जाय यही रहे। एक दिन गुसाईं जदरूपने किसी प्रसंगसे कहा कि हमारे धर्मग्रन्थ वेदमें सेर ३६ दामके बराबर लिखा है। दैवयोगसे तुम्हारा मनोरथ भी जो ३६दाम भरके सेर चलानेका है हमारी पुस्तकसे मिलता है। यदि ३६ दामका सेर कर दो तो अच्छा है। इस पर मैंने हुक्म दिया कि अवसे ३६ दामका सेर सब देशोंमें चलाया जावे।

राजा भावसिंह—१८ सोमवार (कार्तिक सुदी ५) को कूच हुआ। राजा भावसिंहको बादशाहने घोडा और सिरोपाव देकर दक्षिणी सेनाकी सहायता पर भेजा।

१८ बुधवार (कार्तिकसुदी १४) तक बराबर कूच होता रहा।

दिल्लीमें पहुचना—२८ गुरुवार (कार्तिक सुदी १५) को दिल्लीमें सवारी पहुंची। बादशाह पहले वेगमों और वेटो सहित हुमायूं बादशाहके रोजे(१) में भेट और परिक्रमा करके फिर शेख निजामुद्दीन चिश्तीकी जियारतको गया। कुछ दिन रहे उस दौलतखाने में उतरा जो सलीमगढमें बना था।

आजर महीना।

१ शनिवार (अगहन बदी २) को बादशाह परगने पालममें चीतोंसे हरनोंका शिकार करने गया। यह हरन बादशाहकी आज्ञा से रक्षित थे इससे बहुत होगये थे। मार्गमें दिन ढले शिकार करते समय ओले खूब पडे जो सेवके बराबर थे। १२ गुरुवार (अगहन बदी ३०) तक १२ दिनमें १६२६ हरन पकडवाकर बादशाह दिल्ली को लौटा। उसने अपने पितासे सुना था कि जो हरन चीतेसे छुडाया जाय और उसके शरीरमें चीतेका नख तथा दांत न लगा हो तो भी उसका जीना दुस्तर है। इसलिये उसने इस शिकारमें बडी सावधानीके साथ कई हृष्टपुष्ट हरनोंको चीतोंसे घायल होनेके पहले छुडाकर अपने पास रखा। वह एक दिनरात तो अच्छे रहे।

---

(१) मकबरा।

हाथी और झण्डा देकर दक्षिणको बिदा किया ।

शैख अबदुलहक—इसी दिन शैख अबदुलहक दहलवी बादशाह की सेवामें उपस्थित हुआ । यह बड़ा विद्वान था । इसने एक ग्रन्थ हिन्दुस्तानके औलियाओंके चरित्रोंका लिखा था वह बादशाहने देखा । वह लिखता है—"ग्रन्थ बनानेमें इसने बहुत परिश्रम किया है । दिल्लीमें सन्तोषपूर्वक आकाशी वृति पर बैठा है । वृद्ध है, इस का सत्सग नीरस नहीं है । मैंने बहुत भांतिकी कृपाओंसे प्रसन्न करके उसे बिदा किया ।"

सोलहवां वर्ष।

सन् १०२८ हिजरी।

अगहन सुदी २ संवत् १६७६ ता० २८ नवम्बर सन् १६१८ अगहन सुदी १ संवत् १६७७ ता० १५ नवम्बर सन् १६२० तक।

मुकर्रबखांका बाग—१६ रविवार (अगहन सुदी २) को बादशाह दिल्लीसे कूच करके १२ शुक्रको किरानेके बागमें पहुंचा। यह मुकर्रबखांका वतन था। इसकी हवा अच्छी और भूमि सरस थी। मुकर्रबखांने वह बाग और मकान बनवाये थे। बादशाहने उसके बाग की तारीफ कई बार सुनी थी इस लिये उसके देखनेकी चाह हुई। २२ शनिवार (अगहन सुदी ८) को बेगमों सहित उसमें गया और देखकर मुदित हुआ। लिखता है—निस्संदेह बाग बड़ा उत्तम और मनोहर है। १४० बीघेमें एक पक्के कोटके अन्दर है। उसके बीचमें झालरा २२० गज लम्बा और २०० गज चौड़ा है। झालरेमें एक चौकोर चबूतरा २२ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा चांदनीमें बैठनेका है। ऐसा कोई मेवा गर्म और ठंडे देशोंका नहीं है जो इस बागमें न हो। मेवेके वृक्ष जो विलायतमें होते हैं यहां तक कि पिस्तेके पौदे भी यहां लगे हुए हैं। सर्वके वृक्ष ऐसे सुडौल और सर्वांङ्ग सुन्दर देखे गये कि वैसे अबतक देखनेमें नहीं आये थे। मैंने उनकी गिनती करनेका हुक्म दिया। ३०० निकले। झालरे के ऊपर भी अच्छे भवन बने हैं।

शाहजादा उमीदबख्श—२६ बुधवार (अगहन सुदी १२) को आसफखांकी बेटीसे शाहजहांके लड़का हुआ। बादशाहने उसका नाम उमीदबख्श रखा।

शिकार—२७ गुरुवार (अगहन सुदी १३) को भी वहीं मुकाम रहा। इन दिनों बादशाह जरज और तोगदरी पक्षियोंके शिकार

के आनन्दमें मग्न रहता था। जरजोको तुलवाया तो बोरते रग वाला सवा दो सेर जहांगीरी तोलसे हुआ और चितकबरा दो सेर आध पाव। बडी तोगदी बोरते जरजसे पाव भर अधिक उतरी।

दे महीना।

५ गुरुवार (पौष वदी ६) को बादशाहका लश्कर अकबरपुरमें नावोंसे उतरकर स्थलमें उतरा। यह स्थान परगने बूडियासे दो कोस था। आगरेसे यहां तक जलमार्गसे १२३ कोस थे जो स्थलके ८१ कोसोंके बराबर थे। ३४ कूच और १७ मुकाममें काटे थे। एक सप्ताह शहर आगरेसे निकलनेके पीछे ठहरना पडा था और १२ दिन पालमकी शिकारमें लगे थे। सब ७० दिन लगे।

इसी दिन जहांगीरकुलीखाने विहारसे आकर १०० मोहरें और १००) भेट किये।

गुरुवारसे ११ बुधवार (पौषबदी १२) तक लगातार कूच होता रहा।

सरहिन्दका बाग—१२ गुरुवार (पौष सुदी १३) को बादशाह सरहिन्दके बागकी बहार देखकर प्रसन्न हुआ। यह पुराना था। यहां सालके वृक्ष खूब थे। पर पहलेकीसी शोभा न थी। बादशाहने ख्वाजा वैसीको जो खेती और इमारतके कामोंमें निपुण था इसी बागके सुधारनेके लिये सरहिन्दका 'करोड़ी'करके पहलेसे भेज दिया था। उसने कुछ दुरुस्ती और मरम्मत की थी। अब फिर नये सिरेसे उसे ताकीद कर दीगई कि पुराने अधसूखे वृक्षोंकी जगह नये पौदे लगावे और क्यारियां भी नई बनाकर पुराने मकानोंकी मरम्मत करावे और हम्माम आदि दूसरे मकान भी उचित स्थानमें बनावे।

शाहजहांके घर जाना—१८ गुरुवार (पौष सुदी ४) को बादशाह शाहजहांकी प्रार्थनासे उसके डेरे पर गया। उसने पुत्रोत्सवकी बडी भारी मजलिस रचाकर बादशाहको उत्तम भेट दिखाई। बादशाहने एक लाख तीस हजार रुपयेकी चीजें पसन्द करके लेली। उसमें एक नीमचा फरङ्गीकाटके नीलमोंसे जड़ा अति उत्तम था।

एक सुन्दर हाथी था जो बगलानेके राजाने बुरहानपुरमें शाह-जहांको भेंट किया था। ४००००) की भेंट उसने अपनी माताओं और बड़ी बूढ़ियोंको दी।

जंग—भक्करके फौजदार सैयद बायजीद बुखारीने एक जंगके बच्चेको पहाड़से लाकर घरमें पाला था। अब बड़ा होजाने पर वह बादशाहकी भेटमें भेजा गया। बादशाहको बहुत पसन्द आया। वह लिखता है—"मारखोर और पहाड़ी मेंढे तो घरमें पाले हुए बहुत देखे गये थे परन्तु जंग देखनेमें न आया था। उसके बच्चे पैदा करने के लिये उसको बरबरी बकरीके साथ रखनेका हुक्म दिया। यह मारखोर और काचकारसे विलक्षण है।" सैयद बायजीदको हजारी जात और सातसौ सवारोंका मनसब दिया।

२९ रविवार (पौषसुदी १५) को शाहजहांकी वर्षगांठका उत्सव व्यास नदीके तट पर हुआ। इसी दिन राजा विक्रमाजीत जो कांगडे के किलेको घेरे हुए था, कई कामोंकी प्रार्थना करनेके लिये बुलाया हुआ दरगाहमें आया।

लाहोरका दौलतखाना—३० सोमवार (माघ बदी १) को बाद-शाह १० दिनकी छुट्टी लेकर लाहोरके दौलतखानेको देखनेके लिये गया। वह फिरसे बना था।

राजा विक्रमाजीतको बिदा—इसी दिन राजा विक्रमाजीत भी खञ्जर, खासा खिलअत और घोड़ा पाकर किले कांगडेके घेरे पर बिदा हुआ।

बहमन महीना।

कलानूरका बाग—२ बुधवार (माघ बदी ३) को बादशाहकी सवारीके उतरनेसे कलानूरके बागकी शोभा बढ़ी। बादशाह लिखता है—"इस भूमिमें स्वर्गवासी श्रीमान राजसिंहासन पर विराजमान हुए थे।"

खानआलमका ईरानसे लौटना—खानआलमके ईरानसे लौटने की खबर पहुंचने पर बादशाह प्रतिदिन एक पारिषदको उसका

मान बढानेके लिये अगवानी भेजता था और नानाप्रकारकी कृपाओं से उसकी प्रतिष्ठा बढाता था। उसको जो प्रसादपत्र लिखे जाते थे उनके ऊपर उचित कविता लिखकर अनुग्रह दिखाया जाता था। एकवार जहांगीरी इत्र भेजा तो एक शेर लिखा जिसका अर्थ यह है—

"मैंने अपनी सुगन्ध तेरी ओर भेजी है, कि शीघ्र तुझे अपनी ओर लाऊं।"

खानआलमके साथ ईरानके शाहका वर्ताव—२ गुरुवार (माघ वदी४) को खानआलमने कलानूरके बागमें राजद्वारको चूमकर१०० मोहरें और एक हजार रुपये भेट किये। वादशाह लिखता है— "मेरे भाई शाह अब्बास जो कृपा, खानआलम पर फरमाते थे यदि उसको विस्तारपूर्वक लिखा जावे तो अत्युक्तिका भ्रम होगा। सदैव खानआलम कहकर सम्भाषण करते थे और एक क्षण भी अपने पाससे पृथक नहीं रखते थे। कभी किसी दिन या रात्रिको वह अपने घरमें रहना चाहता तो साधारण रीतिसे उसके घर पर जा कर अधिक कृपा प्रगट करते थे। एक दिन फर्रुखावादमें कमरगे के शिकारका बडा समारोह था। उसमें शाहने खानआलमको तीरन्दाजीका हुक्म दिया। उसने अदबसे एक कमान और दो तीर आगे किये। वादशाहने ५० तीर और उसे अपने तरकशमेंसे दिये। उनमेंसे ५० तीर तो शिकार पर पहुंचे और २ वृथा गये। फिर शाहने उसके नौकरोंको भी जो राजसभाओं और मजलिसोंमें जाते पाते थे तीरन्दाजीकी आज्ञा दी। वहुतोंने अच्छे तीर लगाये। मुहम्मदयूसुफ किरावलने एक तीर ऐसा मारा कि दो सूअरोंको छेदता हुआ निकल गया। इस पर जो लोग शाहके पास खडे थे धन्य धन्य करने लगे। शाहने विदा करते समय खानआलमको आलिंगन करके अपनी प्रीतिका परिचय दिया और जब वह शहर से वाहर निकला तब भी उसके डेरे पर पधारकर शिष्टाचार पूर्वक विदा किया। जो अपूर्व पदार्थ खानआलम लाया वह निस्सदेह

भाग्यवलसेही उसे मिले थे। उनमें एक चित्र नकोमशखाँके साथ साहिब किरांकी लड़ाईका था। उसमें उनकी और उनके कई बेटों तथा अमीरोंकी तसवीरें थीं जिनको उस संग्राममें साथ रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। प्रत्येक चित्रके पास उसका नाम लिखा था। इस चित्रमें २४० स्वरूप थे चित्रकारने अपना नाम खलील मिरजा शाहरुखी लिखा था। उसका काम बहुत पक्का और बढ़िया है और उस्ताद बहजादके कामसे पूरा पूरा मिलता है। जो नाम नहीं लिखा होता तो यही अनुमान किया जाता कि यह बहजाद का काम है। सम्भव है कि बहजाद उसके शिष्योंमेंसे हो और उस के ढंग पर चला हो। यह अपूर्व पदार्थ स्वर्गवासी शाह इसमाईल वा तुहमास्पके पुस्तकालयसे मेरे भाई शाह अब्बासकी सरकारमें आया और सादकी नाम उनके पुस्तकाध्यक्षने चुराकर एक मनुष्य को बेच दिया। दैवसंयोगसे सफाहानमें खानआलमके हाथ लगा। यह खबर शाहको भी होगई कि ऐसी दिव्यवस्तु उसने प्राप्त की है। उसने देखनेके बहानेसे मांगा। खानआलमने मीठा बहाना करके बहुत टाला। पर अत्यन्त आग्रह होने पर उनकी सेवामें भेज देना पड़ा। उन्होंने देखतेही पहचान लिया और कई दिन तक अपने पास रखा। पर वह जानते थे कि हमारी रुचि ऐसी चीजोंमें कैसी है। यह भी जानते थे कि यहां मांगनेपर किसी छोटी या बड़ी वस्तु के दे डालनेमें सङ्कीर्णता नहीं हैं। इससे खानआलमसे असली बात कहकर चित्र उसीको दिया। मैंने जब खानआलमको ईरान भेजा तो विष्णुदास नाम चित्रकारको जो चित्र खेंचनेमें इस समय अद्वितीय है शाह और उनके प्रधान सभासदोंके चित्र उतार लानेके लिये उसके साथ भेजा था। वह बहुतोंकी छवि खेंचकर लाया। मेरे भाई शाहकी तो बहुतही सुन्दर खेंची। मैंने उनके जिस सेवकको दिखाई उसीने निवेदन किया कि ठीक खेंची है। विष्णुदासका मान हाथी देकर बढ़ाया गया।

एतमादुद्दौलाकी सेना—८(१) मंगलवार (माघ वदी ६) को परम प्रधान एतमादुद्दौलाने अपनी सेना सजाई। पंजावके सूवेका प्रवन्ध उसके प्रतिनिधियोंको समर्पित था और भारतमें भी उसकी फुटकर जागीरें थीं तथापि ५००० सवार दिखा सका।

कश्मीर—बादशाह लिखता है—कश्मीरमें इतनी गुंजाइश नहीं है कि उसकी उपज उस भीड़भाडके लिये यथेष्ठ हो जो सदैव सवारीके साथ रहती है। फिर अब तो लशकरकी अवाईसे अनाज का भाव बहुत महंगा होगया था इसलिये सर्वसाधारणके हितार्थ हुक्म दिया कि जो अनुचर मेरी सवारीके साथ है वह थोड़ेसे जरूरी साथी साथ रखकर शेष सबको अपनी अपनी जागीरों पर भेजदें। इसी प्रकार जानवर और नौकर चाकर भी कम करदें।

शाहजहांका आना—१० गुरुवार (माघवदी १२) को शाहजहां लाहोरसे आगया और जहांगीरकुलीखां खिलअत घोड़ा और हाथी पाकर दक्षिणको विदा हुआ।

तालिबआमिली—इसी दिन बादशाहने तालिबआमिलीको मलिकुश्शोरा (कविराजा) का खिताब और खिलअत दिया। यह आमिल नाम नागरका रहनेवाला था कुछ समयसे एतमादुद्दौलाके पास रहता था। जब उसकी कविता सब कवियोंसे बढ़ गई तो वह दरबारके कवियोंमें लेलिया गया।

कविता—१४ चन्द्रवार (माघ वदी ३०) को सुलतान किवासके बेटे हुसैनीने एक रुबाई (एक प्रकारकी चौपाई) कहकर बादशाह की नजर की। उसका यह आशय था—

तेरे पल्लेसे जो गर्द झडे, वह सुलेमानी सुरमेके मुंहकी आब उतार दे। तेरे द्वारकी धूलको जो परीक्षाके लिये निचोडें, तो उस मेंसे बादशाहोंके ललाटका पसीना टपकने लगे।

मोतमिदखांने उसी समय एक रुबाई पढी जो बादशाहको

(१) मूलमें मंगलको ६ लिखी है सो भूल है।

भाग्यवलसेही उसे मिले थे। उनमें एक चित्र नकीमशखोंके साथ साहिब किरांकी लड़ाईका था। उसमें उनकी और उनके कई बेटों तथा अमीरोंकी तसवीरें थीं जिनको उस संग्राममें साथ रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। प्रत्येक चित्रके पास उसका नाम लिखा था। इस चित्रमें २४० स्वरूप थे चित्रकारने अपना नाम खलील मिरजा शाहरुखी लिखा था। उसका काम बहुत पक्का और बढ़िया है और उस्ताद बहजादके कामसे पूरा पूरा मिलता है। जो नाम नहीं लिखा होता तो यही अनुमान किया जाता कि यह बहजाद का काम है। सम्भव है कि बहजाद उसके शिष्योंमेंसे हो और उस के ढंग पर चला हो। यह अपूर्व पदार्थ स्वर्गवासी शाह इसमाईल वा तुहमास्पके पुस्तकालयसे मेरे भाई शाह अब्बासकी सरकारमें आया और सादकी नाम उनके पुस्तकाध्यक्षने चुराकर एक मनुष्य को बेच दिया। दैवसंयोगसे सफाहानमें खानआलमके हाथ लगा। यह खबर शाहको भी होगई कि ऐसी दिव्यवस्तु उसने प्राप्त की है। उसने देखनेके बहानेसे मांगा। खानआलमने मीठा बहाना करके बहुत टाला। पर अत्यन्त आग्रह होने पर उनकी सेवामें भेज देना पड़ा। उन्होंने देखतेही पहचान लिया और कई दिन तक अपने पास रखा। पर वह जानते थे कि हमारी रुचि ऐसी चीजोंमें कैसी है। यह भी जानते थे कि यहां मांगनेपर किसी छोटी या बड़ी वस्तु के दे डालनेमें सङ्कीर्णता नहीं हैं। इससे खानआलमसे असली बात कहकर चित्र उसीको दिया। मैंने जब खानआलमको ईरान भेजा तो विष्णुदास नाम चित्रकारको जो चित्र खेंचनेमें इस समय अद्वितीय है शाह और उनके प्रधान सभासदोंके चित्र उतार लानेके लिये उसके साथ भेजा था। वह बहुतोंकी छबि खेंचकर लाया। मेरे भाई शाहकी तो बहुतही सुन्दर खेंची। मैंने उनके जिस सेवकको दिखाई उसीने निवेदन किया कि ठीक खेंची है। विष्णुदासका मान हाथी देकर बढ़ाया गया।

एतमादुद्दौलाकी सेना—८(१) मंगलवार (माघ वदी ९) को परम प्रधान एतमादुद्दौलाने अपनी सेना सजाई। पंजावके सूवेका प्रवन्ध उसके प्रतिनिधियोंको समर्पित था और भारतमें भी उसकी फुटकर जागीरें थीं तथापि ५००० सवार दिखा सका।

कशमीर—बादशाह लिखता है—कशमीरमें इतनी गुंजाइश नहीं है कि उसकी उपज उस भीड़भाड़के लिये यथेष्ठ हो जो सदैव सवारीके साथ रहती है। फिर अब तो लशकरकी अवाईसे अनाज का भाव बहुत महंगा होगया था इसलिये सर्वसाधारणके हितार्थ हुक्म दिया कि जो अनुचर मेरी सवारीके साथ है वह थोड़ेसे जरूरी साथी साथ रखकर शेष सबको अपनी अपनी जागीरों पर भेंजदें। इसी प्रकार जानवर और नौकर चाकर भी कम करदें।

शाहजहांका आना—१० गुरुवार (माघवदी १२) को शाहजहां लाहौरसे आगया और जहांगीरकुलीखां खिलअत घोड़ा और हाथी पाकर दक्षिणको विदा हुआ।

तालिबआमिली—इसी दिन बादशाहने तालिबआमिलीको मलिकुश्शोरा (कविराजा) का खिताब और खिलअत दिया। यह आमिल नाम नागरका रहनेवाला था कुछ समयसे एतमादुद्दौलाके पास रहता था। जब उसकी कविता सब कवियोंसे बढ़ गई तो वह दरबारके कवियोंमें लेलिया गया।

कविता—१४ चन्द्रवार (माघ वदी ३०) को सुलतान किवामके बेटे हुसैनीने एक रुबाई (एक प्रकारकी चौपाई) कहकर बादशाह की नजर की। उसका यह आशय था—

तेरे पल्लेसे जो गर्द झडे, वह सुलेमानी सुरमेके मुंहको आब उतार दे। तेरे द्वारकी धूलको जो परीक्षाके लिये निचोड़ें, तो उस मेंसे बादशाहोंके ललाटका पसीना टपकने लगे।

मोतमिदखांने उसी समय एक रुबाई पढी जो बादशाहको

(१) मूलमें मंगलको ६ लिखी है सो भूल है।

बहुतही भली लगी और उसने अपनी किताबमें लिखली। उसका भावार्थ यह था—

तू मुझको अपने वियोगका विष चखाता है और कहता है कि क्या हुआ? रक्त बहाता है और बांहें झाडता है कि क्या हुआ? हे इस बातको न जाननेवाले कि तेरे वियोगकी तलवारने क्या किया है, तू मेरी मट्टीको निचोड तो जानेगा कि क्या हुआ?

फिर लिखा है कि तालिबअस्फाहानी है। जवानीके दिनों कशमीर पहुंचा। वृद्वावस्था धारण किये हुए वहांकी शोभा पर मोहित होकर वहीं रह गया और गृहस्थ भी होगया। कशमीर फतह होनेके पीछे स्वर्गवासी श्रीमानोंकी सेवामें उपस्थित होकर बादशाही बन्दोंमें नौकर रहा। इस समय सौ वर्षके लगभग होगया और कशमीरमें सकुटुम्ब सुख पूर्वक रहता है।

मियांमीर—लाहोरमें मियां शेख मुहम्मद मीर नाम एक शिष्ट पुरुष रहता था और किसीके पास आता जाता न था। बादशाह को ऐसे लोगोंसे मिलनेकी बहुत चाहना रहती थी और इस समय लाहोर जानेका अवसर नहीं था। इसलिये पत्र लिखकर उसीको बुलाया। वह आया। बादशाह अकेला उससे मिला और बहुत समय तक उसकी सारगर्भित बातें सुनता रहा। वह लिखता है— "मैंने बहुत चाहा कि कुछ भेट करूं परन्तु उनको बेपरवाईमें बढ़ा हुआ देखकर इस मनोरथके प्रगट करनेका साहस न हुआ। केवल एक श्वेत मृगछाला नमाजके समय बिछानेके लिये उनकी भेट की। वह उसी समय बिदा होकर लाहोरको पधार गये।"

डाढी मूंछवाली स्त्री—२३ बुधवार (माघ सुदी ९) को दौलता बादके पासडेरे हुए। यहां बादशाहने एक मालीकी लडकी देखी। उसके मूछों और डाढीके बाल एक मुट्ठीमें आनेके योग्य थे। उसका आकार पुरुषों का सा था। उसकी छातीमें बाल निकल आये थे। उसके स्तन न थे। बादशाह लिखता है मैंने सोचा कि कहीं वह पुरुष न हो। उसने कहा मुझे अभी रजोदर्शन नहीं हुआ है।

तब मैंने कई स्त्रियोंसे उसकी परीक्षा कराई कि कहीं वह नपुंसक न हो। स्त्रियोंने परीक्षा करके कहा कि इसमें और दूसरी स्त्रियोंमें और कुछ अन्तर नहीं है। विचित्र जानकर यह बात लिख लीगई।

अहदादतारी—जलालातारीका बेटा अहदाद अपने कुकर्मों से लज्जित होकर मुलतानके सूबेदार बाकरखां द्वारा एतमादुद्दौलासे अपराध क्षमा करादेनेका प्रार्थी हुआ। बादशाहने स्वीकार करके बाकरखांके साथ उपस्थित होने पर उसके अपराध क्षमा कर दिये।

जम्मूकाराजा—जम्मूके जमींदार संग्रामको राजाका पद, हजारी जात ५०० सवारका मनसब हाथी और सिरोपाव मिला।

मुलतानका सूबा—बाकरखां डेढ़ हजारी जात और ५०० सवारोंका मनसब पाकर फिर मुलतानकी सूबेदारी पर बिदा हुआ।

२८ सोमवार (माघ सुदी १४) को बादशाह भट नदीके तटपर कारोहीके परगनेमें पहुंचा। बादशाहके नियत किये मृगया स्थानो में यहांके पहाड भी थे। इसलिये किरावलोंने पहलेसे आकर उन को घेर रखा था।

असफंदार महीना।

शिकार—२ असफंदार गुरुवार (फाल्गुण बदी ३)को छः कोससे पशुओंको घेर कर दूसरे दिन शाखबंदमें लाये १०१ मेंढे और चिकारे शिकार हुए।

महाबतखां—महाबतखांको बादशाहने हुक्म भेजा था कि यदि वहांका प्रबन्ध विश्वास योग्य होगया हो तो फौजोंको थानोंमें छोडकर अकेला आवे। इस पर उसने इसी दिन चौखट चूमकर १००० मोहरें समर्पण कीं।

खानआलम—खानआलमका मनसब ५ हजारी जात ३००० सवारोंका होगया।

कश्मीर—नूरुद्दीन कुलीकी अरजी पुणिचसे पहुंची। उसमे लिखा था कि जहां तक हो सका मैंने सब घाटियोंको सुधार कर

सम कर दिया था। परन्तु दैव गतिसे कई दिन तक निरंतर मेंह बरसता रहा और पहाड़ पर ३ गज तक बर्फ गिरी और अब भी गिर रही है। यदि पहाड़के उधर एक महीने तक सवारी ठहरी रहे तो इस मार्गसे जाना सम्भव है नहीं तो कठिन दिखाई देता है। बादशाहका मनोरथ काश्मीरकी बहार और फुलवार देखनेका था, ठहरनेमें उसका मजा जाता था इसलिये वह पगली और दन्तूरकी ओर मुडकर ३ गुरुवार (फाल्गुण वदी ३) को भटसे पार हुआ। उसका पानी तो कमर कमर तक ही था पर बहुत वेगसे बहता था। मनुष्योंको उतरनेमें बहुत कष्ट होता था इस वास्ते बादशाहने हुक्म दिया कि २०० हाथियोंको घाटों पर लेजाकर लोगोंका असबाब उतार दें और जो मनुष्य दुर्बल हों उनको भी सवार कराकर उतार दें जिससे किसी गरीबकी जान और माल की हानि न हो।

खानजहांकी मृत्यु—इसी दिन खानजहांकी मृत्युका समाचार पहुंचा। बादशाह लिखता है—"यह पुराना और मेरे बाल्यकाल का सेवक था। अन्तमें मेरी नौकरी छोडकर थोडे दिनोंके लिये स्वर्गवासी श्रीमानोंकी सेवामें चला गया था। चूंकि दूसरी जगह नहीं गया था इससे मुझे बुरा न लगा। मेरे राज्याभिषेकके पीछे जो कृपा उस पर हुई उसका कभी उसको ध्यान तक न था। यहां तक कि वह ५ हजारी जात और ३००० सवारोंके पदको पहुंच गया था। उसका वृत्तान्त प्रसंगसे जहांतहां लिखा जाचुका है। उससे बडे बड़े काम बने। काम करनेका उसमें अपूर्व साहस था। इसके सिवा और योग्यतासे कि जिससे मनुष्य जन्म सफल हो विमुख था। इस यात्रामें उसका हृदय क्षीण होगया था तोभी कई दिन तक सवारीके साथ रहा। पर जब रोग प्रबल होगया तो कालानूरसे छुट्टी लेकर लाहौर गया और वहीं शान्त हुआ।"

रोहतासगढ़—४ शनिवार (फाल्गुण वदी ५) को बादशाह रोहतासके क़िलेमें पहुंचा। यहांसे कासिमखांको घोड़ा सिरोपाव

और खासा परम नरम देकर लाहोरको बिदा किया। रास्ते पर एक बागीचा था। बादशाह उसके फूलोंकी शोभा देखकर प्रसन्न हुआ।

इस जगह तीहृ पत्नीका शिकार मिला। बादशाह लिखता है —तीहृका मांस चकोरसे अधिक स्वादिष्ट होता है।

थलके फूल—५ रविवार (फाल्गुण बदी ६) को बादशाहने कुछ फूल ऐसे देखे जिनमें कुछ तो भीतरसे स्वेत और बाहर लाल थे और कुछ भीतरसे लाल और बाहर पीले थे। बादशाह लिखता है—इनको फारसीमें 'लालाबेगाना' और हिन्दीमें थल कहते हैं। क्योंकि जैसे कमल जलका फूल है वैसेही यह स्थलका कमल है।

किश्तवारकी विजय—८ गुरुवार (फाल्गुण बदी १०) को कश्मीरके सूबेदारकी अरजी पहुंची जिसमें किश्तवारके फतह होनेकी बधाई लिखी थी। बादशाहने उसको प्रसादपत्र, खासा खिलअत, और जड़ाऊ खञ्जर भेजकर किश्तवारकी एक सालकी उपज पुरस्कारमें दी।

हसन अब्दाल—१४ मंगलवार (फाल्गुण बदी १४) को बादशाह हसन अब्दालमें पहुंचा। उसने इस रास्तेका वर्णन काबुलकी यात्रा में सविस्तर पहले कर दिया था इसलिये यहां फिर नहीं लिखा। अकबरपुरसे हसन अब्दाल तक १७८ कोस ४८कूच और २१मुकाम अर्थात् ६८ दिनमें तय हुए। हसन अब्दालमें एक टांका एक झरना और एक झालरा बहुत सुन्दर था इसलिये बादशाह दो दिन तक वहां ठहरा।

१६ गुरुवार (फाल्गुण सुदी १) को सौसपचीय तुलादानका उत्सव हुआ। इस पचसे बादशाहको ५२वां वर्ष लगा।

कश्मीरको कूच—यहांसे आगे ऊंचा नीचा रास्ता पहाड़ोंमें होकर था। इसलिये बादशाहने यह निश्चय किया कि चौमती मरयमजमानी दूसरी बेगमों सहित कुछ दिनो ठहरकर सुभीते से पधारें। मुख्य असात्य एतमादुद्दौला, सादिकखां मीरबख्शी

और इरादतखां मीरसामान भी कारखानों सहित धीरे धीरे आवें। ऐसेही मिरजा रुस्तम सफवी, खान आजम और दूसरे बन्दोंको पुशिचके मार्गसे जानेको आज्ञा हुई। स्वयं बादशाह आवश्यक परगह और पारिषदोंके साथ १७ भृगुवार (फाल्गुण सुदी २) को ३॥ कोस चलकर सुलतानपुरमें उतरा। यहां समाचार मिला कि राणा अमरसिंह उदयपुरमें परलोकगामी हुआ। बादशाहने उसके पोते जगतसिंह और बेटे भीमसिंहको जो सेवामें रहते थे सिरोपाव दिये और राजा कृष्णदासको आज्ञा की कि प्रसादपत्र राणाकी पदवीका, सिरोपाव तथा घोडा और खासा हाथी कांवर कर्णके वास्ते लेजाकर शोक और हर्षकी क्रिया सम्पादन(१) करे।

पहाड गर्ज—बादशाह लिखता है—"यहांके लोगोंसे सुना गया कि बरसात बादल और बिजली न होनेके दिनोंमें भी बादल की सी गर्ज इस पहाडमे सुनी जाती है। इसीलिये इस पहाड़को गर्ज कहते हैं। एक या दो वर्ष पीछे यह गर्ज होतीही है। यह बात मैंने स्वर्गवासी श्रीमानके सम्मुख भी कईबार सुनी थी। अनोखी जानकर लिख ली।

१८ शनिवार (फाल्गुण सुदी३) को साढेचार कोस चलकर संजी में डेरे हुए। यह गांव 'हजाराकारलग'के परगनेका है।

१९ रविवार (फाल्गुण सुदी ४) को ३। कोस पर नौशहरेमें मुकाम हुआ। यह धन्तूर परगनेका गांव है। जहांतक देख पड़ता है स्थल कमलके फूल तरताजा खिले हुए दिखाई देते थे।

लाल फूल—२० सोमवार (फाल्गुण सुदी ५) को गांव सलहरमें डेरे हुए। महाबतखांने साठ हजार रुपयेके रत्न और जड़ाऊ पदार्थोंकी भेट अर्पण की। यहां बादशाहको गुलखतमीके आकार का पर उससे कुछ छोटा लाल अङ्गारासा फूल दृष्टिगोचर हुआ। कई फूल पास पास खिले हुए थे। दूरसे ऐसा जान पडता था कि

(१) अर्थात् राणा अमरसिंहके मरनेका शोक प्रकट करे और कर्णसिंहके राज्याभिषेक पर बधाई दे।

एकही फूल है। इसका पौदा जर्दालूके बराबर था और इस पहाड की तलहटीमें जंगली फूल बहुत उगे हुए थे। उनकी सुगन्ध अति तीव्र थी और रंग बनफशाके फूलसे हल्का था।

२१ मंगलवार (फाल्गुण सुदी ६) को तीन कोस पर गांव मालकलीमें कैम्प लगा। यहांसे बादशाहने महाबतखांको घोडा, खासा हाथी और सिरोपाव पोस्तीन सहित देकर बंगशकी हुकूमत पर बिदा किया। रास्ते भर बूंदें पडती रहीं। रातको मेह बरसा।

२२ बुधवार (फाल्गुणसुदी ७) को तडकेही हिम गिरकर रास्ते पर बिछ गया और मेहसे फिसलन होगई जिससे जो निर्बल पशु गिरा फिर न उठा। २५ सरकारी हाथी जानसे गये। बादशाह को वर्षाके मारे दो दिन ठहरना पडा।

पगलीका जमींदार—२३ गुरुवार (फाल्गुण सुदी ८।९) को पगलीके जमींदार सुलतान हुसैनने आकर जमीन चूमी। यहांसे पगलीका इलाका लगता था।

बर्फ—बादशाह लिखता है—यह अद्भुत संयोग है कि जब स्वर्गीय श्रीमान कशमीर पधारे थे तो उस समय भी बर्फ गिरी थी और अब भी गिरी है। बीचके वर्षोंमें बर्फ भी न गिरी थी और वर्षा भी कम हुई थी।

फूलों और वृक्षोंकी शोभा—२४ शुक्रवार (फाल्गुण सुदी १०) को सवारी ४ कोस चलकर गांव सवादनगरमें ठहरी। इस मार्गमें भी अचस्वा (१) बहुत था और जर्दालू और शफ्तालूके फूल जंगल भरमें फूले हुए थे सनोबर के वृक्ष भी सर्व के समान आंखोंको ताजा करते थे।

सुलतान हुसैनके घर जना—२५ शनिवार (फाल्गुण सुदी ११) को ३॥ कोस पर पगलीके पास पडाव हुआ। २६ रविवारको बादशाह चकोरोंके शिकारको गया। दिन ढले सुलतान हुसैनकी

१ (अचस्वा) मूलमें ऐसाही लिखा है किसी वृक्षका नाम हो तु० पृ० २४।

प्रार्थना पर उसके घर पधारा। उसने घोड़ा, तलवार, बाज जुर्रे, भेंट किये।

सरकार पगली—बादशाह लिखता है—"सरकार पगली २५ कोस लम्बी और २५ कोस चौड़ी है। पूर्व दिशामें कश्मीरके पहाड़ पश्चिममें अटक बनास उत्तरमें गनोर और दक्षिणमें गक्कड हैं। जब अमीर तैमूर साहिबकिरां हिन्दुस्तानको जीतकर तूरान जाते थे तो इनलोगों (गक्कड़ों) को जो साथ थे यहां रहनेका हुक्म देकर छोड गये थे। ये कहते हैं कि हमारी जाति कारलग है। परंतु ठीक नहीं जानते कि उस समय इनमें सबसे बड़ा कौन था और उसका क्या नाम था। अब तो ये निरे लाहोरी हैं और बोली भी वैसीही बोलते हैं"।

धन्तोर—"यही हाल धन्तोर" के लोगोंका है स्वर्गवासी श्रीमान के समयमें धन्तोरका जमींदार शाहरुख था। अब उसका बेटा बहादुर है। यह पगली और धन्तोरवाले सम्बन्धी है तो भी इनमें सीमाओंका वही झगड़ा करता है जो जमींदारोंमें स्वभाविक होता है। पर दोनों सदासे शुभचिंतक रहते आये हैं। सुलतान हुसैनका बाप सुलतान महमूद और शाहरुख दोनों युवराजावस्थामें मेरे पास आये है। सुलतान हुसैन ७० वर्षका होगया है तो भी सवारी और सफरकी शक्ति जैसी चाहिये वैसी अब तक उसमें है"।

बोजा—इस देशमें रोटी और चावलका बोजा(१) बनाते हैं जिसको सर बोलते हैं यह बोजे से बहुत तीव्र और तरल होता है। यहांके लोग इसीका सेवन करते हैं यह जितना पुराना हो उतनाही उत्तम है। सर को घड़ेमें बन्दकरके दो तीन वर्ष तक घरमें रख छोडते है। फिर उसके ऊपरका पानी निथार लेते हैं। उसको आछी कहते है। आछी १० वर्षकी भी होती है। इनकी समझमें जितनी पुरानी उतनीही अच्छी। कामसे कम एक वर्षकी तो होतीही है। सुलतान महमूद तो 'सर' के प्याले पर

(१) एक एक प्रकारका मादकरस।

प्याले उड़ा जाता था। सुलतान हुसैन भी पीता है। मेरे लिये बहुत बढ़िया सर लाये थे मैंने एक वेर परीक्षाके लिये पी और इससे पहिले भी पी थी। इसका नशा भूख तो लाता है पर दारुण भी है। विदित हुआ है कि इसमें कुछ भंग भी मिलाते हैं। न दारुण हो तो भंग उसे दारुण कर देती है। मेवोंमें जर्दालू शफ्तालू और अमरूद होते हैं परन्तु सम्हाल नहीं करते जिससे जंगलीके समान खट्टे और बुरे होते है खैर उनकी कलियोंको ही देखकर प्रसन्न हो सकते है। घर भी काशमीरियोंकी भांति लकडीके बनाते हैं। शिकारी जनावर भी होते है घोडे खच्चर, गायें, और भैसें भी हैं बकरे और मुर्ग बहुत है। खच्चर छोटा होता है बहुत बोझके काम नहीं आता"।

कई मंजिल आगे लशकरके वास्ते पूरा अनाज न होनेकी अर्ज हुई थी। इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि थोड़ेसे जरूरी डेरे और कारखाने साथ लेकर हाथियोंको छोड़ दें और तीन चार दिनकी सामग्री लेलें। सवारीके नौकरोंमेंसे भी थोडेसेही साथ चलें बाकी ख्वाजा अबदुलहसन बखशीके साथ कई मंजिल पीछे आते रहें। इतनी कमी करने पर भी ७०० हाथी तो जरूरी डेरों और कारखानोंके लिये लेजानेही पड़े!

सुलतानहुसैनका मनसब ४ सदी ३०० सवारोंसे ६ सदी ३५० सवारोंका होकर खिलअत जड़ाऊ तलवार और हाथी भी उसको मिला।

बहादुर धन्तोरी, बंगशके लशकरमें नियुक्त था। उसका भी मनसब बढ़कर २ सदी जात और १०० सवारोंका होगया।

नैनसुख नदी—२८ बुधवार (फ़ालगुण सुदी १५) को बादशाह ५। कोस चलकर नैनसुख नदीके पुलसे उतरा। यह नदी उत्तरसे दक्षिणको जाती है। बारी नामक पहाड़से निकली है जो तिब्बत और बदखशांके बीचमें है। यहांसे इसकी दो शाखायें होगई थीं इस लिये बादशाही लशकरके उतरनेको बादशाहके हुक्मसे दो पुल

लकड़ीके बनाये गये थे एक १८ और दूसरा १४ गज लम्बा था। चौड़े दोनोंही पांच पांच गज थे। बादशाह लिखता है—"इस देशमें पुल बनानेकी यह परिपाटी है कि वृक्षोंको शाखाओं सहित पानीमें डालकर उनके दोनो सिरे पत्थरोंसे बांधते हैं फिर उनपर लकड़ीके मोटे मोटे तख्ते बिछाकर मेखों और रस्सोंसे जकड़ देते हैं यह पुल थोड़ीसी मरम्मतसे बरसों तक बने रहते है।"

सवार और पैदल तो पुल परसे उतरे। हाथी नदीसे। इस नदीका नाम सुलतान महमूदने नैनसुख रखा था।

३० शुक्रवार (चैत्र सुदी १) को साढे तीन कोस चलकर कृष्ण-गङ्गा पर डेरे लगे।

पेम दङ्ग—इस रास्तेमें डेढ कोस ऊंची और इतनीही नीची एक टेकरी है। यहां कशमीरके हाकिमोंने रूईका कर लेनेके लिये दरोगा बिठा रखा था। यहां कर लेनेमें विलम्ब होजाता था इस लिये इसका नाम पेमदङ्ग होगया। पेम कशमीरी भाषामें रूईको दङ्ग विलम्बको कहते हैं।

पुलके उतार पर एक स्वच्छ टांका पानीका था बादशाह उस पर वृक्षोंकी छायामें मामूली प्याले पीकर डेरेमें आगया।

कृष्णगङ्गा—कृष्णगङ्गा पर एक पुराना पुल २४ गज लम्बा और १॥ गज चौडा था जिसपरसे पैदल लोग उतरा करते थे। बादशाहके हुक्मसे दूसरा पुल उसके सामने ५३ गज लम्बा और ३ गज चौडा बन गया था। तो भी पानीके वेग और गहरेपनसे हाथी नंगे करके उतारे गये। घोडे पैदल और सवार पुल परसे उतरे।

सराय—अकबर बादशाहके हुक्मसे वहां एक बडी पक्की सराय चूने और पत्थरकी एक टीले पर जो नदीके ऊपर था बनी थी। नौरोजमें एकही दिन बाकी रह गया था(१) इसलिये बादशाहने मोत-मिदखांको पहलेसे भेज दिया था कि नौरोजका सिंहासन और दरबार लगानेके लिये कोई अच्छी ऊंची ठौर देखकर तय्यारीकरे।

(१) फारसीमें दिरग है।

वह जब पुलसे उतरा तो नदी परही एक हरा भरा चौकोर मैदान ५० गजका उसको मिल गया। मानो दैवने उसे इसी दिनके वास्ते बनाया था। उसने उसी पर सभा सजाई जो बादशाहको भी बहुत पसन्द आई। उसको खूब शाबाशी मिली।

कृष्णगङ्गा दक्षिणसे आती है और उत्तरको जाती है। भट नदी पूर्वसे आकर कृष्णगङ्गामें मिल जाती है।

पन्द्रहवां नौरोज।

१५ रबीउस्सानी शुक्रवार सन् १०२९ (चैत्र बदी २) को १२॥ घडी अर्थात् ५ घण्टे दिन व्यतीत होने पर सूर्य्य मेषराशिमें आया। जहांगीर बादशाहके राज्याभिषेकका पन्द्रहवां वर्ष आरम्भ हुआ।

फरवरदीन महीना।

२ शनिवार (चैत्र बदी ३) को साढे चार कोस कूच होकर गांव बकरमें डेरे लगे। इस रास्तेमें पहाडियां तो न थीं पर पत्थर बहुत थे। मोर, कालेतीतर और लगूर भी थे। बादशाह लिखता है— "जो पशु पक्षी गर्म देशोंमें रहते हैं वह ठंडे देशोंमें भी रह सकते हैं। यहांसे कश्मीर तक जहां कहीं भट नदीके तटपर होकर रास्ता गया है उसके दोनो ओर पहाड है और पानी घाटेमें होकर अति वेगसे बहता है। हाथी चाहे कितनाही प्रचण्ड हो पांव नहीं जमा सकता। तुरन्त लुढककर बह जाता है। पानीमें रहनेवाले कुत्ते भी यहां हैं।"

३ रविवार (चैत्र बदी ४) को बादशाह साढे चार कोस चलकर गांव मोसरामें ठहरा। रातको बारामूलाके व्यापारियोंने आकर भेट की। बादशाहने बारामूलाकी व्युत्पत्ति पूछी तो अर्ज की गई कि हिन्दीभाषामें बाराह नाम सूअरका और मूला नाम स्थानका है अर्थात् बाराहका स्थान। हिन्दुओंके अवतारोंमेंसे एक अवतार बाराह भी हुआ है। बाराहमूलासे बारामूला बना।

४ सोमवार (चैत्र बदी ५) को २॥ कोस पर भोलवासमें सवारी ठहरी। आगे पहाड़ी रास्ता बहुत सङ्कीर्ण बताया जाता था इस

लिये बादशाहने मोतमिदखांको हुक्म दिया कि आसफखां और कई सेवकोंके सिवा और किसीको सवारीमें मत आने दो और लश्करको भी एक मंजिल पीछे लाया करो।

मोतमिदखांके डेरेमें उतरना—बादशाह लिखता है—"मोतमिदखांने अपना डेरा इस हुक्मसे पहलेही आगे भेज दिया था और फिर अपने आदमियोंको लिखा कि मेरे वास्ते ऐसा हुक्म है तुम जहां पहुंचे हो वहीं ठहर जाओ। यह चिट्ठी उसके भाइयोंको भोलवासकी पहाड़ीके नीचे मिली। उन्होंने वहीं अपना डेरा खड़ाकर दिया। जब बादशाही लश्कर उसकी मंजिल(१)के पास पहुंचा तो बर्फ और मेह बरसने लगा। अभी एक मैदान भर रास्ता भी न कटा था कि उसका डेरा दिखाई दिया। मैं इसको भगवत्‌कृपा समझकर बेगमों सहित उस डेरेमें उतर पडा। जाड़े बर्फ और मेह के कष्टसे बचा। मोतमिदखांके भाइयोंने मेरे हुक्मसे उसके बुलाने को आदमी दौड़ाये। जब यह बधाई उसे पहुंची उस समय हाथियों और डेरोंकी भीड़से घाटी पर रास्ता बन्द होरहा था। तोभी वह पदल दो घंटेमें २॥ कोस चलकर बड़े हर्ष और आल्हादसे सेवामें पहुंचा और जो कुछ उसके पास धन माल हाथी घोड़े आदि थे वह सब लिखकर 'पाअन्दाज'के तौर पर मेरे अर्पण किया। पर मैंने सब उसीको बख्श दिया और फरमाया—संसारी चीजोंका हमारे सन्निकट कुछ आदर नहीं। हम तो भक्तिके मंहगे मालके गाहक है। यह योग उसके सद्भाव और भाग्यसे बना है कि मुझसा बादशाह बेगमों सहित एक रात दिन सुखसे उसके घरमें रहे और उसे अपने सहयोगियोंमें यह प्रतिष्ठा प्राप्त हो।

५ मंगलवार (चैत्र बदी ६) को बादशाह दो कोस चलकर गांव खाईमें ठहरा और जो वस्त्र पहने हुए था वह सब मोतमिदखांको प्रदान किये और उसका मनसब भी बढ़ाकर डेढ़ हजारी डेढ़ हजार सवारका कर दिया।

---

(१) डेरा, पड़ाव, उतारा।

कश्मीरकी सीमा—भीलवासकी घाटीसे आगे कश्मीर है। यहीं यूसुफखां कश्मीरीका बेटा याकूब स्वर्गवासी श्रीमानकी विजयिनी सेनासे लड़ा था जिसका नायक राजा मानसिंहका बाप भगवान दास(१) था।

मिरजा रुस्तमका बेटा सुहराबखां तैराकीके घमण्डसे भट नदी में कूदकर डूब मरा। बापको बेटेसे बहुत मोह था इसलिये अति व्याकुल होकर सकुटुम्ब शोकसूचक वस्त्र पहने पुणिचके रास्ते से बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाह लिखता है—"उसकी माका भी बुरा हाल था। मिरजाके और बेटे हैं लेकिन इससे उस को हार्दिक प्रेम था। यह २६ वर्षका था। बन्दूक चलानेमें अपने बापका उत्तम शिष्य था। हाथीकी सवारी और सिपाहगरी खूब जानता था। गुजरातकी यात्रामें मेरे हाथीके आगे आगे चला करता था।

६ बुधवार (चैत्र बदी ७) को ३ कोस पर गांव बन्दमें डेरे हुए।

क्वारमती घाटी—७ गुरुवार (चैत्र बदी ८) को क्वारमती घाटी से उतरकर गांव वच्छमें सवारी ठहरी। यह मंजिल ४॥ कोसकी हुई। बादशाह लिखता है—"क्वारमती विकट घाटी है। इस मार्गकी अन्तिम घाटी यही है।

८ भृगुवार (चैत्र बदी ६) को ४ कोस पर गांव बलतारमें डेरे हुए।

विनोदघाटी—विनोदघाटी इस रास्ते में कुछ चौड़ी थी जिसमें बादशाहने नरगिस बनफशा और दूसरे अद्भुतफूल जो कश्मीरमेंही होते हैं बहुतसे खिले देखे। उनमें एकफूल विचित्र आकृतिका था। जिसमें ५।६ फूल नारंगी रंगके औंधे फूले हुए थे और उन फूलोंमेंसे

(१) भगवन्तदास—बादशाहने भूलसे सब जगह भगवन्तदासको भगवानदास लिखा है। भगवानदास भगवन्तदासका छोटा भाई था। जयपुरकी तवारीख और अकबरनामेसे यह बात अच्छी तरह जानी जासकती है।

हरे पत्ते निकले हुए थे जैसे कि अनन्नासमें होते हैं। इस फूलका नाम बोलानिक है। दूसरा फल पौदेके समान था उसके आसपास छोटे छोटे सफेद, नीले और लाल फूल खिल रहे थे जिनमें पीले छींटे बहुत सुन्दर फबते थे। इसका नाम लदरपोश था। पीले रंग का अर्गवान भी इस रास्तेमें बहुत था।

बादशाह लिखता है—"किस किसको लिखें और कहांतक लिखें। जिस फूलमें कुछ विशेषता होती है लिखी जाती है। इस रास्तेमें मार्ग परही एक बड़ी चादर पानीकी ऊंचे स्थानसे गिरती है। ऐसी छटाकी चादर रास्ते भरमें और नहीं देखी गई। मैंने कुछ क्षण ठहरकर एक ऊंची जगहसे उसकी शोभा देखकर आंखों और हृदयको ठण्डा किया।"

बारामूला—९ शनिवार (चैत्र बदी १०) को ४। कोसका कूच होकर बारामूलामें सवारी ठहरी। बारामूला(१) कश्मीरके प्रधान नगरोंमेंसे है। यहांसे शहर (श्रीनगर) १४ कोस है। यह भट नदीके ऊपर है। बहुतसे कश्मीरी व्यापारियोंने इस नगरमें निवास करके नदीके ऊपर घर और मसजिदें बनाली हैं और सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं। बादशाहके हुक्मसे बहुतसी नावें सजाकर यहां रखी गई थीं और बादशाहके प्रवेशका मुहूर्त सोमवारको था इसलिये वह १० रविवार (चैत्र सुदी ११) के दोपहरको शहाबुद्दीनपुरमें आकर ठहर गया। यहां कश्मीरके हाकिम दिलावरखांने किश्तवारसे पहुंचकर चौखट चूमनेकी प्रतिष्ठा प्राप्त की और बादशाहकी विविध कृपाओंसे अलंकृत हुआ।

किश्तवारकी फतह—बादशाह लिखता है—"किश्तवार कश्मीरके दक्षिणमें है। कश्मीरकी बस्तीसे किश्तवारके मुख्य स्थान अलके तक जहां हाकिम रहता है ६० कोसकी दूरी निकली।"

---

(१) २१ नवम्बर १९०४ को इसी जगह पर लाट साहब और महाराजा कश्मीरके मिलापकी खबर अखबारोंमें देखी गई।

१० अक्टूबर सन् १४ (भादों बदी ८ सं० १६७६) को दिलावर
ख़ांने १०००० जंगी सवारों और पैदलोंसे किश्तवार जीतनेका
विचार करके अपने बेटे हसन और गुर्दअली मीरवहरको शहर
और सीमाओंकी रखवाली पर रखा। अपने भाई हैबतको कुछ
सेना सहित काश्मीरके दावेदार(१) गौहरचक तथा ऐबाचकको देख
भालके लिये जो किश्तवारमें थे पीरपंचाल घाटीके पास देसू नाम
स्थानमें छोड़ा। वहीं सेनाओंके व्यूह रचकर आप तो कुछ
कटक सहित संगीपुरके रास्ते से रवाने हुआ और अपने सुपात्र
पुत्र जलालको नसरुल्लह अरब, अलीमुल्क काश्मीरी, और
दूसरे जहांगीरी सेवकोंके साथ अन्य मार्गसे भेजा। बड़े बेटे जमाल
को कुछ वीरों सहित अपनी सेनाका हिरावल करके ऐसीही दो
दूसरी फौजोंको अपनी दाईं और बाईं ओर चलनेका हुक्म
दिया। आगे घोड़ोंका रास्ता नहीं था इसलिये अपने कई घोड़े
रख लिये और सिपाहियोंके घोड़े काश्मीरको लौटा दिये। फिर
सब पहाड़ पर पैदल चढ़े और काफिरोंसे लड़ते भिड़ते नरकोट
तक जापहुंचे। वह एक सुदृढ़ स्थान शत्रुका था। वहां जलाल और
जमालकी सेनाएं भी दूसरे रास्तोंसे चलकर आमिलीं। शत्रु सामनेसे
भाग गये। बादशाही लोग ऊंचे नीचे रास्तोंको वीरतासे पार
करके मर्व नदी पर पहुंचे। वहां पानी पर फिर लड़ाईकी आग
भड़की और ऐबाचक बहुतसे शत्रुओंमें घिरके मारा गया। इससे
राजा हिम्मत हारकर भागा और पुलसे उतर कर नदीके पार
भण्डरकोटमें ठहरा। बादशाही वीर भी पुलसे उतरने लगे।
पुलपर बड़ी लड़ाई हुई और बहुत आदमी काम आये। बाकी सेना
१० दिनतक निरन्तर नदीसे उतरनेका परिश्रम करती रही। परन्तु
काफिर लोगोंने लड़ने और रोकनेमें तत्पर रहकर उसे उतरने न
दिया। दिलावरखां थानोंको स्थिर और रसदका प्रबन्धकरके सेना
से आमिला। तब राजाने छलसे दूत उसके पास भेजकर

(१) पहले काश्मीरमें चकजातिके बादशाहोंका राज्य था।

कहलाया कि मैं अपने भाईको भेट सहित दरगाहमें भेजता हूं। जब मेरे अपराध क्षमा होजायेंगे और मेरे मनका भय जाता रहेगा तो मैं भी वहां जाकर चौखट चूमूंगा। परन्तु दिलावरखांने दूतों की बात न सुनी। उस अवसरको वृथा न खोकर उन्हें तो लौटा दिया और नदीसे उतरनेका विचार किया। उसका बड़ा बेटा जमान कुछ सिपाहियोंके साथ तैर कर पार होगया। वहां शत्रुओं से दारुण समर हुआ। शत्रु अन्तमें हारकर भाग निकले और पुल को तोड़ गये। बादशाही बन्दोंने पुल फिर बनाकर बाक़ी लशकर भी उतार लिया और भिंडरकोटमें जाकर छावनी डाली। इस नदीसे चिनाब नदी जहां शत्रुओंका अड्डा था दो तीरके फासिलेपर थी। वहां एक ऊंचा पहाड था जिसमें होकर जाना बहुत कठिन था। प्यादोंके आने जानेके लिये मोटे मोटे रस्से बंधे थे जिनमें हाथ हाथ भरकी लकडियां पास पास लगी हुई थीं। एक सिरा इन रस्सोंका पहाडकी चोटी पर और दूसरा नदीके तटपर गडा था। इन रस्सों पर गज भर ऊंचा एक रस्सा और था। प्यादे पांव तो उन लकडियों पर धरते थे और हाथसे ऊपरके रस्सेको पकड लेते थे। इस प्रकार पहाडसे नीचे उतर कर नदी के पार होते थे। पहाडी लोग इसको जम्पा कहते हैं। जहां कहीं जम्पा बांध सकनेका भय था वहां वह लोग बन्दूकची तीरन्दाज और करारे आदमी रखकर निश्चिन्त हो बैठे थे।

बहादुरखांने ज़ाले (१) बनाकर एक रात ८० वीरोंको उनमें बिठाया और पानीसे उतरना चाहा। परन्तु पानी बडे वेगसे बहता था इसलिये जाले बह गये। ६८ वीर डूब गये और १० तैर कर निकल आये। दो उधर जाकर शत्रुओंके हाथ पडगये। इस तरह दिलावरखां ४ महीने १० दिन तक भिंडरकोटमें जमकर नदीसे उतरनेका यत्न करता रहा परन्तु कुछ न हुआ। निदान एक ज़मींदारके रस्ता बतानेसे एक ऐसी जगह पर जम्पा बांधा

(१) नाव।

गया जहांका सन्देह शत्रुओंको न था और दिलावरखांका बेटा जलाल २०० पठानों और बादशाही बन्दोंको लेकर रातके समय नदीसे कुशलपूर्वक पार होगया। तडकेही राजाके सिर पर पहुंच कर रणसींगा बजाने लगा। राजाके नौकर जो कुछ सोते और कुछ जागते थे घबराकर निकले। उनमेंसे कुछ तो मारे गये और बाकी भाग निकले। उस गडबडमें एक सिपाही राजा तक जापहुंचा और तलवार मारने लगा। राजा चिल्लाया कि मैं राजा हूं मुझे जीता दिलावरखांके पास ले चल। यह सुनकर सिपाहियोंने राजा को बांध लिया। राजाके पकडे जातेही उसके भाई बन्धु सब इधर उधर छिप गये। दिलावरखां विजय घोष सुनतेही ईश्वरका धन्यवाद करके नदीसे उतरा और उस मुल्कको राजधानी मंडल बदर में जो नदीसे ३ कोस थी जापहुचा।

जम्मूके राजा संग्राम और राजा बासूके बेटे सूरजमलकी बेटियां इस राजाको ब्याही थीं संग्रामकी बेटीसे बेटे भी हुए थे। फतह होनेसे पहले उसने अपना कुटुम्ब जसवां(१)के राजा और दूसरे जमींदारोंके पास भेज दिया था।

दिलावरखां बदशाहकी सवारीके पास आपहुंचने पर, बादशाहके हुक्मसे राजाको लेकर चौखट चूमनेको रवाना हुआ और नसरुल्लह अरबको बहुतसे सवार और पैदलों सहित उस देशके जाबते पर छोड गया।

किश्तवारका वृत्तान्त—बादशाह लिखता है—"किश्तवारमें गेहूं जव मसूर और उडद बहुत उपजते हैं। पर शाली (धान) कशमीर से बहुत कम होता है। यहांकी केसर कशमीरकी केसरसे उत्तम है और खरबूजा कशमीर कासाही होता है। अंगूर शफ्तालू जरदालू और अमरूद खट्टे होते हैं। यदि उनकी सम्हालकी जाय तो शायद अच्छे होनेलगें"।

---

(१) जसवां एक छोटासा राज्य कांगडेके जिलेमें है।

कश्मीरके हाकिमोंके रुपयेका नाम सहंसी था। वह १॥ सहंसी यहां एक रुपयेमें लेते हैं। १५ सहंसी जो दस रुपयेकी होती हैं लेन देनमें बादशाही एक मोहरकी गिनी जाती हैं। हिन्दुस्तानके दो सेरको यहां एक मन कहते हैं। यहां यह रीति नहीं है कि राजा खेतीका कुछ करले। वह घर पीछे ६ सहंसियां लेता है जो ४) की होती हैं। कुल केसर बहुतसे राजपूतों और ७०० तोपचियोंको तनखाहमें लगा रखी हैं जो पुराने नौकर हैं केसरकी बिक्री पर खरीदारसे एक मन (दोसेर) पीछे राजा ४) लेता है। राजाकी बडी आमदनी दंडसे होती है जो थोड़ेसे अपराधपर भी बहुत सा लेलिया जाता है। जिस मनुष्यको धन सम्पत्ति से सम्पन्न देखते हैं किसी न किसी बहानेसे उसका सर्वस्व छीनलेते है। राजाकी आमदनी सब मिलाकर एक लाख रुपयेके लगभग है। काम पड़नेपर ६।७ सहस्र पैदल इकट्ठे होजाते है घोडे बहुत कम है। राजा और उसके सरदारोंके पास कोई ५० घोड़े हों तो हों। एक वर्षकी उपज दिलावरखांको इनाममें दीगई है जो अटकलसे जहांगीरी जाबते (प्रबन्ध) के अनुसार हजारी जात हजार सवारकी जागीरके बराबर होगी। जब दीवानलोग निश्चय करके जागीरदारकी तनखाहमें जमा लगावेंगे तब यथार्थ रूपसे विदित होगा कि कितनी आमदनीकी जगह है।"

प्रवेश—११चन्द्रवार (चैत्रवदी १२) को दोपहर दिन चढ़े बादशाहने आनन्द मंगल पूर्वक नये राजभवनमें प्रवेश किया जो तालके तटपर बना था। स्वर्गीय बादशाहके आदेशसे एक पक्का किला चूने पत्थरका बनाया गया था उसकी एक भुजा बननी बाकी थी। उसके विषयमें बादशाहने पीछेसे बनानेको लिखा है।

कश्मीरकी दूरी—हसन अब्दालसे कश्मीर इस रास्ते होकर ७५ कोस थी। २५ दिन अर्थात् १९ कूच और ६ विश्राममें यह सफर पूरा हुआ। आगरेसे यहां तक ३७६ कोस बादशाह १०२ कूच और ६६ मुकाम अर्थात् १६८ दिनोंमें पहुंचा था। साधारण स्थल मार्गसे

कश्मीर २०४॥ कोस थी।

किश्तवारका राज्य—१२ मंगलवार (चैत्रवदी १३) को दिलावरखांने बादशाहके हुक्मसे किश्तवारके कैदीराजाको लाकर राज द्वारकी भूमि चूमी। बादशाह लिखता है—"राजा कुरूप नहीं है। आदमी भी सभ्य जानपडता है। हिन्दुस्तानियों कैसे वस्त्र पहने है। हिन्दी और काश्मीरी बोलता है। मैंने कहा अपराधी होने पर भी जो तू अपने बालबच्चोंको सेवामें लेआवेगा तो कैदसे छूटकर इस विशालराज्यकी छत्रछायामें सुखसे रहेगा, नहीं तो हिन्दुस्थानके किसी किलेमें जिन्दगी भर कैद रहेगा। उसने विनयकी कि बाल बच्चोंको सेवामें लेआऊंगा और जैसी आज्ञा होगी पालन करूंगा।"

काश्मीरकी कथा—बादशाह लिखता है—कश्मीर चौथी इकलीममें है। इसकी चौडाई मध्यरेखासे ३५ और लम्बाई सफेद-टापुओंसे १०५ अंश है। प्राचीन समयसे यह देश राजोंके अधिकार से था जिनका राज्य चार हजार वर्ष रहा। उनके नाम और वृत्तान्त राजतरंगिणीमें सविस्तर लिखे हैं। उसका उलथा स्वर्गवासी श्रीमानकी आज्ञानुसार हिन्दीसे फारसीमें होचुका है। सन ७१२ (१) में मुसलमानी धर्मका प्रकाश हुआ। ३२ मुसलमानोंने १७२ वर्ष इसदेशको भोगा। फिर सन ९९४ (२) में स्वर्गवासी श्रीमानने इसको विजय किया। तबसे ३५ वर्ष हुए यह हमारे कर्मचारियोंके अधिकारमें चला आता है।

कश्मीर लम्बाईमें भोलवासकी घाटीसे फरोतर तक ५६ कोस जहांगीरी है और चौडाईमें २७ कोससे अधिक तथा १० से न्यून नहीं है। अबुलफजलने अकबरनामेमें अटकलसे लिखा है कि कश्मीरकी लम्बाई कृष्णगगासे फरोतर तक १२० कोस है और चौडाई १० कोससे २५ तक। मैंने निश्चय करनेके लिये कई विश्वास योग्य कार्य कुशल मनुष्योंको कहा कि लम्बाई चौडाईको जरीबसे

(१) संवत् १३६९।

(२) संवत् १६४२+४३।

मापलें तो ठीक परिमाण लिखा जावे। शेखने जिसको १२० कोस लिखा था वह ६७ कोस निकला। हर देशकी सीमा वही होती है जहां तक उसकी बोली बोली जाय। इसलिये भोलवाससे जो क्षणगंगासे ११ कोस इधर है कश्मीरकी सीमा ठहराई गई। इस लेखेसे उसकी लम्बाई ५६ कोस हुई। चौड़ाईमें २ कोससे अधिक अन्तर नहीं निकला। मेरे राज्यमें जो कोस प्रचलित है वह उसी मापका है जो स्वर्गीय श्रीमानने बांधा था। प्रत्येक कोस ५००० गजका है। यह गज मुसलमानी २ गजका है। मुसलमानी गज २४ अंगुलका होता है। जहां कहीं कोस या गजका नाम आवे वहां यही प्रचलित कोस और गज समझना चाहिये।

श्रीनगर—शहरका नाम श्रीनगर है। भट नदी उसकी बस्ती के बीचमें होकर बहती है। उसके निकासको वैरनाग कहते हैं। वैरनाग शहरसे १४ कोस दक्षिणमें है। मेरे हुक्मसे उसपर एक भवन बनायागया और एक बाग लगायागया है। शहरमें लकड़ी और पत्थरके बहुत पक्के ४ पुल बने हैं। उनपर होकर लोग आते जाते हैं। पुलको इस देशमें कदल कहते हैं। शहरमें एक बहुत बड़ी मसजिद सुलतान सिकन्दरकी बनाई हुई है जो सन् ७८५ (१) में बनी थी। परन्तु बहुत वर्षों पीछे जलगई थी। सुलतान हुसैनने फिर बनवाई। अभी बनही रही थी कि सुलतानके शरीरका स्तम्भ गिरगया। निदान सन ९०९ (२) में उसके वजीर इब्राहीम बाकरीने पूरीकी उसे अबतक १२० वर्ष बीते वह अभी विद्यमान है। लम्बाई महराबसे पूर्वकी भीत तक १४५ और चौड़ाई १४४ गज है। ४ ताक हैं। दालानों और स्तम्भोंमें बढ़िया कारीगरीके बेल बूंटे काटे हुए हैं। सच यह कि कश्मीरके हाकिमोंकी कोई निशानी इससे बढ़कर नहीं रही है। मीरसैयदअली हमदानी कुछ दिनों यहां रहे थे उनकी भी

(१) संवत् १४४९—५०।

(२) संवत् १५६०—६१।

खानकाह (मठ) है। शहरके पास २ ताल है जो सालभर पानीसे भरे रहते हैं। उनके जलका स्वाद नहीं बिगड़ता है। मनुष्योंका आना जाना तथा अनाज और ईंधनका लादना लेजाना नावों द्वारा होता है। शहर और परगनोंमें ५७०० नावें हैं ७४०० केवट गिननेमें आये है।"

कशमीरमें ३० परगने हैं उसके२ विभाग माने हुए हैं। नदीके ऊपरवालेको आमराज और नीचेवालेको कामराज कहते हैं। जमीनकी जबती, और लेनदेनमें चांदी सोनेका व्यवहार नहीं है और जो है भी तो बहुत थोड़ा है। सब महसूलों और धनधान्यका हिसाब शालीकी खरवार (गौनों) से करते हैं। एक गौन ३ मन ८ सेरकी वर्त्तमान तोलसे होती है। कशमीरी दोसेरको एक मन मानते हैं। ८ सेरके चार मनको एक तक कहते हैं। कशमीरके देशकी जमा ३०६३०५० खरवार और ११ तर्क है जो नकदीके हिसाबसे ७४६७०००० (१) दामकी होती है जो इस समयके जाबतेसे ८५०० सवारोंकी जगह है।"

कशमीरमें पैठना कठिन है। उत्तम मार्ग बंभर और पगलीका है। यद्यपि बंभरका रास्ता पासका है परन्तु जो कोई कशमीरकी बहार देखना चाहे तो पगलीके रास्तेसे देख सकता है। क्योंकि दूसरे रस्ते इस ऋतुमें बर्फसे पटजाते हैं।"

यदि कशमीरकी प्रशंसाकी जाय तो बडे बड़े ग्रन्थ लिखने पड़ें। इसलिये उसके स्वरूप और विशेषताका वर्णन थोड़ेमें किया जाता है।

कशमीर एक सदा बहार बाग है या लोहेकी दीवारका एक किला है। बादशाहोंके वास्ते विलास बढ़ानेवाला एक उपवन है और फकीरोंके लिये मनोहर कुंज। सुन्दर रमने और सुरम्य झरने यहां इतने है कि गिने नहीं जासकते। नहरों और नदियोंका पार

(१) १७६६७५०) रुपये।

नहीं है। जहांतक नजर जाती है हरियाली दिखाई देती है या बहता जल।

फूल—गुलाब, बनफशा, और नरगिस यहां आपही उगते हैं। जंगलोंमें नानाप्रकारके फूल और पौदे बेशुमार हैं। बहारके दिनोंमें पहाड़ और जंगल फूलोंसे लदजाते हैं। घरोंके द्वार, दीवारों आंगन, और छतोंमें भी फूल खिलते हैं। रमनों और बनोंका तो कहनाही क्या।"

उत्तम फूल बादाम और शफ्तालूके होते हैं। पहाड़ोंके बाहर तो पहली असफंदार (फाल्गुण) से ही फूल खिलने लगते हैं और कश्मीरमें फरवरदीनके लगतेही। शहरके बागोंमें उसमहीने की नवीं दसवींसे फूलोंका अन्त, नीली चमेलीके प्रारंभसे मिला हुआ होता है। मैंने पिताके साथ केसरकी क्यारियों और पतझड ऋतुकी शोभा देखी है। अभी बहारका यौवन है। पतझडकी छटा भी उसके अवसर पर देखी जायगी।

"कश्मीरमें घर सब लकड़ियोंके होते हैं। यह दो खंड३ खंड ४ खंडके बनते हैं। छतोंको मट्टीसे पाटकर चोगाशी जातिके लालाके पौदे उसपर लगाते हैं। यह बहारके मौसिममें फूला करते है और बहुत भले लगते हैं। यह कश्मीरियोंकीही कारीगरी है। अब की साल दौलतखानेके बगीचे और जुमामसजिदकी छतमें लाला खूब फूला था। नीली चमेली बागोंमें बहुत है। सफेद चमेलीके सिवा जिसमें सुगन्ध होती है चंदनियां रंगकी चमेली होती है। उसमें बड़ी सुगन्ध होती है। यह कश्मीरमेंही होती है। गुलाब कई जातिका देखागया। सबमें सुगन्ध होती है। फिर एक फूल चंदनके रंगका गुलाबकीही किस्मसे है जिसकी महक बहुत मीठी और भीनी होती है। उसका पौदा भी गुलाबसे मिलता हुआ होता है। सौसन दो प्रकारकी होती है। एक वह जो बागोंमें फलती है। वह डहडही और हरेरंगकी होती है। दूसरी जंगली है। उसका रंग तो मंदा है परन्तु सुगंधित है। जाफरीका फूल

बड़ा और सौरभसम्पन्न होता है। उसका बूटा मनुष्यसे ऊंचा होजाता है। पर जब कभी वह बढकर फूलता है तो एक कीडा उत्पन्न होकर उसके फूलों पर मकडीका सा जाला तनता है और उसे नष्ट कर देता है। इस वर्ष भी ऐसाही हुआ।"

"फूल जो कशमीरके इलाकोंमें देखे उनकी गिनती नहीं होसकती। उनमेंसे १०० से अधिक प्रकारके फूलोंका चित्र उस्ताद मनसूरने खेंचा।"

मेवे—"स्वर्गवासी श्रीमानके शासनसे पहले शाहआलू कशमीर में नहीं होता था। मुहम्मदकुली अफशार(१) ने काबुलसे लाकर उसका पैवंद लगया। तबसे अबतक १०।१५ पौदे फले है। पैवंदी जर्दालूके भी पहले गिन्तीके वृक्ष थे। जबसे उसने पैवंद लगानेकी प्रथा इस प्रदेशमें चलाई तबसे बहुत होगये है। वास्तवमें कशमीरका जर्दालू अच्छा होताहै। काबुलके बाग शहरआरामें मिरजाई नाम एक वृक्ष था जिसके फलसे बढ़कर कोई अच्छा जर्दालू नहीं खायागया था। कशमीरके बागोंमें वैसे कई पेड़ हैं। यहां नशपाती बहुत बढ़िया होती है, काबुल तथा बदख्शांसे अच्छी और समरकंदकी नाशपातीके बराबर। कशमीरका सेव विख्यात हैं। अमरूद साधारण होता है अंगूर बहुत, पर बहुधा खट्टा और छोटा। अनार उतना नहीं है। तरबूज अति उत्तम होता है। खरबूजा बहुत मीठा और सरस। परन्तु बहुधा ऐसा होता है कि जब पकनेपर आता है तो उसमें कीड़े पडजाते है और बिगाड़ देते है। यदि इस बाधासे बचजाय तो बहुतही श्रेष्ठ हो। शहतूत नहीं होता है। तूत सब जंगलोंमें फैला हुआ है। तूतकी जडसे अंगूरकी बेलें निकलकर ऊपर चढ़जाती हैं। यह तूत खाने योग्य नहीं है। परन्तु उन कई वृक्षोंके तूत खानेके योग्य है जो बागोंमें है और जिनमें पैवन्द लगाया जाता है। तूतके पत्ते पीला(२) नामके

(१) मुगलोंकी एक जाति।

(२) रेशमका कीड़ा।

कीड़ोंके काम आते हैं। इन कीड़ोंके बीज (अंडे) कट और टीटके फूलोंमेंसे लाये जाते हैं।"

शराब और सिरका—"शराब और सिरका बहुत है परन्तु शराब खट्टी और बुरी। जब कई प्याले पिये जाते हैं तब कुछ गर्मी सिरमें आती है। सिरकेका अचार बनाते हैं। कशमीरका लहसन अच्छा होता है इसलिये सब अचारोंमें लहसनका अचार अच्छा गिना जाता है।"

अनाज—"चनेके सिवा और सब अनाज होते हैं। जो चने बोयें भी तो पहले वर्ष होजाते हैं पर दूसरे वर्ष अच्छे नहीं होते। तीसरे वर्ष मूंगके समान छोटे होजाते हैं। चावल सबसे अधिक होते हैं ३ भाग चावल और एक भाग और सब अनाज होते होंगे। कशमीरियोंकी खुराक चावलही है परन्तु चावल अच्छे नहीं होते। चावलका खुशका पकाते हैं ठंडाकरके खाते हैं उसको भत्त कहते हैं। गर्म खानेकी रीति नहीं है। टटपूंजिये आदमी तो रातके वास्ते भी कुछ भत्त रख छोड़ते हैं और दूसरेदिन भी कुछ खातेहैं। नमक हिन्दुस्तानसे लाते हैं। भत्तमें नमक डालनेकी प्रथा नहीं है। साग पानीमें उबालते हैं और स्वाद पलटनेके लिये उसमें कुछ नमक डालकर भत्तके साथ खाते हैं। जो लोग स्वादी होते हैं वह कुछ अखरोटका तेल सागमें डाल लेते हैं। अखरोटका तेल शीघ्रही कड़वा और बेस्वाद होजाता है। गायका घी भी ताजा ताजा मक्खनसे निकालकर सागमें डालते हैं और उसको कशमीरी भाषामें सदापाक कहते हैं। यहांकी हवा ठंडी और सीली है जिससे घी तीन चार दिन पीछेही बिगड़ जाता है। यहां भैंस नहीं होती है, गाय भी छोटी और दुबली होती है। गेहूं छोटा और कम मैदेका होता है रोटी खानेकी रीति नहीं है।"

पशु पक्षी—"बकरी बिना दुंबेकी पहाड़ी होती है हिन्दुस्तानी उसको हिन्दू कहते हैं। उसका मांस कोमल और स्वाद होता है। मुर्गी कुंज मुर्गाबी और सरिवे वगैरा बहुत होते हैं। मच्छी

सब प्रकारकी पोलवादार और विना पोलककी होती है, परन्तु बुरी।"

कपड़े—"कापडे पशमीने अर्थात् ऊनके होते हैं। स्त्री पुरुष ऊनका कुरता पहनते हैं उसको पट्टू कहते हैं। उनका यह विश्वास है कि जो पट्टू नहीं पहनें तो वायु लग जावे और उसके विना भोजन पचना भी सम्भव नहीं है। कश्मीरका शाल जिसका नाम स्वर्गवासी श्रीमानने परमनरम रखा है स्वयं इतना प्रसिद्ध होचुका है कि उसकी तारीफ़की कुछ आवश्यकता नहीं है। दूसरे नम्बर पर थुरमा है जो शालसे मोटा और मुलायम होता है। फिर दरमा है, गधे और कुत्तेकी झूल जैसा, उसको विछौने पर डालते हैं। शालके सिवा और सब ऊनी कपड़े तिव्वतमें अच्छे होते हैं। शालकी ऊन भी तिव्वतसे आती है। परन्तु वहां उसको नहीं बनासकते हैं। शालकी ऊन जिस बकरेसे लीजाती है वह तिव्वतमेंही होते हैं। कश्मीरमें शालकी ऊनसे पट्टू भी बुनते हैं। दोशालोंको तूमकर भी बनात जैसी बना लेते हैं। यह बरसाती कपडे बनानेके लिये बुरी नहीं है।"

मनुष्य—"कश्मीरी सिर मुंड़ाते हैं। साधारण स्त्रियोंमें अच्छे और धोये हुए कपड़े पहननेकी रीति नहीं है। पट्टूका कुरता ३।४ वर्षतक पहना करती हैं। कोरे पट्टूको मसलकर कुरता सीती हैं फटजानेतक भी उसके पानी नहीं लगता। इजार नहीं पहनतीं। लम्बा और चौडा कुरता जो सिरसे लेकर पावों तक पडा रहता है पहना जाता है। बहुधा घर पानीके ऊपरही है तो भी पानीकी एक बून्द उनके बदनसे नहीं लगती। जैसी भीतरसे मैली है वैसीही बाहरसे भी है।"

कारीगरी—"मिरजा हैदरके समयमें कारीगर अच्छे हुए हैं संगीतकी भी शोभा बढी थी। कमानचा, बांसुरी, जन्तर क़ानून, चंग, और डफका प्रचार हुआ। पहले कमानचे जैसा एक बाजा था राग कश्मीरी बोली और हिन्दी स्वरोंमें

गाये जाते थे, सो भी दो तीन स्वरोंमें ही। बहुधा तो एकही स्वर अलापते थे। सच यह है कि कशमीरके सुधारमें मिरजा हैदरने बड़ा श्रम किया।"

सवारी—स्वर्गवासी श्रीमानका राज्य होनेसे पहले यहांके आदमी गौंट (टट्टू) परही चढ़ते थे, बड़े घोड़े नहीं होते थे। परन्तु बाहरसे इराकी और तुरकी घोड़े हाकिमोंके वास्ते सौगातमें लाते थे। गौंट ऐसा टट्टू होता है कि उसकी चारों काखें धरती से कुछही ऊपर रहती हैं। हिन्दुस्थानके सब पहाड़ोंमें बहुत मिलता है। बहुधा अड़ियल और मट्ठा होता है। जब यह ईश्वर रचित उपवन उक्त श्रीमानकी राजलक्ष्मी और सुशिक्षासे शोभायमान हुआ तो बहुतसे घरानोंको इस सूबेमें जागीरें मिलीं। इराकी और तुरकी घोडे और घोडियां बच्चे लेनेके लिये उन्हें सौंपी गई और सिपाहियोंने स्वयं प्रयत्न किया। थोड़ी ही अवधिमें घोडे उत्पन्न होगये। अब कशमीरी घोड़े २००) और ३००)तक बिकते हैं। कभी कोई १०००) का भी निकल आता है।"

धर्म—"इस देशमें जो व्यापारी और कारीगर हैं उनमें बहुधा सुन्नी मुसलमान हैं और सिपाही शीआ इमामिया हैं। कुछ लोग नूरबखशी हैं कुछ फकीर हैं जिनको ऋषि कहते हैं। उनमें कुछ विद्या और ज्ञान तो नहीं परन्तु सीधे सादे हैं। किसीको बुरा नहीं कहते हैं न कुछ मांगते हैं न कहीं जाते हैं। मांस नहीं खाते व्याह नहीं करते, सदा जंगलमें मेवोंके वृक्ष इस अभिप्रायसे लगाया करते हैं कि लोगोंका उपकार हो। आप अपना कुछ स्वार्थ नहीं करते। यह २००० आदमी होंगे। ब्राह्मण बहुत हैं जो अनादिकालसे इस देशमें रहते आये हैं। कशमीरी बोली बोलते हैं। देखनेमें तो मुसलमानोंसे अलग नहीं जाने जाते, लेकिन संस्कृत भाषाके ग्रन्थ रखते और पढते हैं और मूर्त्ति पूजाकी जो विधि है उसका विधान करते हैं। संस्कृत एक भाषा है जिसमें हिन्दुस्तानके पण्डित ग्रन्थ रचते हैं और उसको बहुत आदर देते हैं।"

मन्दिर—"बड़े बड़े मन्दिर जो मुसलमानी फैलनेसे पहले बने थे वैसेही खड़े हैं। यह सब पत्थरके हैं नीवसे लेकर छततक छिले हुए बडे बडे पत्थर तीस तीस और चालीस चालीस मनके नीचे ऊपर रखे हुए है।"

पहाड—शहरके पासही एक पहाडी है। जिसको कोहेमारा और हरी पर्वत भी कहते हैं। उसके पूर्व जडल नाम पहाड है। उसका गिर्दाव कुछ ऊपर ६॥ कोसका नापागया है। वैकुंठवासी श्रीमानने हुक्म दिया था कि यहां एक सुदृढ दुर्ग चूने और पत्थर का बनाया जावे। वह अब मेरे राज्यमें सम्पूर्ण होनेवाला है। वह पहाडी उसके बीचमें आगई है। किलेका कोट उसके चौफेर फिर गया है। वह उस तलावसे भी जामिला है जिसपर दौलतखाने अर्थात् राजभवन बने हैं। दौलतखानेमें एक बागीचा है। उसके बीचमें छोटसा एक कमरा है जिसमें मेरे पूज्य पिता बहुधा बैठते थे। यह इस समय बहुत उदास और शोभाहीन देखनेमें आया। मुझे बहुत बुरा लगा। क्योंकि उनके विराजनेका स्थान मेरा परम पूज्य धाम है। मैंने हुक्म दिया कि बागीचेके सुधारने और मकानों के बनानेमें अति यत्न करें। थोड़े दिनोंमें उसकी और ही शोभा निकल आई। बागीचेमें ३२ गज लम्बा चौड़ा एक चबूतरा ३ टुकड़ोंका तैयार होगया। मकान नये सिरेसे बनकर विचित्र चित्र-कारोंकी चित्रकारीसे चीनकी चित्रशालाको चकित करने लगे। मैंने इस बागीचेका नाम नूरअफ़ज़ा रखा।"

तिब्बतके जमीन्दारोंकी भेट—१५ शुक्रवार (चैत्रसुदी १ संवत् १६७७) को तिब्बतके जमींदारकी भेटमें कुतास(१) जातिकी २ गायें देखकर बादशाह लिखता है "आकृतिमें भैंससे बहुत मिलती हैं। सब शरीर बालोंसे ढकाहुआ है। ठंडे देशोंके पशु ऐसेही होते हैं। जंग जातिका बकरा जो भक्कर और गर्म पहाडोंसे लाया गया था बहुत सुन्दर था। उसके बाल भी थोडे थे। जो इन पहाड़ों

(१) सुरागाय।

मे होते है। वह बर्फ और जाड़ा बहुत पहडनेसे कुरूप और केशोंसे भरे हुए होते हैं। कशमीरी जंगको कपिल कहते हैं और इन्हीं दिनोंमें कस्तूरिया हरन भी लायागया था। मैंने उसका मांस नहीं खाया था, इसलिये पकवाया। बहुत बेस्वाद पाया। जंगली चौपायों में किसीका मांस ऐसा बुरा और बदमजा नहीं है। गीली कस्तूरीमें तो कुछ सुगन्ध नहीं होती है पर सूखे पीछे सुगंधित होजाती है।"

भाक और शालामार—"मैं इन दो तीन दिनोंमें नावपर बैठकर भाक और शालामारके बागोंकी बहारसे मुदित होता रहा। भाक एक परगनेका नाम है जो डलके आसपास है। ऐसे ही शालामार भी उसीके समीप है। यहां एक सुरम्य सरिता बहती है जो पहाड़से आकर डलके तालावमें गिरती है। मैंने पुत्र खुर्रमसे कहकर यहां घाट बनवा दिये। अब वह एक ऐसा जलाशय बनगया जिसे देखकर आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। यह स्थान कशमीरके देखने योग्य स्थानोंमेंसे है।"

शाहजादे शुजाका गिरना—१७ रविवार (चैत्रसुदी ३) को शाहजादा शुजा जो अभी ४ वर्षका था दौलतखानेके ७ गज ऊंचे दरवाजेसे नीचेको झांकता हुआ जमीन पर गिर पड़ा। पर नीचे टाटलपेटा हुआ रखा था और एक फरीश भी बैठा था इससे बचाव होगया। चोट कुछ न आई। खिदमतिये प्यादोंका सरदार राय मान झरोकेके नीचे खड़ा था। उसने दौड़कर गोदमें उठालिया और ऊपर लेगया। उस समय शाहजादेने इतना पूछा कि मुझे कहां लिये जाता है। रायमानने कहा हजरतकी खिदमतमें। फिर वह अचेत होगया। बादशाह उस समय सोता था। यह समाचार सुनतेही घबराकर बाहर आया। देरतक उसको गोदमें लिये रहा। उसके बच जाने पर परमेश्वरकी बहुत स्तुतिकी और दानपुण्य करके कहा कि इस शहरमें जो गरीब और फकीर रहते हैं उनको मेरे सामने लावें मैं यथायोग्य सबकी जीविका कर दूं।

जोतकराय ज्योतिषी—बादशाह लिखता है—"इस दुर्घटनाके

३।४ महीने पहले जोतकरायने जो बडा निपुण ज्योतिषी है मुझसे प्रत्यक्ष कह दिया था, शाहजादेकी जन्मकुंडलीसे ऐसा जाननेमें आया है कि यह तीन चार महीने उनको भारी हैं। संभव है कि किसी ऊंची जगहसे गिरपड़ें। पर प्राणकी हानि न होगी। उसका कहना अनेकबार सही निकल चुका था। इस वास्ते इसकी आशंका निरन्तर चित्तमें बनी रहती थी। विकट रास्तों और दुर्गम घाटियों में पलभर भी मैं उससे गाफिल न रहता था। सदैव आंखोंके आगे रखता था। परन्तु यह तो होनेवाली बात थी उसको धायें और खिलाने वालियां भी असावधान होगईं। पर ईश्वरकी कृपासे कुशल रही।

अलहदाद अफगान—२१ गुरुवार (चैत्रसुदी ७) को तारीकी का बेटा अलहदाद पठान अपने पिछले कामोंसे पछताकर दरगाह में उपस्थित हुआ। बादशाहने एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे उसके अपराध क्षमाकरके अगला मनसब अढाई हजारी जात और १२०० सवारोंका बहाल करदिया।

लाला चौगासी—बादशाह चौगासी जातिके लालाको जुमा मसजिदकी छतपर खूब खिला हुआ सुनकर २३ (चैत्रसुदी ८) को उसको बहार देखनेके लिये गया। लिखता है—"मसजिदके एक तरफ खूब फुलवारी फूल रही थी।"

जगतसिंहको मऊधमरीका परगना—मऊधमरीका परगना पहले राजा बासूको दियागया था उसके पीछे सूरजमल भोगता था। अब बादशाहने उसके भाई जगतसिंहको जिसे टीका नहीं मिला था इनायत कर दिया।

राजा संग्रामको जम्मूका परगना—जम्मूका परगना राजासंग्राम को इनायत हुआ।

छठींवहिश्त।

१ सोमवार (वैशाखवदी ४) को बादशाह खुर्रमके यहां जाकर

उसके हम्मासमें नहाया। बाहर आनेपर उसने जो भेट धरी थी उसमें से थोडीसी उसका मन रखनेको लेली।

नूरपुर—७ रविवार (वैशाख वदी ९) को बादशाह चकोरोंका शिकार खेलने हैदर मलिकके गांव चारदरेमें गया। जहां पानी बह रहा था और चनारके बडे बडे वृक्ष थे। बादशाहने प्रसन्न होकर उस गांवका नाम हैदरमलिककी प्रार्थनासे नूरपुर रखा।

हलथल—रास्तेमें बादशाहने हलथल नाम एक वृक्ष देखा जिस की एक शाखाके हिलानेसे सारा वृक्ष हिलने लगता था। लोगोंका विश्वास था कि यह गुण केवल उसीमें है। परन्तु बादशाहको उसी गांवमें वैसाही एक और वृक्ष भी मिलगया जो उसी प्रकारसे हिलता था। बादशाहने यह सिद्ध किया कि यह बात इस जातिके सब वृक्षोंमें है अकेले इसीमें नहीं है।

चनारका एक विचित्र वृक्ष—बादशाह लिखता है—"शहरसे २॥ कोस हिन्दुस्थानकी तर्फ गांव रावलपुरमें चनारका एक पोला वृक्ष ऐसा है कि २० वर्ष पहले मैं ५ कसे हुए घोड़ों और दो ख्वाजासराओं सहित उसके अन्दर घुस गया था। परन्तु जब यह बात किसी प्रसंगसे कही जाती थी तो लोग इसको असम्भव समझते थे। अब मैंने कुछ लोगोंको उसकी पोलमें दाखिल किया तो पिछली बातका प्रमाण मिलगया। अकबरनामेमें लिखा है कि स्वर्गवासी श्रीमानने ३४ मनुष्योंको उसके अन्दर लेजाकर पास पास बिठाया था।"

पृथ्वीचन्दकी मृत्यु—इसी दिन बादशाहसे अर्ज हुई कि राय मनोहरका बेटा पृथ्वीचन्द जो कांगड़ेकी सेनाके सहायकोंमें था निरर्थक युद्ध करके काम आया।

देवीचन्द गुलेरीकी पदवृद्धि—११ (वैशाख वदी १३) गुरुवारको बादशाहने कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये। उनमें देवीचन्द गुलेरी डेढ हजारी जात और ५०० सवारोंके मनसब पर पहुंचा।

ठट्ठेकी सूबेदारी—२५ गुरुवार (वैशाख वदी १३) को बादशाह

ने भक्करके फौजदार सैयद वायजीद बुखारीको ठट्टेकी सूबेदारी दी। उसका मनसब बढ़ाकर दोहजारी जात पन्द्रहसौ सवारोंका बार दिया और झण्डा भी दिया।

अनीराय सिंहदलन—महाबतखांकी प्रार्थनासे अनीराय सिंहदलन भी बंगशके सूबेमें भेजा गया।

अम्बरका उपद्रव—सेनापति खानखानां और दूसरे शुभचिन्तकोंकी विनयपत्रिकाओंसे बादशाहको विदित हुआ कि अम्बर बादशाही सवारीको दूर देखकर दुष्टतासे अपनी प्रतिज्ञा भूल गया है और बादशाही सीमामें हस्तक्षेप करने लगा है। उन्होंने खजाना भी मांगा था इसलिये बादशाहने बीस लाख रुपये खानखानांके पास भेज देनेका हुक्म राजधानी आगरेके कोशाध्यक्षोंको लिख दिया। इसके पीछे यह समाचार भी पहुंचे कि अमीर थानोंको छोड़कर दाराबखांके पास चले आये। बरगी लोग लशकरके आसपास सजे हुए फिरते हैं। खंजरखां अहमदनगरके किले में घिर गया है। अबतक दो तीन बार बादशाही बन्दे वैरियोंसे भिड चुके हैं। जो हार हार कर भागे हैं। निदान दाराबखां सरस सैंधवोंके सवारोंके साथ चढ़कर शत्रुओंकी स्कन्धावार पर गया जहां बड़ा भारी युद्ध हुआ। शत्रु हारकर भाग गये। उनकी छावनी लुट गई। विजयी सेना अपने लशकरको लौट आई। फिर अनाजके अभावसे अमीर रोहनगढके घाटेसे उतर आये कि अनाज अनायासही पहुंचाता रहे और सिपाही सङ्कटमें न पड़ें। बालापुर में सेना सजाई गई दुशमन ढिठाई करके वहां भी दिखाई दिया राजा बरसिंह देव कितनेही वीरोंसे आगे बढा और बहुतोंको मार कर मनसूर नाम हबशीको जीता पकड लाया। उसे हाथीके पैरों में डालनेकी बडी चेष्टा की गई, पर वह अपनी जगहसे हिला तक नहीं, वहीं जमा खड़ा रहा। तब राजाने उसका सिर उडा देनेका हुक्म देदिया।

सुखनाग—३०मंगल (ज्येष्ठबदी३) को बादशाह सुखनाग देखने

को गया। यह एक बडा सुरम्य स्थान एक घाटीमें था। पानी ऊपर से गिरता था। बर्फ पडी हुई थी। बादशाहने गुरुवारका उत्सव उसी फुलवारमें किया और मात्राके प्याले उस जलाशय पर पान किये। यहां पानीमें उसको साज जैसा एक जानवार दिखाई दिया जिसके विषयमें लिखता है—"साज तो काले रंगका होता है जिस पर सफेद तिल होते हैं। इसका रंग बुलबुलका सा है। सफेद छींटों वाला है। पानीमें डुबकी लगाता है और बहुत देर तक भीतर रह कर दूसरी जगह सिर जा निकालता है। मैंने दो तीनके पकड़नेकी आज्ञा दी। मै देखा चाहता था कि उनके पांव जलकूकडी के समान चमड़ेसे मढ़े है वा जङ्गली जन्तुओंकी भांति खुले हुए है। दो पकड़कर लाये गये। एक तो तुरन्त मर गया। दूसरेके पंजे जलकूकड़ीकेसे न थे। मैंने नादिरुलअस्र उस्ताद मनसूर चित्रकारको फरमाया कि इसकी तसवीर खेंचले। कश्मीरी इसको गलकर कहते है अर्थात् पानीका साज।

न्याय—इन दिनों काजी और मीरअदलने बादशाहसे प्रार्थना की कि हकीम अलीका बेटा अबदुलवहाब लाहोरके कई सैयदों पर अस्सी हजार रुपयेका दावा करता है और एक खत नूरुल्लह काजी की मोहरका दिखाकर कहता है कि यह रुपये मेरे पिताने इनके बाप सैयद वलीको अमानत सौंपे थे। सैयद नटते हैं। यदि आज्ञा हो तो हकीमका बेटा कुरान उठाकर अपनी धरोहर उनसे लेले। बादशाहने कहा कि जैसा शरीअतकी आज्ञा हो वैसा करें। दूसरे दिन मोतमिदखांने बादशाहसे प्रार्थना की कि सैयद बहुत चीखते चिल्लाते है मामला भी बड़ा है। इसके निर्णय करनेमें अधिक विचार किया जावे तो ठीक होगा। बादशाहने फरमाया कि आसफखां इस झगडेका निर्णय अति सूक्ष्मदृष्टि और दूरदर्शितासे करे। और ऐसा करे कि लेशमात्र भी भ्रम और सन्देह न रहे। जो इस पर भी यथार्थ रूपसे न्याय न हो तो हम अपने सामने करेंगे। इस बातके सुननेसे हकीमके बेटेका जी घबराया। उसने अपने कई

मिर्ज़ोंको बीचमें डालकर सन्धिकी बात चलाई। कहा—यदि सैयद आसफखांके पास यह अभियोग न लेजावें तो मैं लिख दूंगा कि मुझे इनसे कुछ पाना नहीं है। आसफखां जब उसको बुलाता था कोई न कोई बहाना करके टाल जाता था क्योंकि चोर डरपोक भी होता है। निदान उसने लादावा लिखकर अपने एक स्नेहीको सौंप दिया। आसफखांको यह समाचार लगा तो उसने उसे जबर-दस्ती बुलाया। पूछताछ की तो उसे स्वीकार करना पड़ा कि वह खत मेरे एक सेवकने लिखा है वही साची बना है और उसीने मुझे बहकाया है। यही उसने लिख भी दिया। आसफखांने सब व्यवस्था बादशाहसे निवेदन की। बादशाहने र्कीमकेबेटेकी जागीर उतारली और उसे भी चित्तसे उतार दिया। सैयदोंको प्रतिष्ठापूर्वक लाहोरकी ओर विदा किया।

खुरदाद महीना।

बरसिंह देवका पांच हजारी होना—८ गुरुवार (ज्येष्ठ बदी ११) को बादशाहने राजा बरसिंह देव बुन्देलेको पांचहजारी जात पांच हजार सवारोंका उच्च पद दिया।

अशकन—बादशाह लिखता है—कशमीरमें सबसे पहले आने वाला मेवा अशकन है। यह खट्टा मीठा होता है। आलू बालूसे छोटा रस और कोमलतामें बहुत बढ़िया शराबके नशेमें ३ या ४ से अधिक आलूबालू नहीं खासकते। पर यह रात दिनमें १०० तक चख सकते हैं विशेषकर पैवन्दी। मैंने हुक्म दिया है कि आजसे अशकनको खुशकुन (प्रसन्न करनेवाला) कहा करें। जो सब में बड़ा था वह तोलमें २। माशे हुआ।

शाह आलू—शाह आलू ४ उर्दी बहिश्त (वैशाख बदी ६) को चनेके बराबर निकला था २७ (वैशाख सुदी १५) को उसने रंग बदला। १५ खुरदाद (ज्येष्ठ सुदी ४) को पक गया और नया किया गया। शाह आलू मुझे बहुत अच्छा लगता है। ४ हद

नूर अफजा बागमें फले थे। मैंने एकका शीरींबार(१) दूसरेका खुशगवार(२), तीसरेका जिनमें सबसे अधिक फल लगेथे पुरबार(३) और चौथेका जो कम फला था कमबार(४) नाम रखा। एक वृक्ष खुर्रमके बागीचेमें फला था उसका नाम शाहबार(५) और एक नये पौदेका नाम जो इशरतअफजा बागीचेमें था, नौबार(६) नियत हुआ। नित्य उतनेही फल जो प्यालेको मजेदार बनानेके लिये जरूरी होते अपने हाथसे तोड़ लेता था। यद्यपि काबुलसे भी डाकचौकीमें आते थे परन्तु अपने हाथसे घरके बागीचेके ताजा ताजा तोड़नेमें औरही मजा था। काश्मीरका शाहआलू काबुलवाले से कुछ कम नहीं होता वरञ्च बढकर होता है। जो सबमें बड़ा था वह तोलमें एक टांक और पांच रत्ती हुआ।

बादशाहबानू बेगमकी मृत्यु—२१(७) मंगलवार (ज्येष्ठ सुदी ९।१०) को बादशाहबानू बेगमका देहान्त होगया। बादशाह लिखता है—"इस हृदयविदारक दुर्घटनाका दुःख मेरे दिलमें बहुत हुआ। परमेश्वर उसे शान्ति दे। जोतकरायने दो महीने पहले कई पासके सेवकोंसे कह दिया था कि बेगमोंमेंसे एक उच्चासनासीना का अभाव होजायगा। यह बात उसने मेरे जन्मपत्रसे जानी थी। सही हुई।"

बंगशमें हानि—जब महसूल उगाहनेका समय आया तो महाबतखांने सेनाको हुक्म दिया कि पहाडोंमें जाकर पठानोंकी खेती घोडोंको चरा दें और पठानोंके लूटने मारने और बांधनेमें कसर न रखें। पर जब सेना घाटेके नीचे पहुंची तो पठानोंने चारों ओर से उमडकर घाटेका मुंह बन्द कर दिया। तब जलालखांने जो भुक्तभोगी बूढा था, कहा कि दो तीन दिन ठहर जाओ, पठान जो

(१) मीठे फलवाला (२) सुस्वादु (३) फलसे भरा हुआ (४) कम फलवाला (५) बादशाहके योग्य (६) नये फलवाला (७) मंगल को २१ नहीं २० थी २१ बुधको थी।

थोड़ासा आटा अपनी पीठ पर लादकर लाये हैं उसको खाकर आप ही चले जायंगे। तब हम लोग सहजमें इस विकट घाटीसे उतर जायंगे। परन्तु इज्जतखांने चञ्चलतासे यह बात न मानी और बारहके कुछ सैयदोंको लेकर आगे बढ़ा। पठानोंने उसको घेर लिया। वह वीरता पूर्वक उनसे लड़कर मारा गया। उसके जाते ही जलालखां गक्कड़ मसऊद, बीजन आदि बादशाही बन्दे भी घाटी पर चढने लगे थे, उनको पठानोंने ऊपरसे तीर और पत्थर फेंककर मार दिया। बादशाह लिखता है—"एक इज्जतखांकी चपलतासे सेनाको ऐसा धक्का लगा!"

महाबतखांने यह भयप्रद समाचार सुनकर नई सेना सहायता को भेजी और फिरसे थाने बिठाकर पठानोंको दण्ड देनेका प्रयत्न किया।

बादशाहने जलालखांके बेटे अकबरकुलीको कांगडेकी फौज मेंसे बुलाकर हजारी जात १००० सवारोंका मनसब तथा उसका मुल्क जागीरमें दिया और घोड़ा तथा सिरोपाव देकर लशकरको सहायताको भेजा।

इज्जतखांका बेटा बहुत छोटा था। तोभी इज्जतखांकी सेवाके लिहाजसे उसका मनसब जागीर सहित उस लड़केके नाम करदिया। जिससे उसके पीछे रहे हुए लोग बिखरने न पावें और दूसरोंको भी आशा बढ़े।

शैख अहमदको छोडना—इसी दिन बादशाहने शैख अहमद सरहिन्दीको जो ढोंग फैलानेके दोषमें पकडा गया था छोडदिया। खिलअत और १०००) खर्च देकर कहा कि चाहे रहे चाहे जावे। उसने प्रार्थना की कि यह सजा मेरे वास्ते एक शिक्षा थी। मेरा कल्याण सेवामें रहनेसेही है।

चित्रशाला—बागमें एक चित्रशाला थी बादशाहने उसके बनाने का हुक्म दिया था। वह इन दिनों विचित्र चित्रकारोंके चित्रोंसे भूषित होकर प्रस्तुत हुई। बादशाह लिखता है—"ऊपरको ये

में जन्नतमकानी(१), अर्श आशियानी(२) का, उनके सामने मेरा और मेरे भाई शाह अब्बास सफवीका चित्र है। फिर मिरजा कामरां, मिरजा मुहम्मद हकीम, शाह मुराद और सुलतान दानियालके चित्र हैं। दूसरी श्रेणीमें अमीरों और निज सेवकोंकी तसवीरें हैं। चित्रशालाके बाहर कशमीरके रास्तेकी, उन मंजिलोंका नकशा उसी क्रमसे है जिस क्रमसे मैं आया हूं।

तीर महीना।

बोरियाकोबीका उत्सव—४ गुरुवार (अषाढ़ वदी १०) को बोरियाकोबी (बोरिया कूटने) का उत्सव हुआ। इस दिन कशमीरके शाह आलू होचुके थे। नूरअफजा बागीचेके ४ हर्चोंसे १५०० शाह आलू तोड़े गये। बादशाहने काशमीरके कर्मचारियोंको बागोंमें शाह आलू लगानेकी ताकीद की।

भीमको राजाकी पदवी—बादशाहने राणा अमरसिंहके बेटे भीमको राजाकी पदवी प्रदान की।

उडीसेकी सूबेदारी—१४ रविवार (अषाढ़ सुदी ६) को उडीसेकी सूबेदारी हसनअलीखां तुर्कमानको ३ हजारी २ हजार सवारके मनसब सहित मिली।

कन्दहारके हाकिमकी भेट—इसी दिन बहादुरखां कन्दहारके हाकिमके भेजे हुए ९ ईराकी घोड़े कई थान सुनहरी कपड़े तथा मखमलके और केशके दाने बादशाहको नजरसे गुजरे।

तूसीनाग—१५ चन्द्रवार (अषाढ सुदी ७) को बादशाह तूसीनाग देखनेको घाटी पर चढा। दो कोसकी खडी चढाई अति कठिनतासे चढ़ी गई। घाटी परसे उस विपिन तक एक कोस धरती ऊंची नीची थी। बादशाह लिखता है—"यद्यपि नाना प्रकारके वन फूले हुए थे परन्तु लोग यहांकी जैसी प्रशंसा करते थे वैसी देखनेमें न आई। सुना, पासही एक और घाटी खिली हुई है। मैं १८गुरुवार (अषाढसुदी१०) को उसे देखने गया। निस्सन्देह इस

(१) हुमायुं बादशाह (२) अकबर बादशाह।

फुलवारीकी जितनी प्रशंसा की जाय ठीक है। जहांतक नजर जाती थी रंग रंगके फूल फूले हुए थे। ५० तरहके फूल तो मेरे सामने चुने गये थे। सम्भव है कि और भी हों जो देखनेमें न आये। तीसरे पहर लौटे।"

एक अनोखीबात—बादशाह लिखता है—"आजकी रात अहमदनगरके घेरेका प्रसंग चल रहा था। उसमें खांनजहांने एक अजबबात कही जो पहलेभी अनेकबार सुनीगई थी। विचित्र होनेसे लिखी जाती है। जिनदिनों मेरे भाई शाहजादे दानियालने अहमदनगरके किलेको घेरा था, एकदिन किलेवालोंने मलिकमैदान नामकी तोप शाहजादेके लशकरकी ओर छोड़ी। गोला शाहजादे के डेरेके पास पड़ा। फिर वहांसे वह गोला गुंबदबांधकर शाहजादेके सभासद काजी बायजीदके घरमें जागिरा। काजीका घोड़ा ३।४ गजकी दूरीपर बंधा था। गोलेके पड़तेही घोड़ेकी जांघ जड़से उखड़कर अलग जमीनपर जापड़ी। गोला पत्थरका था और तोलमें १० मन हिन्दुस्तानी था। उसके ८० मन खुरासानी होते हैं। यह तोप इतनी बड़ी है कि उसमें एक आदमी अच्छी तरह बैठ सकता है।"

अमरदाद महीना।

कोरीमर्ग— ८ मंगलवार(१) (सावन वदी १४) को बादशाह कोरीमर्ग देखनेको गया। उसकी बहुत प्रशंसा सुनी थी। वह लिखता है —इसकी क्या प्रशंसा करूं। जहांतक दृष्टि काम देती थी रग रंगके फूलही फूलखिले दिखाईदेते थे हरियाली और फूलोंमें निर्मल जल बहरहा था। मानो यह देवरचित चित्रशालाका एक चित्रपट था। दिलकी कली इसके देखतेही खिल जाती थी। यह दूसरे बागोंसे बहुत बढ़ चढ़कर है। काशमीरके देखने योग्य बागोंमेंसे है।

---

(१) मंगलको ६ थी ८ लेखकके दोषसे लिखी गई है।

पपीहा—बादशाह लिखता है "हिन्दुस्तानमें पपीहा नाम एक प्रियवादी पक्षी है जो बरसातके दिनोंमें चित्तको विक्षिप्त करनेवाली बोलियां बोलता है। जिस प्रकार कोयल अपना अण्डा कव्वेके घोसलेमें रखदेती है और कव्वा उसमेंसे बच्चे निकालता और पालता है, वैसेही कश्मीरमें देखागया कि पपीहेने अपना अण्डा गौगाई (एक पक्षी) के घोंसलेमें रखा था और गौगाई उसके बच्चे को पालती थी।"

औरगंज(१) का दूत—औरगंजके हाकिम इज्जतखांने मुहम्मद जाहिदके हाथ अर्जी और थोड़ीसी सौगात भेजकर पिछले सम्बधों को याद दिलाई थी। बादशाहने १००० दरब दूतको दिला कर कारखानोंमें हुक्म भेज दिया कि जिन जिन पदार्थोंकी यह प्रार्थना करे वहां भेजनेके लिये वह सब तय्यार करदें।

शहरेवर महीना।

रावत शंकर(२) का बेटा मानसिंह—२ शहरेवर (भादों बदी ११.) को रावत सगरके बेटे मानसिंहको डेढ़हजारी जात और ८०० सवारोंका मनसब मिला।

कबरे दांत—बादशाहकी रुचि जौहरदार(३) चितकबरे रंगके दांतोंमें देखकर बड़े बड़े अमीर उनकी खोजमें लगे हुए थे। तूरानके ख्वाजिकलां जोयबारीके बेटे हसनके पास एक वैसाही पूरा और पक्का दांत था। अदुल्लहखां नकशबन्दीने वह लेकर बादशाह के पास भेज दिया। बादशाह उस दांतको देखकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने ख्वाजेके पास तीस हजार रुपयेकी चीजें भेजनेका हुक्म दिया।

पहाड़में हार—सुन्दरकी अर्जी पहुंची कि जौहरमल (सूरजमल) मरगया। एक जमींदार पर सेना भेजी थी। वह लौटनेके मार्गका बन्दोबस्त किये बिनाही घाटीमें घुसगई और वृथा युद्ध

(१) तूरानका एक प्रदेश। (२) सही नाम सगर था।
(३) छींटेवाला।

करके तीसरे पहर उल्टी भागी। बहुत आदमी मारेगये। जिन्होंने भागनेका कलंक न सहना चाहा वह जमकर लड़े और काम आये। उनमें शहबाजखां लोदी, जमालखां अफगानी, उसका भाई रुस्तम, और सैयद नसीब बारह आदि थे—कितनेही घायल होकर वहांसे निकले। यह भी लिखा था कि किलेवालोंने घेरेसे तंग होकर कुछ आदमी बीचमें डाले हैं और पना मांगी है।

भटके तटपरदीप मालिका—१८ गुरुवार (भादोंसुदी १४) की रातको काश्मीरियोंने भट नदीके दोनों तट पर दीपमालिकाकी थी। बादशाह लिखता है "यह एक पुरानी प्रथा है। हरसाल इसदिन धनी और निर्धन लोग जो इस दरियाके किनारे रहते हैं शबबरातकी भांति दीपक जलाते हैं। ब्राह्मणोंसे उसका कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा कि इस मितीको भट नदीका सोता निकला था। प्राचीनकालमें यह बात चली आती है कि इस दिन धनत्रिवाह का उत्सव होता है। धनका अर्थ भट और त्रिवाहका तेरह है। यह उत्सव जो शव्वालकी इस १३ (१) तारीखको करते हैं इसलिये धनत्रिवाह कहलाता है। अच्छी दीपमालिका हुई थी। नावमें बैठ कर देखी गई।"

सौर पचीय तुलादान—इसी दिन सौर पचीय जन्मदिवसके तुलादानका उत्सव हुआ बादशाह स्वर्ण आदि पदार्थोंमें तुला ५२वां वर्ष लगा।

आसफखांके घर गुरुवारका उत्सव—२६ गुरुवार (आश्विन बदी ६) को गुरुवारके उत्सवकी सभा आसफखांके घर हुई। वह बादशाहको भेट पूजा करके सम्मानित हुआ।

सुर्गाबी—बादशाह लिखता है—१ शहरेवर (भादोंबदी१०) को अल्लडके और २४ (आश्विनबदी ४) को डलके तलावसे सुर्गाबियां

(१) इस दिन १३ शव्वाल थी, परन्तु १३ शव्वालको क्या, भादोंसुदी १३ को यह त्यौहार माना जाता होगा और काश्मीरमें इस दिन त्रियोदशीही होगी।

दिखाई दी थीं। काश्मीरमें इतने प्रकारके पची हैं "१ कुलंग २ सारस ३ मोर ४ चरज ५ लगलग ६ तगदरी ७ तगदाग ८ कर-वानक ९ जर्दतिलक १० नुकरा ११ बाचरम १२ लेलूरा १३ हवा-सिल १४ मकशा १५ तकला १६ काज १७ गूंगला १८ तीतर १९ मैना २० नूनसरज २१ सूसोचा २२ हरियल २३ ढींक २४ कोमल २५ शक्करखोरा २६ सहका २७ मक्करलात २८ हंस २९ कलचिड़ी ३० टटीरी जिसका मैंने वदआवाज नाम रखा है।

इनमें जिन जिनके नाम फारसीमें मालूम नहीं थे बल्कि वह विलायतमें होते भी नहीं हैं उनके नाम हिन्दीमें लिख दिये हैं। काश्मीरमें जो पशु नहीं होते हैं उनके नाम यह हैं—

१ पीलासिंह २ चीता ३ भेड़िया ४ जंगली भैंसा ५ कालाहरन ६ चिकारा ७ कोतापाचा ८ नीलगाय ९ गोरखर १० खरगोश ११ स्याहगोश १२ जंगली बिल्ली १३ मूशक १४ करबलाई १५ गोह १६ सेई।

शफतालू—इसी दिन काबुलके शफतालू डाकमें पहुंचे। उनमें जो सबसे बड़ा था वह २४ तोले उतरा। जब तक इसका मौसिम रहा इतने पहुंचते रहे कि कितनेही अमीरों और निजबन्दोंको भी दिये जाते थे।

वैरनाग और किश्तवारमें हानि—२७ शुक्रवार (आश्विनवदी ७) को बादशाह वैरनाग देखनेको ५ कोस नावमें जाकर गांव पानपुर के पास उतरा। इसीदिन किश्तवारसे यह अशुभ समाचार आयाकि दिलावरखां किश्तवारमें नसरुल्लह अरबको छोड़ आया था। उसने वहांके लोगोंको बहुत सताया और जो उसके सहाय थे उन्हें छुट्टी देदी क्योंकि वह मनसब बढानेके लालचसे दरगाहमें आना चाहते थे। इस प्रकार जब उसके पास थोड़ेसे लोग रहगये तो वहांके जमींदारोंने जो उससे जले हुए थे पुलको जलाकर बलवा कर दिया। नसरुल्लह घिरकर दो तीन दिन तो बचा रहा। पीछे अनाजकी कमीसे निकलकर लड़ा और बहुतसे साथियों सहित

मारा गया। बाकी लोग पकडे गये।" बादशाहने दिलावरखांके बेटे जलालको हजारी जात और ६०० सवारोंका मनसब, उसके नौकर, तथा कशमीरके सूबेकी कुछ सेना, बहुतसे जमींदार और बन्दूकची साथ, देकर उन बलवाइयोंको दंड देनेके लिये विदा किया और जम्मूके जमींदार संग्रामको हुक्म दिया कि अपने लोगों को लेकर जम्मूके पहाडी रस्तेसे वहां जावे।

काकापुर—२८ शनिवार (आश्विन बदी ८) को बादशाह ४॥ कोस चलकर काकापुरसे एक कोस भटके तटमें उतरा। वह लिखता है काकापुरकी भंग विख्यात है दरियाके किनारे पर उसके जंगलके जंगल हैं।"

पंचहजारा—२९ रविवार (आश्विनबदी ९) को पंचहजारामें डेरा लगा। यह गांव शाहपरवेजको दिया हुआ था। उसके वकीलों ने पानीके ऊपर बगीचा और एक छोटासा भवन बना रखा था। पंचहजारेमें एक बहुत सुन्दर रमना था जिसके बीचमें चनारके ७ वृक्ष बहुत बडे खडे थे और नदी उनके चौफेर घूमी हुई थी। कशमीरी इसको भूली कहते हैं। यह जगह कशमीरके अतिदर्शनीय स्थानोंमें है।

खांनदौरांकी मृत्यु—इसी दिन खांदौरांके लाहोरमें मरनेकी खबर आई। यह ९० वर्षके लग भग होगया था। अपने समयके वीरपुरुषोंमेंसे था सरदार भी अच्छा था। बादशाह लिखता है उसके ४ बेटे हैं पर एक भी उसका पुत्र कहलानेके योग्य नहीं। ४ लाख रुपयेका धन माल उसने छोड़ा था वह उसके बेटोंको मिलगया।

अनच—३० सोमवार (आश्विनबदी १०) को बादशाहने अनच का झरना देखा। यह गांव अकबर बादशाहने रामदास कछवाहे को दिया था उसने पहाड़के नीचे झरनेके ऊपर बाग़ और कुंड बनाये थे। बादशाह लिखता है—"यह वास्तवमें बहुत सुन्दर और सरस स्थान है। इसका पानी तो इतना निर्मल है कि अन्धा अंधेरी

रातमें उसके नीचेके रेणुकण गिन सकता है।”

“यह गांव मैंने खानजहांको दिया है। उसने जियाफतकी तैयारी करके भेट सजाई थी जिसमेंसे थोड़ी सी उसका मन रखनेको लेली।”

“इस झरनेसे आध कोस मच्छीभवन नाम एक और झरना है। स्वर्गीय श्रीमानके सेवकोंमेंसे विहारी चन्दने इसके ऊपर एक मन्दिर बनाया है। इस झरनेके पानीकी प्रशंसा जितनी की जाय कम है। पुराने पुराने वृक्ष चनार, सफेदार, और काले बेदके इसके आस पास उगे हुए हैं। मैं रात यहीं तैरके २१ मंगलवार (आश्विनबदी ११) को अछोल नाम झरने पर उतरा।

अछोल—इस झरनेमें बहुत पानी है अच्छा जलाशय है। इसके किनारोंमें ऊंचे और फबते हुए वृक्ष चनार और सफेदारके लगे हुए थे। जगह जगह मनोरम बैठकें बनी हुई थीं। सामने गुलजाफरीका बगीचा फूल रहा था स्वर्गका सा टुकड़ा है।

मह्हर महीना।

१ बुधवार (आश्विनबदी१२) को अछोलसे कूच होकर बैरनाग में तंबू तने।

बैरनाग—२ गुरुवार (आश्विनबदी १३) को बैरनागके ऊपर प्यालोंकी मजलिस हुई। बादशाहने निज सेवकोंको बैठनेका हुक्म देकर प्याले भर भरकर दिये और गजकके वास्ते काबुलके शफतालू प्रदान किये। मतवाले सांझ समय अपने घरोंको लौटे।

बैरनागमें बागादि—बादशाह लिखता है कि यह झरना भट नदीका सोता है। यहां घने वृक्षों और घास तथा दूबकी पुष्कलतासे भूमि दिखाई नहीं देती है। मैंने युवराजवस्थामें यहां कुछ अच्छे स्थान बनानेकी आज्ञा दी थी। वह अब बन चुके थे। इस प्रकार थे। (१) अठपहलू हौज ४२गजका १४गज गहरा जिसका पानी पहाडी फूलों और हरयालीके प्रतिबिम्बसे, जंगाली होरहा था। बहुत सी मछलियां उसमें तैर रही थीं (२) हौजके ऊपर झरोके झुके हुए

(३) झरोकोंके आगे एकबाग (४) हौजसे बागतक नहर४गज चौड़ी १८० गज लम्बी और २ गज गहरी (५) नहरके ऊपरकी क्यारियां पत्थरकी बनी हुईं।

हौजका पानी ऐसा निर्मल और मंजुल था कि १४ गज गहरा होने पर भी यदि एक चना उसमें पड़ा हो तो दिखाई दे। नहरकी विशुद्धता तथा झरनेके नीचे उगी हुई घास और दूबकी शोभा क्या लिखी जावे। मानो नाना प्रकारके बेल और बूंटे मिले जुले उगे हुए थे। जिनमें एक बूंटा मोरकी पूंछके आकारका था और पानीकी लहरोंसे लहराता था। फूल जहां तहां खिले हुए थे। काश्मीर भरमें इस छटा और शोभाका कोई विलासस्थान नहीं है। यह भी विदित हुआ कि काश्मीरका जो प्रदेश नदीके ऊपर है उसकी नदीके नीचेके प्रांतसे कुछ तुलना नहीं है। जीमें था कि मैं कुछ दिनों यहां रहकर पूरा वनविहार करता और आनन्द लेता। पर कूचेका मुहूर्त पास आगया था और घाटी पर बर्फ भी गिरने लगा था ठहरनेका अवकाश न था इसलिये मैंने शहरकी ओर बाग मोड़ी और नदीके दोनों तटपर वृक्ष लगानेका हुक्म दिया।

लोक भवन—४ शनिवार (आश्विनबदी ३०) को लोकभवनके झरने पर डेरा हुआ। यह भी अच्छा स्थान है। यद्यपि अभी ऊपर वाले झरनोंके समान नहीं है परन्तु सुधरानेसे ठीक होजायगा। मैंने हुक्म दिया कि इसकी हैसियतके अनुसार यहां भी इमारत बनावें और झरनेके सामनेके हौजकी मरम्मत करें।

अन्धनाग—"फिर रास्तेमें एक और झरना मिला जिसको अन्धनाग कहतेहैं। प्रसिद्ध है कि इस झरनेकी मछलियां अन्धी होती हैं। क्षणभर वहां ठहरकर जाल डलवाया तो १२ मछलियां फंसीं उनमें ३ अन्धी और ९ आंखोंवाली थीं। शायद इस झरनेके पानीके दोषसे मछलियां अन्धी होजाती हैं। कुछ हो, बात विचित्र है।"

अच्छोभवन—५ रविवार (आश्विनसुदी १२) को बादशाह फिर

मच्छीभवन और एंनच होकर श्रीनगरको आया।

६ गुरुवार (आश्विनसुदी ६) को इरादतखां कश्मीरका सूबेदार और मीर जुमला उसकी जगह खानसामान हुआ और मोतमिदखां को अर्ज मुकर्ररका काम मिला।

श्रीनगर—११ शनिवार (आश्विनसुदी ८) को रातको सवारी श्रीनगरमें पहुंची।

जम्बूका जमींदार—जम्बूके जमींदार संग्रामका मनसब डेढ़ हजारी जात १००० सावारका होगया।

दशहरा—१२ चन्द्रवार (आश्विनसुदी ९) को दशहरे(१)का उत्सव हुआ। प्रति वर्षकी परिपाटीके अनुसार घोड़े जो खासा तवेलोंमें थे और जो अमीरोंको सौंपे हुए थे, सजाकर बादशाहको दिखाये गये।

बादशाहको श्वासका रोग—बादशाह लिखता है—इन दिनों श्वास रुककर आने लगा था।

पतझड़की शोभा—१५ बुधवार (आश्विनसुदी ११) को बादशाह खिजां (पतझड़) की शोभा देखनेके लिये सफापुर, और लार के घाटेको गया जो भट नदीके नीचे था। सफापुरमें एक सुन्दर सरोवर और उसके उत्तर ओर वृक्षोंसे परिपूर्ण एक पर्वत था। पत्ते झड़ने लगे थे तो भी उसकी विचित्र छटा थी। चनार और जर्दालू आदि वृक्षोंका प्रतिबिंब तलावमें बहुत भला दिखाई देता था। बादशाह लिखता है—"खिजांकी शोभा भी बहारसे कुछ कम नहीं होती।"

समय थोड़ा था और कूचका मुहूर्त पास आता जाता था इस लिये बादशाह संक्षिप्त रूपसे देख भालकर लौट आया।

मिरजा रहमानदादकी मृत्यु—शुक्रवारके दिन खानखानांके बेटे मिरज़ा रहमानदादके मरनेकी खबर पहुंची जो बालापुरमें मरा। कुछ दिनसे उसको ज्वर आता था। कमजोरीके दिनोंमें

(१) चंडू पंचांगमें इस दिन ९थी बादशाही पंचांगमें १० होगी।

एक दिन दखनी सजकर आये। बड़ा भाई दाराबखां उनसे लड़ने गया। यह सुनकर रहमानदाद भी उसी कमजोरीमें वीरतासे सवार होकर भाईके पास पहुंचा। जब बैरियोंको भगाकर आया तो असावधानीसे जल्द वस्त्र उतार दिये। हवा लग गई, शरीर ऐंठने लगा, जीभ बन्द होगई। दो तीन दिन यही दशा रही। फिर प्राण तज दिये। बादशाह लिखता है—"बड़ा लायक जवान था तलवार मारने और काम करनेको उसको बड़ी उत्कण्ठा रहती थी। सब जगह यही उसको इच्छा थी कि अपना जौहर तलवार में दिखावे। आग यद्यपि गीले सूखे सबको जलाती है लेकिन जब मेरे दिल पर इतना सदमा है तो उसके बूढ़े बापके टूटे दिल पर क्या गुजरी होगी। अभी शाहनवाजखांकी मौतका घाव भरा हो न था कि यह और नया घाव उस पर लगा। आशा है कि परमेश्वर उसे अब भी शान्ति देगा।"

काश्मीरसे कूच।

२७ चन्द्रवार (कार्तिक बदी ८) को एक पहर ७ घड़ी दिन चढ़े बादशाहने काश्मीरसे हिन्दुस्थानको प्रस्थान किया। अब केसर भी खिलने लगी थी, इस लिये सवारी सीधी पनेरको गई। काश्मीर भरमें इस गांवके सिवा और कहीं केसर नहीं होती है।

केसरके खेत—३० गुरुवार (कार्तिक बदी १२) को प्यालोंकी मजलिस केसरकी क्यारियोंमें जुड़ी। केसर बागों और जंगलोंमें जहां तक नजर पहुंचती खिली हुई दिखाई देती थी। उसकी महक हवामें फैली हुई थी। बादशाह लिखता है उसका पौदा जमीनसे मिला रहता है। फूलमें ४ पंखड़ियां होती हैं। वह चंपाके फूलके बराबर बड़ा और रंगमें बनफशई होता है। उसके बीचसे केसरके ३ तन्तु निकलते हैं। उसकी जड़ लगाई जाती है। जिस वर्ष अच्छी उपज होती है वर्तमान [illegible] ५०० मन केसर आती है। इसमें आधी प्रजाको और आधी [illegible] होती है। १ सेर १०) को बिकती है। यह भाव [illegible] जाता है। जो

लोग केसरके फूल चुनकर लाते है वह उनकी तोलसे आधा नमक प्राचीन पृथाके अनुसार मजदूरीमें लेते हैं। क्योंकि नमक कशमीर में नहीं होता है हिन्दुस्थानसे जाता है।"

कलगीके पर—"कशमीरकी सौगातमें कलगीके पर भी हैं जो शिकारी जानवरों द्वारा साल भरमें १०७०० तक एकत्र किये जाते हैं।"

शिकारी जानवर—"बाज जुर्रे २६० तक जालमें पकड़े जाते हैं बाशेके घोंसले भी होते है घोंसलेका बाशा बुरा नहीं होता।"

आबान महीना।

ईरानका दूत—१ शुक्रवार (कार्तिकवदी १२) को पनीरसे कूच होकर खानपुरमें मुकाम हुआ। यहां ईरानके एलची जंबीलबेगके लाहोरमें पहुंचनेकी खबर सुनकर बादशाहने खिलअत और ३०००० खर्चके वास्ते उसके पास मीर हिसामुद्दीनके हाथ भेजे। मीरसे कहदिया कि यदि वह कुछ तुझे दे तो तू उसके मूल्य पर पांच हजार और बढ़ाकर उसको मेहमानीके तौर पर भेज देना।

महल—बादशाहने पहले हुक्म दिया था कि कशमीरसे पहाड़ों की तलहटी तक हरेक मंजिलमें जो महल और मकान मेरे और बेगमोंके बैठनेके योग्य तय्यार हों, जिससे जाड़ा पाला पड़ने पर डेरोंमें ठहरना न पड़े। वह इमारतें बन तो गई थीं पर अभी गीली थीं और उनसे चूनेकी बास आती थी इसलिये बादशाहने डेरोंमें ही आराम किया।

कलमपुर—२ शनिवार (कार्तिक वदी १४) को कलमपुरमें मुकाम हुआ। बादशाहने हीरापुरके पास एक बड़े जलाशयकी बात सुनी थी। वह रास्तेसे तीन चार कोस पर बायें हाथको था। बादशाह छड़ी सवारीसे उसे देखने गया। वह कहता है "उसकी क्या प्रशंसा लिखी जावे तीन चार दरजेसे पानी ऊपर तले गिरता है। अबतक ऐसी छवि और छटाकी जलधारा देखनेमें न आई थी। बड़ी अद्भुत जगह है। मैं वहां ३ पहर दिन विनोद और विलास

में व्यतीत करके चित्त और चक्षुको संतुष्ट करता रहा। पर बादल और वर्षाके समय यहां कष्ट होता है। तीसरे पहर सवार होकर संध्या समय हीरापुरमें पहुंचा और रातको वहीं रहा।

बाडी बरारी घाटी—४चन्द्रवार (कार्तिकसुदी १) को बादशाह बाडी बरारी घाटीसे उतर कर पीरपंचाल पहाड़ी पर ठहरा। वह कहता है—"घाटी विकट है। मार्गमें कष्ट होनेकी बात क्या लिखूं विचारसे भी बढकर था। इन दिनों कई बेर बर्फ गिर चुकी थी। पहाड़ सफेद होरहे थे। रास्तोंमें कई जगह पाला पडा हुआ था। घोड़ेका पांव नहीं जमता था। सवार बड़े परिश्रमसे पार होता था। पर इस दिन ईश्वरकी क्रपासे पाला नहीं पडा था। हां जो लोग पहले जाचुके थे या पीछे आये वह सब बर्फ पड़नेसे पीड़ित हुए।"

पोशाना—५ मंगलवार (कार्तिक सुदी २) को बादशाह पीर पचालसे उतर कर पोशानेमें ठहरा। इधर नीचा था तो भी इतनी ऊंचाई थी कि बहुतसे लोग पैदल चलने लगे थे।

बीरमकल्ला—६ बुधवार (कार्तिकसुदी ३) को बीरमकल्लेमें डेरा हुआ। इस गांवके पास एक बहुत सुन्दर जलाशय और स्वच्छझरना था। बादशाहके हुक्मसे उस पर उसके बैठनेके लिये चबूतरा बनाया गया था। वह लिखता है "सचमुच सुरम्य दर्शनीय स्थान है। मैंने हुक्म दिया कि मेरे आनेकी मिती पत्थर पर खोदकर इस चबूतरेमें जड दें। बेबदलखांने कुछ कविता कही थी वही यहां यादगारीके लिये खोद दीगई।"

इसरास्तेमें दो जमीन्दार रहते हैं। उनके अधिकारमें आने जानेका प्रबन्ध है। वह वास्तवमें काश्मीरकी कुंजी हैं। एकका नाम महदी नायक है और दूसरेको हुसैन नायक कहतेहैं। हीरापुर से बीरमकल्ले तक रास्तेका बन्दोबस्त इनके हाथमें है। महदी नायकका बाप बहराम नायक काश्मीरियोंके राज्यमें बड़ा आदमी था। जब बादशाही बन्दोंके राज्य करनेकी बारी आई तो यूसुफ-

खांने अपने शासनके समय बहरामको मार दिया। अब इन दोनों भाइयोंका अधिकार है। यह ऊपरसे तो मिले हुए हैं पर भीतरसे आपसमें बैर रखते हैं।

इस दिन बादशाहका पुराना और विश्वासी सेवक शेख इब्न अमीन जो पीरपंचाल पर हवा लग जानेसे रोगग्रस्त होगया था मरगया। बादशाहके खानेकी अफीम और पीनेका पानी उसके पास रहा करता था। अब बादशाहने अफीम तो खवासखांको सौंपी और पानी मूसवीखांको।

ठट्टा—७ गुरुवार (कार्तिकसुदी ४) को ठट्टेमें डेरे लगे। बादशाह लिखता है—बीरमकलेमें बहुत बन्दर देखे गये थे। पर यहां से वायु, बोली, पोशाक और पशुओंमें बड़ा परिवर्तन देखा गया जैसा कि गर्म देशोंमें होता है। यहांवाले फारसी और हिन्दी बोलते हैं। इनकी मूल भाषा हिन्दी है। कशमीरी बोली इन्होंने पड़ोसी होनेसे सीखली है। यहांसे हिन्दुस्तान आरम्भ होता है। स्त्रियां ऊनी कपड़े नहीं पहनती हैं, हिन्दुस्तानी औरतोंकी भांति नाकमें नथ पहनती है।

राजोर—८ शुक्रवार (कार्तिकसुदी ५) को राजोरमें रहना हुआ। बादशाह कहता है—"यहांके मनुष्य प्राचीन समयमें हिन्दू थे यहांके जमीन्दारोंको राजा कहते थे। सुलतान फीरोजने उनको मुसलमान किया। तो भी वह राजा कहलाते हैं। मुसलमान होनेसे पहलेकी कुरीतियां अब भी इनमें प्रचलित हैं। जैसे हिन्दुओंकी औरतोंमेंसे कोई कोई अपने पतिके साथ जीती जलजाती है वैसेही यह भी जीती स्त्रीको मरे पतिके साथ कबरमें गाड़ देते हैं। सुना इन दिनों एक दस ग्यारह सालकी लड़की जीती पतिके साथ कबरमें डाल दीगई। दूसरे कुछ कंगाल लोग लड़कियोंको पैदा होतेही गला घोटकर मार डालते हैं। तीसरे हिन्दुओंको बेटी देते हैं और उनसे लेते है। बेटी लेना तो अच्छा है पर देनेसे खुदा बचावे। मैंने हुक्म दिया आजसे यह

कुरीतियां दूर हो। जो न माने उसे दण्ड दिया जाय।"

विषैलापानी—राजौरमें एक नदी है जिसका पानी बरसातमें जहरीला होजाता है। बहुत लोगोंके गलेके नीचे घेंघे निकल आते हैं और वह पीले और दुबले रहते हैं। राजौरके चावल कश्मीरसे अच्छे होते हैं। बनफशा जो इस पहाड़की तलहटीमें उगता है सुगन्धित होता है।

नौशहरा—१० रविवार (कार्तिकसुदी ७) को नौशहरेमें डेरे हुए। बादशाह लिखता है—कि यहां स्वर्गवासी श्रीमानके आदेश से पत्थरका किला बनाया गया है और हमेशा कश्मीरके हाकिम की तरफसे कुछ सेना थानेके तौर पर रहती है।

चौकीहटी—चन्द्रवारको चौकीहटीमें सवारी उतरी। वहांके मकानोंको मुराद चेलेने यत्नसे सुधरवाया था। राजभवनमें सुन्दर चबूतरा बनाया था, जो दूसरे स्थानोंसे उत्तम था। बादशाने प्रसन्न होकर उसका मनसब बढ़ाया।

ठट्ठड़—१२ मंगलवार (कार्तिकसुदी ९) को ठट्ठड़में पड़ाव हुआ। बादशाह लिखता है—"मैं पहाड़ों और घाटियोंको पारकर भारतकी समतल भूमिमें आया।

शिकार—ठट्ठड़, करछाक, और नकथालेमें शिकार घेरनेके लिये किरावल पहलेसे विदा होगये थे। बुध और ब्रहस्पतिवारको जीते जन्तु घेरेगये। शुक्रवारको बादशाहने ५६ पहाड़ी कचकार आदिका शिकार किया।

सारंगदेव—इसी दिन राजा सारंगदेवको जो बादशाहके समीपस्थ सेवकोंमेंसे था ८ सदीजात और ४०० सवारका मनसब मिला।

१६ शनिवार (कार्तिकसुदी १२) को बादशाह करछाककी ओर प्रयाण करके ५ कूचमें भट नदीके तटपर उपस्थित हुआ।

करछाक—२१ गुरुवार (अगहनबदी २) को करछाकमें हांके का शिकार हुआ परन्तु और बेरसे बहुत कम जानवर मिले। बादशाह प्रसन्न न हुआ।

जहांगीराबाद—२५ चन्द्रवार (अगहनबदी ७) को बादशाहने नकथालेमें शिकार खेला। वहांसे २ कूचमें जहांगीराबाद पहुंचा और शिकारगाहमें ठहरा। लिखता है—"युवराजावस्थामें यह भूमि मेरी शिकारगाह थी। यहां मैंने एक गांव अपने नाम(१) पर बसा कर थोड़ी सी इमारत बनाई थी और अपने पास रहनेवाले किरावल सिकंदर मबीनको सौंपदी थी। सिंहासनासीन होनेके पीछे उसगांवको परगना बनाकर उसकी जागीरमें देदिया। वहां दौलतखानेके वास्ते एक इमारत, तलाव, तथा, मिनारा बनानेका हुक्म दिया। मुबीनके मरने पर यह परगना इरादतखांको जागीरमें लगाया गया और इमारतका काम भी उसीको सौंपागया जो इन दिनोंमें अच्छी तरहसे पूरा होगया। तालाब बहुत चौड़ा बना। उसके बीचमें उत्तम जल महल हैं। सब मिलाकर डेढ़लाख रुपये इसमें लगे होंगे। सच यह है कि बादशाहोंकीसी शिकारगाह है। गुरुवार और शुक्रवारको वहां रहकर शिकार खेला। लाहौरके सूबेदार कासिमखांने उपस्थित होकर ५० मोहरें भेट कीं।"

मोमिनका बाग—वहांसे एक मंजिल पर मोमिन कबूतरबाज के बागमें जो लाहौरके घाटपर था सवारी उतरी। यहां चनार और सर्वके सुन्दर और सीधे वृक्ष थे।

---

(१) इससे जाना जाता है जहांगीरकी उपाधि युवराजावस्थामें हीमें बादशाहने धारण करली थी।

सतरहवां वर्ष।

सन् १०३० हिजरी।

अगहन सुदी २ संवत् १६७७ ता० १६ नवम्बर सन् १६२० से अगहन सुदी २ संवत् १६७८ ता० ५ नवम्बर सन् १६२१ तक।

बादशाह लाहोरमें।

६ आजर चन्द्रवार ५ मुहर्रम १०३० (अगहनसुदी ६) को बादशाह मोमिनके बागसे इन्द्रगज हाथी पर सवार होकर रुपये लुटाता शहरको चला। तीन पहर पर २ घडी दिन आनेके मुहूर्त में दौलतखानेमें पहुचकर उस नये राजभवनमें उतरा जो मामूरखां के प्रयत्नसे प्रस्तुत हुआ था। उसमें अच्छे अच्छे रहनेके स्थान और बैठकें बनी थीं। चित्रकारीकी बहार थी। बागोंमें अनेक प्रकारके फूल फूले हुए थे। ७ लाख रुपये इसमें लगे थे।

कांगडेकी फतह—इसी दिन कांगडेकी फतह होनेकी बधाई पहुंची। उसकी प्रसन्नतामें बादशाहने परमात्माका धन्यवाद करके विजयके बाजे बजवाये।

कांगडेका वृतान्त—बादशाह लिखता है—"कांगडा एक पुराना किला लाहोरसे उत्तर पहाडोंमें है जो दृढता और दुर्गमतामें अद्भुत विख्यात है। इसके बनानेकी तारीख खुदाके सिवा और किसी को ज्ञात नहीं है। पंजाबके जमीन्दारोंका यह विश्वास है कि यह किला कभी किसी दूसरी कौमके हाथमें नहीं गया न किसी बाहर-वालेका उस पर अधिकार हुआ। खैर यह तो खुदाही जाने पर जबसे इसलामकी दुहाई फिरी है किसी बडेसे बडे बादशाहको इसपर जय प्राप्त नहीं हुई। सुलतान फीरोज स्वयं बड़े ठाटसे इसके जीतनेको चढा था और वर्षों तक घेरे भी रहा था। परन्तु जब देखा कि यह दुर्ग इतना दृढ़ है कि जबतक अन्दरवालोंके पास

लड़ाई और खाने पीनेकी सामग्री रहेगी हाथ नहीं आवेगा तो राजाके आने और नम्रता दिखाने परही सन्तोष करके घेरा उठा लिया। कहते हैं राजा दावत और नजर देनेके लिये बादशाहको अन्दर लेगया। सुलतानने सब किला देखकर राजासे कहा कि मुझ जैसे बादशाहको गढ़में लाना सावधानीसे दूर था मेरे साथ जो सेना है यदि वह तुझ पर चढ़ाई करे और किला ले ले तो तू क्या कर सकता है? राजाने अपने सेवकोंको संकेत किया तुरन्त सजे हुए शूरवीरोंकी सेना घातसे निकली और बादशाहको सलाम करने लगी। बादशाह उस भीडको देखकर घबराया कि कहीं दगा तो नहीं है। परन्तु राजाने आगे बढकर कहा कि सेवा और सुश्रूषाके सिवा मेरा और कोई मतलब नहीं है। पर जैसा आपने फरमाया मैं सावधान रहता हूं। बादशाहने राजाकी प्रशंसाकी। राजा कई कूच तक बादशाहके साथ रहकर लौट आया। फिर जो कोई दिल्लीके सिंहासन पर बैठा उसीने कांगड़ा जीतनेको सेना भेजी परन्तु कुछ काम न बना। मेरे पूज्य पिताने भी एक बेर एक बहुत बडा कटक हुसैनकुलीखांके साथ, जिसे उत्तम सेवा करनेसे खानजहांका खिताब मिला था भेजा था। उसने इस किलेको घेराही था कि इब्राहीम मिरजाका उपद्रव उठखड़ा हुआ। वह कृतघ्न गुजरातसे भागकर पंजाबमें विग्रह करनेको गया। जिससे खानजहांको घेरा छोड कर उस उपद्रवके शांत करनेको आना पडा और कांगड़ेका लेना खटाईमें पड़गया। इसका खयाल सदैव उनके मनमें बना रहता था पर उसका कोई रूपक नहीं बनता था। जब खुदाने अपनी इनायतसे यह तख्त मुझे दिया तो मैंने लडाके बीरों सहित पंजाबके सूबेदार मुरतिजाखांको इस किलेकी फतहके लिये भेजा। पर किला फतह होनेसे पहलेही वह चल बसा। तब राजा बासूके बेटे जौहरमल (सूरजमल) ने इसके लिये प्रतिज्ञाकी और मैंने उसे सेनापति करके भेजा। वह सेना भंग होगई। किला जीतनेमें देर होगई और वह अपने कियेको पाकर

नरकमें गया, जैसा पहले लिखा जाचुका है। तब खुर्रमने इस सेवाका भार लिया और अपने सेवक सुन्दरको दलबल सहित भेजा। बहुतसे बादशाही वीर भी उसके साथ हुए। १६ शव्वाल सन् १०२९ (आश्विनवदी २ संवत् १६७६) को यह सेना किलेके निकट पहुंची। उसने मोरचे लगाकर जाने आनेके रास्ते बन्द किये। जब किलेमें खाने पीनेकी सामग्रीन न रही तो भीतर वालोंने सूखा अन्न उबालकर नमकसे खाया और चार महीने पार किये। जब मरने लगे तो हारकर किला सौंप दिया। १ मुहर्रम १०३० (अगहन सुदी २ संवत् १६७७) को यह फतह जो दूसरे बादशाहोंको नसीब न हुई थी इसअपने बंदेको खुदाने दी। जिन लोगोंने इसमें जान लडाई थी उनके पद बढाये गये।

१२(१) गुरुवार (अगहन सुदी ८) को बादशाह खुर्रमके नये बनाये भवनमें गया उसकी भेटमेंसे कुछ पदार्थ और ३ हाथी लिये।

कांगडेके कर्मचारी—इसी दिन अबदुलअजीजखां नक्शबन्दी कांगडेकी फौजदारी पर और अलफखां क्यामखानी किलेदारी पर भेजागया। मुरतिजाखांका जमाई शेख फैजुल्लाह किले पर रहने के लिये अलफखांके साथ किया गया।

चन्द्रग्रहण—१८(२) बुधवार (अगहन सुदी १५) को रातको (३) चांदगहन था बादशहने यथा योग्य दानपुण्य किया।

ईरानकादूत—इसी दिन ईरानके एलची जंबीलवेगने, जो खान आलमके साथ विदा हुआथा, और कई आवश्यक कामोंसे पीछे रहगया था, चौखट और जमीन चूमकर शाह अब्बासका प्रेमपत्र बादशाहके सामने रखा और १२ अब्बासी(४) नजर कीं। साथ ही

(१) मूलमें लेखक दोषसे ११ लिखी है।

(२) मूलमें लेखक दोषसे १३ शनिवार लिखा है।

(३) चन्द्रग्रहण पचांगमें २८ विसदें लिखा है।

(४) यह ईरानके शाह अब्बासका सिक्का था।

उसने ४ सजे हुए घोड़े २ बाज तवेगून, ५ खच्चर ५ ऊंट ९ धनुष और ९ खड्ग भेट किये। बादशाहने भारी खिलअत जोगा, जड़ाऊ तुर्रा, जड़ाऊ खांडा उसको दिया। विसालबेग और हाजी न्यामत का भी सलाम हुआ जो उसके साथ आये थे। बादशाह कासिमकी प्रार्थनासे उसका बाग देखने गया। बाग शहरसे बाहर था। सवारी में १०००० चरन न्यौछावर किये। उसकी भेटमेंसे १ लाल १ हीरा और कुछ कपड़ा चुनलिया।

आगरेको पेशखीमा—२१ रविवार (१) (पौषवदी ३) की रात को पेशखीमा आगरे जाने के लिये निकाला गया।

ईरानकी सौगात—२६ गुरुवार (पौषवदी ९) को मामूली उत्सव हुआ। शाह ईरानकी भेजी हुई सौगात बादशाहकी नजरसे गुजरी।

राजारूपचन्द गुलेरी—गुलेरके राजारूपचन्दने कांगड़ेकी चढाई में अच्छा काम दिया था। इसलिये बादशाहने दीवानोंको हुक्म फरमाया कि उसका आधा वतन (देश) तो उसके इनाममें गिनें और आधा जागीरकी तनखाहमें देवें।

दे.महीना।

शहरयारकी सगाई—२ (पौषसुदी १) को एतमादुद्दौलाकी नवासी शहजादे शहरयारके लिये मांगी गई। बादशाहने एक लाख रुपयेकी साचिक (बरी) भेजी जिसके साथ बड़े बड़े अमीर उसके घर गये। उसने भी बड़ी मजलिस सजाई थी।

एतमादुद्दौलाकी जियाफत—एतमादुद्दौलाने अपनी हवेलीमें ऊंचे और उत्तम नयेभवन बनाकर बादशाहकी जियाफतकी। बादशाह बेगमों सहित उसके घर गया। उसने खूब मजलिस सजाई थी नाना प्रकारकी भेट बादशाहको दिखाई। बादशाहने उसकी

(१) यहां मुसलमानी मतसे रातको रविवार माना गया है दिन को शनिश्चर और पंचांगके मतसे रातको भी शनिश्चर रविकी २२ तारीख थी।

खातिरसे कुछ चीजें पसन्द करके लेलीं।

इसी दिन ५०००० रुपये जंबीलबेगको इनायत हुए।

दक्षिणमें दंगा—जिन दिनोंमें बादशाह काश्मीरकी बहार और शिकारके मजे लूट रहा था दक्षिणके कर्मचारियोंकी बराबर अर्जियां पहुंचती थीं कि श्रीमानकी सवारीको दक्षिणके दुनियादारोंने राजधानीसे दूर देखकर अपनी प्रतिज्ञा भंगकर दीहै और सीमासे आगे बढ़कर अहमदनगर तकका देश दबा बैठे हैं। उनका काम लूटना जलाना, खेती तथा घास विध्वंस करना है।

बादशाह लिखता है—पहले जब दक्षिणी देशोंके जीतने और उन दुष्टोंको दण्ड देनेके लिये चढ़ाई हुई थी और खुर्रमने आगे चलनेवाले लश्करके साथ जाकर बुरहानपुरमें डेरा किया था तो इन धूर्त्तोंने कपटसे उसको अपना आश्रय दाता बनाकर बादशाही देश छोड़ दिये थे और बहुतसा द्रव्य दरबारमें भेजकर यह प्रतिज्ञा की थी कि फिर कभी अपनी सीमासे आगे पांव नहीं रखेंगे जैसा कि पहले लिखा जाचुका है।" खुर्रमकी प्रार्थनासे सवारी मंडूके किलेमेंही ठहरी रही और उसीकी सुफारशसे उनका रोना गिड गिडाना सुनकर उन्हें क्षमा दीगई थी। पर वह अब दुष्टता और धृष्टतासे वचन भंगकरके अधीनतासे विमुख होगये तो मैंने फिर प्रबल सैन्य उनको दण्ड देनेके लिये उसी खुर्रमके आधिपत्यमें भेजनेका विचार किया। पर कांगड़ा जीतनेका भी काम उसीके ऊपर छोड़ा गया था जिसमें उसकी अच्छी सेना लगी हुई थी इसलिये कुछ दिनों तक इस मनोरथके पूर्ण करनेमें शिथिलता रही। इतने में उधरसे फिर लगातार अर्जियां पहुंचीं कि गनीमने ६०००० सवार संग्रह करके बहुतसा बादशाही इलाका दबालिया है और जहां जहां थाने थे वह सब उठाकर महकरमें आक्रमण किया है जहां ३ महीनेसे लड़ाई चलती है। अबतक ३ बड़े युद्ध हुए हैं। उनमें बादशाही बन्दोंकी प्रबलता शत्रुओं पर रही। पर सेनामें किसी मार्गसे अन्न नहीं पहुंचता था और वह लोग उनके आसपास

लूट मार करते थे, इससे अनाजका अकाल पड़गया और जानवर थकगये। तब लाचार घाट पर से बालापुरमें सेनाके लोग उतर आये। शत्रु भी बल पाकर बालापुर तक आगये और चोरी धाड़े करने लगे। बादशाही बन्दे ६।७ हजार चुने हुए सवारोंसे उनके डेरों पर गये। वह ६०००० सवार थे। बहुत बड़ा संग्राम हुआ। उनकी छावनी लूटी गई। हमारी सेना बहुतोंको मार बांधकर कुशल पूर्वक लौट आई। वह लोग फिर इधर उधरसे उमड़कर लड़ते हुए छावनी तक आपहुंचे। इसपर भी बादशाही बंदे ४ महीने तक बालापुरमें जमे रहे। फिर जब यहां भी अनाज की महंगी बहुत बढ गई तो कई कच्चे आदमी भागकर उनसे जामिले और हमेशा इसी तरह जाने लगे तो वहां रहनेमें भलाई न देखकर बुरहानपुर आगये। उन दुष्टोंने पीछा करके बुरहानपुर को भी घेर लिया और ६ महीने तक घेरे रहे। कई परगने बराड़ और खानदेशके भी दबा बैठे। प्रजा और दीनोंको जबरदस्ती लूटने लगे। सेना थकी हुई थी और चौपाये भी चकनाचूर होगये थे इस कारण शहरसे बाहर निकल कर उनका पूरा मुकाबिला न कर सकी। इससे उन दोगलोंका घमंड और भी बढ़गया। इतने हीमें सवारीका कूच राजधानीको हुआ और खुदाकी इनायतसे कांगड़ा भी फतह होगया।

खुर्रमकी फिर दक्षिणपर चढ़ाई—४भृगुवार (पौषसुदी २) को मैंने खुर्रमको खिलअत जड़ाऊ तलवार और हाथी देकर उधर बिदा किया। नूरजहां बेगमने भी एक हाथी दिया। मैंने हुक्म दिया कि दो करोड़ दामका इलाका दक्षिण जीतनेके पीछे जीते हुए प्रदेशोंमेंसे अपने इनाममें ले ले। ६५० मनसबदार १००० अहदी १००० रूमी बन्दूकची १००० तोपची प्यादे सिवा ३०००० सवारोंके जो उन प्रांतोंमें हैं तरल तोपखाने बहुतसे हाथी उसे दिये। एक करोड़ रुपये फौज खर्चके वास्ते उसे दिये। जिन बंदों की नौकरी बोली गई थी उनको यथायोग्य घोड़े हाथी और खिलअत दिये।

आगरेको कूच—उसी मुहूर्तमें बादशाहने भी आगरेको कूच किया। नौशहरेमें डेरा हुआ।

जगतसिंह—राना करनसिंहके बेटे जगतसिंहने अपने वतनसे आकर चौखट चूमनेका सौभाग्य प्राप्त किया।

राजा टोडरमलका तलाव—६ रविवार (पौष सुदी ४) को राजा टोडरमलके तलाव पर पड़ाव हुआ। बादशाहने ४ दिन तक यहां रहकर कई एक मनसबदारोंके मनसब बढावे जो दक्षिण को बिदा हुए थे।

हृदयनारायण हाडा—हृदयनारायण हाडेका मनसब ८ सदी ६०० सवारका होगया। मोतमिदखां इस लशकरका बख्शी और वाकिआनवीस नियत हुआ और उसे तोग मिला।

कमाऊंका राजा लक्ष्मीचन्द—कमाऊंके राजा लक्ष्मीचन्दके भेजे हुए बाज, जुर्रे और दूसरे शिकारी पक्षी बादशाहकी भेट हुए।

जगतसिंह—राणा करणसिंहका बेटा जगतसिंह दक्षिणकी सेनाकी सहायता पर खासा घोड़ा पाकर बिदा हुआ।

राजा रूपचन्द—राजा रूपचन्द हाथी और घोडा पाकर अपनी जागीरको बिदा हुआ।

मुलतान—१२ (पौष सुदी ८) को खानजहां मुलतानकी सूबेदारी पर भेजा गया। बिदा होते समय बादशाहने नादिरी सहित खिलअत जड़ाऊ तलवार सजा हुआ खासा हाथी, हथनी, खदंग नाम खासा घोडा और दो बाज उसको दिये।

भवाल—बादशाहने अपने पुराने सेवक भवालको तोपखानेके मुशरिफका ओहदा और रायका खिताब इनायत किया।

गोविन्दवाल—१३ (पौष सुदी १०) को गोविन्दवालके पासकी नदी पर बादशाहके डेरे हुए और चार दिन मुकाम रहा।

सोम तुलादान—१७ (पौष सुदी १४) को चान्द्रमासीय वर्ष-गांठके उत्सवका तुलादान हुआ।

कन्दहार—कन्दहारकी सूबेदारी अबदुल अजीजखांको मिली

और बहादुरखांको जिसने आंखोंकी पीड़ासे दरबारमें आनेकी प्रार्थना की थी किला उसे सौंपकर चले आनेकी आज्ञा हुई।

नूरसराय—२१ (माघ बदी ४) को नूरसरायमें डेरे हुए। यहां नूरजहांके वकीलोंने यह बडी सराय एक विशाल बाग सहित बनाई थी। बेगमने जियाफतकी तय्यारी करके बहुत बड़ी मजलिस रचाई और भांति भांतिके उत्तम पदार्थ भेट किये। बादशाहने उसका मन रखनेको उसमेंसे कुछ चुन लिये और दिन भर मुकाम रखकर सूबे पंजाबके सचिव समुदायको आज्ञा की कि कन्दहारको पहले जो ६०००० रुपये भेजे गये हैं उनके अतिरिक्त दो लाख रुपये और किलेकी सामग्रीके लिये भेज दें।

कांगड़ा—कांगड़ेकी तलहटीमें कुछलोग उपद्रव करते थे। बादशाहने कासिमखांको नादिरी सहित खासा खिलअत हाथी घोडा और तलवार देकर उन्हें दण्ड देनेके लिये बिदा किया। उसका मनसब भी बढाकर दोहजारी जात और १५०० सवारोंका कर दिया।

राजा संग्राम—राजा संग्राम भी कासिमखांकी प्रार्थनासे घोड़ा सिरोपाव और हाथी पाकर कांगड़ेको बिदा हुआ।

बहमन महीना।

सरहिन्द—१ गुरुवार (माघ बदी १४) को बादशाहने सरहिन्द के पास एक दिन ठहरकर बागकी शोभा देखी।

४ रविवार (माघ सुदी २) को ख्वाजा अबुलहसन दक्षिण जीतने को बिदा हुआ। नादिरी सहित खिलअत खासीशाल, सुबहदम नाम हाथी तीग और नक्कारा बादशाहने उसे दिया और मोतमिदखांको भी खिलअत और सुबहसादिक नाम खासा घोड़ा देकर बिदा किया।

मुस्तफाबाद—७ (माघ सुदी ५) को सरस्वती नदी पर मुस्तफाबादमें और दूसरे दिन अकबरपुरमें डेरे हुए। यहां बादशाह नाव में बैठकर जमनाके जलमार्गसे रवाने हुआ और पांच कूचमें किरानें

पहुंचा। यहां मुकर्रबखांका वतन था इसलिये उसके वकीलोंने ८१ याक़ूत ४ हीरे और एक हजार गज मखमल पगपांवडेके वास्ते उसको अरजी सहित भेट की और १००· ऊंट दानके लिये पेश किये जो बादशाहने गरीबोंको बटवा दिये।

दिल्ली—वहांसे ५ कूचमें बादशाह दिल्ली पहुंचा और एतमाद-रायके हाथ खासा फरजी शाह परवेजके वास्ते भेजकर एक महीने से लौट आनेको आज्ञा की।

पालम—बादशाह २ दिन सलीमगढ़में रहकर २२(१) गुरुवार (फाल्गुण बदी ५) को शिकारके लिये परगने पालममें जाते हुए दिल्ली शहरसे गुजरा और हौज शमसी पर ठहरा। रास्तेमें चार हजार चरन अपने हाथसे न्यौछावर किये। २२ हथनी और हाथी जो इफ़्तख़ारखांके बेटे अलहयारने बंगालेसे भेजे थे भेट हुए।

जुलकरनैन—जुलकरनैन (२) सांभरकी फौजदारी पर बिदा हुआ। वह सिकन्दर अरमनीका बेटा था जो अकबर बादशाह की सेवा करता था। उन्होंने अबदुलहई अरमनीकी बेटी जो अन्तःपुरकी टहलनी थी उसको दी थी। उससे २ लड़के हुए थे जिनमेंसे एक यह जुलकरनैन था। बादशाह लिखता है यह कुछ सीखने और काम करनेकी चेष्टा रखता था। मेरे राज्यके प्रधानोंने खालसे के नमकका काम उसको दिया था जिसको वह अच्छी तरहसे करता था। इन दिनों उस प्रांतकी फौजदारीके पद पर पहुंचा। हिन्दी रागोंका रसिया है। उसे इस विद्यामें अच्छा अभ्यास है। उसकी कविता भी अनेक बेर सुननेमें आई है और पसन्द हुई है।

सलीमगढ—बादशाह ४ दिनतक पालममें शिकार खेल कर फिर सलीमगढमें लौट आया।

इब्राहीमखांकी भेट—२८ (३) बुधवार (फाल्गुणसुदी ११) को

---

(१) मूलमें २३ भूलसे लिखी है।

(२) सांभरमें १ शिलालेख पर इसका नाम खुदा है।

(३) मूलमें भूलसे २९ लिखी है तुजुक जहांगीरी पृ० ३२४।

१८ हाथी २ ख्वाजासरा एक गुलाम ४१ जंगी मुर्ग १२ गायें ७ भैंसें इब्राहीमखां फतह जंगके भेजी हुई भेंट हुईं।

२८ (१) गुरुवार (फाल्गुण वदी १३) २५ रबीउलअव्वलको वजनकमरी अर्थात् चांद्रमासीय वर्ष गांठका उत्सव हुआ।

मेवातका फौजदार मीरमीरां वहांसे आकर शेख भव्वाकी जगह दिल्लीकी हुकूमत पर नियत हुआ।

ईरानके दूत—इसीदिन ईरानके दूत आकाबेग, और मुहिब अलीने चौखट चूमी। शाहकी भेजी अमलकी कलगी भेंट हुई। कलगीका मूल्य जौहरियोंने पचास हजार रुपये आंका।

एक प्राचीन लाल—१२ टांकका एक लाल .मिरजाशाहरुखके बेटे मिरजा उलगबेगके जवाहिरखानेसे सफवी बादशाहोंके हाथ आगया था। उसपर अमीर तैमूर, मिरजा शाहरुख और उलगबेग के नाम लिखे थे। बादशाह लिखता है—मेरे भाई शाह अब्बासने भी एक कोनेमें अपना नाम खुदवाया था और उसको जीगेमें बैठा कर सौगातके तौर पर मेरे लिये भेजा था। उसमें मेरे पूर्वजोंके नाम खुदे थे इसलिये मैंने अपने लिये मुबारक समझकर जरगर-खानेके दारोगा सईदायको हुक्म दिया कि दूसरे कोनेमें "जहांगीर शाह अकबर शाह सुत" और वर्त्तमान मिती खोद दे।

असफन्दार महीना।

१ शनिवार (फाल्गुण वदी १४) को .बादशाह सलीमगढ़में चल कर हुमायूं बादशाहके मकबरेमें गया। वहां २००० चरण सुजावरोंको दिये। दो दिन नगरके निकट यमुनातट पर रहा। ५०००० रुपये, मीर विरका, मावरुन्नहरी (तूरानी) के हाथ अपनी पीढ़ियोंके शुभचिन्तक .ख्वाजा सालह दहबन्दीके और ५००० अमीर तैमूरके रोजेके मुजावरोंके वास्ते भेजे। उससे फरमाया कि मच्छीके चितकबरे दान्तोंकी खोजमें रहना जहांसे जिस मोलमें मिले लेलेना।

(१) मूलमें भूलसे ३० लिखी है।

वृन्दावन—बादशाह दिल्लीके पाससे नाव पर चढ़कर ६ कूचमें वृन्दावन पहुंचा। दूसरे दिन गोकुलमें उतरा। वहां लशकरखां हाकिम आगरा, राजा नथमल आदि कर्मचारी उपस्थित हुए।

नूरअफशां बाग—११ (फाल्गुण सुदी ९) को बादशाह नूरअफशां बागमें जो यमुनाके उस पार था पहुंचकर मुहूर्तके वास्ते ३ दिन ठहरा।

आगरेके किलेमें प्रवेश।

१४ (फाल्गुण सुदी १२) को मुहूर्त आने पर बादशाह सवारी आगरेके किलेमें गया और राजभवनमें सुशोभित हुआ।

२ महीने १० दिनका सफर लाहोरसे आगरे तक ४९ कूच और २१ मुकामोंमें पूरा हुआ। कोई दिन जल और स्थलमें विना शिकारके नहीं गया। ११४ हरन, ५१ मुर्गाबी, ४ करवानक, १० तीतर, २०० पोदने इस रास्तेमें शिकार हुए।

लशकरखां अच्छी सेवा करनेसे ४ हजारी जात २५०० सवारों के पदको पहुंचकर दक्षिणकी सेनाकी सहायता पर नियत हुआ।

जरगरखानेके दारोगा सईदायको बेबदलखांकी उपाधि मिली।

ईरानकी सौगात—४ घोड़े कुछ चांदीके पदार्थ और कपडेके थान जो शाह ईरानने भेजे थे इन दिनोंमें बादशाहकी नजरमे गुजरे।

२० (चैत्र वदी ४) को गुरुवारका उत्सव रुस्तमबागमें हुआ एक लाख रुपये शाहजादे शहरयारको इनाममें मिले। कुछ अमीरोंके मनसब बढ़े। कई अमीरोंकी ओरसे भेट पूजा हुई।

२७ (चैत्र वदी ११) को गुरुवारका उत्सव नूरअफशां बागमें हुआ।

२८ शुक्रवार (चैत्र वदी १२) को बादशाह शिकारके वास्ते समूगरमें जाकर रातको लौटा। ईरानकेदूत आकाबेग और मुहिबअलीने ७ इराकी घोडे भेट किये। बादशाहने १०० तोलेकी एक नूरजहानी मोहर ईरानके वकील जंबीलबेगको इनायत की।

सालभरकी खैरात—इस साल बादशाहने तुलादानके खजानेसे इस प्रकार दान अपने सामने किया—

भूमि ८५००० बीघे	धान ३२२५ गोन
गांव ४	हल २
बाग १	रुपये २३२७
मुहर १	दरब ६२००
चरण ७८८०	चांदी सोना १५१२ तोले
दाम १००००	

हाथी—३८ हाथी जिनका मूल्य २४१००० रुपये हुआ था भेट होकर खासे हाथीखानेमें आये और ५१ हाथी बडे बड़े अमीरों और दूसरे बन्दोंको बखशे गये।

सोलवहां नौरोज।

फरवरदीन महीना।

चन्द्रवार २७ रबीउल आखिर सन् १०३० हिजरी (चैत्र बदी १४) को सूर्य मेषमें आया। सोलहवां वर्ष बादशाहके राज्याभिषेकको लगा। बादशाहने शुभघडी शुभमुहूर्तमें आगरेके राजसिंहासन पर विराजमान होकर शाहजादे शहरयारका मनसब ८ हजारी ४००० सवारका कर दिया। वह लिखताहै मेरे पूज्य पिताने पहले यही मनसब मेरे भाइयोंको दिया था।

इस दिन बाकरखांने अपनी सेना सजाकर दिखाई। बखशियोंने उस सेनाकी संख्या १००० सवार और २००० पैदल शुमार की। बादशाहने उसको २ हजारी १००० सवारके मनसब पर चढाकर आगरेका फौजदार किया।

बुधवारको बादशाह बेगमों सहित नाव पर बैठकर नूरअफशां बागमें गया। यह बाग नूरजहांकी सरकारमें था इसलिये उसने दूसरे दिन गुरुवारको उत्सवकी बड़ी भारी मजलिस करके एक शानदार भेट पेशकी। बादशाहने एक लाख रुपयेके जवाहिर, जडाऊ पदार्थ और दिव्य वस्त्र उसमेंसे चुनकर लेलिये।

इन दिनों बादशाह नित्य शिकार खेलने समूगर जाता था और रातको चला आता था। यह स्थान शहरसे ४ कोस था।

बिहार—बिहारका सूबा मुकर्रिबखांसे लेकर शाह परवेजको दिया गया था इसलिये राजासारंगदेवके हाथ खासाखिलअत जड़ाऊ परतला जिसमें एक नीला और कई लाल याकूत लगे हुए थे शाहजादेके वास्ते भेजा गया। उसे यह भी हुक्म था कि शाहजादे को इलाहाबाससे बिहारको रवाने कर दे।

अजदुद्दौलाकी पेन्शन—अजदुद्दौला बहुत बूढ़ा होजानेसे सेना और जागीरका प्रबन्ध नहीं कर सकता था इस लिये बादशाहने उसका ४०००) का महीना करके कह दिया कि आगरे या लाहोर में जहां चाहे सुखपूर्वक रहे।

ईरानके वकीलोंकी भेट—८ (चैत सुदी ७) को ईरानके दूत मुहिबअली और आकाबेगने २४ घोड़े २ खच्चर ३ ऊंट ७ ताजी कुत्ते २७थान जरीके अम्बरका एक सुगन्धित द्रव्य, दो जोडे, कालीन और दो तकिये नमदेके भेट किये। दो घोड़ियां बछेरों सहित जो शाहने उनके साथ भेजी थीं वह भेट कीं।

आसफखांके घर जाना—गुरुवारको बादशाह आसफखांकी प्रार्थनासे बेगमों सहित उसके घर गया। उसने बड़ी सभा सजाकर बहुतसे अनोखे जवाहिर उत्तम वस्त्र और अमूल्य पदार्थ भेट किये जिसमेंसे बादशाहने १३००००) की चीजें लेकर बाकी उसीको बख्श दीं।

विचित्र गोरखर—इन दिनोंमें बादशाहने अद्भुत गोरखर देखा जो काले और पीले सिंहके समान था। यह दोनो रंग नाककी नोकसे पूंछके नीचे तक थे। कानकी लोसे खुर तक छोटी बडी काली धारियां यथास्थान अनुक्रमसे खिची हुई थीं। आंखके आस-पास बहुतही सुन्दर गोल कुण्डल बना हुआ था। मानो विधाताने अपनी लेखनीकी चित्रकारीसे यह कौतुक रचकर संसारमें भेजा था जो बहुतही अपूर्व था। कुछ लोगोंको भ्रम था कि कहीं रंग तो

नहीं कर दिया। परन्तु बादशाहके निर्णय करनेसे निश्चय होगया कि विधाताने ऐसाही बनाया है। इसी हेतु शाह ईरानके वास्ते जानेवाली सौगातोंमें रखा गया।

मेष संक्रान्ति—गुरुवार (वैशाख वदी २) को मेष संक्रान्तिका उत्सव हुआ। बादशाह दो पहर एक घडी दिन बीते सिंहासन पर बैठा। यह उत्सव एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे उसके घर पर हुआ। उसने बहुत बडी भेट सजाई थी जिसमें देशदेशान्तरके दिव्यद्रव्य थे। बादशाहने १३८०००) के पदार्थ उठा लिये।

२०० तोलेकी मुहर—इसी दिन बादशाहने २०० तोलेकी एक मुहर ईरानके एलची जम्बीलवेगको दी।

अद्भुत ख्वाजासरा—इन्ही दिनोंमें इब्राहीमखांने कई ख्वाजेसरा (क्लीव) बंगालेसे भेजे थे उनमें एक नपुंसक निकला। उसमें स्त्री और पुरुष दोनोंके चिन्ह थे। इनके सिवा बंगालेकी दो नावें भी उसकी भेटमें थीं जिनके अलंकृत करनेमें १००००) खर्च किये थे।

इलाहाबास—शेख कासिम, मोहतशिमखांका खिताब और पांचहजारी मनसब पाकर इलाहाबासकी सूबेदारी पर नियत हुआ। बादशाहने दीवानोंको हुक्म दिया कि इसके इजाफे की जागीरकी तनखाह उन परगनोंमें लगावें जिनमें अबतक अमल नहीं हुआ है।

श्रीनगरका राजा श्यामसिंह—श्रीनगरके राजा श्यामसिंहको हाथी और घोडा मिला।

यूसुफखांकी अद्भुत मृत्यु—हुसैनखांका बेटा यूसुफखां दक्षिणमें अकस्मात् मर गया। बादशाह लिखता है—ऐसा सुना गया है कि इस मुद्दतमें वह अपनी जागीरमें रहता था और ऐसा मोटा हो गया था कि थोड़ेसे चलने फिरनेमें भी श्वास रुकने लगता था। जिस दिन खुर्रमकी सेवामें गया उस दिन आने जानेसे उसका दम घुटने लगा था। जिस समय उसको खिलअत दिया गया तो वह पहनने और तसलीम करनेमें थक गया। सारा शरीर कांपने लगा।

वडे परिश्रम और कष्टसे तसलीम करके जैसे तैसे बाहर निकला और कनातके पासही गिरकर अचेत होगया। उसके नौकर पालकीमें डालकर लेगये। घर पहुंचतेही मर गया।

उर्दीविहिश्त महीना।

१ (वैशाख सुदी १) को बादशाहने खासा खंजर जंबीलबेग वकीलको दिया।

शहरयारका विवाह—४ (वैशाख सुदी ४) को शहरयारका विवाह हुआ। मेंहदीकी मजलिस मरयमजमानीके महलमें जुडी। बादशाह भी वेगमों सहित वहां चला गया था। शुक्रवारको ७ घडी रात जाने पर निकाह हुआ।

२०(१) मङ्गलवार (ज्येष्ठ वदी ६) को बादशाहने नूरअफशांबाग में शहरयारको जडाऊ चार कुब्ब, पगडी पटका एक इराकी घोडा सोनेकी जीनवाला, दूसरा तुर्की जिसकी जीन चित्रदार थी इनायत किया।

शाह शुजाकी बीमारी और जोतकरायको इनाम।

इन दिनोंमें शाह शुजाको माता निकलनेमें ऐसी पीडा हुई कि पानी भी गलेसे नहीं उतरता था जीनेकी आशा न रही थी। उसके बापके जन्मपत्रमें ऐसा योग पडा था कि इस वर्ष उसका लडका मर जावे, सब ज्योतिषी यही कहते थे कि वह न वचेगा। परन्तु जोतकराय कहता था कि वचेगा। बादशाह लिखता है—"मैंने प्रकार पूछा तो कहा—हजरतके जन्मपत्रमें लिखा है कि इस वर्षमें किसी प्रकारका क्लेश न हो और हजरतको उससे बहुत मोह है इसलिये उसको कुछ हानि न पहुंचनी चाहिये कोई और लडका भलेही मर जाय। ऐसाही हुआ। शुजा अच्छा होगया और दूसरा लड़का जो शाहनवाजखांकी बेटीसे हुआ था बुरहानपुरमें मर गया। इसके सिवा और भी उसके बहुत हुक्म (फल) मिले हैं जो विचित्रतासे खाली नहीं। वह पहले प्रसंगोंमें लिखे जाचुके हैं। इस वास्ते मैंने

(१) मूलमें १९ लिखी है २० चाहिये।

उसे रुपयोंमें तुलवा दिया। वह तोलमें ६५०० रुपयोंके बराबर हुआ। वह उसे इनाम दिये गये।

हुरमुज और होशंग—हुरमुज और होशंग मिरजा हकीमके पोते थे और गवालियारके किलेमें कैद थे। बादशाहने दोनोंको अपने सामने बुलाकर आगरेमें रहनेका हुक्म दिया। उनके खर्चके लायक रोजाना भी मुकर्रर कर दिया।

भट्टाचार्य्य—बादशाह लिखता है—भट्टाचार्य्य नाम ब्राह्मण जो इस जातिके शिरोमणि विद्वानोंमेंसे है और बनारसमें पढ़ने पढानेका काम करता है इन दिनो आकर मिला। सच यह है कि अकली और नकली (वेद और शास्त्रों) के रहस्य समझनेमें इसने खूब अभ्यास किया है। अपनी विद्यामें पूरा है।

बिजलीका गिरना—३० फरवरदीन (बैशाख बदी १४) को परगने जालन्धरके एक गांवमें तड़केही पूर्व दिशामें ऐसा भारी कोलाहल उठा कि जिसके भयसे गांववालोंके प्राण जाने लगे और उसी गड़गडाहटमें ऊपरसे रोशनी जमीन पर गिरी। लोगोंको आकाशसे आग बरसानेका भ्रम हुआ। कुछ देर पीछे जब शान्ति हुई और लोगोंके दिल ठिकाने आये तो उन्होंने एक जल्दी चलनेवाला कासिद मुहम्मद सईद आमिलके पास दौड़ाया और उसको इस वारदातकी खबर भेजी। वह तुरन्त चढ़कर आया और देखा तो १०।१२ गज लम्बी चौड़ी जमीन ऐसी जल गई है कि घासका नाम न रहा था। वह जमीन अभी गर्मही थी। उसने खोदनेका हुक्म दिया। जितनी अधिक खोदी उतनीही अधिक गर्मी और तपत प्रगट होती गई। अन्तको लोहेका एक टुकड़ा मिला जो ऐसा गर्म था कि मानो अभी भट्टीमेंसे निकला है। वह उसको उठाकर अपने डेरे पर लेआया और एक मुहर लगी हुई थैलीके भीतर रख कर दरगाहमें भेजा। बादशाहके सामने तोला गया। १६० तोले का हुआ। बादशाहने उस्ताद दाऊदको हुक्म दिया कि इसकी एक तलवार एक खञ्जर और एक छुरी बना लावे। उसने आकर

अर्ज की कि यह हथौड़ेके नीचे नहीं ठहरता है बिखर जाता है। बादशाहने फरमाया कि दूसरा लोहा मिलाकर बनाओ। तीन हिस्से वह और एक हिस्से दूसरा लोहा मिलाकर दो तलवार एक छुरी और एक खंजर बना लाया। दूसरा लोहा मिलानेसे इसके जौहर भी निकल आये। यमानी तथा दक्षिणी असील तलवारोंके समान यह भी मुड़ जाती थीं और बल नहीं पड़ता था। बादशाहके सामने परीक्षा की गई तो असील तलवारोंके बराबर काट किया।

शाह परवेज—सारंगदेव शाह परवेजके पाससे उसकी अर्जी लेकर आया, जिसमें लिखा था कि यह दास आज्ञानुसार इलाहाबाससे बिहारको रवाने होगया है।

दक्षिणमें विजय—इसी दिन खुर्रमका नौकर अलीमुद्दीन फतह की अर्जी और एक जड़ाऊ शिस्त(१) भेट लेकर आया। बादशाह ने उसके हाथ खुर्रमके वास्ते खिलअत भेजा।

इमामकुलीखांकी मा—इमामकुलीखांकी माने पुराने सम्बन्धसे नूरजहांके नाम पत्र और कुछ पदार्थ उस देशके भेजे थे। बादशाह ने भी नूरजहांकी तरफसे पत्रोत्तर और यहांकी सौगात देकर अपनी युवराजावस्थाके सेवक ख्वाजा नसीरको तूरानमें भेजा।

जंगका बच्चा—इन दिनों नूरअफशां बागमें जंगका(२) ८ दिन का बच्चा दौलतखानेकी ८ गज ऊंची छतसे छलांग मारकर जमीन पर आरहा और खूब उछला कूदा। किसी प्रकारकी चोट या मोच उसके शरीरमें न आई।

खुरदाद महीना।

दक्षिणमें फतह—४ (ज्येष्ठ सुदी ५।६) को खुर्रमका दीवान अफजलखां उसकी अर्जी लेकर आया। उसमें लिखा था कि जब बादशाही लशकर उज्जैनमें पहुंचा तो जो लोग मांडूके किलेमें थे उन्होंने यह लिखकर भेजा कि शत्रुओंकी एक सेना नर्बदासे उतर आई है और किलेकी तलहटीके कई गांवोंको जलाकर लूट मार

(१) सीधा वस्त्र (२) एक पशु।

कर रही है। ख़्वाजा अबुलहसन ५००० सवारोंसे उनके ऊपर भेजा गया। वह रातको धावा मारकर तड़केही नर्बदाके तटपर पहुंचा। पर वह लोग खबर पाकर कुशलपूर्वक कुछ पहले नदीसे उतर गये थे। तोभी इसने पीछा करके उनको वहांसे हटा दिया और बहुतो को मार भी डाला। बाकी बुरहानपुर तक भागी चले गये। खुर्रम ने ख़्वाजाको लिखा कि हमारे आने तक नदीके पारही ठहरा रहे। फिर बादशाही लशकर अगली अनीसे मिलकर कूच दरकूच बुरहानपुरको पहुंचा। तब तक शत्रु बुरहानपुरको घेरे बैठे थे। बादशाही बन्दोंको उनसे लड़ते हुए दो वर्ष बीत चुके थे। वह घेरे और अनाजके टोटेसे कातर होगये थे। घोड़े भी रात दिनकी दौड़ धूपसे मर रहे थे इसलिये लशकरको तय्यारी करनेमें ८ दिन तक ठहरना पड़ा। इन दिनोंमें ३० लाख रुपये और बहुतसे घोड़े फौजमें बांटे गये। सजावल भेज भेजकर लोगों को शहरसे बाहर निकाला। अभी चढ़ाई न हुई थी कि वह लोग डरकर भाग गये। फुरतीले जवानोंने उनका पीछा किया और मारते मारते खरकी तक पहुंचा दिया। वहां निज़ामुल्मुल्क रहता था। पर एक दिन पहले खबर पाकर बालबच्चों और धनमाल सहित दौलताबादके किलेमें चला गया था। उसके आदमी मुल्क में बिखर गये। बादशाही सेनापतियोंने ३ दिन खरकीमें रहकर उस शहरको जो बीस वर्षमें बसा था ऐसा उजाड़ा कि बीस वर्ष आगे तक भी उसका यथार्थ शोभा पाना सम्भव नहीं है। यहांसे सेना अहमदनगरको गई जिसे अबतक भी गनीम घेरे हुए था। सेना पट्टन तक पहुची थी कि अम्बरने वकील भेजे और नम्रतासे कहलाया कि आगेको सेवा नही छोड़ूंगा। बिना हुक्म कदम न बढाऊंगा। उन दिनों उर्दूमें अनाजकी बहुत महंगी थी और यह भी समाचार लग गये थे कि जो लोग अहमदनगरके किलेको घेरे हुए थे विजयी सेनाको अवाईसे भयभीत होकर भाग गये हैं। इस लिये बादशाही बन्दे कुछ सेना और कुछ रुपया सहायताके वास्ते

खंजरखांके पास भेजकर लौट आये। फिर अम्बरके बहुत गिडगिडाने पर यह बात ठहरी कि पुराने इलाकेके सिवा १४ कोस भूमि उन परगनोंको और छोड़ दें जो बादशाही इलाकेसे मिले हुए हैं और पचास लाख रुपये भेट दें।

बादशाहकी बखशिशें—बादशाहने शाह ईरानकी भेजी हुई वह रत्नजटित कलगी जिसकी प्रशंसा पहले होचुकी है अफजलखांके हाथ खुर्रमके वास्ते भेजी। अफजलखांको खिलअत हाथी और जड़ाऊ दवात कलम इनायत किया। खंजरखांका मनसब बढाकर चार हजारी १००० सवारोंका कर दिया। क्योंकि उसने अहमदनगरकी लडाइयोमें बहुत दृढ़ता दिखाई थी।

उदयराम दक्षिणी—उदयराम दक्षिणीको झण्डा मिला।

२१(१) (आषाढबदी ८) को मुकर्रबखां विहारसे आया।

ईरानके वकीलोंको बिदा—आकाबेग, मुहिबअलीबेग, हाजीबेर और फाजिलबेग शाह ईरानके भेजे हुए कई बार करके आये थे उनको बादशाहने बिदा करके आकाबेगको तो सिरोपाव खञ्जर जड़ाऊजीगा और ४०००० रुपये मुहिबअलीको खिलअत और ३००००) और इसी प्रकार दूसरोंको भी प्रदान किये। कुछ सौगात शाहके वास्ते भी उनके हाथ भेजी गई।

दिल्लीका सूबा—इसी दिन मुकर्रमखांको जो उडीसेसे बुलाया हुआ आया था दिल्लीको सूबेदारी और मेवातकी फौजदारी मिली।

गिरधर कछवाहा—राय साल कछवाहेके बेटे गिरधरका मनसब१२ सदी ८०० सवारोंका होगया।

तीर महीना।

गजरत्न हाथी—१ तीर (आषाढ़सुदी ५) को गजरत्न नाम हाथी खानजहांके वास्ते भेजा गया।

खुर्रमको घोडे—खुर्रमका नौकर नजरबेग उसकी अर्जी लेकर

(१) मूलमें २१ खरदाद गुरुवारको लिखी है पर इसमें कहीं भूल है क्योंकि गणितसे शनिवारको चाहिये।

आया था जिसमें घोडे भेजनेकी प्रार्थना लिखी थी बादशाहने राजा रुणदास मुशरिफको हुक्म दिया कि सरकारी तवेलोंसे १५ दिनमें एक हजार घोडे तैयार करके उसको देदे।

रूपरत घोडा—रूपरत घोड़ा जो शाह ईरानने रूसकी लूटसे भेजा था बादशाहने खुर्रमके वास्ते भेजा।

किश्तवार—पहले बादशाहने किश्तवारके जमीन्दारोंका बलवा मिटानेके लिये दिलावरखांके बेटे जलालको भेजा था परन्तु उससे वह काम न बना तब इरादतखांको खुद जानेका हुक्म दिया वह वहां गया और उपद्रवको दूर तथा थानोंको दृढ़ करके काश्मीरको चला आया। बादशाहने इस सेवाके पुरस्कारमें ५०० सवार उसके मनसब पर बढा दिये। ऐसेही ख्वाजा अबुलहसनके मनसबपर १००० सवार दक्षिणमें अच्छा काम करनेसे बढ़ाये गये।

उडीसा—इब्राहीमखां फतहजङ्ग सूबेदार बङ्गालके भतीजे अहमदबेगको बादशाहने उडीसेकी सूबेदारी खांका खिताब झण्डा और नक्कारा देकर उसका मनसब दो हजारी ५०० सवारोंका करदिया।

काजी नसीर बुरहानपुरी—बादशाहने काजी नसीरको विद्वत्ता की प्रशंसा सुनकर उसको बुरहानपुरसे बुलाया था और आदरपूर्वक उससे मिला था। लिखता है—"कम कोई किताब होगी जो उसने न पढ़ी हो। लेकिन उसके जाहिरका बातिनसे बहुत कम मेल है। इसलिये उसकी संगतसे प्रसन्नता नहीं होसकती और उसे भी मैंने विरक्त पाया। इसलिये नौकरीका कष्ट न दिया और ५०००) देकर बिदा किया।"

अमरदाद महीना।

अमीरोंके इजाफे—१ अमरदाद (सावन सुदी ७) को बाकरखां का मनसब दो हजारी १२०० सवारोंका होगया। दक्षिणी सेनामें उत्तम सेवा करनेवाले ३२ अमीरों और बादशाही बन्दोंके मनसब यथायोग्य बढाये गये।

कन्दहार—कन्दहारके हाकिम "अबदुलअजीजखां नकशबन्दी"

का मनसब खानजहांकी प्रार्थनासे ३ हजारी २००० सवारोंका होगया।

शहरेवर महीना।

जंबीलबेगको बखशिश—१ शहरेवर (भादों सुदी ८) को बादशाहने ईरानके एलची जंबीलबेगको एक जडाऊ तलवार बख्शी और १६००० रुपयेकी जमाका एक गांव भी उसे आगरा प्रान्तमें दिया।

हकीम रुकना कुपात्रतासे सेवाके योग्य न समझा जाकर मौकूफ किया गया।

इन्साफ—बादशाहने यह सुनकर कि खानआलमके भतीजे होशंगने एक नाहकका खून किया है उसे अपने सामने बुलाया और तहकीकात की। सबूत होजाने पर उसके लिये प्राणदण्डकी आज्ञा दी। वह लिखता है—इन बातोंमें मैं शाहजादोंकी भी रियायत नहीकरता, अमीरों और दूसरे बन्दोंकी तो बातही क्या।

आसफखांके घर जाना—इसी दिन बादशाह आसफखांकी प्रार्थनासे उसके घर गया। उसने एक सुन्दर हम्माम नया बनवाया था उसमें स्नान किया और उसकी भेटमेंसे कुछ पदार्थ लेआया।

कल्याण लुहार—बादशाहने सुना कि कल्याण नामका एक लुहार अपनी जातिकी किसी स्त्री पर आसक्त होकर उसके पीछे पीछे फिरता है पर वह विधवा होने पर भी उसे नहीं चाहती है। बादशाहने दोनोंको अपने सामने बुलाकर पूछताछ की और स्त्रीको उससे नाता करनेके लिये बहुतसा कहा सुना। पर उसने अङ्गीकार न किया। तब लुहारने कहा यदि मुझे यह प्रतीत होजावे कि आप इसको मुझे बख्श देंगे तो मैं किलेके शाहबुर्ज परसे कूद पड़ूं। बादशाहने कहा कि जो तेरा मोह सच्चा है तो इस घरकी छत परसे ही कूद, मैं उसे तुझको हुकमन देता हूं। अभी यह बात पूरी भी न हुई थी कि वह बिजलीकी तरह दौडकर कूद पडा और गिरतेही उसकी आंख और मुंहसे खून बहने लगा—बादशाह

[१४]

लिखता है—मैं इस दिल्लगीसे बहुत पछताया और उदास हुआ। आसफखांको हुक्म दिया कि इसको अपने घर लेजाकर इलाज करे परन्तु उसकी मृत्यु आपहुंची थी उसी व्यथासे मरगया।

बादशाहको दमकी बीमारी—दशहरेके दिन कशमीरमें बादशाहको सांस घुटकर आता सा जान पड़ा था। वहां बहुत मेह बरसने और ठण्डी हवा होनेसे सांसकी नालीमें बाईं तरफ दिलके पास तंगी और गरानी पाई गई थी। होते होते बहुत बढ़ गई। पहले हकीम रुहुल्लहने गर्म दवाइयां दीं जिनसे कुछ कमी होगई परन्तु जब बादशाह उस घाटेसे उतरा तो फिर तकलीफ बढ़ गई। इस समय कुछ दिनतक बकरीका फिर ऊंटनीका दूध पिया। परन्तु किसीसे कुछ फायदा न हुआ। फिर हकीम रुकनाने जिसे बादशाह कशमीरमें छोड़ आया था आकर गर्म और खुश्क दवाइयोंसे इलाज किया जिनसे उल्टी गरमी और खुशकी मगजमें चढ गई। बादशाह बहुत दुबला होगया रोग बहुत बढ गया। वह लिखता है—ऐसी हालतमें जबकि पत्थरका दिल भी मेरे ऊपर पिघलता था हकीम मिरजा मुहम्मदका बेटा कृतघ्न सदरा, जिसे मैंने सब हकीमों से बढाकर मसीहुज्जमां की पदवी दी थी और यह जानता था कि यह किसी दिन मेरे काम आवेगा, कुछ दवा दारू न करता था और मुझे उसी दुर्दशामें रखना चाहता था। मैं बहुत कुछ मेहरबानी जताकर उसे इलाज करनेको कहता था तो वह और भी क्रूर होकर अर्ज करता था कि मुझे अपनी विद्या और हिकमत पर इतना भरोसा नहीं है कि इलाज कर सकूं। ऐसेही हकीमुल्मुल्क का बेटा हकीम अबुलकासिम भी जो खानाजाद और पाला हुआ था अपनेको ऐसा उदास और चिन्तातुर दरसाता था कि देखनेसेही मन मलिन और दुःखित होजाता था, फिर इलाज कराना तो कहां रहा? लाचार मैंने सबको छोड़कर बाहरी उपचारोंसे दिल उठा लिया और अपनी आत्माको परमात्माके समर्पण करदिया। प्यालेके नशेमें रोगकी कुछ कमी होजाती थी इसलिये मात्राके अतिरिक्त

दिनमें भी प्याले लेने लगा। इस तरह दारू बहुत बढ गई। जब गर्मी आई तो उसका नुकसान भी मालूम होने लगा। तब नूरजहां बेगम जिसकी चेष्टा और अनुभव इन तबीबोंसे बढ़ा हुआ था प्रेमवश प्याले घटाने लगी। पहले भी हकीमोंका इलाज उसी की सलाहसे होता था। पर अब मैंने उसीकी कृपा पर सब काम छोड़ दिये। उसने धीरे धीरे शराब कम कराई। अनुचित चीजों और कुपथ्य खानोंसे परहेज कराया। आशा है कि ईश्वर स्वास्थ्य देगा।

सौरपचीय तुलादान—१८(१) रविवार २५ शव्वाल सन् १०३० (आश्विन वदी ११ संवत् १६७८) को बादशाहके सौरपचीय जन्म दिवसका उत्सव बडे समारोहसे हुआ। पिछले वर्ष बादशाहने बहुत कष्ट उठाया था और इस वर्षके लगतेही आराम होगया था। उसके हर्षमें नूरजहांने प्रार्थना की कि मेरे सचिव इस उत्सवका सम्पादन करेंगे। बादशाह लिखता है—"वास्तवमें उसने ऐसी मजलिस सजाई कि देखनेवालोंको आश्चर्य होता था। जिस तिथि से नूरजहां बेगम मेरे निकाहमें आई है प्रत्येक सौम और सौर-पचीय तुलादानोंके उत्सव इस महत् राज्यकी विभूतिके योग्य सम्पादन करनेमें वह अपना सौभाग्य समझती है। इस उत्सवमें तो उसने कमाल करदिया। सभा सजानेमें अत्यन्त प्रयत्न किया। जिन निज सेवकोंने बीमारीमें रात दिन निरन्तर कष्ट सहकर सेवा की थी उनको यथायोग्य खिलअत जडाऊ परतले जडाऊ खंजर हाथी घोडे और रुपयोंसे भरे हुए थाल मिले। हकीमोंने कोई अच्छी सेवा न की थी और थोडीसी शान्ति होजाने परही जो दो तीन दिनसे अधिक नहीं रहती थी अपनी सुसेवा जताकर इनाम इकराम पाते रहते थे, तोभी, वहलोग इस आनन्दोत्सवमें उचित पारि-तोषिक नकद रुपये और अमूल्य वस्तुएं पाकर अपनी मनोकामना को प्राप्त हुए। सभा विसर्जन होने पर रुपयों और रत्नोंसे भरे हुए

(१) तुजुक जहांगीरीमें भूलसे १२ शहरेवर चन्द्रवार लिखा है।

थाल न्यौछावर होकर मंगलमुखियों और मुहताजोंको झोलियोंमें डाले गये।"

जोतकराय—जोतकराय जो आरोग्य मंगलको बधाई दिया करता था मोहरों और रुपयोंमें तोला गया। ५०० मोहरें और ७०००) उसको इस प्रसंगसे इनाममें मिले।

भेट—उठते वक्त भेट जो सजी रखी थी बादशाहको दिखाई गई। जवाहिर और जड़ाऊ चीजोंमेंसे कुछ बादशाहने चुन लीं। इस उत्सव और इनाममें नूरजहां बेगमने दो लाख रुपये खर्च किये। भेट इससे अलग थी।

बादशाहका वजन—बादशाह लिखता है—"पिछले वर्षों जब मैं भला चंगा था तो तोलमें ३ मनसे कभी सेर दो सेर ज्यादा और कभी कम होता था। इस वर्ष बीमारीसे दुबला होकर दो मन२७ सेर उतरा।"

महर महीना।

१ महर(१) शनिवार (आश्विनसुदी१०) को कशमीरके हाकिम एतकादखांका मनसब चारहजारी २५०० सवारोंका होगया।

राजा गजसिंह—राजा गजसिंहका मनसब चारहजारी ३००० सवारोंका होगया।

शाह परवेज—शाह परवेज बादशाहको बीमारीके समाचार मिलने पर व्याकुल होकर विना बुलायेही चल दिया था सो १४ (कार्तिक बदी ८) को शुभमुहूर्तमें उसने चौखट चूमी। बादशाह लिखता है—वह तीन बार तख्तके आसपास फिरा। मैं जितना कहता था, शपथ देता था और निषेध करता था उतनाही वह दीनता और अधीनता जताता था। निदान मैंने उसका हाथ पकड़

---

(१) तुजुक पृष्ठ ३३५ में १ महर गुरुवारको लिखी है। पर उस दिन तो २९ शहरेवर थी। जो शहरेवरका महीना २८ दिनका माना हो तो १ महर गुरुवारको होसकती है नहीं तो पंचांगके हिसाबसे शनिको थी—यही हमने ऊपर लिखी है।

कर अपनी तरफ खैंचा और बड़े चावसे बगलमें लेकर बहुतसा प्यार किया।

खुर्रमको २० लाख रुपये—इन दिनों दक्षिणी सेनाकी समर-सामग्रीके लिये बीस लाख रुपयेका खजाना खुर्रमके पास अल्लह-दादखांके हाथ भेजा गया।

कयामखां—२८ (कार्तिक सुदी ८) को कयामखां किरावलबाशी (शिकारियोंका नायक) मरगया। बादशाहको उदासी हुई क्योंकि वह शिकारके कामोंमें चतुर और बादशाहका मनोगामी था।

नूरजहां बेगमकी माका मरना—२९ (कार्तिक सुदी ९) को नूरजहां बेगमकी माका देहान्त होगया। बादशाह लिखता है—"सुशील घरानेकी इस विशुद्ध प्रकृतिवाली बेगमकी क्या प्रशंसा की जाय। जो उत्तम गुण स्त्रियोंके आभूषण होते हैं वह सब इसमें थे। इसके समान संसारमें कोई स्त्रीरत्न नहीं देखा। मैं उसे अपनी मासे कम नहीं जानता। एतमादुद्दौलाको इससे जो प्रेम था वह किसी पतिको भी अपनी पत्नीसे न होगा। इससे अनुमान कर सकते हैं कि उस व्यथित बूढ़े पर क्या बीती होगी। ऐसेही नूर-जहां बेगमकी ममताका जो उसे उस अच्छी मातासे थी क्या लिखा जावे। आसफखां जैसा पुत्र अति बुद्धिमान होकर भी व्याकुलतासे गृहस्थवृत्तिको छोड़कर विरक्त हो बैठा। शान्तचित्त पिताने जब प्रियपुत्रकी यह दशा देखी तो उसे और शोक हुआ। उसने बेटेको बहुत समझाया पर वह कुछ न समझा। जिसदिन मैं मातमपुर्सीको गया था उस दिन उसकी उदासीका प्रारम्भही था। इसलिये मैंने प्यारसे थोड़ासा उपदेश किया अधिक आग्रह नहीं किया। उसे उसी दशामें छोड़दिया कि जब शोकका वेग कम होजायगा तो कुछ दिन पीछे उसके हृदयके घावको मेहरबानीके मरहमसे अच्छा करके फिर गृहस्थाश्रममें ले आऊंगा। एतमादुद्दौला मेरे लिहाजसे अपना दुःख दबानेमें बहुत साहस करता था। पर इस प्रकारकी प्रीतिमें

कहांतक साहस उसका साथ देसकता है।"

आवान महीना।

१ आवान (कार्तिक सुदी ११) को सरबुलन्दखां, जानसुपारखां और बाकीखांको नक्कारे इनायत हुए।

अबदुल्लहखां बिना छुट्टी दक्षिणी सेनासे अपनी जागीरमें चला आया था, इस अपराधमें बादशाहने दीवानोंको कहा कि उसकी जागीर उतार लें और एतमादरायको हुक्म दिया कि सजावली(१) करके उसको उसी सूबेमें पहुंचा दे।

हकीम मसीहुज्जमांको विदा—हकीम मसीहुज्जमांकी करतूत पहले लिखी जाचुकी है। अब उसने और ढिठाई करके मक्के जाने की आज्ञा मांगी। बादशाहने जो खुदा पर भरोसा रखता था प्रसन्न मनसे उसको विदा किया और उसके सबप्रकार सम्पत्तिसम्पन्न होने पर भी उसे २००००) खर्चके वास्ते दिये।

उत्तरकी बादशाहकी यात्रा—१२ शनिवार(२) (अगहन बदी७) को बादशाह उत्तरके पहाड़ोंकी ओर गया। क्योंकि आगरेकी गर्म हवा उसे बरदाश्त न थी। विचार था कि यदि प्रान्तिक वायु सम-भाव हो तो गंगाके तट पर कोई भली भूमि देखकर एक नगर बसावें जो गर्मियोंमें रहनेके काम आवे। नहीं तो कश्मीरको कूच कर जावें।

मुजफ्फरखांको नक्कारा घोडा और हाथी देकर राजधानीकी रखवाली पर छोडा। उसके भतीजे मिरजा मुहम्मदको असदखां की पदवी और शहरको तहलटीकी फौजदारी दीगई।

बाकरखां अवधकी सूबेदारी पर भेजा गया।

---

(१) घेर कर।

(२) यहां भी दो दिनका अन्तर है मूलमें चन्द्रवार है।

अठारहवां वर्ष।

सन् १०३१ हिजरी।

अगहन सुदी ३ संवत् १६७८ तारीख ६ नवम्बर सन् १६२१ से कार्तिक सुदी १ संवत् १६७९ तारीख २५ अक्टोबर सन् १६२२ तक।

शाह परवेज विहारको—२६ (अगहन सुदी ६) को बादशाहने मथुराके पाससे शाह परवेजको नादिरी सहित खासा सिरोपाव जड़ाऊ खञ्जर घोड़ा और हाथी देकर विहारकी सूबेदारी पर विदा किया जहां उसकी जागीर भी थी।

आजर महीना।

६ आजर (अगहन सुदी १५) को बादशाह दिल्ली पहुंचा और दो दिन सलीमगढ़में रहकर शिकारका मजा लेता रहा।

जादूराय खाता—इन दिनों बादशाहसे अर्ज हुई कि जादूराय खाता जो दक्षिणके श्रेष्ठ सरदारोंमेंसे था भाग्यवलसे बादशाही दलमें आकर नौकर होगया है। बादशाहने उसके वास्ते कृपापत्र खिल-अत और जड़ाऊ खञ्जर नारायणदास राठौरके हाथ भेजा।

दे महीना।

१ दे ८ सफर (पौषसुदी १०) को बादशाहने कासिमखांके भाई मकसूदको हाशिमखांका और हाशिमबेगको जांनिसारखांका खिताब दिया।

७ (माघ बदी १) को बादशाह हरिद्वारमें गंगाके किनारे उतरा। लिखता है—"हरिद्वार हिन्दुओंके प्रतिष्ठित तीर्थोंमेंसे है। बहुतसे ब्राह्मण और सन्यासी यहां एकान्तवासी होकर परमेश्वरका पूजन अपनी धर्मनिष्ठाके अनुसार कर रहे थे। मैंने प्रत्येकको यथा-योग्य रुपये और पदार्थ दिये। इस पहाड़का जलवायु मेरे तनको

न भाया और न ऐसी कोई भूमिही देखी जहां रहता। इससे मैंने जम्मू और कांगड़ेके पहाडको प्रस्थान किया।"

राजा भावसिंहका देहान्त—इन्हीं दिनोंमें बादशाहसे अर्ज हुई कि राजा भावसिंह दक्षिणके सूबेमें मर गया। बादशाह लिखता है—"अधिक मद्य पीनेसे बहुत दुर्बल होगया था। अकस्मात् मूर्च्छा आई। हकीमोंने वहुत उपाय किये उसके मस्तक पर डाम भी दिये परन्तु होश न आया। एक रात एक दिन संज्ञाहीन पडा रहा। दूसरे दिन शान्त होगया। दो स्त्रियां और ८ लौंडियां उसकी प्रेमाग्निमें जल गईं। उसका वडा भाई जगतसिंह और भतीजा महासिंह दोनो मद्यपानमें अपने प्राण खोचुके थे। तो भी इसने उनसे कुछ शिक्षा न लेकर अपनी मीठी जान इस कड़वे पानी में डबोई। बहुत सुन्दर सुशील और सजीला था। मेरी युवराजावस्थामें सेवाको प्राप्त होकर मेरे प्रतापसे पांचहजारीके पदको पहुंचा था। उसके कोई पुत्र न था इसलिये मैंने उसके वडेभाईके पोते(१) को बालक होनेपर भी राजाकी पदवी दोहजारी जात और १००० सवारोंका मनसब इनायत करके आमेरका परगना जो इन लोगोंका वतन है यथावत उसको जागीरमें रहने दिया जिससे उसकी सेना बिखरने न पावे।"

आलूतवा—(८ माघ वदी २) को बादशाहका मुकाम सराय आलूतवामें हुआ। बादशाहने पली सुर्गाबीका मांस खाना तो उसे कीडे खाते हुए देखकर अजमेरमें छोड दिया था, शिकारी सुर्गाबी का मांस खाना यहां छोड़ा। क्योंकि उसके पेटसे भी वैसेही कीड़े निकले थे। बादशाह जिस पशु पक्षीका शिकार करता था उसका पेट भी अपने सामने चिरवाकर पोटा देखता था। यदि उसमें कोई वस्तु ऐसी निकल आती कि जिससे उसको घृणा होती थी तो उस का मांस न खाता था।

(१) जयसिंह, महासिंहका बेटा।

उकावका मांस—खान आलमने कहा कि सपेद उकावका मांस वहुत स्वादु और हलका होता है। वादशाहने अपने सामने मंगा कर साफ कराया तो उसके पोटेमेंसे भी १० कीड़े निकले। इससे उसे घृणा होगई।

सरहिन्द—२१ (माघ सुदी १) को वादशाह सरहिन्दके वागमें पहुंचकर दो दिन तक यहां विहार करता रहा।

ख्वाजा अवुलहसन दक्षिणसे आगया।

वहमन महीना।

इलाहावास—१ वहमन (माघ सुदी ८) को नूरसरायमें सवारी उतरी। खान आलम घोड़ा सिरोपाव और जड़ाऊ तलवार पाकर इलाहावासकी सूवेदारी पर विदा हुआ।

व्यास नदी—गुरुवार(१) को वादशाह व्यास नदीके तट पर पहुंचा। कासिमखां लाहोरसे और उसका भाई हाशिमखां कांगडे से पहाडी जमींदारोंको लेकर उपस्थित हुआ।

वलवाडेका जमींदार वासू—वलवाडेके जमींदार वासूने एक पक्षी भेट किया जिसको पहाडी लोग जानवहन कहते हैं। वासूने अर्ज की कि यह जानवर वर्फके पहाडमें रहता है। वादशाह लिखता है—चकोरोंके दडवेमें रखकर उससे वच्चे लिये गये। उसका मांस अनेकवार खाया गया। उसके मांसको चकोरके मांससे कुछ वरा-वरी नहीं है। उसका मांस स्वादु है।

फूलपकार—वादशाह लिखता है,—जो जानवर इन पहाडोंमें देखे गये उनमें एक फूलपकार है जिसको कश्मीरी मूतलू कहते हैं। यह मोरनीसे छोटा होता है। पीठ पूंछ और दोनों भुजा कलौस लिये हुए (जैसे चरजके पख होते हैं) और उनमें सफेद तिल पेट छातीके आगे तक काला और सफेद छीटे, किसी किसीके लाल छीटे भी होते हैं। भुजाओंके पंख सुर्ख अंगारा, खूब चमकता हुआ, चोंचसे गुद्दीके पीछे तक भी काला भंवर, माथे पर दो सींग,

(१) इस दिन ७ वहमन (माघ सुदी १५) थी।

कान फीरोजी रंगके, आंख और मुंहके आसपास लाल चमडा, गलेके नीचे दो हथेलियोंके बराबर गोल चमडा जिसमें एक हथेली भर तो बनफशाके रंगका (बैंगनी) और बीचमें फीरोजी रंगमें छींटे पड़ेहुए। उसके गिर्द फीरोजी रंगका कुण्डल खिंचा हुआ जिसमें ८ कंगूरे। उस पर शफतालूके रङ्गका घेरा, फिर गरदन पर फीरोजी लकिरें और पांव भी लाल, जीता तोला गया तो १२९ तोलेका हुआ।"

मुर्ग जरींन—दूसरा मुर्ग जरींन है जिसको लाहोरके लोग शन कहते हैं और कशमीरी पोट। उसका रंग मोरकी छातीकासा सिर पर बाल। पूंछ चार पांच उंगलकी पीली मोरके बिचले परके समान डील काजके बराबर, परन्तु काजकी गर्दन लम्बी और बेडौल इसकी छोटी और सुडौल—मेरे भाई शाह अब्बासने मुर्ग जरींन मांगा था मैंने पकड़वाकर कईएक उसके वकीलके हाथ भेजे।"

चन्द्रतुलादान—चन्द्रवार(१) (फाल्गुण वदी ५) को चन्द्रतुलादान का उत्सव था जिसमें नूरजहां बेगमने बडे बड़े अमीरों और पास रहनेवाले बन्दोंमेंसे ४५ को खिलअत दिये।

बहलोन—१४ (फाल्गुण वदी ८) को सीतामहल प्रान्तके गांव बहलोनमें लशकर उतरा। बादशाहके मनमें कांगडा देखनेकी इच्छा सदासे थी इसलिये बडे उर्दूको यहां छोड़कर निज पारिषदों और सेवकों सहित किला देखने गया। एतमादुद्दौला बीमार था उसको उर्दूमें छोड़ गया।

एतमादुद्दौलाकी मृत्यु—दूसरे दिन एतमादुद्दौलाके मरणप्राय होजानेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है—मैं नूरजहांकी घबराहट और उसके मोहमें विवश होकर उर्दूमें लौट आया। तीसरे पहर उसे देखनेको गया। वह दम तोड़ रहा था कभी बेहोश होजाता था और कभी होशमें आजाता था नूरजहांने मेरी तरफ इशारा किया और कहा कि पहचानते हो? उसने ऐसे वक्त में अनवरीकी यह कविता पढ़ी—

(१) इस दिन १० बहमन थी।

"जो माके पेटसे जन्मा हुआ अन्धा भी आवे तो वह भी उसके जगत प्रकाशक ललाटमें वड़प्पनके चिन्ह देखले।"

मैं दो घडी तक उसके सिरहाने बैठा रहा जब कभी होशमें आता था तो जो कुछ कहता था समझबूझके साथ कहता था १७ (फाल्गुण वदी ११) को ३ घड़ी रात गये परलोकको सिधारा। मैं क्या कहूं कि इस घटनासे मुझ पर क्या बीती। वह बुद्धिमान मन्त्री भी था और मेहरबान मित्र भी।

ऐसे बडे राज्यका भार उसके कंधे पर था और मनुष्य मात्रसे असम्भव है कि राज्यका अधिकार पाकर सबहीको अपनेसे राजी रख सके तोभी कोई आदमी अपने कामके लिये एतमादुद्दौलाके पास जाकर नाराज नहीं लौटा। वह स्वामीके हितका भी ध्यान रखता था और काम वालोंको राजी और आशावान भी कर देता था। सच तो यह है कि यह हतखण्डा उसीको आता था। जिस दिनसे उसका जोडा* विछुडा उसने आपा नहीं सम्हाला। दिन दिन घुला चला जाता था प्रत्यक्षमें राज्यके काम परिश्रम पूर्वक करता था परन्तु अन्तःकरणमें विरहकी आगसे जलता था निदान ३ महीने २० दिन पीछे मर गया।"

दूसरे दिन मैं उसके बेटों और सम्बन्धियोंके पास मातमपुर्सीको गया। उनमेंसे ४१ और उनके आश्रितोंमेंसे १२ को सिरोपाव देकर उनकी मातमी वेष उतार आया।

कांगड़ेके किलेको कूच—दूसरे दिन बादशाह कांगडेको कूच करके ४ मुकामोंमें मानगंगा पहुचा। किलेदार अलिफखां और शेख फैजुल्लह चौखट चूमनेको आये।

चम्बेका राजा—उसी स्थानपर चम्बेके राजाकी भेंट भी पहुची। बादशाह लिखता है—इसका मुल्क कांगडेसे २५ कोस दूर है। इन पहाड़ोंमें उससे अच्छा जमींदार और नहीं है। इस मुल्कके सब जमीन्दारोंके भागनेकी जगह उसका मुल्क है जिसमें विकट

*नूरजहांकी मा मरी।

घाटियां बहुत है। उसने अबतक किसी बादशाहकी अधीनता नहीं की थी और न भेट भेजी थी। उसके भाईने भी सेवामें उपस्थित होनेका सम्मान पाकर उसकी ओरसे भाव और भक्ति प्रगट की। वह कुछ शहरी और माकूल देखनेमें आया। उस पर बहुत तरह की कृपाएं की गईं।

किलेमें प्रवेश—बादशाह लिखता है—२४ (फाल्गुणसुदी २) को मैं किला देखने गया और हुक्म दिया कि काजी, मीरअदल और मौलवी साथ रहकर मुसलमानीधर्मकी रीति पूरी करें। एक कोस चलकर किले पर पहुंचा। बांग, नमाज, खुतबा और गोवध आदि जो किला बसनेसे आजतक नहीं हुए थे वह सब मैंने अपने सामने कराये और खुदाका शुक्र किया क्योंकि किसी बादशाहको ऐसी श्रद्धा नहीं हुई थी। वहां एक बड़ी मसजिद बनानेका हुक्म दिया।

कांगड़ेकी कथा—बादशाह लिखता है—"कांगड़ेका किला एक बड़े ऊंचे पहाड़ पर बना है और ऐसा मजबूत है कि यहां अनाज और किलेदारीकी सामग्री हो तो कुछ जोर नहीं पहुंच सकता और उसके लेनेका कोई उपाय नहीं लग सकता। कहीं कहीं मोरचे लगानेके भी स्थान है और तोपें बन्दूकें भी यहां पहुंच सकती है किन्तु किलेवालोंका कुछ नहीं बिगड़ सकता। वह दूसरी जगह जाकर बच सकते हैं। इस किलेमें २३ बुर्जें और ७ दरवाजे हैं। भीतरका गिर्दाव एक कोस १५ डोरीका है लम्बाई पाव कोस दो डोरी, चौड़ाई २२ डोरीसे ज्यादा और १५ से कम नहीं। ऊंचाई ११४ गज है। किलेमें दो कुण्ड है। दोनों दो दो डोरी लम्बे और डेढ़ डेढ डोरी (जरीब) चौड़े है।

भवन—किला देखकर मैं दुर्गाके मन्दिरमें गया जो भवन कहलाता है एक दुनिया गुमराहीके जंगलमें भटकी हुई है। काफिरों के सिवा जिनका धर्मही मूर्तिपूजन है झुण्डके झुण्ड मुसलमान भी दूर दूरसे भेट लेकर आते हैं और इस काले पत्थरको पूजते हैं। शब्द मन्दिरके पास गन्धककी खान है गर्मी और लपतसे हमेशा

आगकी लौ उठा करती है। उसका ज्वालामुखी नाम है। उन्हें मूर्तिका चमत्कार बताते हैं। हिन्दुओंने अपना भाव सिद्ध करके साधारण लोगोंको बहकाया। हिन्दू कहते हैं—जब महादेवकी स्त्रीका देहान्त हुआ तो महादेव मोहसे उसके शरीरको कंधे पर उठाये हुए जगतमें फिरते रहे। शरीर गल जानेसे उसके अंग जहांतहां टूटकर गिरते थे। जहां जैसा अंग गिरा उस स्थानकी वैसी ही प्रतिष्ठा हुई। छाती दूसरे अंगोंसे उत्तम है, वह यहां गिरी थी। इस हेतु यह स्थान दूसरे स्थानोंसे अधिक पुनीत माना गयाहै।

कुछ यों कहते हैं कि यह पत्थर जो अब काफिरोंका पूज्य है वह पत्थर नहीं है जो आदिमें था। उसे मुसलमानोंकी एक सेना ने दरियाकी गहराईमें इस तौरसे डाल दिया कि फिर कोई उसका पता न पासका और बहुत वर्षों तक 'कुफ्र'का यह कोलाहल थम गया था। फिर एक धूर्त ब्राह्मणने अपनी दुकान जमानेके लिये एक पत्थर किसी जगह छिपा दिया और उस समयके राजाके पास आकर कहा कि मैंने दुर्गाको स्वप्नमें देखा है जो मुझसे कहती थी कि मुझे अमुक जगह डाल गये हैं शीघ्र निकलवा लो। राजाने मूर्खता और भेटके लालचसे ब्राह्मणकी बात मानकर कुछ लोग उस के साथ भेजे और उस पत्थरको मंगवाकर बडेआदरसे यहां रखा है। यह नये सिरसे कुफ्र और गुमराहीकी दुकान जमाई गई है। आगे खुदा जाने क्या सच है।

मदारकी पहाडी—मन्दिरसे मैं उस घाटीके देखनेको गया जो मदारकी पहाड़ीके नामसे विख्यात है। जल वायु हरियाली और स्थानीय शोभाके प्रसगसे बहुत उत्तम जगह है। एक झालरा भी वहां है जिसमें पहाडके ऊपरसे पानी गिरता है। मैंने हुक्म दिया कि यहां कोई अच्छी इमारत बनावें।"

कांगडेसे लौटना—२५ (फाल्गुण सुदी ४) को बादशाह किले से लौटा। अलिफखां और फैजुल्लहको हाथी और घोडे देकर किले की रखवाली पर विदा किया।

नूरपुर—दूसरे दिन नूरपुरमें लश्कर उतरा। बादशाहने यह सुन कर कि यहां जंगली मुर्गे बहुत हैं दूसरे दिन मुकाम करदिया और शिकार खेलने गया। ४ जंगली मुर्गे शिकार हुए। इस जानवरका शिकार अबतक नहीं किया था। बादशाह लिखता है—"रूप रंग और अंगमें तो पले मुर्गे जैसाही है पर विशेषता यह है कि यदि उसे पांव पकड़कर औंधा लटका लेजावें तो चुप चलाजाता है और घरेलू मुर्गा चिल्लाता है। घरेलू मुर्गेको जबतक गर्म पानीमें न डबो लेवें उसके पर सुगमतासे उखाडे नहीं जाते। पर इस जंगलीके पर, तीतर और पोदनेके परोंके समान सूखेही उखाड़लिये जासकते हैं। मैंने उसका मांस पकवाया और कबाब बनवाये तो बदमजा निकला। जो जितनापुराना था वह उतना ही मजेमें बुरा था। जवान कुछ चिकना था पर वह भी बदमजा। यह पक्षी एक तीरके टप्पेसे ज्यादा नहीं उड़ सकता। इनमें मुर्गा तो बहुधा लाल होता है और मुर्गियांकाली तथा पीली—यह नूरपुरके इस जंगलमें बहुत है।

नूरपुर—नूरपुरका पुराना नाम धमरी था। जब राजा बासूने पत्थरका किला मकान और बाग बनाया तो इसको मेरे नाम पर नूरपुर कहने लगे। ३००००) इस इमारतमें लगे होंगे। हिन्दू अपने सलीकेसे कैसीही इमारत बनावें और कितनीही उत्तमता दिखावें दिलनशीन नहीं होती। यह जगह उत्तम और मनोरम थी इसलिये मैंने हुक्म दिया कि एक लाख रुपये सरकारी खजानेसे इसके लिये लेलें और यहां एक अच्छा महल बनावें।

मौनी—"इन दिनोंमें अर्ज हुई कि इस प्रान्तमें एक मौनी सन्यासी रहता है जिसने सब इच्छाएं त्यागदी हैं। मैंने हुक्म दिया कि उसको मेरे सामने लाओ। मैं उसे देखूंगा। हिन्दुओंके मुनि तपस्वी सर्वनाशी अर्थात् सर्वत्यागी कहलाते हैं। सर्वनाशीसे सन्यासी हुआ। सर्वनाशी कई प्रकारके होते हैं—उनमेंसे एक मौनी हैं जो अपना अधिकार छोडकर परवश होजाते हैं। चुप रहते हैं। यदि दस दिन रात एक जगह खड़े होजावें तो आगे या पीछे पांव न

धरें। सारांश यह कि अपनी इच्छासे कुछ नहीं करते पत्थरसे बने रहते है। मेरे सामने लाया गया तो मैंने उसमें अद्भुत दृढता देखी। विचार हुआ कि शायद नशेमें उसको कुछ बात प्रगट हो। इससे दोआतशा शराबके कई प्याले पिलाये पर वह हिला तक नहीं। उसे मुर्दोंकी भांति उठा लेगये। खुदाने बड़ी इनायत की कि वह मरा नहीं। वह अपूर्व स्थिरता रखता है।

अस्फन्दार महीना।

६ अस्फन्दार (फाल्गुण सुदी १०) को बादशाहने एतमादुद्दौलाका लशकर और ठाठबाठ सब नूरजहां बेगमको देदिया और यह हुक्म किया कि बादशाही नौबतके पीछे उसको नौबत बजा करे।

कसहोना—४ (फाल्गुण सुदी १३) को परगने कसहोनेमें मुकाम हुआ। ख्वाजा अबुलहसनको कुल दीवानीका काम मिला।

खुसरोकी मृत्यु—खुर्रमकी अर्जी पहुंची। उसने लिखा था कि ८ (चैत्र बदी २) को खुसरो बायगोलेकी व्याधिसे मर गया।

राजा क्रष्णदास—राजा क्रष्णदासका मनसब बढकर दो हजारी ज़ात ५०० सवारोंका होगया।

२४ (चैत्र सुदी ३ संवत् १६७९) को बादशाह करछाककी शिकारगाहमें शिकार खेलने गया। वहां किरावलों और यसावलों ने पहलेसे जाकर जानवरोंको घेर लिया था १२४ पहाड़ी कलकचार और चिकारे शिकार हुए।

जैनखांका बेटा जफरखां मर गया।

१७ वां नौरोज़।

८(१) जमादिउलअव्वल चन्द्रवारकी रात (चैत्र सुदी ८) को एक पहर पाच घड़ी बीते सूर्य्य मेष राशि पर आया। बादशाहके राज्याभिषेकका १६वां वर्ष उतरकर १७ वा लगा। इस दिन बाद

(१) तुजुकमें तारीख भूलसे रह गई है इकबालनामेमें ८ है वही हमने ऊपर लिख दी है।

शाहने आसफखांका मनसब ६ हजारी ६००० सवारका कर दिया। कासिमखांको घोडा हाथी और सिरोपाव देकर पञ्जावकी सूबेदारी पर विदा किया।

ईरानके एलची जंबीलवेगको हुक्म हुआ कि सवारीके काश्मीरसे लौटने तक लाहोरमें सुखपूर्वक रहे।

शाह ईरानका कन्दहार लेनेका विचार।

इन दिनों सुना गया कि शाह ईरानने खुरासानसे कन्दहार लेने के उद्योगमें प्रस्थान किया है। बादशाहको यह विश्वास न होता था कि शाह इतना पुराना सम्बन्ध छोड़कर ऐसा ओछापन करेगा और इतना बड़ा बादशाह होकर मुझ छोटे सेवक पर जिसके पास तीन चार सौ से अधिक सेना कन्दहारमें न थी स्वयं चढ आवेगा। तो भी दूरअन्देशीसे अहदियोंके बखशीने जैनुलआदिनीको कृपापत्र देकर खुर्रमके पास भेजा और लिखा कि उस सूबेकी सेना जंगी हाथियों और तरल तोपखानों सहित तुरन्त सेवामें उपस्थित होवे। यदि खबर सच हो तो उसे बड़ी सेना और खजाना देकर भेजा जायगा कि वह जाकर शाह ईरानको सन्धिभङ्ग और अकृतज्ञताका मजा चखावे।

हसन अब्दाल—८ फरवरदीन (वैशाखबदी२) को हसन अब्दाल के झरने पर बादशाहके डेरे हुए।

१२ शुक्रवार (वैशाख वदी ६) को महावतखांने काबुलसे आकर जमीन चूमी। १००० मोहर और दस हजार रुपये न्यौछावर किये।

ख्वाजा अबुलहसनने अपनी सेना सजाकर हाजिरी दी। २०५० सवार अच्छे घोडों सहित लिखे गये जिनमें ४०० सवार बर्कन्दाज (बन्दूकची) थे।

वहीं बादशाहने हांकेका शिकार करके कपकार वगैरह ३२ जन्तु बन्दूकसे मारे।

हकीम मोमिना महावतखांके वसीलेसे सेवामें उपस्थित होकर इलाज करने लगा ।

१९ (वैशाख बदी १३) को पगलीमें डेरे लगे। मेष संक्रान्ति का उत्सव हुआ। महावतखांको हाथी घोड़ा सिरोपाव और काबुल जानेका आदेश मिला।

एतबारखां पुराना सेवक था और बूढा होगया था। बादशाह ने उसको ५ हजारी ४००० सवारका मनसब देकर आगरेकी सूबेदारी किले और खजानोंकी रखवाली पर नियत किया और हाथी घोडा तथा सिरोपाव देकर आगरे भेजा।

२९ (वैशाख सुदी ७) को कंवार घाटीमें इरादतखांने कश्मीर से आकर चौखट चूमी।

उर्दी बहिश्त ।

बादशाह कश्मीरमें—२ (वैशाख सुदी १२) को बादशाह कशमीरमें पहुंचा।

फौजदारी रसम माफ—बादशाहने रैयत और सिपाहीके सुख के लिये फौजदारीका कर माफ करके हुक्म दिया कि राजभरमें फौजदारीके वास्ते किसीको कुछ खेद न पहुंचावें।

१३ (ज्येष्ठ वदी ८) को बादशाहने हकीमों और विशेषकरके हकीम मोमिनाकी सम्मतिसे बायें हाथकी फस्द खुलवाई। मुकर्रिबखांको सिरोपाव और हकीम मोमिनाको १०००० दरब इनाम मिले।

अबदुल्लहखांका मनसब खुर्रमकी प्रार्थनासे ६ हजारी होगया और नक्कारा भी मिला।

बहादुरखां उजबकने कन्दहारसे आकर १०० मोहरें नजर और ४०००) रुपये न्यौछावर किये।

खुरदाद ।

१ (ज्येष्ठ सुदी १२—१३) को बादशाहने दक्षिण सेनाके कई अमीरोंके मनसब बढाये। राजा जगतसिंह और हिम्मतखांको नक्कारे दिये।

तीर महीना।

१ (द्वितीय आषाढ वदी १) सैयद बायजीदको मुस्तफाखांका खिताब और झंडा इनायत हुआ।

कन्दहार—तहव्वुरखां शाह परवेजके बुलानेको गया। कुछ दिन पहले कन्दहारके कर्मचारियोंकी अर्जी शाह ईरानके कन्दहार लेनेके विचारमें पहुंची थी। बादशाह पिछले और वर्त्तमान बरताव से इस बातको सच नहीं समझता था। अब खानजहांकी अर्जी आई कि शाह अब्बासने ईराक और खुरासानकी सेनाओंके साथ आकर कन्दहारके किलेको घेर लिया है। बादशाह लिखता है—मैंने हुक्म दिया कि कशमीरसे निकलनेका मुहूर्त्त नियत करें। ख्वाजा अबुलहसन दीवान और सादिकखां बखशी पहलेसे लाहोर को जावें और शाहजादोंके दक्षिण गुजरात बंगाला तथा बिहारके लशकरों सहित पहुचने और जो बड़े बडे अमीर सवारीमें हैं उनके आने तक, और लोग, जो अपनी जागीरोंसे पहुंचा करें उनको पुत्र(१) खानजहांके पास मुलतानमें भेजते रहें। ऐसेही तोपखाने, मस्त हाथियोंके हलके, खजाने और सलहखाने तैयार करके भेजें। मुलतान और कन्दहारके बीचमें बस्ती कम है और अनाजका प्रबन्ध किये बिना इतने बडे लशकरका भेजना सम्भव नहीं था। इसलिये यह स्थिर हुआ कि बनजारोंको दिलासा और रुपये देकर सेनाके साथ रखें। जिससे अनाजका कष्ट न हो। यहां बनजारे एक जातिके लोग है। इनमें कोई तो १००० बैल रखता है कोई जियादा और कोई कम। यह लोग गांवोंसे शहरमें अनाज लाते है और बेचते है। लशकरोंके साथ रहते हैं। ऐसे लशकरमें कमसे कम १ लाख बैल बल्कि विशेष साथ रहेंगे। ईश्वरकी कृपासे आशा है कि इतना लशकर शस्त्रों सहित प्रस्तुत होजावेगा कि अस्फहान तक पहुंचनेमें जो उसकी राजधानी है

(१) खानजहांको भी बादशाह पुत्र कहता और लिखता था और पुत्रोंके बराबरही उसका लाड़ रखता था।

कहीं विलम्ब और बाधा न होगी। खानजहांको हुक्म दिया गया कि लशकरोंके पहुंचने तक मुलतानसे उधर जानेमें आतुरता न करे और हुक्म पर कान लगाये रहे। बहादुरखां उजबक घोड़ा और सिरोपाव पाकर कन्दहारके लशकरकी सहायता पर नियत हुआ।

काशमीरके फकीरोंके वास्ते गांव—बादशाहने यह सुनकर कि काशमीरके फकीर जाड़ेमें ठण्डसे कष्ट पाते हैं हुक्म दिया कि काशमीरके परगनोंमेंसे ३।४ हजार रुपयेका एक गांव मुल्लातालिब अस्फहानीको देदें। वह फकीरोंके कपड़ों और मसजिदोंमें वजूके वास्ते पानी गर्म होनेका प्रबन्ध करा दिया करे।

किश्तवार—किश्तवारके जमींदारोंका फिर बदल जाना सुनकर बादशाहने इरादतखांको हुक्म दिया कि शीघ्रही वहां जाकर उनको पूरा पूरा दण्ड दे जिसमें फसादकी जड़ उखड़ जावे।

खुर्रमकी अर्जी—इसी दिन जैनुलआबिदीनने उपस्थित होकर प्रार्थना की कि खुर्रमने बरसात मंडूके किलेमें बिताकर दरगाहमें आना निश्चय किया है। उसकी अर्जी पढी गई। बादशाह लिखता है—"अर्जीके लेख और प्रार्थनासे खैरकी नहीं बेदौलतीकी बू आती थी। हुक्म हुआ कि यदि उसका इरादा बरसात बाद आनेका है तो बड़े बड़े अमीरों और दरगाही बन्दोंको जो उसकी सहायता पर स्थित हैं, विशेषकर बारह बुखाराके सैयद शेखजादे पठान और राजपूतोंको दरगाहमें भेज दे।

मिरजा रुस्तम और एतकादखांको हुक्म हुआ कि लाहोरसे जाकर कन्दहारके लशकरकी तय्यारी करे। उनको एक लाख रुपये मदद खर्चके दिये गये। इनायतखां और एतकादखांको नक्कारे इनायत हुए।

किश्तवार—इरादतखां जो किश्तवारमें गया था बहुतसे फसादियोंको मारकर और वहांके थानोंको दृढ करके बादशाहके पास आगया।

मोतमिदखां जो दक्षिणी सेनाका बख्शी नियत हुआ था उसका

का काम पूरा होजानेसे बादशाहके बुलाने पर सेवामें उपस्थित होगया.

ज्योतिष और रमलका चमत्कार—बादशाह लिखता है—अजब बात यह हुई कि महलमें १४।१५ हजार रुपयेका एक मोती गुम होगया। जोतकरायने अर्ज की थी कि दो तीन दिनमें मिल जायगा। सादिकखां रम्मालने यह अर्ज की कि इन्हीं दो तीन दिनमें किसी पुनीत स्थान अर्थात् (इबादतखाना) नमाज पढने, माला फेरने तथा ध्यान करनेकी जगहसे मिल जायगा। और एक रम्माल स्त्रीने यह प्रार्थना की थी कि शीघ्रही उपलब्ध होगा और एक स्वेतांगी रमणी हंसती हंसती लाकर हजरतके हाथमें देदेगी। अकस्मात् तीसरे दिन एक तुर्क लौंडी इबादतखानेमें उसे पाकर प्रसन्नता पूर्वक मुसकराती हुई मेरे हाथमें देगई। तीनोंकी बात एकसी मिली इसलिये तीनोंही मनचाहा इनाम पाकर प्रतिष्ठित हुए। यह बात विचित्रतासे खाली न थी इस लिये लिखी गई।

दक्षिणी सेना—बादशाहने अपने पास रहनेवाले बन्दोंमेंसे कौकब और खिदमतगारखां वगैरह १२ पुरुषोंको दक्षिणके अमीरों को सजावली पर नियत किया कि वह अच्छे प्रबन्धसे उन सबको शीघ्रही दरगाहमें ले आवें और वह कन्दहारकी सेनामें भेजे जावें।

खुर्रमके कौतुक—इन दिनों लगातार अर्ज हुई कि खुर्रमने नूरजहां और शहरयारकी जागीरों(१) पर बिना हुक्म हस्तक्षेप करके परगने धौलपुरमें, जो दीवानआलासे शहरयारकी जागीरमें तनख्वाह किया गया था दरिया नाम पठानको भेजा। वह उस प्रान्त

---

(१) यह जागीरें शाहजहांकी थीं जो नूरजहांने अपने जमाई शहरयारको दिलादी थी। क्योंकि वह खुर्रमका जोर घटाकर शहरयारको युवराज कराया चाहती थी। बादशाहका दिल खुर्रम से फिरा दिया था। इसी पर यह सब उपद्रव उठा था जो आगे बढ़ता चला गया।

के फौजदार और शहरयारके नौकर शरीफुल्मुल्कसे आकर लडा। दोनों ओरके बहुतसे आदमी मर गये हैं।

बादशाह लिखता है—"उसने मंडूके किलेमें ठहरकर जो असम्भव और अनुचित प्रार्थनायें अर्जीमें लिख भेजी थीं उनसे पाया जाता था कि उसकी मत मारी गई है। अब इन बातोंके सुननेसे निश्चय होगया कि उसका जो इतना अधिक लालन पालन किया गया उसकी समाई उसमें नहीं है और उसका मगज चल गया है। इस लिये मैंने राजा रोजअफजूंको जो पुराना और पास रहनेवाला सेवक है उसके पास भेजकर इस ढिठाईका जवाब पूछा और आज्ञा दी कि अपनेको सम्हालकर मर्य्यादासे आगे पांव न बढावे और अपनी जागीर पर जो दीवानेआलासे तनखाहमें पाचुका है सन्तुष्ट रहकर हजूरमें आनेका इरादा न करे। जो बन्दे कन्दहार जाने के वास्ते बुलाये गये हैं उनको तुरन्त दरगाहमें भेजदे। यदि आज्ञा के विरुद्ध करेगा तो पछतावेगा।"

राजा वरसिंहदेव—उजाला दखनी, राजा वरसिंहदेवके लाने को कृपापत्र सहित भेजा गया।

प्रणभङ्ग—बादशाह लिखता है—"मैं खुर्रम और उसकी सन्तानसे पूर्ण स्नेह रखता था। जब उसका बेटा बहुतही बीमार होगया था तो मैंने यह प्रण किया था कि यदि परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा तो मैं बन्दूकका शिकार न करूंगा और किसी जीव को अपने हाथसे न सताऊंगा। मुझे शिकारकी बडी लत है और विशेषकर बन्दूकसे शिकार मारनेकी। तोभी ५ वर्षसे उसके पास नहीं गया हूं। अब जो उसके दुष्कर्मोंसे मन फट गया तो फिर बन्दूकका शिकार अंगीकार कर लिया और यह हुक्म देदिया कि किसीको विना बन्दूक दौलतखानेमें न आने दें। थोडेही दिनोंमें बहुतसे बन्दोंको बन्दूक बांधने और लगानेका शौक होगया। तर्कशबन्द तो घोडे पर चढेही चढे उसका अभ्यास करने लगे।"

अमरदाद।

कश्मीरसे कूच और राणा करणके बेटेको बुलाना।

२५ अमरदाद (सावन सुदी ११) ६(१) शव्वालको शुभमुहूर्त्तमें बादशाहने कश्मीरसे लाहोरको कूच किया। बिहारीदास ब्राह्मण को कृपापत्र देकर राणा करणके पास भेजा कि उसके बेटेको सेना सहित हजूरमें लेआवे।

शहरेवर।

अछोल—१ (भादों बदी ३) को अछोलके झरने पर सवारी उतरी। गुरुवारको सरनागमें प्यालोंकी मजलिस हुई।

शहरयार—शहरयारने कन्दहार जानेका मुजरा करके १२ हजारी जात ८००० सवारका मनसब और मोतीके तुकमेको नादिरी सहित खासा खिलअत पाया।

कीमती मोती—इन दिनोंमें एक सौदागर दो बडे मोती रूमसे लाया था। उनमें एक ४५ रती और दूसरा ४४ रती था। नूर-जहांने दोनों ६० हजार रुपयेमें लेकर बादशाहको भेट किये।

फसद—१० शुक्रवार (भादों बदी १२) को हकीम मोमिनाकी सम्मतिसे बादशाह अपने हाथकी फसद खुलवाकर हलका हुआ। वह लिखता है—"मुकर्रबखां इस काममें पूरा अभ्यास रखता है और हमेशा मेरी फसद वही खोलता रहा है। वह कभी न चूका था पर अबके दोबार चूका। तब उसके भतीजे कासिमने फसद खोली। खिलअत और दो हजार रुपये उनको और १०००० दरब हकीम मोमिनाको इनाममें दिये गये।

सौर तुलादान—२१ (भादों सुदी ८) को सौरपचीय जन्मतिथि का उत्सव और तुलादान हुआ। बादशाहको ५४वां वर्ष लगा।

गङ्गाजलकी परीक्षा—२८ (आश्विन बदी १) को बादशाह कहर का झरना देखने गया। उसका पानी स्वाद और निर्मलतामें

(१) मूलमें भूलसे ७ लिखी है।

विख्यात था। बादशाहने उसका और लारके घाटेका पानी गङ्गा-जल(१) से अपने सम्मुख तुलवाया तो जहरका पानी ३ माशे और लारका आध माशे भारी हुआ।

हीरापुर—२० (आश्विन बदी ३) को हीरापुरमें डेरे हुए। इरादतखांने किश्तवारका प्रबन्ध किया था तोभी बादशाहने उसके बरतावसे कश्मीरकी प्रजाके गिला करने पर एतकादखांको कश्मीरकी सूबेदारी घोडा खिलअत और दुश्मनगुदाज नाम खासा खांडा दिया और इरादतखांको कन्दहारके लश्करमें नियत किया।

मह्‍र।

कंवरसिंह किश्तवारका राजा—बादशाहने किश्तवारके राजा कंवरसिंहको जो गवालियरके किलेमें कैद था बुलाकर किश्तवार देदिया। घोडा खिलअत और राजाका खिताब भी इनायत किया।

हैदर मलिक—हैदर मलिकको लारके घाटेसे नूरअफजाबागमें पानीकी नहर लानेके लिये भेजा और इस कामके लिये ३००००) उसको दिये।

भंबर—१२ (आश्विन सुदी १) को बादशाह जम्मूके पहाडोंसे होकर भंबरमें आया। दूसरे दिन कामरगे (हांके) का शिकार हुआ।

खुसरोके बेटे दावरबख्शको ५ हजारी जात और २००० सवार का मनसब मिला।

२४ (आश्विन सुदी १३) को बादशाह चिनाव नदीसे उतरा।

खुर्रम—इसी दिन खुर्रमका दीवान अफजलखां उसकी अर्जी लेकर आया जिसमें उसने अपने अपराधोंके उज्र लिखे थे। बादशाहने कपटयुक्त समझकर उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

आबान।

१ आबान (कार्तिक बदी ७) को महाबतखांके बेटे अमानुल्ह

---

(१) इससे पाया जाता है कि गङ्गाजल बादशाहके साथ रहता था।

का मनसब ५ हजारी १७०० सवारका होगया और महावतखांके बुलानेके लिये प्रसादपत्र भेजा गया।

बादशाह लाहोरमें—४ (कार्तिक वदी ८) को बादशाह लाहोर पहुंचा और दीवानोंको हुक्म हुआ कि खुर्रमकी जागीरोंकी तनखाह जो हिसारकी सरकार, अन्तरवेद और इन प्रान्तोंमें है उन बन्दोंकी तलबमें लगादें जो कन्दहारके लशकरमें नियत हुए हैं और खुर्रम इसके बदले मालवे दक्षिण और गुजरातके सूबोंके परगनोंमेंसे जहां चाहे लेले। अफजलखांको खिलअत देकर विदा किया गया और खुर्रमको गुजरात मालवा दक्षिण और खानदेशके सूबे इनायत होकर हुक्म हुआ कि इनमेंसे जहां चाहे वहीं रहकर उस मण्डलको दृढ़ रखे और कन्दहार जानेके वास्ते जिन बन्दोंको लानेके लिये सजावल भेजे गये हैं उनको दरगाहमें भेजदे। इसके पीछे अपनेको सम्हाले रहे आज्ञा भंग न करे नहीं तो पछतायगा।

उन्नीसवां वर्ष।

सन् १०३२ हिजरी।

कार्तिक सुदी १।३ संवत् १६७८ ता० २६ अक्तूबर सन् १६२२ से कार्तिक सुदी २ संवत् १६८० ता० १५ अक्तूबर सन् १६२३ तक।

ईरानके वकील—२६ (कार्तिक सुदी १५) को हैदरबेग और वलीवेग शाह ईरानके भेजे हुए आये और आदाव बजाकर शाहका पत्र बादशाहके सामने लाये। खानजहांने आज्ञानुसार मुलतानसे आकर १०००मोहरें, १००० रुपये और १८ घोडे भेट किये।

महावतखांको ६ हजारी ५००० सवारोका मनसव मिला।

राजा बरसिंह देव—बादशाहने सारंगदेवको राजा वरसिंह देव की सजावली पर भेजकर हुक्म दिया कि उसको बहुत जल्दी दरगाहमें ले आवे।

आजर।

ईरानके एलचियोंकी विदा—७ (अगहन वदी १२) को बादशाहने शाह अब्बासके वकीलोको जो कई बार करके आये थे खिलअत और खर्च देकर विदाकिया। शाहने जो पत्र कन्दहार लेने की माफीमें हैदरबेगके हाथ भेजा था और बादशाहने जो जवाब लिखा उसका सारांश यह है।

ईरानके बादशाहका पत्र।

आपको मालूम होगा कि बडे बादशाहका स्वर्गवास होने पर ईरानमें क्या क्या उपद्रव उठे थे। कई मुल्क भी इस राज्यके कर्मचारियोंके अधिकारसे निकल गये थे। जब मैं शासन करने लगा तो खुदाकी इनायत और मित्रोंकी सहायतासे बापदादाके समय के वह सब प्रदेश जो शत्रुओंके हाथ पड गये थे छीन लिये गये। कन्दहार आपके नौकरोंके पास था उसको मैं तदनन्तरही समझकर

भाई चारे और प्रीतिकी रीतिसे यह आशा रखता था कि आप भी अपने बाप दादों कासा बरताव करके उसको सौंप देनेकी मेहरबानी करेंगे। परन्तु जब आपने आनाकानी की तो मैंने कई बेर पत्र और संदेसा भेजकर खुलेतौर, उसे आपसे मांगा। इस आशासे कि यह छोटासा देश आपकी विशाल दृष्टिमें संकीर्णता उत्पन्न न करेगा और उसे हमारे सेवकोंको सौंपकर शत्रुओंका संदेह दूर कर देंगे। परन्तु कुछ लोगोंने इस काममें पहलेसेही ढील डाल रखी थी। जब यह बात मिलीं और शत्रुओंमें फूट निकली और उधर से कोई उत्तर न पहुंचा तो यह विचार हुआ कि कन्दहार जाकर शिकार और वनबिहार किया जाय। कदाचित इसी प्रसंगसे आपके कर्मचारी स्वागत करें और सेवामें उपस्थित हों। जिससे दोनों ओरके प्रेमका प्रकाश पृथ्वीमें नये सिरेसे हो तथा शत्रुओं और निन्दा करनेवालोंकी जबान बन्द होजाय। जब हम इस चेष्टासे किला लेनेके सामानके बिनाही प्रस्थान करके फरहमें पहुंचे तो कन्दहार के हाकिमको सैरोशिकारके लिये वहां आनेकी सूचना छापापत्र द्वारा दी, इसलिये कि वह अथिति सत्कार करे। मान्यवर ख्वाजा बाकी करकराककी बुलाकर हाकिम और अमीरोंको कहलाया कि हमारे और श्रीमान बादशाहके बीचमें कुछ अन्तर नहीं है। हम केवल सैरको इस सूबेमें आये हैं। उन्होंने यह हितकी बात भी न सुनी। हमारी तुम्हारी मित्रताको मंजूर न रखकर प्रतिकूलता प्रगट की। हमने किलेके पास पहुंचकर फिर उसी मान्यवरको बुलाया और जो उपदेश करनेका विधान था वह उसके द्वारा कहला भेजा। अपनी विजयिनी सेनाको दस दिन तक किलेके पास जानेसे मनाकर दिया। पर कुछ फल न हुआ। उल्टी और शत्रुता बढ़ी। आगे गुंजाइश न थी। कजलबाशोंके पास किला लेनेका कुछ सामान न था तो भी वह कन्दहार फतह करने पर उद्यत हुए। अल्पकालमें कोट और बुर्जोंको गिराकर किलेवालों को ऐसा तंग किया कि उन्होंने शरण चाही। हमने भी पुराने

प्रेम और आपकी जवानीके समयकी प्रीतिका खयाल करके, जिस पर दुनिया भरके बादशाह डाह करते हैं, उनको विनय माली और अपनी स्वाभाविक सज्जनतासे उनके अपराध क्षमा कर दिये। उन पर कृपाकरके निज भक्त हैदरवेग तीरवाशीके साथ आपकी दरगाहमें भेजा है। मैं खुदाकी कसम खाकर कहता हूं कि पुराने और नये प्रेमकी नीव मेरी ओरसे ऐसी कम मजबूत नहीं है जो उन तुच्छ कारणोंसे जो अचानक होपडे है हिलसके। आशा है कि उधरसे भी यही बरताव रहेगा और इन विचित्र घटनाओं पर कुछ दृष्टि न दी जायगी। यदि उस स्नेहमें कोई आशंका होगई हो तो उसकी निवृत्ति नई पुरानी प्रतिसे करके प्रेमकी जड़ और सुदृढ करें। हमारे समग्र राज्यको अपना समझकर जिसे वखगना चाहें उसकी सूचना कर दें, तुरन्त बिना किसी विचारके उसे सौंप दिया जावेगा—ऐसी छोटी छोटी बातोंका तो कहनाही क्या है। किलेके हाकिम और अमीरोंने यद्यपि कई काम प्रीतिकी रीतिके विरुद्ध किये तथापि जो कुछ हुआ हमारी तरफसे हुआ। उन्होंने तो अपनी नौकरीका हक पूरा कर दिया। आशा है कि श्रीमान भी उनपरबादशाहों कीसी कृपा करेंगे और हमको उनसे शर्मिन्दा न करेंगे।

पत्रोत्तर।

परमेश्वरका अनन्त धन्यवाद है, जिसने बडे बडे बादशाहोंके सन्धिबन्धनको अपनी सृष्टिकी शान्तिका हेतु बनाया है। इसका प्रमाण वह प्रेम और प्रीति है जो इन दोनों बड़े घरानोंमें चली आती है और जिसकी वृद्धि और दृढ़ता हमारे दिन दिन बढनेवाले राज्यमें इतनी बढ़ी थी कि उसका डाह दुनियाके बादशाहोंको था। पर आप उस प्रेम और भाईपनके खिले बागको अकारण सुखा देने के कारण हुए, जिसमें कयामत तक हानि पहुंचनेकी सम्भावना न थी। क्या बादशाहोंकी प्रीतिकी कभी यह भी रीति रही है कि पूरा भाईचारा होने पर भी जब कि प्यारमें एक दूसरेके सिरकी

सौगन्द खाते हों और जो मिलजानेसे मुल्क माल तो क्या जान देनेमें भी न अटकते हों, इस प्रकार सैर और शिकारके वास्ते आवें! आपके प्रेमपत्रसे, जो कन्दहारकी सैर और शिकारके उजरमें हैदर बेग और वलीबेगके हाथ आया, आपके शरीरकी कुशलता ज्ञात होकर अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई। उस सिद्धमनोरथ भाईसे छिपा न होगा कि जम्बीलबेगके आनेतक कभी पत्र और सन्देसा कन्दहारकी कामनाका न आया था। हां जब कि हम मनोहर-देश कशमीरमें विहार कर रहे थे और दक्षिणके दुनियादारोंने मूर्खतासे अधीनता छोड़कर सिर उठाया था और हम उनके दण्ड देनेके लिये लाहोरमें पधारे और पुत्र शाहजहांको उनके ऊपर भेजकर आगरे को आते थे, उस समय जम्बीलबेगने पहुंचकर आपका प्रेमपत्र दिया। हम उसे अपने लिये अच्छा शगून समझकर राजधानीमें आये। उस मोती बरसानेवाली चिट्ठीमें भी कन्दहारके मांगनेकी बात न थी। जम्बीलबेगने जबानी कहा तो हमने फरमाया कि हमें अपने भाईसे किसी बातका उजर नहीं है। दक्षिण फतह हो जाने पर उचित रीतिसे तुमको विदा करेंगे। तुम बहुत दूरसे चल कर आये हो इससे कुछ दिन लाहोरमें आराम करो। फिर हम बुला लेंगे। आगरेमें पहुंचकर हमने उसे विदा करनेके लिये बुलाया तो ईश्वरकी कृपासे दक्षिण फतह होगया। हम आप प्रसन्नतापूर्वक पञ्जाबको पधारे। तब उसको लौटानेका विचार हुआ। पर तुरन्त ही कुछ जरूरी काम कर लेने पर हवा गर्म होजानेसे कशमीरको रवानेहुए जो स्वर्ग समान है। जलवायुके सुरम्य होनेमें सातों विलायतोंके घूमनेवालोंको प्रमाण है। उस मनोरमा मेदनीमें पहुंचकर जम्बीलबेगको विदा करनेके वास्ते बुलाया और विदा करनेसे पहले यही चाहा कि स्वयं साथ रहकर उसको यहांके सब सुन्दर और सुरम्य स्थान भी दिखा देवें। इतनेहीमें उस प्यारे भाईके कन्दहार लेनेके इरादेसे पहुंचनेके समाचार लगे जिसका कभी विचार भी चित्तमें न हुआ था। बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक तुच्छ

स्थानको विजय करनेके लिये आप स्वयं पधारे और ऐसे प्रेम और भाईपनसे आंख छिपावें! सच्चे सावधान लोग यह समाचार वारम्बार भेजते थे तोभी हम विश्वास न करते थे। निदान जब यह बात निश्चय होगई तो हमने उसी घडी अबदुल्लअजीजखांको हुक्म दिया कि उस भाईके राजी रखनेमें कमी न करे। अब भी वही भाई-चारा बना है। हम इस मित्रताको दुनियाभरसे बढकर गिनते थे। मित्रताके योग्य तो यह बात थी कि एलचीके लौटने तक सन्तोष करते। शायद वह सफलमनोरथ होकर लौटता। एलची के पहुंचनेसे पहले ऐसा खटकता हुआ काम करनेसे प्रतिज्ञा और प्रीतिके पलडेको लोग न जाने किधर झुकावें!

कन्दहार—बादशाहने ईरानके दूतोंको बिदा करके कन्दहार के लशकर(१) को दण्ड देनेके लिये खानजहांको आगे जानेवाली सेनाके तौरपर बिदा किया जो कई कामोंकी सलाहके लिये बुलाया गया था। उसको हाथी, खासा घोडा, तलवार, जडाऊ खञ्जर, और खिलअत दिया और कहा कि शाहजादे शहरयारके पहुंचने तक मुलतानमें ठहरकर हुक्म पर कान लगाये रहे। बाकरखांको जो मुलतानका फौजदार था दरगाहमें बुलाकर अलीकुली बेगदर-मनको डेढहजारी मनसब दिया और खानजहांकी मदद पर नियत किया। लशकरखां वगैरह कई अमीरोंको दक्षिण दल तथा निज जागीरोंसे आये थे, घोड़े और खिलअत देकर, खानजहांके साथ कर दिया।

आगरेके खजाने—आगरेमें मुहरों और रुपयोंका जितना कुछ खजाना अकबर बादशाहके समयसे आजतक जमा हुआ था उसे दरगाहमें लेआनेके लिये बादशाहने आसफखांको आगरे भेजा।

शाह परवेज—शाह परवेजके वकील शरीफको हुक्म हुआ कि जल्दी जाकर परवेजको बिहारकी सेना सहित लेआवे और उसने

(१) ईरानी लशकरसे मतलब है।

साथ खास दस्तखतोंका फरमान भी भेजा। जिसमें उसके आनेकी बहुत ताकीद थी।

मोतमिदखां मुसव्वदा-नवीस—बादशाह लिखता है, कमजोरीके कारण जो दोवर्ष पहले होगई थी और अबभी है दिल और दमाग ने रोजनामचेके मुसव्वदे लिखनेमें साथ न दिया। मोतमिदखां जो दक्षिणसे आगय था मिजाज जाननेवाले बन्दों और बात समझने-वाले शागिर्दोंमेंसे है। पहले भी यह खिदमत और अखबारोंके जमा करनेका सरिश्ता उसको सौंपा हुआ था। इसलिये मैंने हुक्म दिया—जिस तारीख तक मैंने लिखा है आगे वह अपने खत से लिखे और मेरे मुसव्वदोंमें दाखिल करे। इसके पीछे जो कुछ हो उसका मुसव्वदा रोजनामचेके तौरपर करके मुझसे सही कराले और बयाज (किताब) में लगाता रहे।

[यहांसे मोतमिदखांके लिखे मुसव्वदे हैं।]

खुर्रमकी कुपात्रता—इन दिनों बादशाह कन्दहारके ईरानी लश्करको सजा देनेके कामोंमें लगा हुआ था। खुर्रमकी तरफकी बुरी बुरी खबरें पहुंचती थीं। उनसे चित्त बिगडता था। इसलिये उसने अपने मिजाज जाननेवाले बन्दोंमेंसे मुसव्विरखांको उस बेदौ-लत (कर्महीन) के पास डराने धमकाने और उपदेश करनेको भेजा। जिससे वह गफलत और घमण्डकी गहरी नींदसे जागे। साथही उसके खोटे इरादों और झूठे मनसूबोंका भी पता लगे। और समयोचित काम करे।

बहमन महीना।

चन्द्र तुलादान—१ बहमन (माघ बदी ४) को चन्द्रतुलादानका उत्सव था, जिसमें महावतखां काबुलसे पहुंचकर आदाब बजा लाया और बादशाहकी कृपासे सम्मानित हुआ।

खुर्रमका मांडूसे कूच करना—एतबारखांकी अर्जी आगरेसे पहुंची कि खुर्रमने अपनी अशुभ सेना सहित मांडूसे इधर कूच किया है। बादशाहने यह सोचकर कि खजानेका मंगाना सुनकर

उसके तन बदनमें आग लग गई है और व्याकुल होकर इस विचार से आता है कि शायद रास्तेमें खजाने तक पहुंचकर हाथ मारे, सुलतानपुरकी नदीतक सैर और शिकारके तौर पर जानेका विचार किया इसलिये कि यदि वह मूर्खतासे आगे चलाही आवे तो पूरी पूरी सजा दीजावे। नहीं तो जैसा उचित हो किया जावे।

बादशाहका कूच खुर्रम पर—१७ (माघ सुदी ६) को बादशाह ने शुभ मुहूर्त्तमें कूच किया। महावतखांको खासा खिलअत दिया। एक लाख रुपये मिरजा रुस्तमको और दो लाख अबदुल्लहखांको मदद खर्चके लिये दिलाये। जैनखांके बेटे मिरजाखांको परवेजके पास भेजकर जल्दी आनेकी ताकीद लिखी।

राजा बरसिंहदेव—राजा सारंगदेवने जो राजा बरसिंहदेवके लानेके लिये भेजा गया था आकर यह अर्ज की कि राजा अपनी सजी हुई सेना सहित थानेश्वरमें आ मिलेगा।

खुर्रम—इन दिनों एतबारखां और दूसरे बन्दोंकी फिर अर्जियां पहुंचीं कि खुर्रम सपूतीको त्याग और कपूतीको अङ्गीकार करके अपनी सेना लिये इधर आता है। इस वास्ते हम लोग खजाना निकालना उचित न जानकर किलेकी मजबूतीमें लगे हुए हैं। ऐसे ही आसफखांने भी प्रार्थना की कि वह बेदौलत लज्जा छोडकर कुमार्गी होगया और उसके आनेमें कुशल नहीं है। इसलिये खजाना लानेका समय न था। मैं उसको ईश्वरकी रक्षामें छोडकर आता हूं।

खुर्रमका बेदौलत कहलाना—बादशाह लिखता है—मैंने सुल-तानपुरकी नदीसे उतरकर उस कर्महीनको दण्ड देनेके लिये लगा-तार कूच किया और हुक्म फरमाया कि अब उसको बेदौलत कहा करे। इस ग्रन्थमें जहां बेदौलत लिखा जावेगा वह उसीका विशे-षण होगा। उसके साथ जैसे अनुग्रहका बर्ताव हुआ है उससे कह सकता हूं कि अबतक किसी बादशाहने अपने बेटे पर इतनी कृपा न की होगी। जो मेहरबानी मेरे बापने मेरे भाइयों पर की थी

वह मैंने उसके नौकरों पर की और उनको खिताब झण्डे और नक्कारे दिये जैसा कि इस किताबके पिछले पन्नोंमें लिखा जाचुका है। पढनेवालोंसे छिपा न होगा कि कितना ध्यान उसकी परवरिश और तरक्कीमें दियागया है। इसलिये मैंने उसका समाचार लिखनेसे कलमको रोक लिया है। मै अपना क्या दुःख लिखूं, इस गर्म हवा में जो वीमारी और कमजोरीसे मेरे मिजाजके मवाफिक नहीं है मवारी और सफर करना पडा है और इस हालसे ऐसे कुपुत्र पर चढाई करना जरूरी हुआ है। बहुतसे बन्दे जो वर्षों तक पालकर अमीरोंके दरजे पर पहुंचाये गये हैं, जो आज उजबक(१) या कजलवाश(२) की लडाईमें काम आने चाहियें थे उनको उसके पापमे सजा देकर अपने हाथसेही नष्ट करना पडा है। खुदाका शुक्र है कि उसने इतनी सहनशीलता और गम्भीरता दी है कि इस मबको सह सकता हूं और एक तौरसे गुजार सकता हूं। यह कष्ट अपने ऊपर झेल लिया है। पर जो बात दिलमें खटकती है और गैरतके मिजाजको तेज करती है वह यह है कि इस समय सपूत शाहजादे और राजभक्त अमीर एक दूसरेकी रीस करके कन्दहार और खुरासानकी खिदमत (लड़ाई) का काम करते जो राजकी लाज रखने वाला है। पर इस कपूतने अपनीही सम्पत्तिके पांवमें कुल्हाडी मारकर उस इरादेके रास्तेमें रोडे डाल दिये और कन्दहारकी लड़ाई खटाईमें पड़ गई। आशा है कि परमेश्वर इस उद्वेगको दिलसे दूर करे।

इसी समय यह अर्ज हुई कि मोहतरिमखां ख्वाजा सरा, खलील बेग जुलकादर और फिदाईखां मीरतुजुक उस वेदौलतसे मिले हुए हैं और उसके साथ पत्र व्यवहार करते हैं। बादशाहने ढीलका न देखकर तीनोंको कैद करके निर्णय किया। मिरजा रुस्तम जैसे अमीरोंके सौगन्द खाकर साची देनेसे मोहतरिम और खलील अपराधी सिद्ध होकर दण्डित हुए और फिदाईखां निर्दोष साबित

(१) तूरानी। (२) ईरानी।

होकर प्रतिष्ठा पूर्वक कैदसे निकाला गया।

राजा रोजअफजूं—राजा रोजअफजूं डाक चौकी पर शाह परवेजको सेना सहित सजावली करके लानेके लिये भेजा गया।

अस्फन्दार महीना।

१ अस्फंदार (फाल्गुण वदी ४) को बादशाह नूरसरायमें पहुंचा। इसी दिन एतबारखांकी अर्जी आई जिसमें लिखा था कि बेदौलत किलेकी मजबूती होनेसे पहले पहुंच जानेकी मनशासे आगरेकी सीमामें बहुत जल्दी आधमका था। पर जब फतहपुरमें पहुंचकर सुना कि किलेका बन्दोबस्त होचुका है तो लज्जित होकर वहीं ठहर गया। खानखानां, उसका बेटा और बहुतसे अमीर जो दक्षिण और गुजरातके सूबोंमें तैनात थे उसके साथ हैं और नमकहरामीमें शामिल मूसवीखांने उससे फतहपुरमें मिलकर शाही पैगाम पहुंचाया। उसने अपने नौकर काजी अबदुलअजीजको उसके साथ अरज मारूज करनेके वास्ते दरगाहमें भेजनेकी बात ठहराई है और सुन्दर(१) को लोगोंके खजाने छीननेके लिये आगरे भेजा है। वह लशकरखांके घरमें घुसकर ९ लाख रुपये निकाल लेगया है। इसी तरह दूसरे बन्दोंके घरमें जहां जहां उसको धन माल होनेका खयाल था हाथ मारा है।

खानखानां नमकहराम—बादशाह लिखता है—"जब खानखानां जैसा अमीर जो अतालीकीके बडे दरजे पर पहुंचा हुआ था ७० वर्षकी उमरमें अपना मुंह नमकहरामीसे काला करले तो दूसरोंका क्या गिला है? उसकी सृष्टिही नमकहरामीसे हुई थी। उसके बापने भी अन्तावस्थामें मेरे बापसे यही बुरा बरताव किया था। वह भी बापकी चाल चला और इस उमरमें हमेशाके लिये कलंक लगा लिया। भेडियेका बच्चा आदमीके साथ पलकर भी अन्तमें भेडियाही होता है।"

(१) वही सुन्दर ब्राह्मण जिसे राजा विक्रमाजीतका खिताब दिया गया था।

इसी दिन मुसव्विरखां वेदौलतके दूत अबदुलअजीजको साथ लेकर आया। उसने जो अर्ज कराई थी वह ठीक नहीं थी इस लिये मैंने उसकी बात न सुनी और उसे कैद रखनेके लिये महाबत खांको सौंप दिया।

लुधियाने पहुंचना—५ (फाल्गुण बदी ८) को बादशाह लुधियाने पहुंचकर नदीके तट पर उतरा। खानआजमको सातहजार ६००० सवारका मनसब मिला।

राजा भारत बुन्देला—राजा भारत बुन्देला दक्षिणसे आया। बादशाहने उसको डेढ़ हजारी १००० सवारका मनसब दिया।

राजा बरसिंहदेव—१२ गुरुवार (फाल्गुण सुदी १) को थानेश्वर के परगनेमें राजा बरसिंहदेवने अपनी सजी हुई सेना बादशाहको दिखाकर शाबाशी पाई।

राजा सारंगदेव—राजा सारंगदेवका मनसब डेढ हजारी ६०० सवारोंका होगया।

आसफखां—करनालके पास आसफखां भी आगरेसे आगया। बादशाहने उसका आना फतहका चिन्ह समझा।

फौजोंका जमा होना—बादशाह लिखता है—"लाहोरसे जब कूच किया गया था तो पहलेसे किसीको खबर न थी और समय भी ठहरने और ढील करनेका न था। कई अमीर जो सवारी और सेवामें थे वही साथ थे। सरहिंद पहुंचनेतक भी थोड़ेसेही लोग सवारी में पहुंचे थे। पर सरहिन्द पहुंचने पर झुंडके झुंड और दलके दल लशकर इधर उधरसे आने लगे। दिल्ली पहुंचने तक इतनी भीड़भाड होगई थी कि जिधर देखता था तमाम जंगलको लशकर से पटा हुआ पाता था। अब यह अर्ज हुई कि वेदौलत फतहपुर से निकलकर दिल्लीको गया है। मैंने लशकरको चिलता(१) पहनने का हुक्म दिया। इस चढ़ाईमें फौजोंको सजाने और चलानेका काम महाबतखांके ऊपर छोडा गया था। हिरावल सेनाकी सरदारी

(१) बकतर।

अबदुल्लहखांको दीगई थी। चुने हुए और काम किये हुए जवानों मेंसे उसने जिन जिनको मांगा मैंने उनको उसकी फौजमें लिखकर हुक्म फरमाया कि एक दल दूसरी फौजोंसे आगे चला करे। खबरों के पहुंचाने और रास्तोंके बन्दोबस्त करनेका भी उसने जिम्मा लिया था। हम इस बातसे गाफिल थे कि वह बेदौलतसे मिला हुआ है और असल मतलब उस बदजातका यह है कि हमारे लशकरके अखबार उसको भेजे। इससे पहले भी सच्ची झूठी खबरोंके लम्बे लम्बे तूमार लिखकर लाता था कि मेरे जासूसोंने वहांसे भेजे हैं। जो झोकने वाले बन्दोंमेंसे कितनोंको कलङ्कित करता था कि ये बेदौलतसे मेल रखते हैं और दरबारकी खबरें उसको लिखते हैं। यदि मैं उसके लगाने बुझाने पर धीरता छोड़कर आतुरता करता तो ऐसी हलचलमें जबकि झगड़े बखेड़ोंकी आंधियां चल रही थीं बहुतसे सुसेवकोंको उसके दोष लगानेसे नष्ट करना पड़ता। यद्यपि कई शुभचिन्तक स्पष्ट और संकेतसे उसके बुरे विचारकी बातें अर्ज करते थे। पर समय ऐसा न था कि उसका भांडा फोड़ दिया जावे। बल्कि आंख और जबानको भी ऐसे इशारेसे जिसमें उसको कुछ आशङ्का हो, रोकर उस पर अधिक कृपा कीजाती थी कि शायद वह अपने कुकर्मोंसे लज्जित होकर कुटिलता छोड़दे। पर उस दुष्टकी दृष्टिहीमें छल छिद्र था। उसे होश न आया। उसने जो किया वह उसीके योग्य था। उसका वर्णन आगे आता है—

"कड़वे स्वभावके वृक्षको यदि बहिश्तके बागमें लगाओ और शहदसे सींचो तोभी उसका फल कड़वाही होगा।"

दिल्ली पहुंचना—दिल्लीके पास सैयद बहवा बुखारी, सदरखां और राजा कृष्णदासने शहरसे आकर रकाब चूमी। सरकार अवधका फौजदार बाकरखां भी आगया।

जमना पर डेरे—२५ (फाल्गुण सुदी १४) को बादशाह दर्शनि होकर जमना पर आया और वहां छावनी सजाई।

गिरधरको राजाकी पदवी—रायसाल दरबारीके बेटे गिरधरने

दक्षिणसे आकर भूमि चूमी। दो हजारी डेढ़ हजार सवारके मनसव और राजाके खितावसे सम्मानित हुआ।

जवरदस्तखां मीर तुजुकको झंडा मिला।

१८ वां नौरोज।

फरवरदीन महीना।

२०(१) जमादिउलअव्वल सन् १०३२ मंगलवार (चैत वदी ५) की रातको सूर्य्यने मेष राशिके उच्चभवनमें प्रवेश किया बादशाहके राज्यशासनका १८ वां वर्ष आरम्भ हुआ।

खुर्रम मथुरामें—इसी दिन बादशाहने सुना कि वेदौलत मथुरा की तलहटीमें पहुंचा। उसका लश्कर परगने शाहाबादमें उतरा था १७ हजार सवार देखने गये थे।

राजा जयसिंह—राजा मानसिंहके पोते राजा जयसिंहने अपने वतनसे आकर रकाव चूमी।

राजा वरसिंहदेव—बादशाह लिखता है—"मैंने राजा वरसिंहदेवको जिससे अच्छा कोई अमीर राजपूतोंकी जातिमें नहीं है महाराजाका खिताव देकर उच्च पद पर पहुंचा दिया और उसके बेटे राजा जुगराजको दो हजारी २००० सवारके मनसवसे सरफराज किया।"

वेदौलतका आना—बादशाहसे अर्ज हुई कि वेदौलत जमनाके किनारे किनारे चला आता है। बादशाहने भी उसी तरफ कूच करना ठहराया। हिरावल, चरनगार, वुरुनगार, अलतमश, तरह और चपावल वगैरह दस्ते फौजकी दशा और स्थानके अनुसार सजाई गई। इतनेमें फिर खबर पहुंची कि वेदौलत खानखानां समेत सीधे रास्तेसे मुड़कर परगने कोलको जो २० कोस बायें हाथको है गया है। और सुन्दर ब्राह्मणको जो उसका बहकाने वाला है खानखानांके बेटे दराव, हिम्मतखां, सरवुलन्दखां, शिरजाखां, आबिदखां, जादूराय, ऊदाराम, आतिशखां, मनसूरखां आदि

(१) जन्त्रीके हिसाबसे १८।

बादशाही अमीरों और मनसबदारोंके साथ जो दक्षिण और गुजरातमें तैनात थे और नमकहरामीमें उसके शामिल होगये थे और रानाके बेटे राजा भीम रुस्तमखां, बैरमबेग, दरियापठान और तकी आदि अपने सब नौकरोंको बादशाही लशकरके मुकाबिलेपर छोड कर पांच सेनाएं कर गया है। उनकी सरदारी कहनेको तो दाराब के नाम है परन्तु असलमें कर्त्ता धर्त्ता सुन्दर है। यह दुष्ट बलोचपुरेके आसपास आपहुंचे हैं।

लडाईका आरम्भ—८ (चैत्र वदी १३) को बादशाही लशकर काबूलपुरेमें पहुंचा। इसी दिन चन्दावलीकी बारी बाकरखांकी थी। बादशाहने उसको सबके पीछे छोडा था। बागियोंका एक झुण्ड रास्तेमें आकर लशकरका सामान लूटने लगा। बाकरखां उनके रोकनेको ठहर गया। ख्वाजा अबुलहसन खबर पाकर सहायताके लिये लौटा। परन्तु वह लोग ठहर न सके पहुंचनेसे पहले ही भाग गये।

९ बुधवार (चैत्र वदी १४) को बादशाहने २५ हजार सवार छांटकर आसफखां ख्वाजा अबुलहसन और अबदुल्लहखांको अफसरी से बागियोंके ऊपर भेजे। कासिमखां, लशकरखां, इरादतखां और फिदाईखां वगैरह ८००० सवार लेकर आसफकी फौजमें नियत हुए। बाकरखां, नूरुद्दीनकुली और इब्राहीमहुसैन काशगरी आदि आठ हजार सवारो सहित ख्वाजा अबुलहसनकी सहायता पर गये। नवाजिशखां, अबदुलअजीजखां, अलीकुलह और बहुतसे सैयद बारह और अमरोहेके अबदुल्लहखांके साथ लिखे गये। इस फौज में दसहजार सवार गिने गये। सुन्दर इस समय आगे बढा। बादशाह लिखता है—"मैंने अपना खासा तरकश जबरदस्तखां मीरतुजुकके हाथ अबदुल्लहखांके वास्ते भेजा जिससे उसे और उमंग हो। जब दोनो लशकर भिडे तो वह इस लोना और पलीत ... कालमुंहा कलको भागकर शत्रुओंसे जामिला। ... अबदुलअजीजखां न जाने जानकर वा बेजाने उसके साथ ...

गया। नवाजिशखां, जबरदस्तखां और शेरहमला जो उस निर्लज्ज की फौजमें थे उसके जानेसे विचलित नहीं हुए। खुदा सदा मेरे सानुकूल है इसलिये उस समय भी जबकि अबदुल्लहखां जैसा अमीर दमहजार फौजको उलट पलटकर शत्रुसे जामिला था और बादशाही फौजको कोई धक्का लगनेवाला था, अकस्मात एक गोली सुन्दरके मर्मस्थानमें लगी और वह गिरा। उसके गिरतेही दुश्मनों के छक्के छूट गये। इधर अबुलहसनने अपने सामनेकी फौजको हटा कर भगा दिया और उधर आसफखांने बाकरखांके पहुंचतेही बहादुरीसे काम पूरा कर दिया। ऐसी जीत हुई कि जो पृथिवीकी सब जीतोंमें शिरोमणि कही जासकतीहै। जबरदस्तखां, शेरहमला, उसका बेटा शेरबच्चा, असदखां मामूरीका बेटा, ख्वाजाजहांका भाई मुहम्मदहुसेन और बहुतसे बारहके सैयद जो अबदुल्लहखांकी फौजमें थे शहीद होकर सदाके लिये जी गये। हुसैनखांका पोता अजीजुल्लह गोलीसे घायल हुआ पर बच गया। इस समय उस कपटीका चलाजाना भी अच्छाही हुआ। वह यदि लडाईके बीचमेंसे जाता तो लशकरके सरदार या तो बागी होजाते या पकडे जाते। दैवयोगसे आमलोगोंमें वह 'लानतुल्लह' के नामसे मशहूर होगया और यह नाम गैबसे उसको मिला। इसलिये मैंने भी उसका यही नाम रख दिया। आगे जहां जहां लानतुल्लह लिखा जावे वह उसीका नाम होगा।"

बागी जो लडाईसे भागे थे वह फिर नहीं सम्हल सके। लानतुल्लह भी उन सबके साथ भगा ही चला गया। बेदौलतके पास पहुंचने तक जो २० कोस पर था कहीं न रुका।

सुन्दरका सिर—बादशाह लिखता है—"जब इस फतहकी खबर मेरे पास पहुंची तो मैंने खुदाकी इस नई इनायतका बहुत धन्यवाद किया। शुभचिन्तकोंको जिन्होंने अच्छी सेवा की थी अपने पास बुलाया। दूसरे दिन सुन्दरका सिर मेरे सामने लाया गया। ऐसा विदितहुआकि गोली लगतेही उसने अपने प्राण नरककुण्डके दूतोंको

सौप दिये थे। उसकी लाश जलानेके लिये पासके एक गांवमें ले गये थे। उसमें आग लगानाही चाहते थे कि एक फौज दूरसे दिखाई दी। जलानेवाले पकड़े जानेके भयसे इधर उधर भाग गये। उस गांवका पटेल अपने मुजरेकेलिये उसका सिर काटकर खानआजमके पास लेगया क्योंकि यह गांव उसीकी जागीरमें था। खानआजम उसे मेरे पास लाया। वह अशुभ चेहरा दुरुस्त दिखता था। उस के कान कोई मोतियोंके लालचसे काट लेगया था। कुछ बिगडा न था। कुछ न मालूम हुआकि किसकी गोली उसके लगी। उसके मिट जानेसे बेदौलतने फिर कमर न बांधी। मानो उसकी दौलत हिम्मत और अक्ल यही हिन्दू कुत्ता था। जब वह मुझ जैसे बापके साथ, जिसने उसे पैदाकिया और पालकर बादशाह बनाया, किसी चीज को उससे अच्छा न समझा, ऐसा करे तो खुदाके इनसाफसे कभी बेहतरीका मुंह न देखेगा।

अमीरोंका मनसब बढना—जिन लोगोंने इस लडाईमें अच्छा काम किया था उन्होंने अपने दरजेके मुवाफिक ज्यादासे ज्यादा मेहरबानियोंसे सरफराजी पाई। ख़ाजा अबुलहसनका मनसब पांचहजारी होगया। नवाजिशखांने चार हजारी ३००० सवारका और बाकरखांने तीन हजारी ५०० सवारोंका मनसब और नक्कारा पाया।

इब्राहीमहुसैन काशगरीका मनसब दोहजारी १००० सवार, नूरुद्दीनकुलीका दो हजारी ७०० सवार, राजा रामदासका दो हजारी १००० सवार, लुतफुल्लहका डेढ़हजारी ५०० सवार और परवरिशखांका हजारी ५०० सवारका हुआ। सबका समाचार लिखनेसे बहुत तूल होगा।

उस दिन वहीं मुकाम रहा, दूसरे दिन कूच हुआ। खानआलमने इलाहाबादसे आकर चौखट चूमी।

सरबुलन्दराय—१२ (चैत्र सुदी २ संवत् १६८०) को राव भाने

के पास डेरे हुए। इस दिन सरबुलन्दराय(१)ने दक्षिणसे आकर चौखट चूमी। वह फूलकटारे सहित जड़ाऊ खासा खञ्जर पाकर और सरबुलन्द हुआ।

अबदुलअजीजखां तथा अन्य कई अमीर जो खानतुल्लहके साथ चले गये थे, बेदौलतसे पीछा छुडाकर बादशाहकी खिदमतमें आ गये। उन्होंने कहा—जब खानतुल्लह दौडा तो हमने जाना कि लडनेके वास्ते घोडा बढाया है। फिर जब हम बागियोंमें पहुंच गये तो उनको राजी रखनेके सिवा और कोई उपाय न था। हमने बेदौलतसे २००० मोहरें मदद खर्चके वास्ते लेली थीं। तो भी काबू पाकर भाग आये हैं। बादशाह लिखता है—"विशेष पूछताछ करनेका समय न था इसीसे उनकी बात सच समझ ली गई।"

१८ (चैत्र सुदी ८) को शरफेआफताब (मेष संक्रान्ति) का दिन था। बहुतसे अमीरोंके मनसब बढ़े और उनके ऊपर उचित इनायतें भी हुई।

मीर अजदुद्दौलाका कोष—अजदुद्दौलाने आगरेसे आकर एक कोष बादशाहको दिखाया। बादशाह लिखता है—बेशक बड़ी मेहनत की है। खोज खोजकर सामयिक शब्द पुराने विद्वानोंकी कविताको साक्षीसे संग्रह किये हैं। कोषका ऐसा ग्रन्थ न देखा था।

राजा जयसिंह—राजा जयसिंहका मनसब तीन हजारी १००० सवारोंका होगया।

असानुल्लहको खानाजादखांका खिताब—महाबतखांके बेटे असानुल्लहको खानाजादखांका खिताब और चारहजारी ४००० सवारका मनसब इनायत हुआ।

उर्दी बहिश्त।

१ (बैशाख बदी ७) को बादशाहके डेरे फतहपुरके तालाब पर हुए।

एतबारखांको मुमताजखांका खिताब—एतबारखां आगरेसे

(१) रावरतन हाडा।

हाजिर हुआ। उसने आगरेके किलेकी रखवाली बहुत मेहनत और नमकहलालीसे की थी। इसलिये बादशाहने उसको मुमताज़ खांका ख़िताब, ६हजारी५,०००सवारका मनसब, ख़िलअत, जड़ाऊ तलवार घोड़ा और खासा हाथी देकर उसी ख़िदमत पर विदा किया। मुकर्रबखां आदि कई अमीरोंके मनसब बढ़े जो आगरेसे आये थे।

मनसूर फरंगी—४ (वैशाख वदी १०) को मनसूर फरंगी और नौबतखां दक्षिणी बेदौलतको छोडकर बादशाहकी ख़िदमतसे हाजिर होगये।

हिण्डोन—१० (वैशाख वदी १) को बादशाहकी सवारी हिण्डोनमें उतरी।

परवेजका आना—११ को भी वहीं मुकाम हुआ। इसी दिन परवेजके उपस्थित होनेका मुहूर्त था। इस लिये बादशाहने सब शाहजादों, अमीरों और बन्दोंको हुक्म दिया कि फौजें सजित पेशवाईमें जाकर उस प्रतापी पुत्रको उचित आदरसे हुजूरमें लावें। दो पहर दिन आने पर उसने शुभमुहूर्तमें जमीन चूमनेका सौभाग्य पाया। जब वह कोरनिश, तौरे और तसलीमके आदाब बजा कर चुका तो बादशाहने उसको प्रेम पूर्वक छातीसे लगाया और बहुत कृपा और प्रीति प्रगट की।

बेदौलत—इन दिनों खबर पहुंची कि बेदौलतने आम्बेरके पास से निकलते हुए जो राजामानसिंहका वतन है, बहुतसे बदमाशोंको भेजा। उन्होंने उस बस्तीको लूट लिया।

सारवाली—१२ (वैशाखसुदी ३) को गांव सारवालीमें डेरे हुए। बादशाहने हबशखांको अजमेरके महल दुरुस्त करनेके लिये पहले से भेज दिया।

शाह परवेज—बादशाहने परवेजको ४० हजारी ३०००सवार का मनसब दिया।

जगतसिंह—बादशाह यह सुनकर, कि बेदौलतने राजा जगतके

वेटे जगतसिंहको कहा है कि अपने वतनमें जाकर पंजाबके पहाड़ों में बलवा करे। उसको दण्ड देनेके लिये सादिकखां मीर बखशी को पंजाबकी सूबेदारी पर भेजा। खिलअत हाथी तलवार तीग और नक्कारा देकर मनसब चार हजारी २०००सवारोंका करदिया।

मिरजा वदीउज्जमांका मारा जाना—बादशाह लिखता है—मिरजा शाहरुखके बेटे मिरजा वदीउज्जमांको जो फतहपुरी कहलाता था उसके छोटेभाई बेखबरीमें मारकर दरगाहमें आगये और उसकी सगी मा भी आई। परन्तु जैसा कि चाहिये था अपने वेटेके खूनकी दावेदार न हुई और न शरईसबूत(१) पहुंचा सकी। उसका मिजाज ऐसा खराब था कि उसका मारा जाना अफसोस करनेके लायक न था वरञ्च समय और राज्यके विचारसे मुनासिब था। पर इन वेदौलतोंसे अपने पितातुल्य बड़े भाईके साथ ऐसा अनाचार हुआ जिसको अदालत नहीं सह सकती थी। इसलिये मैंने हुक्म दिया कि अभी यह लोग कैद रहें। पीछे जैसा उचित होगा किया जायगा।

राजा गजसिंह—२१ (वैशाख सुदी १२) को राजा गजसिंह और राय सूरजसिंहने अपनी अपनी जागीरोंसे आकर रकाबचूमी।

वेदौलत पर परवेज—२५ (ज्येष्ठ वदी १) को बादशाहने शाहजादे परवेजको सेना सहित वेदौलतके पीछे जाने और दण्ड देने पर नियत किया। कामोंका पूरा अधिकार महावतखांको दिया। खानआलम, महाराजा गजसिंह(२), फाजिलखां, रशीदखां, राजा गिरधर, राजा रामदास कछवाहा, ख्वाजा मीर अबदुलअजीज, अजीजुल्लह, असदखां, परवरिशखां, इकरामखां, सैयद हुजब्रखां, लुतफुल्लह, राय नारायणदास आदिको ४०००० सवार, एक बड़े तोपखाने और २० लाख रुपयेके खजाने सहित साथ किया। शुभ

(१) मुसलमानी धर्म्मशास्त्रके अनुसार साक्षी।

(२) यहांसे जोधपुर वालोंको महाराजाकी पदवी होना जाना जाता है। तुजुकजहांगीरी पृष्ठ २६०

मुहर्तमें शाहजादेको विदा किया। फाजिलखां इस लशकरकी बखशीगरी और विकायेनवीसी पर मुकर्रर हुआ। खासा खिलअत जरीकी सिली हुई नादिरी सहित, जिसके दामन और गिरीवानोंमें मोती टके हुए थे और ४०००० रुपयेकी लागतसे सरकारमें तय्यार हुई थी, जड़ाऊ तलवार खासा हाथी रतनगज नाम, हथनी और खासा घोड़ा बादशाहने शाहजादेको इनायत किया। यह सब सामान ७७०००) का था।

ऐसेही नूरजहां बेगमने भी खिलअत घोड़ा और हाथी दस्तूरके मुआफिक उसको दिया। महाबतखां और दूसरे अमीरोंको भी उनके लायक हाथी घोडे और खिलअत मिले। शाहजादेके जिन जिन नौकरोंको बादशाह पहचानता था वह भी उचित इनायतसे सरफराज हुए।

इसी दिन मुजफ्फरखांने भी मीरबखशीका खिलअत पहना।

खुरदाद महीना।

दावरबख्शको गुजरातकी सूबेदारी।

१ खुरदाद (ज्येष्ठ वदी ८) को खुसरोके बेटे शाहजादे दावरबख्शको गुजरातकी सूबेदारी इनायत हुई। खानआजम उसका अतालीक हुआ। शाहजादेको हाथी घोडा खिलअत जडाऊ खासा खञ्जर तौग और नक्कारा मिला। खानआजम और दूसरे बन्दों पर भी यथायोग्य कृपा हुई।

फाजिलखांके वदल जानेसे इरादतखां बख्शी हुआ।

बङ्गाले और उडीसेकी सूबेदारी—आसफखांको बङ्गाले और उडीसेकी सूबेदारी खासा खिलअत और जडाऊ तलवार सहित इनायत हुई। उसका बेटा अबूतालिब भी बापके साथ विदा किया गया और उसको दो हजारी १००० सवारका मनसब मिला।

बादशाह अजमेरमें—८ मङ्गलवार(१) २८ रज्जब (ज्येष्ठसुदी १)

(१) असलमें लेखकके दोषसे मंगलकी जगह शनि और २८ की जगह १८ रज्जब लिखी है। तु० पृष्ठ २६१ में।

को बादशाह अजमेर पहुंचकर आनासागर तालाब पर उतरा। शाहजादा दावरबख्श आठ हजारी ३००० सवारके मनसबसे सरफराज हुआ। दो लाख रुपये खजानेसे उसके साथ जानेवाले लशकरकी मदद खर्चके वास्ते मिले और एक लाख रुपयेकी मदद खानआजमको दीगई।

गवालियर—तातारखां गवालियरके किलेकी हिफाजत पर भेजा गया।

राजा गजसिंह—राजा गजसिंहको पांच हजारी ४००० सवार का मनसब मिला।

मरमयजमानीकी मृत्यु—आगरेमें बादशाहकी मा मरयमजमानी का देहान्त होगया।

जगतसिंह—रानाके बेटे जगतसिंहने वतनसे आकर जमीन चूमी।

बङ्गालेके हाथी—बङ्गालेके हाकिम इब्राहीमखां फतहजङ्गने ३४ हाथी भेजे थे वह बादशाहको भेंट हुए।

बाकरखां अवधकी और सादातखां मयानदुआबकी फौजदारी पर नियत हुए।

तीर महीना।

गुजरातमें बादशाहकी फतह—१२ तीर (आषाढ़ सुदी ७) को गुजरातके मुतसद्दियोंकी अर्जीसे बादशाहकी फतह होनेकी खबर पहुंची। वह लिखता है—मैंने रानाकी फतह करनेके इनाममें गुजरातका सूबा जो बड़े बड़े बादशाहोंका स्थान है बेदौलतको इनायत किया था और उसकी तरफसे उस मुल्ककी हुकूमत सुन्दर ब्राह्मण करता था। जब उसने खोटी मनशासे उसको हिम्मतखां, शेरजङ्गखां, सरफराजखां वगैरहको बहुतसे बादशाही बन्दों सहित जो उस सूबेके जागीरदार थे अपने पास बुला लिया तो उसके भाई कन्हरको उसकी जगह रहने दिया। फिर सुन्दरके मारे जाने पर मंडूका रास्ता लेकर गुजरातका मुल्क लानतुल्लहकी जागीरमें दे

दिया। कन्हरको उस सूबेके दीवान आसफखां खजाने, तथा जडाऊ तख्त और परदले सहित जो मेरी भेटके लिये ५ लाख और दो लाखमें तय्यार हुए थे बुलाया। तब सफीखांने बहुत अच्छा काम किया जो जाफरबेगका भाई है और जिसने मेरे बापसे आसफखां का खिताब पाया था। एक लडकी मेरे इस आसफखांको बेदौलत के घरमें है और दूसरी उससे छोटी इसके घरमें। बेदौलत इस प्रसंगसे अपनी तरफदारीकी उम्मेद उससे रखता था। परन्तु उसकी किस्मतमें अमीर होना लिखा था इसलिये जब लानतुल्लहका गुलाम वफादार नाम थोडेसे आदमियोंके साथ अहमदाबादमें आ बैठा तो सफीखांने कुछ नौकर रखे और कुछ लोगोंको राजी करके साथ लिया। वह कन्हरके निकलनेसे थोडे दिन पहले शहरसे निकल कर कांकरिया तालाब पर जा उतरा और वहांसे महमूदाबादमें चला गया। यह मशहूर किया कि बेदौलतके पास जाता हूं। फिर ताहिरखां, सैयद दिलेरखां, नानूखां पठान और दूसरे खैरख्वाह बन्दोंसे जो अपनी अपनी जागीरोंमें थे लिखापढी करके उन्हें गांठ लिया और मौका देखने लगा। पर बेदौलतके नौकर सालह को जो सरकार फलादका थानेदार था आशङ्का हुई कि सफीखांका औरही इरादा है। कन्हरने भी यह भेद पा लिया। सफीखां लोगोंको तसल्ली देकर ऐसी होशियारीसे रहता था कि वह लोग कुछ नहीं कर सकते थे। सालह यह सोचकर कि कहीं सफीखा खजाने पर हाथ न मारे १० लाख रुपये मांडूमें बेदौलतके पास ले गया। कन्हर भी उसके पीछेही परदला लेकर चल दिया। पर तख्त न लेजा सका जो बहुत भारी था। सफीखां अवकाश पाकर महमूदाबादसे 'बारीज' के परगनेमें जो सीधे रास्तेसे दायेंको है नानूखांके पास चला गया। नाहरखां आदिको चिट्ठियां लिखकर यह बात ठहराई कि जागीरोंसे अपने अपने आदमियोंके साथ सवार होकर तडकेही अपनी अपनी तरफके शहरके दरवाजों पर पहुंच जावें। आप अपनी औरतोंको उसी परगनेमें छोड़कर

मानूखांके साथ दिन निकलनेसे पहले शहरके पास पहुंच गया। कुछ देर बागशाबानमें ठहरा। अभी नाहरखां आदि पहुंचे भी न थे कि दरवाजे खुलतेही यह सारंगपुर दरवाजेसे शहरसे घुस गया। साथही नाहरखां भी दूसरे दरवाजेसे दाखिल हुआ। लानतुल्लहके ख्वाजासराने बादशाही इकबालका यह पलटा देखा तो मियां वजीहुद्दीनके पोते शेख हैदरकी शरण गया। बन्दोंने विजय के बाजे बजाकर किला सजाया और कुछ लोगोंको बेदौलतके दीवान तकी और बखशी हसनबेगके घरों पर भेजकर उन्हें पकड़ा। शेख हैदरने खुद आकर सफीखांसे कह दिया कि लानतुल्लहका ख्वाजासरा मेरे घरमें है। वह भी वहांसे बंधवा मंगवायागया। इसी तरह बेदौलतके सब नौकरोंको कैद करके शहरका बन्दोवस्त किया। वह जड़ाऊ सिंहासन, दो लाख रुपये और सब सामान बेदौलत और उसके लोगोंका जो शहरमें था बादशाही बन्दोंके हाथ आया।

बेदौलतको जब यह खबर पहुंची तो लानतुल्लहको हिम्मतखां, गिरजाखां, सरफराजखां, काबिलबेग, रुस्तमबहादुर, सालहबदखशी और दूसरे बागी बादशाही बन्दों और अपने नौकरों सहित पांच हजार सवार देकर अहमदाबाद पर भेजा। सफीखां और नाहरखां ने यह सुना तो सिपाहियोंको तसल्ली देकर फौज जमा की। जो रुपये हाथ आये थे वह और वह तख्त तोड़कर नये पुराने सिपाहियोंको बांट दिया। ईडरके राजा कल्याण, लालकोलीके बेटे और आसपासके सब जमींदारोंको शहरमें बुलाकर अच्छी भर्ती करली। लानतुल्लह मददका रास्ता न देखकर ८ दिनमें मांडूसे बड़ोदे पहुंचा। बादशाही बन्दोंने शहरसे बाहर आकर कांकरिया ताल पर छावनी डाली। लानतुल्लहने अपने मनमें यह जाना था कि जल्दी पहुंचनेसे शुभचिन्तक बिखर जायंगे। परन्तु जब उनका बाहर निकलना सुना तो बड़ोदेमेंही मदद पहुंचने तक रुक गया। जब सब बागी उससे आमिले तो आगे बढ़ा। शुभचिन्तक भी

कांकरियासे कूच करके गांव तेवेमें कुतुबआलमकी कबरके पास जा उतरे। लानतुल्लह तीन दिनका रास्ता दो दिनमें काटकर वडोदेसे महमूदाबादमें पहुंचा। सईद दिलेरखां, शिरजाखांकी औरतें वडोदेसे पकडकर शहरमें लेआया था और सरफराजखांकी औरतें भी शहरमें थीं इसलिये सफीखाने दोनोंके पास पोशीदा आदमी भेजकर कहलाया कि जो भाग्यबलसे कलङ्कका टीका अपने ललाट परसे मिटाकर शुभचिन्तकोंमें आजाओगे तो दोनो लोकमें मुंह उजला रहेगा नहीं तो तुम्हारे बालबच्चोंको पकडकर तरह तरहसे कष्ट दूंगा। लानतुल्लहने इस बातकी खबर पाकर सरफराजखांको एक बहानेसे बुलाकर कैद कर दिया और शिरजाखां, हिम्मतखां तथा सालह बदख्शी आपसमें मिलेजुले रहते थे और एक जगहही उतरा करते थे इस वास्ते शिरजाखांको न पकड सका।

२१ शाबान (आषाढ वदी ८) को लानतुल्लहने सवार होकर अपनी फौजें सजाईं। शुभचिन्तकोंने भी परे जमाये और लडनेको तैयार हुए। लानतुल्लह अपने दिलमें यह समझे हुए था कि मेरे आनेसे यह लोग हिम्मत हार देंगे और बिना लडेही इधर उधर चले जायंगे। परन्तु जब उसने इनको अपनी जगह पर जमा हुआ देखा तो ठहर न सका और बायें हाथकी तरफ घोडेकी बाग मोड कर बोला कि यहां तो जमीनके नीचे बारूद बिछी हुई है, अपने आदमी मारे जायंगे। सरखीजमें चलो वहां लडेंगे। इसमें भी बादशाही इकबालकी खूबी थी क्योंकि उसके बाग फेरतेही उसके भागने की अवाई उड गई और बादशाही बहादुरोंने उसका पीछा कर दिया। जिससे वह सरखीचमें तो नहीं पहुंच सका गांव मरीचेमें उतर पडा। यह लोग मालोदेमें जो ३ कोस पर था रहे। दूसरे दिन फौजें सजाकर लड़नेको गये। हिरावलमें नाहरखां ईडरका राजा कल्याण और दूसरे बहादुर लोग थे। चरनगारमें सैयद दिलेरखां सैयद सीदू और दूसरे बन्दे थे। बरनगार में नानूखां, सैयद याकूब सैयद गुलाममुहम्मद वगैरह थे। कोलमें सफीखां किफायतख़ां

बख़्शो और दूसरे सेवक थे। लानतुल्लह जहां उतरा था वहां नीची ऊंची जमीन थी थूहरका बन और रास्ता तङ्ग था। इस सबबसे उसके लश्करका परा ठीक तरहसे न जमा। उसने कितनेही कामके आदमियोंको रुस्तम बहादुरके साथ आगे कर दिया था। हिम्मत-खां और सालहबेग भी अगली अनीमें थे। पहले नाहरखां और हिम्मतखांकी मुठभेड़ होकर खूब लड़ाई हुई। हिम्मतखां बन्दूकसे मारा गया—सालहबेगका मुकाबिला नानूखां, सैयद याकूब, सैयद गुलाममुहम्मद और दूसरे बन्दोंने किया। ऐन कटाछनीमें सैयद गुलाममुहम्मदके हाथोंने मुहरा करके सालहको घोड़ेसे गिरादिया। वह जखमोंसे चूर होकर मरा और १०० आदमी उसके बचानेमें काम आये।

बागियोंकी फौजके आगे जो हाथी था वह इस समय बाणकी गर्जना और बन्दूकोंकी बाड़ोंसे भड़ककर पीछेको मुडा और थूहरों की एक तंग गलीमें फंसकर उसने बहुतसे नालायकोंको मारडाला। लानतुल्लहको हिम्मतखां और सालहबेगके मारे जानेकी खबर न थी। इसलिये उसने उनको मददके इरादेसे घोडे उठाये। हिरा-वलके सिपाही जो अकसर जखमी होगये थे उसके आनेसे घबरा कर पीछेको हटे और नजदीक था कि कोई बड़ी हानि पहुंचे परन्तु ईश्वरने सहायता की। सफीखां गौलमेंसे हिरावलकी मदद को दौड़ा। इतनेमेंही हिम्मतखां और सालहके मारेजानेकी खबर लानतुल्लहको लगी और उधरसे सफीखां और गौलकी फौजको आते हुए देखा तो उसका जमा हुआ पांव उखड गया। भागतेही बना। सैयद दिलेरखांने एक कोस तक पीछा करके बहुत बागी मारे। नमकहराम काबिलबेग बहुतसे बदमाशों सहित अपने किये को पहुंचा।

लानतुल्लहको सरफराजखांका भरोसा न था इसलिये उसे बेडि-योंमें जकडकर एक हाथी पर बैठाया था और अपने एक गुलामसे कह दिया था कि जो हार होती देखे तो उसको मार डाले और

ऐसेही सुलतान अहमदके बेटे बहादुरके पांवमें बेडी डालकर दूसरे हाथी पर चढाया था और उसके मार देनेका भी हुक्म देदिया था। जब भागड पडी तो सुलतानके बेटे पर जो आदमी रखा गया था उसने तो उसको जमधरसे मार डाला पर सरफराजखां हाथीसे कूद पड़ा। उस गड़बडमें उस गुलामने उसके एक जखम तो लगाया पर कारी न लगा। सफीखांने उसको रणमें पडा पाकर शहरमें भेज दिया।

खानतुल्लहने बडौदे तक घोडा न रोका। मिरजाकी औरते शुभचिन्तकोंकी कैदमें थीं इसलिये वह आकर सफीखांसे मिला।

खानतुल्लह बडौदेसे भिरोंचको गया। हिम्मतखांके बेटोंने जो किलेमें थे उसे अन्दर तो नहीं आने दिया परन्तु पांचहजार मह-मूदी खर्चके वास्ते उसके पास भेज दीं। वह तीन दिन बुरी हालत में किलेके बाहर पडा रहा, चौथे दिन दरियाके रास्ते सूरतमेंपहुंचा। यह बन्दर बेदौलतकी जागीरमें था इस लिये ४ लाख महमूदी तो उसके मुत्सद्दियोंसे लीं और जो कुछ शुल्क जबरदस्तीसे हाथ लगा वह लेकर फिर अभागे बागियोंको जमा किया और बुरहानपुरमें बेदौलतसे जा मिला।

सफीखां और दूसरे नमकहलाल बन्दोंसे जो गुजरातमें थे ऐसी अच्छी खिदमत बन आई। वह तरह तरहकी इनायत और नवा-जिशसे सरफराज हुए। सफीखांका मनसब सातसदी तीनसौ सवारोंका था मैंने तीन हजारी दो हजार सवारोंका करके उसे सैफखां जहांगीरशाहीके खिताब, झंडे और नक्कारेसे सरफराजी बखशी। नाहरखांका मनसब हजारी दोसौ सवारका था वह भी तीन हजारी दो हजार सवारोंका करके शेरखांके खिताब, घोडे, हाथी और जडाऊ तलवारकी इनायतसे उसकी इज्जत बढाई।

शेरखां—शेरखां रायसेन और चंदेरीके हाकिम पूरनमलके भाई नरसिंह देवका पोता था। जब शेरखां पठानने किले रायसेनको

(१) गुजराती मोहर।

घेरा और उसे वचन भंग करके मारा जैसा कि मशहूर है तो उस की रानियां हिन्दुओंके दस्तूरके मुआफिक जौहर करके आगमें जल मरीं। जिससे उनका पतिव्रत परपुरुषके हाथसे नष्ट न हो। उसके बेटे और बिरादरीवाले इधर उधर चले गये। नाहरखांका बाप जिसका नाम खानजहां था आसेर और बुरहानपुरके हाकिम मुहम्मदखां फारूकीके पास जाकर मुसलमान होगया। जब मुहम्मद खां मरा और उसका बेटा हसन छोटी उमरमें उसकी जगह बैठा तो मुहम्मदखांका भाई राजीअलीखां उस बालककी कैदकरके राज्य करने लगा। कुछ दिन पीछे उसे खबर लगी कि खानजहां और मुहम्मदखांके बहुतसे नौकरोंने एका करके यह बात ठहराई है कि उसे तो मार डालें और हसनखांको किलेसे निकालकर हुकूमत पर बैठा दें। राजा अलीखांने फुरती करके हयातखांको बहुतसे बहादुरों सहित खानजहांके घर पर भेजा कि उसे या तो जीता पकड लावें या मार डालें। वह अपनी इज्जतके वास्ते लड़नेको खड़ा हुआ और जब काम कठिन देखा तो जौहर करके अपनी जानसे गुजर गया। उस वक्त नाहरखां बहुत छोटा था हयातखां हबशीने राजीअलीखांसे अर्ज करके उसे अपना बेटा बनाया और मुसलमान कर लिया। उसके मरने पर राजीअलीखांने नाहरको पाला। जब मेरे बापने आसेरका किला फतह किया तो नाहरखां उनकी खिदमतमें पहुंचा। उन्होंने उसको लायक देखकर एक लायक मनसब दिया और मुहम्मदपुरका परगना जो गुजरातमें है उसकी जागीरमें इनायत किया। फिर इसने मेरी खिदमतमें ज्यादा से ज्यादा तरक्की की। अब अपनी नमकहलालीका इनाम जैसा कि चाहिये था पाया।

बारेके सैयद—सैयद दिलेरखां बारेके सैयदोंमेंसे है। पहले इस का नाम सैयद अबदुलवहाब और मनसब एकहजारी ८०० सवारों का था। अब दो हजारी १२०० सवारोंका मनसब और झण्डा पाकर सरफराज हुआ है। मयान दोआब (गङ्गा जमनाके बीच)

के १२ गांवोंमें जो पास पास बसते है इन सैयदोंका वतन है जिससे बारहके सैयद मशहूर है। बाजे लोग इनके सही सैयद होनेमें बातें बनाते हैं मगर इनकी बहादुरी सैयद होनेकी पक्की दलील है। इस सलतनतमें कोई ऐसी लडाई नहीं हुई है जिसमें इन सैयदोंने अपना नाम न किया हो। मिरजा अजीज कोका हमेशा कहा करता था कि बारहके सैयद इस बादशाहतके बलागरदानान (बलिदान) है। सचमुच ऐसाही है।

नानूखां पठानका मनसब ८ सदी ८०० सवारोंसे डेढहजारी १२०० सवारोंका कर दिया गया। ऐसेही दूसरे नमकहलाल बंदे अपनी अपनी खिदमतके बमूजिब बडे बड़े मनसब पाकर मुरादको पहुंचे।

खानजहांका बेटा असालतखां शाहजादे दाराबखशकी मदद पर गुजरातके सूबेमें तैनात हुआ और नूरुद्दीनकुली, मिरजाखां, सरफराजखां तथा बागी लशकरके दूसरे सरदारोंके लानेको भेजा गया जो पकडे गये थे।

शाहनवाजखांका बेटा मनूचहर बेदौलतको छोडकर शाहपरवेज से आ मिला।

शेरका शिकार—बादशाह एक शेरकी खबर सुनकर शिकारगाहको गया। जंगलमें ३ शेर और मिले चारोंको मारकर दौलतखानेमें आगया। वह लिखता है—"मेरी तबीयत शेरके शिकार पर ऐसी लगी हुई है कि जबतक वह न होजाय दूसरा काम नहीं करने देती। सुलतान महमूद गजनवीके बेटे सुलतान मसऊदको भी शिकारकी बडी लत थी। उसके शेर मारनेकी तवारीखमें अजब अजब बातें लिखी है। 'तवारीख बीहकी'के कर्त्ताने जो बातें इस सम्बन्धमें आंखोंसे देखीं वही रोजनामचेके तौर पर लिखी हैं। वह लिखता है—एक दिन सुलतान हिन्दुस्थानकी सरहदमें शिकारको गया। हाथी पर सवार था। बहुत बडा शेर जंगलसे निकलकर हाथी पर आया। सुलतानने एक ईंट फेंक

कर उसकी छाती पर मारी। दर्द और गुस्सेसे शेर हाथीकी पीठ पर चढ गया। सुलतानने घुटनोंके बल खड़े होकर ऐसी तलवार मारी कि दोनों हाथ शेरके कट गये। शेर पीछेको गिरा और मर गया—” मुझे भी शाहजादगीके दिनोंमें ऐसाही इत्तफाक पडा। मैं पञ्जाबकी सरहदमें शिकारको गया था। एक बड़ा शेर जङ्गलसे निकला। मैंने हाथी परसे बन्दूक मारी। शेर गुस्से होकर उछला और हाथीके पुट्ठे पर आचढा। मुझे इतनी फुरसत न मिली कि बन्दूक रखकर तलवारका वार करूं। बन्दूककी नाल सम्हाल कर मैं घुटनोंके बल खड़ा हुआ। दोनों हाथोंसे इस जोरसे नाल उसके सिर पर मारी कि उसकी चोटसे वह जमीन पर गिर पड़ा और मर गया। इससे भी अजब बात यह है कि कोलके पहाड़में एक दिन भेडियेके शिकारको गया। हाथीपर सवार था। एक भेड़िया आगेसे निकला। मैंने उसके कानकी नोक पर तीर मारा। जो बैतभर घुस गया। वह उसी तीरसे गिरा और मरा। बहुत ऐसा हुआ है कि कडी कमानोंके खेंचनेवाले जवानोंने बीस बीस तीस तीस तीर मारे हैं और शिकार नहीं मरा है। पर अपनी बात आपही लिखना अच्छा नहीं लगता है इसलिये मैं ऐसे वृत्तान्तोंसे कलम रोकता हूं।

जगतसिंह—२८ (सावन वदी ८) को राना करणके बेटे जगतसिंहको मोतियोंकी माला इनायत हुई।

पगली—पगलीका जमींदार सुलतानहुसैन मर गया था। बादशाहने उसकी जागीर उसके बड़े बेटे शादमानको देदी।

अमरदाद महीना।

खुर्रम पर फतह—७ अमरदाद (सावन सुदी ३) को शाह परवेजके लशकरसे उसके नौकर इब्राहीमहुसैनने पहुंचकर फतहकी खुशखबरी सुनाई और परवेजकी अर्जी जिसमें सब हाल लिखा था बादशाहकी खिदमतमें पेश की। उसका खुलासा यह है—जब परवेज घाटी चांदासे उतरकर मालवेमें पहुंचा तो बेदौलत बीस

इजार सवार ३०० जङ्गी हाथी और एक बड़े तोपखानेके साथ मंडू
से लडनेको आया। उसने दक्षिणके बरगियोंको जादूराय उदय-
राम और आतशखां वगैरहके साथ पहलेसे विदा करदिया था कि
बादशाही लशकरमें पहुंचकर लूट मार करें। महाबतखांने परा
जमाकर शाहजादेको गौलमें रखा और सारी फौज सजाकर उतरने
चढनेमें खूब खबरदारी बरती। बरगी दिखाई तो देते थे परन्तु
सामने नहीं आते थे। एक दिन मंसूरखां फरंगीकी बारी चन्दा-
वलीको थी। लशकर उतरनेके समय महाबतखां सावधानीके लिये
पराजमाकर लशकरके बाहर खडा होगया। जिससे सब लोग दिल-
जमईसे उतर जावें। मंसूरखां रास्तेमें प्याला पीकर झूमता हुआ
मंजिल पर आपहुंचा था कि इतनेमें दूरसे एक फौज दिखाई दी।
उसको नशेकी तरंगमें धावा करनेकी सूझी। उसने न तो भाइयो
से कहा न अपने लोगोंको खबर की और सवार होकर दौड गया।
दो तीन बरगियोंको मारता मारता वहां जापहुंचा जहां जादूराय
और उदाराम दो तीन हजार सवारोंसे परा जमाये खडे थे। जैसा
कि इन लोगोंका कायदा है इन्होंने हर तरफसे उसको घेर लिया।
वह जबतक जीता रहा लडा। आखिर नमकहलाली करके काम
आया।

बेदौलतने बरगियोंको भेजे पीछे रुस्तमखां, तकी, बरकन्दाज
खांको तोपचियोंके साथ भेजा था। फिर दाराबखां, भीम, बैरम-
और दूसरे कामके लोगोंको रवाने किया। उसका इरादा मैदान
की लड़ाई लड़नेका न था। हमेशा पीछेको देखा करता था इस-
लिये मस्त और जंगी हाथियोंको नर्बदाके पार उतारकर छडी
सवारीसे दाराब और भीमके पीछे पीछे आता था। जब बादशाही
लशकर कालियादहमें पहुंचा तो बेदौलत अपना तमाम लशकर
बादशाही फौजके मुकाबिलेमें भेजकर खानखानां सहित एक कोस
पीछे रह गया।

महाबतखांने बेदौलतके कई अमीरोंको मिला लिया था। इन

लिये लशकरोंका सामाना होतेही बरकन्दाजखां बहुतसे बन्दूकचियों सहित दौड़कर महावतखांके पास आगया। महावतखांने शाहजादेके पास लेजाकर उसको खातिर करादी। इसका नाम अल्लाउद्दीन था जैनखांका नौकर था। उसके मरे पीछे बादशाहके इन्हीं तोपचियोंमें नौकर हुआ। आदमी मेहनती था और कुछ जमाअत भी साथ रखता था इसलिये बादशाहने परवरिश करके बरकन्दाजखांका खिताब दिया था। जब बेदौलत दक्षिणको जाता था तो उसको उस लशकरका मीरआतिश करके भेजा था। उसने पहले तो कलंकका टीका अपने माथे पर लगा लिया था परन्तु पीछे सम्हल गया और ठिकाने आगया।

उसी दिन बेदौलतका भरोसेवाला उमदा नौकर रुस्तमखां भी उसकी बात बिगड़ती देखकर महावतखांसे वचन लेके मुहम्मद मुरादबदख्शी वगैरह अपने साथके मनसबदारों समेत शाहजादे परवेजके लशकरमें चला आया। बेदौलत यह खबर सुनतेही ऐसा घबराया कि उसे बादशाही बन्दोंका क्या अपने नौकरोंकाही भरोसा न रहा। वह अपने लोगोंके लौटालानेको आदमी भेजकर रातों रात नर्बदासे पार उतर गया। उस समय फिर उसके कई एक साथी सुभीता देखकर अलग होगये और शाहपरवेजके पास पहुंचकर उसकी मेहरबानीमें दाखिल हुए।

नर्बदासे उतरते हुए बेदौलतको एक कागज महाबतखांका लिखा हुआ हाथ आया जो उसने जाहिदखांके जवाबमें लिखा था कि बादशाहकी इनायत और मेहरबानीका उम्मेदवार होकर जरूर चले आओ। उसे पढ़तेही उसने जाहिदखांको उसके तीन बेटों सहित पकड़कर कैद कर दिया। बादशाह लिखता है—जाहिदखां शुजाअतखांका बेटा है जो मेरे बापके विश्वासपात्र बन्दोंमेंसे था। मैंने इस नालायकको हकदार और खानाजाद होनेसे परवरिश करके खानकी खिताब और डेढ़हजारी मनसब पर चढ़ाकर बेदौलतके साथ दक्षिणमें भेजा था। अब जो उस सूबेके अमीरोंको

कान्दहार भेजनेके वास्ते बुलाया तो इस कुपात्रको भी ताकीदी हुक्म भेजा था। पर यह दरगाहमें न आया और बेदौलतका साथी हो गया। जब बेदौलत दिल्लीकी तलहटीसे हारकर लौट गया तो वहां इसके बालबच्चे नहीं थे तो भी इसको बन्दगीमें पहुंचने और अपने ललाटसे कलंकका टीका मिटानेकी श्रद्धा न हुई। आखिर ईश्वरके कोपमें पकड़ा गया। बेदौलतनेने एक लाख तीस हजार रुपये नकद इसके धनमालमेंसे लेलिये।

बेदौलतने जल्दीसे नर्बदा पार होकर तमाम नावोंको उधर खेंच लिया और अपनी समझके मुवाफिक घाटोंको मजबूत करके निज बखैशी बैरमबेगको अपने मोतबिर आदमियों और बहुतसे दक्षिणी बरगियोंके साथ नदीके किनारे छोड़ा। तोपोंको सामने लगाकर आसेर और बुरहानपुरकी तरफ कूच कर दिया। इस वक्त उसका एक नौकर एक कासिदको पकड़कर उसके पास लेगया जिसे खानखानांने महावतखांके पास भेजा था। जो खत कासिद के पास था उसके सिरेपर एक शेर लिखा था जिसका मतलब यह था—

सौ आदमी मुझे नजरोंमें रखते हैं
नहीं तो मै बेचैनीसे उड़ जाता।

बेदौलतने उसे बेटों सहित घरसे बुलाकर उसका वह खत उसे दिखाया। उसने उजर तो बहुत किये लेकिन सुने जानेके लायक कोई जवाब न देसका। आखिर बेदौलतने उसको दाराब और दूसरे लड़कों समेत अपने डेरेके पास क़ैद कर दिया। बादशाह लिखता है—उसने जो यह कहा था कि सौ आदमी मुझे नजरोंमें रखते हैं वहीं उसके आगे आया।

बादशाहने इब्राहीमहुसैनको जो यह विजयसम्वाद लाया था खुशखबरखांका खिताब, खिलअत और हाथी दिया। शाहजादे और महाबतखांके नाम मेहरबानीके फरमान खवासखांके हाथ भेजे। परवेजको भरी मूल्यकी पहुंची और महाबतखांको जड़ाऊ

तलवार वगशी। महावतखांको इस उत्तम सेवाके लिये सातहजारी ज़ात और सवारका मनसब इनायत किया।

सैयद मलावतखां वेदौलतको छोड़कर बादशाहके पास आगया।

बादशाहने परवेजके वास्ते नादिरी सहित खिलअत और महावतखांके लिये पगड़ी, दफतरखानेके दारोगा लालखांके हाथ भेजी।

सांपकी करतूत—बादशाह लिखता है—एकदिन मैं नीलगायके शिकारसे दिल बहला रहा था। एक सांप देखनेमें आया जो २॥ गज़ लम्बा और ३ गिरह चौड़ा था। वह आधे खरगोशको निगल गया था और आधेको निगल रहा था कि किरावल लोग उसे मेरे पास उठा लाये। खरगोश उसके मुंहसे गिरपड़ा। मैंने फरमाया कि फिर इसके मुंहमें डाल दो। लोगोंने बहुत जोर किया मगर न डाल सके। बहुत जोर करनेसे उसका जबडा भी फट गया। तब मैंने कहा कि इसके पेटको चीरो। चीरा तो दूसरा खरगोश समूचा उसके पेटसे निकला। ऐसे सांपको हिन्दुस्थानमें चीतल कहते हैं। यह इतना बड़ा होता है कि कोतापाचाको समूचा निगल जाता है। पर जहर इसमें नहीं होता है और न काटता है। एक दिन इसी शिकारमें मैंने एक .नीलगाय बन्दूकसे मारी। उसके पेटमेंसे दो पूरे बच्चे निकले। सुना था कि नीलगायके बच्चोंका मांस बहुत मजेदार होता है इसलिये सरकारी बावरचियोंको दुप्याजा पकाकर लानेको कहा। खाया तो नर्मी और मजेसे खाली न था।

शहरेवर महीना।

१५ (भादों सुदी १४) को रुस्तमखां, मुहम्मद मुराद और वेदौलतके कई नौकर उससे फटकर शाहजादे परवेजके पास आगये। बादशाहने रुस्तमखांको पांच हजारी ४०० सवारका और मुहम्मद मुरादको हजारी जात ५०० सवारका मनसब दिया। रुस्तमखां बदख्शांका रहनेवाला था उसका नाम यूसुफवेग था। रानाकी लड़ाईमें काम अच्छा देनेसे वेदौलतने उसको अपने सब नौकरोंसे

चुनकर अमीरीके दरजे पर पहुंचाया और बादशाहसे रुस्तमखांका खिताब दिलवाया था ।

नमकहरामोंको सजा—नूरुद्दीनकुली ४१ नमकहरामोंको बेड़ियोंमें जकड़कर अहमदाबादसे लाया जिनमेंसे बादशाहने शिरजाखां और काबिलबेगको मस्त हाथीके पांवमें डालकर मरवा दिया ।

शहरयारके बेटी होना—२० शहरेवर ८(१) जीकाद (आश्विन बदी ४) को शहरयारके एतमादुद्दौलाकी नवासी(२)से लड़की पैदा हुई ।

२२ (आश्विनबदी द्वितीय ५) को सौर तुलादानका उत्सव हुआ। बादशाह मामूलके मुआफिक सोने वगैरहमें तुला । ५५वां वर्ष लगा । तुलादानकी जमामेंसे २०००) शेख अहमद सरहिन्दीको इनायत किये ।

महर महीना ।

१ महर (आश्विन बदी ३०) को मीर जुमलाने तीनहजारी ३००० सवारका मनसब और गुजरातके बखशी सुकीमने किफायत खांका खिताब पाया ।

सरफ़राज़खांके बेकसूर होनेका यकीन बादशाहके दिलमें हो गया । उसे जेलखानेमेंसे बुलवाकर उसका सलाम लिया ।

शहरयारके घर जाना—बादशाह शहरयारकी अर्जसे उसके घर गया । उसने एक बड़ी मजलिस सजाकर उत्तम नजर दिखाई । अकसर बन्दोंको सिरोपाव भी दिये ।

बेदौलतका बादशाही सरहदसे निकल जाना ।

आसेरका किला जो मजबूतीमें मशहूर है पहले तो ख्वाजा फतहुल्लहके बेटे ख्वाजा नसरुल्लहको सौंपा हुआ था । फिर बेदौलतकी अर्जसे मीर हिसामुद्दीनको सौंपा गया । यह नूरजहां बेगमके तुगाइका जमाई था । इसलिये जब बेदौलत दिल्लीके पास लड़ाईमें हार

---

(१) पंचाङ्गके हिसाबसे १६ जीकाद २० शहरेवरको थी ।

(२) नूरजहांकी बेटी ।

कर मांडूकी तरफ भागा तो नूरजहां बेगमने उसको ताकीदें लिख कर भेजी थीं कि हरगिज बेदौलत और उसके आदमियोंको किले के पास मत फटकने देना, बल्कि किले और कोटको सजाकर अपना फर्ज अदा करना, अपनी इज्जतमें बट्टा न लगाना।" किलेमें सामान भी बहुत था और उसका जल्दीसे फतह होजाना भी सम्भव न था। परन्तु जब बेदौलतने अपने नौकर शरीफाको उसके पास भेजा तो वह तुरत उसको किला सौंपकर बेटों समेत बेदौलतके पास चला गया। बेदौलतने उसको चार हजारी मनसब भण्डा नक्कारा और मुरतिजाखांका खिताब देकर दीन और दुनियामें बदनाम किया। फिर खानखानां, दाराब और उसकी सब औलादको लेकर किले पर चढ़ा और तीन चार दिन वहां रहा। जब अनाज और किलेदारीके सब सामानोंसे दिलजमई होगई तो गोपालदास नाम राजपूतको जो पहले सरबुलन्दरायका नौकर था और दकन जाते वक्त उसका नौकर होगया था किला सौंपा। औरतों और फालतू असबाबको वहां छोड़ा तीनों व्याही बीबियों, बेटों और जरूरी लौंडियोंको साथ लिया। खानखाना और दाराबको पहले तो किलेमें छोडनेका इरादा था पर फिर मन बदल गई और साथ लेकर बुरहानपुरको कूच किया।

लानतुल्लह भी सूरतसे आकर उससे मिल गया। उसने बड़ी घबराहटसे रायभोज हाड़ाके बेटे सरबुलन्दरायको बीचमें डालकर सुलहकी बात चलाई। महाबतखांने जवाब दिया कि जबतक खानखानां न आवे सुलह नहीं होसकती इससे उसका मतलब उस कपटियों और फसादियोंके सरदार खानखानांको बेदौलतसे अलग कर लेनेका था।

बेदौलतने लाचार खानखानांको कैदसे छोड़ा और उससे कुरान की कसम लेकर तसल्ली और वचन पक्का करनेके लिये उसको महल में लेगया। अपनी जोरू बच्चोंको उसके सामने लाकर बहुतसी लाचारी और आजजी की और कहा कि हमारे ऊपर बुरा वक्त

आपड़ा है काम मुशकिल-होगया है मैं अपनेको तुम्हें सौंपता हूं। अब मेरी इज्जत आबरू बचाना तुम्हारे हाथ है। वह काम करना चाहिये कि जिसमें इससे ज्यादा खराबी न हो और मुझे फिर भटकना न पड़े।

खानखानां सुलहके इरादेसे वेदौलतसे बिदा होकर बादशाही लशकरमें आया। यह बात ठहरी कि वह नदीके उधर रहकर सुलहकी लिखा पढ़ी करे। परन्तु खानखानांके नदी तक पहुंचने से पहलेही बादशाही लशकरके कुछ बहादुर जवान रातको काबू पाकर जिधर बागी लोग गाफिल थे उधरके घाटसे उतर गये। इससे बागियोंमें घबराहट पड गई और बैरमबेग उनके सामने न ठहर सका। उसके भागतेही सब लशकर वेदौलतका रातोंरात भाग गया। खानखानांको बडी हैरानी हुई। न जा सकता था न ठहर सकता था!

शाहजादे परवेजने लगातार कई कागज तसल्ली और मेहरबानी के भेजकर खानखानांको अपने पास बुलाया। खानखानांभी वेदौलत की हार और कमबख्ती देखकर महावतखांकी मारफत परवेजसे जा मिला।

वेदौलत बादशाही फौजके नर्बदासे उतरने, बैरमबेगके भागने और खानखानांके चले जानेकी खबर सुनकर बरसते मेहमें मरहट(१) के रास्तेसे दक्षिणको चल दिया। इस गड़बडमें बादशाही बन्दे और उसके नौकर साथ छोड़कर अलग होगये। जादूराय उदाराम और आतिशखांके घर रास्तेमें थे इसलिये वह कई मंजिल तक सङ्ग रहे परन्तु जादूराय उसके लशकरमें न गया। एक मंजिल पीछे रहता था और लोगोंके असबाबकी मालिकी करता था जिसको वह जानके डरसे छोड़ते जाते थे।

वेदौलत जिस दिन नर्मदासे उतरता था तो उसने अपने निज खिदमतगार जुलफिकारखां तुरकुमानको सरबुलन्दखां पठानके

(१) महाराष्ट्र देश।

नानेके लिये भेजकर उससे कहलाया था—"तू अबतक नदीसे क्यों नहीं उतरा है यह बात तेरी भलमनसी और सचाईसे बहुत दूर है जितनी तेरी बेईमानी मेरे दिलमें खटकती है उतनी और किसीकी नहीं खटकती।" तुरकमानने जाकर जब यह सन्देसा उससे कहा तो उसने पूरा जवाब नहीं दिया और कड़वाईसे कहा कि मेरे घोडे का रास्ता छोडदो। तुर्कमानने तलवार सूंत कर उसकी कमर पर मारी। पर एक पठानने बरछा बीचमें देकर झेल ली। तलवार के निकलतेही पठानोंने उमड़कर तुरकमानके टुकडे टुकड़े कर डाले। बेदौलतके खजानची सुलतानमुहम्मदका बेटा भी मारा गया जो तुरकमानकी दोस्तीसे बेदौलतको पूछे बगैर साथ आया था।

बेदौलतका पीछा करनेका हुक्म—जब बादशाहने बेदौलतके बुरहानपुरसे निकलने और परवेजके बुरहानपुरमें पहुंचनेकी खबर सुनी तो खवासखांको परवेजके पास दौडाकर कहलाया कि कि इतने परही बस न करे बल्कि उसको जीता पकड ले या बादशाही सरहदसे निकाल दे। बादशाह यह भी सुना करता था कि जब बेदौलत इधरसे भागेगा तो कुतुबुल्मुल्ककी अमलदारीमें होकर उडीसे और बङ्गालेमें आवेगा, यह बात सिपाहगरीके हिसाबसे ठीक भी थी। इसलिये बादशाहने होशियारीसे मिरजा रुस्तमको इलाहाबादकी सूबेदारी देकर विदा किया कि यदि ऐसा हो तो यह उस समय वहां कुछ काम दे।

खानजहां—खानजहांने मुलतानसे आकर १००० मुहरें, लाख रुपयेका एक लाल एक मोती और दूसरी चीजें भेट कीं।

बीसवां वर्ष ।

सन् १०३३ हिजरी ।

कार्तिक सुदी २ संवत् १६८० तारीख १६ अकतूबर सन् १६२३ से कार्तिक सुदी १ संवत् १६८१ तारीख १३ अकतूबर सन् १६२४ तक ।

आबान महीना ।

बेदौलतका कुतुबुल्मुल्ककी मुल्कमें जाना—६ आबान (कार्तिक सुदी ६।१०) को खवासखां, शाहजादे और महावतखांकी अर्जी लाया और बादशाहसे अर्ज की कि जब शाहजादा बुरहानपुर पहुंचा तो बहुतसे आदमी मेंहके मारे पीछे रह गये थे तो भी उसने हुक्म के मुताबिक फौरन नदीसे उतरकर बेदौलतके पीछे कूच करदिया। बेदौलत यह खबर सुनकर घबराया और जल्दी जल्दी चलनें लगा। मेह, कीचड, पानी और लगातार कूच करनेसे बारबरदारीके जानवर थक गये। जो आदमी रास्तेमें रह जाता था वह फिर नहीं लौटता था। ऐसेही जो चीज जहां रह जाती थी फिर नहीं मिलती थी। बेदौलतको अपनी, अपने बेटों और कबीलोंको जानके आगे मालकी कुछ परवा न थी। बादशाही लश्कर भंगारके घाटेसे उतर कर रनकोट तक जो बुरहानपुरसे ४० कोस है उसके पीछे गया। वह इस हालसे माहूरके किले तक पहुंचा और यह जानकर कि जादूराय उदाराम वगैरह दखनी सब यहांसे आगे उसके साथ नहीं जायगे उनको बिदा किया। हाथी और दूसरा बोझ भार माहूरके किलेमें छोड़कर उदारामको सौंपा और आप कुतुबुल्मुल्ककी विलायतकी तरफ चल दिया। जब उसका बादशाही सरहदसे निकल जाना भलीभांति मालूम होगया तो शाहजादा परवेज, महावतखां आदि सब खैरखाहोंकी सलाहसे लौटा और १ आबान (कार्तिक सुदी १) को बुरहानपुरमें पहुंच गया।

बादशाहने मेहरबानीसे राजा सारंगदेवको फरमान समेत परवेजके पास भेजा।

कासिमखांका मनसब चारहजारी २००० सवारोंका होगया।

अलिफखां कयामखानी पटनेसे आया। बादशाहने उसे झण्डा देकर किले कांगड़ेकी रखवाली पर भेजा।

आजर महीना।

कशमीरको कूच—२ आजर (अगहन सुदी २।३) को बादशाह ने अजमेरसे कशमीरको कूच किया क्योंकि बेदौलतकी लड़ाई पूरी होचुकी थी और हिन्दुस्थानकी गर्मी उससे सही नहीं जाती थी।

आसफखां भी बंगालेसे आगया। उसकी बातोंके बिना बादशाह का जी नहीं लगता था इसलिये उसके बुलानेका हुक्म भेजदिया था।

जगतसिंह—राणा करणका बेटा जगतसिंह खिलअत और जड़ाऊ खंजर पाकर अपने देशको बिदा हुआ।

परवेजकी अर्जी—राजा सारंगदेव, परवेज और महाबतखांकी अर्जी लेकर आया जिसमें लिखा था कि बेदौलतकी मुहिमसे दिलजमई होगई है और दक्षिणके दुनियादारोंने भी ताबेदारी कबूल कर ली है इसलिये हजरत इधरकी फिक्र छोड़कर सैर और शिकार करें। बादशाही मुल्कोंमें जहांकी हवा मिजाजके मुवाफिक हो वहां तशरीफ लेजाकर अपना दिल खुश करें।

२० (पौष वदी ५) को मिरजावाली सिरोंजसे आया।

राजा गिरधरका मारा जाना—इन दिनों सूबे दक्षिणके बख्शी अकीदतखांकी अर्जी पहुंची जिसमें राजा गिरधरके मारे जानेका हाल लिखा था। परवेजके नौकर सैयद कबीर नाम बारहके एक सैयदने अपनी तलवार बाड रखने और उजली करनेके लिये सीकलगरको दी थी जिसकी दुकान राजा गिरधरके घरके पास थी। दूसरे दिन जब लेनेको आया तो मजदूरी देने पर तकरार होगई। सैयदके नौकरोंने सीकलगरके कई लाठियां मारदीं। राजाके आदमियोंने उसकी हिमायत करके उन लोगोंको पीटा। दो तीन

वारहके सैयद उधर रहते थे वह हल्ला सुनकर सैयदकी मददको आये। सैयदों और राजपूतोंमें बात वढ़कर लडाई छिड़ गई। तीर और तलवार चलनेकी नौवत पहुंची। सैयद कवीर खवर पाकर तीस चालीस सवारों सहित मददको पहुंचा। राजा गिरधर और उसके भाईवन्द राजपूत जैसा कि हिन्दुओंमें दस्तूर है हवेलीके अन्दर नंगे वदन खाना खारहे थे। राजाने सैयद कवीरके आने और सैयदोंकी जियादतीसे वाकिफ होकर अपने आदमियोंको हवेलीमें वुला लिया और किवाड़ लगा दिये। सैयद कवीर किवाड़ोंको आगसे जलाकर अन्दर घुस गया। लड़ाई हुई। यहां तक कि राजा गिरधर २६ नौकरों सहित मारा गया। ४० आदमी दूसरे जखमी हुए। ४ सैयद भी मारे गये। फिर सैयद कवीर राजाके तवेलेके घोड़े लेकर अपने घर चला गया।

राजपूत अमीर राजा गिरधरके मारे जानेकी खवर सुनतेही सेना लेकर अपने अपने डेरोंसे चढ़े। उधर वारहके तमाम सैयद, सैयदकवीरकी मददको दौड़े। किलेके मैदानमें वड़ा घमसान मचा। दोनो दलोंमें मुठभेड़ होनेवालीही थी कि महावतखां खवर पाकर फौरन वहां पहुंचा। सैयदोंको तो किलेमें छोड़ आया और राजपूतोंको जैसा कि उस वक्त मुनासिव था तसल्ली देकर कई सरदारों को खानआलमके डेरे पर लाया जो पासही था और फिर उसको समझाकर सैयदोंको सजा देनेका जिम्मा लिया। शाहजादा भी यह हाल सुनकर खानआलमके डेरोंमें आगया और राजपूतोंको तसल्ली देकर घर भेजा।

दूसरेदिन महावतखांने राजागिरधरके घरपर जाकर उसके वेटोंको दिलासा दिया और सैयद कवीरको तदवीर और स्यानपनसे पकड कर कैद किया। मगर राजपूतोंको उसे मारे विना तसल्ली न होती थी इसलिये कई दिन पीछे उसको कतलकी सजा देदी गई।

अजमेरकी फौजदारी—२३ (पौष वदी ८) को मुहम्मदमुराद सरकार अजमेरकी फौजदारी पर नियत हुआ।

दे महीना।

१० (पौष सुदी १०) को बादशाह रहीमाबादके परगनेमें शेर की खबर पाकर शिकारको गया। हाथी बढ़ाकर शेरको बन्दूकसे मारा। वह लिखता है—शाहजादगीसे अबतक जितने शेर शिकार हुए उनमें ऐसा बड़ा और सुडौल शेर कोई न देखा गया था। २०॥ मन जहांगीरी तोलमें उतरा। लम्बा साढ़े तीन गज और २ तसू हुआ। मैंने चितेरोंको हुक्म दिया कि इसकी तसवीर डील डौलके मुवाफिक खेंचदें।

१६ (माघ बदी १) को अर्ज हुई कि आगरेका हाकिम मर गया। उसने ५६ साल बादशाही नौकरी की। बादशाने मुकर्रिब खांको उसकी जगह नियत करके आगरे भेजा।

मथुरा—बादशाह फतहपुर होकर मथुरामें आया। वहां २२ (माघ बदी ७) को चन्द्र तुलादानका उत्सव हुआ। इस पक्षसे ५७ वां वर्ष लगा।

मथुराके निकट बादशाह नावमें बैठा और यमुनाके मार्गसे चला। मार्गमें शिकारकी खबर लगी। एक शेरनी तीन बच्चों सहित निकली। बच्चे बहुत छोटे थे। वह बादशाहने हाथसे पकड़ लिये और शेरनी बन्दूकसे मारदी।

गंवारोंको सजा—बादशाहसे अर्ज हुई कि जमना पारके गंवार और जमींदार चोरीधाड़ा नहीं छोड़ते हैं और घने जंगलोंकी आड़ में रहकर जागीरदारोंको माल भी नहीं देते हैं। बादशाहने खान-जहांको उनके दण्ड देनेका हुक्म दिया। दूसरे दिन फौज जमना से उतरकर दौड़ी गई। वह भागनेकी फुरसत न पाकर लड़नेको सामने आये और जमकर लड़े। बहुतसे मारे गये। उनकी औरतें और बच्चे कैद हुए। फौजको खूब लूट हाथ आई।

बहमन महीना।

कन्नौज—१ (माघ बदी ३०) को रुस्तमखां सरकार कन्नौजकी फौजदारी पर भेजा गया।

अबदुल्लहको सजा—२ (माघ सुदी १।२) को बादशाहने हकीम नूरुद्दीन तुहरानीके बेटे अबदुल्लहको अपने रूबरू बुलाकर सजादी। जब शाह ईरानने इसके बापको माल और जरके वास्ते पकडकर तकलीफ दी थी तो यह वहांसे भाग आया था। बादशाहने इसको ५ सदी मनसब देकर रख लिया था। बहुत खातिर और परवरिश करता था। परन्तु वह बादशाहकी बुराई किया करता था। सबूत होने पर सजाको पहुंचा।

शिकार—किरावलोंने अर्ज की कि इस इलाकेमें एक शेर रहता है जिससे यहांके लोग बड़ी तकलीफमें हैं। बादशाहने फिदाईखांको हुक्म दिया कि हाथियोंके हलके लेजाकर उस शेरको घेरो। पीछे बादशाहने जंगलमें जाकर उसे एकही गोलीमें मार डाला।

तीतरके पेटमें चूहा—एकदिन बादशाहने शिकारमें एक काला तीतर बाजसे पकड़वाया। उसका पेट चिरवाकर देखा तो उसमें एक पूरा चूहा निकला जो गला न था। बडी हैरत हुई कि इतनी पतली नालीमें समूचा चूहा कैसे उतर गया। बादशाह लिखता है—"यही बात कोई दूसरा कहता तो सच न मानीजाती। जब खुद देखी तो अनोखी होनेसे लिखी गई।"

दिल्ली पहुंचना—६ (माघसुदी ६) को बादशाह दिल्लीमें दाखिल हुआ।

माधवसिंहको राजाका खिताब—राजा वासूके बेटे जगतसिंहने बेदौलतके कहनेसे पंजाबके उत्तरी पहाड़ोंमें ऊधम मचा रखा था और सादिकखां उसे दण्ड देनेको गया था। अब बादशाहने जगतसिंहके छोटे भाई माधवसिंहको राजाका खिताब देकर घोडा और खिलअत इनायत किया और हुक्म दिया कि सादिकखांके पास जाकर उधरका फसाद मिटावें।

सलीमगढ़में बादशाह—दूसरे दिन बादशाह दिल्लीसे कूच करके सलीमगढ़में उतरा। राजा कृष्णदासका मकान रास्तेमें पड़ता था।

उसने बहुतसी प्रार्थना की। इससे बादशाह उस पुराने नौकरके घर गया और उसका मन बढ़ानेको उसकी कुछ भेट भी लेली।

दिल्लीकी हुकूमत—२० (फालुणबदी ४) को बादशाहने सलीमगढ़से कूचकरके सैयद भवा बुखारीको दिल्लीकी हुकूमत दी। उसका घर भी दिल्लीमें था और यह काम पहले अच्छी तरह करचुका था।

तिब्बतके अलीरायका बेटा—तिब्बतके हाकिम अलीरायके बेटे अलीमुहम्मदने अपने बापके कहनेसे दरगाहमें आकर जमीन चूमी। अलीरायको इससे बहुत प्यार था और इसको अपनी जगह बैठाना चाहता था। दूसरे बेटे इस लिये नाराज हुए। बड़े बेटे अबदाल ने जो सबमें लायक था काशगरके खानका वसीला पकडा कि बूढे अलीरायके मरने पर वह खानकी मददसे तिब्बतका हाकिम हो। अलीरायने इस आशङ्कासे कि कहीं उसके बडे बेटे, छोटे अलीमुहम्मदको मार न डालें और उस देशमें फसाद न बढ़े उसको दरगाहमें भेजा था। असल मतलब उसका यह था कि वह इस दरगाहके वसीलेदारोंमें होजावे और यहांकी हिमायतसे उसका काम बन सके।

असफन्दार महीना।

१८ (फालुण सुदी १) को अम्बालेके परगनेमें सवारी पहुंची।

आदिलखां—इमामवर्दीका बेटा लशकरी जो बेदौलतके पाससे भागकर परवेजकी खिदमतमें आगया था वहांसे परवेज और महाबतखांकी अर्जी आदिलखांकी सुफारिशमें लेकर बादशाहके पास आया। अर्जीके साथ आदिलखांका खत भी था जो उसने महाबतखांके नाम भेजकर ताबेदारी और खैरख्वाही जाहिर की थी। बादशाहने उसीको वापिस भेजकर, शाहजादे, खानआलम और महाबतखांके लिये खिलअत भेजे। शाहजादेका खिलअत मोतीके तुकमोंकी नादिरी समेत था। शाहजादेकी अर्जसे आदिलखांके नाम फरमान लिखा और उसके लिये भी खिलअत नादिरी सहित भेजा और लिखा कि जो मुनासिब समझें तो इसी (लशकरी) को आदिलखांके पास भेजें।

जगतसिंहको माफी—५ (फाल्गुण सुदी ५) को बादशाह सरहिन्द पहुंचकर बागमें ठहरा। व्यास नदीके किनारे पर सादिकखां मुखतारखां, असफन्दारखां, राजा रूपचन्द गुलेरी और दूसरे अमीरों ने जो उत्तरके पहाड़ोंमें काम करके आये थे मुजरा किया। जगतसिंह जो बेदौलतके इशारेसे उन पहाड़ोंमें मैदान खाली पाकर लूट मार कर रहा था सादिकखांके जानेपर किलेमार(१)में जावैठा। जब काबू पाता कुछ फौजसे बाहर निकलकर बादशाही बन्दोंसे लड़ता और भाग जाता था। जब अनाजकी कमी और दूसरे जमींदारोंकी मददसे नाउम्मेदी हुई, जिनको सादिकखांने लालच और धमकी देकर गांठ लिया था, साथही भाईको राजाकी पदवी मिल जानेसे वह घबराया, उसने नूरजहां बेगमका वसीला उठाया। बादशाहने बेगमकी सुफारिश और खातिरसे उसके कुसूर माफ कर दिये।

बेदौलत उड़ीसेमें—दक्षिणके मुत्सद्दियोंकी अर्जियां पहुंची कि बेदौलत लानतुल्लह और दाराब वगैरहके साथ कुतुबुल्मुल्ककी सरहद से उड़ीसे और बंगालेको गया। रास्तेमें उसको बहुत तकलीफें हुई। उसके बहुतसे साथी जगह जगहसे भाग गये। उनमें उसके दीवान अफजलखांका बेटा मिर्जा मुहम्मद भी था। बेदौलतने कुछ आदमी उसके लानेको भेजे परन्तु वह न गया और लड़कर जानसे जाता रहा।

जब बेदौलत दिल्लीसे भागकर गया था तो अफजलखांको मदद मांगनेके लिये आदिलखांके पास भेजा। आदिलखांके लिये बाजू और अम्बरके लिये हाथी घोड़ा और जड़ाऊ खांडा भेजा था। परन्तु अम्बरने यह चीजें नहीं लीं। कहा कि मैं आदिलखांके तावे हूं। वही दक्षिणके दुनियादारोंमें बड़ा है। तुम पहले उसके पास जाओ और अपना मतलब कहो। वह कबूल करे तो मैं भी करूंगा और जो कुछ तुम लाये हो लेलूंगा नहीं तो नहीं।

(१) मऊ।

अफजलखां आदिलखांके पास गया। वह बहुत बुरी तरह पेश आया। बहुत दिन तक शहरके बाहर पडा रखा। बात भी न पूछी और जो कुछ वह उसके और अम्बरके लिये लेगया था वह भी मंगाकर रख लिया। इतनेहीमें अफजलखांको बेटेके मारजाने की खबर पहुंची तो वह जीताही मर गया।

बेदौलत इस हैसियतसे लम्बा सफर करके मछलीपट्टनमें पहुंचा जो कुतुबुल्मुल्कके इलाकेमें था और आदमी भेजकर कुतुबुल्मुल्कको अपनी मदद पर बुलाया। उसने कुछ रुपये और सामान भेजकर अपनी सरहदके हाकिमको लिख दिया कि अपने इलाकेसे सलामत निकल जाने दो और बनियों तथा जमींदारोंको दिलासा देकर कह दो कि इनके लशकरमें अनाज और दूसरी जरूरी चीजें पहुंचाते रहें।

डूबी वस्तुका मिलना—२७ (चैत्रवदी १२) को बादशाह शिकार से आता था। नदीमें उतरतेहुए एक खिदमतगारके हाथसे सोनेका सरकारी गजकदान पानीमें गिर पडा जो एक थैलेमें था और जिस में एक थाल और ५ प्याले ढकने समेत थे। लोगोंने ढूंढा तो बहुत परन्तु पानी गहरा और तेज था न मिला। दूसरे दिन बादशाहसे अर्ज हुई तो उसने मल्लाहों और किरावलोंको हुक्म दिया कि जहां गिरा है वहीं ढूंढें। शायद मिल जावे। वहीं मिला। उथल पुथल न हुआ था बल्कि पानीकी एक बून्द भी प्यालोंमें न पहुंची थी। बादशाह लिखता है—यह बात वैसीही है कि जब हादी खलीफा हुआ था तो उसने अपने भाई हारूनसे एक अंगूठी याकूतकी मंगवाई थी जो उसे बापके मालसे मिली थी। जब हादीका आदमी अंगूठी मांगनेको गया तो हारून दजला नदीके तटपर बैठा था। उसने खफा होकर जवाब दिया कि मैंने तो बादशाही तेरे पास रहने दी। तू एक अंगूठी मेरे पास नहीं रहने देना चाहता है। यह कह कर अंगूठी दजलेमें फेंक दी। कई महीने पीछे जब हादी मरा और हारून खलीफा हुआ तो गोते

लगानेवालोंको हुक्म दिया कि मैंने जहां अंगूठी डाली है वहां गोता लगाकर उसे ढूंढो। उसके प्रतापसे पहलेही गोतेमें अंगूठी उनके हाथ आगई और उन्होंने लाकर हारूनके हाथमें दी।

नर और मादा तीतरको पहचान—इन दिनों शिकारमें इमामवर्दी किरावलबखशी एक तीतर बादशाहके पास लाया। उसके एक पांवमें कांटा था दूसरेमें नहीं। उसने परीक्षाके तौर पर पूछा कि यह नर है या मादा? बादशाहने फौरन कहा कि मादा है। उसका पेट चीरा गया तो उसमेंसे अण्डा निकला। जो लोग खिदमतमें खडे थे उन्होंने अचम्भा करके बादशाहसे पूछा कि हजरतने किस पहचानसे ऐसा कहा? बादशाहने फरमाया कि मादाको चोंचकी नोक नरसे कुछ छोटी होती है इससे और बहुत देखनेसे ऐसी पहचान होगई।

पक्षियोंकी शारीरिक दशा—बादशाह लिखता है—अजीब बात यह है कि सब जानवरोंका नरखडा गलेसे पेट तक एकही होता है मगर जरजके गलेमें ४ उंगल तक एक नाली है फिर दो शाखा होकर पेटमें गई है और जहांसे कि दो शाखा हुई हैं ढकी हुई हैं। हाथ लगानेसे वह गांठसी मालूम होती है। कुलंगमें इससे भी अजब बात है कि उसके गलेकी नाली सांपकी तरह लहराती हुई छातीकी हड्डियोंमेंसे पूंछ तक गई है और वहांसे लौटकर फिर गलेमें आमिली है। जरज दो तरहका होता है। एक चितकबरा दूसरा बोरता। पर इन दिनों मालूम हुआ कि दो तरहका नहीं है। जो चितकबरा है वह नर है और जो बोरता है वह मादा है। इसकी यह दलील है कि चितकबरेमें पोतवाल और बोरतेमें अंडे पाये गये हैं। कई बार इसका इमतिहान किया गया है।

मछली—मछलियोंकी बाबत बादशाह लिखता है—मछलियोंका मुझे बहुत शौक है। मेरे वास्ते तरह तरहकी मछलियां लोग लाते हैं। हिन्दुस्थानकी मछलियोंमें सबसे अच्छी रोहू है। उससे

उतरकर ग्रेन है। दोनोहीमें छिलके होते हैं। दोनोकी शकल मिलती जुलती होती है। उनके मांसमें भी बहुत थोडा भेद है। जिसको पहचान है वही जान सकता है कि रोहूका मजा कुछ अच्छा है।

उन्नीसवां नौरोज।

फरवरदीन महीना।

१८ जमादिउलअव्वल सन १०३३ (चैत्र सुदी १ संवत् १६८१) बुधवारको एक पहर दो घड़ी दिन चढे सूर्य्य मेष राशिमें आया। बादशाहने अपने बन्दोंके मनसब बढ़ाये। यसावलों (अरदलीवालों) को हुक्म दिया कि सवारी और दौलतखानेसे बाहर आते वक्त काने कोढ़ी नकटे और कनकटे आदमियोंको सामने न आने दें।

१८ फरवरदीन (वैशाख वदी ५) को मेष संक्रांतिका उत्सव हुआ।

बेदौलत पर परवेज—बादशाहने बेदौलतका उड़ीसेकी सरहद में आना सुनकर शाहजादे और महाबतखांको ताकीद लिखी कि वहांका बन्दोबस्त करके सूबे इलाहाबाद और बिहारको रवाने हों। बंगालेका सूबेदार उस बेदौलतकी राह न रोक सके तो अपनी सेना से उसे रोकदो।

उर्दीबहिश्त महीना।

२ (वैशाख सुदी ४) को बादशाहने खानजहांको आगरेके सूबे में रवाने किया कि वहां रहकर हुक्मकी राह देखता रहे और जब कोई हुक्म पहुंचे उसकी मुनासिब तामील करे। उसको मोतीके तुकमेंकी नादिरी समेत खिलअत खासा जड़ाऊ तलवार खासा और उसके बेटे असालतखांके घोड़ा और खिलअत इनायत हुआ।

परवेजका विवाह—सूबे दकनके बख्शी अकीदतखांकी अर्जी पहुंची कि शाह परवेजने गजसिंहकी बहनसे हुक्मके मुवाफिक ब्याह कर लिया है। जब बेदौलत बुरहानपुरसे भागा तो मीर हिसामुद्दीन भी अपने बेटों सहित भागकर आदिलखांके पास

जाता था। जानसुपारखां खबर पाकर उसे महावतखांके पास पकड़ लाया। महावतखांने उसे कैद करके एक लाख रुपये उससे लिये।

बेदौलत जो हाथी बुरहानपुरके किलेमें छोड़ गया था उनको जादूराय और ऊदाराम शाहजादे परवेजके पास लेआये।

दक्षिणियोंकी तावेदारी—काजी अबदुलअजीज जो बेदौलतका भेजा हुआ दिल्लीमें बादशाहके पास आया था और बादशाहने उसे महावतखांको सौंप दिया था वह पहले कई वर्ष तक खानजहांकी तरफसे बीजापुरमें वकील रहा था और आदिलखांका पुराना मुलाकाती था। इसलिये महावतखांने उसको वकील करके आदिलखांके पास भेजा। दक्षिणकी दुनियादारोंने देश काल और अपना काम निकलता देखकर बन्दगी और खैरख्वाही दिखलाई। अंबरने अपने भले नौकर अलीशेरको भेजकर बहुत आजिजी और तावेदारी जताई। उसने महावतखांको नौकरकी तरह अर्जी लिखकर यह बात ठहराई थी कि देवगांवसे आकर आपसे मिलूंगा। अपने बेटेको बादशाही नौकर कराके शाहजादेकी बन्दगीमें रखूंगा

आदिलखां—उधरसे काजी अबदुलअजीजने लिखा कि आदिल खांने सच्चे दिलसे तावेदारी कबूल करके इकरार किया है कि अपने मुखतारकार मुल्ला मुहम्मद लारीको जो यहां मुल्लाबाबा कहा और लिखा जाता है ५००० सवारोंसे खिदमतमें रहनेके लिये भेजूंगा। उसे पहुंचा समझें।

परवेजका कूच—परवेजको बेदौलतकी रोक थामके लिये इलाहाबाद और बिहार जानेकी ताकीदें हुई थीं। इसलिये वह ६ फरवरदीन (चैत्र सुदी ६) को फौज समेत कूच करके लालबागमें उतरा और महावतखां मुल्ला मुहम्मद लारीसे मिलनेके लिये बुरहानपुरमें ठहर गया। लशकरखां जादूराय ऊदाराम और दूसरे बन्दोंसे कहा कि बालाघाटमें जाकर जफरनगरमें ठहरें। असदखां मामूरी को एलचपुरमें और शाहनवाजखांके बेटे मनूचहरको खानपुरमें

रखा रजवीखांको थानेश्वरमें सूबे खानदेशकी रखवाली पर भेजा।

आदिलखांका बरताव—इसी दिन खबर पहुंची कि जब लश-करी फरमान लेकर आदिलखांके पास पहुंचा तो आदिलखां शहर सजाकर ४ कोस तक फरमान और खिलअत लेनेको आया। तसलीमात और आदाब बजालाया।

२१ (ज्येष्ठ बदी ८) को बादशाहने दावरबख्श खानआजम और सफीखांको खिलअत हाथी देकर लाहोरकी हुकूमत पर बिदा किया।

सांपके मुंहमें सांप—एक दिन शिकारमें अर्ज हुई कि एक काला सांप दूसरे सांपका फन निगलकर बिलमें घुस गया है। बादशाहके हुक्मसे बिल खोदकर वह सांप निकाला गया। वह इतना बड़ाथा कि अबतक वैसा सांप बादशाहने न देखा था। उसका पेट चीरा तो दूसरे सांपका फन साबित निकल आया। वह भी वैसाही था पर कुछ पतला और छोटा था।

महाबतखांका आरिफको मारना—दक्षिणके वाकआनवीसने बादशाहको अर्जी लिखी कि जाहिदके बेटे आरिफने बेदौलतको अपनी और अपने बापकी ताबेदारी और खैरख्वाहीकी अर्जी लिखी दी। वह महाबतखांके हाथ लग गई उसने आरिफको बुलाकर दिखाई तो वह ठीक जवाब न देसका और क्या देता जबकि उसको लिखी थी। इसलिये महाबतखांने उसको मारकर उसके बाप और दो भाइयोंको कैद करदिया।

खुरदाद महीना।

बेदौलत उड़ीसेमें—इब्राहीमखां फतहजंगकी अर्जी बादशाहके पास पहुंची जिसमें लिखा था कि बेदौलत उड़ीसेमें पहुंच गया है। उड़ीसे और दकनकी सरहदमें एक घाटा है जिसके एक तरफ तो बड़ा पहाड़ है और दूसरी तरफ झील और नदी है। गोलकुंडेके हाकिमने वहां दरवाजा और किला बनाकर उसको तोपों और बन्दूकोंसे सजा रखा था। उसकी आज्ञा बिना कोई

आदमी उधरसे नहीं निकल सकता था। बेदौलत कुतुबुल्मुल्ककी इजाजत और मददसे उसी घाटेसे उतरकर उडीसेके सूबेमें आगया। उस वक्त इब्राहीमखांका भतीजा अहमदबेग जो गढ़ेके जमींदारों पर गया हुआ था एकाएकी इस खबरको सुनकर आश्चर्यमें आ गया। वह उस मुहिमको छोड़कर उस सूबेके सदरमुकाम बलबलीमें आया और अपनी औरतोंको लेकर कटक चला गया, जो बलाबलीसे १२ कोस बङ्गालेकी तरफ है। वक्त तङ्ग होनेसे फौज जमा करने और बेदौलतसे लड़नेकी फुरसत न पाकर कटकसे भी चल दिया और बर्दवानमें जाकर ठहरा। वहां मृत आसफखां का भतीजा सालह जागीरदार था। उसने पहले तो बेदौलतका आना सच न माना पर जब लानतुल्लहका कागज उसके पास पहुंचा तो बरदवानको मजबूत करके बैठगया। इब्राहीमखां भी इस खबरको सुनकर घबराया। क्योंकि उसको फौजवाले और मददगार लोग मुल्कमें बिखरे हुए थे। तो भी अकबर नगरमें जमकर लडाईका समान और फौज जमा करने लगा। इतनेमेंही बेदौलतका निशान (१) उसको पहुंचा जिसमें लिखा था कि जो बात मेरे लायक न थी वही तकदीरसे आगे आई है और यह मुल्क मेरी नजरमें तिनकेके बराबर भी नहीं है किन्तु इधर आ निकला हूं तो योंही नहीं जासकता।

"वह जो दरगाहमें जाना चाहता हो तो उससे और उसको इज्जत आबरू और घरबारसे कुछ रोक टोक नहीं है खुशीसे चला जावे और जो ठहरनेकी सलाह हो तो इस मुल्कके जिसकोनेमें रहना चाहे वही उसको बखश दिया जायेगा।

[यहां तक मोतमिदखांका लिखा हुआ है
आगे मुहम्मद हादी(२)ने लिखकर
किताब पूरीकी है।]

---

(१) शाहजादेके हुक्मनामेको निशान कहते थे।

(२) मुहम्मद हादीका यह लेख शाहजहांके समयमें लिखा

इब्राहीमखांने जवाबमें लिखा कि यह विलायत हजरत शाहंनशाहीने बंदेको सौंपी है, सिर और जान इस अमानतके साथ है।

वरदवानमें शाहजहां—जब शाहजहां वर्दवानमें पहुंचा तो सालह किलेमें बैठकर लडनेको तैयार हुआ। अबदुल्लहखांने आकर किलेको घेरा। जब काम कठिन होगया और सालहने कहींसे मदद मिलने और बचाव होनेकी सूरत न देखी तो लाचार किला छोड़कर अबदुल्लहखांसे मिला। अबदुल्लहखां उसको शाहजहांके पास लेगया।

शाहजहां अकबरनगरमें—शाहजहां वरदवान लेकर अकबरनगरको रवाना हुआ। इब्राहीमखांने पहले तो चाहा कि अकबरनगरके किलेमें बैठकर लडे। पर वह किला बहुत लम्बा चौड़ा था और उसके पास इतनी फौज न थी जो उसकी रक्षा कर सकता। इस लिये अपने बेटेके मकबरेमें जिसका कोट बहुत पक्का था जाबैठा। इस वक्त दूसरे अमीर भी इधर उधरसे उसके पास आगये। शाहजहां अकबरनगरके किलेमें उतर पडा और उसकी फौजने मकबरेको घेरलिया। अहमदबेगखां भी आमिला, जिससे लोगोंको ढारस बन्धगई। मगर सबके कबीले नदीके उस पार थे इसलिये अबदुल्लहखांने दरियाखांको नदी पार करके उन पर भेजा। इब्राहीमखां यह खबर सुनतेही अहमदबेगखांको साथ लेकर उधर दौड़ा और अपने भरोसेके आदमियोंको कोटकी हिफाजत पर छोडगया। उसने जंगी नावोंके बेडेको दरियाखांके रोकनेके लिये पहलेने भेज दिया था। मगर दरियाखां बेडेके पहुंचनेसे पेशतरही नदीमें उतर गया था। इब्राहीमखांने अहमदबेगखांको उसके मुकाबिले पर भेजा। नदीके किनारे पर दोनोंकी लडाई हुई। इधर उधरके बहुत से आदमी मारे गये। अहमदबेगखां इब्राहीमखांके पास लौट

हुआ जान पडता है और मोतमिदखांके बनाये हुए इकबालनामये-जहांगीरीसे बहुत मिलता है इसलिये आश्चर्य नहीं जो उसीसे लिया गया हो।

आया। इब्राहीमखांने आदमी भेजकर कोटमेंसे मदद मंगवाई। बहुतसे बहादुर सिपाही उसके पास आगये दरियाखां यह सुनकर कई कोस पीछे हटगया।

बेडा इब्राहीमखांके हाथमें था जिससे शाहजहांका लशकर नावों बगैर गंगासे नहीं उतर सकता था। आखिर बलिया राजा नाम एक जमींदारने आकर कहा कि कुछ फौज मेरे साथ करो तो मैं अपने इलाकेसे नावोंमें बैठाकर पार उतार दूं।

शाहजहांने अबदुल्लहखांको १५०० सवारोंसे उसके साथ किया। वह उसके रास्ता बतानेसे गंगाके पार होकर दरियाखांसे जामिला।

जब इब्राहीमखांको यह खबर लगी तो घबराकर लड़नेको गया। आप तो १००० सवारोंके बीचमें रहा हिरावलमें नूरुल्लह सैयदजादेको रखा। अपने और उसके बीचमें अहमदबेगको रखा। इन दोनोंके पास भी हजार हजार सवार थे। दोनों फौजोंके भिड़ने पर बड़ी लड़ाई हुई। अबदुल्लहखांने हिरावल पर हमला करके नूरुल्लहको भगा दिया और अहमदखांको जा लिया। वह बहादुरीसे जमकर लड़ा और जखमोंसे चूर होगया। यह हाल देख कर इब्राहीमखांसे रहा न गया उसने भी अपनी सवारी दढ़ाई। उधरसे अबदुल्लहखां बढ़ा। इस वक्त इब्राहीमखांके साथी भाग निकले। उसके पास थोड़ेसे आदमी रहगये मगर वह अपनी जगह पर जमा रहा। लोगोंने बाग पकड़ कर उसको भी रणमेंसे निकाल लेजाना चाहा मगर उसने कहा कि यह काम हिम्मत और मरदानगीका नहीं है। बादशाहकी बन्दगीमें जान जानेसे अच्छी और क्या बात होगी। अभी ये शब्द पूरे भी न हुए थे कि दुशमनों ने चरों तरफसे आकर उसको घेर लिया और अबदुल्लहखांके नौकर नजरबेगने उसे कतल करके उसका सिर शाहजहांके पास भेजदिया। जो लोग मकबरेके कोटमें घिरे हुए थे वह इब्राहीमखां फतहजंग का मारा जाना सुनकर घबरागये। रूमीखांने जो सुरंग कोटके नीचे पहुंचा दी थी वह अब आगसे उड़ाई गई। उससे ४० गज

दीवार गिर पड़ी। कोट टूटगया, उसमें जो लोग थे वह भाग भाग कर गंगामें गिरते थे और जो कोई नाव हाथ आजाती थी उसपर भीड करके डूब जाते थे। मीरक जलायर, जो उस सूबेका बड़ा आदमी था पकड़ा गया। शाहजहांके साथियोमेंसे आबिदखां दीवान, शरीफखां बख्शी, सैयद अबदुस्सलाम बारह, और हसन बटख्शी आदि कई आदमी काम आये।

अहमदबेगखां कई एक मनसबदारोंके साथ बंगालेके सदर मुकाम ढाकेको चला गया था। जहां इब्राहीमखांका सामान और खजाना था। इसलिये शाहजहांका लशकर उधरही रवाने हुआ। जब ढाकेमें पहुंचा तो अहमदबेगखां लाचार होकर शाह जहांकी खिदमतमें हाजिर हुआ। शाहजहांने ४० लाख रुपये इब्राहीमखांके और ५ लाख जलायर वगैराके मालमेंसे लिये। ५०० हाथी ४०० गोट घोड़े जो उस विलायतमें होते हैं लूटमें आये। कपड़ा और दूसरा माल भी बहुत था। बेड़ा और तोपखाना तो बड़े बादशाहोंके योग्य हाथ लगा। शाहजहांने अबदुल्लहखांको ३ लाख राजा भीमको २ लाख दाराबखां और दरियाखांको एक एक लाख; वजीरखां, शुजाअतखां, मुहम्मदतकी और बैरमबेगको पचास २ हजार रुपये बखशे और ऐसेही थोड़े बहुत दूसरे आदमियोंको भी उनके दरजेके मुवाफिक दिये।

दाराबखां बंगालेमें—शाहजहांने बङ्गालेमें कबजा करके खान खानांके बेटे दाराबखांको जो अबतक कैदमें था छोड दिया और उसको कसम देकर बङ्गालेका मुल्क सौंपा। मगर उसकी जोरूको एक बेटी और एक बेटे शाहनवाजखां सहित अपने साथ रखकर बिहार लेनेके लिये कूच किया।

रानाके बेटे राजा भीमको जो इस हरज मरजमें उसके पाससे अलग न हुआ था कुछ फौजके साथ आगे रवाना कर दिया था। आप अबदुल्लहखां और दूसरे बन्दोंके साथ उसके पीछे पीछे आता था।

शाहजहां बिहारमें—बिहारका सूबा शाहजादे परवेजकी जागीरमें था। उसने अपने दीवान मुखलिसखांको वहांकी हुकूमत और हिफाजत पर छोडा था। इफ्तखारखांके बेटे अलह्यार और बैरमखां पठानको फौजदारी पर रखा था। मगर यह लोग राजा भीमके पहुंचतेही हिम्मत हारगये। इनसे इतना भी न होसका कि पटनेके किलेको सजाकर बादशाही लशकरके आनेतक कुछ दिन वहां जमें रहें। यह ऐसे भागे कि इलहाबाद तक पीछे फिरकर न देखा। राजा भीमने पटनेमें अमल करलिया। कुछ दिनों पीछे शाहजहां भी वहां पहुंच गया। बङ्गालेके बहुतसे मददगार साथ थे। बिहारके अकसर तइनातियों और जागीरदारोंने भी उसके साथ चलनेका इकरार किया। इधर उधरसे पांच हजार सवार आकर नौकर होगये। रुहतासके किलेदार सैयद मुबारकने किला मजबूत और सब तरहका सामान होने पर भी सौंप दिया। उज्जैनिया और उस जिलेके दूसरे जमींदार भी आमिले।

इलाहाबादको कूच—शाहजहांने अबदुल्लहखां और राजा भीमको इलाहाबादकी तरफ बिदा किया। पीछेसे आप भी रवाने हुआ। अबदुल्लहखां जब जोसा नदी पर पहुंचा तो जौनपुरके हाकिम आजमखांका बेटा जहांगीरकुलीखां मिरजा रुस्तमके पास इलाहाबादमें चला गया। अबदुल्लहखां उसके पीछे जाकर भूसीमें उतरा जो गङ्गाके किनारे इलाहाबादके सामने है। भीम इलाहाबादसे ५ कोस पर ठहरा। शाहजहां जौनपुर जाकर ठहरा।

इलाहाबादको घेरना—अबदुल्लहखांके साथ बहुत बडा बेडा था। वह उससे गोले मारकर गङ्गाके पार होगया और इलाहाबादके पास डेरा करके किलेके घेरनेमें मशगूल हुआ। मिरजा रुस्तमने अन्दरसे लडाई शुरू की। दोनो तरफसे तोप और बन्दूकोंके दूत सिपाहियोंको मौतके पैगाम पहुंचाने लगे।

दक्षिणका हाल—अम्बर हबशीका मतलब अलीशेरको महावत

खांके पास भेजने और बहुत जोर डालनेसे यह था कि दक्षिण के सूबेका काम उसकी जिम्मेदारी पर छोड़ दिया जावे। और यह बादशाही बन्दोंकी मददसे आदिलखांके ऊपर अपना जोर जमावे। क्योंकि इन दिनोंमें उससे बिगाड़ होगया था। ऐसेही आदिलखां भी उसको दबानेके लिये उस सूबेका इखतियार अपने कबजेमें लेना चाहता था। आखिर उसका मन्त्र चल गया और महावतखांने अम्बरको छोड़कर आदिलखांको उम्मेद पूरी कर दी। अम्बर बीजापुरके रास्तेमें था और आदिलखांके मुखतार मुल्ला मुहम्मदको उसका खटका था इसलिये महावतखांने बादशाही लश्करसे कुछ फौज बालाघाटमें उसके लानेको भेजी। अम्बर इस खबरके सुनने से घबराकर निजामुल्मुल्कको खिड़कीसे कन्दहारमें लेगया जो गोलकुंडेके पास है और खिड़कीं शहरको खाली करके सब माल असबाब और बालबच्चे दौलताबादके किलेमें भेजदिये। यह मशहूर किया कि कुतुबुल्मुल्कसे अपना ठहराया हुआ रुपया लेनेके लिये गोलकुंडेकी सरहदमें जाता हूं।

जब मुल्ला मुहम्मद लारी बुरहानपुरमें पहुंचा तो महावतखांने शाहपुर तक पेशवाई करके उसकी बहुत खातिर और तसल्ली की तथा उसको लेकर शाहजादे परवेजकी खिदमतमें रवाना हुआ। बुरहानपुरको हुकूमत और हिफाजत पर सरबुलन्दरायको छोड़ गया। जादूराय और ऊदारामको उसकी मदद पर रखकर दोनोंके बेटे और भाईको अपने साथ लेगया।

जब मुल्ला मुहम्मद शाहजादेसे मिला तो यह बात ठहरी कि वह ५००० सवारों सहित बुरहानपुरमें रहकर सरबुलन्दरायके साथ उस सूबेका काम करे और उसका बेटा अमीनुद्दीन १००० सवारों सहित शाहजादेके साथ चले। यह कौल करार होकर शाहजादेने मुल्लाको खिलअत, जड़ाऊ तलवार हाथी और घोड़ा देकर बिदा किया और मुहम्मद अमीनको भी हाथी घोड़ा खिलअत और पचास हजार रुपये देकर अपने साथ लिया। महावतखांने भी

अपनी तरफसे ११० घोड़े २ हाथी ७० हजार रुपये नकद और ११० थान: कपड़ोंके मुल्लामुहम्मद, उसके बेटे और जमाईको दिये।

बादशाह कशमीरमें—१९ खुरदाद (आषाढ़ वदी ८) को बादशाह कशमीरमें पहुंचा। यहां अर्ज हुई कि नजरमुहम्मदखांका सिपहसालार पलंगतोश उजबक काबुल और गजनीन पर आनेका इरादा कर रहा है। महाबतखांके बेटे खानाजादखांने उसके रोकने के लिये शहरसे बाहर निकलकर डेरा किया है। बादशाहने सच्ची खबर लानेके लिये गाजीखांको डाकचौकीमें भेजा।

अबदुलअजीजखांने मदद न पहुंचनेसे कन्दहारका किला शाह अब्बासको सौंप दिया था और यह बात बादशाहको बहुत बुरी लगी थी। इसलिये अब उसको सीदू मनसबदारके हवाले करके हुक्म दिया कि सूरत बन्दरसे जहाजमें बिठाकर उसे मक्के भेजदें। फिर दूसरा हुक्म मार डालनेका भेजा। वह बेचारा रास्तेहीमें मारा गया।

तीर महीना।

७ (आषाढ सुदी १२।१३) को बादशाहकी बहन आरामबानू बेगम दस्तोंकी बीमारीसे मरगई। अकबर बादशाह इसका बहुत लाड और प्यार करते थे। यह ४० वर्षकी होकर दुनियामें जैसी आई थी वैसीही गई।

उजबक काबुलकी सरहदमें—गाजीबेगकी अर्जीसे मालूम हुआ कि पलंगतोश हजारा लोगोंके बन्दोबस्तको आया था जो गजनीके इलाकेमें रहते हैं और कदीमसे गजनीनके जागीरदारको हासिल देते है। पर पलंगतोशने ग्रांव स्वारमें किला बनाकर अपने भतीजेको कुछ फौज सहित रख दिया जिसमें हजारेके सरदारोंने खानाजादखांके पास आकर पुकार की कि हम कदीमसे काबुलके हाकिम की प्रजा और मालगुजार हैं। पलंगतोश हमें जबरदस्ती अपना ताबेदार किया चाहता है। आप हमें उससे बचालें तो हम आपके ताबेदार हैं। नहीं तो उससे मेल करके उजबकोंके जुल्मसे अपना बचाव करेंगे।

खानेजादाखांने हजारावालोंकी मदद पर फौज भेजी। पलंगतोशका भानजा लड़ा। बहुत उजवक मारे गये। फौज उसके किलेको गिराकर लौट आई। तब पलंगतोशने खिसियाकर तूरान के बादशाह इमामकुलीखांके भाई नजरमुहम्मदखांसे काबुलकी सरहदमें लूट मार करनेकी इजाजत मांगी। पहले तो वह और उसके फौजी अफसर मंजूर नहीं करते थे मगर फिर उसने बहुत कह सुन कर आज्ञा लेली और १० हजार सवार उजवक और अलमानची से चढ़ाई की। खानाजादखांने थानेके आदमियोंको बुलाकर लड़ने को कूच किया और गजनीनसे १० कोस पर गांव शेरगढ़में जाकर छावनी डाली। वहांसे फौज कमर बांधकर आगे हुई। बीचकी फौजमें खानजादाखां अपने बापके मनसबदारों सहित था और हिरावलमें मुबारजखां पठान, अनीराय सिंहदलन और सैयद हाजी वगैरह थे। ऐसेही दहने और बायें हाथकी फौजें बहादुर सरदारों से सजाई गई थीं। दूसरे दिन लड़ाई होनेकी उम्मेद थी। उजबकों का डेरा गजनीनसे ३ कोस उधर सुना जाता था। पर शेरगढ़से ३ कोस आगे बढ़तेही उजबकोंके किरावल दिखाई दिये। इधरके किरावल भी उनके सामने गये। फौज तोपखाने और हाथियोंको लिये धीरे धीरे बान मारती हुई जाती थी। पलंगतोश एक टीले के पीछे इस इरादेसे दबा खड़ा था कि फौज जो रास्तेसे थकीमांदी चली आती है जब पास आवे तो घातसे निकलकर हमला करें। मगर मुबारजखांने जो हिरावलके लशकरका सरदार था दुशमनों को देखकर कुछ लोग किरावलोंकी मदद पर भेजे। तब तो उधरके किरावलोंने भी पलंगतोशके पास आदमी भेजकर मदद मांगी। उसने अपनी फौजोंमेंसे एक फौज हिरावल पर भेजी और आप दूसरी फौज सहित एक गोलीके टप्पे पर आकर खड़ा होगया। उसकी फौज हिरावलसे ज्यादा थी इस लिये बीचका लशकर फौरन हिरावलकी मददको बढ़ा। पहले बहुतसे बाण, बन्दूकें जंबूरकें और तोपोंके गोले मारे गये फिर जङ्गीहाथी दौड़ाये गये। लड़ाई बड़ी

सखतीसे होने लगी। पलंगतोश अपनी फौजकी मददको आया मगर कुछ कर न सका पीछे हटा। उजबकोंके भी पांव उखड़ गये। बादशाही बन्दे उनको मारते गिराते 'हमाद' के किले तक भगा लेगये जो लड़ाईके मैदानसे ६ कोस पर था।

जब इस बड़ी फतहकी खबर बादशाहको पहुंची तो जैसी जिसकी खिदमत थी वैसे सबके मनसब बढाये। पलंगतोश भी उजबक था पलंगके मानी नंगा और तोश मानी छातीके हैं। वह एक लड़ाईमें नङ्गीछातीसे लड़ा था उस दिनसे उसका नाम पलंग-तोश पड गया। यह कन्दहार और गजनीनके बीच रहता था और दो एक दफे खुरासानमें लूट मार कर चुका था जिससे शाह अब्बास को भी उसका खटका रहता था।

दक्षिणका हाल—दक्षिणके वकायेनवीस फाजिलखांकी अर्जीसे बादशाहको मालूम हुआ कि जब मुल्ला मुहम्मद लारी बुरहानपुरमें पहुंच गया और उस सूबेके बन्दोबस्तसे बेफिकरी हुई तो शाहजादे परवेजने महाबतखां और दूसरे अमीरोंके साथ बङ्गालेको कूच किया। खानखानांके छल कपटका खटका रहता था और उसका बेटा दाराब भी शाहजहांके पास था इसलिये दौलतखाहोंकी सलाह से उसको नजरबन्द करके यह तजवीज की कि उसके वास्ते दौलत-खांनेके पास डेरा लगाया जाय और उसकी बेटी जानाबेगम जो शाहजादे दानियालकी बेवा और अपने बापकी लायक शागिर्द है बापके पास रहे। कुछ आदमी उसके डेरे पर माल असबावकी जबतीके लिये भेजे गये। वह उसके बहादुर और कारगुजार गुलाम फहीमको जो उसके उमदा सरदारोंसे था पकडने लगे। उसने अपनेको दूसरेके हाथमें योंही मुफ्त पड़ने न दिया और बहादुरोंसे पांव अमाकर जानको आबरू पर कुरबान कर बैठा।

शाहजहांका दीवान अफजलखां बीजापुरसे बादशाहके पास आगया बादशाहने उसके ऊपर बहुत मेहरबानी की।

शाहजादोंकी लड़ाई—इतनेमें शाहजादोंके आपसमें लड़ने

खबर पहुंची जिसका बयान यह है। जब सुलतान परवेज और महाबतखां इलाहाबादके पास पहुंचे तो अबदुल्लहखां किलेका घेरा छोड़कर झूसीको लौट गया। दरियाखांने नावोंको अपनी तरफ खेंचकर दरियाका किनारा मजबूत कर रखा था। इससे बादशाही लशकरको पार उतरनेमें कई दिनकी ढील होगई। शाहजादे परवेज और महाबतखांने इस किनारे पर छावनी डालदी। दरियाखां उधर मजबूती करता रहा। आखिर वैसवे जमींदारोंने जो उस जिलेमें मोतबिर हैं इधर उधरसे ३० नावें जमा करके कई कोस ऊपरको पानीमें रास्ता निकाला। दरियाखां तो उधर उनके रोकनेको गया और इधरसे बादशाही लशकर पार उतर गया। तब तो दरियाखां भी वहां ठहरना ठीक न समझकर जौनपुरको चल दिया। अबदुल्लहखां और राजा भीमने भी जौनपुरका रास्ता लेकर शाहजहांसे बनारसमें आनेको अर्ज कराई। शाहजहां बेगमों को रुहतासके किलेमें भेजकर बनारसको रवाने हुआ। अबदुल्लहखां, राजा भीम और दरियाखां रास्तेमें आमिले। शाहजहां बनारस में गंगासे उतरकर तोनस नदीपर ठहरा। उधरसे शाहजादा परवेज और महाबतखां दमदमेमें पहुंचे और आका मुहम्मदजमान तुहरानी और कुछ फौजको वहां छोड़कर गंगासे उतरे। तोनससे भी उतरनाही चाहते थे कि बैरमबेग जिसका खिताब खानदौरां था शाहजहांके कहनेसे गंगा पार होकर मुहम्मदजमानके ऊपर गया। उस वक्त तो मुहम्मदजमान झूसीमें चला गया मगर जब चार दिन पीछे खानदौरां बड़े घमण्डसे वहां भी जा पहुंचा तो मुहम्मदजमानने उसके साम्हने जाकर बड़ी बहादुरीसे लड़ाई की। खानदौरांकी फौज भाग गई तो भी वह अपनी जगहसे न हटा। अकेला हर तरफ दौड़ दौड़कर लड़ता रहा आखिर मारा गया। उसका सिर शाहजादे परवेजके पास पहुंचा तो वह भालेमें पिरोया गया। रुस्तमखांने जो पहले शाहजहांका नौकर था और फिर परवेजके पास भाग आया था कहा कि खूब हुआ जो हरामखोर मारागया।

आजमखांका बेटा जहांगीरकुलीखां भी वहां हाजिर था। उसने कहा कि इसको हरामखोर और बागी नहीं कह सकते। इससे बढ़कर कोई आदमी नमकहलाल नहीं होगा जिसने अपने मालिकके वास्ते जान दी है और इससे ज्यादा वह क्या कर सकता था ? देखो अब भी उसका सिर सबके सिरोंसे ऊंचा है। शाहजादा परवेज, खानदौरां के मारे जानेसे बड़ा खुश और आका मुहम्मदजमान पर बहुत मेह-रबान हुआ। उधर शाहजहांने अपने सरदारोंसे सलाह पूछी। अकसर खैरख्वाहों और खासकर राजा भीमने तो मैदानकी लड़ाई लड़नेकी सलाह दी मगर अबदुल्लहखां बिलकुल इस बातपर राजी न हुआ। वह कहता था कि बादशाही लश्करमें ४० हजार सवार हैं और अपने पास नये पुराने मिलाकर सात हजार भी नहीं हैं। इसलिये यह मुनासिब है कि जहांगीरी लश्करको यहीं छोड़कर अवध और लखनऊके रास्तेसे दिल्लीको चलें और जब यह भारी लश्कर भी उधर मुड़कर पास आपहुंचे तो दक्षिणको कूच करदें। तब यह आपही इतना बोझ भार लादे फिरनेसे थककर सुलह कर लेगा। सुलह न होगी तो जैसा मुनासिब हो वैसा कर लिया जायगा। पर शाहजहांने गैरत और बहादुरीसे इस बातको कबूल न करके लड़नेकी ठानली। सवार होकर अपने लश्कर का इस तौर पर परा बांधा—बीचमें तो आप खड़ा हुआ, दहनी अनीमें अबदुल्लहखांको, बाईंमें नुसरतखांको, हिरावलमें राजा भीम को रखा। राजाके दहने हाथ पर दरियाखांको पठानों समेत, बायें हाथ पहाड़सिंह वगैरह वरसिंहदेवके बेटोंको और अलतमश (अगली अनी) में शेरख्वाजाको जगह दी। तोपखानेके मीरआतिश (अफसर) रूमीको आगे रवाने किया।

उधरसे शाहजादा परवेज और महाबतखां भी परे बांधकर लड़नेको आये। बादशाही लशकर इतना अधिक था कि उसने शाहजहांकी फौजको तीन तरफसे घेर लिया। रूमीखांने तोप-खाना बढ़ाकर गोले मारे मगर एक गोला भी किसीके न लगा।

तोपें गर्म्म होकर बेकार होगईं। शाहजहांका हिरावल तोपखाने से बहुत दूर रह गया था इसलिये बादशाही हिरावल बेफिकरीसे तोपखाने पर आपड़ा। तोपखानेवाले उसके सामने न ठहर सके। भाग निकले। तोपखाना बादशाही नौकरोंके हाथ आगया यह हाल देखकर दरियाखां जो हिरावलके दहने हाथ पर था बिना लडेही भाग गया। उसके मुंह मोड़तेही हिरावलके बायें हाथकी फौज भी भाग खड़ी हुई। मगर राजा भीमने बादशाही फौजके बहुत होनेकी कुछ परवा न करके अपने थोड़ेसे पुराने राजपूतोंके साथ घोड़ा उठाया और बादशाही फौजके बीचमें पहुंचकर तलवार बजाई। जटाजूट हाथी जो आगे था तीरों और गोलियोंके जखमोंमें चूर होकर गिर पड़ा मगर उस शेरमर्दने अपने राजपूतों समेत लडाईके मैदानमें पांव जमाकर ऐसी बहादुरी दिखाई कि जब चुने हुए सिपाहियों और लड़ाइयां जीते हुए जवानोंने जो सुलतान परवेज और महाबतखांके आसपास खड़े हुए थे हर तरफसे दौडकर उस इक्के बहादुरको तलवारोंसे मार गिराया तोभी जब तक उसके दममें दम रहा लड़ा किया। अन्तको अपनी जान अपने मालिक पर कुरबान की। भीम राठौड़ पृथ्वीराज राठौड और अभयराज राठौड़ आदि कई रणबांके राजपूतों सहित जखमों से चूर होकर गिरे।

राजा भीमके काम आने और हिरावलके उजड़ जानेसे शुजाअतखां भी जो अलतमशमें था भाग गया। मगर शेरख्वाजा अपनी जगह न छोड़कर कतल हुआ। जब हिरावल और अलतमशकी फौजें आगेसे उठ गईं तो लडाई कौल (बीचकी फौज) में आकर पडी। तब नुसरतखां जो बाईं अनीका धनी था हिम्मत हारकर अलग होगया। शाहजहांके पास ५०० सिपाही रह गये और अबदुल्लह टहनी अनीमें, तो भी शाहजहां जंगमें जमकर इन्हीं लोगों को लड़ाता रहा। जब इनमेंसे भी बहुतसे कतल और जखमी हो गये तो भण्डों और खासा हथियारखानेके हाथियों या अबदुल्लहखां

के सिवा जो कुछ फासिले पर दहने हाथकी तरफ खड़ा था और कोई नजर नहीं आता था। ऐसे वक्तमें एक तीर शाहजहांके बकतर पर लगा। पर खुदाने उसे एक हिकमतके लिये बचा लिया। फिर एक तीर शेख ताजुद्दीनके मुंह पर लगकर कानकी लौमेंसे निकल गया। शाहजहांने यूसुफखांको अबदुल्लहखांके पास भेजकर कहलाया कि अब काम नाजुक होगया है हम इन्हीं थोडेसे आदमियोंसे जो साथ रह गये हैं खुदाकी मेहरबानीका भरोसा करके बादशाही लशकरके कल्ब (बीचकी फौज) पर हमला करना चाहिये। अबदुल्लहखांने पास आकर कहा कि अब वक्त नहीं रहा। हमला करनेमें कुछ फायदा नहीं है अमीर तैमूर और हजरत बाबर जैसे बादशाहों पर भी ऐसेही वक्त आपड़े हैं। वह मैदान छोड़कर अपना बचाव कर गये तो फिर उनको फतह भी हुई। आखिर वह लोग जो सवारीमें हाजिर थे घोडेकी बाग पकडकर शाहजहांको वहांसे निकाल लेगये। बादशाही लशकरने आकर उनका लशकर तो लूट लिया पर पीछा न किया।

हारकर लौटना—शाहजहां ४ कूचसे रुहतासके किले पर पहुंचा। तीन दिन रहकर वहांका बन्दोबस्त करता रहा। फिर सुलतान मुरादबख्शको जो उन्हीं दिनों पैदा हुआ था दाइयों खिलाइयोंके साथ वहां छोडकर दूसरे शाहजादों और बेगमों सहित पटनेको कूच कर गया।

महाबतखां खानखानां—बादशाहने यह खबर सुनकर महाबत खांको खानखानां सिपहसालारका खिताब सातहजारी सातहजार दुअस्पे तिअस्पेका मनसब देकर तुमन और तौग बख्शा।

दक्षिणका हाल—मलिक अम्बरने कुतुबुल्मुल्कको सरहदमें पहुंचकर, अपना दो वर्षका चढ़ा हुआ रुपया उससे लिया और वहांसे विलायत बिदुर (विदर्भ देश) में आकर जब आदिलखांके नौकरोंको गाफिल देखा तो उस मुल्कको लूटकर आदिलखां पर चढ़ाई की। आदिलखांके अच्छे अच्छे सिपाही और सरदार मुल्ला

मुहम्मदके साथ गयेहुए थे और अम्बरसे लड़नेके लायक फौज उसके पास न थी इसलिये उसने बुरहानपुरमें आदमी भेजे और बादशाही अमीरोंको लिखा कि मेरी खैरख्वाही सबको मालूम है और मैं अपनेको उस दरगाहके तावेदारोंमेंसे समझता हूं। इस वक्त अम्बर ने मुझसे गुस्ताखी की है मैं चाहता हूं कि सब बादशाही खैरख्वाह जो सूबेमें मौजूद है मेरी मददको आवें। जिससे उस गुलामको हटाकर पूरी पूरी सजा दी जावे।

महाबतखां जब शाहजादेके साथ इलाहाबादको जाता था तो सरबुलन्दरायको बुरहानपुरकी हुकूमत पर छोडकर कह गया था कि तमाम छोटे बडे काम मुल्ला मुहम्मद लारीकी सलाहसे करे और दक्खिणके इन्तजाममें उसके कहनेसे बाहर न हो। इसलिये मुल्लाने बहुत जोर दिया और तीन लाख हुन जिसके १२ लाख रुपये होते थे लशकरके मददखर्च वास्ते उस सूबेके मुतसद्दियोंको दिये, उधर आदिलखांने महाबतखांको अपनी मददके वास्ते लिखा तो महाबतखांने भी इस बातको तजवीज करके दक्खिणके मुतसद्दियों को लिख भेजा कि फौरन मुल्ला मुहम्मद लारीके साथ आदिलखांकी मददको चले जावें। तब सरबुलन्दराय लाचार होकर आप तो थोडे आदमियोंसे बुरहानपुरमें रहा और लशकरखां, मिरजा मनूचहर, मन्सूरखां हाकिम अहमदनगर, जांसुपारखां हाकिम बीदर, पर्दाखां, तुर्कमानखां, अकीदतखांबखशी, असदखां, अजीजुल्लहखां जादूराय, उदाजीराम वगैरह तमाम अमीरो और मनसबदारोंको जो सब दक्खिनमें तैनात थे मुल्ला मुहम्मद लारीके साथ आदिलखां की मदद पर अम्बरकी जड उखाडनेके लिये भेज दिया। जब अम्बरने यह खबर पाई तो उसने बादशाही बन्दोंको लिखा कि मैं दरगाहके गुलामों और आपके कुलोंमेंसे हूं। मुझसे कोई बेअदबी भी नहीं हुई है। फिर क्यों आप मुझे खराब करनेको आदिलखां और मुल्ला मुहम्मदके कहनेमें आते हैं? मुझसे और आदिलखांसे तो एक मुल्कके वास्ते जो पहले निजामुल्मुल्कका था और अब उसने

दबा लिया है झगडा है।' वह बादशाही बन्दोंमेंसे है तो मै गुला-मोंमेंसे हूं। उसे मेरे लिये और मुझे उसके वास्ते छोड़ दे। फिर जो खुदाको मंजूर है हो रहेगा। मगर किसीने उसकी बात न मानी और उस तरफ कूच होता रहा। अंबर जितनी विनय करता था उतनेही यह लोग सख्त होते जाते थे। लाचार वह बीजापुर के पाससे उठकर अपने मुल्कमें चला आया। तोभी इन्होंने उसका पीछा न छोड़ा। वह तो बहुत नर्मी करता था और लड़ाईको टालता था मगर मुल्ला और बादशाही उमरा उसको दबाये चले जाते थे। जब बहुत तंग आगया तो एक दिन बादशाही आदमियोंको गाफिल देखकर बीजापुरवालों पर जापड़ा उससे और मुल्लासे सख्त लडाई हुई। मुल्ला मारागया आदिलखांके लश्करकी हार हुई। उसके २५ अफसर इखलासखां वगैरह पकड़े गये जो आदिलखांकी रियासतके रुकन थे। अम्बरने उनमेंसे फर-हादखांको मार डाला जिसके खूनका वह प्यासा था और बाकी को कैद रखा।

जादूराय और ऊदाजीरामने कुछ काम न किया भागकर चले गये। बादशाही अमीरोंमेंसे लश्करखां मिरजा मनूचहर और अकीदतखां गिरफतार हुए। खञ्जरखां अहमदनगरमें और जांसु-पारखां बीयरमें चले आये दोनोंने अपने अपने किलोंको मजबूत किया। दूसरे लोग जो घातसे बचे उनमेंसे कुछ तो अहमदनगरके किलेमें गये और कुछ बुरहानपुर पहुंचे। अंबरको बड़ी फतह हुई जिसकी उसे उम्मेद भी न थी। उसने कैदियोंको दौलताबाद के किलेमें भेजकर अहमदनगरके किलेको आघेरा और उसके फतह करनेकी बहुत कोशिश की मगर कुछ न हुआ। तब थोड़ी सी फौज वहां छोड़कर बीजापुर पर कूच किया। आदिलखां फिर किला पकड़कर बैठ गया अंबरने उसका तमाम मुल्क बादशाही सरहद (बालाघाट) तक दबा लिया। बहुतसी फौज जमा करके शोलापुरके किलेको जाघेरा। इसपर निजामुल्मुल्क और

आदिलखांके बीचमें झगडा रहा करता था। याकूतखांको कुछ फौजसे बुरहानपुर भेजा और मलिकमैदान तोपको दौलताबादसे लाकर शोलापुर फतह कर लिया।

काबुल—इन खबरोंको सुननेसे बादशाहको बडी घबराहट हुई। इसी बीचमें बलखसे नजरमुहम्मदखांका खत आया जिसमें लिखा था कि पलगतोशने बगैर मेरी इजाजतके जो गुस्ताखी की थी उसकी सजा उसने खूब पा ली। अब मेरी यह अर्ज है कि खानाजादखां को काबुलसे बदलकर किसी दूसरेको उसकी जगह भिजवादें।

बादशाहने मंजूर करके वह सूबा ख्वाजा अबुलहसनको दिया और उसको पांचहजार सवारकी तनखाह दोअस्पा और तिअस्पाके जाबतेसे बढाकर उसके बेटे अहसनउल्लहको बापकी नायबीमें काबुल भेजा। उसको भी डेढ हजारी ८०० सवारका मनसब जफरखां का खिताब खिलअत तलवार जड़ाऊ खञ्जर और हाथी मिला।

कशमीरसे लौटना—जब जाड़ेके आनेसे कशमीरकी खूबियां खतम होगईं तो बादशाह २५ शहरेवर (आश्विन सुदी ४) को वहांसे कूच करके लाहोरमें आया। पञ्जाबका सूबा सादिकखांसे लेकर आसफखांको दिया। खानाजादखांने काबुलसे आकर जमीन चूमी।

महाबतखांकी अर्जी पहुंची जिसमें लिखा था कि शाहजहां पटने और बिहारसे चलकर बङ्गालेको आगया और शाह परवेज बिहारमें जापहुंचा।

शाहजहां दक्षिणको—शाहजहांने दाराबखांको बङ्गालेकी हुकूमत देकर उसकी औरत एक लडके और एक भतीजेको अपने साथ लेलिया था। तोनसकी लडाईके पीछे उसको रुहतासके किले में रखकर दाराबखांको लिखा कि गढीमें हाजिर हो। उसने जमानेका रङ्ग बदला देखकर अर्जी भेजी कि जमींदारोंने एका करके मुझे घेर रखा है इसलिये खिदमतमें हाजिर नहीं होसकता। शाहजहांको जब दाराबकी तरफसे निराशा हुई और साथ कोई कामका आदमी न था इसलिये गुस्सेसे दाराबके बेटेको अबदुलहखांको सौंपा और बाकी सबको साथ लेकर जिस रास्तेसे आया था उसी रास्ते दक्षिणको कूच किया।

इक्कीसवां वर्ष।

सन् १०३४ हिजरी।

कार्तिक सुदी २ संवत् १६८१ ता० ४ अकतूवर सन् १६२४ से आश्विन सुदी २ संवत् १६८२ ता० २३ सितम्बर सन् १६२५ तक।

अबदुल्लहने दाराबके कसूरमें उसके जवान बेटेको मारडाला।

शाहजादा परवेज बङ्गालेको महावतखां और उसके बेटेको जागीरमें देकर लौट आया। बङ्गालेके जमींदारोंके नाम जो दाराब को घेरे हुए थे हुक्म पहुंचा कि उसको यहां भेजदें वह आकर महावतखांसे मिला।

दाराबका मारा जाना—जब बादशाहको दाराबके आनेकी खबर पहुंची तो महावतखांको लिखा कि उस नालायकको जिन्दा रखनेमें क्या मसलिहत है चाहिये कि फरमानके पहुंचतेही उसका सिर दरगाहमें भेजदें। महावतखांने ऐसाही किया।

खानाजादखां बङ्गालेमें—बादशाहने खानाजादखांको खासा खिलअत जड़ाऊ खञ्जर फूलकटारे समेत और खासा घोड़ा देकर बङ्गालेकी सूबेदारी पर भेजा। अबदुर्रहीमके बुलानेके लिये लिखा जिसका खिताब पहले खानखानां था।

परवेजको दक्षिण जानेका हुक्म—दक्षिणके फसादमें बादशाही लशकरके सरदारोंके कैद होजाने और शाहजहांके उधर रवाने होने से बादशाहने मुखलिसखांको हुक्म दिया कि जल्दीसे जाकर शाहजादा परवेजको अमीरों सहित दक्षिण की तरफ रवाने करे।

आगरेकी सूबेदारी—बादशाहने मुकर्रिबखांकी जगह कासिम खांको आगरेकी सूबेदारी पर मुकर्रर किया।

दक्षिणकी हकीकत—दक्षिणके बखशी असदखांकी अर्जी पहुंची लिखा था कि याकूतखां हवशी १००० सवारों सहित मलिकापुरमें

जो बुरहानपुरसे २० कोस है पहुंच गया है। सरबुलन्दराय शहर से बाहर निकल आया है और उससे लड़नेके इरादेमें है। बादशाहने उसको ताकीदी हुक्म लिखा कि मददके पहुंचने तक हरगिज जल्दी न करे और बुरजोंको मजबूत करके शहरमेंही बैठा रहे।

काशमीरको कूच—असफन्दार सन १०३२ (चैत वदी) को बादशाहने मामूलके मुवाफिक काशमीरको कूच किया।

शाहजहां दक्षिणमें—शाहजहांके दक्षिणमें पहुंचने पर अम्बरने उसकी ताबेदारी शुरू की। जो फौज याकूतखांकी सरदारीमें बुरहानपुर भेजी थी वह उसीकी खैरख्वाहीसे थी और शाहजहांको लिखा था कि आप जल्दी इधर पधारें। शाहजहां वहां जाकर टेवलगावमें ठहरा। अबदुल्लहखां और मुहम्मद तकीको फौज देकर कहा कि याकूतसे मिलकर बुरहानपुरको घेरें। उनके पीछे आप भी आकर लालबागमें उतरा जो शहरके बाहर है। रावरतन और दूसरे सरदारोंने जो किलेमें थे शहर और किलेको मजबूत करके मुकाबिला शुरू किया। शाहजहांने फरमाया कि एक तरफ से अबदुल्लहखां और दूसरी तरफसे शाहकुलीखां कोट पर चढें। अबदुल्लहखांकी तरफ तो गनीम(१) बहुत थे वहां सख्त लड़ाई हुई और शाहकुलीखां, फिदाईखां और जांनिसारके साथ कोटकी दीवार तोड़कर अन्दर घुस गया। सरबुलन्दराय अपने कामके आदमियोंको अबदुल्लहखांके मुकाबिले पर छोडकर शाहकुलीखांके ऊपर आया। शाहकुलीखां किलेके सामने उससे लडा और जब कई उसके नायके बादशाही(२) बन्दे मारे गये तो उसने किलेके अन्दर जाकर दरवाजा बन्द कर लिया। जब सरबुलन्दरायने किले

(१) गनीम यहां बादशाही आदमियोंको लिखा है।

(२) बादशाही बन्दोंसे शाहजहांके नौकरोंसे मुराद है क्योंकि इस किताबका यह हिस्सा शाहजहांके बादशाह होनेके पीछे लिखा गया है।

को घेरकर जोर दिया तो शाहकुलीखां कौल कसम लेकर उससे मिला। शाहजहांने इस हालको सुनतेही फिर अपनी फौज जमा करके हमला करनेका हुक्म दिया। इस हमलेमें मुबारकखां और जांसुपारखां वगैरह बहादुरोंने बहुतही जान मारी मगर कुछ काम न निकला। बल्कि शाहबेग, बरकन्दाजखां, और सैयद शाहमुहम्मद जो शाहजहांके जाने पहचाने हुए सरदारोंमेंसे थे मारे गये।

शाहजहांने तीसरी दफे खुद सवारी करके हल्ला कराया। उसके बहादुर साथियोंने हर तरफसे आगे बढ़बढ़कर बहादुरी की। किले वालोंमेंसे बूदनखां भाइयों समेत, बाबा मीरक, लश्करखांका जमाई और बहुतसे राजपूत रावरतनके मारे गये और बाकी लोग भी घबरा उठे थे कि इतनेमें एक गोली सैयद जाफरके गलेसे छिलती हुई निकल गई। जाफर घबराकर भागा। उसको देखकर दक्षिणी सब भाग गये और शाहजहांकी फौजके बहुतसे नामर्दोंको भी अपने साथ लेगये। फिर इसी हालतमें यह भी खबर लगी कि शाहजादा परवेज और खानखानां महाबतखां बंगालेसे लौटकर नर्मदा नदी तक पहुंच गये हैं। तब शाहजहां भी लाचार होकर बालाघाटको लौट गया और अबदुल्लहखां उस को छोड़कर इन्दौर(१) में जा बैठा। इसी तरह नुसरतखां भी अलग होकर निजामुल्मुल्कके पास गया और उसका नौकर हो गया।

खानआजमका मरना—इन्हीं दिनोंमें खानआजम मिरजाअजीज कोकलताश मर गया। उसका बाप गजनीनके भलेआदमियोंमेंसे था और उसकी माने अकबर बादशाहको दूध पिलाया था। इससे उन्होंने मिरजाअजीजका दरजा सब अमीरोंसे बढा दिया था उससे और उसके बेटोंसे उनको तकलीफें भी अजब अजब तरहकी उठानी पडती थीं। मिरजाको तवारीखका खूब इल्म था। लिखने और

(१) यह इन्दौर मालवेका इन्दौर नहीं है दक्षिणका इन्दौर है जो अब हैदराबादके नीचे है।

बोलनेवाला भी बडा था। खुश खत भी ऐसा था कि अच्छे अच्छे लिखनेवाले उस्तादोंमें उसका खत कुछ कम न था। मगर अरबी न जानता था। हाजिरजवाबीमें अपना जवाब न रखता था और शेर भी खूब कहता था। वह अहमदाबाद गुजरातमें मरा उसकी लाश दिल्लीमें निजामुद्दीन औलियाके रौजेमें बापकी कबरके पास दफन की गई।

गुजरातकी सूबेदारी—बादशाहने खानआजमके मरनेसे शाहजादे दावरबख्शको हुजूरमें बुलाकर खानजहांको गुजरातकी सूबेदारी पर भेजा।

बीसवां नौरोज।

१० जमादिउस्सानी गुरुवार सन् १०३४ (प्रथम चैत्र सुदी १२) को सूर्य्य मेष राशिमें आया और बादशाहके जुलूसका बीसवां वर्ष लगा। बादशाहने भंबरके पहाड़में शिकार करके १५१ पहाडी मेंढ़े तीर और बन्दूकसे मारे। जंगरथीमें मेष संक्रान्तिका उत्सव हुआ। भंबरसे यहांतक खूब फूल फूलेहुए थे। पीरपञ्जालकी पहाडी बर्फसे ढकी हुई थी इसलिये बादशाह पूंणिचके रास्तेसे गया। इन पहाडोंमें नारंगी बहुत होती हैं एक एक दरख्तमें हजार हजार नारंगियां लग जाती हैं।

आसफखांका बेटा अबूतालिब लाहोरकी हुकूमत पर बापकी नायबीमें और सरदारखांका बेटा आशिक उत्तर पञ्जाबके पहाड़में अपने बापकी जगह भेजा गया।

२८ फरवरदीन गुरुवार(१) (द्वि॰ चैत्र सुदी १० संवत् १६८२) को बादशाह भट नदी पर नूराबादमें पहुंचा। जैसे भटके घाटसे पीरपंचाल तक रास्तेमें मंजिल दरमंजिल मकान और महल बने थे वैसेही कशमीर तक भी थे। कभी कुछ जरूरत डेरे खीमे या और किसी तरहके सामान फर्राशखानेकी न पड़ती थी। मार्गमें जाड़े पाले और मेंहसे विकट घाटियोंकि उतरनेमें बहुत तकलीफ

(१) तुजुकजहांगीरीमें शुक्रवार भूलसे लिखा है।

हुई। रास्तेमें एक सुन्दर झरना मिला जो कशमीरके अकसर झरनोंसे अच्छा था। ५० गज ऊंचा और ४ गज चौडा था। उस पर इमारतके मुत्सद्दियोंने एक बडा चबूतरा बनवाया था। बादशाहने कुछ देर उसके ऊपर बैठकर कई प्याले पिये और हुक्मदिया कि यहां हमारे आनेकी तारीख यादगारीके लिये पत्थरकी तखती पर खोद दें।

इसी जगह लाला, सौसन, अर्गवां और नीलीचमेलीके फूल कशमीरसे आये।

कशमीर पहुंचना—१ उर्दी बहिश्त (द्वि० चैत्र सुदी १२) को सवारी बाराभूलामें पहुंची जो कशमीरके बड़े कसबोंमेंसे है। यहां श्रीनगरके काजी, मौलवी, मुल्ला, सौदागर और सब जातिके लोग पेशवाईमें आये थे। इन दिनों मञ्जिलोंमें फूलोंकी खूब सैर थी। बादशाह और सब अमीर नावोंमें बैठकर कशमीरको रवाने हुए। १८ मंगलवार (बैसाख सुदी १) को कशमीरके दौलतखानेमें उतरे जहां नीली चमेली खूब महक रही थी! शहरके बाहर तरह तरह के फूल खिल रहे थे।

केसरका गुण—यह बात मशहूर थी, तिबकी किताबों और खास करके 'जखीरे ख्वारज्मशाही(१)' में भी लिखी थी कि केसर के खानेसे हंसी आती है और जो ज्यादा खाई जाय तो इतना हंसे कि मर जानेका खटका होजावे। बादशाहने परीक्षाके वास्ते मारने के लायक एक कैदीको जेलखानेसे बुलवाकर पाव भर केसर अपने सामने खिलाई पर कुछ न हुआ। दूसरे दिन दूनी खिलाई पर वह तो मुसकराया भी नहीं हंसना तो कहां और मरना किसका।

कांगड़ेमें अनीराय—कांगड़ेकी हिफाजत अनीराय सिंहदलन को सौंपी गई।

दावरबख्श गुजरातसे आया।

---

(१) यह एक बहुत बड़ाग्रन्थ हकीमोंका फारसीमें है।

बाईसवां वर्ष।

सन् १०३५ हिजरी।

आश्विन सुदी ३ संवत् १६८२ तारीख २४ सितम्बर सन् १६२५ से आश्विन सुदी २ संवत् १६८३ तारीख १२ सितम्बर सन् १६२६ तक।

सरदारखां ५० वर्षका होकर ११ मुहर्रम सन् १०३५ (आश्विन सुदी १३।१४) को दस्तोंकी बीमारीसे मर गया। बादशाहने यह सुनकर उत्तर पञ्जाबके पहाड़ोंकी फौजदारी अलिफखांको दी जो उसके मददगारोंमेंसे था।

इन्हीं दिनोंमें ठट्ठेका हाकिम मुस्तफाखां भी मरगया। बादशाह ने वह सूबा शहरयारको इनायत किया।

दक्षिणका हाल—दक्षिणके बख्शी असदखांकी अर्जी पहुंची कि शाहजहां देवलगांवमें पहुंच गया और याकूतखां हबशी अंबरके लशकरसे बुरहानपुरको घेरे हुए है। सरबुलन्दराय किलेमें जमा हुआ बराबर लड़ रहा है पर यह कुछ कर नहीं सकते।

रायराज सरबुलन्दराय—फिर खबर पहुंची कि कुछ दिनों पीछे अंबरके आदमी भी उठ गये हैं। बादशाहने खुश होकर पांचहजारी ५००० सवारका मनसब और रायराजका खिताब जिससे बढ़ कर दक्षिणमें कोई खिताब नहीं होता, सरबुलन्दरायको दिया।

शाहजहांका माफी मांगना—जब शाहजहां बुरहानपुरका घेरा छोड़कर दक्षिणको लौटा तो रास्तेमें बहुत कमजोर होगया था और उसी कमजोरीमें उसके जीमें यह बात आई-कि बापसे अपने कसूरों की माफी मांग लेना चाहिये। इस इरादेसे उसने एक अर्जी बादशाहको भेजी जिसमें लिखा था कि मैं अपनी पिछली तकसीरों से बहुत शर्मिन्दा हूं। बादशाहने उसके जवाबमें अपने हाथसे फर-मान लिखा कि जो दाराशिकोह और औरङ्गजेबको हुजूरमें भेजे,

रुहतास और आसेरके किले जो उसके आदमियोंके पास है बादशाही बन्दोंको सौंपे तो उसके कुसूर माफ किये जायं और बालाघाटका मुल्क उसको इनायत हो।

शाहजहांने इस फरमानकी पेशवाई और ताजीम करके बेटोंके साथ अधिक प्रेम होने पर भी उनको जवाहिरात, जडाऊ जेवर और बड़े बडे हाथियोंको भेट सहित जो १० लाख रुपयेकी थी बापकी खिदमतमें भेजा। सैयद मुजफ्फरखां और रजाबहादुर को जो रुहतासके किलेदार थे हुक्म लिखदिया कि जब कोई बादशाही फरमान लेकर आवे तो उसको किला सौंपकर शाहजादे मुरादबख्शके साथ यहां चले आवें। ऐसेही हयातखांको भी आसेर का किला बादशाही नौकरोंको सौंप देनेका हुक्म भेज दिया। आप नासिक चला गया।

सुलतान होशंगका आना—बादशाहने अरबदस्तगैबको शाहजादे दानियालके बेटे सुलतान होशङ्ग और अबदुर्रहीम खानखाना के लानेके लिये शाहजादे परवेजके पास भेजा। वह सुलतान होशंग को लेकर आया। बादशाहने अपने भतीजे पर मेहरबानी करके मुजफ्फरखां बख्शीको फरमाया कि इसकी खबर रखो और जिस चीजकी जरूरत पडे बादशाही सरकारसे दिला दिया करो। उसकी सरकारको ऐसी बनादो कि किसी बातकी उसको तकलीफ न रहे।

खानखानांका हाजिर होना—इसी अरसेमें खानखानांने आकर चौखट चूमी और बहुत देरतक मारे शर्मिन्दगीके जमीन परसे सिर न उठाया। बादशाहने उसकी तसल्लीके वास्ते फरमाया कि इस मुद्दतमें जो कुछ हुआ तकदीरसे हुआ। हमारे तुम्हारे बसकी बात न थी। इसलिये कुछ सोच फिकर न करो। बख्शियोंको इशारा किया कि इसको लाकर मुनासिब जगह पर खड़ा करदो।

महाबतखांको बंगाले जानेका हुक्म—बादशाहने नूरजहांके बहकानेसे फिदाईखांको शाहजादे परवेजके पास इस गरजसे भेजा

था कि महाबतखांको परवेजसे अलग करके बंगालेको रवाना करे और परवेजकी मुखतारीका काम खानजहां गुजरातसे आकर करेगा। फिदाईखांकी अर्जी आई कि मैंने सारंगपुरमें पहुंचकर शाहजादेको बादशाही हुक्म सुना दिया मगर शाहजादे महाबतखां से अलग करने और खानजहांके साथ रहने पर राजी नहीं हैं। मैंने बहुतसी अर्ज की मगर मंजूर न हुई। इसलिये मैं लशकरके साथ रहनेमें फायदा न देखकर सारंगपुरमें ठहर गया हूं और खानजहांके जल्दीसे बुला लानेके लिये कासिद दौड़ाये हैं।

बादशाहने अर्जी पढ़कर शाहजादेको ताकीदी हुक्म लिखा कि जो पहले हुक्म हो चुका है हरगिज उसके खिलाफ न करो। अगर महाबतखां बंगाले जानेमें राजी न हो तो उसको अकेला हुजूरमें भेज दो और तुम तमाम अमीरोंके साथ बुरहानपुरमें ठहरे रहो।

तेईसवां वर्ष।

सन् १०३६ हिजरी।

आश्विन सुदी ३ संवत् १६८३ ता० १३ सितम्बर १६२६ से भादों सुदी २ संवत् १६८४ ता० १ सितम्बर सन् १६२७ तक।

कश्मीरसे कूच—१९ मुहर्रम सन् १०३५ (कार्तिकवदी ७) को बादशाह कश्मीरसे लाहोरको रवाने हुआ।

हुमाकी जांच—यह कई दफे अर्ज होचुकी थी कि पीरपंचालके पहाड़ोंमें एक जानवर होता है जो हुमाके नामसे मशहूर है। वहांके आदमी कहते हैं कि यह हड्डियोंके टुकडे खाता है और हमेशा उडता हुआ दिखाई देता है बैठता कम है। बादशाहको ऐसी बातोंकी तहकीकातका बहुत शौक था। हुक्म दिया कि जो कोई शिकारी उसको बन्दूकसे मारकर हुजूरमें लावेगा एक हजार रुपये इनाम पावेगा। जमालखां किरावल बन्दूकसे मारकर हुमा को लाया। गोली पैरोंमें लगी थी जिससे वह ताजाही बादशाहके देखनेमें आगया। बादशाहने फरमाया कि इसका पोटा चीरकर देखो क्या खाया है। चीरा तो उसमें हड्डियोंका चूरा निकला। उन पहाड़ियोंकी बात सच्ची हुई जिन्होंने अर्ज की थी कि उसकी खुराक हड्डियोंका चूरा है। वह हमेशा उड़ता हुआ जमीनपर नजर रखता है। जहां कहीं हड्डी पड़ी देखता है चोचमें उठाकर ऊपर को उड़ जाता है और वहांसे उसको पत्थर पर पटक देता है। जब वह टूटकर चूर चूर होजाती है तो चुन चुनकर खाजाता है। इससे जो हुमा मशहूर है वह यही है। जैसा कि शेख सादीने कहा है—

"हुमा सब जानवरों पर इसलिये बड़प्पन रखता है कि हड्डी खाता है और किसी पखेरूको नहीं सताता।"

उसका सिर कलसे मिलता हुआ था। मगर कलसुर्गके सिरमें पर नहीं होते, इसके सिरमें काले पर थे। बादशाहने अपने सामने तुलवाया तो ४१५ तोलेका हुआ।

बादशाह लाहोरमें—३०(१) गुरुवारको बादशाह लाहोर पहुंचा और एक लाख रुपये अबदुर्रहीम खानखानांको दिये।

ईरानका एलची—शाह अब्बासका एलची आकामुहम्मद ईरान से खत और तुहफे लेकर आया जिनमें एक जोड़ा सफेद शाहीनका भी था।

शेर और बकरीकी मुहब्बत—शाहजादे दावरबख्शने एक शेर बादशाहके नजर किया जो बकरीसे हिलमिल गया था। दोनो एक पिञ्जरेमें रहते थे और शेर उस बकरीको गोदमें बैठाकर प्यार किया करता था। बादशाहके हुक्मसे जब वह बकरी छिपादी गई तो शेर घबराने और चिल्लाने लगा। तब दूसरी बकरी उस पिंजरे में डाली गई मगर शेरने सूंघकर उसकी कमर मुंहमें पकडी और तोड डाली। फिर एक भेड उसके पास लेगये वह भी फाड डाली। आखिर वही बकरी उसके पास लाई गई तो पहलेकी तरह उससे प्यार किया। आप लेट गया और उसको छाती पर लेकर मुंह चाटने लगा। बादशाहने अबतक किसी जंगली और पलाऊ जानवरको अपनी मादाका मुंह चूमते नहीं देखा था।

दक्षिणका दीवान—बादशाहने फाजिलखांको दक्षिणका दीवान करके डेढहजारी डेढहजार सवारोंका मनसब दिया और उसके हाथ वहांके ३२ अमीरोंके वास्ते खिलअत भेजे।

महाबतखांसे तकरार—महाबतखांने अबतक जो हाथी बगाले वगैरहसे जमा किये थे दरगाहमें नहीं भेजे थे और बहुतसे रुपये सरकारी हिसाबके उसमें निकलते थे। ऐसेही जागीरोंकी अदला-बदलीमें उसने दूसरे बन्दोंकी भी जमा दबा रखी थी इसलिये बाद-

(१) महीनेका नाम नहीं लिखा है और इकबालनामये जहांगीरीमें अजर लिखा है। पर वह भी गुरुवारको न था।

शाहने अरब दस्तगैवको इन दोनो कामोंके वास्ते महावतखांके पास भेजा कि वह हाथी और रुपये दे तो ले आवे नहीं तो कहदे कि दरगाहमें आकर दीवानोंको हिसाब समझा जावे ।

महावतखांका बंगाले जाना—फिदाईखांकी अर्जी पहुंची कि महावतखां शाहजादे परवेजके पाससे बंगालेको रवाने होगया और खानजहां गुजरातसे शाहजादेकी खिदमतमें आपहुंचा है ।

अबदुल्लहखांके क़ुसूरोंकी माफी—इन्हीं दिनों खानजहांने अबदुल्लहखांकी अर्जी भेजकर उसके क़ुसूरोंकी माफी चाही । बादशाहने खानजहांकी खातिरसे माफी देदी ।

तहमुर्स और होशंगका विवाह—शाहजादे दानियालका बडा बेटा तहमुर्स भी शाहजहांका साथ छोडकर हाजिर होगया उसका छोटा भाई होशंग पहलेही आगया था । बादशाहने मेहरबानी करके दोनोको गोरकां(१) (जमाई) बनाया । तहमुर्सको तो अपनी बेटी बहारबानू बेगम दी और सुलतान खुसरोकी बेटी होशमन्दबानू बेगमकी सगाई होशंगसे की ।

मोतमिदखांका बखशी होना—इन्हीं दिनों मोतमिदखांको बखशीका ओहदा मिला ।

बादशाहका काबुल जाना—बादशाह १७ असफन्दार (फाल्गुण सुदी १०) को कूच करके कई दिन तक लाहोरके बाहर रहा फिर २३ शुक्रवार (फाल्गुण सुदी १५) को काबुलकी तरफ रवाने हुआ ।

अहदादका सिर—अहमदबेगखांका बेटा इफतख़ारखां अहदादका सिर काटकर लाया । बादशाहने माथा जमीन पर टेककर खुदाका शुक्र किया और शादियाने बजानेका हुक्म देकर फरमाया कि इस सिरको लाहोरमें लेजाकर किलेके दरवाजेपर लटका दो । जब ख़ाजा अबुलहसनका बेटा जफरखां काबुलमें पहुंचा तो यलंगतोश उजबकका गजनीनके इलाकेमें आना सुनकर उस सूबेके

(१) मुगल बादशाहोंमें जमाईको गोरकां कहते थे ।

लश्कर समेत उससे लड़नेको निकला तो अहदाद भी पलंगतोशके इधरसे तिराहमें आकर लूटमार करने लगा था। फिर पलंगतोशने अपने एक रिश्तेदारको जफरखांके पास भेजकर माफी मांग ली। वह लशकर जो उसके मुकाबिलेको जमा हुआ था अहदादके ऊपर गया। वह अवागर नाम पहाड़में जहां उसका अड्डा था जाछिपा और घाटेमें भीत चुनकर लड़नेको तय्यार होबैठा। बादशाही लशकर ७ जमादिउलअव्वल (माघसुदी ९) को नक्कारा बजा कर चढ़ा। तड़केसे तीसरे पहर तक लड़ाई होती रही। वह अड्डा फतह होगया। अहदाद बन्दूकसे मरा पड़ा था। एक अहदी उसकी तलवार छुरी और अंगूठी जफरखांके पास लेगया। जफरखां जाकर उसका सिर काट लाया जो सरदारखांके हाथ दरगाहमें भेजा गया था। गोली किसके हाथसे लगी इसका कुछ पता नहीं चला।

बादशाहने जफरखां और दूसरे बन्दोंके जैसी जिसकी खिदमत थी मनसब बढ़ाये इनाम भी दिये।

बादशाहकी बड़ी माकी मृत्यु—इन्हीं दिनों खबर पहुंची कि रुकैया सुलतान बेगम जो मिर्जा हिन्दालकी बेटी और अकबर बादशाहकी बड़ी बेगम थी ८० वर्षकी होकर आगरेमें मर गई। इससे कोई औलाद न हुई थी। जब शाहजहां पैदा हुआ था अकबर बादशाहने उसे इसको सौंप दिया था और इसने उसको पाला था।

खानखानां पर फिर मेहरबानी—इसी अरसेमें बादशाहने बैरम खांके बेटे अबदुर्रहीम पर भांति भांतिसे कृपा करके खानखानांका बड़ा खिताब फिर उसे देदिया और घोड़ा सिरोपाव देकर कन्नौज की हाकिमी पर बिदा किया।

महाबतखां पर कोप—महाबतखांके सब हाथी आकर बादशाही फीलखानेमें दाखिल होगये। महाबतखांने अपनी बेटी ख्वाजा बरखुरदार नाम एक नकशबन्दी शेखको बादशाहसे

अर्ज किये बिना व्याह दी थी। इस नाराजीसे बादशाहने शेखको हुजूरमें बुलाकर पूछा कि क्यों तूने ऐसे बडे अमीरकी बेटी हमारी इजाजत बिना लेली? वह इसका कुछ जवाब न देसका बादशाहने उसको पिटवाकर कैद कर दिया।

मिरजा रुस्तम सफवीके बेटे मिरजा दखनीको शाहनवाजका खिताब मिला।

२९ असफन्दार ८ (चैत्रबदी ६) को बादशाहकी सवारी चिनाव नदी पर उतरी।

इक्कीसवां नौरोज।

२२ जमादिउस्सानी सन् १०३५ शनिवार(१)(चैत्र बदी ८) को सूर्य्यनारायणके मेष राशिमें आने पर इक्कीसवां नौरोज लगा। बादशाह चिनाव नदी पर उसका उत्सव करके रवाने होगया।

बादशाहने शाह ईरानके एलची आकामुहम्मदको खिलअत जडाऊ तलवार और ३० हजार रुपये देकर बिदा किया। शाहके खतके जवाबमें खत और एक लाख रुपयेके हीरोंसे बना हुआ एक गुर्ज उसके हाथ शाहके वास्ते भेजा।

महाबतखांका आना—महाबतखांने हाथी तो पहले भेजदी दिये थे अब वहभी बुलाया हुआ आया। उसका आना आसफखांकी कारस्तानीसे हुआ था जो उसे बेइज्जत और खराब करना चाहता था। वह भी इस बातको समझ गया था। इसीलिये चार पांच हजार इकरंगी खूनख्वार(२) राजपूत अपने साथ लाया था जिनमें बहुतोंके जोरू बच्चे भी साथ थे। इसलिये कि जब मरनेकी नौबत पहुंचे तो खूब तलवारें मारकर बालबच्चों समेत मर जावें।

---

(१) पञ्चांगमें शनिवार है और इकबालनामयेजहांगीरीमें भी शनिकी रातको सूर्य्यका मेषमें आना लिखा है मगर भूल इसमें भी है कि २२ तारीखकी जगह २ लिखी है।

(२) लहूके पीनेवाले अर्थात् बहुत क्रूर।

उसके इस तरह आनेकी खबरें पहलेसे उड गई थी मगर आसफखांने गफलतमें कुछ परवा न की। जब बादशाहसे उसके आनेकी अर्ज हुई तो हुक्म हुआ कि जबतक सरकारी हिसाबकी सफाई दीवानोंसे न करे और मुद्दइयोंके दावे अदालतके बमूजिब न चुकावे दरबारमें न आवे। फिदाईखांको हुक्म हुआ कि कैदी बरखुरदारसे वह सब माल असबाब भी छीनले जो महाबतखांने उसे शादीमें दिया था।

बादशाहका डेरा भट नदीके पार था। आसफखां ऐसे बड़े दुश्मनसे गाफिल होकर अपने बालबच्चों और माल असबाब समेत पुल परसे इधर उतर आया। बादशाही कुल कारखाने और पास रहनेवाले बन्दे भी सब उतर आये थे। महाबतखांने जब देखा कि अब जानपर आ बनी है तो लाचार पांच हजार जङ्गी राजपूतोंको लेकर (जिनसे पक्के वचन होचुके थे) तड़केही अपने डेरेसे निकला। २००० राजपूतोंको पुलपर यह कहकर छोडा कि पुलको जलाडालें और जो आना चाहे उसको रोकदें। आप बादशाही दौलतखानेको गया जिसमें बादशाह अकेला रह गया था। महाबतखांने दरवाजेमें मोतमिदखांके पेशखानेमें पहुंचकर हाल पूछा तो मोतमिदखां तलवार बांधकर डेरेसे निकला। महाबतखांने उसको देखतेही बादशाहका हाल पूछा। उस समय १०० राजपूत तलवार और बर्छे लिये उसके साथ थे और धूलधक्कडमें आदमीका चेहरा अच्छी तरह नहीं पहचाना जाता था। वहांसे वह बडे दरवाजेकी तरफ गया। उस वक्त दौलतखानेके चौकमें थोडे से रहनेवाले थे और तीन चार नाजिर दरवाजेके आगे खडे थे। महाबतखां दौलतखाने तक चढा चला गया। फिर पैदल गुसलखानेको चला। अब उसके साथ २०० राजपूत होगये थे। मोतमिदखांने उसके सामने जाकर कहा कि हैं! यह कैसी गुस्ताखी और बेअदबी है? जरा ठहरो मैं जाकर अर्ज करता हूं। मगर उसने न माना और गुसलखानेके दरवाजेपर पहुंचकर किवाड़ तोड़

डाले जो दरवानोंने बन्द करदिये थे। फिर दौलतखानेके चौकमें घुस गया। बादशाहके आसपास जो खवास थे उन्होंने बादशाहसे उसकी गुस्ताखीकी अर्ज की। बादशाह डेरेमेंसे निकलकर पालकीमें बैठा। महाबतखांने आदाब बजा लाकर पालकीकी परिक्रमा की और अर्ज की कि जब मुझे यह यकीन होगया कि आसफखांकी दुश्मनीसे छुटकारा न पाकर बुरी तरह मारा जाऊंगा तो लाचार यह जुरअत और दिलेरी करके हजरतकी पनाहमें आया हूं। यदि कतलके लायक हूं तो अपने हुजूरमें सजा दीजिये। इतनेमें उसके सशस्त्र राजपूतोंने आकर बादशाही कनातोंको घेर लिया। उस हालतमें सिवा दस्तगैब अरब, मीरमनसूर बदख्शी, जवाहिरखां ख्वाजासरा, बुलन्दखां, खिदमतपरस्तखां, फीरोजखां, खिदमतखां ख्वाजासरा, फसीहखां मजलिसी और तीन चार दूसरे खवासोंके और कोई हाजिर न था। बादशाहका मिजाज उसकी बेअदबीसे बिगडा हुआ था। उसने दो बार तलवारकी मूठ पर हाथ डाला मगर मीरमनसूर बदख्शीने हर दफा तुर्की बोलीमें कहा—"अभी वक्त नहीं है, इस कमबख्तको खुदा पर छोड देना चाहिये। आपही इसकी सजा पानेका वक्त आजावेगा।" उसका यह कहना ठीक था। इस लिये बादशाह चुप होरहा। फिर तो राजपूतोंने आकर दौलतखानेको बाहर और और भीतरसे ऐसा घेरा कि उनके और महाबतखांके सिवा और कोई नजर नहीं आता था। तब उसने फिर अर्ज की कि यह सवारीका वक्त है मामूली आदतके मुवाफिक सवारी फरमावें तो यह गुलाम खिदमतमें रहे और सब लोगोंको मालूम होजावे कि यह गुस्ताखी हुक्मसे हुई है।" महाबतने अपना घोडा आगे करके बहुत जिद्द और आजिजी की कि इसी पर सवार हों। बादशाहने मंजूर न करके अपना खासा घोड़ा मंगवाया और सवारीके कपडे पहननेको अन्दर जाने लगा। महाबतखांने जाने नहीं दिया। इतनेमें खासा घोडा आगया। बादशाह सवार होकर दो तीरके

टर्य पर गया होगा कि महावनखांने अपना हाथी लाकर अर्ज की कि इस वक्त गड़बड़ और भीड़भाड़ होरही है हज़रत हाथी पर सवार होकर शिकारको तशरीफ लेचलें। बादशाह हाथी पर सवार होगया। महावतखांका भरोसेवाला एक राजपूत हौदेके आगे बैठा और दो पीछे। फिर मुकर्रबखां आकर महावतखांकी रज़ामन्दीसे हौदेमें बादशाहके पास बैठ गया। इस हलचलमें एक जख्म भी उसके माथेमें लग गया था।

खिदमतपरस्तखां खवासके पास बादशाहकी शराब और प्याला था। वह दौड़कर हौदेसे जा लिपटा। राजपूतोंने उसको धक्के तो बहुत दिये और भालोंसे भी हटाया पर उसने हौदेको न छोड़ा। बाहर तो जगह न थी जैसे तैसे हौदेमें घुस बैठा।

आध कोस चले होंगे कि फीलखानेका दारोगा गजपतखां सवारीकी खासा हथनी लेकर आया। आप आगे और उसका बेटा पीछे बैठा था। महावतखांके इशारेसे वह दोनो बेगुनाह मारे गये।

महावतखां शिकारके बहाने बादशाहको अपने डेरेपर लाया। बादशाह उसके घरमें उतर पड़ा। उसने अपने बेटोंको बादशाहके आसपास खड़ा कर दिया। वह नूरजहां बेगमकी तरफसे गाफिल था। अब बेगमके लानेके लिये बादशाहको फिर दौलतखानेमें ले गया। पर बेगम इस फुरसतमें बादशाही महलोंके नाजिर जवाहिरखांके साथ नदीसे उतरकर अपने भाई आसफखांके डेरेमें चली गई थी। महावतखां इस भूलसे बहुत पछताया। शहरयारका बादशाहसे अलग रखना ठीक न समझकर बादशाहको उसके डेरे पर लेगया। बादशाह उसके काबूमें था जो वह कहता था वही करता था। इस वक्त शुजाअतखांका पोता छज्जू साथ होगया। उसे शहरयारके डेरे पर पहुंचतेही महावतखाने राजपूतों द्वारा मरवा डाला।

नूरजहां बेगमने भाईके डेरे पर पहुंचतेही सब अमीरोंको

बुलवाया और खफा होकर कहाकि तुम्हारी गफलत और नादानीसे यह हाल हुआ। जो बात किसीने न सोची थी वह हुई। तुम खुदा अर खल्कके सामने बदनाम हुए। अब इसका क्या बन्दोवस्त करना चाहिये सब सलाह करके अर्ज करो।

सबने कहा कि सलाह यही है कि कल फौजें तय्यार करके आपकी अर्दलीमें नदीसे उतरें और बदमाशोंको सजा देकर हज-रतकी चौखट चूमें।

जब बादशाहसे इस सलाहकी अर्ज हुई तो बादशाहने रातहीको मुकर्रिबखां, सादिकखां बख्शी, मीरमनसूर और खिदमतखांको लगातार भेजकर आसफखां तथा दूसरे अमीरोंको कहलवाया कि नदीसे उतरना और लड़ना ठीक नहीं है। कभी भूलकर ऐसी खोटी बात न करना। इससे सिवा पछतानेके और कोई नतीजा न होगा। जब हम इधर हैं तो तुम किसके भरोसे और किस आशा पर लड़ते हो? पूरा यकीन दिलानेके लिये अपनी अंगूठी भी मीरमनसूरके हाथ भेज दी कि यदि आसफखां आदिको सन्देह हो कि यह बातें महाबतखांकी बनाई हुई हैं और हजरतने उसके दबानेसे हुक्म देदिया है, तो दूर होजाय।

फिदाईखांको जब इस गदरका हाल मालूम हुआ तो सवार होकर नदी पर आया और पुलके जलनेसे पार उतरना मुश्किल देखकर तैरकर पार होनेके लिये बादशाही दौलतखानेके सामने घोडा पानीमें डाला। पर तीर बरसने लगे। ६ आदमी उसकी फौजके मारे गये और कुछ पानीके जोरसे गोते खाकर अधमुये किनारे पर जालगे। तोभी वह घोडे पर चढ़ाहुआ पार उतर गया और खूब लड़ा। यहां उसके चार आदमी और मारे गये। जब उसने देखा कि दुश्मन घिर आये और हुजूरमें पहुंचनेका रास्ता नहीं है तो लौटकर नदीसे उतर आया।

बादशाह उस दिन और उस रात शहरयारके डेरेमें रहा।

नूरजहां बेगमका लड़नेको आना—८ फरवरदीन शनिवार २८

जमादिउस्सानी (चैत्र सुदी १ संवत् १६८३) को आसफखां और ख्वाजा अबुलहसन वगैरहने लड़नेके इरादेसे नूरजहां बेगमकी अंबारीमें एक घाटसे जिसे नवाडेके दारोगा गाजीबेगने पायाब देखा था उतरना चाहा। पर सब घाटोंसे बुरा वही था। तीन चार जगह चौड़े और गहरे पानीमें उतरना पड़ा जिससे लशकरका सिलसिला टूट गया। फौजें बिखर गईं। आसफखां ख्वाजा अबुलहसन और इरादतखां बेगमकी अम्मारी (१) के साथ दुशमन की बडी फौजके सामने जा निकले जहां उसने नदीके घाटोंको अपने जंगी हाथियोंसे मजबूत कर रखा था। फिदाईखां एक तीरके टप्पे पर उनसे नीचे दुशमनकी दूसरी फौजके आगे जा उतरा। उससे भी नीचेको आसफखांका बेटा अबूतालिब औरख्वाजा अलहयार और बहुतसे आदमी उतरे। अभी दूसरे लोग किनारे परही पहुंचे थे और कुछ पानीके बीचमें थे कि दुशमनकी फौज हाथियोंको आगे करके बढ़ी। उस समय आसफखां और ख्वाजा अबु-लहसन पानीमेंही थे और मोतमिदखां एक धारसे उतर कर दूसरी पर खड़ा भाग्यके हेर फेरका तमशा देख रहा था। सवार पैदल ऊंट घोडे पानीमें एक दूसरेसे भिड भिड़ कर पार उतरनेकी कोशिश कर रहे थे। इतनेमें बेगमके ख्वाजासराने नदीमें आकर कहा कि महद उलिया(२) फरमाती हैं कि यह जगह क्या ठहरने और ढील करनेकी है। पांव आगे रखो गनीम तुम्हारे आतेही भाग जायगा। इस हुक्मके सुनतेही ख्वाजा अबुलहसन और मोतमिद-खाने घोड़े पानीमें डालदिये। मगर गनीमके सिपाही और राजपूत इधरके आदमियोंको हटाते हुए नदीमें आगये। बेगमकी अम्मारीमें शहरयार और शाहनवाजखांकी बेटियां भी थी। एक तीर शहयारकी बेटीकी भुजामें लगा जिसे बेगमने अपने हाथसे खेंच कर बाहर फेंका। सबके कपडे खूनमें रंग गये। महलका

(१) गुमटीदार हौदा।

(२) यह बेगमोंका खिताब होता था।

नाजिर जवाहिरखां ख्वाजासरा, बेगमका ख्वाजासरा नदीम, और एक दूसरा ख्वाजासरा, तीनों हाथीके आगे काम आये। दो तलवारें बेगमके हाथीकी सूंडपर भी लगीं। हाथीका मुंह फिरगया। फिर दो तीन जख्म बरछेके उसकी पीठ पर लगे। महावत हाथी को जल्दी जल्दी चला रहा था कि गहरे पानीका एक दह आगया। घोड़े उसमें तैरने लगे सवारोंने डूब जानेके डरसे बागें मोडलीं। मगर बेगमका हाथी पार होगया बेगम बादशाही दौलतखानेमें जाकर उतर गई।

राजपूत जब इधर आये तो आसफखां अपने साथियोंके औघट रास्ते जानेसे बुरा नतीजा पैदा होनेका गिला करके एक तरफको चलदिया। साथवालोंने पूछा किधर जाते हो मगर कुछ पता न बताया। ख्वाजा अबुलहसनने घबराकर पानीमें घोडा डाला पानी गहरा था घोडा तैरने लगा। वह जीनसे अलग होगया गोता खाया सांस भूलगया मगर काठीका डंडा न छोडा। आखिर एक कश्मीरी मल्लाहने पहुंच कर उसको निकाल लिया। मगर फिदाईखां अपने नौकरों और कुछ बादशाही बन्दोंके साथ जो उससे मुहब्बत रखते थे नदीसे उतर कर गनीमकी फौजसे लडा जो उसके सामने थी और उसे हटाकर शहरयारके घर तक जा पहुचा जहां बादशाह मौजूद था। मगर कनातके भीतर सवार और पैदल भरे हुए थे। उनपर वह दरवाजेसे तीर मारने लगा। अकसर तीर दौलतखांनेके चौकमें बादशाहके पास जाकर गिरते थे। उस वक्त मुखलिसखां तखतके आगे खडा था।

फिदाईखां देरतक तीर मारता रहा और उसके साथियोंमेंसे सैयद मुजफ्फर जो एक बहादुर जवान था और फिदाईखांका जमाई अताउल्लह तथा सैयद अबदुलगफूर बुखारी मारे गये। चार जख्म फिदाईखांके घोड़ेके भी लगे। आखिर वह भी बादशाहके पास पहुंचना मुशकिल देखकर लौट गया और दूसरे दिन नदीसे उतरकर रुहतासमें अपने बेटोंके पास पहुचा। वहांसे बाल

दन्नोंको उठाकर गरचाक टंडेमें लेगया जहांका जमींदार बदरबख्श उनका पुराना मुलाकाती था। उनको वहां छोड़ कर कड़ा हिन्दुस्तानको रवाने हुआ।

शेरख्वाजा, अल्लहवरदीखां किरावलबाशी और इफ्तखारखांका बेटा अल्लह्यारखां बिखर कर अलग अलग जापड़े। आसफखां महावतखांके हाथसे अपना बचाव न देखकर अपने बेटे अबूतालिब और दो तीन सौ बारगीर सवारों और खिदमतगारोंसे अटकके किलेको चल दिया जो उसकी जागीरमें था। जब रुहतासमें पहुंचा और सुना कि इरादतखां यहां छुपा हुआ है तो आदमी भेजकर बुलाया और साथ चलनेको बहुतसा कहा मगर राजी न हुआ। तब आसफखां तो अटकके किलेमें जा बैठा और इरादतखां लशकरमें आगया। फिर ख्वाजा अबुलहसन प्रतिज्ञा कराके महावतखांसे मिला। उसने इरादतखां और मोतमिदखांके नाम भी जान मान और इज्जतमें नुकसान न पहुंचानेका कौल नामा लेकर उनको महावतखांसे मिलाया। उसी दिन महावतखांने शेख चांद ज्योतिषीके जवान पोते मुहम्मदको आसफखांसे मेल मिलाप रखनेके कुसूरमें अपने सामने मरवा डाला।

बलखका एलची—इन्हीं दिनोंमें बलखके खांन नजर मुहम्मदखांके एलची शाहख्वाजाने बादशाहके हुजूरमें यहांके मामूलके मवाफिक आदाब बजा लाकर नजर मुहम्मदखांके भेजे हुए तुर्की घोड़े और गुलाम नजर किये। फिर अपनी पेशकश भी गुजरानी नजर मुहम्मदखांकी तुहफे ५००००) की आंके गये शाह ख्वाजाको २००००) इनाममें मिले।

आसफखांका कैद होजाना—महावतखांने कुछ बादशाही अहदी, कुछ अपने सिपाही, और कुछ उधरके जमीन्दार अपने बेटे बहरोज और शाहकुलीके साथ आसफखांपर भेजे। उन्होंने जल्दी से पहुंचकर अटकका किला लेलिया। आसफखां प्रतिज्ञा लेकर

उनसे मिला उन्होंने महाबतखांको हाल लिखा इस अरसेमें बादशाहकी सवारी भी अटकसे उतर आई थी। महाबतखां बादशाह से रुखसत लेकर अटकके किलेमें गया और आसफखां, उसके बेटे अबूतालिब, और मीरमीरांके बेटे, खलीलुल्लाहको पकड़कर किला अपने मोतमिदोंको सौंप आया। उसने आसफखांके मुसाहिब अबदुलखालिक, और शाहजहांके बखशी मुहम्मद तकी, को जो बुरहानपुरके घेरेमें उसके हाथ आगया था मरवा डाला। आसफखांके उस्ताद मुल्ला मुहम्मदके पावोंमें भी बेड़ी डाली थी पर वह ढीली रह जानेसे खुलगई। इस बातको उसकी जादूगरी समझकर उसको भी उसने कतल करा दिया। यह मुल्ला मुहम्मद हमेशा कुरान पढ़ा करता था और उसके होठ हिलते थे। जिससे उसका डर होगया था कि कहीं जादूसे मुझे न मार डालें।

काफिरोंका हाल—जब सवारी जलालाबादमें पहुची तो कुछ काफिरोंने आकर बन्दगीकी। उनका हाल मिर्जा हादीने इस तौर पर लिखा है—इनका मजहब तिब्बतके काफिरोंसे मिलता है। ये आदमीकी सूरत पर एक मूर्त्ति सोने या पत्थरकी बनाकर पूजते है। एकही औरत करते है मगर जो वह बांझ हो या खसमसे मेल न रखे तो दूसरी भी कर लेते है। जो किसी दोस्त या रिश्तेदारके घर जाना चाहें तो छतों पर होकर जाते है। शहरका दरवाजा एक रखते हैं। सूवर, मछली, और मुर्ग को छोडकर सब जानवरोंका मांस खाते है। मछलीके वास्ते कहते हैं कि जिस किसीने हमारी कौममेंसे खाई वह अन्धा होगया। मांस उबालकर खाते हैं। लाल कपड़ेको बहुत पसन्द करते है। मुर्देको कपडे और हथियार पहनाकर शराब की सुराही और प्याले समेत गाडते है। सौगन्द खानेका यह दस्तूर है कि हरन या बकरेकी सिरीको आगने रखते है फिर वहांसे उठाकर पेडमें टांगते है और कहते है कि जो कोई हममेंसे यह सौगंद झूठी करता है वह जरूर किसी बलामें फंसता है।

बाप जो अपने बेटेकी जोरू पसन्द करे तो लेलेता है बेटा कुछ नहीं कहता।

बादशाहने उनसे फरमाया कि हिन्दुस्थानकी चीजोंमेंसे जिस चीजको तुम्हारा दिल चाहता हो अर्ज करो। उन्होंने घोडे तलवार नकद रुपये और सुरख रंगके खिलअतको अर्ज की और अपनी मुरादको पहुंचे।

जगतसिंहका भागना—इसी अरसेमें राजा वासूका बेटा जगतसिंह वगैर रुखसतके बादशाही लशकरसे अपने घर पंजाबके पहाड़ोंमें चला गया। बादशाहने सादिकखांको पंजाबका सूबा देकर जगतसिंहको सजाका हुक्म दिया।

काबुल पहुंचना—रविवार २० उर्दीबहिश्त (वैशाख सुदी १४) को बादशाह काबुल पहुंचकर हाथी परसे रुपये लुटाता बाजारसे निकला और किलेके पास जहांआरा बागमें उतरा।

१ खुरदाद (ज्येष्ठ वदी १२) शुक्रवारको बादशाह बाबर बादशाह, मिरजा हिन्दाल और अपने चचा मिरजा मुहम्मदकी कबरों की जियारत करनेको गया।

महाबतखांके राजपूतोंकी हार—महाबतखांके राजपूत जो इत्तिफाकसे इतना जोर और गलबा पागये थे मारे घमण्डके किसी को कुछ खयालमें न लाते थे रैयतको लूटते और गरीबोंको सताते थे गैबकी मारमें पड गये। उनमेंसे कुछ लोग काबुलकी शिकारगाह चलकामें जाकर घोड़े चराने लगे। वहां बादशाहके शिकार खेलने के लिये बन्दोबस्त होकर अहदियोंका पहरा लगा था। एक अहदी ने उन राजपूतोंको रोका तो उसको मारे तलवारोंके टुकड़े टुकडे कर डाला। उसके घरवालों और दूसरे अहदियोंने दरगाहमें जा कर फरियाद की। बादशाहने फरमाया कि मारनेवालेको पहचान लो तो उसे हुजूरमें बुलाकर तहकीकात करें। खून साबित होने पर सजा दी जाय। इस हुक्मसे नाराज होकर अहदी लौट आये। राजपूत उनके पासही ठहरे हुए थे। दूसरे दिन लड़नेके

इरादेसे चढ़कर राजपूतोंके डेरों पर गये। थोडीसी लड़ाईमें आठ नौसौ राजपूत मारे गये। क्योंकि अहदी अच्छे तीरन्दाज और बन्दूकची थे। महावतखां जिन राजपूतोंको अपने सगे वेटोंसे भी ज्यादा समझता था वह सब वहीं खेत रहे। ५०० राजपूतोंको जिनमें अकसर अपनी कौमके सरदार और बहादुरीमें नाम पाये हुए थे कावुल और हजाराकी कौमोंके लोग पकड़कर हिन्दूकुश पहाड़के उधर लेगये और वेच आये।

महावतखां यह खबर सुनतेही अपने नौकरोंकी मददको चढा था, पर हाल विगड़ा देखकर मारेजानेके भयसे रास्तेसे लौटआया। दौलतखानेकी पनाह पकड़कर वादशाहसे हुल्लड़ मिटानेकी अर्ज करने लगा। वादशाहने हवशियों, कोतवालखां और जमाल खवास को हुक्म दिया। उन्होंने जाकर वह फसाद मिटा दिया। फिर वादशाहसे अर्ज हुई कि इस फसादका उठानेवाला ख्वाजा अवुल-हसनका जमाई वदीउज्जमां और उसका भाई ख्वाजा कासिम है। वादशाहने दोनोंको हुजूरमें वुलवाकर पूछताछ की वह कोई जवाव महावतखांकी तसल्लीके लायक न दे सके। उसके वहुत आदमी तीर बन्दूकोंसे मारे गये थे इसलिये वादशाहने उसकी खातिर से दोनोंको उसके हवाले कर दिया। वह उन्हें नंगे पांव नंगे सिर बड़ी ख्वारीसे खेंचता हुआ अपने घर लेगया और वहां कैद करके उनका माल असवाव जब्त कर लिया।

अम्बर हवशीका मरना—इन्हीं दिनों अर्जहुई कि अम्बर हवशी ८० वर्षका होकर स्वाभाविक मृत्युसे दक्षिणमें मर गया। सिपाह-गरी सरदारी और बन्दोबस्तके जोड़ तोड़में इका था। उसने वहांके वदमाशोंको जैसा चाहिये वैसा दवा रखा था। अखीर वक्त तक इज्जतसे रहा। किसी इतिहासमें नहीं देखा गया कि कोई गुलाम हवशी उसके दरजेको पहुंचा हो।

अवदुर्रहीम खानखानांका लाहोरमें आना—इसी अरसेमें दिल्ली के हाकिम सैयद वहवाने महावतखांके लिखने पर अवदुर्रहीम

खानखानांको जो अपनी जागीरको जाता था लौटाकर लाहोरमें भेज दिया।

दाराशिकोह और औरंगजेबका आना—इन्हीं दिनों बादशाह को सुलतान दाराशिकोह और औरंगजेबके आगरे तक पहुंचनेकी खबर सुननेसे बहुत खुशी हुई। मगर महावतखांने आगरेके किलेदार मुजफ्फरखांको लिखा कि शाहजादोंको नजरबन्द करले और अपने साथ दरगाहमें लावे।

शिकारके वास्ते रस्सा—बादशाहको शिकारकी ऐसी लत थी कि कूच और मुकाममें एक दिन भी बिना शिकारके नहीं रहता था। इस लिये अलहवर्दीखां किरावलबेगीने कमरगोके शिकारके वास्ते एक बडा रस्सा बटकर नजर किया जिसको हिन्दुस्थानी नावर कहते थे। बादशाहने उसका नाम नूर रखा। २५०००) इस पर खर्च हुए थे। वह बादशाहके हुक्मसे गांव अरगन्देकी शिकारगाहमें खडा किया गया और जानवर हर तरफसे घेरकर उसमें लाये गये। बादशाह बेगमोंको लेकर शिकार खेलने गया। गांव मोरमानुममें शाह इसमाइल हजारा जिसको हजाराके लोग गुरु मानते थे बालबच्चों समेत उतरा हुआ था। बादशाह उससे मिलने गया। नूरजहांने शाहके बेटोंको मोती जवाहिर और जड़ाऊ गहने दिये। फिर बादशाहने शिकारगाहमें जाकर ३०० के करीब जंग, पहाड़ी मेंढे, रोझ और जरक शिकार किये। इन सबमें जो बड़ा था वह तोला गया तो जहांगीरी तोलसे ३ मन ३ सेर हुआ।

शाहजहांका ठट्ठे जाना—शाहजहांको, जब महावतखांकी गुस्ताखीकी खबर पहुंची तो थोडासा लशकर और सामान प्राप्त होने पर भी बापकी खिदमतमें पहुंचकर महावतको सजा देनेके इरादे से २३ रमजान सन् १०३५ (आषाढ वदी १०) को १००० सवारोंके साथ नासिक त्रिम्बकसे रवाना हुआ। उसने यह ख्याल किया था कि इस सफरमें और भी फौज जमा होजावेगी। मगर जब अजमेरमें पहुंचा तो महाराजा भीमका बेटा राजा कृष्णसिंह जिसके

पास ५०० सवार थे मर गया। उसके मरने और उसके सवारोंके बिखर जानेसे कुल ५०० सवार शाहजहांके पास रह गये। वह भी खराब हाल और खर्चसे तङ्ग थे। शाहजहांने वह इरादा पूरा होता न देखकर ठट्ठेमें कुछ दिन जारहनेके लिये अजमेरसे नागोर, नागोरसे जोधपुर और जोधपुरसे जैसलमेरको कूच किया। इसी रास्तेसे हुमायूं बादशाह भी अपने गिरे दिनोंमें सिन्धको गया था। दादा पोतेका एक हालतमें इधर जाना कराल कालका विचित्र चक्र था।

काबुलसे कूच—जब बादशाहका दिल काबुलकी सैर और शिकारसे भर गया तो १ शहरेवर सोमवार (भादों सुदी ३) को आगरेकी तरफ कूच किया।

परवेजकी बीमारी—इसी दिन अर्ज हुई कि शाहजादे परवेज के पेटमें वायगोलेका दर्द होजानेसे उसे बहुत देर तक बेहोशी रही। फिर इलाज करनेसे कुछ होश आया है। इसके साथही खानजहां की अर्जी पहुची जिसमें लिखा था कि शाहजादा फिर बेहोश हो गया। ५ घड़ी बेहोश रहा। हकीमोंने दाग देनेकी तजवीज करके ५ दाग उसके सिर ललाट और कनपटियोंमें लगाये तो भी होशमें न आया। एक घण्टे पीछे कुछ होश हुआ और फिर बेहोशी होगई। हकीम इस बीमारीको मिरगी बताते हैं और यह जियादा शराब पीनेका फल है। इसी बीमारीसे इनके दोनों चचा शाहजादे मुराद और शाहजादे दानियालने अपनी जान खोई थी।

दाराशिकोह और औरंगजेबका आना—इन्हीं दिनों सुलतान दाराशिकोह और औरंगजेब अपने दादाकी खिदमतमें पहुचे। उनके साथ जो १० लाख रुपयेकी पेशकश हाथियों और जवाहिर के जडाऊ सामानोंकी थी बादशाहकी नजरसे गुजरी।

बायसनकर सुलतान दानियालका बेटा—फाजिलखांकी अर्जी पहुंची कि दानियालका बेटा बायसनकर उमरकोटसे शाहजहांका साथ छोड़कर राजा गजसिंहके मुल्कमें आगया है। शाहजादे

पहुंचनेके पास पहुंचनेवाला है।

महाबतखांका निकाला जाना—महाबतखांने बादशाहके साथ जो इतनी बड़ी गुस्ताखी करके दरबारमें दखल पाया था इससे उसका मिज़ाज बिगड गया था। उसने सब अमीरोंके साथ बदसलूकी करके बहुतसे दुशमन पैदा कर लिये थे। मगर बादशाह इस पर भी बुर्दबारीसे उस पर अपनी पूरी इनायत और मेहरबानी दिखाता था। जो कुछ नूरजहां बेगम अकेलेमें उससे कहती थी वह सब उसे कह देता था। कई बार कह चुका था कि बेगम तेरी फिकरमें है तू खबरदार रहना। शाहनवाजखांकी बेटी जो अबदुर्रहीम खानाखानांकी पोती और आसफखांके बेटे शाइस्ताखांकी जोरू है कहती है कि जब मैं काबू पाऊंगी महाबतखांको बन्दूकसे मार दूंगी।

बादशाहकी इन बातोंने महाबतखांके दिलका खटका कम हो गया था। जैसे वह पहले बहुतसे राजपूतोंके साथ लेकर दरगाह में आता था और उनको दौलतखानेके आसपास खड़ा करके अन्दर जाता था अब उतना सामान साथ नहीं लाता था। उसके अच्छे अच्छे नौकर भी अहदियोंकी लड़ाईमें मारे जाचुके थे।

इधर नूरजहां बेगम उसके घातमें लगी हुई थी। वह अपनी फौज भी बढ़ातीजाती थी और बहादुरसिपाहियोंका दिलभी बढ़ाती थी। उसका ख्वाजासरा हुशयारखां उसके लिखने पर लाहौरसे २००० हजार नौकर रखकर लाया था और यहां उसके पास भी एक अच्छी फौज जमा होगई थी। अब उसने रुहतास से एक मंज़िल आगे अपने सवारोंकी हाजिरी लेनेकी तजवीज करके हुक्म दिया कि तमाम नई पुरानी सिपाह वर्दी पहनकर रास्तेमें खड़ी हो। बुलन्दखां खवाससे कहा कि हज़रतकी तरफसे महाबतखांके पास जाकर कहे कि आज बेगम अपने नौकरोंकी हाजिरी बादशाह को देगी। तुम अपना पहला मुजरा मौकूफ रखो जिससे तुम्हारे उसके बीच कोई झगड़ा न पड़ सके।

बुलन्दखांके पीछेही ख्वाजा अनवरको भेजा कि यह बात महा-बतखांको खूब सोचा दे कि हुक्मके मुवाफिक अमल करके इस वक्त मुजरा करनेको न आवे।

दूसरे दिन बहुतसे बादशाही बन्दे दरगाहमें भर गये और हजरतने महाबतखांको हुक्म भेजा कि उर्दूसे एक मंजिल आगे चला करे। महाबतखां भी असल भेद पागया था। पर अहदियोंकी लडाईमें उसे बडा सदमा पहुंच चुका था इसलिये लाचार होकर आगेको कूच कर गया। तब बादशाह भी उसके पीछेही सवार होकर ऐसी गर्मागर्मीसे गया कि वह फिर अपनेको सम्हाल न सका और आगेकी मंजिलसे भी कूच करके भटके पार उतर गया। बादशाहने इधर नदी पर अपना लशकर डालकर अफजलखांको महाबतखांके पास भेजा और यह चार हुक्म कहलाये—

१—शाहजहां ठट्ठेको गया है वह भी उसके पीछे जाकर इस मुहिमको पूरी करे।

२—आसफखांको हुजूरमें भेज दे। न भेजेगा तो बादशाही फौज उस पर भेजी जायगी।

३—शाहजादे दानियालके बेटे तहमुर्स और होशंगको हुजूरमें रवाने करे।

४—मुखलिसखांके बेटे लशकरीको हाजिर करे जो अबतक हुजूरमें नहीं आया है क्योंकि वह उसका जामिन है।

अफजलखांने शाहजादे दानियालके बेटोंको लाकर अर्ज की कि वह आसफखांके वास्ते यह अर्ज करता है कि मैं बेगमकी तरफ से बेखटके नहीं हूं। डर है कि आसफखांको अपने हाथसे जाने दूं तो बेगम मेरे ऊपर फौज भेजेगी। इसलिये हजरत चाहें जिस खिदमत पर मुझे मुकर्रर फरमादें। मै लाहोरसे गुजरतेही आसफ खांको बडी खुशीसे हुजूरमें भेज दूंगा।

यह सुनकर बेगम बहुत गुस्से हुई। अफजलखांने फिर जाकर जो कुछ देखा सुना था महाबतखांसे साफ साफ कह दिया।

ज़रूर कि आसफ़खांके भेजनेमें ढील करना भला नहीं है। अन्यथा अन्तमें पछताना पड़ेगा। महाबतखां भी समझ गया। उसने फ़ौरन आसफ़खांको लाकर माफी मांगी और कौल कसम लेकर उसको दरगाहमें भेज दिया। मगर उसके बेटे अबूतालिबको कुछ दिनोंके वास्ते अपने पास रखकर ठट्ठेकी तरफ कूच कर गया।

भटसे उतरना—१३ (आश्विनबदी १०) को बादशाहकी सवारी भटसे उतरी। अजब बात यह है कि महाबतखांको चढ़ाई इसी नदीके किनारे पर हुई थी और अब इसी नदीपर उसकी कमबख़्ती भी आगई। उसने कुछ दिन पीछे अबूतालिब, बदीउज्जमां और ख़्वाजा कासिमको भी दरगाहमें भेज दिया।

जब जहांगीराबादमें सवारी पहुंची तो दावरबख़्श, खानखानां, मुकर्रिबखां, मीरजुमला और शहर लाहोरके बड़े बड़े आदमियोंने पेशवाईमें आकर जमीन चूमी।

लाहोरमें पहुंचना—७ आबान (कार्तिक सुदी १०) को बादशाह लाहोरमें पहुंचा। इसी दिन आसफखांको पंजाबका सूबा और वकालतका बड़ा ओहदा मिला और हुक्म हुआ कि दीवान (कचहरी) में बैठकर अपने इख़्तियारसे मुल्क और मालके कुल काम किया करे। दीवानका ओहदा ख़्वाजा अबुलहसनको, मीरसामानीका अफ़ज़लखांको और बख़्शीका मीरजुमलाको इनायत हुआ।

महाबतखांका ख़ज़ाना जब्त होना—इन्हीं दिनों अर्ज हुई कि महाबतखां ठट्ठेका रास्ता छोड़कर हिन्दुस्थानको रवाने हुआ है और उसके वकीलोंने बंगालेसे २२ लाख रुपये भेजे हैं जो दिल्ली तक पहुंच गये हैं। बादशाहने सफदरखां, सिपहसालारखां, अलीकुली दरमन, नूरुद्दीनकुली और अनीराय सिंहदलनको १००० अहदियों सहित उस ख़ज़ानेको लानेके लिये भेजा। यह लोग शाहाबादके पास महाबतखांके नौकरोंके सामने जापहुंचे जो खजाना लाते थे। उन्होंने रुपयोंको सरायमें लेजाकर मुकाबिला करना शुरू किया।

वादशाही वन्दे वहुतसी लडाईके पीछे सरायमें आग लगाकर अन्दर घुस गये और खजाना ले आये। अब उनको वादशाहका हुक्म पहुंचा कि रुपयोंको दरगाहमें भेजकर महावतखांके पीछे जावें।

खानखानां महावतखां पर—फिर वादशाहने खानखानाको ७ हजारी जात और ७ हजार सवार दुअस्पे तिअस्पेका मनसब, खिलअत, तलवार, जडाऊ जीनका पंचाक घोडा और खासा हाथी इनायत करके दरगाहके कुछ वन्दोंके साथ महावतखांके मारनेको विदा किया और अजमेरका सूबा उसकी जागीरमें लिख दिया।

जगतसिंह—जगतसिंहकी मुहिम सादिकखांसे पार नहीं पडी थी और वादशाह उसको महावतखांका दोस्त समझता था इस लिये उसके नाम दरवारमें न आनेका हुक्म भेज दिया।

मुखलिसखां और जगतसिंहने कांगड़ेके पहाड़ोंसे आकर वन्दगी की।

मुकर्रमखांको वंगालेका सूबा—मुकर्रमखांको जो मुल्क कोचमें हाकिम था वादशाहने हुक्म भेजा कि हमने तुमको वंगालेका सूवेदार किया है। वहां जाकर वन्दोवस्त करो और खानेजादखांको दरगाहमें भेजदो।

शाहजादे परवेजका मरना—शाहजादे परवेजको वहुत शराव पीनेसे मिरगी होगई थी खाना नहीं भाता था। ताकत सब टूट गई थी। हकीमोंने वहुत इलाज किया मगर अखीर वक्त आजानेसे कुछ फायदा न हुआ। वह ७ सफर सन् १०३६ वुधवारकी रात को ३८ सालकी उमरमें मर गया। पहले तो उसकी लाश वुरहान पुरमें जमीनको सौंपी गई थी पीछे आगरे लाकर उसके वनाये हुए वागमें दफन की गई।

वादशाहने यह सुनकर वहुत रंज किया। अन्तमें सन्तोष करके खानजहांको लिखा कि परवेजके वेटों और आदमियोंको हुजूरमें रवाने कर दे।

वलखके वकीलोंकी विदा—इन्हीं दिनो वादशाहने नजरमुह

इसलिये बादशाहने उसको सातहजारी सातहजार सवार दुअस्पे और तिअस्पे का मनसब इनायत किया।

दक्खिनियोंका फसाद—दक्खिनके मुतसद्दियोंकी अर्जी पहुंची कि निजामुल्मुल्कने फतहखां और अपने दूसरे सरदारोंको बादशाही सरहदमें भेजकर लूट मार कराना शुरू किया था जिस पर खान-जहां लशकरखांको बुरहानपुरमें छोड बालाघाटको गया और खिडकी तक जो निजामुल्मुल्कके रहनेकी जगह थी न रुका। मगर निजामुल्मुल्क दौलताबादके किलेसे बाहर न निकला।

मीरमोमिनको सजा—सैयद मीर मोमिन ईरानसे हिन्दुस्थान में आया था और अकबर बादशाहने नकीबखांके चचाके पोते सियादतखांकी बेटीसे उसका विवाह किया था। शाहजहांके पूर्वदेशमें आनेपर जहां उसकी जागीर थी वह शाहजहांके साथ चलागयाथा। सियादतखांने जो परवेजके साथ था बहुतसी लिखापढ़ी करके उस को अपने पास बुला लिया था। बादशाहने यह सुनकर उसको हुजूरमें बुलाया। परवेजने उसकी बहुत सिफारिश लिखी थी तो भी हाथीके पांवमें डालकर मरवा दिया।

खानजहांका निजामुल्मुल्कको बालाघाट देदेना—निजामुल्मुल्क ने हमीदखां हबशीको अपना पेशवा(१) बनाकर मुल्कका कुल अधिकार सौंप दिया था। बाहरसे वह और अन्दरसे उसकी जोरू दोनों मिलकर निजामुल्मुल्कको जानवरके मुवाफिक पिंजरेमें बन्द रखते थे। जब खानजहांके आनेकी खबर सुनी तो हमीदखांने १२ लाख रुपयेको ३ लाख हुन उसके पास भेजकर कहलाया कि यह रकम लेलें और बालाघाटका सारा मुल्क अहमदनगरके किलेसमेत निजामुल्मुल्कको सौंप दे। उस बेईमान पठानने बादशाहके इतने वर्षों से पालनेका हक भूलकर सिर्फ ३ लाख हुनके लालचसे ऐसा

(१) दक्खिनके बादशाह अपने बडे वजीरको पेशवाकी पदवी देते थे जो पीछेसे सितारेके राजा भी अपने प्रधान[illegible]को देते थे। इनके पेशवा सितारेवालोंके प्रधान थे।